

मुनिश्रीका संक्षिप्त जीवन चरित्र.

मुनिश्रीका जन्मभूमि स्थान 'मारवाड' देशमें 'जोधपुर' राज्यांतर्गत 'रीया' ग्राम है. इनके पिताका नाम '[illegible]जी'. माताका नाम 'वाली'बाइ. मुनिश्रीका जन्म संवत् १९३९ आश्विन शुक्ल ९ के शुभ दिनपर हुवा. जन्मसे पांच छे वरस अनंतर इनके मातापिता कोइ प्रसंगप्राप्ततासे 'नया'शहर आ रहें. वहां चार पांच मास रहकर फिर मातापिता तो उसी 'रिया' को पिछे चले गये. तब मुनिश्रीको आग्रहसे इनके मातापिताके पाससे लेकर महात्मा शेठ [illegible]जी सुलतानचंदजी कांकरिया नयाशहर वासी इन्होंने अपने पास रक्खे.

मुनिश्री अपने गुरुके साथ विहार करने लगे. यह गुरु शिष्यनें प्रथम चोमासा 'नया'शहरका ही कीया. दूसरा चोमासा मेवाड शाहपूरका. ३ रा चोमासा मेडतेका. ४ था शाहपुरका. ५ वां जिल्हा झालरापाटनकी 'छावनी'का. ६ ठा मेवाडमें केकडीका. यह पांच चोमासें मुनिश्रीनें अपने गुरु महाराजके संग करे. और छठे चोमासेंमे गुरुवर्यका वियोग काल आया. मुनि श्री 'कुन्दनमलजी' गुरुवर्य महाराजनें आयुष्यकी समाप्ती जानकर ३ दीनका संथारा कीया और चौथे दिन संवत् १९५७ श्रावण शुद्ध १० को स्वर्ग चले गये. फिर सर्व श्रावकोनें मिलकर मुनिश्री की महोत्सवसे प्रेत क्रिया किया. उस समय आश्चर्यजनक बात यह हुई कीं उनका चोल पट्टा और मुपत्ती अग्निसे विमल निकले. इनपर एक डाग भी नही था. यह जैनधर्म सत्क्रिया पालनका प्रभाव !

गुरुवर्यका वियोग हुवा. पासमें अन्य कोई संत नही. उधर नव तारुण्य दशाका आरंभ. इस प्रकार संकटमें भी धीरतासें सत्क्रियाचरण गुरुके पास ५ बरसके किये ज्ञानाभ्याससे व्याख्यानादि सुनवाना देश विदेशगमन इत्यादि करने लगे. उस चोमासेके बाद विहार करके शाहपूर आये. ओर सातवां चोमासा श्रावकोंके विनंतीसें वहां शाहापूरका ही किया. वहांसे फिर 'नया'शहर आये. और पिपलीया बजार स्थानकमें उतरे. वहां सब श्रावक मुनिश्री को एकाकी देख और गुरुवर्यका वियोग सुन बहुत दुःखित हुए ओर फिर श्रावकवर्य गुलाबचंदजीनें महाराजको वहांसे आगे जाने दिया नही. और एक विद्वान गीर्वाण भाषा निपुण शास्त्रीको मुनिश्रीके ज्ञानाभ्यासके लिये रख दीया. उनके पास मुनिश्रीनें कितने दिन तक अभ्यास कीया. ओर आठमा चोमासाभी यहां का हुवा *

* यह जो आठ चोमासें मुनिश्रीनें लगोलग (पास-पासही) किये है सो कारणसे किये हैं. (शास्त्रोमें नियम तीसरे वर्षका है)

वहांसे इतर (दूसरे) संतोंका संग मिलनेपर विहार करके मुनिश्री जोधपुर आये. वहां मुनिश्रीको शिष्यका लाभ हुवा. (जो अभी हर्षचंद्रजी महाराज विद्यमान है.) फिर विहार करके मारवाड जिल्हा परबतसर ग्राम बड्डु आये. यहांही नववा चौमासा कीया. दसवा फिर मारवाडांतर्गत गोडवाड प्रांतमें बाणेरावके पास सादडी शहरमें हुवा.

चौमासाके अनंतर विहार करके (श्रावकोंकी वीनंती आनेपर) जालोर पधारे और जालोरसे पीछे 'नयाशहर' आते मार्गमें 'रास' है वहां वैशाखके महिने आये (यह नयाशहरसे दस कोस है.) वहां मुनिश्री हर्षचंद्रजीकी (संवत १९६२ ज्येष्ठ शुक्ल १३ के दिन महोत्सवके साथ) दीक्षा हुई. मुनिश्रीको शिष्य प्राप्ति होनेपर फिर नया शहर आये. इग्यारमा चौमासा यहांका हुवा.

बारवा चौमासा मेवाडमें ग्रामपुरका. तेरवा फिर सादडीका हुवा ॥ चौमासा होनेके पश्चात मुनिश्री शिष्य सहित मेवाड उदेपूर राज्यान्तर्गत ग्रामोंमें विचरतेथे. उस वखत (संवत् १९६४) जिल्हा ग्वालियर शहर लश्करके श्रावकवर्य रीखबदासजी धाडीवाल मुनिश्रीके दर्शनार्थ रूपायली ग्राममें आये. और लश्कर आनेकी बहुत विनंती की. विनंतीको मुनिश्रीने मान्यकर अवसर देख लश्करको प्रयाण कीया, (और भाई पीछे लौट गये.) मार्गसे जाते २ देश हाडोती कोटा बुंदी होते हुए देश झालावाड शहर झालरा पटण पधारे. वहां श्रावकवर्य रीखबदासजी लश्करके सर्व श्रावकोंके तर्फसे चौमासाकी विनंती लेकर आ पहुंचे. उस विनंतीको मान्यकर गुना सीपरीकी छावनी होकर मुनिश्री लश्करमें आषाढ शुद १० मीतीको आये. यह चवदवा चौमासा यहांका हुवा.



ग्रंथ प्रसिद्ध कर्ताका जीवन चरित्र.



मारवाड देशमें हरसोर नामक ग्राम है. वहां बहुत कालसे कासवा ये वंश वास करता है. वहां जे भाणजी नामके इसवंशके मूल पुरुष थे. इनको ३ पुत्र हुए. जोहारमलजी (१) नेमिदासजी (२) मगनमलजी (३). मगलमलजीका जन्म १८९९ संवत् में हुवा. जोहारमलजी और नेमिदासजी व्यापार निमित्त हिंगणघाट आये. उनके बाद मगनमलजी भी संवत् १९१३ में भाईके पास आके व्यापार करने लगे. मनगमलजीका व्याह लूणकर्णजी पोखरणाके कन्या (दोलीबाई) से हुवा. भाग्यसे संपत्ती प्राप्त हुइ, परंतु उनकूं संतान न रहा. फिर संपत्तीको वारिस होना इसलिये अजमेरमें जवानमलजी कासवा का पुत्र गणेशमलजीको दत्तक (खोले) लीये. यह ही इस ग्रंथके प्रसिद्ध कर्ता.

इनका जन्म सं० १९४४ आश्विन वदि २ को छगणीबाईके कुक्षीसे हुवा. दत्त विधान १९५७ सालमें हुवा. तबसे मगनमलजीके संपत्तीके मालिक हो गये.

मगनमलजीका संवत् १९६४ में मृत्यु हुवा, तब गणेशमलजीकी उमर २० वर्ष की थी. इनोने मुनि श्री दयाचंद्जी के पास अजमेरमें सम्यक्त्व धारण कीयी. इनोने रु० ७०० इस ग्रंथ छपानेमें खर्च कीये है. इस लीये इस महाशयको धन्यवाद है. और ऐसे ही अन्य महाशय पुस्तकें छपावेंगे तो स्वधर्मीय लोगोंको और उसको ज्ञान प्राप्ती होगी. और जगत्के धन्यवादको पात्र होगा.

जै० श्वे० स्था० र० चिं० सभा.



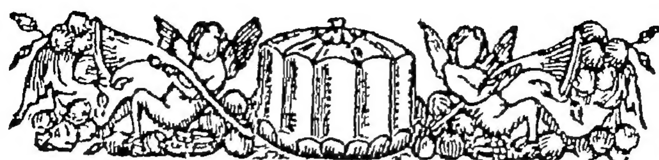
प्रसिद्ध कर्ता

श्रीयुत. गणेशमल सिरदारमल कांसवा.

(जन्म स० १९४४)　(जन्म स० १९६६)

हिंगणघाट.

The Bombay Art Printing Works Fort



धन्यवाद.



यह 'सिद्धान्तशिरोणणि' अमूल्य ग्रंथ, पूज्यजी महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री 'स्वामिदास'जी महाराजके सांमदायानुयायी पाटानुपाट बालब्रह्मचारी मुनिश्री 'रामचंद्र'जी महाराजनें मणीत किया है। अनेक श्रावकोंके नम्र विनंती पर लक्ष देके और उन्हो की अपने पास विमल भक्ति देखकर मुनिश्रीनें यह काम हाथमें लिया. और २ मासके अत्यल्पावधीमें बहुत ग्रंथ निरीक्षण करके सारभूत सद्यः फलदायक ऐसे मचुर विषयोंसे यह ग्रंथ पूर्ण किया. इसमें मुनिश्री इतर कर्म व्यग्रतासे बहुत श्रम पाये. लोकोद्धारार्थ देह भी समर्पण करनेका जिनका दृढ मनःपरिग्रह, उस मुनिश्रीनें ये श्रम कुछ मनमे लाये नही। इसके हम अनंतवार मुनिश्रीपदाब्जी मणत हो कर आजन्म आभारी है. यह उपकार और भव व्याघ्र जंभाके भयसे यह ग्रंथरूप खड्गने बचाया इसके पावपर देह घसघस यदि व्यय कीया जाय तो भी भर पानेका नही. यह निश्चित है. मुनिश्रीकी इस विषयमें प्रशंसा की उतनी थोडी है. हम भविजन यदि अहर्निश आजन्म स्तुती करेंगे, तथापि थोडी ही है. मुनिश्री की पूज्यता देख हम हर्ष मुग्ध हो गये है इसलिये मुनिश्रीको अनंत धन्यवाद समर्पण करते है.

समेतही इस ग्रंथका स्व द्रव्य खर्चकर छपाके प्रसिद्ध करनेहारा को भी धन्यवाद दीये जाते है. मुनिश्रीके नित्य व्याख्यानका परिणाम जिनोके मन पर हुवा उनमेसे यह गृहस्थ एक है. इनका नाम 'मगनमलजी गणेशमलजी कासवा' इन्होनें अपना और दूसरेंका भी तारण करनेको (ज्ञानवृद्धीसे) स्व द्रव्यसे उपाय कीया. मुनिश्रीका अमूल्य ग्रंथ भवपारदायक इस उपायसे आदीनधनी जनको विना मूल्य ज्ञान लाभ देवेगा। यह सर्व श्रेय महाशय 'गणेशमलजी'के ऊपर ही है. और वे शतशः धन्यवाद पात्र है.

श्री जैन श्वेतांबर स्थानकवासी (साधुमार्गी)
रत्नचींतामणी सभा.
शहर हींगणघाट जीले वर्धा.
(सी० पी०)

प्रेसमालककी विनंति.

हिंगणघाट सभाकी ओरसे जो पोथी छापनेको मुझे मिलीथी बराबर उस मजकुर मुजबही छापनेका मेरा अधिकार था और उस मुजब ही छाप दिया है. और भी सभाके हुकमसे मेंने यह काम अति ही शीघ्रतासे याने १२ मासका काम ३ माससे पूरा कर दिया है.

मालक, 'भारतबंधु प्रिन्टिंग वर्क्स.'



भूमिका.



॥ 'स्व स्वधर्म रताः सर्वे प्राप्नुवन्ति परांगतिं' ॥



मुमुक्षु महाशयो !

इस दुस्तर और दुःखमय भव सागरके पार होनेको एक धर्मही मार्ग है। धर्म विना अन्य मार्ग नही. अर्थात् जो जो प्राणियोंको मुक्त होनेकी अभिलाषा हो वे इस मार्गसें अवश्य क्रमण करे। परंतु यह धर्म जाननेकी बुद्धी एक मानव प्राणियोंमेंही है, जिस कारणसेही मानव श्रेष्ठ समझा जाता है. केवल यह ही नही तो स्वदेहको कष्ट दे अपने मनको आत्मवश कर धर्मके तत्वसे वर्ताव करनेकी भी शक्ति उत्पन्न कर सकता है यह श्रेष्ठ कारण है.

प्रत्येक प्राणियोंको उनके भाषासे कहा समझता है; परंतु एक स्वाभाविक धर्म छोड मोक्ष मार्गसे जाना यह बुद्धी उनको होती नही. वह बुद्धी मानवको उपदेशसे आती है और उसमें वर्ताव करनेकी उत्सुकता भी प्राप्त होती है; तस्मात् मानव श्रेष्ट है.

परंतु यह धर्म मार्गसे मानव यदि क्रमण न करै तो तिर्यंच प्राणीमें और मानवमें कुछ भी तफावत नही, वह पशू ही है. क्योंकि कहा है:—

'आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणां ॥
ज्ञानंहि तेषामधिकं विशेषं ज्ञानेनहीनाः पशुभिः समानाः ॥

आहार सुषुप्त्यादि सर्व गुण सर्व प्राणियोंमें वास्तव्य करते है वैसे मानवमें भी है तो मानवेतर और मानवमें फिर अंतर क्या है? कुछ भी नहि. मानव पशू ही है-बलके पशुसे भी नीच है. धिक्कार! मानवको; यदि उसे सिंहासन मिलके उस मुताबिक वर्ताव करता नही.

तिर्यंचोंको अपने धर्मसे चलना यह अभिमान—और मानव पराया धर्मका अनुकरण करता यह देख अज्ञानी तिर्यंचोंको संदेह ही प्राप्त होता है कि 'अपन कौन? और ये कौन? वर्ताव तो एक ही है. क्या हम मानव है?अगर हो तो (हंसके) अत्यानंदसे हमको भी मुक्तता प्राप्त होगी'। तिर्यंच यह नही समझता कि मुक्ति मिलनेका मार्ग अन्य है. क्योंकि मानवको यह श्रेष्ट समझके उसके मुताबिक वर्ताव करना चाहता है. कहा है:-

'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः'

जैसे श्रेष्ट आचरते है वैसे इतर भी आचरते है ॥ मानव सदृश अपना भी वर्तन समझकर आनंद मानते। इसका कारण यह है की मानवोंनें अपना जो श्रेष्ठाचरण उसको छोड दिया यह एक प्रकारका अपमान है. नीचने ऊंचके समान बैठना यह क्या ठीक है ? यह व्यावहारिक दृष्टान्तसे भी जान पडता है.

तस्मात् महाशयो! मानवने अपने पदकी लज्जा राख तिर्यंच

सामान्य वर्तन छोड अपना श्रेष्ठ आचरण करना यह अत्यावश्य है. ज्ञान प्राप्तिसे श्रेष्ठ आचरण हुवा. जीव अनेक भवानुभव ले कर परम पुण्यसे मानव देह लेता है. क्यों ,कर ? मुक्त्यर्थ. मानव देहमें जाकर ज्ञानसे मुक्ति प्राप्त करना यह जीवका इष्ट हेतु.

ज्ञान प्राप्त करनेको धर्म होना.

उक्तं चः—

'धर्मोऽयं वै ज्ञान मार्गोपदेशो येनायं वै शुद्धतां याति देहः' ॥

धर्मका शास्त्रोक्ताचरण ऐसा अर्थ है. उसके जीवदया दान इत्यादि अर्थ भी होते है. यह धर्माचरण करके मुक्ति प्राप्त होती है । देखिये; जीवोंके उपर दया करना जिसको जीवदया कहते है.

दान देना यह गरीबोंके उपर एक प्रकार दया ही है. और धन-मानादिक प्राप्त हुये उपर मत्तता प्राप्त होती है उसको शासन सन्मार्ग पर लाना इसको शास्त्रोक्ताचरण बोलते है. यह आचरण कर परिजनको आनंद जिससे वे भी सन्मार्गका वर्तांव करते है. किं बहुना? प्राणसे भी प्यारा अपना धर्म समझते है.

कहा है किः'—एकः प्रेम्णा पश्यत्यन्यः पश्यति तथैवतंप्रेम्णा ॥
तत्सदृशाचरणं तत्कुरुते गच्छत इतः परंभद्रं' ॥

यह धर्माचरणसें मोक्ष मिलता है. पुण्यसे ईह परत्र सुख होता है. दयासे कीर्ती प्राप्त हो कर नाम मरे ऊपर भी चिरस्थायी होता है. जिधर उधर अत्यानंद हो परिजनोको भी उसका अनुकरण करके मुक्ति प्राप्त करनेकी इच्छा होती है.

देखिये महाशयो ! यह मानव देहसे कितना लाभ है?

यह धर्म किस तरह है?

अनेक संशयोच्छेदी परोक्षार्थस्यदर्शकम् ॥
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यंध एव सः ॥

मनमें आये हुवे अनेक संशयोंका छेदन कर श्रेष्ठ फल दिखानेवाला यह शास्त्ररूप लोचन नाम नेत्र है. यदा यदा मानव सन्मार्गसे भ्रमित हो अन्य मार्ग पर जाता है उसको फिरसे उसी मार्ग पर यह शास्त्रही लाता है ॥ इसको लोकमें 'विवेक' कहते हैं. विवेक शास्त्र ग्रंथोंके पठणसे आता है, अर्थात् पठण करना अत्यावश्य है.

यह उद्देशसे ही यह ग्रंथ करनेमें आया है. पूर्वकालमें अपने पूर्वज बहुतेरे धीमान् हो गये. उन्होंने ऋषि प्रणीत संस्कृत अर्द्धमागधी भाषाके मूल ग्रंथ पठण किये. परंतु इस कालमें संस्कृत मागधी अल्पमति लोक बलके और निरुद्योगी जैनी होनेसे उनको अगम्य हो गया है. जिससे मोक्ष और ज्ञान और धर्म उनको मिलना अशक्य है. यह देख पूर्वज बहुत दयासे संस्कृत मागधीकी भाषा करनेमें उद्योगी भये. यह उपकार फिटता नही. वह ही भाषा प्रबंध प्रायः मार्ग दिखानेमें दक्ष है. यह मनमें ले कर ये ग्रंथ रचना की है, जिसको निरंतर एक चित्त पठण कर मुमुक्षु महाशय ज्ञान और धर्म प्राप्त करेंगे यह प्रबल आशा है.



ग्रंथका संक्षिप्त वर्णन.



इस ग्रंथका नाम सिद्धान्तशिरोमणि है. ये २ खण्डमें विभक्त किया है. दोनो खण्ड मिलके एकंदर ३८ प्रकरण ग्रथित किये हैं. प्रथम खण्डमे ७ और दुसरेमें ३१ डाले हैं. इस ग्रंथमें जैन धर्मीय लोगोंको जो जरूर सो सब आया है. इसमे नित्य स्तवन स्तोत्र छन्द और ज्ञान विषय भी भली भांति रक्खे गये है. यह श्रावक तथा साधु लोगोंके पठन पाठन योग्य है. जिसके सावधान वाचन करने पर धर्म ज्ञान और मोक्ष लाभ होवेगा, ये निश्चित है. इस प्रकार ग्रंथ मुनिश्रीनें भविजन तारणार्थ किया और गणेशमलजी कांसवानें प्रसिद्ध किया ये जैन धर्मीय लोगो पर उपकार हुआ है. उनकी उदारताको धन्य है.

सर्व भाइयोंका कृपाभिलाषी,

भवानीदासजी चुन्नीलालजी कटारिया
प्रेसिडेंट,
श्री जैन श्वेतांबर स्थानकवासी
(साधुमार्गी) रत्नचिंतामणि सभा.
हिंगणघाट जि० वर्धा.
सी. पी.

जेठमल लोढा, सेक्रेटरी
रत्नचितामणी सभा.
हिंगणघाट.
जि० वर्धा.
सी. पी.



अनुक्रमणिका.

सामायिक—प्रतिक्रमणादिक नित्यस्मरणम्.

सिद्धान्त शिरोमणि—प्रथम खंडः



प्रकरण १ ला—स्तोत्रः—

प्रकरण २ रा—छंदः—

प्रकरण ३ रा--पदः—

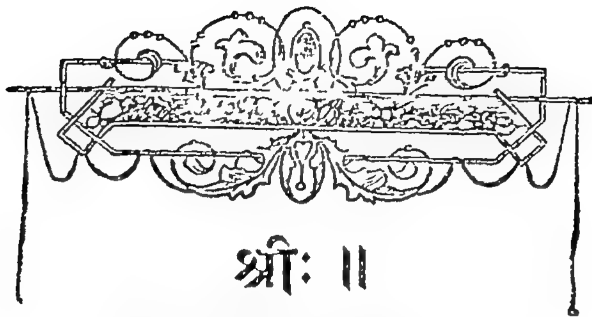
प्रकरण ४ था—स्तवनः—

प्रकरण ५ वा--लावणीः--

प्रकरण ६ ठ्ठा--होरीः--

प्रकरण ७ वा--व्याख्यानः—

द्वितीय खंड.



श्रीः ॥

अथ नमस्कार ॥



णमो अरिहंताणं (१) णमो सिद्धाणं (२) णमो आयरियाणं (३) णमो उवज्झायाणं (४) णमो लोये सव्वसाहूणं (५) एसो पंच णमुकारो (६) सव्व पावप्पणासणो (७) मंगलाणं च सव्वेसि (८) पढमं हवइ मंगलं (९) ॥

इति नमस्कार समाप्त ॥



अथ तिक्खुत्तोकी पाटी ॥

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं, वंदामि, णमंसामि, सक्कारेमि, संमाणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥

इति तिक्खुत्तोकी पाटी समाप्त ॥

अथ इरियावहियाएकी पाटी ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छम्.

इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए (१) गमणा गमणे (२) पाणक्कमणे (३) वीयक्कमणे, हरियक्कमणे (३) ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे (४) जे मे जीवा विराहिया (५) एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया (६) अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउ ठाणं संकामिया, जीवियाउ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (७) ॥

इति इरियावहियाएकी पाटी समाप्त ॥

अथ तस्सउत्तरीकी पाटी ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, णिग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं (८)

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए (१) सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं (२) एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो (३) जाव, अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं, न पारेमि (४) ताव, कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं, वोसिरामि (५)

इति तस्सउत्तरीकी पाटी समाप्त ॥

अथ लोगस्सकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्त ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ [आर्यावृत्त.] उसभ १ मजियं २ च वंदे, सभव ३ मभिणं ४ च सुमइं ५ च । पउमप्पहं ६ सुपासं ७, जिणं च चंदप्पहं ८ वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ९, सीअल १० सिज्जंस ११ वासुपुज्जं १२ च । विमल १३ मणंतं १४ च जिणं, धम्मं १५ संतिं १६ च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं १७ अरं १८ च मल्लि १९, वंदे मुणिसुव्वयं २० नमिजिणं २१ च । वंदामि रिट्ठनेमिं २२, पासं २३ तह वद्धमाणं २४ च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इति चतुर्विंशति स्तवनामक लोगस्सकी पाटी समाप्ता ॥

अथ सामाइक लेनेकी पाटी ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि, नकारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इति सामाइक लेनेकी पाटी समाप्ता ॥

अथ शक्रस्तवनामक नमुत्थुणंकी पाटी ॥

नमोत्थुणं, अरिहंताणं भगवंताणं (१) आइगराणं तित्थगराणं, सयं संबुद्धाणं (२) पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं (३) लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं (४) अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, (जीवदयाणं) बोहिदयाणं (५) धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं (६) दीवोताणं सरणगइपइट्ठा) अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं (७) जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं (८) सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं (९) ॥

इति शक्रस्तवनी पाटी समाप्त ॥



अथ सामाइक पारनेकी पाटी ॥

नवमो सामायिक व्रतरे विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं ॥ मन, वचन, कायारा जोगपाडुवे ध्यान प्रवर्ताया होय ३ सामायिकमें संभालना नहीं कीधी होय ४ अणपूगी पाड़ी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ दस मनरा, दस वचनरा, बारे कायारा, बत्तीसं दोषांमायलो कोई दोष लागो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ सामायिकमें स्त्री कथा, भक्त कथा, देश कथा, राजकथा, ए चार कथा मांयली कोई विकथा कीधी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिक पाड़नेकी पाटी समाप्त ॥

सामाइक पाड़्या पछे एवुं पाठ कहवुं.

सामायिक समकाएणं, फासियं, पालियं, सोहियं, तीरयं, कित्तियं, आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिककी छ पाटियां समाप्त ॥

अथ सामायिक लेने की विधि ॥

आसण छोड, दो हात जोड, श्रीगुरुदेवकी आज्ञा मांग, "इरियावही"की पाटी "जीवीयाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं" पर्यंत भणवी ॥ पछे—"तस्सुत्तरीकी" पाटी भणने काउस्सग्ग करवो. काउस्सग्गमें "इरियावही" की पाटी "जीवीयाओ ववरोविया" पर्यंत मनमेंही गुणणी "नमो अरिहंताणं" मनमें कहिनें काउस्सग्ग पाड़णो. पछे "लोगस्स" की पाटी कहवी ॥ पछै "करेमि भंते" की पाटी "जाव नियमं" सुधी कहीनें आगल मुहूर्त घालणा हुवे तिके घालणा ॥ पछे "पज्जुवासामि" थी ले "अप्पाणं वोसिरामि" सुधी पाठ कहवुं ॥ पछे डावो गोडो ऊभो राखी दोनुं हाथ जोडी "नमुत्थुणं" नी पाटी दोय बार कहवी ॥ दूजा नमुत्थुणं रे अंते "ठाणं संपाविउ कामस्सणं णमो जिणाणं जिअ भयाणं" एम कहवुं ॥ पछे आसण माथे बेसीनें, सामायिक कालमें "नमोकार, तथा बोलचाल" गुणणा, पढणा ॥

इति सामायिक लेनेकी विधि समाप्त ॥

अथ सामायिक पारवाकी विधि ॥

सामायिक पाडती वगत " इरियावही " की पाटी और "तस्स उत्तरी" की पाटी कही काउस्सग्ग करवो । काउस्सग्गमें "लोगस्स" की पाटी मनमें कहवी. 'नमोअरिहंताणं' कही काउस्सग्ग पारवो. फेर 'लोगस्स' प्रगट कहणो ॥ दोय नमुत्थुणं पूर्ववत् कहणा ॥ पछे नवमो सामायिक पारवाकी पाटी " न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं " सुधी कहवी ॥ अंतमें तीन नवकार कही ऊठवुं ॥

इति सामायिक पारवाकी विधि समाप्त ॥





अथ प्रतिक्रमण ॥

अथ इच्छामिणं भंतेकी पाटी ॥

इच्छामिणं भंते तुब्भेहि अभणुंणायसमाणे देवसियं पडिक्कमणं ठाएमि, देवसियं णाण दंसण चरित्ताचरित्त तप अतिचार चिंतवणार्थ करेमि काउस्सग्गं ॥

इति इच्छामिणं भंतेकी पाटी समाप्त ॥

अथ इच्छामि ठामिकी पाटी ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसियो अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो, असावग पाउग्गो नाणे तहदंसणे चरित्ता चरित्ते सुण सामाइए तिन्हं गुत्तीणं चउन्हं कसायाणं पंचन्हमणु व्वयाणं तिन्हं गुणव्वयाणं चउन्हं सिक्खा-

वयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियंतस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति इच्छामि ठामिकी पाटी समाप्ता ॥

अथ आगमे तिविहे की पाटी ॥

आगमे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा, सुत्तागमे, अत्थागमे तदुभयागमे; एहवा श्री ज्ञानके विषे जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं; जंवाइद्धं १ वच्चामेलियं २ हीणक्खरं ३ अच्चक्खरं ४ पयहीणं ५ विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीणं ८ सुट्ठुदिन्नं ९ दुट्ठु पडिच्छियं १० अकाले कओ सज्झाओ ११ काले न कओ सज्झाओ १२ असज्झाए सज्झाइयं १३ सज्झाये न सज्झायं १४ भणतां गुणतां चिंतवतां ने विचारतां ज्ञान अने ज्ञानवंतकी आशातना कीनी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति आगमे तिविहेकी पाटी समाप्ता॥

अथ दंसण श्री समकित की पाटी ॥

आर्या वृत्तम् ॥

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिणपण्णत्तं तत्तं, ए सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥ परमत्थ संथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावन्नकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २ ॥

एवा श्री समकितके विषै जे कोई अतिचार लागो हुवे तौ आलोउं। जिन वचनमें शंका आणी होय १ परदर्शनरी वांछा कीधी होय २ फल संदेह आण्यो होय ३ पर पाखंडीरी प्रशंसा कीधी होय ४ पर पाखंडीरो संस्तव परिचय कीधो होय ५ तौ म्हारा समकित रूप रत्नरे विषै मिथ्यात्व रूपरज, मैल, खेह लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति दंसण श्री समकितकी पाटी समाप्त ॥

अथ बारे व्रत और उनके अतिचार ॥

१ पहिलो अणुव्रत—थूलाओ पाणाइवायाओ, विरमणं, त्रसजीव, बेइंदिय, ते इंदिय, चउरिंदिय, पंचेंदिय, विन अपराधे जाणी प्रीछी आकुटी संकल्पी हणवारी बुद्धि करीनें हणवाहणावणका पचखखाण जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा॥ [एवा पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होवे तौ आलोउं । रीस वशै गाढा बंधण बांध्या होय, गाढा घाव घाल्या होय, चामना छेद कीधा होय, अतिभार घाल्या होय, भात पांणीना विच्छेद कीधा होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

२ दूजो अणुव्रतः—थूलाओ मोसावायाओ विरमणं कन्नालियं, गोवालियं, भोमालियं, थापणमोसो, सूंक ले कूडी साख, इत्यादिक मोटका झूठ बोलणका पचक्खाण । जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा ॥ (एवा दूजा थूल मृषा

वाद विरमण व्रतके विषै जो कोई अतिचार लागो होय तौ आलोउं सहसात्कारे किणी प्रति कूडो आल दीधो होय १ रहसछांनी वात प्रगट कीधी होय २ पोतानी स्त्रीका मर्म प्रकाश्या होय ३ मृषा उप-देश दीधा होय ४ कूडा लेख लिख्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ २ ॥

३ त्रीजो अणुव्रतः—थूलाओ अदिन्नादाणाओ विरमणं, खातर खिणी, गांठ छोडी, ताळो पर कूंची, वाट पाडी, पडी वस्त मोटकी धणियां सेती जांणीने लेवणका पचक्खाण ॥ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा ॥ [एवा तीजा थूल अदत्तादान विरमणा व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । चोराई वस्तु लीधी होय १ चोरने साझ दीधो होय २ राज्य विरुद्ध कारज कीधो होय ३ कूडा तोला कूडा माप्रा कीधा होय ४ वस्तमें भेल समेल सखरी दिखाय नखरी आपी होय ५ तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

४ चोथो अणुव्रतः—थूलाओ मेहुणाओ विरमणं, पोतारी स्त्री उपरांत मैथुन सेवणका पचक्खाण । जावज्जीवाए देवता संबंधी दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा, मिनख तिर्यंच संबंधी इक विहं इकविहेणं न करेमि कायसा ॥ [एवा चौथा थूल स्वदारा संतोष विरमण व्रतके विषै जो कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । इत्तर थोडा काल राखीसूं गमन कीधा होय १ अप गृहीसूं गमन कीधा होय २ अनंग क्रीडा कीधी होय ३ परा-या व्याव नातरा जोडिया होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषा सेवि-या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ४ ॥

५ पांचवो अणुव्रत–थूलाओ परिग्गहाओ विरमणं, खेत घरको, रूपा सोनाको, धन धान्यको, दुपद चौपदको, घर विखराको यथा परिमाण कीधो छे ते उपरांत आपको करी परिग्रह राखणका पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा पांचवा थूल परिग्रह विरमण व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । खेत घरको १ रूपा सोनाको २ धन धान्यको ३ दुपद चौपदको ४ घर विखराको ५ यथा परिणाम कीधो छे ते अतिक्रम्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ५ ॥

६ छट्ठो दिशिविरमण व्रत–उंची नीची तिरछी दिशाको यथा परिमाण कीधो छे ते उपरांत स्वइच्छायें जाईनें पांच आश्रवद्वार सेवणका पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा छट्ठा दिशिविरमण व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं ॥ उंची नीची तिरछी दिशाको यथा परिमाण कीधो छे ते अतिक्रम्यो होय ३ एक दिशा घटाई होय, एक दिश वधाई होय ४ संदेह पडिया पंथ आगे चाल्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ६ ॥

७ सातमो उपभोग परिभोग विरमण व्रतः–उल्लणियाविहं १ दंतणविहं २ फलविहं ३ अब्भंगणविहं ४ उवट्टणविहं ५ मज्जणविहं ६ वथ्थविहं ७ विलेवणविहं ८ पुप्फविहं ९ आभरणविहं १० धूपविहं ११ पेजविहं १२ भक्खणविहं १३ ओदनविहं १४ सूपविहं १५ विगयविहं १६ सागविहं १७ माहुरविहं १८ जीमणविहं १९ पाणीविहं २० मुखवासविहं २१ वाहनविहं २२ सयणविहं २३ पन्निविह २४ सचित्तविहं २५ द्रव्यविहं २६ इत्यादिक छाईस बोलांकी मरजाद कीधी छे ते उपरांत उपभोग परिभोग भोगणका पचक्खाण, जाव-

ज्जीवाए एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा सातवां उपभोग परिभोग विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । पच्चक्खाण उपरांत सचित्तको आहार कीधो होय १ सचित्तप्रतिबद्धको आहार कीधो होय २ अपक्कको आहार कीधो होय ३ दुपक्वको आहार कीधो होय ४ तुच्छ ओषधि भक्खण कीधा होय; थोडो खाय घणो नाखियो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ए भोजनथकी कह्या. हिवे कर्म थकी पनरे कर्मादान श्रावकनें जाणवा जोग छै पिण आदरवा जोग नथी. तं जहा, ते कहै छै इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ दंतवाणिज्जे ६ लक्खवाणीज्जे ७ रसवाणिज्जे केसवाणिज्जे ९ विसवाणिज्जे १० जंतपिल्लणकम्मे ११ निल्लंछण कम्मे १२ दग्गिदावणया १३ सरदह तलाव परिसोसणया १४ असईजणपोसणया १५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

८ आठमो अनर्थ दंड विरमण व्रतः—चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा, अवज्झाणाचरियं पमाया चरियं, हिंसपयाणं, पावकम्मोवएसं, एवा अनर्थ दंड सेवणरा पच्चक्खाण, जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ॥ (एवा आठवां अनर्थदंड विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं । कंदर्पकी कथा कीधी होय १ भंड कुचेष्टा कीधी होय २ मुखर वचन बोल्या होय ३ अधिकरण जोडी मूक्या होय ४ उपभोग परिभोग अधिका वधाऱ्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ८ ॥

९ नवमो सामायिक व्रतः—सावज्जंजोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मनसा वयसा कायसा एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं ते वारे सिद्ध ॥

(एवा नवमा सामायिक व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तौ आलोउं । मन वचन कायरा जोग पाडवे ध्यान प्रवर्तीया होय ३ सामायिकमें संभालना नही कीधी होय ४ अणपूगी पाड़ी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ९ ॥

१० दसमो देसावगासिक व्रतः–दिन प्रतिप्रभात थकी प्रारंभीनैं पूर्वादिक छः दिशकी जेटली भूमिका मोकली राखी छे ते उपरांत स्वइच्छायें कायायें जईनैं पांच आश्रवद्वार सेवणका पच्चक्खाण । जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ते मांहि द्रव्यादिक नेमकी मरजादा कीनी छै ते उपरांत भोगणरा पच्चक्खाण । जाव दिवसं पज्जुवासामि, एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तौ छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥ [एवा दसमा देसावगासि व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । नेमी भूमीकाथी वस्तु बारथी अणाई होय १ मोकलाई होय २ शब्द करी, रूप करी, पुद्गल नांखी आपो जणायो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १० ॥

११ इग्यारमो पोषध व्रतः—असणं पाणं खाइमं साइमंका पच्चक्खाण, अबंभ सेवणका पच्चक्खाण, अमुक्कमणि सोवनका पच्चक्खाण, माला वग विलेपणका पच्चक्खाण, सत्थ मुसलादिक सावज्ज जोगका पच्चक्खाण, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तौ छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवा इग्यारमा पोषध व्रतके विषै जै कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, पोसामें सज्जा संथारो न जोयो होय, माठी तरे जोयो

होय १ न पूंज्यो होय, माठी तरे पूंज्यो होय २ उच्चार, पासवण, भूमिका न जोइ होय, माठी तरे जोई होय ३ न पूंजी होय, माठी तरे पूंजी होय ४ पोसामें निद्रा, विकथा, प्रमाद कीधो होय ५ तस्स मिच्छामि दुकडं ॥ जावतां आवसही२ नही कीधुं होय, आवतां निसिही२ नही कीधुं होय, इंद्रमहाराजरी आज्ञा नहीं लीधी होय, थोडी दूर पूंज्यो होय, घणी दूर परठी होय, परठने तीन वार वोसरे वोसरे नहीं कीधुं होय, आयने चोईस थव नहीं कीधुं होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ बारमो अतिथि संविभाग व्रतः—साधु निग्रंथनें फासु एषणीक शुद्ध, असणं १ पाणं २ खाइमं ३ साइमं ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६ कंबल ७ पायपुच्छणेणं ८ (पाडिहारिय) पीढ ९ फलग १० सिज्जा ११ संथारो १२ ओषध १३ भेषज १४ प्रतिलाभतो थको विचरूं एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवा बारमा अतिथि संविभाग व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, सूजती वस्तु सचित्त ऊपर मूकी होय १ सचित्त करी ढांकी होय २ पोतेरी वस्तु पारकी कही होय ३ अहंकार भावे दान दीधुं होय, थोडो दे घणो पोमायो होय ४ भोजन वेला टाळीनें निमंत्रणा कीधी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १२ ॥

इति बारे व्रत तथा उनके अतिचार समाप्त ॥

अथ संलेखणाकी पाटी ॥

अहभंते अपच्छिम मरणांतिय संलेहणा झूसणा आराहणा पोषध साला पूंजीनें, उच्चार पासवण भूमिका पडिलेहीनें, गमणा गमणे पडिक्कमीनें, दर्भादिक संथारो संथारीनें, दर्भादिक संथारे दुरुहीनें, पूर्व तथा उत्तर दिशि पल्यंकादिक आसणें बैसीनें, करयलसंपरिग्गहियं सिर सावत्तं मत्थए अंजली त्ति कट्टु, एवं वयासी, नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जावसंपत्ताणं, एम अनंता सिद्धिजीनें वंदना नमस्कार करीनें नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव ठाणं संपविउ कामे, इम दूजो नमोत्थुणं गुणीनें जयवंता वर्तमान तीर्थंकर महाराजनें वंदना नमस्कार करीनें, पोतेका धर्माचार्यजीनें नमस्कार करीनें, साधु प्रमुख चार तीर्थ, खमावीनें, सर्व जीव राशि खमावीनें, पूर्वे जे व्रत आदर्‍यां छै, तेना जे अतिचार दोष लागा छै, ते सर्व आलोइ, पडिक्कमी, निंदी, निःशल्य थई, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि । सव्वं मोसावायं पच्चक्खामि । सव्वं अदिन्नादानं पच्चक्खामि । सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि । सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि । सव्वं कोहमाणं जावमिच्छा दंसणसल्लं, सव्वं अकरणिज्जं पच्चक्खामि । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, करंतं पि नाणुजाणामि, मणसा वयसा कायसा, एम अठारे पाप स्थानक पच्चक्खीनें, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि

आहारं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए । एम चारे आहार पच्चक्खीनें, जंपीयं, इमं सरीरं इट्ठं कंतं, पियं मणुन्नं मणामं धिज्जं विसासियं समयं अणुमयं वहुमयं भंडकरंडगसमाणं रयण करंडगभूयं माणसियं माणं उन्हं, माणं खूहा, माणं पिवासा, माणंवाला, माणं चोरा, माणं दंसा, माणं मसग्ग, माणं वाहियं, पित्तियं, कफियं, संभीमं सन्निवाहियं, विविहा

रोगायंका, परिसहोवसग्ग फासा फुसंति, एवं पियणं, चरमेहिं उस्सास निस्सासेहिं, वोसिरामि त्ति कट्टु । एम शरीर वोसिरावीनें, कालं अणवकं खमाणे विहरामि । एवी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवी संलेखणाके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, इहलोगासंसप्पउगे १ परलोगासंसप्पउगे २ जीविया संसप्पओगे ३ मरणा संसप्पओगे ४ कामभोगा संसप्पओगे ५ मा मज्ज हुज्ज मरणंते । श्रद्धा प्ररूपणामें फरक आयो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति संलेखणा सातिचार समाप्त ॥

अथ तस्स धम्मस्सकी पाटी ॥

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिउ मि आराहणाए, विरउ मि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कं तो वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥

इति तस्स धम्मस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ तस्स सव्वस्सकी पाटी ॥

तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भासियं दुच्चितियं आलोयंते पडिक्कमामि ॥

इति तस्स सव्वस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ चत्तारि मंगलं की पाटी ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पन्नत्तो धम्मो मंगलं; चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्ध सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरण पवज्जामि ॥

अरिहतांरो सरणो, सिद्धांरो सरणो, केवलि प्ररूपित दया धर्मरो सरणो ॥ च्यार सरणा दुर्गतिहरणा, और सरणो नहीं कोय; जे भव्य प्राणी आदरै तो अक्षय अमरपद होय ॥

इति चत्तारि मंगलं की पाटी समाप्त ॥

अथ अठारे पापस्थानककी पाटी ॥

अठारे पापस्थानक आलोउं । पैलो प्राणातिपात १ दूजो मृषावाद २ तीजो अदत्तादान ३ चौथो मैथुन ४ पांचमो परिग्रह ५ छठो क्रोध ६ सातमो मान ७ आठमो माया ८ नवमो लोभ ९ दसमो राग १० इग्यारमो द्वेष ११ बारमो कलह १२ तेरमो अभ्याख्यान १३ चवदमो पैशुन्य १४ पनरमो परपरिवाद १५ सोळमो अरति रति १६ सतरमो माया मोसो १७ अढारमो मिथ्यादर्शन शल्य १८ ए अठारे पाप स्थानक सेव्या होय, सेवाया होय, सेवता प्रति भलो जाण्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति अठारे पाप स्थानककी पाटी समाप्त ॥

अथ खमासणाकी पाटी ॥

इच्छामि, खमा समणो, वंदिउं जावणिज्जाए, णिसीहिआए । अणु ज्ञाणह, मे, मिउग्गहं । णिसीही, अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो, मे, किलामो अप्प किलंताणं, बहुसुभेणं, भे, देवसी, वइक्कंतो । जत्तां, भे, । जवणिज्जं, च, भे । खामि, खमासमणो, देवसियं, वइक्कमं । आवसियाए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसियाए आसायणाए, तेत्तीसंण्णयराए, जंकिंचि, मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए, सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए; आसायणाए, जो, मे, अइयारो, कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं, वोसिरामि ॥

इति खमासमणाकी पाटी समाप्ता ॥

अथ पंच पदांकी वंदना ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व साहूणं, अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः । पहिले पद णमो अरिहंताणं कहतां सर्वश्री अरिहंत भगवंतजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुइजो । अरिहंतजी महाराज कैसा छे । उप्पन्न नाग दंसणधरा अरहा जिन केवली, जघन्य वीस तीर्थंकर, उत्कृष्ट एक सौ सित्तर देवाधिदेव ते मांहे वर्तमान काले वीस विहरमाण श्रीसीमंधर स्वामी १ युगमंधर स्वामी २ बाहु स्वामी ३ सुबाहु स्वामी ४ सुजात स्वामी ५ स्वयंप्रभ स्वामी

६ ऋषभानन स्वामी ७ अनंतवीर्य स्वामी ८ सूरप्रभ स्वामि ९ विशाल स्वामी १० वज्रधर स्वामी ११ चन्द्रानन स्वामी १२ चन्द्रबाहु स्वामी १३ भुजंग स्वामी १४ ईश्वर स्वामी १५ नेमिप्रभ स्वामी १६ वीरसेन स्वामी १७ महाभद्र स्वामी १८ देवजस स्वामी १९ अजितवीर्य स्वामी २० । चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी करी विराजमान, १००८ लक्षणका धरणहार, त्रिलोक महिया, त्रिलोक वंदनीक, चौसठ इंद्रांरा पूजनीक, अठारे दोषां रहित, द्वादश गुणां करके विराजमान, अनंतो ज्ञान १ अनंतो दरसण २ अनंतो चारित्र ३ अनंतो वीर्य ४ अशोक वृक्ष ५ सुरपुष्प वृष्टी ६ दिव्य ध्वनि ७ चामर ८ सिंहासन ९ भामंडल १० देव दुंदुभि ११ छत्रधारै १२ । जघन्य दोय कोड केवली, उत्कृष्टा नवकोड केवली, वैरै, विचरै, जां महापुरुषांनें म्हारो वनणा नमस्कार हुइजो । कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड मान मोड खमाउं छूं. आप खमवा जोग्य छो । १००८ वार मन वचनने कायाए करी शुजो शुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि संमाणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥ ऐसे तिक्खुत्ताको पाठ तीन वार कहिये ॥ १ ॥

२ दूजे पद नमो सिद्धाणं कहतां सर्व सिद्धजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुइजो । सिद्धजी महाराजा कैवा छे? सकल कार्य सिद्ध करीनें आठ कर्म खपाय, पनरे भेदे सिद्ध सिद्धा ॥ तीर्थ सिद्धा १ अतीर्थ सिद्धा २ तीर्थंकर सिद्धा ३ अतीर्थंकर सिद्धा ४ स्वयं बुद्ध सिद्धा ५ प्रत्येक बुद्ध सिद्धा ६ बुद्ध बोहिय सिद्धा ७ इत्थी लिंग सिद्धा ८ पुरुष लिंग सिद्धा ९ नपुंसक लिंग सिद्धा

१०. स्वलिंगी सिद्धा ११ अन्य लिंगी सिद्धा १२ गृहस्थ लिंग सिद्धा १३ एक सिद्धा १४ अनेक सिद्धा १५ ॥ आठ गुणाकरीनें विराजमान—अनंतो ज्ञान १ अनंतो दर्शन २ अनंतो सुख ३ क्षायिक समकित ४ अटल अवगाहना ५ अमूर्तिपणो ६ अगुरू लघु ७ अनंत अकरग वीर्य ॥ ८ ॥

अडिल्ल छंद ॥

अविनाशी अविकार परम रसधाम है, समाधान सरवंग सहज अभिराम है । शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत है, जगत शिरोमनि सिद्ध सदा जयवंत है ॥ १ ॥ जठै जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, सोग नहीं, भूख नहीं, तृषा नहीं, चाकर नहीं, ठाकर नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, कर्म नहीं, काया नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र नहीं, एकमें अनेक, जोतमें जोत विराजमान, एवा अनंता सिद्ध भगवंत छै, जांनें म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो । कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंमवार हात जोड मान मोड खमाउं छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ पछे तिक्खुताका पाठ ३ कहिजे ॥ २ ॥

३ तीजे पद नमो आयरियाणं कहतां सर्व आचारजजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ आचारजजी महाराज कैवा छे ॥ ज्ञानाचार १ दंसणाचार २ चारित्राचार ३ वीर्याचार ४ तप आचार ५ ए पांच आचार पाळे ५ पंच समित ५ तीन गुप्त ३ शुद्ध आराधे ॥ छत्तीस गुणां करके विराजमान आचारजजी महाराज अर्थका दातार, आठ संपदा सहित, जां महापुरुषांने म्हारो वनणा

नमस्कार हुईजो ॥ कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड मान मोड खमाउं छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ तिक्खुत्तो तीन वार कहणो ॥ ३ ॥

४ चौथे पद नमो उवज्झायाणं कहतां सर्व उपाध्यायजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ उपाध्यायजी महाराज कैवा छै ॥ उपाध्यायजी, गणधरजी, स्थविरजी, वहुश्रुतजी, इग्यारे अंग आचारांग १ सुयगडांग २ ठाणांग ३ समवायांग ४ भगवती ५ ज्ञाता ६ उपासक दसा ७ अंतगड दसा ८ अनुत्तरोववाई दसा ९ प्रश्न-व्याकरण १० विपाक ११ ॥ वारे उपांग—उव्ववाई १ रायप्पसेणी २ जीवाभिगम ३ पन्नवणा ४ जंबूद्वीपपण्णत्ती ५ चंद्पण्णत्ती ६ सूरप-ण्णत्ती ७ निरया वलिया ८ कप्पविडंसिया ९ पुप्फिया १० पुप्फ-चूलिया ११ वन्हिदसा १२ ॥ मूलसूत्र चार—उत्तराध्ययन १ दस-वैकालिक २ नंदीसूत्र ३ अनुयोगद्वार ४ छेदच्यार—दशाश्रुतस्कंध १ वृहत्कल्प २ व्यवहार ३ निशीथ ४ ॥ वतीसमो आवश्यक ॥ आदि देई अनेक ग्रंथका जाणणहार, इग्यारे अंग वारे उपांग चरणसित्तरी करण सित्तरी भणे भणावे ए पचीस गुणे करी विराजमान, तथा चउदे पूर्व इग्यारे अंग भणे भणावे, सात नय, निश्चय व्यवहार प्रत्यक्ष ने परोक्ष दोय प्रमाणके जाणणहार, मनुष्य अथवा देवता कोई पण जेनें विवादमें छलवानें समर्थ नही, सूत्रपाठका दातार उपाध्यायजी महाराज, जांनें म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ कोइ अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड, मान मोड खमाउं छूं, आप खमवा जोग्य छो । १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो॥ पछै तिक्खुत्तोरो पाठ तीनवार कहणो ॥ ४ ॥

५ पांचवें पद नमो लोए सव्वसाहूणं कहतां लोकरे विषै सर्व साधुजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ साधुजी महाराज कैवा छे । स्व पर कार्यका साधनहार, पोतारा धर्माचार्यजी महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री स्वामीजी श्री रामचंद्रजी श्री हरखचंद्रजी महाराज (तथा इण ठिकांणे आप आपके गुरुका नाम कैणा ॥) जघन्य दोय हजार क्रोड साधुजी, उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधुजी, पांचे समिते समिता, तीने गुप्ते गुप्ता, बयांळीस दोष टाळीनें आहार पाणीका लेणहार, छ कायके पीर, छ कायके रक्षक, बावीस परिसहांरा जीतण हार, बावन अनाचारके टालनहार, तेडया जाय नहीं, नूंत्या जीमे नहीं, निर्लोभी, निर्लालची, सूरा वीरा धीरा मोक्ष मार्ग साधै, भगवान् की आज्ञामें विहरै विचरै, शुद्ध संयम पाळै, सत्ताइस गुणांकरी विराजमान पंचमहाव्रत पाळै ५ पांच इंद्रिय वश करै १० च्यार कषाय टाळै १४ भाव सच्चे १५ करण सच्चे १६ जोगसच्चे १७ क्षमावंत १८ वैराग्यवंत १९ मन समाधारणीया २० वय समाधारणीया २१ काय समाधारणीया २२ नाण संपन्ने २३ दंसण संपन्ने २४ चारित्त संपन्ने २५ वेदनी समाअहियासणिया २६ मरणांतिसमा अहियासणिया २७ ॥ इसा साधुजी महाराजनें म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो । कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड मान मोड खमाउं छूं, आप खमवा जोग्य छो । १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो । पछै तिक्खुत्तारो पाठ तीन वार कहणो ॥ ५ ॥

ए पंच पद लोकमें महा मंगलिक छै, महा उत्तम छै, शरण लेवा योग्य छै, वारंवार इण भवमें तथा भवभवमें म्हनें सरणो हुईजो।

इति पंच पदांकी वंदना समाप्त ॥

अथ आयरिय उवज्झाए की पाटी ॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ । जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स, भगवओ अंजलिं करिय सीसे । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहियनियचित्तो सव्वं खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

इति आयरिय उवज्झाएकी पाटी समाप्ता ॥

अथ खमतखामणा ॥

अढाई द्वीप, पनरे खेत्र मांहे तथा वारे श्रावक श्राविका दान देवे, शील पाळै तपस्या करै, भावना भावै, संवर करै, सामायिक करै, पोसह करै, पडिक्कमणा करै, तीन मनोरथ चउदे नियम चिंतवे, एक व्रत धारी, तथा वारे व्रत धारी, मूल गुण उत्तर गुण सहित ते मांहे मोटांनें हात जोड मान मोड पगे लागी खमाउं छूं, छोटांनें समुच्चय खमाउं छूं ॥

इति खमत खामणा समाप्ता ॥

अथ चौरासी लाख जीवाजोनि ॥

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अप् काय, सात लाख तेउ काय, सात लाख वाउ काय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति काय,

चउदे लाख साधारण वनसपति काय, दोय लाख बे इन्द्री, दोय लाख ते इंद्री, दोय लाख चउरिंद्री, च्यार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्जंच पंचेंद्री, चउदे लाख मिनखरी जात, च्यार गत चौरासी लाख, जीवा जूण सूक्ष्म वादर पर्याप्तक अपर्याप्तक जाणतां अजाणतां कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतानें भलो जाण्यो होय मन कर वचन कर काया कर अठारे लाख, चोइस हजार एक सौ वीस १८२४१२० मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति चौरासी लाख जीवाजोनि समाप्ता ॥

अथ खामेमि सव्वे जीवाकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

खामेमि सव्वजीवा, सव्वेजीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ ण केणइ ॥ १ ॥ [आर्या वृत्तम् ।] एवमहं आलोइय, निंदिय गरहिय दुगंछियं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ २ ॥

इति खामेमि सव्वजीवाकी पाटी समाप्ता ॥

दैवसिक प्रायश्चित विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अथ समुच्चय पच्चक्खाण ॥

गंठि सहियं मुठि सहियं नवकारसी पोरसी साढा पोरसी आप आपनी धारणा प्रमाणे तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं

खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेण सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वस माहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥

इति समुच्चय पच्चक्खाण समाप्त ॥

अथ पडिक्कमणाकी विधि ॥

पैली " चौईस स्तव " कीजै । पछै ऊभो होय आसण छोड " तिक्खुत्तो " कहीजे । पछे देव गुरु तथा साधुजी कनें आज्ञा लेई वडासाधर्मी भाइयांकी आज्ञा मांगी " देवसिक पडिकमणा करण की आज्ञा है " इसो कही " इच्छामि णं भंते " की पाटी कहणी । पछै " नवकार " कहणो । फेर " तिक्खुत्ता " को पाठ कही, पैला आवश्यककी आज्ञा मांगी " करेमि भंते " की पाटी कहणी । पछे " इच्छामि ठामि काउस्सग्गं " की पाटी कहणी । पछै " तस्स उत्तरी " की पाटी कहनें काउस्सग्ग ऊभोथको करणो । शक्ति नहीं होय तो वैठ सिद्धासन लगाय जिनमुद्राए काउस्सग्ग करणो । काउस्सग्गमें १४ ज्ञानका अतिचार " जंवाइद्धं " आदि अर्थ रूप चिंतावणा । पछै समकितका ५ अतिचार " जिन वचनमें शंका आणी होय " इत्यादि चितावणा । पछे वारे व्रतांरा दूजा भागरा एवा सू लगाय एक एक व्रतरा पांच पांच अतिच्यार कुल ६० कर्मादानरा १५ संलेहणारा ५ एवं ९९ अतिचार । १८ पापस्थानक तथा " इच्छामि ठामि " की पाटी चितवणी ॥ काउस्सग्गमें " तस्स मिच्छामि दुक्कडं " कठेई नही कहणो ॥ ने " इच्छामि ठामी " की पाटीमें " ठामि काउस्सग्गं " की जगह " इच्छामि पडिकमिउं " कहणो ॥ पछै नवकार मनमें गुणीनें " नमो अरिहंताण " काउसग्ग पाडतां वगत प्रगट कहणो ॥

इति प्रथम सामायिक आवश्यक संपूर्ण ॥ १ ॥

पछै " तिक्खुत्ता" को पाठ कही "दूजा आवश्यककी आज्ञा है" ऐसो कही प्रकट " लोगस्स " की पाटी पढणी ॥

इति दूजो चउविसत्थो आवश्यक संपूर्ण ॥ २ ॥

" तिक्खुत्तो " कही 'तीजा आवश्यककी आज्ञा है' ऐसो कही दोयवार " इच्छामि खमासमणा " की पाटी कहणी । साधु श्रावक दोनुं कने रजोहरण, मुखपत्ती और चलोटो ऐ तीन सिवाय कांइ नहीं राखै ॥ पाटीमें प्रथम " निसीही " शब्द आवे जद मितावग्र-हमें प्रवेश कर ऊभा गोडा राख हाथ जोड गुरु कणे बैठणो । पछे गुरुका चरणांके हाथ लगाय आपके माथे लगावणा. ने छ आवर्त करणा. " अहोकायं काय " इणं अक्षरांसूं तीन आवर्त हुवे है । यथा–दोनुं हाथ लंबा कर हातरी दसूं आंगलियां जमी माथे धर मुखसूं " अ " अक्षर नीचा स्वरसूं कहणो । पछे यूंही दसूं आंग-लियां आंखियां उपर धरतां " हो " अक्षर उंचा स्वरसूं कहणो । ओ पैलो आवर्त हुवो । यूंहीज " का " ने " यं " उचारतां दूजो आवर्त हुवे । तथा " का " ने " य " उचारतां तीनो आवर्त हुवे॥ पछे " जत्ता भे जवणिज्जं च भे " इणां अक्षरांसूं तीन आवर्त हुवे॥ यथा प्रथम " ज " मंद स्वरसूं, " त्ता " मध्यम स्वरसूं " भे " उंचा स्वरसूं, ऊपरली रीते दोनुं हाथ जमी माथे, विचमें (आरती रूप) ने आंख्यां माथे, एक एक अक्षर क्रमसूं बोलता लगावणा ॥ ओ पैलो आवर्त हुवो । " ज. व. णि. " ए तीन अक्षर त्रिविध स्वरसूं ऊपर मुजब उच्चारतां दूजो आवर्त हुवे । " ज्जं. च. भे. " ए तीन अक्षरांसूं पूर्वोक्त रीतिसूं तीजो आवर्त हुवे । ऐसे ६ आवर्त एकवार गुणतां हुवे । दोय वार पाटी गुणनां बारे आवर्त हुवे ।

पेले खमासमणामें " वइक्कमं " तांई कहिने " आवसियाए " इण पद ऊपर ऊभो हुवणो. और गुरु चरणांसूं पाछले पगां सरकणो, मितावग्रह वारे अर्थात् तीन हात अलगो गुरुके सन्मुख ऊभो रही शेष पाठ पढणो। दूजा खमासमणामे पूर्व रीते थोडो शरीर नमावि " इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए णिसीहियाए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीही ' ए पाठ कही गुरुके समीप जाय वैसीनें पूर्वोक्त रीतिसूं छ आवर्त देणा. सारो पाठ वैठो २ पढणो, गुरुके सामें दृष्टि राखणी. दूजा खमासमणायें " आवसियाए पडिक्कमामि " ए दस अक्षर नहीं कहणा ॥

इति तीजो वंदनावश्यक संपूर्ण ॥ ३ ॥

" तिक्खुत्तो " को पाठ कही, 'चौथा आवश्यककी आज्ञा है' ऐसे कही उभो होय " आगमें तिविहे " की पाटी सूं लेयने " इच्छामि ठामि " की पाटी पर्यंत ९९ अतिचार काउस्सग्गमें कह्या सो प्रगटपणे कहाणां " तस्स मिच्छामि दुक्कडं ' देणो ॥ पछे " तस्स सव्वस्स " की पाटी कहणी ॥ पछे नीचो वैठ जीवणो गोडो उभो राख " नवकार " कहणो। पछे " करेमि भंते " की पाटी कहणी। पछे " चत्तारि मंगलं " की पाटी कहणी ॥ पछे " इच्छामि ठामि " की पाटी, पछे " इरिया वहियाए " की पाटी कहणी. पछे " तिक्खुत्तो " गुणी, हात जोडी, व्रत अतिचार मेला करणकी आज्ञा लेणी। पछे " आगमे तिविहे " की पाटी कहणी। पछे " दंसण श्री समकित " की पाटी कहणी ॥ पछे बारे व्रत अतिचार सहित कहणा ॥ पछे संलेखणाको पाठ अतिचारां समेत कहणो ॥

पछे अठारे पाप स्थानककी पाटी कहणी ॥ पछै " इच्छामि ठामि " की पाटी कहणी ॥ अठातांई जीवणो गोडो उंचो राखिया बैठो रैणो॥ पछै उभो होय हात जोड " तस्स धम्मस्स " की पाटी कहणी ॥ पछै " इच्छामि खमासमणा " की पाटी पूर्वोक्त रीतिसूं दोय वार कहणी ॥ पछे आज्ञा लेई, उंदा गोडा बैसी, दोनु हात जोडी, मस्तक जमीके लगावी, पांच पदांकी वंदना करणी ॥ पछे उभो होय "आ-यरिय उवज्झाए " की पाटी कहणी ॥ पछे " अढाई द्वीप " को पाठ कहणो ॥ पछे " चौरासी लाख जीवा जोनि सात लाख पृथ्वी काय " इत्यादि पाठ कहणो ॥ पछे "खामेमि सव्व जीवा" को पाठ कहणो ॥ पछै अठारे पाप स्थानक कहणा ॥

इति चौथो प्रतिक्रमण आवश्यक संपूर्ण ॥ ४ ॥

" तिक्खुत्तो " को पाठ पढी, 'पांचवां आवश्यककी आज्ञा है' ऐसे कही, " दैवसिक प्रायश्चित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं " ॥ ओ पाठ कहणो ॥ पछै " नवक्कार " कहणो । पछै " करेमि भंते " की पाटी कहणी । पछै " इच्छामि ठामि काउस्सग्गं " की पाटी कहणी ॥ पछै "तस्स उतरी" की पाटी कहणी। पछै काउस्सग्ग करणो॥ काउस्सगमें सदैव, देवसी, रायसी तथा पखी संवत्सरी पडिक-मणामें ४ लोगस्स कहणा. ॥ किताक आप आपकी आम्नाय प्रमाणे कमती जादा करै है । मनमें " नवकार " गुणी, काउस्सग्ग पारणो पछे " नमो अरिहंताणं " इसो प्रकट कहणो । पछे " लोगस्स " प्रगट कहणो ॥ पांच पदांकी वंदना पछै सागी क्रिया ऊभो २ करणी

॥ शक्ति नही हुवे तौ बैठो २ करणी ॥ पछै पूर्वकी परे " इच्छामि खमासमणा " की पाटी दोयवार कहणी ॥

इति पांचमो काउस्सग्ग आवश्यक संपूर्ण ॥

हवे छठा आवश्यकका कामी धन्य है श्रीवर्धमान स्वामी इसो कही, गुरु मुनिराज पासे तथा वडेरा पासे पच्चक्खाण करै । इणांरो योग नही होय तौ आज्ञा लेयनें " गंठिसहियं मुठिसहियं" इत्यादि पाठ पढी धारणा प्रमाणे पच्चक्खाण आपरे मत्ते करे ॥

इति छठो पच्चक्खाण आवश्यक संपूर्ण ॥

सामायिक, चउविसत्थो, वंदनक, पडिक्कमण, काउस्सग्ग और पच्चक्खाण ए ६ आवश्यक मांहे जाणतां अजाणतां जे कांई अतिचार दोष लागो होय तथा पाठ उच्चारतां काना मात अनुस्वार पद अक्षर अधिको ओछो आगो पाछो कह्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ मिथ्यात्वनो पडिक्कमणो, अव्रतनो पडिक्कमणो, प्रमादनो पडिक्कमणो, कषायनो पडिक्कमणो, अशुभ जोगनो पडिक्कमणो ए पांच पडिक्कमणा मांहिलो कोई पडिक्कमणो नहीं कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ गया कालको पडिक्कमणो, वर्तमान कालको संवर तथा सामायिक, आवता कालका पच्चक्खाण, तेमां जे दोष लागो होय, अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचार अनाचार, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ थव थुइ मंगलं ॥

इति क्षमापन संपूर्ण ॥

पछै नीचो बैठ डावो गोडो उंचो राख, दोय " नमोत्थुणं " पूर्ववत् पढणा. पछै ऊभो होयने श्रीसीमंधरस्वामीजी प्रतें पंचांग नमाय, " तिक्खुत्तो " का पाठसूं १००८ वार वंदना करूं छूं, इम कही पोताना धर्माचार्यजीनें इण रीते वंदना करवी । पछै उपाश्रयमें जे मुनिराज होय तिणांनें वंदना करीने अपराध खमावणो । पछै तपस्वी साधर्मी भाइयांसूं खमत खामणा कर सुख साता पूछणी । पछै सारा साधर्मी भाइयांसूं खमत खामणा करणा अने सुख साता पूछणी ॥ देवसि पडिक्कमणामें " मिच्छामि दुक्कडं " आवे तठै दिवस संबंधी मिच्छामि दुक्कडं देणो ॥ राइ पडिक्कमणामें रात्री संबंधी कहणो । पक्खी पडिक्कमणामें देवसि पक्खी संबंधी कहणो। चौमासीमें देवसि चौमासी संबंधी कहणो । संवच्छरी पडिक्कमणा में देवसि संवत्सरी संबंधी मिच्छामि दुक्कडं कहणो ॥

इति श्रावक प्रतिक्रमण विधिः समाप्तः ॥





॥अथ दश पच्चक्खाण॥



गाथा ॥

दोच्चेव नमुक्कारो, आगारा छच्च हुंति पोरिसिए । सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणंमि अट्ठे व ॥ १ ॥ सत्त गठाणस्सउ, अट्ठेव यअंविलंमि आगारा । पंचेव य भत्तट्ठे, छाप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउदो अभिग्गहे, निव्वीए अठ्ठ नवय आगारा। अप्पाउरणे पंचउ हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥

१ अथ नोकारसीको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं पच्चक्खामि । चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं १ सहसागारेणं २ वोसिरे इति ॥ १ ॥

२ पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पोरसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं

खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं १ सहसागारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ६ वोसिरे ॥ इति ॥ २ ॥

३ साड्ढ पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे साड्ढपोरसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ सव्वसमाहि वत्तियागारेणं ६ वोसिरे ॥ इति ॥ ३ ॥

४ पुरिमड्ढको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ पच्छन्न कालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ महत्तरागारेणं ६ सव्व समाहि वत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥ ४ ॥

५ अथ एकाशनको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासणं बियासणं चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ सागारि आगारेणं ३ आउंटण पसारेणं ४ गुरुअब्भुट्ठाणेणं ५ पारिट्ठावणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ५ ॥

६ अथ एकलठाणको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगट्ठाणं पचक्खामि दुविहं तिविहं चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २

सागारियागारेणं ३ गुरुअब्भुट्ठाणेणं ४ परिट्ठावणिया गारेणं ५ महत्तरागारेणं ६ सव्वसमाहि वत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥ ६ ॥

७ अथ आयंबिलको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे आयंबिल पच्चक्खामि तिविहपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ लेवालेवेणं ३ गिहत्थसंसट्ठेणं ४ उक्खित्तविवेगेणं ५ पारिट्ठावणियागारेणं ५ महत्तरागारेणं ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ७ ॥

८ अथ चउविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ पारिट्ठावणिया-गारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ५ वोसरे ॥ इति ॥ ८ ॥

९ अथ तिविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहं पि आहार असण पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ पारिट्ठावि यागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ५ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, वहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरे ॥ इति ॥ ९ ॥

१० अथ चरम पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहार असणं पाणं खा-

इमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ महत्तरागारेणं ३ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ४ वोसिरे ॥इति ॥ १० ॥

११ अथ अभिग्रहको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे गंठि सहियं मुठि सहियं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ महत्तरागारेणं ३ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ४ वोसिरे ॥ इति॥११॥

१२ अथ निव्विगईको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे निव्विगइयं पच्चक्खामि चउव्विहं पि अहारं असणं पाणं सूरे खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ लेवालेवेणं ३ गिहत्थसंसठ्ठेणं ४ उक्खित्तविवेगेणं ५ पडुच्चमुक्खिणं पारिठ्ठावियागारेणं ७ महत्तरागारेणं ८ सव्वसमाहिवत्तियागारेगं ९ वोसिरे ॥ इति ॥ १२ ॥

इति दश पच्चक्खाण समाप्त ॥





अथ तीन मनोरथ ॥

दोहा

आरंभ परिग्रह तजी करी । पंच महाव्रत धार ॥
अंत अवसर आलोयणा । करुं संथारो सार ॥ १ ॥

पहला मनोरथः--समणोपासक (साधूकी सेवा करने वाला) श्रावकजी ऐसा चिंतवे की, कब में चौदे प्रकारका बाह्य और नव प्रकारका अभ्यंतर परिग्रहसे तथा आरंभसे निवर्तुंगा ? यह आरंभ परिग्रह काम क्रोध मद मोह लोभ विषय कषायका वढानेवाला, दुर्गतिका दाता, मोह मत्सर .राग द्वेपका मूल, धर्म ज्ञान क्रिया क्षमा दया सत्य संतोष समकित संयम तप ब्रह्मचर्य सुमतिका नाश करने वाला अठारे पापका वढानेवाला, अनंत संसारमें भ्रमानेवाला, अध्रुव, अनित्य, अशाश्वता, असरण, अतरण, निग्रंथोंका निंदनीक, ऐसे अपवित्र आरंभ परिग्रहका मै जब त्याग करूंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगो !

दूसरा मनोरथः--समणोपासक श्रावकजी ऐसा चिंतवे-कि-

चारे की, कब में द्रव्ये भावे मुंड होके दश यतिधर्म, नव वाड विशुद्ध ब्रह्मचर्य, पांच महाव्रत, पांच सुमति, तीन गुप्ति, सतरे भेदे संयम, बारे प्रकारे तप, छेकायका दयाल, अप्रतिबंध विहार, सर्वसंग रहित, वीतरागकी आज्ञा मूजब चलनेवाला, होउंगा? जिसदिन निग्रंथका मार्ग अंगिकार करूंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा !

तीसरा मनोरथः--समणोपासक श्रावक ऐसा चिंतवे की, किस वक्तमें सर्व पापस्थानक आलोयी निंदी निःशल्य हो सर्व जीवोंसे खमतखामणा कर त्रिविध २ अठारे पापको त्याग जिस सरीरको मैंने अतिप्रेमसे पाला है ऐसे शरीरसे ममत्व त्याग छेल्ले श्वासोच्छ्वास तक बोसीराके चारही आहारको त्याग के तीन आराधना चार सरणा सहित आयुष्य पूरा करूंगा? पंडित मरण मरूंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होगा !

यह तीन मनोरथका विचार करता हुवा प्राणी महा निर्जरा उपार्जन करे, संसार प्रत करे। मोक्षके सन्मुख होय। अनुक्रमे सर्व दुःखसें छुटे, अनंत अक्षय सुख पावे.

दोहा.

तीन मनोरथ ए कहे। जे ध्यावे नित्य मन ॥
सक्ति सार वरते सहू। तो पावे शिव सुख धन ॥ १ ॥

इति तीन मनोरथ समाप्त ॥





चार सरणा.



॥ अरिहंत सरण पव्वज्जामी । सिद्ध सरण पव्वज्जामी ॥ साहु सरण पव्वज्जामी ॥ केवली पन्नत धम्मसरण पव्वज्जामी ॥

(१) पहला सरणा श्री अरिहंत भगवंतका. आरिहंत प्रभु चौतीस अतिसय, पेंतीस वाणी गुण, अष्ट प्रतिहार अनंत चतुष्टय, बारे गुण करके विराजमान, अठारे दोष करके रहित । चौषठ इंद्रके वंदनीक पूजनीक, इत्यादिक अनंत गुणे करी विराजमान है । अरिहंत प्रभूका इस भव परभव भवोभव सरणा होज्यो ।

(२) दूजा सरणा श्रीसिद्ध भगवंतका, सिद्ध भगवंत अष्टगुण इगतीस अतिसय करी सहित, मोक्षरूप सुखस्थानमें विराजमान, अनंत अक्षय, अव्याबाध, अजर, अमर, अविकारी, अनंत सुखमें विराजमान, अष्ट कर्म रहित है. सिद्ध भगवंतका, इसभव, परभव, भवोभव सरणा होणा !

(३) तीसरा सरणा साधू मुनिराजका, साधूजी सत्ता–

इस गुण करी सहित, कनक कामिनी के त्यागी, सतरे भेद सजम के पालणहार, बारे भेद तपके करणहार, छन्नु दोष टाली आहार वस्त्र स्थानक पात्रके भोगवणहार, निर्लोभी बावीस परिसह सम प्रणाम सहे, शांत-दांत-क्षांत, इत्यादि अनेक गुण सहित ते निग्रंथ साधूजी महाराजका इण भव परभव भवोभव सदा सरणा होणा!

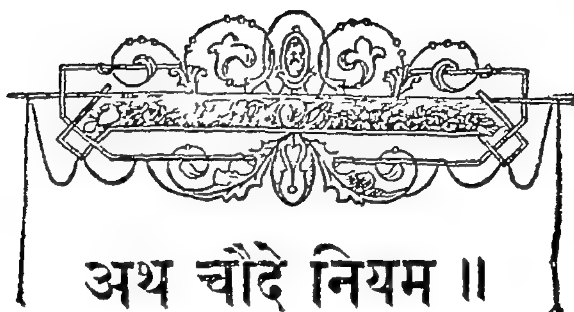
(४) चौथा सरणा केवली परुप्या दया धर्मका. धर्म दो प्रकारका-श्रुत धर्म सो द्वादशांगी जिनागम। चारित्र धर्म सो आगारी अणगारी. यह धर्म आधि व्याधि उपाधिका विणासणहार है, मोक्षरूप शाश्वत सुखका दाता है. ये दया धर्मका इसभव परभव भवोभव सदा सरण होना !

दोहा

यह चार सरणा, दुःखहरणा, और न दुजा कोय।
जो भवी प्राणी आदरे, तो अक्षय अमर पद होय॥ १॥

इति चार सरणा समाप्त॥



अथ चौदे नियम ॥

१ सचीतः—कहीये काचो पाणी ॥ कोरो दाणो ॥ काची लीलोती ॥ प्रमुख अनेक चीज जाणवी ॥ एनी मरजादा करणी ॥

२ द्रव्य ते—मुखमें जितनी चीज घाले ॥ तेनी मरजादा करणी॥

३ वीगय ते—दूध ॥ दही ॥ घृत ॥ तेल ॥ खांड ॥ गुल ॥ सरव मीठाईनी जात ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

४ पनी ते—पगरखी ॥ तलीया ॥ मौजा ॥ पावडीयां ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

५ तंबोल ते—लुंग ॥ इलायची ॥ पान ॥ सोपारी ॥ इत्यादि एनी मरजादा करणी ॥

६ वथ ते—वस्त्र पेहरणा ओढणा तेनी मरजादा करणी ॥

७ कुसम ते—सुंगणेमे आवे जीतनी चीज तेनी मरजादा करणी॥

८ बाहण ते गाडी ॥रथ ॥ तांगो ॥ बगी ॥ घोडा ॥ जात॥ ॥ असवारीमें काम आवे ॥ तेनी मरजादाकरणी ॥

९ सयण ते—गादी ॥ पीलंग ॥ मांचो ॥ खुरसी ॥ अथवा, छपर पीलंग बिछावनेकी जात ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

१० विलेपण ते—केशर ॥ कुंकु ॥ तेल पीठी सरीरने विलेपण हुवे तेनी मरजादा करणी ॥

११ अवंभ ते—कुसीलनी मीरजादा करणी ॥

१२ दिसते ॥ पुरब दीस ॥ पश्चम दीस ॥ दिखण दीस ॥ उत्तर दीस ॥ उंची दीस ॥ नीची दीस ॥ ये छै दिसमें जावणेकी सारी मरजादा करणी ॥ अथवा कागद देवणरी मरजादा करणी ॥

१३ नाहावण ते—स्नानरी ॥ मरजादा करणी ॥

१४ भत्ते सुते—आहार पाणी करणेरी मरजादा करणी ॥ ये चौदे नियमकी नित्य मर्यादा करनेसे सर्व लोक की अव्रत आणी बहुत बंध हो जाती है. जीवको थोडेही कालमें मोक्षके परम सुखकी प्राप्ती होती है ॥





अथ समाईकके बत्तीस दोष ॥

जिसमें प्रथम मनके दस दोष कहते हैं ॥

१ औसर विना समाई करे तो दोष लागे ॥ २ ॥ यश किर्तिके अरथे समाई करे तो दोष लागे॥ ३ ॥ इण लोकरा लाभरे अरथे समाई करे तो दोष लागे ॥ ४ ॥ गरव अहंकाररे अरथे समाई करे तो दोष लागे ॥ ५ ॥ भयसें अर्थात् डरतो डरतो समाई करे तो दोष लागे ॥ ६ ॥ समाईमें संसय करे तो दोष लागे ॥ ७ ॥ समाईमें निहाणो करे तो दोष लागे ॥ ८ ॥ समाइमें रीस करे तो दोष लागे ॥ ९ ॥ समाई विनयहिन[1] करे तो दोष लागे ॥ १० ॥ [2]वेटीयानी परे समाई करे तो दोष लागे ॥ ए दस मनके दोष ॥

अथ दस वचनके दोष ॥

॥ १ ॥ सामाइकमें झूट बोले तो दोष लागे ॥ २ ॥ अण बीमास्यो बोले तो दोष लागे ॥ ३ ॥ राग करीने गीत गावे तो

---

१. अविनयसें. २. भावरहीत.

दोष लागे ॥ ४ ॥ उतावलो उतावलो घणो बोले तो दोष लागे ॥ ५ ॥ कलह करे तो दोष लागे ॥ ६ ॥ च्यार विकथा करे तो दोष लागे ॥ ७ ॥ हांसी करे तो दोष लागे ॥८॥ उतावलो २ अक्षर पद गुणे तो दोष लागे ॥ ९ ॥ अजुगती भाषा बोले तो दोष लागे ॥ १० ॥ अव्रतीने आवो पधारो कहे तो दोष लागे॥ ए दस वचनके दोष ॥

अथ बारे कायाके दोष ॥

॥ १ ॥ ठांसणी[1] मारीने बेसे तो दोष लागे ॥ २ ॥ अथिर आसण बेसे तो दोष लागे ॥ ३ ॥ विषय सहित दृष्टी जोवे तो दोष लागे ॥ ४ ॥ समाईकमें घरका कारज करे तो दोष लागे ॥ ५ ॥ विना कारण ओटो लेवे तो दोष लागे ॥ ६ ॥ सरीर संकोचीने बेसे तो दोष लागे ॥ ७ ॥ क्रोध करीने अंग मोडे तो दोष लागे ॥ ८ ॥ आलस आणे तो दोष लागे ॥ ९ ॥ कडका मोडे तो दोष लागे ॥ १० ॥ सरीररो मेल उतारे तो दोष लागे ॥ ११ ॥ विना पुंज्या खाज खिणे तो दोष लागे ॥ १२ ॥ विनाकारण समायकमें वियावच करोव तो दोष लागे ॥ एवं समाइकका बत्तीस दोष जाणवा॥

अथ पोसारा अठारा दोष ॥

पोसा निमित्ते सरीरकी शुशुषा करे नही ॥ १ ॥ कुसील सेवे नही ॥ २ ॥ सरस आहार करे नही ॥ ३ ॥ वस्त्र धुवावे नही ॥ ४॥

---

१. पग उपर पग धरके.

आभूषण पहीरे नही ॥ ५ ॥ जाहा भोजन करे नही ॥ ६ ॥ ए छे दोष उपवास करे उस के पेले दीन टालणा ॥

पोसामें खुलेकी व्यावच करे नही ॥ ७ ॥ पोसामें नख सवारे नही ॥ ५ ॥ ॥ मेल उतारे नही ॥ ९ ॥ निद्रा घणी लेवे नही ॥१०॥ वीन पुंज्या खाज खीणे नही ॥ ११ ॥ च्यार वीगथा करे नही ॥ १२ ॥ पारकी निंदा करे नही ॥ १३ ॥ संसार की चरचा करे नही ॥ १४ ॥ अंग उपंग नीरखे नही ॥ १५ ॥ विना पूंज्या मात्रो परठे नही. ॥ १६ ॥ दुसरासुं खुले मुंडे वाता करे नही ॥ १७ ॥ पोसामें भय करे नही ॥ १८ ॥ एवं अठारा दोष टालकर पोसो करणो ॥



आनुपूर्वी.

१

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

२

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५

३

१	३	४	२	५
३	१	४	२	५
१	४	३	२	५
४	१	३	२	५
३	४	१	२	५
४	३	१	२	५

४

२	३	४	१	५
३	२	४	१	५
२	४	३	१	५
४	२	३	१	५
३	४	२	१	५
४	३	२	१	५

आनुपूर्वी.

५

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

६

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

७

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
५	१	३	२	४
३	५	१	२	४
५	३	१	२	४

८

२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४

आनुपूर्वी.

९

१	२	४	५	३
२	१	४	५	३
१	४	२	५	३
४	१	२	५	३
२	४	१	५	३
४	२	१	५	३

१०

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
१	५	२	४	३
५	१	२	४	३
२	५	१	४	३
५	२	१	४	३

११

१	४	५	२	३
४	१	५	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

१२

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

आनुपूर्वी.

१३

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

१४

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

१५

१	४	५	३	२
४	१	५	३	२
१	५	४	३	२
५	१	४	३	२
४	५	१	३	२
५	४	१	३	२

१६

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
३	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

आनुपूर्वी.

१७

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	१

१८

२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

१९

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

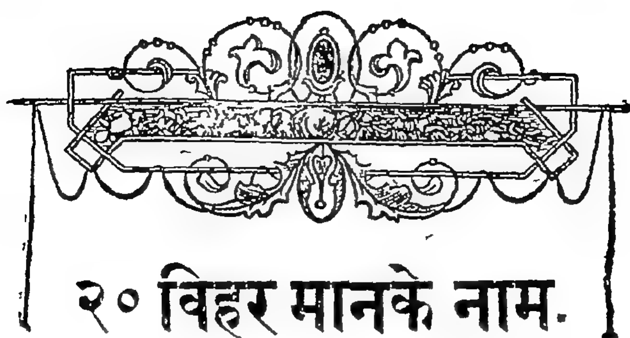
२०

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१



२४ तीर्थंकरोंके नाम.

१ श्री ऋषभ देवजी.
२ श्री अजित नाथजी.
३ श्री संभवनाथजी.
४ श्री अभिनंदनजी.
५ श्री सुमतिनाथजी.
६ श्री पद्मप्रभूजी.
७ श्री सुपार्श्वनाथजी.
८ श्री चंद्र प्रभूजी.
९ श्री सुविधिनाथजी.
१० श्री शीतलनाथजी.
११ श्री श्रेयांस नाथजी.
१२ श्री वासपूज्यजी.
१३ श्री विमलनाथजी.
१४ श्री अनंतनाथजी.
१५ श्री धर्मनाथजी.
१६ श्री शांति नाथजी.
१७ श्री कुंथूनाथजी.
१८ श्री अर्हनाथजी.
१९ श्री मल्लीनाथजी.
२० श्री मुनीसुव्रतजी.
२१ श्री नेमीनाथजी.
२२ श्री रिष्टनेमीजी.
२३ श्री पार्श्वनाथजी.
२४ श्री महावीर स्वामी.



२० विहर मानके नाम.

१ श्री मंदीर स्वामी.
२ श्री जुगमंदीर स्वामी.
३ श्री बाहुजी स्वामी.
४ श्री सुबाहुजी स्वामी.
५ श्री सुजात स्वामी.
६ श्री स्वयंप्रभू स्वामी.
७ श्री ऋषभानंद स्वामी.
८ श्री अनंतवीर स्वामी.
९ श्री सूरप्रभू स्वामी.
१० श्री विसालधर स्वामी.
११ श्री वज्र धर स्वामी
१२ श्री चंद्राननस्वामी.
१३ श्री चंद्रबाहु स्वामी.
१४ श्री भुजंग स्वामी.
१५ श्री ईश्वर स्वामी.
१६ श्री नेमप्रभूस्वामी.
१७ श्री वीरसेन स्वामी.
१८ श्री महाभद्र स्वामी.
१९ श्री देवयस स्वामी.
२० श्री अनंतवीर स्वामी.



११ गणधरके नाम.

१ श्री इंद्रभूतिजी.

२ श्री अग्नीभूतिजी.

३ श्री वायुभूतिजी.

४ श्री विगतभूतिजी.

५ श्री सुधर्मा स्वामी.

६ श्री मेडीपुत्रजी.

७ श्री मोरी पुत्रजी.

८ श्री अकंपितजी.

९ श्री अचलजी.

१० श्री मेतारजजी.

११ श्री प्रभासजी.

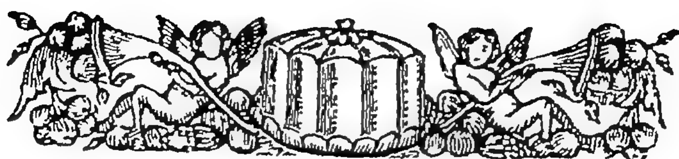




१६ सतीके नाम

१ श्री ब्राम्हीजी.	९ श्री मृगावतीजी.
२ श्री सुंदरीजी.	१० श्री चेलाणाजी.
३ श्री कौसल्याजी.	११ श्री प्रभावतीजी.
४ श्री सीताजी.	१२ श्री सुभद्राजी.
५ श्री राजेमतीजी.	१३ श्री दमयन्तीजी.
६ श्री कुंताजी.	१४ श्री सुलसाजी.
७ श्री द्रौपदीजी.	१५ श्री शिवाजी.
८ श्री चंदणाजी.	१६ श्री पद्मावतीजी.

ये चोवीस तीर्थंकर, वीस विहरमान, इग्यार गणधर, सोले सतीको त्रीकाल वंदणा नमस्कार होजो, तिखुत्तो जाव मथ्येणं वंदामि.



आलोयणा अथवा संथारा करने कराने की विधि

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं ॥ १ ॥

॥ पहली नवकार एक कही । इरियावही पडिकमीनें काउस्सग्ग करी । एक लोगस्स उजोयगरे । कावसगमांहि चिंतीनै "काऊसग" पारी एक लोगस्स उजोयगरे कही । "हेठा बेसीने" नवकार एक कही । नमोत्थुणं एक कही ने । ए चउवीसत्थो कीजे । लोगस्स उजोयगरे पछे नमोत्थुणं कहीये । पछे वर्तमान तीर्थंकरानें वंदीए । पहली तो सम्यक्त सुद्ध करिये—तिहां ३ पदार्थ साचा सरधणा । देव तो अरिहंत देव ॥ १ ॥ गुरु साधु निर्गंथ, जिनाज्ञा पालणहार. ॥ २ ॥ धर्म श्री केवली प्ररूप्यो दयामय धर्म ॥ ३ ॥ ए ३ तत्व साचा सरध्या न होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ वली नव पदार्थ साचा सर्दवा (तेहना नाम) जीव (१) अजीव (२) पुण्य (३) पाप (४) आश्रव (५) संवर (६) निर्जरा (७) बंध (८) मोक्ष (९) ए ९ पदार्थ साचा सरध्या न होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ हिवे धर्मनो स्वरूप कहे छे ॥

॥ गाथा ॥

सबेमि जेय अतीता, जेय पडुप्पन्ना, जेय आगमिसा, अरिहंता भगवंतो, सव्वे ते एवमाइखन्ति, एवं भासन्ति, एवं पन्नवन्ति, एवं परूवेति, सव्वेपाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, न हंतवा ॥ इत्यादि ॥

॥ सूत्र द्वितीय, आचारंग, अध्ययन ४

अर्थ—जे गये कालमें अनंता अरिहंत भगवंत हुये, और वर्तमान कालमें संख्याता अरिहंत भगवंत विद्यमान है, और आवते कालमें अनंता अरिहंत भगवंत होवेंगे, उनोनें फरमाया है की सर्व प्राणीनें सर्व भूतनें सर्व जीवनें सर्व सत्वनें दंडादिके करी हणवा नही । वलात्कारी हणवो नही, दासनी परइ गीणवा नही । सरीर वेदना मानसिक वेदना करी परितापवा नही । प्राण थकी दूर करवा नही । एहवी जीनदया पालवी । ते धर्म शुद्ध छे । निष्कलंक छे । मोक्षनो हितकारी छे । एहवो धर्म साचो न सरध्यो होय तो तस्स मिच्छामि दुकडं ॥ हिवइ सरणा कहे छै । चत्तारि सरणं पवज्जामि १ अरिहंत सरणं पवज्जामि २ सिद्ध सरणं पवज्जामि ३ साहु सरणं पवज्जामि केवली पण्णत्तो धम्म सरणं पवज्जामि (अर्थ) अरिहंत सिद्ध साधु केवली प्ररूपित दयामय धर्म ए चार सरणा आदरूं छूं. हिवे अरिहंत सिद्ध केवलीनी साखे चौराशी लक्ष जीवाजोनीको खमावूं छुं.

॥ गाथा ॥

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा वि खमंतु मे ॥
मित्ति मे सव्व भूएसु, वेर मज्झं न केणई ॥ १ ॥

अर्थ–सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अप काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउ काय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चौदे लाख साधारण वनस्पति काय, दो लाख बेइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रीय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख नारकी, चार लाख देवता, चार लाख तिर्यंच, चौदे लाख मनुष्यकी जात, एवं चौराशी लाख जीवा जोनीने मेरे जीव हणी होय, हणाई होय, हणतां प्रति भलो जाण्यो होय, तो अठारे लाख चोवीस हजार एकसो वीस तस्स मिच्छामि दुकडं ॥ ए सर्व जीव मेरा अपराध क्षमो ! सर्व जीव मेरे मित्र है; मुझे किसीसे शत्रुता नही है ॥

हिवे अठारे पाप स्थानक आलाउंछुं, अठारे पाप स्थानकके नामः–

१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान १४ पैशून्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ माया मोसो १८ मिथ्या दर्शन सल्य ॥

(१) हिवे प्रथम प्राणातिपातनो स्वरूप कहे छे ॥ प्राणातिपात कहतां जीवकी हिंसा का करणा ते जीव छ कायके तेहना नामः—

१ पृथ्वी काय २ अप्पकाय ३ तेउ काय ४ वाउ काय ५ वनस्पति काय ६ त्रस काय.

पृथ्वी कायना दो भेद १ सूक्ष्म और २ बादर । तेहना दो भेद १ प्रजाप्ता अने २ अप्रजाप्ता । सूक्ष्म पृथ्वी काय तो सर्व लोकमांही भरी छे और बादर पृथ्वी काय लोकना एक देशमें भरी छे, ते बादर पृथ्वी कायमें मट्टी, मूरड, कंकर, पाषाण, खड्डी, गेरू, हिंगळू,

हिरमच, लूण, सोनो, रूपो, तांबो, लोह, कथीर, जसद, पीतल, हीरा, पन्ना, मणी, माणिक, इत्यादि पृथ्वी कायना अनेक भेद छे॥ उक्त पृथ्वी कायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इन भवे परभवे, कीधी होय कराई होय–करतां प्रतें भलो जाण्यो होय–तो तीन कर्ण तीन जोगसें मिच्छामि दुकडं ॥

(२) हिवे अपकायना दो भेद. १ सूक्ष्म और २ बादर॥ तेहना दो भेद १ अप्रजाप्ता और प्रजाप्ता ॥

सूक्ष्म अपकायतो सर्व लोकमांही भरी छे–और बादर अपकाय लोकना एक देश विषे छे, ते बादर अपकायमें, कुवानो पाणी, नदीनो पाणी, तलावनो पाणी, ओस, धूंर गार, इत्यादिक अनेक भेद छे ॥ उक्त अपकायके जीवोंकी हिंसा, मेरे जीव इन भवे परभवे कीधी होय कराई होय कराता प्रतें भला जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसें मिच्छामि दुकडं ॥

(३) हिवे तेउकायना दो भेद १ सूक्ष्म और २ बादर॥ तेहना दो भेद १ अप्रजाप्ता और २ प्रजाप्ता ॥

सूक्ष्म तेउ काय तो सब लोकमांही भरी है, और बादर तेउ काय लोकना एक देशनें विषे छे ॥ ते बादर तेउ कायमें, खीरा, अंगारा, उल्कापात, बिजली, अग्नि, इत्यादिक अनेक भेद छे ॥ उक्त तेउकायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इन भवे परभवे कीधी होय कराई होय करतांप्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

(४) हिवे वाउ कायके दो भेद सूक्ष्म और बादर ॥ तेहना दो भेद ॥ अप्रजाप्ता । अने प्रजाप्ता ॥

सूक्ष्म वाउ काय तो सर्व लोकमांही भरी है ॥ और वादर वाउ-काय लोकना एक देशना विषे छे ॥ ते वादर वाउ कायमें उकलिया वाय, मंडलिया वाय, घन वाय, तन वाय, शुद्धवाय, संवर्तक वाय, इत्यादिक वाउकायना अनेक भेद छे ॥ उक्त वाउकायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इनभवे परभवे कीधी होय कराई होय करतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं मिच्छामि दुकडं ॥

(५) हिवे वनस्पति कायना दो भेद सूक्ष्म और वादर ॥ तेहना दो भेद ॥ प्रजाप्ता अने अप्रजाप्ता ॥ तथा प्रत्येक और साधारण ॥

सूक्ष्म वनस्पतिकाय तो सर्व लोकमांही भरी छे ॥ और वादर वनस्पतिकाय लोकना एक देशने विषे छे ॥ ते वादर वनस्पति कायमें, नीलण, फुलण, कंद, मूल, वीज, हरी, अंकुरा, सचित, मिश्र, इत्यादि वनस्पति कायना अनेक भेद छे ॥ उक्त वनस्पति कायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इन भवे परभवे कीधी होय कराई होय करतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं, तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

(६) हिवे त्रस कायना चार भेद ॥ वेइंद्रीय, तेइंद्रीय, चउ-रिंद्रीय, पंचेंद्रिय, सन्नी, असन्नी, समूर्छिम, गर्भेज, इत्यादि त्रस कायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इनभवे परभवे कीधी होय कराई होय करतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

इति प्रणाति पातः

(२) हिवे दूजो मृषावाद कहे छे ॥ क्रोध करी, लोभ करी,

भय करी, हास्य करी, झूट बोल्यो होय बोलाव्यो होय बोलतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं तस्स मिच्छामि दुकडं॥

(३) हिवे तीजो अदत्तादान कहे छे ॥ गुरुदत्त, देवदत्त, सहामि दत्त, सागारि दत्त, राजा दत्त, इत्यादिक तृणमात्र विनाज्ञा, कोई वस्तु लीधी होय लेवावी होय लेवतां प्रति भलो जाण्यो होय, तो तीन कर्ण तीन जोगसूं तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

(४) हिवे चोथो मैथुन कहे छे ॥ देवंगणा संबंधी, मनुष्य मनुष्यणी संबंधी तिर्यंच तिर्यंचणी संबंधी काम भोग सेव्या होय सेवाया होय सेवतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

(५) हिवे पांचमो परिग्रह कहे छे ॥ सचित अचित मिश्र परिग्रह राख्यो होय रखाया होय राखतांप्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

(६) हिवे छठो—क्रोध (७) सातमो—मान (८) आठमो-माया (९) नवमो लोभ और दसमो (१०) राग (११) इग्यारमो द्वेष--कीधो होय करायो होय करतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

(१२) बारमो—कलह—कहतां राड (१३) तेरमो—आव्याख्यान कहतां-झूठो कलंक देवो (१४) चौदमो—पैशून्य—कहतां—पारकी चुगली करवी (१५) पंधरमो—परपरिवाद-कहतां-पारकी निंदा का करना (१६) सोळमो-रति अरति-कहतां-सुख ओर दुख उपजां साता असातानो वेदवो (१७) सत्रमो—मायामोसो—कहतां--पराया

मरम प्रकाशवो (१८) अढारमो मिथ्या दंसणसल्य कहतां--कुगुरु कुदेव कुधर्मने साचो सर्दव्यो. ए अढारे पाप स्थानक सेव्या होय सेवाया होय सेवतां प्रति भलो जाण्यो होय तो अरिहंतादिकनि साखे करी मुझे तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

हिवे इस जीवने अपार संसार समुद्रमें रुलतां अनेक भव किये ते संक्षेपमात्र कहे छे.

काजीना--मुल्लाना--पीरना--कसाईना--वागुरियाना--मोचीना-थोरीना, हलाल खोरना, नाईना, वारीना, तंबोळीना, तेलीना, गंधीना, नीलगरना--तीरगरना--कनीगरना--सवनीगरना--हलवाईगरना --दारुगरना--पनीगरना--रेगरना--खटीकना--कठियाराना--मणिहारना--पटवाना--डाकोंतना--लोहारना-- सोनारना-- भरावाना--ठठेराना--कुंभारना--पिंजाराना--वणकरना--घांचीना--कांदीना--लोधाना --रंगरेजना--छिपाना--चितार ना--खारोळना--ओडना--सिलावटना -कर्पणीना---माळीना---वागवानना---धोबीना---कशेराना---वडभूंजाना---तमाख्याना---वेश्याना---भगतणना---भोयीना---नटना---धावडना--जाटना-कांजराजा--मजूरोंना--वीणाना--माडंवीना-कोड़ुवीना--दर्जीना--कागदीना--आगडना--जागडना--जडियाना, तुनाराना--पायकना--ज लैवदारना--कुलगुरुना--भोजगना--बहुरुप्याना--भांडना--मावतना--पाशवानना--रेवाडीना--खराढीना-- फरागवानना--चवंदारना-दरोगाना-चरखीदारना-कूंदीगरना-साहीगरना-सोरीगरना-कामडना-वानरना-मलाना--चोरना--शिकारीना--कहारना-- गवालना-ढाढीना--शिकाना--मूंडचीराना--कनफडाना-- कूंजडाना-- काल्वेलियाना--ठगना--भोपाना--जूलावाना--कोलीना--खोजाना-- कलालना--

पाशीगरना--खवासना--दासीना--रासधारीना-- कुलिटाना-- दूतीना--पातरना--गाडीवानना--ब्राम्हणना--गुजरातीना--जोतशीना--गारुडियाना--मिस्त्रना--भटना--नागरना--सेठना--साहना--बजाजना-सरापीना--पसारीना-रजपूतना--वणजाराना--रसोइदारना--पेलवानना-- डोढीवानना-- चीडीमारना-- मच्छीगरना-- चारणना--भाटना-- जुवारीना--राजाना--बादशहाना--वजीरना--वगसीना--फोजदारना-- पोतदारना--हाकमना--प्रधानना--कोटवालना--भंडारीना--किलादारना-- पटेलना--पटवारीना--हमालना--नाऱ्याना---शिशागरना--बकाईना-वढईना-पारधीना--भिलना--यवननाः इत्यादिक भवने विषे अनेक पाप कीधा होय कराया होय करतां प्रति भलो जाण्यो होय तो "तथा" इत्यादिकसूं बनज व्यापार कीधा होय तो तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

"तथा" हिंसाने अर्थे तरवार, बंदूक, दारू, गोली, भाला, बरछी, धनुष्य, बाण, फरशी, छुरी, इत्यादिक, शस्त्रादिक, बणाव्या होय तो तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

* तथा, अनित्य भावना (१) असरण भावना (२) एकंत भावना (३) संसार भावना (४) अभिनव भावना (५) अशुचि भावना (६) आश्रव भावना (७) संबर भावना (८) निर्जरा भावना (९) लोक स्वभाव भावना (१०) धर्म भावना (११) बोध बीज भावना (१२) ए बारे भावना मेरे जीवने नहीं भावी होय तो तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

** तथा जो जो गुरु मुखथी व्रतपचखाणादिक आदऱ्या छे ते मांही कोई अतिचार दोष लागो होय तो अनंत सिद्ध केवलीनी साखे करी तस्स मिच्छामि दुकडं

---

* बारे भावनाको स्वरुप अन्य जगहसे जाणवो.

** द्वादशव्रतादिक.

☞ इसके बादमें " अह भंते अपच्छिम मरणांतीय " से लेकर एवी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध " तक संलेखणानी पाटी (जो प्रतिक्रमणमें पहिले कै आये है) कहवी ॥ पश्चात् धारवाप्रमाण पचखाण करणा तथा करावा ॥ इत्यालोयणा ॥

उपर प्रमाणे ज श्रावक श्राविका ए आलोयणा सामग्री-वाची-आत्माने शुद्ध करशे ते आराधिक पद पामी ससारथी तरशे



पद्मावती.

(राग-वेराडी)

हिवे राणी पदमावती, जीवराशि खमावे;
जाणपणुं जगदोहीलुं, एनी वेळाए आवे—ते मुज मिच्छामि दुकडं॥१॥

भव अनंताए करी, अरिहंतनी शाख;
जे में जीव विराधीया, चोराशी लाख. ते मुज. ॥ २ ॥

सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय;
सात लाख तेउकायना, साते वळी वाय. ते मुज. ॥ ३ ॥

दसलाख प्रत्येक वनस्पति, चौद साधारण;
बेंद्रियादिक* जीवना, बे बे लाख विचार. ते मुज. ॥ ४ ॥
देवता तिर्यंच अनें नारकी, चारचार लाख प्रकाशी;
चौद लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी. ते मुज. ॥ ५ ॥
आ भव परभव सेवियां, जे पाप अठार;
त्रिविधे त्रिविधे करी परिहरूं, दुरगति दातार. ते मुज. ॥ ६ ॥
हींसा कीधी जीवनी, बोल्या मृखावाद;
दोष अदत्तादाननो, मैथुन उनमाद. ते मुज. ॥ ७ ॥
परिग्रह मेळव्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष;
मान, माया, लोभ में कर्या, वळी राग ने द्वेष. ते मुज. ॥ ८ ॥
क्लेश करी जीव दुहव्या, दीधां कुडा कलंक;
निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक. ते मुज. ॥ ९ ॥
चाडी खाधी चौंतरे, कीधो थापण मोसो;
कुगुरु, कुदेव, कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो. ते मुज. ॥ १० ॥
खाटकीना भवमें कीधा, कीधी जीवनी घात;
चडीमारने भव चरकलां, मार्यां दीन ने रात. ते मुज. ॥ ११ ॥
माछीगर भव मांछलां, झाल्यां जळवास;
धीवर, भील, कोळी भवे, मृग पाडिया पास. ते मुज. ॥ १२ ॥
काजी, मुल्लांनें भवे, पढयां मंत्र कठोर;
जीव अनेक झब्भे कर्या, कीधा पाप अघोर. ते मुज. ॥ १३ ॥
कोटवाळना भवे में कीधा, आकरा कर-दंड;
बंधीवानने मराविया, कोरडा-छडी-डंड. ते मुज. ॥ १४ ॥

---

* बेंद्रियसे लेकर-तेंद्रियना २ लाख-चौरेंद्रियना २ लाख भेद जाणवा.

परमाधामीना भवे, दीधां नारकीने दुःख;
छेदन-भेदन-वेदना, ताडन अति तीख. ते मुज. ॥ १५ ॥

कुंभारना भव में कीधा, काचा नीभा पकाव्या;
तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिंड भराव्या. ते मुज. ॥ १६ ॥

हाली भवे हळ केडियां, फोडयां पृथ्वीना पेट;
मूड निदण कीधां घणां, दीधा बळद चपेट. ते मुज. ॥ १७ ॥

माळीना भवे रोपियां, नानां विविध वृक्ष,
मूळ-पत्र-फळ-फुलनां, लाग्यां पाप अलक्ष. ते मुज. ॥ १८ ॥

अधोवाडयाना भवे भर्यो, अदकेरो भार;
पोठी-ऊंट कीडा पडया, न जाणी दया लगार. ते मुज. ॥ १९ ॥

छीपाना भवे छेतऱ्या, कीधा रंगण पास;
अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास. ते मुज. ॥ २० ॥

सुरपणे रण झुझतां, मार्या माणस वृंद;
मांस-मदिरा मांखण भख्यां, खाधां मूळ ने कंद. ते मुज. ॥ २१ ॥

खाण खणावी धातुनी, अणगळ पाणी उलेच्यां;
आरंभ कीधा अति घणा, पोते पापज सिच्यां. ते मुज. ॥ २२ ॥

इंगाल कर्म कीधां वळी, धर्मे दवज दीधा;
सुसम खाधा वितरागना, कुडा कोपज कीधा. ते मुज. ॥ २३ ॥

बिली भवे ऊंदर गळ्या, गरोळी हत्यारी;
मुढ मुरख तणे भवे, में जु लीख मारी. ते मुज. ॥ २४ ॥

भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय जीव;
जार-चणा-घउं सेकियां, पाडंता रीव. ते मुज. ॥ २५ ॥

खांडण-पीसण-गारीनो, आरंभ कीधो अनेक;
रांधण-शीधण अग्निनां, पाप लाग्यां विशेक. ते मुज. ॥ २६ ॥

विकथा चार कीधी वळी, सेव्या पांच प्रमाद;
इष्ट वियोग पडाविया, रुदन विखवाद. ते मुज. ॥ २७ ॥

साधुने श्रावक तणां, व्रत्त लेइने भाग्यां;
मुळ उत्तर तणां, मुज दुषण लाग्यां. ते मुज. ॥ २८ ॥

साप-वींछी-सिंह-चितरा, सकरा ने समळी;
हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबळी. ते मुज. ॥ २९ ॥

सुवावड दुषण घणां, काचा गर्भ गळाव्या;
जे पांणी ढोळ्यां घणां, शियळ व्रत भगाव्यां. ते मुज. ॥ ३० ॥

धोबीना भव जे कर्यां, जळना जीव मुंवाळा;
धूळे करी जळ रोळियां, दान देतां निवार्यां. ते ते मुज. ॥ ३१ ॥

लवारना भव जे कर्यां, घडया शस्त्र अपार;
कोस-कोदाळा ने पावडा, धिख धिखती तरवार. ते मुज. ॥ ३२ ॥

गुजरना भव जे कर्यां, लीला भारा वढाव्या;
पाडीने बेलां मेलियां; पाडे उठी छे ज्वाळा. ते मुज. ॥ ३३ ॥

ओडना भव जे कर्यां, कूवा-वाव खोदाव्यां;
सरोवर गळावियां, वळी टांकां बंधाव्यां. ते मुज. ॥ ३४ ॥

वाणियाना भव जे कर्यां, कूडा लेख लखाव्या;
ओछुं आपी अधिकुं लीधुं, कूडा माप रखाव्यां. ते मुज. ॥ ३५ ॥

हाथीना भव जे कर्या, वेलडी वलुरियां;
पंखी माळा चुंथिया, पापे पेटज भरियां. ते मुज. ॥ ३६ ॥

केरी ने कोठींवडां, वळी लींबुज मोर्यां;
राइ-चढावी शेलणे, पोते पापज सिंच्यां. ते मुज. ॥ ३७ ॥

अणगळ आधण मेलियां, अणपूंजे चूले;
अणसोया कण ओरिया, तेनां पाप केम रूले? ते मुज. ॥ ३८ ॥

भव अनेक भमतां थकां कीधो कुटुंब संबंध;
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरुं, तेणे शुं प्रतिबंध- ते मुज. ॥ ३९ ॥

भव अनेक भमतां थकां, कीधो देह संबंध;
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरुं, तेणे शुं प्रतिबंध. ते मुज. ॥ ४० ॥

भव अनेक भमतां थकां, कीधो परिग्रह संबंध;
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरु, तेणे शुं प्रतिबंध. ते मुज. ॥ ४१ ॥

इणी पेरे इह भव परभवे, कीधां पाप अखत्र;
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरुं, करु जन्म पवित्र. ते मुज. ॥ ४२ ॥

हवे राणी पदमावती, लीधां शरणां चार;
सागारी अणसण कर्यो, जाणपणानुसार. ते मुज. ॥ ४३ ॥

राग वेराडी जे सुणे, ए त्रीजी ढाळ;
समय सुंदर कहे पापथी, छुटो तत्काळ. ते मुज. ॥ ४४ ॥

॥ इति पदमावती ॥





अथ उपदेशक दोहा ॥

समय मात्र परमाद नित, धर्म साधना मांहि ॥
अथिर रुप संसार लख, रे नर करियें नांहि ॥ १ ॥

छीजत छिनछिन आउखो, अंजलि जल जिम मीत ॥
कालचक्र माथे भ्रमत, सोवत कहा अभीत ॥ २ ॥

तन धन जोवन कारिमा, संध्या राग समान ॥
सकल पदारथ जगतमें, सुपन रूप चित्त जान ॥ ३ ॥

मेरामेरा मत करे, तेरा है नहि कोय ॥
चिदानंद परिवारका, मेला है दिन दोय ॥ ४ ॥

ऐसा भाव निहारी नीत, कीजें ज्ञान विचार ॥
मिटे न ज्ञान विचारविन, अंतर भाव विकार ॥ ५ ॥

ज्ञान रवि वैराग जस, हीरिदे चंद समान ॥
तास निकट कहो किम रहे, मिथ्या तम दुखखान ॥ ६ ॥

आप आपणे रूपमें मगन ममत मलखोय ॥
रहे निरंतर समरसी तास वंध नवि कोय ॥ ७ ॥

पर परणित परसंगशु उपजत विणसत जीव ॥
मिटे मोह परभावके, अचल अबाधित शिव ॥ ८ ॥

जैसे कंचुक त्यागथी, विणसत नही भुयंग ॥
देह त्यागथी जीव पण, तैसे रहत अभग ॥ ९ ॥

जो उपजे सो तु नही, विणसत तेपण नांहि ॥
छोटा महोटा तुं नही, समज देख दिल मांहि ॥ १० ॥

वरणभांति तो में नही, जात पात कुलरेख ॥
रावरंक तूं है नही, नही बावा नही भेख ॥ ११ ॥

तूं सहुमें सहुथी सदा, न्यारा अलख सरूप ॥
अकथ कथा तेरी महा, चिदानंद चिद्रूप ॥ १२ ॥

जनम मरण जिहां है नही, इतभीत लवलेश ॥
नही शिर आण नरिंदकी, सोही अपणा देश ॥ १३ ॥

विनाशिक पुदगल दिशा, अविनाशी तूं आप ॥
आपा आप विचारतां, मिटे पुण्य अरू पाप ॥ १४ ॥

वेडी लोह कनकमयी, पाप पुण्य युग जाण ॥
दोउथी न्यारा सदा, निज सरूप पहिछाण ॥ १५ ॥

जुगल गती शुभ पुण्यथी, इतर पापथी जोय ॥
चारू गति निवारियें, तव पंचम गति होय ॥ १६ ॥

पंचम गति विण जीवकूं, सुख तिहुं लोक मजार ॥
चिदानंद नवि जाणजो, ए महोटो निरधार ॥ १७ ॥

इम विचार हीरिदे करत, ज्ञान ध्यान रस लीन ॥
निर्विकल्प रस अनुभवी, विकल्पता होय छीन ॥ १८ ॥

निरविकल्प उपयोगमें, होय समाधि रूप ॥
अचल ज्योति जलके तिहां, पावे दरस अनूप ॥ १९ ॥

देख दरस अद्भूत महा, काल त्रास मिट जाय ॥
ज्ञानयोग उत्तम दिशा, सदगुरु दीये बताय ॥ २० ॥

ज्ञानालंबन दृढ ग्रही, निरालंबता भाव ॥
चिदानंद नित आदरो, एहिज मोक्ष उपाव ॥ २१ ॥

थोडासामें जाणजो, कारज रूप विचार ॥
कहत सुणत श्रुत ज्ञानका, कबहुं न आवे पार ॥ २२ ॥

में मेरा ए जीवकूं, बंधन महोटा जान ॥
में मेरा जाकुं नही, सोही मोक्ष पीछान ॥ २३ ॥

में मेरा ए भावथी, बधे राग अरु रोष ॥
रागरोष जौंलों हिये, तौंलों मिटे न दोष ॥ २४ ॥

रागद्वेष जाकूं नही, ताकुं काल न खाय ॥
कालजीत जगमें रहे, महोटा बिरुद धराय ॥ २५ ॥

चिदानंद नित कीजीयें, समरण श्वासोश्वास ॥
वृथा अमूलक जात है, श्वास खबर नही तास ॥ २६ ॥

एक महूरत मांहि नर, स्वरमें श्वास विचार ॥
तिहुंतर अधिका सातसो, चालत तीन हजार ॥ २७ ॥

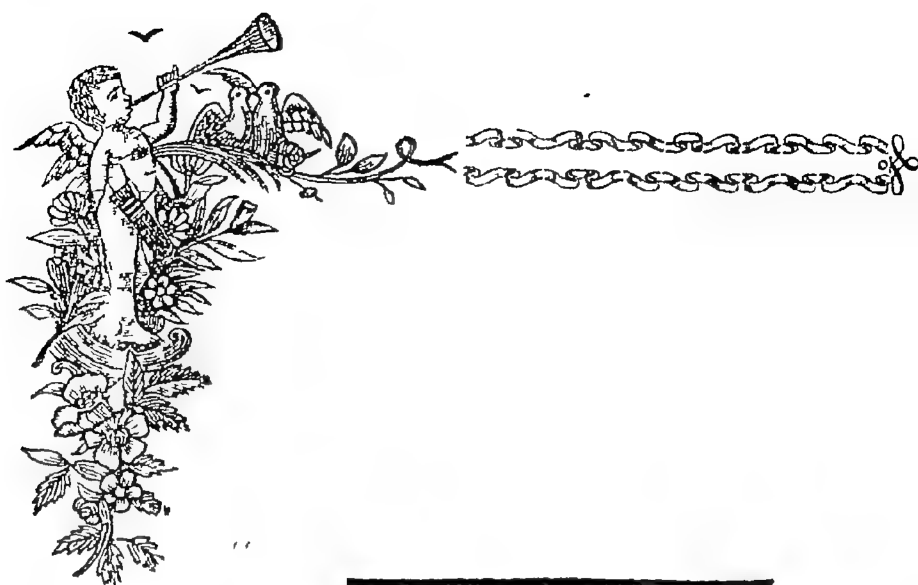
एक दिवसमें एक लख, सहस त्रयोदश धार ॥
एक शत नेवु जात है, श्वासोश्वास विचार ॥ २८ ॥

मुनि शत सहस पंचाणवे, भाखे तेत्रीश लाख ॥
एक मासमें श्वास इम, एहवी प्रवचन शाख ॥ २९ ॥

चउसत अडताली सहस, सप्तलक्ष स्वरमांहि ॥
चार क्रोड इक वरसमां, चालत संशय नांहि ॥ ३० ॥
चार अवज कोडी सपत, पुनः अडताळीस लाख ॥
स्वास सहस चालीस सुधि, सो वरसांमें भाख ॥ ३१ ॥
वर्तमान ए कालमे, उत्कृष्टी थिति जोय ॥
एकशत शोळे वर्षनी, अधिक न जीवे कोय ॥ ३२ ॥
सोपक्रम आयु कह्यो, पंचम काल मजार ॥
सोपक्रम आयु विषे, घात अनेक विचार ॥ ३३ ॥
श्वास श्वास प्रभु नाम ले, वृथा श्वास मत खोय ॥
ना जानू ये अंतको, यही श्वास नहि होय ॥ ३४ ॥
बूरा बूरा सबसूं कहे, बूरा न दीसे कोय ॥
जो घट सोधूं माहेरो, मोसूं बुरो न कोय ॥ ३५ ॥
सुख दियां सुख होत है, दुख दियां दुख होय ॥
आप हणे नैं औरकूं, तो आपन हणे न कोय ॥ ३६ ॥
राम कीसीकूं मारे नहि, सबसें मोटा राम ॥
आपहि आप मर जायगा करकर खोटा काम ॥ ३७ ॥

॥ प्रार्थना ॥

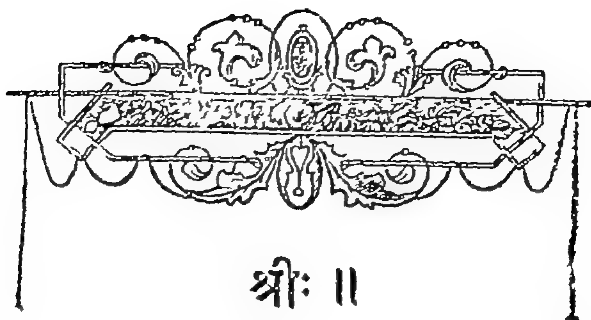
कहेवामें आवे नहि अवगुण भर्या अनंत ॥ लिखवामें किम-कर लिखुं, जाणो श्री भगवंत ॥ ३८ ॥ करुणानिधि कृपा करी, कठिण कर्म मोय छेद ॥ मोह अज्ञान मिथ्यात्वको, करिये गंठी भेद ॥ ३९ ॥ पतित उधारण नाथजी. अपणो विरुद विचार ॥ भूल चूक सब महायरा, खमिये वारंवार ॥ ४० ॥ माफ करो सब महायरा, आज तलखना दोष ॥ दीन दयाल आपो, मुजे, श्रद्धासील संतोष ॥ ४१ ॥ अरिहंत देव निग्रंथ गुरु, संवर निर्जरा धर्म ॥ केवली भाषित शास्त्र ए, एही जिन मत मर्म. ॥ ४२ ॥



इति सामायिक प्रतिक्र-
मणादि नित्य स्मरणम् ॥

॥ श्लोकम् ॥

॥ इति प्रणीतं गुरु रामचंद्रां–घ्रि सेवकेनप्रभुपत्प्रसादात् ॥
॥ हर्षाग्रत चंद्र इतीव नाम्ना प्रीत्यै भवेत्सर्व जनस्यसम्यक्॥



श्रीः ॥

सिद्धांत शिरोमणि.

प्रथम खंडः ॥

प्रकरण पहिला–स्तोत्र ॥

चतुर्विंशति जिनस्तुतिः ॥

सार्दूल विक्रीडितम् ॥

वंदे धर्म जिनं सदा सुखकरं चंद्रप्रभं नाभिजं । श्रीमद्वीर जिनेश्वरं जयकरं कुंथुं च शांति जिनं॥ मुनि श्रीफलदायनंत मुनीपं वंदे सुपार्श्वं विभुं । श्रीमन्मेघ नृपात्मजंच सुमति पार्श्वं नमामीष्टदं ॥१॥ श्री नेमीश्वर सुव्रतौ च विमलं पद्मप्रभं शांवरं । शेवेशं भवशंकरं नमि जिनं मल्लि जयानंदनं ॥ वंदे श्रीजिनसीतलं च सुबुधं सेवे जिनं

मुक्तिदं । श्रीसिंधं बत पंच विंशतितमं साक्षादरं वैष्णदं ॥२॥ स्तोत्रं सर्वजिनेश्वरै रभिगतं मंत्रेषु मंत्रं वरं । मेतत्संगत यंत्र एव विजयो द्रव्यैर्लिखित्वा शुभैः ॥ पार्श्वैः संध्रियमाण एव सुखदो मांगल्य मालाप्रदो । वामांगे वनिता नरस्तदतरे कुर्वन्ति ये भावतः ॥३॥ प्रस्थाने स्थिति शुद्धिवाद करणे राजादि संदर्शने । मार्गे संविषमे दवाग्नि ज्वलिते चिंतादि निर्नाशने ॥ वध्यार्थे सुतहेतवे धनकृते रक्षंतु पार्श्वे सदा । यंत्रोयं मुनिने त्रसिंह कविना संग्रंथितः सौख्यदः ॥४॥

इति चतुर्विंशति जिनस्तोत्रं समाप्तं ॥

---

२ अथ अकलंक स्तोत्रम् ॥

त्रैलोक्यं सकलं त्रिकाल विषयं सालोकमालोकितम् । साक्षाग्येन यथा स्वयंकरतले रेखात्रयं सांगुलिम् ॥ रागद्वेषभयान्महांतकजरालोलत्व लोभादयो । नीलंधत्पटलंधनाय स महादेवो मया वंद्यते ॥१॥ दग्धं येन पुरत्रयं शरभुवा तीव्रार्चिषा वन्हिना । यो वा तृप्तति मत्तवत्पितृवने यस्यात्मजो वागुहः ॥ सोऽयं किं मम शंकरो भयतृषा रोषार्ति मोहक्षयं । त्कृत्वा यः सतु सर्ववित्तनुभृतां क्षेमंकरः शंकरः॥२॥ यत्नाग्रेन विदारितं कररुहैर्दैत्येंद्रवक्षःस्थलं । सारथ्येन धनंजयस्य समरे यो मारयत् कौरवान् ॥ नासौ विष्णुरनेक कालविषयं यद्ज्ञानमव्याहतं । विश्वं व्याप्य विजृंभते स तु महा विष्णुः सदिष्टोमम ॥३॥ उर्वश्यामुदपादि रागवहुलं चेतो यदीयं पुनः । पात्री दंडकमण्डलु प्रभृतयो यस्याकृतार्थस्थितिं ॥ आविर्भावयितुं भवेत्तु स कथं ब्रह्मा भवेन्मदृशां । क्षुत्तृष्णाश्रम राग रोप रहितो ब्रह्मा कृतार्थोस्तुनः ॥४॥ यो जग्ध्वापि सितं समत्स्य कवलं जीवस्य शून्यं वदन् । कर्ता कर्म फलं न भुक्त इतियद्वक्ता सबुद्धः कथं ॥यज्ज्ञानं क्षण वर्ति वस्तु सकलं

ज्ञातुं न शक्यं सदा । यो जानन् युगपज्जगत्रयमिदं साक्षात्स बुद्धो मम ॥५॥ ईशः किं छिन्नलिंगो यदि विगतभयः शूलपाणिः कथं स्या । न्नाथःकिं भैक्षचारी यतिरिति स कथं सांगनः सात्मजश्च ॥ आराजः किंत्वजन्मा सकल विदिति किं वेत्तिनात्मांतराय । संक्षेपात् सम्यगुक्तं पशुपति मपशुः कोत्रधीमानुपास्ते ॥ ६ ॥ ब्रह्मा चर्माक्षसूत्री सुर युवति रसावेश विभ्रांतचेताः । शंभुःखट्वांगधारी गिरिपति तनयारागली-लानुविद्धः॥ विष्णुश्चक्राधिपः सनदुहित रम गयत् गोपनाचस्य मोहा । दर्हन् विध्वस्तरागो जितसकलभयः कायमेवाप्तनाथः ॥ ७ ॥ एक-स्तृप्सति विप्रसार्य ककुभां चक्रे सहस्र भुजा । मेकः शेष भुजंग भोग शयने आदाय निद्रायते ॥ दृष्टुं चारु तिलोत्तमां मुखमगादेक श्चतुर्व-क्त्रता । मेते मुक्तिपथ वदति विदुषा मुत्कृष्टसत्यद्भुतं ॥ ८ ॥ यो विश्वं वेद्य वेद्य जनन जलनिधेर्भगिनः पारदृष्वा । पूर्वा पर्या विरुद्धं वचनमनुपम निष्कलंकं यदीय॥ तं वंदे साधुवंद्यं सकलगुणनिधि ध्वस्त-दोषद्विपंतं । बुद्धं वा वर्धमानं शतदलनिलय केशवं वा शिवं वा ॥ ९ ॥ माया नास्ति जटा कपाल मुकुटं चंद्रो न मूर्धावली । खट्-वांगं नचवासुकिर्नच धनुःशूल न चोग्रं मुख ॥ कामो यस्य न का-मिनी नच वृषो गीत न नृत्यं पुनः । सोयं पातु निरजनो जिनपतिः सर्वत्र सूक्ष्मः शिवः ॥ १० ॥ नो ब्रह्मांकित भूलनं नचहरेः शंभोर्नमु-द्रांकितं । नो चद्रार्ककरांकितं सुरपतेर्वज्रांकितं नैव च ॥ षड्वक्त्रां-कित वौधदेवहुतभुग्यक्षोरगैर्नांकित । नग्नं पश्य समंततो जगदिदं जै-नेंद्र मुद्रांकित ॥११॥मौंजी दंडकमंडलुप्रभृतयो नो लांछनं ब्राह्मणो । रुद्रस्यापि जटा कपाल मुकुटं कौपीन खट्वांगिना॥ विष्णोश्चक्रगदादि श-खमतुल बौधस्य रक्तांबरं। नग्नं पश्यतवादिनो जगदिदं जैनेन्द्र मुद्रां-कितं ॥ १२ ॥ नाहंकार वशीकृतेन मनसं न द्वेषिणं केवलं । नरात्म्य प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्य बुद्ध्या मया ॥

राज्ञःश्री हिमशीतलस्य सदसि मायो विदग्धात्मनां। बोद्धौयान् सकलान् विजित्य सुगतःपादेन विस्फालितः ॥ १३ ॥ खट्वांगं नैवहस्ते नरशिररचिता लंबिता नैव माला ।भस्मागं नैव शूलं नचगिरि उदिता नैवहस्ते कपालं ॥ चंद्रार्धं नैव मूर्ध्नि नचवृषगमनं नैव कंठे फणींद्रः। तंवंदे त्यक्तदोषंभवभयमथनं ईश्वरं देव देवं ॥ १४ ॥ किंवाद्यो भगवानमेय महिमादेवो कलंकः कलौ । काले यो जनता सुधर्मनिहतो देवोकलंकोजिनः ॥ यस्यस्फार विवेकसमुद्र लहरी जाले प्रमेयाकुला। निर्मग्नातनु ते तराभगवती तारा शिरः कंपनं ॥ १५ ॥ साताराखलु देवता भगवती मन्यापि मन्यामहे । षण्मासावधि जाड्य शंख भगवान् भट्टा कलंक प्रभोः ॥ वाकल्लोल परंपराभिरमिते नूनं जने मज्जनं । व्यापार सहते स्मविस्मितमतिः संताडिते तस्ततः ॥ १६ ॥

इति अकलंक स्तोत्रम् समाप्तं ॥

३ अथ महिम्नस्तोत्रम् ॥

शिखरिणी वृत्त ॥

महिम्नः पारंते परमल भमाना अपि विभो। भवंति स्तोतारः समवसृति भूमौ समुदिताः ॥ यदींद्राद्यास्त्वातज्जिनवृषभ भक्त्यास्तवयतो । ममाप्येष स्तोत्रे हरनिरपवादः परिकरः ॥ १ ॥ स्वरूपं चिद्रूपं किमपि तदरूपं भगवत । श्चनू रूपात्ब्राह्मी यदि गदितु मीष्टेन भवतः॥ ततः कस्य स्तुत्यं किमुपम मिदं कस्य विषयः। पदेत्ववार्चीने पतति नमनः कस्य नवचः ॥ २ ॥ पदं शैवं केचित्परममन पेक्षा क्षयसुखं। स्तुवंति त्वां राज्यादिकपद कृते मंदमतयः । भवेद्वा तत्वार्थे रति रति तरां नैव भविनः। पदेत्ववार्चीने पतति नमनः कस्य नवचः ॥ ३ ॥

गुणानामानंत्वादविषयतया वाङ्मनसयो । न शक्या तत्वज्ञैरपि तव विधातु स्तुतिरिय ॥ भवन्नामोच्चारा पुनरिनममैतां निजगिरं । पुनामीत्यर्थेस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥ ४ ॥ जटालंकारालं कृतमथ वृषां कंच भगवन् । पुनानं विश्वं त्वां प्रथम जिन मत्वा किमुततः ॥ जटां धृत्वा श्रुत्वा वृषमहमपि क्ष्मातलमिदं । पुनामीत्यर्थे स्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ५ ॥ न कोपस्याटोपः स्वरिपुषु नचस्वेष्टपितथा । प्रसक्तिर्नै कांतादिकपरिकरः कश्चिदिति ते ॥ त्रिलोक्या मालोक्या प्यहह परमां प्राभवरमां । विहंतु व्याक्रोशी विदधत इहैके जडधियः ॥ ६ ॥ ध्रुवं कश्चित्कर्ता निखिल भुवनस्यापि सगुन । विभुर्नित्यश्चैकः सतनु रतनु र्वास्वबशनः ॥ स्वयंसिद्धे ष्यस्मिंस्तव मतमनात्पान् हत-धियः । कुतर्कोयं कांश्चिन् मुखरयति मोहाय महतां ॥ ७ ॥ विशुक्षो रागाद्यै रपि भवति किं सर्व विदहो । विनावा सर्वज्ञं ननुजिन किमा-प्तो पिसच्चकिम् ॥ त्वदन्यो पि क्वापि त्रिजगति वतातपस्वविपये । यतो मंदास्त्वां प्रत्यमखर संगे गत इति ॥ ८ ॥ त्वमेवार्हन् बुद्धो जगति परमेष्ठी च पुरुषो । त्तमो लक्ष्यो भास्वान् विबुध गुरु रादीश्वर इति ॥ विभो नानाख्याभिः सम विषम मार्गेषु चरतां । नृणामेको गम्य स्त्व-मसि पयसा मर्णव इव ॥ ९ ॥ प्रसादात्ते पुत्रा विषय सुख साम्राज्य मभजन् । न केवासेवातस्तवन वनवामृद्धिमगमत् ॥ तृपे स्त्रैणे स्वर्णे दृषदिच सदृक्ष पुनरहो । नहि स्वात्मारामं विषय मृग तृष्णा भ्रमयति ॥ १० ॥ भवत्तत्ताटक्षातिशय महिमे क्षात्र ससमु । द्भवद्भक्तिव्यक्ता रिणरण कितांतः करणतः ॥ अधिरव्युर्युक्ता खिलजग दशक्यस्तवम-पि । स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा ह्युद्धरत्ता ॥ ११ ॥ न ग-स्यौ कस्यस्तां नमि विनमि पत्ती जिनपते । त्वदेकस्वामित्वात् क्रमक-मल सेवा सुरसिकौ ॥ प्रसादात्ते विद्या धरपति ततिर्यत्सविनयं । स्त्वयं तस्येताभ्याम् तत्किमनुष्टक्तिर्नफलति ॥ १२ ॥ तदा विद्याः प्राप्य भुवमखिल विद्याधर महा । न्स्त्वय प्रादुर्भाव्य प्रथम मथवैताढ्य

विभुतां ॥ यदेतौ दुःसाध्यौ सुरवरनराणामभजतां । स्थिरायास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुर हरविस्पूर्जित मिदं ॥ १३ ॥ तदैश्वर्यं वर्यं मदन मद विध्वंसच महा । व्रति त्वं सर्वज्ञ त्वमसमविभूतिश्च परतः ॥ सिवासंगश्चंगः सतर्नामेति नो कस्य कृतिनः । स्थिरायास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुरहर विस्पूर्जित मिदं ॥ १४ ॥ विवाहादौ नेतर्मृदुरुपकृतोपिभर्तभवं । त्वया पारं पर्यागत परिचयान्मोह चरटः ॥ तथादूरं नष्टः कचिदपि यथा केवल कला । प्रतिष्ठात्वय्यासी श्रमसुपचितो मुह्यति खलः ॥ १५ ॥ निजभ्रातास्पर्धालुर्भरत विभुरासीन्मघवता । यदा पश्यस्पार्द्धा सनमथसुखं केवल रमां ॥ तदेतस्मिन्सर्वं तव पद विनम्रे समुचितं । न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरस स्त्वय्यवनतिः ॥ १६ ॥ निनं सायां पूर्वं क्षणमजगणत्त्वां भरत राट् । समं चक्रेणाहो तदिहविषयानां विषमता ॥ यदेतस्याचीत्र प्रमित फलदैवा शिव सुखं । न कस्याप्युन्नत्यैभवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १७ ॥ प्रभोत्वत्पुत्रस्या त्रलवलवतो वा दुर्बलिनः । तपस्तीव्रं तादृक्सरस्वधिमानादपिकृतं ॥ निदानं पानस्य ध्रुवमभवदाश्चर्य मथवा । विकरोपि श्लाघ्यो भुवन भय भंगव्यसनिनः ॥ १८ ॥ न सुत्रामि यत्र प्रभवति विघ्नातापि न विभुः । स वैकुंठः कुंठः किमपि नभवश्चाभवदलं ॥ जिगीषुः सत्वामप्यपर सुखदुर्मतिरभूत् । स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभुवः ॥ १९ ॥ प्रयुंजानः स्वामिन् स्वयमखिल शिक्षान्यसुमतां । कलाः पुंसां स्त्रीणामपि च सकला क्ष्मापतिरपि ॥ कुलालादींस्तांस्तान् क्षणमभिनयन् शिक्षणविधौ । जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुतां ॥ २० ॥ प्रभो तैस्तैः सारैरणुभिरखिलै श्चामरवरैः । कृतं रूपं सर्वोत्तम सुखममंगुष्ठकमितं ॥ त्वदंगुष्ठस्याग्रे शुभति किलनांगारक इवे । त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिर दिव्यं तव वपु. ॥ २१ ॥ प्रजाः प्राज्यं राज्यं स्थविरजननी स्वस्यतनुजां । स्वदस्त्रन्नासपत्ता वपिच विहरन् बाहुबलिन ॥ उपेक्षिता आत्त व्रत नृप

सहस्रांश्च चतुरे। विधेयै क्रीडंत्यो न खलु परतंत्राः प्रभुधियः ॥२२॥ ददाने। रत्नानां त्रयमखिल दौर्गत्य हरणं । निदानं संपत्ते स्त्रिभुवन जनानामनुदिनं ॥ भवान्योगक्षेमा वपि विरचयन्मन्मथजये । त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर वर जागर्ति जगतां ॥ २३ ॥ यथा पूर्वं मुग्धास्तव समुपदेशा क्कगलिनः । सदा स्वामिन्नत्रा जनिपत सदाचार चतुराः ॥ तथा कस्कः संपूत्यपिन विशदेषु त्वदुदित । श्रुतौ श्रद्धां वद्धवा दृढ-परिकरःकर्म सुजनः ॥ २४ ॥ तपस्तीव्रब्रह्म व्रत नियम निष्ठा बहु-विधा । क्रिया कष्टा स्पष्टा अपि जिन यदुष्टाशयतया ॥ त्वदाज्ञा वज्ञायां नियत महिता यैव भविनां । ध्रुवं कर्तुःश्रद्धाविधुरमभिचारा-यहिमखाः ॥ २५ ॥ क्षगाभृन्मुख्याः के नियत मधिमात्रा नपिसदा । शयस्थान् शास्त्रौघान् न दधति तरांयस्य हतये ॥ अविघ्नं तं निघ्नन्न सम समयस्तामसमृगं । त्रसंतं तेत्रापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २६ ॥ परिभ्रम्यक्लेशार्जितमपि सहस्रेण शरदा । मदाश्चिद्रत्नं त्व सपदि मरुदेव्यो तदपिचेत् ॥ प्रभो निःस्नेह सात्रतसमय सर्वावगणना । दवैति त्वामद्धा वत वरद मुग्धा युवतय ॥ २७ ॥ महानंदे यत्र्यप्यसि जिन दवी यस्य पि पदे । न रुष्टस्तुष्टश्च त्रिभुवन जनेषु क्वचिदपि ॥ भवन्नामस्वामिन् स्त्रमनसि महामंत्र मनिशं । तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि ॥ २८ ॥ प्रभो प्राणायामा भ्यसनरसि कत्वान्निज मनः । समाधावा धायाखिलविषयतो क्षाणि युगपत् ॥ द्रुतं मन्यात्मस्थिर निहित नासाग्रनयना । दधत्यं तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥ २९ ॥ सुरद्रुःस्त्रकुंभ स्त्रिदश सुरभीत्वं सुरमणिः। पितामाता भ्राता विभुरपि सुकृत्वं च सुगुरुः ॥ परात्मा ब्रह्मापि त्वमसि परमं दैवन मतो । नविद्मस्तत्त्वं तद्वय मिहहि यत्त्वं न भवसि ॥ ३० ॥ अकाराद्यैर्वर्णै स्त्वयिपरिणतान् पंचपरमे । ष्ठिनःस्पष्टं पंचाक्षर रच-नया नामनिगदत् ॥ कल्पानाद व्यक्तं किमपि परम ब्रह्मविषयं । सम-

स्त व्यस्तं त्वां शरणदगृणा त्योमितिपदं ॥ ३१ ॥ नरागाद्यैर्गस्तो न पुनरनुकंप्यो मदपरः । कृपालुस्त्व त्तोन्यो न जगति नतेभ्यः पुनरलं ॥ स्वयं तैरत्यार्त्तैःकिमितर सुरैश्चेति विमृशन् । भियायास्मै धाम्ने प्रविहित नमस्योस्मि भवते ॥ ३२ ॥ नमोनाशक्ताय क्वचिदपि विरक्ताय चनमो । नमःसंबुद्धाय प्रसमदमरिद्धाय च नमः ॥ नमःसर्वज्ञाय स्मरणपर तज्ज्ञाय च नमो । नमःसर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वायच नमः ॥ ३३ ॥ दलित रजसे शश्वद्विश्वा चिंताय नमोनमः । प्रहत तमसे श्री सर्वज्ञाधिपाय नम ॥ जनहित कृते तुभ्यं सत्त्वाधिकायनमः । प्रमहसि पदे निस्त्रै गुण्ये शिवाय नमोनमः ॥ ३४ ॥ कुसुम वटुदिवाहं तत्स्तुतौ किंचनार्हं । कृतिभिरुरसि कंठे वा गुणत्वा दर्घायं ॥ जिनवर निजहर्षा त्कर्षतो कार्षमेवं । वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारं ॥ ३५ ॥ प्रांशु श्री सोमवंशे जनिषत मुनयो मौक्तिकानीव शुद्धा । स्तेथप्येकावलीव प्रगुण गुणवती श्रीमदाचार्य पंक्तिः ॥ जीयाद्राज्यां यदूनामिव गुरु जयचंद्राह्वय श्री मुनींद्रः । तस्यामप्येष चिंतामणिरुचिर रुचिर्नायकःकृष्णदेवः ॥ ३६ ॥ निहित चरम पादं श्री महिम्न स्तवस्य । त्रिभुवन महितस्य श्री युगादीश्वरस्य ॥ भ्रमर इव सदा तत् पादपद्मोपजीवी । रुचिरमलघु वृत्तैःस्तोत्रमेतद्व्यधत्त ॥ ३७ ॥ एवं शारद सोमसुंदर यशः स्तोमं युगादीश्वरं । चेतोभूज्जयचंद्र मौलिभिरभिष्टुत्वान्वहं योगिभिः॥ज्ञानप्राप्य विशाल राज दसमाल्हादं समाश्रीयते । मुक्ते मूर्धनिरत्नशेखररमाब्रम्हैकतेजोमयी ॥ ३८ ॥

इति महिम्नः स्तोत्र समाप्तं ॥

४ अथ सिध्ध विंशतिका ॥

शिखरिणी वृत्त ॥

मुनीनां दुस्तर्क्यःखलुदुरधिगम्योमृत भुजां । गुणानां ते राशिः कलयति नरस्तत्कथममुं ॥ विवक्षु श्रौत्सुक्यात्स्वधिय मविजानन् जड-मति । निधातुंकुंभांतर्निंघिमभिलपामीहपयसां ॥ १ ॥ त्वमीशानोस्मा-कं वयमपिच भृत्यास्तव विभो । तदुच्चैर्भृत्यानां भवसि न कथं हंतवरदः ॥ यदामादक्षेण स्फुरति तव लज्जा जडधिया । धिय.स्वस्यादाने वद किमिति कार्पण्य मतुलं॥२॥न रोधो नावज्ञा नच खलभयं ना नवसरो। न-चासिद्धिर्नास्थाचिरपरिचयेनोचटुवचः विभोत्वत्सेवायामिहयदपि सौ कर्य मखिलं । तथाप्यस्मच्चेतो हतमितरसेवांस्पृहयति ॥ ३ ॥ श्रुते न व्यासंगो नच सतत संगोपि सुविदा । मभंगो नोत्साहस्तपसि नच दानं नविरति· ॥ गुणैरस्पृष्टंनो वत जनममुं तारयसि चे । ज्जडाना-मुद्धारे वरद तवकाहो पुरुपिका ॥ ४ ॥ भजंतोमामामप्यहह विषया रूढ मनस । स्तदुद्धारे माभू.श्लथित विनियोगो जडधिया ॥ त्यजामो व्यासंगं विषम विषयाणां यदितदा । स्वयंतूर्ण तीर्णा स्त्वयि किमिते दैन्येन भगवन् ॥ ५ ॥ त्वमुद्धर्त्ता नृणामपि भवपयो धौनिपततां । विदित्वे त्यागांते दुरितभरभुग्नोपि शरणं ॥ कुरूद्धारंनोचेत्समिह-मदीयैश्चदुरितैः । पराभूति गंता वन वत विवाद व्यतिकरे ॥ ६ ॥ मयांगी चक्रे त्वं परमपद लाभाहित धिया । त्वमीशौदासिन्यं भजसि-यदि वाच्यं किमु पुन ॥ विदूरेऽभीष्टार्थ मवितरण कीर्ति· किमितिमे । कृतांगीकार स्त्वं परमनृण भावं न भजसि ॥ ७ ॥ त्वमीगस्मर्तॄणां वकुल भवभारं निरसय । भवत्यामादक्षे श्रियमनुमपेयां वितनुपे ॥

जनस्त्वा माख्याति श्रुतविदिह नीरागइतियस्तदाश्चर्यं यद्वादूभुत चरित लक्षाह विभवः ॥ ८ ॥ उदासीनो नाथ स्त्वमिह भजतामप्य भजतां । सुखं वा दुःखं वा नखलु समदृश्वा स्पृहयसि ॥ परं त्वन्नामैवावति जन ममुं विघ्न भरतो । मिथैव श्लाघ्या तत्त्वयि किमपि मोघं बत यशः ॥ ९ ॥ त्रिलोकी त्वामंतर्व सति जगदीशेति महिमा । तव श्लाघ्यो लोकेऽखिल जन चमत्कार जननः ॥ मम त्वामप्यंत र्हृ दि निवहतः किंचन यशो । विना पुण्यैः कीर्तिं जगति किल कश्चिन्न लभते ॥ १० ॥ समच्छिन्नामेश्रीः कृतकलुप कर्मेग्र पटलैः । प्रदेया सैवाश्रु स्वयमिह समुद्घाटच सहसा ॥ अये कीर्तिं सौधाकर किरण कांत्याः सहचरीं । मदीयं तां मह्यं श्रिय मवितरन् किं न भजसे ॥ ११ ॥ प्रकुर्वन्तं पापा न्पवि भय मुपेमो नहि मनाक् । तवैवार्थेऽस्माभिर्व्यरचि दुरितानां व्यतिकरः ॥ विनामादृक्षैस्ते विपमभव पायोऽधि पतितैः । कथं कारं लभ्या वरदयति तो द्धार पदवी ॥ १२ ॥ त्वमुद्धर्तुं दीनान् दुरित भर मुग्नानपि विभो । भवाब्धौ निक्षेप्तुं ममदुरित मत्याग्रह परं ॥ दिदृक्षामो ब्रह्मन्निहहि बत वाद व्यतिकरे । प्रतिज्ञायां कस्यो ल्लसति दृढ भूमिः खलु हतः ॥ १३ ॥ समक्षस्त्वं नाक्ष्णोर्न च वरद चित्रानुकृति भाक् । नवा लक्षः स्वप्ने कथमपि न सेव्योऽसि वपुषा ॥ तथाप्यस्मच्चेत स्त्वयि भजति रागाद्वशगतां । न जाने तद्ब्रह्मन्क तममभिचारं प्रथयसि ॥ १४ ॥ भवश्वभ्रापातः स्फुरति बत राग प्रभवइत्युपास्ते त्वां लोको बत निहतरागंच विमृशन् ॥ अये चित्रं चित्रं चरितमविचिंत्यं वरद ते । अतोप्यंतर्नृणां अतुल मनुरागं जनयसि ॥ १५ ॥ निशम्य स्वं दासं क्वचिदपि विपद्विघ्नितनुं । त्वरंते स्वां व्रीडां हृदि निदधतो हंत विभवः ॥ अये मामा क्रान्तं दृढ दुरित लुंटाकनि करैः । मुहुः पश्यन्पश्यन्वत वत न लज्जां कलयसि ॥ १६ ॥ पयोधेर्गांभीर्यं विपमतिमिनक्रै रुप हतं । हतः काठिन्येन ध्रुवमचल

राजस्य महिमा ॥ विनिर्मुक्ते दोषे रगणित गुणौघैः श्रित्वति । त्वयि ब्रह्मन्धत्ते सतत सुषुमां तत् द्वयमपि ॥ १७ ॥ पशुर्धेनुः शैलो मणिरवनि जन्मातरू रथ, स्फुटं याचा दैन्ये ददति मितमर्थं कथमपि ॥ तव ब्रह्मन्स्वैरं श्रियमपरिमेयां वितरतो । न जाने त्रैलोक्ये कतरदुपमानं विलसति ॥ १८ ॥

। शार्दूल विक्रीडितम् ।

इत्थं भक्ति भरातुरेण मनसा वाचामगम्योपियो। नूनं नाथनूतोसि शीघ्ररचितैरत्युग्र काव्यैर्मया ॥ तुष्टोयद्यसि सांप्रतं भवभव क्लेशाकुलं हंतमा । मंगीकुर्वनुकंपया जिनपते नोचेदनंगीकुरू ॥ १९ ॥

॥ अनुष्टुभ् ॥

॥ त्वमनंगोऽसि भगवन्नंगमप्यनुकंप्यताम् ॥
॥ ययायंनांगसंसर्गैः कर्हिचित्परिभूयते ॥ २० ॥

इति श्रमणोपासक दलपतिराय विरचित सिद्ध विंशका स्तोत्रम् ॥६॥

। अथ सिद्धान्तेऽष्ट पदार्था दुरधिगम्या ।

अनाद्येयं सिद्धि र्ध्रुवमुपगतास्तांपुनरित—स्तथाप्येषारिक्ता नहि खलुकदाचित्समभवत् ॥ तदेवं दुस्तर्क्य व्यतिकर निरासा क्षमधिया-मचिन्त्यस्तेवाचो वहति महिमा श्वासनविधि ॥ १ ॥ वहत्यद्धासुक्ते रविरतमयं भव्य निकरा—दनंतोसोकाल स्तदपि नचते यांतिविरति॥ तदेव० ॥ २ ॥ अवश्यंसेत्स्यंति स्फुटमिहहि—भव्यास्तदपिभो—अमी-सिद्धेभ्यः स्युःखल्वयदिकदानंतगुणिता ॥ त० ॥ ३ ॥ अभाज्ये क्षेत्रादौ स्थितिमुपगतः पुद्गलगणः—पृथग्रूपेण स्वेनच भजति संघातनि-

चयं ॥ तदे० ॥ ४ ॥ प्रदेशःखस्येकः स्पृशातिखलु दिक्स्थानपिपशन्-पृथग्दैशैः स्वस्याप्यवयवविहीन स्तदपिसः ॥ त० ॥ ५ ॥ दिगंते जीवोयं व्रजति समयैकेन घटयन्नभोऽणून्निः संख्यांस्तदपिचनिरंशोहि-समयः ॥ त० ॥ ६ ॥ अणौशीतादीनां द्वयमिह चतुर्णां निगदितं-कुतः स्कंधे चाष्टौ कथमिहहि शब्दादिघटना ॥ त० ॥ ७ ॥ कृतं पुसा कर्म प्रभवति कथं तस्य घटना–निरादिः स्याद्वास्तां कथमिहनिरादेर्वि-घटनं ॥ त० ॥ ८ ॥

॥ इति सिद्धान्तेऽष्टपदार्थी दुरधिगम्या समाप्ता ॥

---

६ ॥ श्रीमहावीराष्टक लिख्यते ॥

यदीये चैतन्ये मुकर इव भावाश्चिदचितः–समंभ्रातिध्रौव्य व्यय जनिलसंतोंतरहिताः ॥ जगत्साक्षि मार्गप्रगटनपरो भानुखियो–महावीरः स्वामी नयनपथगामी भवतुनः ॥ १ ॥ अताम्रंयच्चक्षुः कमल युगलं स्पंदरहितं जनान् कोपाथायं प्रकटयति वाभ्यंतरमपि ॥ स्फुटं मूर्तिर्यस्यप्रशमसमयां वातिविमला महावीर० ॥ २ ॥ नमन्नाकें-द्राली मुकुटमणिभाजालजटिलं लसत्पादां भोजद्वयमिह यदीयं तनुभृतां भवज्वाला शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि महावीरः स्वामी० ॥३॥ यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह क्षणादासीत्स्वर्गीगुणगणसमृद्धःसु-खनिधेः लभंते सद्भक्ताः शिव सुख समानं किमुतदा महावीरः स्वामी० ॥ ४ ॥ कनत्स्वर्णाभासोप्यपगत तनुर्ज्ञाननिवहो विचित्रात्माप्येको नृ-पतिवरसिद्धार्थतनयः अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुतगतिः महावीरः० ॥ ५ ॥ यदीया वाग्गंगा विविध नय कल्लोल विमला वृहद् ज्ञानांभोभिर्जगति जनतांयाश्नपयति । इदानी मप्येषा बुधजनमरालैः

परिचिता महावीरः० ॥ ६ ॥ अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी कामसुभटः कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येनविजितः स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपद राज्यायसजता महावीरः० ॥ ७ ॥ महा मोहातंक प्रशमन पराकस्मिक भिषक् निरापेक्षो बंधुर्विदितमहिमामंगलकरः शरण्यःसाधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो महावीरः० ॥ ८ ॥

अनुष्टुप्.

महावीराष्टक स्तोत्रं भक्त्याभाग्येंदुनाकृतं
यःपठेच्छृणुयाद्वापि सयातिपरमांगतिं ॥ ९ ॥

इति महावीराष्टक स्तोत्रम् ॥

---

७ अथ जिन सहस्र नाम स्तोत्रम् ॥

प्रभो भवांग भोगेषु निर्विण्णो दुःखभीरुकः ॥ ॥ एष विज्ञापयामित्वां शरण्यंकरुणार्णवम् ॥ १ ॥ सुखलाल सदामोहाद्भ्राम्यन्नहि रितस्ततः ॥ सुखैकहेतोर्नामापि तव न ज्ञातवान्पुरा ॥ २ ॥ अद्य मोहग्रहावेश शैथिल्यात्किंचिदुन्मुखः अनंतगुणमाप्तेभ्य स्त्वांश्रुत्वास्तोतुमुद्यतः भक्त्या प्रोत्साह्यमानोपि दूरं शक्त्या तिरस्कृतः ॥ त्वांनामाष्टसहस्रेण स्तुत्वात्मानंपुनाम्यहं ॥ ४ ॥ जिन सर्वज्ञ यज्ञहि तीर्थकृन्नाथ योगिनां । निर्वाण ब्रह्म बुद्धान्त कृतांचाष्टोत्तरैः शतैः॥५॥

तद्यथा

जिनो जिनेंद्रो जिनराट् जिनपृष्ठो जिनोत्तमः । जिनाधिपो जिनाधीशो जिनस्वामी जिनेश्वरः ॥ ६ ॥ जिननाथोजिनपतिर्जिनराजो जेनाधिराट् । जिनप्रभुर्जिनविभुर्जिनभर्ता जिनाधिभूः ॥ ७ ॥ जिन नेता जिने शानो जिनेनो जिन नायकः । जिनेट् जिन परिवृढो जिन देवो जिनेशिता ॥ ८ ॥ जिनाधि राजो जिनपो जिनेशी जिनगा-

शीता । जिनाधिनाथोऽपि जिनाधिपतिर्जिनपालकः ॥ ९ ॥ जिनचंद्रो जिनादित्यो जिनार्को जिनकुंजरः । जिनेंदुर्जिन धौरेयो जिन धुर्यो जिनोत्तरः ॥ १० ॥ जिनवर्यो जिनवरो जिनसिंहो जिनोद्वहः । जिनर्षभो जिनवृषो जिन रत्नं जिनो रसं ॥ ११ ॥ जिनेशो जिनशार्दूलो जिनाग्र्यो जिनपुंगवः । जिनहंसो जिनोत्तंसो जिननागो जिनाग्रणीः ॥ १२ ॥ जिनप्रवेकश्च जिनग्रामणीर्जिनसत्तमः । जिनप्रवर्हः परमजिनो जिनपुरोगमः ॥ १३ ॥ जिनश्रेष्ठो जिनज्येष्ठो जिनमुख्यो जिनाग्रमः । श्री जिनश्चोत्तम जिनो जिनवृंदारकोरिजित् ॥ १४ ॥ निर्विघ्नो विरजाःशुद्धो निस्तमस्को निरंजनः । घातिकर्मांतकः कर्म मर्म वित्कर्महानघः ॥ १५ ॥ वीतरागोऽक्षुदद्वेषो निर्मोहो निर्मदोगदः । वितृष्णोनिर्ममोऽसंगो निर्भयोवीतविस्मयः ॥ १६ ॥ अस्वप्नो निःश्रमोऽजन्माःनिःश्वेदोनिर्जरोमरः । अरत्पतीतो निश्चिंतोनिर्विषादास्त्रिषष्टिजित् ॥ १७॥

इति जिनशतम् समाप्तम् ॥

सर्वज्ञः सर्व वित्सर्वदर्शी सर्वावलोकन : अनंत विक्रमो नंत वीर्यो नंत सुषात्मकः ॥१८॥ अनंत सौख्यो विश्वज्ञो विश्वदृश्वाखिलार्थदृक् । न्यक्षदृक् विश्वतश्चक्षुविश्वचक्षुरशेषवित् ॥ १९ ॥ आनंदःपरमानदः सदानंदः सदोदयः । नित्या नंदोः महानंदःपरानंदः परोदयः ॥२० ॥ परमोजः परंतेजः परंधाम परंमहः । प्रत्यग्ज्योतिः परंज्योतिः परंब्रह्म परंरहः ॥ २१ ॥ प्रत्यगात्मा प्रबुद्धात्मा महात्मात्ममहोदयः । परमात्मा प्रशांतात्मा परत्मात्म निकेतनः ॥ २२ ॥ परमेष्ठी महिष्ठात्मा श्रेष्ठात्मा स्वात्मनिष्ठितः । ब्रह्मनिष्ठो महानिष्ठो निरूढात्मा दृढात्मदृक् ॥ २३ ॥ एकविद्यो महाविद्यो महाब्रह्म पदेश्वरः । पंच ब्रह्ममयः सार्वं सर्व विद्येश्वर सुभू ॥ २४ ॥ अनंत-

धीरनंतात्मा नंतशक्तिरनंतदृक् अनंतानंतधीशक्ति रनंतचिदनंत-मुत् ॥ २५ ॥ सदाप्रकाशः सर्वार्थः साक्षात्कारीसमग्रधीः कर्मसाक्षी जगच्चक्षुरलक्षात्मा जगत्स्थितिः ॥ २६ ॥ निराबाधोप्रतर्क्यात्मा धर्म चक्रीविदांवरः भूतात्मा सहज ज्योतिर्विश्वज्योतीरतींद्रियः ॥२७॥ केवलीकेवलालोको लोकालोक विलोकन विविक्त केवलोऽव्यक्त शरण्योऽचिंत्यवैभव ॥ २८ ॥ विश्वसृड्विश्वरूपात्मा विश्वात्मा विश्व-तोमुखः विश्वव्यापी स्वयंज्योतिचिंत्यात्मामितप्रभः ॥ २९ ॥ महौदार्यो महाबोधी महालासोमहोदयः महोपभोगीसुगतिर्महाभोगोमहाबलः॥३०॥

इति सर्वज्ञशतं समाप्तम् २

यज्ञार्हो भगवानर्हन्महार्हो मघवार्चितः भूतार्थयज्ञपुरुषो भूतार्थ क्रतुपूरुषः ॥ ३१ ॥ पूज्यो भट्टारकः तत्र भवानत्र भवान्महान महा महार्हस्तत्रायुस्ततोदीर्घायुरर्घ्यवाक् ॥ ३२ ॥ आराध्यः परमाराध्यः पंचकल्याणपूजितः दृग्विशुद्धिगणोदग्रो वसुधारार्चितास्पदः ॥ ३३ ॥ सुस्वप्नदर्शीदिव्योजाः शचीसेवितमातृकः स्याद्रत्नगर्भःश्रीपूतगर्भोगर्भ-त्सवोस्थितः ॥ ३४ ॥ दिव्योपचारोपचितः पद्मभूर्निष्कलःस्वज सद्वीर्यजन्मापुण्यांगो भास्वानुद्भूतदैवत. ॥ ३५ ॥ विश्वविज्ञातसंभूतो विश्वदेवागमाप्नुतः शचीसृष्टप्रतिछंद. सहस्राक्षदृगुत्सवः ॥ ३६ ॥ नृत्यदैरावतासीनः सर्वशक्र नमस्कृतः हर्षा कुलामरखगश्चारणर्षिमतो-त्सवः ॥ ३७ ॥ व्योमविष्णुपदारक्षा स्नानपीतायिताद्रिराट् तीर्थेशंम-न्यदुग्धाब्धिः स्नानांबुस्नातवासवः ॥ ३८ ॥ गंधांबुपूत त्रैलोक्यो वज्रशूचीशुचिश्रवाः कृतार्थितशचीहस्तः शक्रोघृष्टे नायकः ॥ ३९ ॥ शक्रारब्धानंद नृत्यः शची विस्मापितांबिकः इंद्रनृत्यंतपितृको रैदपूर्ण मनोरथः ॥ ४० ॥ आज्ञार्थींद्र कृता सेवा देवर्षीष्ट शिवोद्यमः दीक्षाक्षण क्षुब्दजगद्भूर्भुवः स्वःपतीडितः ॥ ४१ ॥ कुबेर निर्मितास्थानः श्री

युग्योगीश्वरार्चितः ब्रह्मेडयोब्रह्मविद्वेद्योयाज्योयज्ञपतिःक्रतुः ॥ ४२ ॥ यज्ञांगममृतंयज्ञो हविःस्तुत्यः स्तुतीश्वरः भावोमहामहपतिर्महायज्ञोग्रयाजकः ॥ ४३ ॥ दयायागो जगत्पूज्यः पूजार्हो जगदार्चितः देवाधिदेवः शक्राच्यो देवदेवो जगद्गुरुः ॥४४॥ संभूतदेव संघार्च्यः पद्मयानो जयद्वजी भामंडली चतुःषष्ठी चामरो देव दुंदुभिः ॥ ४५ ॥ वागस्पृष्टासनस्तत्र त्रयराट्पुष्पवृष्टि भाक् दिव्याशोको मानमर्दीसंगीताहेष्टिमंगलः ॥ ४६ ॥

इति यज्ञार्हशतम्. ३

तीर्थकृत्तीर्थसृट्तीर्थंकर स्तीर्थकरःसुदृक् तीर्थकर्तातीर्थभर्त्तातीर्थेशस्तीर्थनायकः ॥ ४७ ॥ धर्म तीर्थकरस्तीर्थ प्रणेता तीर्थकारकः तीर्थ प्रवर्तकस्तीर्थवेधास्तीर्थ विधायकः ॥ ४८ ॥ सत्यतीर्थकरस्तीर्थ सेव्यस्तैर्थिकतारकः सत्य वाक्याधिपः सत्यशासनो प्रतिशासनः ॥ ४९ ॥ स्याद्वादी दिव्यगीर्दिव्य ध्वनिरव्याहतार्थवाक् पुण्य वागर्थ्य वागर्द्धमागधो योक्तिरिद्धवाक् ॥ ५० ॥ अनेकांत दिगेकान्त ध्वांत भिद्दुर्नयांतकृत् सार्थवागप्रयत्नोक्तिः प्रतितीर्थमदघ्नवाक् ॥ ५१ ॥ स्यात्कार ध्वज वागी हा पेतवागचलौष्टवाक् अपौरुषेय वाक् शास्तारुद्धवाक्सप्तभंगिवाक् ॥ ५२ ॥ अवर्णगीः सर्व भाषा मयगीर्व्यक्त वर्णगीः अमोघ वागक्रम वा गवाच्यानंत वागवाक् ॥ ५३ ॥ अद्वैतगीः सूनृतगीः सत्यानु भयगीःसुगीः योजन व्यापगीः क्षीर गौरगीस्तीर्थकृत्वगीः ॥ ५४ ॥ भव्यैकः श्रव्यगुः सद्गुश्चित्रगुःपरमार्थगुः प्रशांतगुः प्राश्निकगुः सुगुर्नियतकालगुः ॥ ५५॥ सुश्रुतिःसुश्रुतो याज्य श्रुतिः सुश्रुमहाश्रुतिः धर्मश्रुतिः श्रुतिपतिःश्रुत्युर्द्धृतध्रुवश्रुतिः ॥५६ ॥ निर्वाणमार्गदिग्मार्ग देशकः सर्वमार्गदिक् सारस्वतप थस्तीर्थ परमोत्तमतीर्थकृत् ॥ ५७ ॥ देष्टा वाग्मीश्वरो धर्मशा-

सको धर्मदेशकः वागीश्वर स्त्रयीनाथस्त्रिभंगीशो गिरांपतिः॥ ५८ ॥ सिद्धाज्ञः सिद्धवागाज्ञा सिद्धः सिद्धैकशासनः जगत्प्रसिद्धसिद्धान्त सिद्धमंत्रःसुसिद्धवाक् ॥ ५९ ॥ शुचि श्रवा निरुक्तोक्तिः तंत्रकृन्न्यायशास्त्रकृत् महिष्ठ वाग्मह्रा नादः कवींद्रो दुंदुभिस्वनः ॥ ५० ॥

इति तीर्थकृच्छतं ॥

नाथः पतिः परिवृढः स्वामीभर्ता विभुः प्रभुः ईश्वरोधीश्वरो धीशो धीशानो धीशिते शिता ॥ ६१ ॥ ईशोधिपति रीशान इनइंद्रोधिपोधिभूः महेश्वरो महेशानो महेशः परमेशिता ॥ ६२ ॥ अधिदेवो महादेवो देवस्त्रिभुवनेश्वरः विश्वेशो विश्वभूतेशोविश्वेट्विश्वेश्वरोधिराट् ॥ ६३ ॥ लोकेश्वरो लोकपतिर्लोकनाथो जगत्पतिः त्रैलोक्यनाथो लोकेशो जगन्नाथो जगत्प्रभुः ॥ ६४ ॥ पितापरः परतरो जेता जिष्णुरनीश्वरः कर्ताप्रभुष्णुर्भ्राजिष्णुः प्रभविष्णुः स्वयंप्रभुः ॥ ६५ ॥ लोकजिद्विश्वजिद्विश्व विजेता विश्वजित्वरः जगज्जेता जगज्जैत्रो जराजिष्णुर्जगज्जयी ॥ ६६ ॥ अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता भूर्भुवः स्वरधीश्वरः धर्मनायक ऋद्धीशो भूतनाथश्च भूतभृत् ॥ ६७ ॥ गतिः पाता वृषोवर्यो मंत्रकृच्छुभलक्षणः लोकाध्यक्षोदुराधर्षो लव्य बंधु निरुत्सकः ॥ ६८॥ धीरोजगद्धितो जय्यस्त्रिजगत्पतिरीश्वरः विश्वासी सर्व लोकेशो विलत्रो भुवनेश्वरः ॥ ६९ ॥ त्रिजगद्वल्लभ स्तुंग स्त्रिजगन्मंगलोदयः धर्मचक्रायुधः सद्योजातः स्त्रैलोक्य मंगलः ॥ ७० ॥ वरदो प्रतिघो छेद्यो दृढीयानभयंकरः महाभागो निरोपम्यो धर्मसाम्राज्य नायकः ॥ ७१ ॥

इति नाथशतकम्. ॥ ५.

योगी प्रव्यक्तनिर्वेदः साम्यारोहण तत्परः सामायिकी सामयिको निष्प्रमादो प्रतिक्रमः ॥ ७२ ॥ यमः प्रधान नियमः स्वभ्यस्त पर-

मात्मनः प्राणायाम चणः सिद्धः प्रत्याहारो जितेंद्रियः ॥ ७३ ॥ धारणाधीश्वरो धर्म ध्याननिष्ठः समाधिराट् स्फुरत्समीर सीभाव एकीकरणनायकः ॥ ७४ ॥ निर्ग्रंथ नाथो योगींद्र ऋषिः साधुर्यतिर्मुनिः महर्षिः साधु धौरेयो यति नाथो मुनीश्वरः ॥ ७५ ॥ महामुनिर्महा मौनी महाध्यानी महाव्रती महाक्षमो महाशीलो महाशांतो महादमः ॥ ७६ ॥ निर्लेपो निर्भ्रमः स्वान्तो धर्माध्यक्षो दयाध्वजः ब्रह्मयोनिः स्वयंबुद्धो ब्रह्मज्ञो ब्रह्म तत्ववित् ॥ ७७ ॥ पूतात्मा स्नातकोदांतो भदंतो वीतमत्सरः धर्म वृथा युधो क्षोभ्यः प्रपूतात्मामृतोत्सवः ॥ ७८ ॥ मंत्रमूर्ति स्वसौम्यात्मा स्वतंत्रो ब्रह्म संभवः सुप्रसन्नो गुणांभोधिः पुण्यापुण्य निरोधकः ॥ ७९ ॥ सुसंवृत्तः सुगुप्तात्मा सिद्धात्मा निरुपप्लवः महोदर्को महोपायो जगदेकः पितामहः ॥ ८० ॥ महा कारुणिको गुण्यो महा क्लेशांकुशशुचिः अरिंजयः सदायोगः सदाभोगः सदाधृतिः ॥ ८१ ॥ परमौदा सितानाश्वान् सप्ताशीः शांतनायकः अपूर्व वैद्यो योगज्ञो धर्ममूर्तिरधर्मधृक् ॥ ८२ ॥ ब्रह्मन्महा ब्रह्मपतिः कृतकृत्यः कृतक्रतुः गुणाकरो गुणोच्छेदी निर्निमेषो निराश्रयः ॥ ८३ ॥ सूरिः सुनय तत्वज्ञो महामैत्रीमयः समी प्रक्षीणबंधो निर्द्वंद्वो वंद्यदेवो गुणाग्रणीः ॥ ८४ ॥

इति योग शतं समाप्तम्.

निर्वाणः सागरः प्राज्ञैर्महासाधुरुदाहृतः विमला मोक्ष शुद्धाभः श्रीधरोदत्त इत्यपि ॥ ८५ ॥ अमलाभोऽप्युद्धरोग्निः संजयश्च शिवस्तथा पुष्पांजलिः शिवगणउत्साहो ज्ञान संज्ञकः ॥ ८६ ॥ परमेश्वर इत्युक्तो विमलेशो यशोधरः कृष्णो ज्ञानमतिः शुद्धमतिः श्रीभद्र शांतियुक् ॥ ८७ ॥ वृषभस्तद्वदजितः संभवश्चाभिनंदनः मुनिभिः सुमतिः पद्मप्रभः प्रोक्तः सुपार्श्वकः ॥ ८८ ॥ चंद्रप्रभः पुष्पदन्तः शीतल श्रेय

आन्हयः वासुपूज्यश्च विमलोनंतजिद्धर्म इत्यपि ॥ ८९ ॥ शांति कुंथुर रोमक्षिः सुव्रतो नमिरप्यतः नेमिः पार्श्वोवर्द्धमानो महावीरः सुवीरकः ॥ ९० ॥ सन्मतिश्चाकयमिहतिमहावीर इत्यपि महापद्मः सूरदेवः सुप्रभश्च स्वयंप्रभः ॥ ९१ ॥ सर्वायुधोजयो देवो भवेदुदयदेवकः प्रभादेव उदंकश्च प्रश्न कीर्तिं जयाभिधः ॥ ९२ ॥ पूर्णबुद्धिर्निष्कषायो विज्ञेयो विमलप्रभः वहलो निर्मलश्चित्रगुप्तः समधि गुप्तकः ॥ ९३ ॥ स्वयंभूश्चापि कंदर्पो जयनाथ इतीरितः श्रीविमलो दिव्यवादोनंतवीरोप्युदीरितः ॥ ९४ ॥ पुरुदेवोयसुविधिः प्रज्ञापारमितो व्ययः पुराण पुरुषो धर्म सारथिः शिवकीर्तिनः ॥ ९५ ॥ विश्वकर्माक्षरोछद्मा विश्व भूर्विश्वनायकः दिगंवरो निरातंको निरारेको भवांतकः ॥ ९६ ॥ दृढव्रतो नयोत्तुंगो निष्कलंकः कलाधरः सर्व क्लेशा पहोक्षय्यः क्षांतः श्रीवृक्षलक्षणः ॥ ९७ ॥

इति निर्वाण शतम्. ७.

ब्रह्मा चतुर्मुखो धाता विधाता कमलासनः अब्जभूरात्मभूः स्रष्टा सुरज्येष्ठा प्रजापतिः ॥ ९८ ॥ हिरण्यगर्भो वेदज्ञो वेदांगो वेदपारगः अजो मनुः शतानंदो हंसयानस्त्रयीमयः ॥ ९९ ॥ विष्णु स्त्रिविक्रमः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः वैकुंठः पुंडरीकाक्षेहृपीकेशोहरिः स्वभूः ॥ १०० ॥ विश्वंभरो सुरध्वंसी माधवो वलिवंधनः अधोक्षजो मधुद्वेपी केशवो विष्टरश्रवाः ॥ १०१ ॥ श्रीवत्स लांछनः श्रीमानच्युतो नरकांतकः विष्वक्सेनश्चक्रवर्ती पद्मनाभो जनार्दनः ॥१०२॥ श्रीकंठः शंकरः शंभुः कपाली वृषकेतनः मृत्युंजयो विरूपाक्षो वामदेवस्त्रिलोचनः ॥ ३ ॥ उमापतिः पशुपतिः स्मरारिस्त्रिपुरांतकः अर्धनारी स्वरोरुद्रो भवोभर्गः सदाशिवः ॥ ४ ॥ जगत्कर्तांधकारातिरनादि निधनो हरः महासेनस्तारकजिद्गणनाथो विनायकः ॥ ५ ॥ विरोचनो वियद्र-

त्न द्वादशात्मा विभावसुः द्विजाराध्यो बृहद्भानुश्चित्रभानुस्तनूनपात् ॥ ६ ॥ द्विजराजः सुधीः शोचिरोषधी शोकलानिधिः नक्षत्रनाथः शुभ्रांशुः सोमः कुमुदबांधवः ॥ ७ ॥ लेखर्षभो निलःपुण्यजनः पुण्यजनेश्वरः धर्मराजो भोगिराजःप्रचेताभूमिनंदनः ॥ ८ ॥ सिंहिकातनय स्थायानंदनो बृहतापतिः पूर्वदेवो पदेष्टाच द्विजराज समुद्भवः ॥ ९ ॥

इति ब्रह्मशतम्.

बुद्धो दशबलः शाक्यः षडभिज्ञस्तथागतः समंतभद्रः सुगतःश्रीघनो मूलकोटिदिक् ॥ १० ॥ सिद्धार्थो मारजिच्छास्ताक्षणिकैक सुलक्षणः वोधिसत्को निर्विकल्पदर्शनोद्वयमाद्यपि ॥ ११ ॥ महाकृपालुर्नैरात्म्यवादी संतानशासकः सामान्य लक्षणचणः पंचस्कंधमयात्मदृक् ॥ १२ ॥ भूतार्थभावनासिद्धश्चानुभूमिकशासनः चतुरार्यः सत्यवक्ता निराश्रयविदन्वयः ॥ १३ ॥ योगोवैशेषिकस्तुच्छा भावमित् षद् पदार्थदृक् नैय्यायिकः षोडशार्थः वादीपंचार्थ वर्णकः ॥ १४ ॥ ज्ञानांतराध्यक्ष वोधः समवायवशार्थभित् भक्तेकसाधकर्मांतो निर्विशेषगुणामृतः ॥ १५ ॥ साक्षः समीक्षः कपिलः पंचविंशतितत्त्ववित् व्यक्ताव्यक्तज्ञ सुज्ञानीज्ञानचैतन्यभेददृक् ॥ १६ ॥ अश्व संविदित ज्ञान वादी सत्कार्य वादवित् निष्प्रमाणोऽक्षप्रमाणःस्याद्वाहंकारिकाक्षदृक् ॥ १७ ॥ क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषो नरो नाचेतनःपुमान् अकर्तानिर्गुणो मूर्तो भोक्तासर्वगतोक्रियः ॥ १८ ॥ दृष्टस्तटस्थः कूटस्थो ज्ञातानिर्बंधनोभवः वहिर्विकारो निर्मोक्षः प्रधानं वहुधानकं ॥ १९ ॥ प्रकृति ख्यातिरारूढः प्रकृतिः प्रकृतिप्रियः प्रधानभोज्यो प्रकृतिर्विरम्यो विकृतिः कृतिः ॥ २० ॥ मीमांसकोस्त सर्वज्ञः श्रुतिपूतः सदोत्सवः परोक्ष ज्ञान वादिष्टोपावकः सिद्धकर्मकः ॥ २१ ॥ चार्वाको भौतिक ज्ञानो भूताभिव्यक्तचेतनः प्रत्यैक्षकप्रमाणस्थःपरलोको गुरु श्रुतिः

॥ २२ ॥ पुरंदरो विद्धकर्णो वेदांती संविदद्वयी शब्दाद्वयी स्फोटवादी पाखंडघ्नोनयौघयुक् ॥ २३ ॥

इति बुद्धशतम्.

अंतकृत्पारकृत्तीर प्राप्तः पारेततः स्थितः त्रिदंडी दंडिताराति रज्ञान कर्म समुच्चयीः ॥ २४ ॥ संहृतध्वनिरुत्सन्न योगः सुप्ताणवोयमः याग: श्रेष्ठापयायोगः कीदृङ् निर्लेपनोद्यतः ॥ २५ ॥ स्थिति स्थूल वपुर्योगो गीर्मणो योग कार्श्यकः सूक्ष्मवाक्चित्त योगस्थः सूक्ष्मीकृत वपुःक्रियः ॥ २६ ॥ सूक्ष्म कार्य क्रियास्थायी सूक्ष्मवाक्चित्त योगहा एक दंडीच परमहंसः परमशंवरः ॥ २७॥ नैष्कर्म्य सिद्धः परमः निर्जरः प्रज्वलत्प्रभः मोघकर्मा त्रुटत्कर्म पाशःसैलेश्य संस्कृतः ॥ २८ ॥ एकाकारो रसास्वादः विश्वाकार रसाकुलः अजीवन्मृतको जाग्रदसुप्तः शून्यतामयः ॥ २९ ॥ प्रेयानयोगीचतुरः शितिलक्ष गुणोगुणः नीपितानंद पर्यायो विद्या संस्कार नाशकः ॥ ३० ॥ वृद्धो निर्वचनीयोणुरणीयाननणुप्रियः प्रेष्टः प्रेयान्स्थिरोनेष्टः श्रेष्ठोज्येष्टः सुनिष्ठितः ॥३१॥ भूतार्थ सूरो भूतार्थः दूरः परमनिर्गुणः व्यवहार सुसुप्तोति जागरूकोति सुस्थितः ॥ ३२ ॥ उदितोदिति माहात्म्यो निरुपाधि रतिक्रियः अप्रेय महिमात्यंतशुद्धः सिद्धि स्वयंवरः ॥ ३३ ॥ सिद्धानुजः सिद्धपतिः पार्थः सिद्ध गुण स्थितिः सिद्ध संगोन्मुखः सिद्धाल्गिे सिद्धोपगूहकः ॥ ३४ ॥ पुष्टोष्टादश साहस्र शीलाश्व पुण्य संभवः वृत्ताग्र सुग्रे परमः शुक्रवेज्योपचारकृत् ॥ ३५ ॥ क्षेपिष्टोत्यक्षण सखा पञ्च लघ्वक्षरस्थितिः द्वासप्तति प्रकृत्यासीत्रयोदश कलिप्रणुत् ॥ ३६ ॥ अवदो याजको याज्यो याज्यो नग्न परिग्रहः अनग्निहोत्र परमनिस्पृहोत्यंत निर्दयः ॥ ३७ ॥ अशिष्यो शासको दीक्षो दीक्षको दीक्षितोदयः अगम्यो गमको रम्यो रमको ज्ञाननिर्भरः ॥ ३८ ॥

इत्यंत कृच्छतम्.

महा योगीस्वरो द्रव्य सिद्धोदेहोपुनर्भवः ज्ञानैकचिज्जीवघनः सिद्धो लोकाग्रनामकः ॥ ३९ ॥

इत्यंताष्टकम्.

इदमष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं भक्तितोहतं योनंता नाम धीतेसौ मुक्त्यंतांभुक्ति मश्नुते ॥ ४० ॥ इदं लोकोत्तमपुंसां इदं शरणमुत्तमं इदं मंगलमग्रीयं इदं परम पावनं ॥ ४१ ॥ इदमेवपरं तीर्थ मिदमेवेष्ट साधनं इदमेवाखिलक्लेश संक्लेश क्षय कारणं ॥ ४२ ॥ एतेषा मेकमप्यर्हनाम्नामुच्चारयन्नघैः मुच्यतेकि पुनः सर्वान्यर्थज्ञस्तु जिनायते ॥ १४३ ॥

इतिश्री जिनसहस्रनामानि.

८ अथ वर्द्धमान स्तोत्रम्.

वर्द्धमानं स्तुमः सर्व नयनद्यर्णवागमं संक्षेपतस्तदुन्नीत नयभेदानुवादतः ॥ १ ॥ नैगमः संग्रहश्चैव व्यवहार ऋजुसूत्रकौ शब्द समभिरूढैवं भूताश्चेतिनयाः स्मृताः ॥ २ ॥ अर्था सर्वेपि सामान्य विशेषो भयधर्मकाः सामान्यं तत्र जात्यादिर्विशेषस्तद्विभेदकः ॥ ३ ॥ एकाबुद्धिर्घटशते भवेत्सामान्य धर्मतः विशेषाच्च निजनिजं लक्षयन्ति घटंजनाः ॥ ४ ॥ नैगमोमन्यते वस्तु तदेतदुभयात्मकं निर्विशेषं न सामान्यं विशेषोपिनतद्विनाः ॥ ५ ॥ संग्रहो मन्यते वस्तु सामान्यात्मकमेवहि सामान्य व्यतिरिक्तोस्ति न विशेषखपुष्पवत् ॥ ६ ॥ विना वनस्पतिः कोपिनिंबाम्रादिर्नदृश्यते हस्ताद्यंतर्भाविनोहि नांगुल्याद्यास्ततः पृथक् ॥ ७ ॥ विशेषात्मकमेवार्थं व्यवहारश्चमन्यते विशेष भि-

न्नः सामान्य मसत्वखरविषाणवत् ॥ ८ ॥ वनस्पतिं गृहाणेति प्रोक्तेगृ-
ण्हातिकोपिकिं विनाविशेषं नाम्नादिस्तन्निरर्थकमेवतत् ॥ ९ ॥ व्रण
पिंडी पादलेपादेको लोक प्रयोजने उपयोगो विशेषैः स्यात्सामान्येन
न कर्हिचित् ॥ १० ॥ ऋजु सूत्र नयो वस्तु नातीतं नाप्यनागतं म-
न्यते केवलं वस्तु वर्तमानं तथा निजं ॥ ११ ॥ अती तेनानागतेन
परकीयेण वस्तुना नकार्य सिद्धि रित्येत दशद्गगन पद्मवत् ॥ १२ ॥
नामादिषु चतुर्ष्वेष भावमेवचमन्यते ननाम स्थापना द्रव्याण्येवमग्रेत-
नावपि ॥ १३ ॥ अर्थं शब्दनयोनेकैः पर्यायैरेकमेवपत् मन्यते कुंभ
कलश घटाद्यैकार्थं वाचकाः ॥ १४ ॥ व्रते समभिरूढोर्य भिन्नपर्याय
भेदतः भिन्नार्थं कुंभ कलश घटा घटपटादिवत् ॥ १५ ॥ यदि पर्याय
भेदपि न भेदोवस्तुनोभवेत् भिन्न पर्याययोर्नस्यात्सकुंभ पटयोरपि
॥ १६ ॥ एकपर्यायाभिधेय मपिवस्तु च मन्यते कार्यं स्वकीयं कुर्वाण
मेवं भूतनयोध्रुवं ॥ १७ ॥ घटकार्यमकुर्वाणः पीष्मतेतत्तयासचेत् तदा
पटेपिन घट व्यपदेशः किमिष्यते ॥ १८ ॥ यथोत्तरं विशुद्धास्युः न-
र्यासप्ताप्यमीतया एकैकः स्याच्छतविधस्ततः सप्तशतान्यपि ॥ १९ ॥
अथैवं भूत समभिरूढयोः शब्द एवचेत् अंतर्भावस्तदापंच नयापंच
शतीभिदां ॥ २० ॥ द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिकयोरंतर्भवेति सर्वमी प्र-
थमे प्रथम चतुष्टय मंत्येचात्यास्त्रयस्तत्र ॥ २१ ॥

वसंततिलका.

सर्वेनया अपि विरोध भृतो मिथस्ते
संभूय साधु समयं भगवन्भजंते
भूपाइव प्रतिभटा भुवि सार्व भौम
पादांबुजं प्रधनयुक्त पराजिताद्राक् ॥ २२ ॥

इत्थं नयार्थ कवचः सुसमैर्जितेंदु वीरोर्चितः सविनयं विनयाविधेत श्रीद्वीपवंदिरवरे विजयादिदेव सूरीशितुर्विजयसिंह गुरुश्चतुष्टौ ॥२३॥

इति वीर स्तवनं.

९ अथेदमारभ्यते दर्शन स्तोत्रम्.

दर्शनं देवदेवस्य दर्शनं पाप नाशनं दर्शनं स्वर्ग सौख्यानं दर्शनं मोक्ष साधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां साधूनां वंदनेन च न तिष्ठंति चिरं पापं छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ वीतराग मुखंदृष्ट्वा पद्मराग समप्रभं वहु जन्म कृतं पापं दर्शनेनैव नश्यति ॥ ३ ॥ दर्शनं जिन सूर्यस्य संसार ध्वांतनाशनं वोधनंचित्त पद्मस्य करोत्यर्थ प्रकाशनं ॥ ४ ॥ दर्शनं जिन चंद्रस्य सद्धर्मा मृतवर्षणं जन्मनोध विनाशाय वितनोति सुखं चिरं ॥ ५ ॥

जीवादि तत्व प्रतिदर्शकायः सम्पृक्त मुख्याष्ट गुणाश्रयाय
जिनाय देवाय दिगंवराय नमो जिनायैच नमो जिनाय ॥ ६ ॥

चिदानंदैकरूपाय जिनाय परमात्मने परमात्म प्रकाशाय नित्यंस्वाध्यात्मने नमः ॥ ७ ॥ अन्यथा शरणं नास्तित्वमेव शरणं मम तस्मात्कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ ८ ॥ नहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जयत्रये वीतरागात्परोदेवो न भूतो न भविष्यति ॥९॥ जिने भक्तिः जिने भक्तिः जिने भक्तिर्दिने दिने सदामेस्तु सदामेस्तु२ भवेभवे ॥ १० ॥ जिनधर्म विनिर्मुक्तो मा भवं चक्रवर्त्यपि स्याच्चेत्योपि दरिद्रोपि जिन धर्मानुवासितः ॥ ११ ॥ जन्म जन्म कृतं पापं जन्म कोटि समार्जितं जन्म मृत्यु जरारोगं हन्यते जिनदर्शनात् ॥१२॥

त्रैलोक्यं सकलं त्रिकाल विषयं सालोकमालोकितम्

साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले रेखात्रयं सांगुलं
रागद्वेष भयान्महांतक जरा लोलत्व लोभादयो
नालंघत्पट लंघनाय समहादेवो मयावंद्यते ॥ १३ ॥

इति दर्शन स्तोत्रम्.

१० अथ पार्श्वनाथ स्तोत्रम्.

वरसं वरसं वरसं वरसं । भवदं भवदं भवदं भवदं । सममा सममा सममा सममा । गमभं गमभं गमभं गमभं ॥ १ ॥ दरमं दरमं दरमं दरमं । गतरं गतरं गतरं गतरं । गरसं गरसं गरसं गरसं । नवरं नवरं नवरं नवरं ॥ २ ॥ रमुदा रमुदा रमुदा रमुदा । समिनं समिनं समिनं समिनं । विदितं विदितं विदितं विदितं । नमते नमते नमते नमते ॥ ३ ॥ यतना यतना यतना यतना । नयमा नयमा नयमा नयमा ॥ क्षणल क्षणल क्षणल क्षणल । क्षरद क्षरद क्षरद क्षरद ॥ ४ ॥ प्रमदा प्रमदा प्रमदा प्रमदा । नकरा नकरा नकरा नकरा ॥ नवमा नवमा नवमा नवमा । नसदा नसदा नसदा नसदा ॥ ५ ॥ तरसा तरसा तरसा तरसा । दयनो दयनो दयनो दयनो ॥ कदमं कदमं कदमं कदमं । विभवा विभवा विभवा विभवा ॥ ६ ॥ इति पार्श्वजिनेश्वर ते स्तवनं । रचितं खचितं यमकै सुपरिः ॥ रंजित दक्ष नरप्रकरं असतां शिवसुन्दर सौख्यभरम् ॥ ७ ॥

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

११ पार्श्व स्तोत्रम्.

प्रणम्य परमात्मानं श्री पार्श्वं तव दर्शनात् पवित्रयामि सद्योहं स्कानंवासो जलादिव ॥ १ ॥ चरीकृति नमस्कारं वालधी वृद्धि सि-

द्धये श्रीमत्पार्श्व जिनेंद्राय तेषांजन्म फले ग्रहि ॥ २ ॥ उत्थितः तव धाताय श्री वामानंदनोजिनः सारस्वती मृजुं कुर्वे गतिस्त्वस्ते संतानसा ॥ ३ ॥ श्री आश्वसेने सिद्धांता राधनंतावकंविना विदधानोऽपिनो सिद्धयत्य क्रियांनाति विस्तरां ॥ ४ ॥ इंद्रादयोपि यस्यांतं फणीनांत्व मनुग्रहात् कृतवानुत्तमं तस्य युक्तं क्रमचणोभवः ॥ ५ ॥ पारदृश्वा सुभोदर्को नययुःशब्दवारिधेः ऋद्धिवृद्धिर्निधिः सिद्धि भवते पार्श्वसेवकः ॥ ६ ॥ पादप्रसाद पार्श्वस्य श्रीमतोहिममैनसः प्रक्रियांतस्य कृत्स्नस्य यस्मा क्लेशो भवे भवे ॥ ७ ॥ सुधां धसां गुरुः पारंयेषां नापसमायुषा तान्गुणान्पार्श्व देवस्यक्षमोवक्तुं नरः कथं ॥ ८ ॥ इति श्री मात्र जिनः पार्श्वो जीरापल्लिपुरीप्रभुः प्रणितःपार्श्वचंद्रेण भूयादूभूरि विभूतये ॥ ९ ॥

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

१२ अथ आत्मरक्षा स्तोत्रम्.

परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं आत्मरक्षाकरं वज्रं पंजराभं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं शिरस्थं तुशिरस्त्थतथा ॐ नमो हिच सिद्धाणं मुषेमुपपटांवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं अंगरक्षातिशायिनी ॐ नमो उवज्झायाणं आयुद्यं हस्तयोर्दृढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव्व साहुणं पंचके पादयोः सुभे एसो पंच नमोकारो शिला वज्रमयीतले ॥ ४ ॥ शव्व पावप्पणासीणो वप्रो वज्रमयोवही मंगलापंच सव्वेसिं खादिरंगारकांतिका ॥ ५ ॥ स्वाहातंच पदज्ञेयं पढमं हवइ मंगलं वप्रोपरिवज्रमयं प्रधानं देहि रक्षणे ॥ ६ ॥ महा प्रभाव रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव नाशिनी परमेष्ठी पदोद्भूतः कथितं पूर्व सूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षं परमेष्ठी पदे सदा तस्यनस्याद्भयं व्याधि राधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥

इत्यातमरक्षा स्तोत्रम्.

१३ अथ पंचषष्टि यंत्र स्तोत्रम्.

आदौ नेमिजिनं नौमि संभवं सुविधिं तथा धर्मनाथं महोदवं शांति शांति करं सदा ॥ १ ॥ अनंतं सुव्रतं भक्त्या नमिनाथं जिनोत्तमं अजितं जितकंदर्प्पं चंद्रं चंद्र समप्रभं ॥ २ ॥ आदिनाथं तथा देवं सुपार्श्वं विमलं जिनं मल्लिनाथं गुणोपेतं धनुषां पंचविंशति ॥ ३ ॥ अरनाथं महावीरं सुमतिंच जगद्गुरुं श्री पद्मप्रभ नामानं वासपूज्य सुरैर्नुतं ॥ ४ ॥ शीतलं शीतलं लोके श्रेयांसं श्रेयसे सदा कुंथुनाथं च वामेयं श्री अभिनंदनं विभु ॥ ५ ॥ जिनानां नामनिर्बद्ध पंचषष्टि समुद्भवः यंत्रोयं राजते यत्र तत्र सौख्यं निरंतरं ॥ ६ ॥ यस्मिन्गृहे महाभक्त्या यंत्रोयं पूज्यतेबुधैः भूत प्रेत पिशाचादि भयं तत्र न विद्यते ॥ ७ ॥ सकल गुण निधानं यंत्रमेनं प्रसिद्धं हृदय कमल कोशे धीमतां ध्येय रूपे ॥ जय तिलक गुरु श्री सूरिराजस्य शिष्यो वदति सुखनिदानं मोक्ष लक्ष्मी निवासं ॥ ८ ॥

इति पंचषष्टि यंत्र स्तोत्रम्.

यंत्रम्.

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

१४ अथ पार्श्वनाथ स्तोत्रम्. *

ॐ ह्रीं श्री तं नमह पासनाहं। ॐ ह्रीं श्री धरणिंदनमसियं दुहविनाशं ॥ ॐ ह्रीं श्री जश्शपभावेणस्येया । ॐ ह्रीं श्रीं नासंति उवद्दवा बहवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पइसमरंताणमणे । ॐ ह्रीं श्री नहो इवा हीन तं महा दुरकं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नामंविय पिहुमंतसमं । ॐ ह्रीं श्रीं पयडं नयिथ्थ संदेहो ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जलजलण भय.सह सप्प सीह । ॐ ह्रीं श्रीं चोरारि संभवे खिप्पं ॥ ॐ ह्रीं श्री जो समर इ पासनाहं पहु । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पुह विन कयाविकंतश्श ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्री श्रीं इहलोगठ्ठी परलोगठ्ठी । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जो समरइ पाशनाहंतु ॥ ॐ ह्रीं हू ह्रौं गांगींगः तंतहसिझइखिप्पं । ॐ ह्रीं श्रीं इयनाऊं सरह भगवंतं ॥ ४ ॐ ह्रीं श्री क्लीं ग्रां ग्रीं ग्रूं क्लीं क्लीं कलिकुंड स्वामिने नमः स्वाहा ॥ (इति मूल मत्रः)

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

१५ अथ पार्श्व स्तोत्रम्.

द्रें द्रें कि धप मप धुधुमि धें धें धसकि धरमप धोरवं । दों दों कि दों दों दिगड्दि दिगड्दिकि द्रमकि द्रणरण द्रेणवं ॥झझ झिं किं झें झें झणण रणरण निजकि निज जन रंजनं । सुरशैल शिखरे भवतु सुखदं पार्श्व जिनपति मंजनं ॥ १ ॥ कटरि गिणिथों गिणिकथु गि-

* ए स्तोत्र पवित्र थइ नित्य सातवार भणिजे मन वचन काया शुध्धसे मास ६ तों अवश्य राज्य लक्ष्मी मिलै. जिने लिखी कंठे बांधे तिने पुत्र थाय जिने खोल पावे व्यंतरादिक सर्व दोष टले. कष्टमें आंबिल करे ३, १२५०० जाप धोळी माळाये जपिजे भूमि शयन कीजे. शील पालिजे मिथ्या नहि बोलिजे चिंतित कार्य सिध्धि होय. सर्वत्र जय होय. इत्यादि अनेक गुण है. विशेष गुरु मुखथी धारिये.

गिड् दा धुधुकिधुट नट पाटवं । गुणगुणण गुणगुण रणकि णें णें गुणण गुणगुण गौरवं ॥ झ झ झें कि झें झें झणण रणरण निजकि ।निज जन सज्जनाः । कलयंति कमला कलित कलि मल मकलमीश महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठें कि ठें ठें ठह्रिं ठह्रिंकि ठह्रिंपट्टानाड्यते । तलि लों कि लों लों त्रेंपि त्रेंपिनिडेंपि डेंपि निवाद्यते ॥ ॐ ॐ किं ॐ ॐ कथुगि कथुगिनि थोंगि थोंगिनि कलरवे । जिनमत मनंत महि मतनुतानमत मुरनरमुत्सवे ॥ ३ ॥ खुंदांकिं खुंदां खुखुड्दि खुंदां खुखुड्दि दों दों अम्बरे । चाचपट वच पटरणकि णें णें द्रणण डें डें ढंवरे ॥ तहि सरगि मपधुनि निधपमगरि ससससससस मुरसेविता । जिन नाटच रंगे कुशल मनिशं दिशतु शासन देवता ॥ ४ ॥

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

१६ अथ शांतिधारा पाठः *

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं वंवं मंमं हंहं संसं तंतं पंपं झंझं म्वीं म्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रांद्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्रीं क्रों मम पापं खंडय २ हन २ दह २ पच २ पाचय २ शीघ्रीं कुरु २ ॐ नमोऽर्हंझंक्ष्वींक्ष्वी हं सं झं वं व्हः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः असि आउसाय नमः ॥ मम पूजकस्य ऋद्धिं वृद्धिं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः ठः मम श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शांतिरस्तु कांतिरस्तु कल्याणं अस्तु मम कार्य सिद्ध्यर्थं सर्व विघ्न निवारणार्थं श्रीमद्भगवंते सर्वोत्कृष्ट त्रैलोक्य नाथाचिंत पादपद्म अर्हत परमेष्टि जिनेंद्र देवाधि देवाय नमो नमः मम श्री शांति

* ए स्तोत्र प्रात कालमें उठकर पवित्र हो कर २१ पढणा सर्व विघ्न शांति होय

देव पादपद्म प्रसादात्सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु स्वस्तिरस्तु धन धान्य समृद्धिरस्तु श्री शांतिनाथोमां प्रति प्रसीदतु श्री वीतराग देवोमां प्रति प्रसीदतु श्री जिनेंद्र परम मांगल्य नामधेय-ममेहामुत्रच सिद्धि तनोतु ॥ ॐ नमोर्हते भगवते श्रीमते श्री चिंतामणि पार्श्वतीर्थं कराय रत्नत्रय रूपाय अनंत चतुष्टय सहिताय धरणींद्र फणा मौलि मंडिताय सम शरण लक्ष्मी शोभिताय इंद्र धरणींद्र चक्रवर्त्यादि पूजितपाद पद्माय केवल ज्ञान लक्ष्मी शोभित जिनराज महा देवाष्टादश दोष रहिताय षट् चत्वारिंशद्गुण संयुक्ताय परम गुरु परमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्य परमेश्वराय देवाय सर्व सत्वहित कराय धर्म चक्राधीश्वराय सर्व विद्या परमेश्वराय त्रैलोक्य मोहनाय धरणींद्र पद्मावती सहिताय अतुल बल वीर्य पराक्रमाय अनेक दैत्य दानव कोटि मुकुट घृष्ट पाद पीठाय ब्रह्मा विष्णु रुद्र नारद खेचर पूजिताय सर्व भव्य जनानंद कराय सर्व रोग मृत्यु घोरोपसर्ग विनाशनाय सर्व देश ग्राम पूर राजा प्रजा शांति कराय सर्व जीव विघ्न निवारण समर्थाय श्री पार्श्व देवाधि देवाय नमो स्तुते श्री जिनराज पूजन प्रसादात्मम सेवकस्य सर्व दोष रोग सोग भय पीडा विनाशनं कुरु २ सर्व शांतिं तुष्टिं पुष्टिं कुरू २ स्वाहा। ॐ नमो श्री शांति देवाय सर्वारिष्ट शांति कराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा मम सर्व विघ्न शांतिं कुरु २ अमुकस्य मम तुष्टिं पुष्टिं कुरु२ स्वाहा श्री पार्श्वनाथ पूजन प्रसादात्मम अशुभान् पापान् छिंधि छिंधि मम अशुभ कर्मोदय जनित दुःखान् छिंधि छिंधि मम परदुःख जनोपकृत मंत्र तंत्र दृष्टि मुष्टि छल छिद्रादि दोषान् छिंधि २ मम अग्नि चोर जल सर्प व्याधिः छिंधि २ मारी कृतो पद्रवान् छिंधि २ डाकिनी शाकिनी भूत भैरवादि कृतो पद्रवान् छिंधि २ सर्व भैरव देव दानव वीर नव नारसिंह योगिनी कृत विघ्नान् छिंधि २ भुवन

वासि व्यंतर ज्योतिषि देव देवी कृत दोषान् छिंधि २ अग्निकुमार कृत विघ्नान् छिंधि २ उदधिकुमार सनत्कुमार कृत विघ्नान् छिंधि २ द्वीपकुमार भयान् छिंधि २ भिंधि २ वातकुमार मेघकुमार कृत विघ्नान् भिंधि २ इंद्रादि दश दिक्पाल देव कृत विघ्नान् छिंधि २ जय विजय अपराजित मान भद्र पूर्ण भद्रादि क्षेत्रपाल कृत विघ्नान् छिंधि २ राक्षस वेताल दैत्य दानव यक्षादि कृत दोषान छिंधि २ नव ग्रह कृत ग्राम नगर पीडा छिंधि २ सर्व अष्ट कुल नाग जनितविष भयान् सर्व ग्राम नगर देश मारी रोगान् छिंधि २ सर्व स्थावर जंगम वृश्चिक दृष्टि विष जाति सर्पादि कृत विष दोषान् छिंधि २ सर्व सिंह अष्टापद व्याघ्र व्याल वनचर जीव भयान् छिंधि २ पर शत्रु कृत मारणोच्चाटन विद्वेषण मोहन वशीकरणादि दोषान् छिंधि २ भिंधि २ सर्व देशपूर मारीः छिंधि २ सर्व गो वृषभादि तिर्यंच मारीः छिंधि २ सर्व वृक्ष फल पुष्कल तामागी छिंधि २ ॐ नमो भगवति श्री चक्रेश्वरि ज्वाला मालिनि पद्मावति देवि अस्मिन् जिनेंद्र भुवने आगच्छ २ एहि २ तिष्ठ २ वलि ग्रहण २ मम धन धान्य समृद्धिं कुरू २ सर्व भव्य जीवानंदनं कुरू २ सर्व राजा प्रजा नंदनं कुरु २ सर्व देश ग्रामपूर मध्ये क्षुद्रोपद्रव सर्व दोषाय मृत्यु पीड़ा विनाशनं कुरु २ सर्व परचक्र भय निवारणं कुरु २ सर्व देश ग्राम पूर मध्य सुभिक्षं कुरु २ सर्व विघ्न शांति कुरु २ स्वाहा। ॐ आं क्रों ह्रीं श्री वृषभादि वर्द्धमानांत चतुर्विंशति तीर्थंकर महा देवाधिदेवाः प्रीयंतां २ मम पापानि शाम्यंतु घोरोपसर्गान्सर्व विघ्नान् शाम्यंतु। ॐ आंक्रों ह्रीं श्री रोहिण्यादि महादेव अत्रागच्छ २ सर्व देवताः प्रीयंतां २ ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावती महादेवी प्रीयतां २ ॐ आं क्रों ह्रीं श्री मणिभद्रादि यक्षकुमार देवाः प्रीयंतां २ सर्व जिन शासन रक्षक देवाः प्रीयंतां २ श्री आदित्य सोम मंगल बुध बृहस्पति

शुक्र शनि राहु केतु सर्वे नवग्रहाः प्रीयंतां २ प्रसीदतु देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः ॥ १ ॥ यत्सुखं त्रिषुलोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं । अभयं क्षेम मारोग्यं स्वस्तिरस्तु-चमे सदा ॥ २ ॥ यस्यार्थे क्रियते कर्म सप्रितिः नित्यमुत्तमं । शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्व कार्येषुसिद्धिदाः ॥ ३ ॥ इति शांतिधारा पाठः ॥ ४६ ॥

इति शांतिधारा पाठः

१७ अथ ग्रहशांति स्तोत्रम्.

जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरु भाषितं ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि लोकानांसुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्रैः खेचराः ज्ञेयाः पूजनीयाविधि क्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैः धूपैः नैवेद्यै स्तुष्टि हेतवे ॥ २ ॥ पद्म प्रभस्य मार्तंड चंद्रश्चंद्र प्रभस्य च वासुपूज्ये भूमि पुत्रो बुधोप्यष्ट जिनेषुच ॥ ३ ॥ विमलानंत धर्माराः शांतिः कुथुर्नमिस्तथा । वर्द्धमानस्तथैतेषां पादपद्मेबुधंन्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाजित सुपार्श्वाश्चाभिनंदन शीतलौ ।-सुमतिः संभवः स्वामी श्रेयांसश्चैषुगीष्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः सुव्रतस्य शनैश्चरः ॥ नेमिनाथे भवेद्राहुः केतुः श्री मल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जन्मॉल्लग्नेच राशौच यदा पीडंति खेचराः। तदा संपूजयेद्धीमान् खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥ पद्मप्रभ जिनेंद्रस्य नामोच्चारेण भास्कर ॥ शांतिंच तुष्टिंच पुष्टिंच रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ ८ ॥ चंद्रप्रभ जिनेंद्रस्य नाम्ना तारागणाधिप ॥ प्रसन्नोभव शांतिंच रक्षांकुरु जयं ध्रुवं ॥ ९ ॥ सर्वदा वासुपूज्यस्य नाम्ना शांतिं जयश्रियं ॥ रक्षां कुरुधरा सूनो अशुभोऽपि शुभो भव ॥ १० ॥ विमलानंत धर्माराः शांतिः कुंथुर्नमिस्तथा ॥ महावीरश्च तन्नाम्ना शुभोभूयाः सदा बुधः ॥ ११ ॥ ऋषभाजित सुपार्श्वाश्चाभिनंदन शी-

तलौ ॥ सुमतिः संभवः स्वामी श्रेयांसश्च जिनोत्तमः ॥ १२ ॥ एत त्तीर्थ कृतां नाम्ना पूज्यो शुभः शुभोभव ॥ शांतिं तुष्टिंच पुष्टिंच कुरु देवगणार्चित ॥ १३ ॥ पुष्पदन्त जिनेंद्रस्य नाम्ना दैत्य गणार्चित ॥ प्रसन्नो भव शांतिंच रक्षा कुरु २ श्रियं ॥ १४ ॥ श्री सुव्रत जिनेंद्रस्य नाम्ना सूर्यांगसंभव । प्रसन्नो भव शांतिंच रक्षां कुरु २ श्रियं ॥ १५ ॥ श्री नेमिनाथ तीर्थेश नामतः सिंहिका सुत । प्रसन्नो भव शांति च रक्षा कुरु२ श्रियं ॥ १६ ॥ राहो सप्तमराशिस्थ कारेण दृश्य संवरे । श्री मल्लीपार्श्वयोर्नाम्ना केतो शांतिं जय श्रियं ॥ १७ ॥ नव कोष्टक मालेख्यं मंडलं चतुरस्रकं । ग्रहास्तत्र प्रतिष्ठाप्या वक्ष्यमाणक्रमेणतु ॥ १८ ॥ मध्येहि भास्करः स्थाप्यः पूर्वदक्षिणतः शशी । दक्षिणस्यां धरासूनुर्बुधः पूर्वोत्तरेणच ॥ १९ ॥ उत्तरस्यां सुराचार्यः पूर्वस्यां भृगुनंदनः ॥ पश्चिमायां शनिः स्थाप्यो राहुर्दक्षिण पश्चिमे ॥२०॥ पश्चिमोत्तरतः केतुरिति स्थाप्याः क्रमाद्ग्रहाः ॥ पट्टेस्थालेऽथ वाग्नेय्यां ईशान्यांतु सदा बुधैः ॥ २१ ॥ आदित्य सोम मंगल बुध गुरु शुक्राः शनैश्चरो राहुः । केतु प्रमुखाः खेटाः जिनपति परतोऽवतिष्ठंतु ॥२२॥ पुष्प गंधादिभिर्धूपैः नैवेद्यैः फल संयुतैः । वर्ण सदृशदानैश्च वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ २३ ॥ जिन नाम कृतोच्चारा देश नक्षत्र वर्णकैः । पूजिताः संस्तुता भक्त्या ग्रहाः संतु सुखावहाः ॥ २४ ॥ जिननामाग्रतः स्थित्वा ग्रहाणां शांति हेतवे । नमस्कार शतं भक्त्या जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ २५ ॥ एवं यथानामकृता भिषेकैः अलिपनैर्धूपन पूजनैश्च ॥ फलैश्चनैवेद्य वरैर्जिनानां नाम्ना ग्रहेन्द्रावरदा भवंतु ॥ २६ ॥ साधुभ्यो दीयते दानं महोत्साहो जिनालये । चतुर्विधस्य संघस्य बहु मानेन पूजनं ॥ २७ ॥ भद्रबाहु रुवाचेदं पंचम श्रुतके ॥ विद्याप्रभावतः पूर्वात् ग्रह शांतिरुदीरिता ॥ २८ ॥

इति ग्रहशांति स्तोत्रम्.

यंत्रम्.

बुधः	शुक्रः	शशि
गुरुः	सूर्य	भौम
केतु	शनि	राहु.

१८ अथ उवसग्गहर स्तोत्रम् *

ॐ उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्म घण मुक्कं विसहर विसनिन्नासंमंगल कल्लाण आवासं ॥ १ ॥ बिसहर फुलिंग मंतं कंठे धारइ जो सयामणुवो तस्सग्गह रोग मारी दुठ जरा जंति उवस्सामं ॥ २ ॥ चिठ्ठउदूरेमंतो तुज्जपणा मोवि बहु फलो होइ नर तिरिए सुविजीवा पावंति न दु ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ ॐ तुवदंसणेण स्वामीपणासेइ रोग सोग दोहग्गं कप्पतरु मेव जाई तुव दंसणेन सफल हेऊ स्वाहा ॥ ४ ॥ तुह समत्ते लद्धे चिंतामणि कप्पपाय वभ्भ हिये पावंति अविघेग्गणं जीवा अयरा मरंठाणं ॥ ५ ॥ अमरतरु कामधेनु चिंतामणि काम कुंभ माईये श्री पार्श्वनाह सेवा गयाण सव्वेवि दिसंतु ॥ ६ ॥ नमयेण पाणमसेईयं मपावेण धरणी नागेंदं सिरप उपराय कलियं पास जिणंदं नमंसामि ॥ ७ ॥ हय संथुवो महायस्स भत्तिभर निभ्भरेण हियेण ताव देव दिज्ज वोहिं भवे भवे पास जिणचंदं ॥ ८ ॥

इति उवसग्गहर स्तोत्रम्.

* ए स्तोत्र सोते वखत तीनवार पढकर शयन कीजे अशुभ स्वप्न नहि आवे. इत्यादि बहुत गुण है. विशेष गुरु आम्नायसे जाणिये

१९ अथ जिनवानी अष्टक.

जिनदिश जाता जिनेंद्रा विख्याता । विशुद्धा प्रबुद्धा च त्रैलोक्य माता ॥ दुराचार दुरिताहरा शंकरानी । नमो देवि वागेश्वरि जैन्ह वाणि ॥ १ ॥ सुधा धर्म संसाधिनी धर्मशाला । सुधा ताप निर्नाशिनी मेघमाला ॥ महा मोह विध्वंसिनी मोक्षदानी । नमो देवि० ॥ २ ॥ अक्षय वृक्ष शाखा व्यतीताभिलापा । कथा संस्कृता प्राकृता देश भापा । चिदानंद भूपालकी राजधानी । नमो देवि० ॥ ३ ॥ समाधान रूपा अनूपा अक्षुद्रा । अनेकान्तता स्याद्वादांक मुद्रा ॥ त्रिधा सप्तधा द्वादशांगी वखानी । नमो देवि० ॥ ४ ॥ अकोपा अमाना अदंभा अलोभा । श्रुत ज्ञानरूपा मति ज्ञानशोभा । महा पावना भावना भव्यमानी । नमो देवि० ॥ ५ ॥ अतीता अजीता सदा निर्विकारा । विषय वाटिका खण्डनी खड्ग धारा । पुरा पाप विच्छेदिनी कर्तृ कृपाणी । नमो देवि० ॥ ६ ॥ अगाधा अबाधा निरंधा निराशा । अनंता अनादीश्वरी कर्मनाशा निशंका निरंका चिदंका भवानी । नमो देवि० ॥ ७ ॥ अशोका मुदोका विवेका विधानी । जगज्जंतु मित्रा विचित्रा वसानी ॥ समस्तावलोका निरस्ता निदानी । नमो देवि वागेश्वरि जैन वाणि ॥ ८ ॥

इति जिन वाण्यष्टकम्.

---

२० अथ परमात्मा स्तोत्रम्.

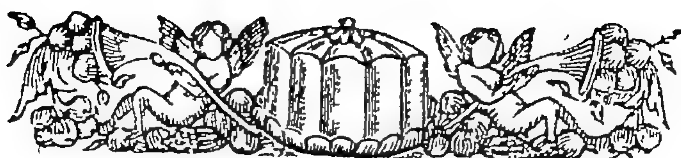
अपादस्य पादं कथं वे प्रणामं । अकर्णस्य कर्ण कथं गीत नाम्यं
अकंठस्य कंठं कथं पुष्पमालं । विना नासिकायां कथं धूपगधं ॥१॥
स्वयं सिद्ध शुद्धं पर विश्वनाथं । न देह न बंधु न कर्म न कर्ता
नअंगं न संगं न इच्छा न कायं । चिदानंद रूपं नमो वीतरागं ॥२॥

नबंधो न मोक्षं न रागादि लोकं। न जोगं न भोगं न व्याधि न शोकं। न क्रोधं न मानं न माया न लोभं। चिद्वानंद० ॥ ३ ॥ न हस्तो न पादो न घ्राणं न जिव्हा न चक्षु न कर्णं न वक्त्रं न निद्रा। न स्वादं न खेदं न वर्णं न मुद्रा। चिदानंद० ॥ ४ ॥ न जन्मं न मृत्युर्न मोदं न चिंता। न क्षुद्राक्ष न भीतं न कृष्यं न तुंदा। न स्वामी न भृत्यं न देवं न मर्त्यं। चिदानंद० ॥ ५ ॥ त्रिदंडे त्रिखण्डे हरे विश्वव्याधी। हृषी केश विद्वांस कर्मारिजाले। न पुण्यं न पापं न अक्षादि प्राणं। चिदानंद० ॥ ६ ॥ न बाल्यं न वृद्धं न विद्वं न मूढा। न खेद्यं न भेद्यं न मूर्तिं न सीहा। न कृष्णं न शुक्लं नमोहं न तंद्रा। चिदानंद० ॥ ७ ॥ न आद्यं न मध्यं न अन्त्यं न अन्या। न द्रव्यं न क्षेत्रं न द्रष्टो न भावाः। न गुर्वो न शिष्यं न आद्यं न दीनं। चिदानंद० ॥ ८ ॥ इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववंदी। न पूर्णं न शून्यं सचेतन स्वरुपी। अन्योन्य भिन्नं परमार्थमेकं। चिदानंद० ॥ ९ ॥ आत्माराम गुणाकरं गुणनिधेः चैतन्य रत्नाकरं। सर्वे भूत गतागते सुख दुःखं ज्ञातास्त्वया सर्वगोः ॥ त्रैलोक्याधिपतिः स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगेश्वरा। वंदे त्वां हरिवंश हर्षहृदये श्रीमानभ्युदच्चिंत ॥ १० ॥

इति परमात्म स्तोत्रम्.

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ प्रथम खण्डे
स्तोत्राभिधं प्रथम प्रकरणम् ॥





अथेदमारभ्यते द्वितीय प्रकरणम्–छंद.



२१ अथ पार्श्वनाथ छन्दम्. दोहा.

सारद मात मया करी ॥ आपो अविचल वाणि ॥ पुरीसादाणी पास जिण ॥ गाउं गुणमणि खाण ॥१॥ अद्भुत कौतिक कलियुगैं ॥ दीसै एह अदंभ ॥ धरथी अधर रहै सदा ॥ अंतरीक थिर थंभ ॥२॥ महिमा महिमंडल सवल ॥ दिसै अनुपम आज॥अवर देव मृता सवे॥ जागैं तूं जिनराज ॥ ३ ॥एक जीभ करि किम कहूं ॥ गुण अनंत भगवंत ॥ कोड जीभ करि को कहै ॥ तोहि न पावे अंत ॥ ४ ॥ तूं-माता तूंहिज पिता ॥ भ्राता तूंहिज बंधु ॥ मन धर मुज उपर करो करुणासिधु ॥ ५ ॥

॥ अथ अडिल छन्द ॥

करि करुणा करुणा रससागर ॥ चरणकमल प्रणमै नित नागर। निरमल गुणमणि गुणवैरागर । सुरगुरु अधिक अवे मति आगर ॥ १ ॥ काम कुंभ जिम कामित दायक । पदप्रणमैं सुरवरनर नायक । मथित सुदुर्मंथ मनमय सायक । अष्ट कर्म रिपुदल वल घायक ॥२॥ नवनिधि तुज नामै । मनवंछित सुख संपनि पामै । जे प्रभु पद पंकज

शिरनामैं । बकुलासुर सारै तसुकामैं ॥ ३ ॥ बकुल वसै विषहारी त्रातं॥ वरसिरपुर वसुधा विख्यातं ॥ जिहां राजै जिनवर जगत्रातैं॥ अंतरीक अनुपम अवदातं ॥ ४ ॥

छंद.

अवदात जेहनो जगत्र जाणैं । गुण वखाणे सुर धणी । परसाद प्रभुनै प्रगट परभव ॥ पामिये प्रभुपद फणी ॥ महिमा वधारै विघन वारै करै सेवा अति घणी । तुम नाम लीनो रहै भीनो । अवर देव है अवगुणी ॥ १ ॥ नरनाथ कोडी हात जोडी । मानमोडी इम कहै । प्रभुनाथ चरणे जिके सरणे रहै ते परमपद लहैं । वलि जेह उतकट विकट संकट निकट नोवे ते वली ॥ भय आठ मोटा निपट खोटा दूरथी जायै टली ॥ २ ॥

॥ छंद चाल. ॥

जे रोग भयंकर दुष्ट भगंदर । कुष्ठ खयन खस खास हरिखा अंतर्गल वलीमल ज्वर विषम ज्वर जायै नाश ॥ दिसै अति माठा वलि । व्रण चाठा नाठा जायै तेह । तुम दर्शन स्वामी शिवगत गामी चामीकर समदेह ॥ १ ॥ जलनिधि जलगज्जे प्रवहण भज्जे वज्जे वायकुवाय । थरहर तिहां धुज्जे हरिहर पुज्जे कीजे वहुल उपाय ॥ मनमांहि कंपे है है जंपे किण हि कंपन थाय ॥ इण अवसर भावै प्रभुने ध्यावै पावै ते सुख ठाय॥ जडफै तरुडाला पावक जाला काला धूमकि लोल ॥ उछलता देखी जाय उवेखी यंखी पडे दंदोल ॥ पंखीजन नासै भरिया सासै त्रासै धूजै तेह । पडिया तिण ठामैं प्रभुनै नामै कुसले पामैं गेह ॥ २ ॥ फणिनै आटोपे मणिधर कोपे लोपे जे वली लीह ॥ धसमसतो आवै देखी धावै लवकावै दोहजीह।

वीहे जण जाता देखी राता लोयण तस विकराल ॥ कीधे गुणग्यानें प्रभुनें ध्यानैं अहिया इंविसराल ॥ ४ ॥ पापें पग भरता हिंडे फिरता करता अति उद्‌माद ॥ धोटिक जिम छेटे अति आकूटे लूटे निपट निषाद ॥ वनमांजे पडिया चोरे नडियां अडवडियां आधार ॥ इस अवसर राखे कुण प्रभु पाखे भाखे वचन उदार ॥ ५ ॥

छंद.

मयमत्त मयंगल अतुल वल धरजा सदरसण भज्ज ए ॥ केसरिसिंह अबीह अति है मेहसम वडगज्ज ए ॥ विकराल काल कराल कोपैं सिंहनाद विमुकए ॥ सुखधाम प्रभु तुम नाम लेता तेहसींह नदुक्क ए ॥ १ ॥ गललाट करतो मद झरतो कोप धरतो धावए ॥ भय रोश रातो अधिक मातौ अति उजातौ आव ए ॥ घर हाट फोडै बंध तोडै मान मोडै नृपतणुं । तुम नामैं ते गज अजा थावै वसै आवै अति घणुं ॥ २ ॥ रिणमांहि सूरा भीडे पूरा लोह चूराचूर ए ॥ गजकुंभ भेदे सीस छेदे वहे लोहित पूर ए ॥ दल देखि कंपे दीन जंपे करय प्रबल पुकार ए ॥ तुमस्वामि नामै तिणै ठामै वरते जयजयकार ए ॥ ३ ॥ भय आठ मोटा दुष्ट खोटा जेम रोटा चूर ए ॥ अश्वसेन धोटा तुज प्रसादे मनमनोरथ पूर ए ॥ महिमांहि महिमा वधे दिनदिन चंदने सूरिज समो जसजाप करतां ध्यान धरतां पार्श्व जिनवर ते नमो ॥ ४ ॥

छंद चाल.

छाया पडल जाल सव कापैं ॥ आख्यां तेज अधिक वलि आपैं ॥ पन्नगपति प्रभुनें परतापै ॥ अविचल राजकाज थिर थापैं ॥१॥ पद्मावति परचो वह पूरे प्रभु प्रशाद संकट सवि चूरै॥ अलवत अलगी

शिरनामैं । वकुलासुर सारै तसुकामैं ॥ ३ ॥ वकुल वसै विषहारी त्रातं ॥ वरसिरपुर वसुधा विख्यातं ॥ जिहां राजै जिनवर जगत्रातैं ॥ अंतरीक अनुपम अवदातं ॥ ४ ॥

छंद.

अवदात जेहनो जगत्र जाणैं । गुण वखाणे सुर धणी । परसाद प्रभुनै प्रगट परभव ॥ पामिये प्रभुपद फणी ॥ महिमा वधारै विघन वारै करै सेवा अति घणी । तुम नाम लीनो रहै भीनो । अवर देव है अवगुणी ॥ १ ॥ नरनाथ कोडी हात जोडी । मानमोडी इम कहै । प्रभुनाथ चरणे जिके सरणे रहै ते परमपद लहैं । वलि जेह उतकट विकट संकट निकट नोवे ते वली ॥ भय आठ मोटा निपट खोटा दूरथी जायै टली ॥ २ ॥

॥ छंद चाल. ॥

जे रोग भयंकर दुष्ट भगंदर । कुष्ठ खयन खस खास हरिखा अंतर्गल वलीमल ज्वर विषम ज्वर जायै नाश ॥ दिसै अति माठा वलि । व्रण चाठा नाठा जायै तेह । तुम दर्शन स्वामी शिवगत गामी चामीकर समदेह ॥ १ ॥ जलनिधि जलगज्जे प्रवहण भज्जे वज्जे वायकुवाय । थरहर तिहां धुज्जे हरिहर पुज्जे कीजे बहुल उपाय ॥ मनमांहि कंपे है है जंपे किण हि कंपन थाय ॥ इण अवसर भावै प्रभुने ध्यावे पावै ते सुख ठाय ॥ जडफै तरुडाला पावक जाला काला धूमकि लोल ॥ उछलता देखी जाय उवेखी पंखी पडे दंदोल ॥ पंखीजन नासै भरिया सासै त्रासै धूजै तेह । पडिया तिण ठामै प्रभुनै नामै कुसलै पामैं गेह ॥ २ ॥ फणिनै आटोपे मणिधर कोपे लोपे जे वली लीह ॥ धसमसनो आवै देखी धावै लवकावै दोहजीह।

वीहे जण जाता देखी राता लोयण तस विकराल ॥ कीधे गुणग्यानें प्रभुनें ध्यानैं अहिया इंविसराल ॥ ४ ॥ पापें पग भरता हिंडे फिरता करता अति उद्‌माद ॥ धोटिक जिम छेटे अति आक्रूटे लूटे निपट निपाद ॥ वनमांजे पडिया चोरे नडियां अडवडियां आधार ॥ इस अवसर राखे कुण प्रभु पाखे भाखे वचन उदार ॥ ५ ॥

छंद.

मयमत्त मयंगल अतुल वल धरजा सदरसण भज्ज ए ॥ केसरिसिह अबीह अति है मेहसम वडगज्ज ए ॥ विकराल काल कराल कोपैं सिहनाद विमुकए ॥ सुखधाम प्रभु तुम नाम लेता तेहसींह नदुक्क ए ॥ १ ॥ गल्लाट करतो मद झरतो कोप धरतो धावए ॥ भय रोश रातो अधिक मातौ अति उजातौ आव ए ॥ घर हाट फोडै बंध तोडै मान मोडै नृपतणुं । तुम नामैं ते गज अजा थावै वसै आवै अति घणुं ॥ २ ॥ रिणमांहि सूरा भीडे पूरा लोह चूराचूर ए ॥ गजकुंभ भेदे सीस छेदे वहे लोहित पूर ए ॥ दल देखि कंपे दीन जंपे करय प्रवल पुकार ए ॥ तुमस्वामि नामै तिणे ठामै वरते जयजयकार ए ॥ ३ ॥ भय आठ मोटा दुष्ट खोटा जेम रोटा चूर ए ॥ अश्वसेन धोटा तुज प्रसादे मनमनोरथ पूर ए ॥ महिमांहि महिमा वधे दिनदिन चंदने सूरिज समो जसजाप करतां ध्यान धरतां पार्श्व जिनवर ते नमो ॥ ४ ॥

छंद चाल.

छाया पडल जाल सव कांपै ॥ आख्यां तेज अधिक वलि आपैं ॥ पन्नगपति प्रभुनें परतापै ॥ अविचल राजकाज थिर थापैं ॥१॥ पद्मावति परचो वहु पूरे प्रभु प्रशाद संकट सवि चूरे॥ अलवत अलगी

शिरनामैं । बकुलासुर सारै तसुकांमैं ॥ ३ ॥ बकुल वसै विषहारी त्रातं ॥ वरसिरपुर वसुधा विख्यातं ॥ जिहां राजै जिनवर जगत्रातैं ॥ अंतरीक अनुपम अवदातं ॥ ४ ॥

छंद.

अवदात जेहनो जगत्र जाणैं । गुण वखाणे सुर धणी । परसाद प्रभुनै प्रगट परभव ॥ पामिये प्रभुपद फणी ॥ महिमा वधारै विघन वारै करै सेवा अति घणी । तुम नाम लीनो रहै भीनो । अवर देव है अवगुणी ॥ १ ॥ नरनाथ कोडी हात जोडी । मानमोडी इम कहै । प्रभुनाथ चरणे जिके सरणे रहै ते परमपद लहैं । वलि जेह उतकट विकट संकट निकट नोवे ते वली ॥ भय आठ मोटा निपट खोटा दूरथी जाये टली ॥ २ ॥

॥ छंद चाल. ॥

जे रोग भयंकर दुष्ट भगंदर । कुष्ठ खयन खस खास हरिखा अंतर्गल वलीमल ज्वर विषम ज्वर जाये नाश ॥ दिसै अति माठा वलि । व्रण चाठा नाठा जाये तेह । तुम दर्शन स्वामी शिवगत गामी चामीकर समदेह ॥ १ ॥ जलनिधि जलगज्जे प्रवहण भज्जे वज्जे वायकुवाय । थरहर तिहां धुज्जे हरिहर पुज्जे कीजे बहुल उपाय ॥ मनमांहि कंपे है है जंपे किण हि कंपन थाय ॥ इण अवसर भावै प्रभुने ध्यावै पावै ते सुख ठाय ॥ जडफै तरुडाला पावक जाला काला धूमकि लोल ॥ उछलता देखी जाय उवेखी पंखी पडे दंदोल ॥ पंखीजन नासै भरिया सासै त्रासै धूजै तेह । पडिया तिण ठामै प्रभुनै नामै कुसलै पामैं गेह ॥ ३ ॥ फणिनै आटोपे मणिधर कोपे लोपे जे वली लीह ॥ धसमसतो आवै देखी धावै लवकावै दोहजीह।

वीहे जण जाता देखी राता लोयण तस विकराल ॥ कीधे गुणग्यानें प्रभुनें ध्यानैं अहिया इंविसराल ॥ ४ ॥ पापें पग भरता हिंडे फिरता करता अति उद्माद ॥ धोटिक जिम छेटे अति आकूटे लूटे निपट निषाद ॥ वनमांजे पडिया चोरे नडियां अडवडियां आधार ॥ इस अवसर राखे कुण प्रभु पाखे भाखे वचन उदार ॥ ५ ॥

छंद.

मयमत्त मयंगल अतुल वल धरजा सदरसण भज्ज ए ॥ केसरिसिह अवीह अति है मेहसम वडगज्ज ए ॥ विकराल काल कराल कोपैं सिहनाद विमुकए ॥ सुखधाम प्रभु तुम नाम लेता तेहसीह नदुक्कए ॥ १ ॥ गललाट करतो मद झरतो कोप धरतो धावए ॥ भय रोश रातो अधिक मातौ अति उजातौ आव ए ॥ घर हाट फोडै बंध तोडै मान मोडै नृपतणुं । तुम नामैं ते गज अजा थावे वसै आवै अति घणुं ॥ २ ॥ रिणमांहि सूरा भीडे पूरा लोह चूराचूर ए ॥ गजकुंभ भेदे सीस छेदे वहे लोहित पूर ए ॥ दल देखि कंपे दीन जंपे करय प्रवल पुकार ए ॥ तुमस्वामि नामै तिणे ठामै वरते जयजयकार ए ॥ ३ ॥ भय आठ मोटा दुष्ट खोटा जेम रोटा चूर ए ॥ अश्वसेन धोटा तुज प्रसादे मनमनोरथ पूर ए ॥ महिमांहि महिमा वधे दिनदिन चंदने सूरिज समो जसजाप करतां ध्यान धरतां पार्श्व जिनवर ते नमो ॥ ४ ॥

छंद चाल.

छाया पडल जाल सव कापैं ॥ आख्यां तेज अधिक वलि आपैं ॥ पन्नगपति प्रभुनें परतापै ॥ अविचल राजकाज थिर थापैं ॥१॥ पद्मावति परचो वहु पूरे प्रभु प्रशाद संकट सवि चूरै॥ अलवत अलगी

जावै दूरे लक्ष्मी घर आवै भरपूरे ॥ २ ॥ महिमंडल मोटो तूं देव चोसट इंद्र करै तुज सेव ॥ त्रिभुवन ताहरो तेज विराजे जस प्रताप जगत्रमें गाजे ॥ ३ ॥ केता देश कहूं वलिनामैं प्रभुनी कीरत जिण जिण ठामैं ॥ पुरपट्टण संवाहन गांमें सुणता नाम भविक सुख पांमे ॥ ४ ॥

॥ छंद देशांतरी ॥

अंग वंग कलिंग मरुधर मालवौ मरहट्टए। काश्मीर हूण हम्मीर हब्बस सवालख सोरठ ए ॥ कामरु कुंकण दमण देसै जपे तेरो जाप ए। इण देशे अविचल प्रबल प्रतपे पास प्रगट प्रतपे ए ॥ १ ॥ लाट ने कर्णाट कन्नड मेद पाटमे वात ए । वलिनाट धाट वैराट वागड वछ कछ कुशात ए ॥ सतलिंग गंग फिरंग देशे जपे तेरो जाप ए। इण देश० ॥ २ ॥ वलि ओड त्रोड सगौड द्राविड चोड नट महा भोट ए। पंचालने वंगाल देशे सबर बब्बर कोट ए ॥ मुलताण मागध मगध देशे जपे तेरो जाप ए ॥ इण देश० ॥ ३ ॥ नमि आडलाड कपाल कोशल बहुल जंगल जाणिए। खुरसाण रोम अइराक आरब कुरू कवार्त वखाणिए। कुरू अच्छ मच्छ विदेह देशैं, जपे तोरो जाप ए ॥ इणि ॥ ४ ॥ काशीए केरल अनेके कई, सुरसेन संदिलए। गंधार गुज्जर गाजणो, वलियार गुंड विदर्भए । कनविर नै सोवीर देशै, जपै तोरो जाप ए ॥ इणि ॥ ५ ॥ नैपाल नाहल, अम्मल कुंतल, अज्ज कज्जल देशैए। प्रतिकाल चिल्लन मलय सिंहल, सिंधु देश विसेरुए, खसरखाण चिन सिलौन देसैं, जपै तोरो जाप ए ॥ इणि ॥ ६ ॥ कनवीर कानड कुलख कावल वुलख भंग त्रिभंगए। मल्हार मधुहिल्लार हर्मज, पियंगु हिंगुल वंगए। वलि बसाणनैं दसाण देशै जपै तोरो जाप ए ॥ इणि० ॥ ७ ॥

॥ छंद छप्पय ॥

प्रतपै प्रबल प्रताप पाप संताप निवारण। दश दिग देशविदेश। प्रणमता भविजन सुखकारण। रोग सोग सवी टलै मिले मनवांछित भोगए। दुख दोहग दारीद्र, दुर सवि टलै वियोगए। स्वर्ग मृत्यु पाताल्रमें त्रीभुवनै प्रगटयो सदा, श्री पार्श्वनाथ प्रताप, आपै अविचल संपदा ॥ १ ॥

॥ छन्द चाल ॥

अविचल पद आपै थिर कर थापै। जग व्यापक जिनराज। उपद्रव सव नाशै। सुरगुण गासै, वस थायैं नरराज, दीपै परदीपै रिपुने जीपैं, दीपै जिम दीनराज, पदपकज पुजे प्रभुने रिझया, सीझे वंछित काज ॥ १ ॥ तूं छे मुज नायक, हुं तुज पायक, लायक तुज समान, कुण छे जगमाहि, साहिवा राखें आप समान, तुंहिज ते दीसें विश्वावीसें हीयडुं हीसे हेव, देखुंह नयणें तुम हिज वयणे निरमल गुणमणि गेह ॥ २ ॥ सींदूर मुंडाला मद मतवाला, दुंदाला दरवार। झुले मन गमता रंगे रमता, उच्छालंता वार, तुरकी तेजाला आगल पाला, झुंझाला तरवार, झालीनै दोडै होडा होडै, जोडै वहु परिवार ॥ ३ ॥ हयवर पाखरीया, रथ जोतरीया, गुघरना घमकार, सोवन चितरीया, नेजा धरिया, परवरीया असवार, गज वैठा चाले, रिपुमन साले माले लक्ष्मीनो सार, एहवी रिद्धी पामै प्रभुने नामे सफल करै अवतार ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अवतार सार संसार माहि, तेह जननो जाणिए, धन कमाई

धर्म स्थानक जिनै लक्ष्मी मांनिए. ॥ १ ॥ सुंदर रुप सुहामणो, श्रवण सुणी नरनार ॥ कोडी करजोडी रहै, दरशननैं दरवार ॥२॥

॥ छन्द अर्ध नाराच ॥

प्रीयंगुवन निलतन देखी मनमोहए सनूर सूरनुरतैं, अधिक तेज सोहए, अमंदचंद वृंदतैं कलाकलाप दिप्पए सुरिंद कोटी कोटी तैं जिनंद जोर जिप्पए ॥ १ ॥ अफूल फूल बांणकै, कबान तो न लग्गए, दुजोध क्रोध जोध वैरी मांन छोडी भगए, अदीन तूं सदीन बंधू, देहि सुख मग्गए, शरण जांण स्वामीके, चरण कूं विलग्गए ॥ २ ॥ सुजोति २ मोतितैं, सुदंत पंत दिप्पए, गुलाल लाल उष्टतैं, प्रवाल माल छिप्पए, सुवास वास वासतैं कपूर पुर भज्जए, प्रलंब बाहु बाहुतैं, मृणाल नाल लज्जए ॥ ३ ॥ अनुपरुप देखतें जिणंद चंद पासए, पादारवृंदवृंदतैं कुपापव्याप नासए, दारिद्र चुरचुरके प्रभु पुर मोरी आसए, अनाथनाथ देई हात कर सनाथ दासए ॥४॥ कमठ हठ गंजनो कुकर्म कर्म भंजनो, जगति नाति रंजनो, मदद्रुम प्रभंजनो कुमती मति मंजनो, नयन युग्म खंजनो, जगत्रय अगंजनो सो जयो पार्श्वनिरंजनो ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पास एह निजदासनी, अवधारो अरदास, नयणे देखाडी दरस, पुरो पुरण आस ॥ १ ॥ चकवा चाहे चितसूं, दिनकर दरसण देव, चतुर चकोरी चंद जिम, हुं चाहुं नितमेव ॥ २ ॥ निसभर सुतां निंदमें, दीठो दरसण आज, परतिख देखाडी दरसण, सफल करो मुज काज ॥ ३ ॥ तुम दर्शन सुख संपदा, तुम दर्शन नवनिद्ध, तुम दर्शनथी पामिये, सकल मनोरथ सिद्ध ॥ ४ ॥

॥ छंन्द चाल अढयल पाधडी ॥

अंतरिक प्रभु अंतरजामी दिजे दर्शन शिवगत गामी, गुण केता कहिये तुम स्वामी, कहतां सरस्वती पार न पामी. कियो छंद मंदमति सारू, हितकर चि मैं धरजो वारू, बालक यदवा तदवा बोले, माता-नैं मनें अमृत तोलैं ॥ २ ॥ कियो कवित चित्त हुल्लासें, सांभलतां सब आपद नासै, संपद सघली आवै पासै, भाव विजय भगते इम भासै ॥ ३ ॥

॥ छंन्द छप्पय ॥

कियो छंद आनंद वृंद मन माहीं आंणि, सांभलतां सुखकंद, चंद जीम सीतल वाणी, श्री विजयदेव गुरुराज, आनतम गनधर गाजै, श्री विजयप्रभ नाम काम समरूप विराजे, गंणधर दोय प्रणमी करी थुणयो पास अशरण शरण, श्री भाव विजय वाचक भणे जयो देव जयजय करण ॥ १ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्दम्.

---

२२ अथ पार्श्वनाथ स्वामिनो शिलोको.

प्रणमूं परमातम अविचल अवतारूं ॥ अरिहंत सिद्धांना नाम उचारूं, सिमरूं आचारज मोटा उपाध्या ॥ साधू आतमरा कारज साध्या ॥ १ ॥ नगरी अलकापुर वाणारसि सोहै ॥ देख्यां सुरनर मनडाजी मोहै ॥ देश देशामै काशी वड देशो ॥ करदंड अंगारो नहि लवलेशो ॥ २ ॥ राजे महाराजा अश्वसेन राजा, साहीतां वा-

गल वाजै नित वाजा, कासी राजा रोकैसूं परमाणो, देश सघलमैं वरते छे आणो ॥ ३ ॥ मणि माणिक मोती भरीया भण्डारो, अष्ट सिद्ध नवनिधरो नही पावे पारो, अति घणी सुंदर ओपे ठकुराणी, साऊ वामादे माता पटराणी ॥ ४ ॥ जिणरी कूंक्षे ते जगन्नाथ जायो, पारस कुमर जगनामक हायो, तीन भवनरो नायक नाथो, सुगतर मणीनें घाली छैं बाथो ॥ ५ ॥ चोसठ इंद्रानो पुजनीक देवो, निसदिन आगल तो सारैजी सेवो, दश भवांरो वैरी गेरी सवायो, कमट सन्यासी तापस आयो ॥ ६ ॥ चिहुं दिश अगनि धुखंती ज्वाला, सिरपर तो सोहै सूरज वडाला, इसडी पंचांग न तपस्या तपंतो, माला रुद्राक्षनि जाप जपंतो ॥ ७ ॥ गंगातट ऊपर आसण कीनो ॥ जोगी जप तपमे अति घणो भीनो, सीस जटानैं मुकुट संजुटी ॥ भांग धत्तुरा पिया अति बुटी ॥ ८ ॥ आसण पदमासण पूरण छायो ॥ लेप भस्मीसूं धसमस कायो ॥ पहिरण पावडियां अगल पडीयां ॥ वज्र कसोटो कसियो छेकडियां ॥ ९ ॥ चक्षु चोला वेहूं झलके जींडोला ॥ श्रृंगी सैली वभूतरा गोला ॥ तिखो त्रिसूलो एक अधिक विराजै, भालचंद सरिबोभल छाजे ॥ १० ॥ सोहै वाघंबर कांषंबर सोहै, देख्यां अधूनने घणा मन मोहै, अवधूतो इसडो कोइ न आयो, जस तपसीरो घणो सवायो ॥ ११ ॥ दोडी दुनीया सहूदर सण आवै, जलज्यूं तो जोगी ज्वालमैं नावै, इसडी तो वातां अब आइ दरबारों, कहै वामा सुण पारस कुमारो ॥ १२ ॥ जहां जोगीसर जाप जपंतो, दरसणरी मनमें घणी छै खंतो, चढीया वामादे माता चकडोलै, चाकर सहिल्या चामर डोले ॥ १३ ॥ हुकुम मातोरे पारस कुमारो, गयंवर ऊपर हुवा असवारो, शरणै आयारो साहकसामी, जीव सारारो अंतरजामि ॥ १४ ॥ हस्ती हलकारै गंगातट आया, कपटी कमठरी देखी सहुमाया, जितरे तो जिनवर ग्यान कर जोयो,

सुणही तपसि एक मांहरी जीवायो ॥ १५ ॥ एकाग्र चित्तशूं सांभलजे भायो, इसडो तपतो मांहरी दायन आयो, इणविध पंचांगनितो मततापो, जारोपिण इंद्रि राखने आपो ॥ १६ ॥ छांडो माया-मद दयाचित धारो, सिद्ध समन्यामूं होसी निसतारो, इतरो तो सुणने कमठज बोलै, आतुर तो ऊफणतो आखज खोले ॥ १७ ॥ गुस्से भरियोनें धडहड धूंज्यो, किड किड दांतानै गिड गिड गूंज्यो, बोले वडवडने वके वदनूरो, कडकडतां आख्यादिसै करूरो ॥१८॥ राजकुंवर तूं दिसे अवतारो, अब तो लेवेगा अंत हमारो, खडा[1] करते हो हमसे तुम सेखी, कैसी तपस्यामें हिंस्या तुम देखी ॥१९॥ कूडी[2] तो कुमरांकारा[3] नहि कीजे, जंगली जोग्यारी आळ न लीजै, वरजे वामादे ऊभा परचावै, रव्खे तपसि कोइ हुन्नर[4] चलावैं ॥ २० ॥ इतरे लकडारा टुकडा कराया, वलता हुताशन नाग जलाया, अंतरमहुरतमें जीवन काया तिहां प्रभु पारस नाम सुणाया ॥२१॥ फडफडता पडिया वाहिर फुणिंदो, पायो अमरापुर हुवो धरणींदो, हिव तपसी तो हूवो छैहैराणो, पुरी परखदामें हुवो खीमाणो[5] ॥ २२ ॥ धूखंती धूणीले देरी विखेरी, अवतो खबर है पारस तेरी, जल जल तो वलतो आफलतो ऊठ्यो, प्रभुजी ऊपर तो घणोहि रूठ्यो ॥ २३ ॥ हमारी तपस्यारो अज खथायो, पारसकुमर तूं रखो सुखदायो, काया कसटरो पिड परमाणो, तूंकूं तो नही हुनर गूंदाणो ॥ २४ ॥ काळे मासे करीने काळो, उपज्यो कमठासुर मेघजमालो, गुतो छे जिनवर मोटा उपगारी, लेसी दीक्षानें उतरसी भवपारी ॥ २५ ॥ नाग नागणीनो कीयो नीसतारो, जस हुवो छै सघळे संसारो, लोक नगरीरा सघला सुख पाया, हिव तो कुमरजी महलामें आया ॥ २६ ॥ इम करतां उतऱ्यो वरस गुण तीसो, आप आलोचे

१–दिल्लगी, २–झूठी, ३–निंदा, ४–विद्या, ५–शरमिन्दा.

मनमे जगदीशो, पहिलां तो वरसीदानज दीजे, पाछे तो अवसर दीक्षाजी लीजै ॥ २७ ॥ सोलै मासे इक कनक कहीजे, कनक सोलारो सोनइयो लीजे, आठ लाख सोनइया एकज कोडो, नित प्रत देवे इतरांरी जोडो ॥ २८ ॥ इसडा छमछरी दानज दीया, जिनवर ते विसमां संजम लीया ॥ तिनसो मुनिवर तो हुवा तिणवारो, लारै जुरै छे सघलो परिवारो ॥२९॥ इक दिन तो प्रभुजी सिवद्रिंग वनमे, ध्यान धरीयो छै अविचल मनमे ॥ अब तो कमठासुर ग्यान करजोयो, कठै हमारो दुसमण होयो ॥ ३० ॥ रुठो कमठासुर वादल[1] चलावै, अधर पहाडां सिखर उठावे, वादल झडियानैं छायो आकासो, जाणै भाद्रवडो वरसै जीमासो ॥ ३१ ॥ वीजल वावलने अति घणुं गाजै, पुणगा[2] पाहण[3] ज्यों पडती जीवाजे, पडै पाणीना पावस परनाला, धसमसिया डूंगर धारा धक चाला ॥ ३२ ॥ काला अकाला मचीया वरसाला, वाला खालानें चलीया वंवाला, जिनवर तो जलमें नासा लग कलिया, ध्यानें अचला चल नहि जी चलिया ॥ ३३ ॥ इतरै तो आतुर धरणेंद्र आया, पाय लागीनें अधर उठाया, फुण तो हजारां ऊपर कीया, लुल लुल प्रभूना वारणा लीया ॥३४॥ अब तो मनमांहे दीयो आंछालो, ओ तो छै दुष्टी मेघ जमालो दश भवांरो वैरी कमठासुर दीसे, सिव सोलै वजर आणी अतरीसे ॥३५॥ धूज्या कमठासुर घणो पिछताया, में तो जिनवरनें यूंही संताया, एतो छे प्रभुजी मुगतरा प्यारा, रागद्वेषसूं होय वैठा न्यारा ॥ ३६ ॥ इसडो जाणीने लागो छे पावो, प्रभुजी हमारो पाप खमावो, तब तो कमठासुर इंद्र देवो, सारै प्रभुजीनी घणीजी सेवो ॥ ३७ ॥ आपणे थानक पुंहता तिणवारो, हिवै तो जिनवर कियो विहारो, दीन तयांसी छद्मस्थ रहीया, वावीस परिसह करडाजी सहिया ॥ ३८ ॥ आठूं

---

१. वायु. २. पाणीकी बूंदें. ३. पाषाण.

क्रमारो कीयो छै नासो, पाछै तो केवल हूवो परकासो, वाणी पैं-तीसेने अतीसे चउतीसो, इणपरतो विचरे ते वीसमा जगदीसो ॥ ३९ ॥ ज्यां ज्यां जिनवरजी पगल्या पधरावे, ए वातां आगांसूं नासी जी जावै, सोसो कोसामैं न पडे दुकालो, मोटा रोगांरो नहि हुवै चालो ॥ ४० ॥ कोइ हलुकर्मी श्रावकरे पारणो पावे, देवत सोनइया कोडां वरसावै, सुरपत भगवन्तनी सारै नितसेवो, लाभै अण हुनै सत लख देवो ॥ ४१ ॥ देव देवी मिल दरसण आवै, रतन कंचनरो त्रिगडो रचावे, वाणी धुंकारो उठे अति भारी, परखदा वारेही समजे तिणवारी ॥ ४२ ॥ गावां नगरा पुरसो है विचरन्तां, भागे भव जीवा मालै भगवन्ता, गुणना आगरने सागर गंभीरो, लडिया करमासूं भारी रणधीरो ॥ ४३ ॥ अनेक जीवागं कारज सान्या, भवसागरसूं पार उतान्या, एकसो वरसांरी पाई छे ऊमर, जाइ तो चढीया समेतगिर शिखर ॥ ४४ ॥ तिथ आठमने श्रावण शुद मासो, प्रभुजी सिद्धामें कीनो छे वासो, ऊणही सिद्धानो वेसूं वखाणों, क्यूंहीक सूत्रनो मतपिण आणो ॥ ४५ ॥ सिद्ध सिलारो इसठो उनमानो, ऊठै भगवन्तरो अविचल थानो, लंबी पहुली लख्वपैं तालिस जोयण, कथियो गुणवंता इसठो जीमोयण, विचमें तो जाडी धणीजी सघली, छे हडै मांखीकी पांखथी पतली, सोहै सिद्धांकी अनंत श्रेणी, संख्या शिवपुरनी नहि आवे केहणी ॥ ४७ ॥ पाणी पवनरो नहि लवलेशो, नहि अंधारो नहि रवि प्रवेशो, नही उजालो नंहि वरसालो, नहि सीयालो नहि वरसालो ॥ ४८ ॥ हासाख्वासाने नहि उपवासा, खट पद जीवांगजोवै तमासा, को नहि आवे कोइ किणरे नहि जावै, खावे पीवे नहि किणने नहि भावे ॥ ४९ ॥ चाकर ठाकुर तो नहि उण ठोडो, बूढो वडेरो नहि कोइ लोंडो, वरतें सिद्धांना सवे समभावें, जठै तो प्रभुजी आतम सुख पावे ॥५०॥

भणियो शिलोको भगवंतरो भलो, प्रणमैं पंचोली जोरावर मलो, पल पलमे होज्यो वनणा हमारी, मेहर राखी ज्यो मो पर थारी ॥ ५१ ॥ संवत अठारे वरस इकपन्नो, पोसवद दशमीनो मोटो दिन्नो, वांचे भणै ने सीखैसदाइ, तिणरे तो कु मणा नही रहै कांइ ॥५२॥

इति पार्श्वनाथ (शिलोको).

२३ अथ पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद (सायंकालका)

अचिंतचिंत चिंतामणी श्री पार्श्वनाथ जगमांहे भणिए ॥ जगरक्षण जगसार्थवाह जगवंधव थुणिए॥ जिनवर जगगुरु जगनाथ जिन त्रिभुवन सामी ॥ काम कुंभ कलि काल हुवा प्रणमूं सिर नामी ॥ त्रिभुवन सारण वीनवूं हे ॥ श्री परमेसर पास ॥ चरण कमल प्रभु भेटतां प्रभू मुज पुरोजी आस ॥ १ ॥ अनंतग्यान अनंत गुण जिनें सरभणिए लक्ष जीव्हा पार पावे नही एकुण किम थुणिए॥ सव वालूकण मेघ छंट ते अलिख अपारा ॥ तिणथी अधिक अनंतगुण ॥ किम पांवू पारा ॥ तारा गुणतां मुग्नम ए सव सायरको नीर॥ श्री मुख सरसती वर्णवे ॥ तोहि न पावेजी तीर ॥ २ ॥ ग्यान रहित हूं मानवी तुम गुण किम जाणूं ॥ मति पाखे वरणवू ॥ संक्षेप वखाणूं ॥ कोयल सुरतरु अंवडाल अंवा बहु संगते ॥ तिण दृष्टांते तुम प्रसाद गुण बोलसूं भगते॥ रोम रायतन हुलसियोए हिवडे हरष न माय॥ अति आनंदें ऊचरूं तिरूं जिण तुज सुप साय ॥ ३ ॥ चमर सिंघासन छत्र तीन सिर ऊपर सोहै ॥ वाणी दुंदुभी नाद सुणी सुरनर मन मोह ॥ पूठें भामंडल भलो जसकीरत कारण ॥ फलियो फूल्यो अशोक वृक्ष सब दुःख निवारग वाणी गुण पैंतिस अरूए ॥ वलि अतिशय चौतीस ॥ समोशरग कर शोभता ॥ तें प्रणमूं जगदीस ॥ ४ ॥ रूपे जीत्यो मदनराय, तेजें अदीतो, लक्ष्मी जीती ऋद्धि

ऋद्धि जगमांही वदी तो॥ सोमपणामें चंद्र थकी प्रभू अधिक अपारा, तिणथी अधिक अनंत गुण किम पावूं पारा, सागर जिम गंभीर वरूण श्री जोगेश्वरनाथ, कृपा करो सांमी मुज भणी तारो त्रिभुवननाथ ॥ ५ ॥ हस्ती समरे कुंजवन कोयल सहकारा ॥ चकवी समरे दिवसनाथ सतियां भरतारा, सायर समरे चंद्रमा पपइया मेहा ॥ हंस सरोवर गऊ वछ जिम अधिक सनेहा ॥ मधुकर समरे मालतिए बालक समरे माय, तिमहूं सिमरूं दीनानाथको दरशन द्यो जिनराय ॥ ६ ॥ आभाले कागद करे मेरूं जिम लेखण क्षीर समुद्र शाही करे लिखे ईन्द्र विचक्षण ॥ लिखतां पार पावे नहीं॥ मैं गुण किम जाणूं, मति पारवें करि वर्ण व्याउनमान वखाणूं, संक्षेपे गुणमें थुणि आप, श्री अर्हत भगवन्त देव, करजोडी कवियण कहै प्रभु मुजे आपोजी सेव ॥ ७ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.

२४ अथ पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद (प्रातःकालका)

नरेंद्रं फणींद्र सुरेंद्र अधीशं । सतेंद्रं सपूज्यं भजेनायशीसं मुनींद्रः गणींद्रं नमे जोर हाथं । नमो देव देवं सदा पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ गजेंद्रं मृगेंद्रं ग्रह्यो तूं छुडावे । महा आगतेंनागतें तूंबचावैं । महारोगतें बंधते तूं खुलावे । महारण तें जुद्धतें तूं जीतावै ॥ २ ॥ दुःखी दुःख हरता सुखी सुख करता । सबै सेवकोंने सदानंद भरता । हरे जक्ष राक्षस भूतं पिशाचं । विषम डाकनीके भय अवाचं ॥ ३ ॥ दरिद्रनकूं द्रव्यके दान दीन्हे । अपुत्रनकूं ते भले पुत्र कीने । ग्रहां सर्व सेती निकाले विधाता । सबै संपदा सर्वकूं देह दाता ॥ ४ ॥ महा चोरको वज्रको भय निवारै । महा पवनके पुंजसे तूं उबारै । महा

क्रोधकी आगमें मेघ धारा । महा लोभसे लंसही वज्रधारा ॥ ५ ॥ महा मोह अंधारकुं ग्यान भानूं । महा कर्म कंतारकुं देह प्रधानं । किये नाग नागिणी अधो लोक सांमी । हऱ्यों मानतें दैत्यको भय अकामी ॥ ६ ॥ तुंही कल्पवृक्ष तुंही कामधेनु । तुंही देव चिंतामणी नाथ एनुं । पशु नरकके दुःखसेती छुडावै ॥ महा स्वर्गमे मोक्षमें तूं बसावें ॥ ७ ॥ करै लोह तें हेम पाषांण नामी ॥ रटें नामसो क्यों नही मोक्ष गामी ॥ करै सेनताकी करै देव सेवा ॥ सुने वैं नसोही लहैं ग्यान मेवा ॥ ८ ॥ जपै जापतां कूं कहा पाप लागैं । धरै ध्यान ताका सवी दुःख भागे । विना तोंहि जाने धरे भव घनेरो । तुमारी कृपासें सरै काज मेरो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ गणधर इंद्र न करि सकें तुम विनती भगवान ॥ दानत भीत निहारकें कीज्यो आप समान ॥ १ ॥

इति पार्श्वनाथ स्वामिनो छन्द.

२५ अथ पार्श्वनाथ छन्द. (सायंकालका)

प्रणमामी सदा प्रभु पार्श्व जिनं। जिन नायक दायक सुख धनं । घन सार मनोहर देह धरं । धरणी पति नित्यसु सेवकरं ॥ १ ॥ करूणारश रंजित भव्य फणी, फणी सस सुशोभित मौलि मणी, मणी कांचन रूप त्रिकोट घटं । घटीतासुर कीन्नर पार्श्व तटं ॥ २ ॥ तटनी पति घोस गंभीर सुरं । शरणागत विश्व असेस नरं । नरनारी नमस्कृत्य नित्य पदा । पद्मावती गावती गीत सदा ॥ ३ ॥ सततें-द्रियकोपयथा क्रमटं । कमटासुर वारण मुक्तहठं । हठ हेलित कर्म कृतांत वलं । वलं वलधांमदरंदलपंकजलं ॥ ४ ॥ जलजलसत्पत्र प्रभा नयनं । नयनंदित भव्य रीरीशमनं । मन मथ महीरुह वन्हि समं । समतामय गुण रत्न मयं परमं ॥ ५ ॥ परमार्थ विचार सदा कुशलं । कुशलं कुरमे जिन नाथ अलं । अलनी नलिनी नल नील-

तनं । तनुता प्रभु पार्श्वजिनम् सुधनं ॥ ६ ॥ सुधन धान्यकरं करु-णापरं । परम सिद्धिकरं ददृदाधरं, वरतरं अश्वसेन कुलोद्भवं । भव भृता पार्श्व जिनं शिवं ॥ ७ ॥ छ ॥ छ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.

२६ अथ छन्द भुजंग प्रयात. (प्रातःकालका)

सेवो पास संखेश्वरो मन सुद्धे । नमो नाथ निश्चे करी एक बुद्धे ॥ देवी देवला अन्यने सूं नमो छो । अहो भव्य लोको भुला सूं भमो छो ॥ १ ॥ त्रि लोकके नाथने सूं तजो छो । पड्या पासमें भूतडानें सूं भजो छो ॥ सुरधेनु छंडी अज्यानें अजो छो । महापंथ मूकी कुपंथे चलो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटै । ग्रहे कोण रासभने हस्ती साटै ॥ सुरद्रुम ऊपाडीने कोण आक वावे । महा मूढ सो आकडा अंब चावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो नें किहां मेरु शृंगं । किहां केसरी नें किहां ते कुरंगं ॥ किहां विश्वनाथ नें किहां अ-न्य देवा । करो एक चित्ते प्रभू पास सेवा ॥ ४ ॥ भजो देव प्रभा-वती प्राणनाथं । सहू जीवनें जे करे विश्वनाथं ॥ महा तत्व जाणी सदा देव ध्यावे । तेहना दुःख दारिद्र दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पामी मानुष जन्म वृथा क्यूं गमो छो । कुसीलें करी देहिनें सूं रमो छो ॥ नहीं मुक्ति वासं विना वीतरागं । भजो भगवन्त तजो दुष्ट रागं ॥ ६ ॥ उदै रत्न भाख्या सदा हेत आंणी । दया भाव कीजे प्रभू दास जाणी ॥ मारै आज मोतीनका मेह वूठा । प्रभू पास संखेश्वरा आप तूठा ॥ ७ ॥

इति भुजंग प्रयात छन्द.

२७ अथ पार्श्वनाथ स्वामी छन्द. (प्रातःकालका)

क्षिति मंडल मुकुट धर्मकनिकट विश्वागरं चारु भ-, नव गेणु

समीरं नील शरीरं सुर गुरु धीरं गंभीरं, जगती जग शरणं दुर्मतिह-रणं दुद्धर चरणं सुख करणं, श्री पार्श्वजिनेंद्रं नितनागेंद्रं नमत सुरेंद्रं कुल भद्रं ॥ १ ॥ देह द्युति सारं सुभगाकारं विश्वाधारं गुणधारं, शिवरमणी रक्तं राग विरक्तं संकट मुक्तं गुण युक्तं, कमठे सम दलनं गजगति चलनं, केवल कमलं श्री विमलं ॥ श्री० २ ॥ महिमा दिन-कारं भवनिस्तारं निर्जित सारं दातारं, प्रति भव नेतारं गत वैभारं जैनेतारं त्रातारं, कुसुमे जल रदनं दुर्मति दलनं, संप्रति मदनं गुण सदनं ॥ श्री पार्श्व० ॥ ३ ॥ पास श्री जक्षं निर्मल पक्षं कृति जिन रक्षं जिन मोक्षं, शिव ललना हारं सफल विहारं मुगुट विहारं सुख-कारं, धरणीधर रम्यं जगत्यगम्यं रम्या रम्यं शह रम्यं ॥ श्री पार्श्व० ॥ ४ ॥ छ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.

२८ अथ सिद्धाष्टकम्. (सायंकालका)

अखण्डं चिदानंद देवाधि देवं । फणींद्राद्रि रुद्रादि इंद्रादि सेवं । मुनींद्रा कवींद्रादि चंद्रादि मित्रं । नमस्ते ३ पवित्रं ॥ १ ॥ धराभंज-लगं निमलस्त्वं नमस्त्वं । घटत्वं पटत्वं अणुत्वं महत्वं । मनस्त्वं वच-स्त्वं द्रिगत्वं हस्त्वं । नमस्ते. ३ समस्त्वं ॥ २ ॥ अडोलं अतोलं अमोलं अमानं । अदेहं अठेहं अनेहं निधानं । अजापं अथापं अतापं अपापं । नमस्ते. ३ अमायं ॥ ३ ॥ न श्रामं न धामं न शीतं न उ-ष्णं । न रक्तं न पीतं न श्वेतं न कृष्णं॥ अशेषं अशेषं नरेशं न रूपं। नमस्ते ३ अनूपं ॥ ४ ॥ न छाया न माया न देशो न कालो । न जाग्रं न सुप्तं न वृद्धो न बालो । न ह्रस्वं न दीर्घं न रम्यं अरम्यं। नमस्ते ३ अगम्यं ॥ ५ ॥ न बंधं न मुक्तं न मौनं न वक्तं । न धुत्रं

न तेजो न धामी न नक्तं । न रक्तं विरक्तं न जुक्तं अजुक्तं । नमस्ते ३ असक्तं ॥ ६ ॥ न रुष्टं न तुष्टं न इष्टं अनिष्टं । न ज्येष्टं कनिष्ठं न मिट्टं अमिट्टं । न अग्रं न पिष्टं न तुल्यं न गृष्टं । नमस्ते ३ अदृष्टं ॥ ७ ॥ न वक्त्रं न घ्राणं न कर्णं न अक्षं । न हस्तं न पादं न शीसं अलक्षं । कथं सुंदरं सुंदरं नामधेयं । नमस्ते ३ अशेषं ॥ ८ ॥

इति सिद्धाष्टकम्.



२९ अथ शांतिनाथाष्टकम् (सायंकालका).

नाना विचित्रं वहु दुःख राशी, नाना प्रारंभमोहान् फाशी, पापानि दोशानि हरन्ति देवा, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथं ॥१॥ संसार मध्ये मिथ्यात्व चिंता, मिथ्यात्व मध्ये करमाणि वंधं, ते वंध छेदन्ति देवाधिदेवः॥इह०॥२॥कामस्य क्रोधं मायाति लोभं। चतुर्कषायां इह जीववंधं ॥ ते वंध छेदं० ॥ इह० ॥ ३ ॥ जातस्य मरणं ध्रुवतस्य वचनं ॥ वहुतीजीवं वहु जन्म दूःखं ॥ ते० ॥ इ० ॥ ४ ॥ चारित्र हीनो नर जन्म वंधो । सम्यक्त रक्त प्रतिपालयन्ति । ते जीव सिद्धन्ति देवाधि देवं ॥ इ० ॥५ ॥ मृदु वाक्यहीनो कठिनस्य चित्तो । परजीव निंदा मनसाच वंधं ॥ ते० ॥ इ०॥ ६ ॥ परद्रव्य चोरी पर दार सेवा ॥ हिंस्साधिकारी अलुटत्ति वंधं ॥ ते० ॥ इ० ॥ ७ ॥ पुत्राणि मित्राणि कलत्र वंधु ॥ वहु वंध मध्ये इह जीव वंधं ॥ ते० ॥ ॥ इ० ॥ ८ ॥

इति शांतिनाथाष्टकम्.



३० अथ ऋषभदेवनो छन्द. (सायंकालका)

परम अलक्षहि त्रिजग चक्षुहि । संघ सुपक्षहि अक्षवते । प्रभु अवियोगी आदि वियोगी ॥ स्वयमुपयोगी संघ कृते ॥ ऋषभ निरंजन सब दुख भंजन ॥ हे मनरंजन शुधचित्ते ॥ जय जय हो अमराधिप वदन कर्म निकंदन नाभि सुते ॥ १ ॥ मरुदेवी नंदन आनंदहिकंदनि । है ढिग चंदहि मंद दुते । तन कनकाचल चंपकली कल दीप सिखा दल स्वच्छ वते । निरखत हर्ष प्रकर्ष वधै । दुर जात वितर्क तर्क वते ॥ जय० ॥ २ ॥ पद अरविंदहि वृंद वनंदित वंदत वृंद सुरंद निते । जुत सुभ लंछन वंछित दछन स्वच्छ प्रतच्छ स्वचछंद चिते । लहि अपवर्गहि दीर्घ सुखं न लहे सगवर्ग हि स्वर्गपते ॥ जय० ॥ ३ ॥ दरसण केवल केवल ग्याननि केवल राग विराग विरोधरते, अतिशय लायक व्यक्त साहायक । मुक्ति प्रदायक मुक्ति पते । भव भ्रम जाल कराल दलिततकाल मृणाल दंताल वते ॥ जय० ॥ ४ ॥ निरजर कोट पलोटत पाप । निरंतर ओट अखूट वते । सिरतिय छत्र विचित्र रहै । अकरत्न पवित्र नक्षत्र पते। इम महिमा रूप अनूपसू । प्रतिहारज जयो जिनराज जुते ॥ जय० ॥ ॥५ ॥ सब जगजीवन जीवन मूर । श्री धर्म जीवन दांबुवते । यह भवसागर नागर ते गहि । सारद नांवसुं पारहुते । तुम सिध रूप कपाल अनूप । शरणागत सिद्ध सरुप कृते ॥ जय० ॥ ६ ॥ प्रभु गुण सागर पारनवारिति, रभुज धारन पारगते । तिम पदहीन अपंग निरंत्र, चढै गिरि अंग उतंगनते । इमहिजहो बुद्धिहीन अधीन । यहमत कीन क्षमा कुरुते ॥ जय० ॥ ७ ॥

इति ऋषभदेव छन्द.



३१ अथ पार्श्वनाथ स्तुती–(सायंकालका).

सकल सार सुरनरू जग जाणं । जस जस वास जगत परमाणं। सकल देव सिर मुकुट सुवंगं । नमो नमो जिनपति मनरंगं ॥ १ ॥ जे जन मनरंगं अकल अभंगं । तेज तुरंगं नीठंगं । सत्र सोभासंगं। दग्ध अनंगं शीश भुजंगं चतुरंगं ॥ २ ॥ बहु पुण्य प्रसंग, नित उछरंगं नव नव रंग मर्दंगं । कीरत जलगंगं देग दुरंगं सुरनर संगं सारंगं ॥ ३ ॥ सारंगा चक्रं । परम पवित्रं रुचिर चरित्रं जीवित्रं, जैजोन मंत्रं पंकज पत्रं निर्मल नेत्रं सावित्रं ॥४॥ जगजीवन मंत्रं शासत सत्रं । मंत्रामंत्रं महा मंत्रं, विसवंत्रेवेत्रं चामर छत्रं सीस धरित्रं पवित्रं ॥ ५ ॥ पावित्राधरणं सुकुटा वरणं त्रिभुवन शरणं आचरणं, सुर चरिचतचरणं दारिद्र हरणं सिव सुख करणं मावरणं ॥ ६ ॥ गो अमृत करणं जनमनमरणं ॥ भवजल तरणं उद्धरणं, स्व संपत करणं अंग सहरणं चरणा वरणं आदरणं ७ ॥ आदरणा पालं, आकजमालं नित भूपालं उजियालं, अष्टम शशि भालं, देव दयालं, चेतनचालं सुखमालं॥८॥ त्रिभुवन रखवालं, काल दुकालं, महाविकरालं भयटालं, सणगार रसालं मयं कमालं, रति विशालं भूपालं ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सकलरूप उदार सार । संपत सुखदायक । रोग सोग संताप पाप । दुख दुर निवारक ॥ १० ॥ चिहुं दिश आण अखंड । तेज जिम तपै दिणं दे, नमै अपछरा कोऊ, देवसवन मे नरिंदे ॥ ११ ॥ तेविसमो जिणवर भलो, अधिक अधिक मंगल निलो । मुनि मेघराज इस वीनवै संथुण्यो तवन त्रिभुवन तिलो ॥ १२ ॥ छ ॥

इति पार्श्वनाथ स्तुनी.

भगवंत भलीपरे जेह भजे ॥ तस घर कमला कल्लोल करे । बलि राज्यरमणि बहु लीलवरे ॥ २६ ॥ भयवारक तारक तूं त्राता । सज्जनजनगति मुक्तिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तूं स्वामी । शिवदायक नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करूणाकर ठाकुर तूं मेरो । निशिवासर नाम जपूं तेरो ॥ सेवक शूं परम कृपा कीज्यो । वाल्हेशर वंछित फल दीज्यो ॥ २८ ॥ जिनराज सदा तूं जयकारी । तूज मूर्ति अति मोहन कारी । मुगत मेहेल मांही तूंही विराजे । त्रिभुवन ठकुराइ तुज छाजे ॥ २९ ॥ इम भाव भले जिनवर गायो । वामा सुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि शशि मुनि संवच्छर रंगे । जयदेव सुरीमां सुख संगे ॥ ३० ॥ जय पुरुषादाणी पार्श्व प्रभो । सकलार्थ समीहित देहि विभो ॥ बुध हर्ष रुचि विजयाय मुदा । तप लब्धि रुचि सुख थाय सदा ॥ ३१ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ इति पार्श्वनाथ स्तुति छन्द. ॥



३३ अथ श्री पार्श्वनाथ स्वामिनो छन्द (प्रातःकालका).

आपण घर बेठा लील करो । निज पुत्र कलत्र शुं प्रेम धरो । तुम देश देशांतर कांई दोडो ॥ नित्य पास जपो जिनश्री रूडो ॥ १ ॥ मनवंछित सघला काज सरे । शिर उपर छत्र चामर धरे । कलमल आगल चाले घोडो ॥ नित्य० ॥ २ ॥ भूत प्रेत पिशाच वली । सायणि ने डायणि जाय टली । छल छिद्र न कोई लागे जोडो ॥ नित्य० ॥ ३ ॥ एकान्तर ताव सियो दाहू । औषध विण जाय क्षणमांहू । नवि दुःखे माथुं पग गुडो ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ कंठमाल गड गुंबड सघला, तस उदर रोग टले सघला । पीडा न करे फुन गल फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जागतो तीर्थंकर पास पहू । एम जाणे सघलो

जगत सहू । तत्क्षण अशुभ कर्म तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ पास वाणारशिपुरी नगरी । तिहां उदयो जिनवर उदय करी । समय सुंदर कहे कर जोडो ॥ नित्य० ॥ ७ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.



३४ अथ शांतिनाथ स्वामिनो छन्द. (प्रातःकालका)

शारद माय नमूं शिरनामी । हूं गुण गाउं त्रिभुवनके स्वामी । शांति शांति जपे सब कोई । ते घर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी नें कीजे कामा, सोहि काम होवे अभिरामा । शांति जपी परदेश सिधावे । ते कुशले कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्भ थकी प्रभु मारि निवारी । शांतिज नाम दियो हितकारी । जे नर शांति तणा गुण गावे । ऋद्धि अचिती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जे नरकूं प्रभु शांति सहाई । ते नरकुं क्यां आरति भाई । जे कछु वंछे सोहि पुरे । दुःख दारिद्र मिथ्या मति चुरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योत प्रकाशी । घट घटके अतर प्रभु वासी । स्वामी स्वरूप कह्यूं नवि जावे । कहेता मुज मन अचरीज थावे ॥ ५ ॥ डार दिये सबही हथियारा । जीत्या मोह तणा दल सारा । नारी तजि शिवशूं रग राच्यो । राज तजीयो पण साहिब साचो ॥ ६ ॥ महा बलवंत कही जे देना । कुंजर कुंथुन एक हणेवा । ऋद्धि सबही प्रभु पास लहीजे । भीक्षा आहारी नाम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजककूं सम भायक । पण सेवकहीकूं सुखदायक । तजि परिग्रह हुवा जगनायक । नाम अतिथि सवे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजे । नाम देव अरिहन्त भणी जे सकल जीव हितवन्त कहीजे । सेवक जाणी महापद दीजे ॥ ९ ॥ सायर जेसा होत गंभीरा । दूषण एक न माहे

शरीरा । मेरु अचल जिम अंतरजामी । पण न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिनजी सब देखे । पण सुपने प्रभु कबहु न पेखे । रीस विना बावीस परीसा । सेना जीती तूं जगदीशा ॥११॥ मान विना जग आण मनाइ । माया विना शिव शूं लय लाइ । लोभ विना गुण राशि ग्रहीजे । भिक्षु भावे त्रियडो सेविजे ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणे शिरछत्र धरावे । नाम यती पण चामर ढुलावे । अभयदान दाता सुख कारण । आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्री जिनराज दयाल भणीजे । कर्म सर्वको मूल खणीजे । चउविह संघ तीरथ थापे । लच्छी घणी देखे नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे । नाहि किसीकूं शीस नमावें । अकंचन को बिरुद धरावे । पण सोवन पद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ राग नही पण सेवक तारे । द्वेष नही निगुणा संगवारे तजि आरंभ निज आतम ध्यावे । शिव रमणीको साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्भुत कहिए । तेरा गुणको पार न लहिये ॥ तूं प्रभु समरथ साहेब मेरा । हूं मन मोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तूंरे त्रिलोक तणो प्रतिपाल । हूंरे अनाथ ने तूंरे दयाल । तुं शरणागत राखन धीरा ॥ तुं प्रभु तारक छे वड वीरा ॥ १८ ॥ तूहि समो वड भागज पायो । तो मेरो काज अडयोरे सवायो करजोडि प्रभु विनवूं तुमशूं । करो कृपा जिनवरजी अमशूं ॥ १९ ॥ जनम मरणना भय निवारो । भव सागरथी पार उतारो । श्री हत्थिणाउर मंडण सोहे । यां श्री शांति सदा मन मोहे ॥२०॥ पद्मसागर गुरुराय पसाया । श्री गुण सागर कहे मन भाया । जे नरनारि एक चित गावे । ते मनवांछित निश्चे पावे ॥ २१ ॥

इति शांतिनाथ छन्द.



३५ अथ गौतम स्वामिनो छंद. (प्रातःकालका)

वीर जिणेशर केरो शिष्य । गौतम नाम जपो निशदिश । जो कीजे गौतमनूं ध्यान । तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे । मनवंछित हियेडे संपजे । गौतम नामे नावे रोग । गौतम नामे सर्व संभोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा । तस नामे नावे ढुकडा । भूत प्रेत न विभंडे प्राण । ते गौतमना करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय । गौतम नामे वाधे आय । गौतम जिन शासन शणगार । गौतम नामे जय जयकार ॥४॥ शाली दाल सुरहा घृत गोल । मनवंछित कापडे तंबोल । घर सुघरणी निर्मल चित्त । गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उग्यो अविचल भाण । गौतम नाम जपो जगजाण । मोटा मंदिर मेरु समान । गौतम नामे सफल विहांण ॥ ६ ॥ घर मयंग घोडानी जोड । वारु पहुंचे वंछित कोड । महियल माने मोटा राय । जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्या पातक टले । उत्तम नरनी संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान । गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवन्त अवधारो सहू । गुरु गौतमना गुण छे वहु । कहे समय सुंदर कर जोड । गौतम तूठा संपति कोड ॥ ९ ॥

इति गौतमनो छन्द.



३६ अथ चिंतामणीनो छन्द. (प्रातःकालका)

सुगुरु चितामणी देव सदा । मुज सकल मनोरथ सुदा कमलाशर दुर न होय कदा । जपता प्रभु पार्श्व नाम यदा ॥ १ ॥ जल अनल मतंगज भय जावे । अरि चोर निकट पण नहि आवे । सिंह

सर्प रोग न संतावे। धन्य धन्य प्रभु पार्श्व जिन ध्यावे ॥ २ ॥ मछ कछ मगर जलमांही भमें। वडवानल नीर अथाह गमै। प्रवहण बैठा नर पार पमै नित्य जे प्रभु पार्श्व जिनंद नमै ॥ ३ ॥ विकराल दावानल विश्व दहै। गृह वस्ती आकाश धन ग्रास ग्रहै। तुम नाम लिया उपशांति लहे। वन नीर सरोवर जेम वहै ॥४॥ झरतो मदलोल कपोल झरे। भ्रमरा गुंजारव भर रोस भरें। करि दुष्ट भयंकर दूर करे। श्री पार्श्वनाथजीके समरे ॥ ५ ॥ छाना छल छिद्र शिनांय छलैं। यश वाश सुणी मनमांहीं जलै। ते पिशुन पडे नित्य पाय तलैं। जपतां प्रभु वैरी जाय टलैं ॥ ६ ॥ धन देख निशाचर बहुत तके। मुज मंदिर पैस कदे न सके। अति उछव तास आवास अखे। परमेसर पारस जास पखे ॥७॥ असराल विदारण हाथ हटे। गजलोल जिहां गज कुंभ घटै। मृगराज महा भयभीत मिटे। रसना जगनायक जेह रटे ॥ ८ ॥ फिरतो चिहुं फेर फुंकार फणी। धरणिंद्र धसै धर रीस घणी भय त्रास न व्यापै तेह भणी। धरतां चित पारसनाथ धणी ॥ ९ ॥ कफ कुष्ठ जलोदर रोग कुसै। गड गुंबड देह अनेक वसै। विन भेषज व्याधि सवे विनसे। वामा सुत पावस जेय वसे ॥ १० ॥ धरणींद्र धराधिप सुर ध्यायो। प्रभु पारस पारस कर पायो। छवि रूप अनूपम जग छायो। जननी धन नामा सुत जायो ॥११॥ करतां जिनजाप संताप कटै। घन दारिद्र दोहग सोग मिटे हठ छोड जिहां रिपु जोर हटे। पद्मावती पारस जहां प्रगटे ॥ १२ ॥ मंत्राक्षर गाथा गुप्त मळ्यो, चिंतामणि जाणे हाथ चळ्यो वलि मान महांत पतेज वळ्यो, पारस स्तवन मुख जे न पळ्यो ॥ १३ ॥ तीरथ पति पारस नाथ तिलो। भणतां जस वास निवास भलो। मन मंत्र सकोमल होय मिलो। अमची प्रभु पारस आस फलो ॥ १४ ॥ लुंकागछ नायक लाज लीये। हित क्षेम करण

गुरु नाम हिये । दिन दिन गछ नायक सुख दिये । कीरत प्रभु पारस नाथ किये ॥ १५ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.



३७ अथ शांतिनाथ प्रभूनो छन्द. (प्रातःकालका)

शांतिनाथ जीरो कीजे जाप । क्रोड भवाना काटे पाप ॥ संतजीनेसर मोटा देव । सुरनर सारे ज्यारी सेव ॥ १ ॥ दुख दालिद्र जावे दूर । सुख संपति पामे भरपूर । ठगपासीघर जावे भाग । बलती होवे शीतल आग ॥ २ ॥ राज लोकमे महिमा घणी । संत जीनेंसर माथे धणी । जो ध्यावें प्रभुजीनो ध्यान । राजा देवे इधको मान ॥ ३ ॥ ग्रह गोचर पीडा टल जाय । दुष्मन दोषी लागे पाय । सगळो भागो मनको भ्रम । राखो समकित काटो क्रम ॥ ४ ॥ सुनो प्रभूजी म्हारी अरदाश । हूं सेवक तुम पूरो आश । मारा मनरा चिंत्या कारज करो । चिंता आराति विघन हरो ॥ ५ ॥ मेटो प्रभुजी आल जंजाल । प्रभुजी मुजने नयन निहाल । आपरी कीरत ठामो ठाम । प्रभुजि सुधारो मारो काम ॥ ६ ॥ जे नर नित प्रभुने रटे । मोत्या धंधन फुला कटे । चोवां लात्रण दोनू झड जाय । विना ओषध फट नावे छाय ॥ ७ ॥ प्रभु नामथी आंख्या निर्मल थाय । धुंद पडल जाला कट जाय । कंधळ्यो पील्यो झर झर पडे । शांत जिनेंसर साता करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याधि मिटावे रोग । सेण मित्रनो मिळे संजोग । सदो देष न दिसे और । नहि चाले दुसमणको जोर ॥ ९ ॥ लटे तास वजावे नास । दुर्जन मिट होवे निज दास । शांति प्रभूली महिमा घणी । कृपा करो त्रिभुवनका धणी ॥ १० ॥ अरज करूंछं जोडी

सर्प रोग न संतावे । धन्य धन्य प्रभु पार्श्व जिन ध्यावे ॥ २ ॥ मछ कछ मगर जलमांही भमें । वडवानल नीर अथाह गमै । प्रवहण बैठा नर पार पमै नित्य जे प्रभु पार्श्व जिनंद नमै ॥ ३ ॥ विकराल दावानल विश्व दहै । गृह वस्ती आकाश धन ग्रास ग्रहै । तुम नाम लिया उपशांति लहे । वन नीर सरोवर जेम वहै ॥ ४ ॥ झरतो मदलोल कपोल झरे । भ्रमरा गुंजारव भर रोस भरैं । करि दुष्ट भयंकर दूर करे । श्री पार्श्वनाथजीके समरे ॥ ५ ॥ छाना छल छिद्र विनांय छलैं । यश वाश सुणी ,मनमांही जलै । ते पिशुन पडे नित्य पाय तलें । जपतां प्रभु वैरी जाय टलैं ॥ ६ ॥ धन देख निशाचर बहुत तके । मुज मंदिर पैस कदे न सके । अति उज्व तास आवास अखे । परमेसर पारस जास पखे ॥७॥ असराल विदारण हाथ हटे । गजलोल जिहां गज कुंभ घटै । मृगराज महा भयभीत मिटे । रसना जगनायक जेह रटे ॥ ८ ॥ फिरतो चिहुं फेर फुंकार फणी । धरणिंद्र धसै धर रीस घणी भय त्रास न व्यापे तेह भणी । धरतां चित पारसनाथ धणी ॥ ९ ॥ कफ कुष्ठ जलोदर रोग कसै । गड गुंबड देह अनेक वसै । विन भेषज व्याधि सवे विनसे । वामा सुत पावस जेय वसे ॥ १० ॥ धरणींद्र धराधिप सुर ध्यायो । प्रभु पारस पारस कर पायो। छवि रूप अनूपम जग छायो । जननी धन नामा सुत जायो ॥ ११ ॥ करतां जिनजाप संताप कटै । घन दारिद्र दोहग सोग मिटे हठ छोड जिहां रिपु जोर हठे । पद्मावती पारस जहां प्रगटे ॥ १२ ॥ मंत्राक्षर गाथा गुप्त मढ्यो, चिंतामणि जाणे हाथ चढ्यो वलि मान महांत पतेज वढ्यो, पारस स्तवन मुख जे न पढ्यो ॥ १३ ॥ तीरथ पति पारस नाथ तिलो । भणतां जस वास निवास भलो । मन मंत्र सकोमल होय मिलो । अमची प्रभु पारस आस फलो ॥ १४ ॥ लुंकागच्छ नायक लाज लीये । हित क्षेम करण

गुरु नाम हिये । दिन दिन गछ नायक सुख दिये । कीरत प्रभु पारस नाथ किये ॥ १५ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.



३७ अथ शांतिनाथ प्रभूनो छन्द. (प्रातःकालका)

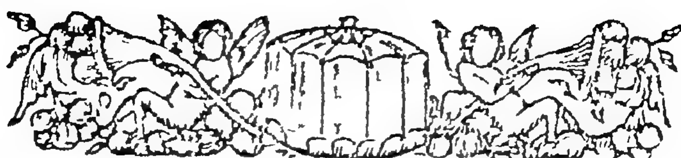
शांतिनाथ जीरो कीजे जाप । क्रोड भवाना काटे पाप ॥ संतजीनेसर मोटा देव । सुरनर सारे ज्यारी सेव ॥ १ ॥ दुख दालिद्र जावे दूर । सुख संपति पामे भरपूर । ठगपासीधर जावे भाग । बलती होवे शीतल आग ॥ २ ॥ राज लोकमे महिमा घणी । संत जीनेंसर माथे धणी । जो ध्यावें प्रभुजीनो ध्यान । राजा देवे इधको मान ॥ ३ ॥ ग्रह गोचर पीडा टल जाय । दुष्मन दोषी लागे पाय । सगळो भागो मनको भ्रम । राखो समकित काटो क्रम ॥ ४ ॥ सुनो प्रभूजी म्हारी अरदास । हूं सेवक तुम पूरो आश । मारा मनरा चित्या कारज करो । चिंता आराति विघन हरो ॥ ५ ॥ मेटो प्रभुजी आल जंजाल । प्रभुजी मुजने नयन निहाल । आपरी कीरत ठामो ठाम । प्रभुजि सुधारो मारो काम ॥ ६ ॥ जे नर नित प्रभुने रटे । मोत्या बंधन फुला कटे । चोवा लावण दोनू झड जाय । विना ओषध कट जावे छाय ॥ ७ ॥ प्रभु नामथी आंख्या निर्मल थाय । धुंद पडल जाला कट जाय । कंवळ्यो पील्यो झर झर पडे । शांत जिनेंसर साता करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याधि मिटावे रोग । सेण मित्रनो मिळे संजोग । सदो देष न दिसे और । नहि चाले दुसमणको जोर ॥ ९ ॥ लूटे ास वजावे नास । दुर्जन मिट होवे निज दास । शांति प्रभूजी णी । कृपा करो त्रिभुवनका धणी ॥ १० ॥ अरज करूंछं जे

हाथ । तूंम छानी नहि दूजी बात । देख रया छो पोते आप । प्रभुजी काटो मारा पाप ॥ ११ ॥ मारा मनका चिंत्या कीजे काज । राखो प्रभुजी मारी लाज । थां समान नहि जगमे कोय । था समऱ्या सुख संपत होय ॥ १२ ॥ तुम आगे नहि चाले मृगीरो जोर ॥ ताव तेजरो नाखो तोड । तुम मरी मिटावो कर देवो संत । तुम गुणरो नहि आवे अंत ॥ १३ ॥ तुमने समरे जोगि जती । तुमने समरे साधु सती संकट काटो राखो मान । अविचल पदवी आपो ठांग ॥ १४ ॥ संमत अठरावे चौगनवे जाण । देश मालवो इधको वखाण । गाम रेजाव चैत्र मास । हू आयो चरणारो दास ॥ १५ ॥ ऋषि रघुनाथजी कीधो छन्द । काटो प्रभुजी करमारा वृंद । हूं जोऊंछूं आपरि वाट । चिंता मारी सगली काट ॥ १६ ॥

इति शांतिनाथ छन्द.

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ प्रथम खण्डे छन्दाभिधं द्वितीय प्रकरणम्.





॥ स्वर्गीय श्रीमतगच्छाधिपति किर्त्तिमान् पूज्यजी महाराज श्री श्री १००८ श्री श्री रेखराजजी महाराज प्रणीत. ॥

(प्रकरण तीसरा–पद.)



३८ अथ चौवीसी (राग सायंकालकी--सांमकल्याण)

भवि तुम सांझ सवेरे जिनवंदो.॥टेर॥ ऋषभ अजत संभव अभिनंदन,
सुमत पदम जिणंदो ॥ १ ॥ भवि तुम०

श्री सुपारस चंदा प्रभु ध्यावो आणी भाव अमंदो ॥ २ ॥ भवि तुम०

सुवुध शीतल श्रेयांस वासपुज्ज दिपत जेम दिणंदो ॥ ३ ॥ भवि तुम०

विमल अनंत धर्मनाथ शांति जिन वरताया आनंदो ॥ ४ ॥ भवि तुम०

कुंथुं अरह मल्लि मुनिमुव्रतजी शिवरमणीना कंतो ॥ ५ ॥ भवि तुम०

नमि नेम पार्श्व महावीरजी तार्या जीव अनंतो ॥ ६ ॥ भवि तुम०

रेखराज प्रभु अरज करतहे मेटो भवदुख फंदो ॥ ७ ॥ भवि तुम०



३९ [राग सायंकालकी--सांमकल्याण]

माया मतवाली निज ज्ञान भुलावेरे ॥ टेर. ॥ माया०
जांके नसाये जगतके प्राणी, अंधाधंध होजावेरे. ॥ १ ॥ माया०
मांन महागिर चढके उपर, जगतको तुच्छ वतावेरे. ॥ २ ॥ माया०
कर्म चोट लगे जब उनके, तब हिरदे शुध आवेरे ॥ ३ ॥ माया०
रेखराज उनके मननांही । सोही धन्य कहावेरे ॥ ४ ॥ माया०

४० [राग सायंकालकी--आसावरी]

कैसें कर ए बहेरे अज्ञानी ॥ कैसें ॥ टेर ॥
आनन दीन वसे काननमें । कायर भाव रहेरे ॥ अ. ॥ १ ॥
कंचन वसन तजत एक तनको । मान पूंजी निवहेरे ॥ अ. ॥ २ ॥
न धरे रोष पोषको हूको । दोष न कोई कहेरे ॥ अ. ॥ ३ ॥
तृण ग्रासीकूं क्षत्रि न मारे । अहो लिस तृणही ग्रहेरे ॥ अ. ॥ ४ ॥
नयनोपम तो लहे जगदीश्वर । चर्मकूं योगी लहेरे ॥ अ. ॥ ५ ॥
कहा अपराध मारीये इनकूं । सो तो प्रथम कहेरे ॥ अ. ॥ ६ ॥
एक स्वाद के कारण मूरख । देवल एह दहेरे ॥ अ. ॥ ७ ॥
या बध तें लहे परम अधोगत, वेदवचन ए कहेरे ॥ अ. ॥ ८ ॥
शशि सूरज अरु जबलग पृथवी तव लगताही रहेरे ॥ अ. ॥ ९ ॥
रेखराज भवि हिंसक प्राणी । नरकके दुःख सहेरे ॥ अ. ॥ १० ॥

४१ [राग सायंकालकी--आसावरी]

पृथवी पति अरज हमारी । सुनहू महर विचारी ॥ पृ. ॥ टेर. ॥
दीनानाथ प्राणेक रक्षक, कहत हैं तुम संसारी ॥
जगत पिता होय प्राण गमावो, या तुम कैसी विचारी ॥ पृ. ॥ १ ॥

विन अपराध विना भये सनमुख । हनें न प्रतिज्ञा तिहारी ॥
कहा अपराध भागतही मोपर । कैसे करहु सवारी ॥पृ.॥२॥
विजया दशमी नाम है यांको, मंगल करे नर नारी ॥
मेरे प्रानका नास करत हो । या तुम कैसी धारी ॥पृ.॥३॥
सीता हरन अपराधतें रावन, हनकें लंक विदारी ॥
कहा अपराध मारत हो हमकूं । सो कहो दोप निकारी ॥पृ.॥४॥
मातही होय प्रानकी हरता । है शाकिन्न अवतारी ॥
सिंघ सवल तज ग्रहत निवल कूं । काहेकी शक्ति विचारी ॥पृ.॥५॥
मेरे चर्म वाजित्र वजे हे । नृप देव गृह वारी ॥
ताही गुनते राख अब मोकूं । मै हूं सरण तिहारी ॥पृ.॥६॥
पुत्री हमारी पयकी दाता, पुत्र भार वहे भारी ॥
मति मारहु जगदीस दुहाई । कहत हुं एह पुकारी ॥पृ.॥७॥
देखराज साहपुरामे । कहतहैं वारंवारी ॥
ईम निसुणीनें त्यागो प्राणी वध। नृप आदि सकल नर नारी॥पृ.॥८॥

४२ (राग-चलित)

सत गुरु सांचे सिपाई, मैं तो ऐसे देखे हो ॥ स. ॥ टेर. ॥
संवर कवच दृढ है उनके । विनय वगतर सुखदाई ॥
करुणा भाव कीये केसरीया, ध्यान टोपल हकाई ॥ स. ॥ १ ॥
समरस अमल गालवां पीके । दिल हुंसीयारी आई ॥
क्षमा खड्ग क्रियाकी कटारी ।सील सेल सुखदाई ॥ स. ॥ २ ॥
चारित्र चक्र धनुप धीरज को, वांन विवेक दिखाई ॥
संजम शक्ति शक्ति रूप है, मुद्गर मून्य दिखाई ॥ स. ॥ ३ ॥
गारख त्याग गदावर करमें । त्रिगुप्त त्रिशूल सुहाई ॥
गम गोफण अरु गुनके गोली । देत है रिपुकूं उडाई ॥ स. ॥ ४ ॥

ढलके ढाल या वीतरागता । कर शस्त्रनकी सजाई ॥
ज्ञान तुरंग चढे चारित्री । मन शुद्ध मालवणाई ॥ स. ॥ ५ ॥
दुर्मत दुर्ग मोह महा रिपुकूं । देतहै छिनमे ढाही ॥
अनंत गुणात्मक खुले खजाना, पहुंच गये सिवमांही ॥ स. ॥ ६ ॥
महावीर साधू जन ऐसे । लेत है भाव लडाई ॥
जगजीतकूं फजीतके कारन । मुनि जन मार मचाई ॥ स. ॥ ७ ॥
ताके पद पंकज परसेरो । मधुकर रहो लोभाइ ॥
देख राज कहे सहायपुरामें । नमूं पंचांग नमाई ॥ स. ॥ ८ ॥



४३ (राग–टोडी–सायंकालकी)

काची काया रे तेरा क्या गुन गावूं । महलवण्यांजामें रहण न पावूं
॥ का. ॥ टेर. ॥
चावत पान सुपारीके बीडा । उस मुख बैठण लागारे कीडा ॥का. ॥१॥
बांधत पाग दुमालारे वागा । उस सिखे ठण लागारे कागा ॥का.॥२॥
अतर फुलेल लगावत अंगा । ते नर जलताहै काठके संगा ॥का.॥३॥
तूंतो जाणे रे बंदा उंच उंचेरा । साढी तीन हाथमें घर है तेरा
॥ का. ॥ ४ ॥
कहे सत गुरुजी सुण मनमेरा । इकदिन जंगल होय गरि डेरा ॥का.॥५॥

४४ [राग–टोडी—सायंकालकी]

साहिबका नाम समर यांसे वहोत मजा है ॥ टेर ॥
वहिस्तका मुकाम जिहां सुखकी गिजा है ॥
दुनियांकी ऐस असर तपे, आखिर तो कजा है ॥ सा. ॥ १ ॥

तूं उसकूं याद कर । सबसें तो बजा है ॥
इस वखतमें गाफिल रह । फिर जमकी सजा है ॥ सा. ॥ २ ॥
सब ज्यांनकूं एक सार समज । उसकी मजा है ॥
मसकूल मगनर ख्वमें दोलतकी बजा है ॥ सा. ॥ ३ ॥

४५ [राग—टोडी—सायंकालकी]

बुधजन पक्षपात तज देखो सांचे देव कवन है इनमें ॥ बु.॥ टेर.
ब्रह्मा दंड कमंडल धारी, स्त्रयान बसे सुरनारि तनमें ॥
मृग छाला माला मोती युत, विषयासक्त निवास नलिनमें ॥ बु.॥ १॥
विष्णु चक्र धरे वाहन खग, कमला तिय सेवत परकिनमें ॥
क्रोधानल ज्वालामान कृति, जिनके होत प्रचंड समरमें ॥ बु.॥ २॥
शंभु खटवा वाहन नंदि कृति गिरजा भोग मगन निशदिन में,
हस्त कपाल व्याल भूषन युत, रुंडमाल तन भस्म मलिनमें ॥ बु.॥ ३॥
श्री अरहंत परम वैरागी, दोष न लेश प्रवेश न जिनमें,
भाग चंद इनका स्वरूप यह, कहो पूज्य पनो अब किनमें ॥ बु.॥ ४॥

४६ (राग—केदारो)

समजका घर दूर है बंदा ॥ सम. ॥ टेर ॥
रचे ग्रंथ कुपंथ चरचे, पढे आगम भूर,
हटे न क्रिसूं, नही तृसना भूरटे निरंजन, ॥ बंदा ॥ स. ॥ १ ॥
तजे अंबर रह दिगंबर, करें कष्ट कसूर
घोर घोर वसे वनमें, सहे परीसह सूर ॥ बंदा ॥ स. ॥ २ ॥
जीतव आस नही मरन त्रास न दृढ आसन पूर ॥
लाभ हान सम मित्र शत्रु, समही कंचन धूर ॥ बंदा ॥ स. ॥ ३ ॥

ऐसें भये नर गरज न सरें, लख्यो न निज पदनूर ॥
नैन हृदय खोलीये तो, रेख देख हजूर ॥ वंदा ॥ स. ॥ ४ ॥

४७ [राग—मारू]

जिउं जाणो जिउं थांरा नाथजी जिउं जाणो जिउं थांरा हां ॥
कामी क्रोधी अति अपराधी लोभी अवगुन गारां हां ॥ना.॥१॥
था विन दूजो दाय न आवे ध्यान सदा उर धारां हां ॥
कब मिल है निजनाथ कृपाकर, निस दिन बाट निहारां हां॥ना.॥२॥
ऊठत बेठत जागत सोवत, निमख न ध्यान विसारां हां;
एक आस विसवास नाथदा, दूजी दिस न चितारां हां ॥ना.॥३॥
तन मन मान कियो निछरावल, केवल नाम उचारां हां;
रखियो लाज सरन आयेकी, खाना जादा तिहारां हां ॥ना.॥४॥
असरन सरन चरन भव भंजन, वारमूवार संभारां हां;
जनम जनम आगे अरू अबही, नही कद्मा तें न्यारा हां ॥ना.॥५॥
कोऊ सिर जैपाले कोऊ हन है, यों उरमांज विचारां हां;
तारक ब्रह्म विना कुण तारे, नाथही नाथ पुकारां हां ॥ ना. ॥ ६ ॥
चात्रकज्यूं लिवनाथ जपें उर, विरह अगननमें जारां हां;
सीचत नाम सुधारसतापर, सास उसास उतारां हां ॥ ना. ॥ ७ ॥
करहो कृपा जान जिन अपनो नखन कीसीके सारां हां;
दास मान पद पंकज सेवे, में लग्या राजके लारां हां॥ ना. ॥ ८ ॥

४८ [राग—आसारी]

साधो अपना रूप जब देखा, करता कोन फुनि करनी
कैसी कोन मांगे गोलेखा ॥ सा. ॥ १ ॥

साधु संगति अरु गुरुकी कृपातें. मिट गई कुलकी रेखा ॥
आनंदघन प्रभु परचो पायो. उतर गयो दिल भेषा ॥ सा. ॥ २ ॥

४९. [राग—आसावरी]

ओधु राम राम जग गावे. विरला अलख लखावे ॥ ओ. ॥ टेर ॥
मतवाला तो मतमें माता. मठ वाला मठ राता.
जटा जटाधर पटा पटाधर, छता छताधर ताता ॥ ओ. ॥ १ ॥
आगम पढि आगमधर थाके. माया धारी छाके.
दुनीया दार दुनीसे लागे. दासा सब आसाके ॥ ओ. ॥ २ ॥
वहिरातम मूढा जग जेता, मायाके फंद रेता.
घट भीतर परमातम भावे. दुर्लभ प्राणी तेता ॥ ओ. ॥ ३ ॥
खग पद गगन मीन पद जलमें. जो खोजे सो बोरा;
चित पंकज खोजे सो चिन्हे. रमता आनंद भोरा ॥ ओ. ॥ ४ ॥

५० (राग—आसावरी)

आसा ओरनकी क्या कीजे, ज्ञान सुधारस पीजे ॥ टेर ॥
भटके द्वार द्वार लोकनके, कूकर आसा धारी ॥
आतम अनुभव रसके रसियां, उतरे कबु न खुमारी ॥ आ. ॥१॥
आसा दासीके जाये, ते जन जगके दासा ॥
आसा दासी करे जे नायक, लायक अनुभो पीयासा ॥ आ. ॥२॥
मनसा प्याला प्रेम मसाला, ब्रह्म अगनि परजाली ॥
तन भाटी उटाय पीये, कस जागे अनुभोलाली ॥ आ. ॥ ३ ॥
आगम पियाला पिये मतवाला, चीन्ही अध्यातम वासा ॥
आनंदघन चेतन व्हे, खेले देखे लोक तमासा ॥ आ. ॥ ४ ॥

५१ (राग-आसावरी)

ओधूं नाम हमारा राखे, सोही परम रस चाखे ॥ ओ. ॥ टेर ॥

नही हम पुरखा, नही हम नारी, वरण न भांत हमारी ॥
जाति न भाति मसाटक नाही, नही हलका नही भारी ॥ ओ. ॥१॥

नही हम ताते नही हम सीरे, नही दीरघ नही छोटा ॥
नही हम भगनी नही हम भाई, नही हम बाप ने धोटा ॥ ओ. ॥२॥

नही हम मनसा नही हम सप्टा, नही हम तरनकी धरणी ॥
नही हम भेख भेष धर नांही, नही हम करता करणी ॥ ओ. ॥३॥

नही हम दरसन नही हम परसन, रसन गंध कछु नाही ॥
आनंदघन चेतनमय मूरति, सेवक जन बलि जांई ॥ ओ. ॥४॥

५२ (राग-आसावरी)

ओधूं क्या मांगू गुनहीना, वे गुन गगन प्रवीना ॥
गाय न जानूं बजाय न जानूं, न जानूं सुरदेवा ॥
रींज न जानु रींझाय न जानूं, ना जानूं पद सेवा ॥ ओ. ॥ १ ॥

वेद न जानूं किताब न जानूं, जानुं न लक्षण छंदा ॥
करन वाद विवाद न जानूं, न जानूं कवि फंदा ॥ ओ. ॥ २ ॥

जाप न जानूं जबाब न जानूं, न जानूं कवि वाता ॥
भाव न जानूं भक्ति न जानूं, जानूं न सीरा ताता ॥ ओ. ॥ ३ ॥

ग्यान न जानूं विज्ञान न जानूं, न जानूं भज नांमा ॥
आनंदघन प्रभुके घर द्वारे, रटन करूं गुण धामा ॥ ओ. ॥ ४ ॥

---

५३ (राग-आसावरी)

अब हम अमर भये न मरेंगे या कारन मिथ्यात दीयो तज क्यूं
कर देह धरेंगे ॥अब॥ १ ॥
मर्यो अनंत काल तें प्रानी सो हम काल हरेंगे ॥अब॥ २ ॥
देह विनासी हूं अविनासी अपनी गति पकरेंगे ॥अब॥ ३ ॥
नासी जासी हम थिरवासी चोखे व्हे के निखरेंगे ॥अब॥ ४ ॥
मर्यो अनंत वार विनासी विन समजो अब सुख दुख विसरेंगे ॥अब॥ ५ ॥
आनंदघन निपट निकट अक्षर दे नही समरे सो मरेंगे ॥अब॥ ६ ॥



५४ [राग-नाथ कैसे गजको फंद छुडायो]

नाथ तेरी माया जाल बिछाया जामें सब जग फिरत भुलाया ॥टेर॥
कर निवास नव मास गर्भमें फिर भूतलमें आया ॥
खानपान विषया रस भोगन मात पिता सिखलाया ॥ नाथ. ॥१॥
घरमें सुंदर नारि मनोहर देख देख ललचाया ॥
सुन सुन मीठी बातें सुतनकी मोह पाशमें फसाया ॥ नाथ. ॥२॥
गृह काजनमें निसदिन फिरते सबही जनम बिताया ॥
आशा प्रबल भई मन भीतर निर्बल हो गई काया ॥ नाथ. ॥३॥
पाप पुण्य संचय कर पुन पुन स्वर्ग नरक भटकाया ॥
ब्रह्मानंद कृपा बिन तुमरी मुक्ति न हो जग राया ॥ नाथ. ॥४॥

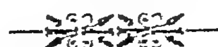


५५ (राग—पूर्ववत्)

अये प्रभु सुनिये अरज अब म्हारी में तो आया हूं सरण तुमारी. ॥टेर॥
बाला पण सब खेल गमायो तरूण कियो बस नारी ॥
गृह कुटुंबके पोषण कारण पर घर होयो भिखारी ॥ अये. ॥ १ ॥
मैं जानत ये बांधव मेरे स्वारथकी सब यारी ॥
धनसे हीन भयो में जबही सबको लाग्यो खारी ॥ अये. ॥ २ ॥
आयाथा जिस काम करणको उसकी याद विसारी॥
ओरही माया जालमें फस्या निकलनकी नही वारी ॥ अये. ॥ ३ ॥
भवसागरमें डूबत हूं अब लिजिये बेगउबारी ॥
ब्रह्मानंद करो करुणा प्रभु तुम विनको हितकारी ॥ अये. ॥ ४ ॥

५६ (राग—पूर्ववत्)

नाथ तेरे चरणनकी में दासी मेरी काटो जनमकेरी फांसी ॥ टेर. ॥
ना जाऊं मथुरा गोकूल न जाऊं ना जाऊं में कासी ॥
मोहे भरोसो एक तुमारो दीन बंधु अविनाशी ॥ नाथ. ॥ १ ॥
कोई वरत कोई नेम करत है कोई रहे वनवासी ॥
मै चरणनको ध्यान लगावूं सबसे होय उदासी ॥ नाथ. ॥ २ ॥
नहि विद्या बल रूप न मेरे नहि संचय धन राशी ॥
शरणांगत मोहे जान दया निधी राखीये चरणन पासी ॥ नाथ.॥३॥
नहि मे राज पाट कछु मांगु नहि सुख भोग विलासी ॥
ब्रह्मानंद शरणमें तुमरी केवल दरश पियासी ॥ नाथ. ॥ ४ ॥



५७ (राग—बनजारा)

जगदीश जगतपति प्यारा कर भव दुख नाश हमारा ॥ टेर. ॥
तुम सब जीवनके स्वामी घट घटके अंतरयामीजी ॥
नहि जान लोक गँवारा ॥ जग. ॥ १ ॥
भूली जल अंबर भारी सब रचना विश्व कर्मारीजी ॥
अचरज यह खेल पसारा ॥ जग. ॥ २ ॥
इन्द्रादिक मुनि देवा नित करत तुमारी सेवाजी ॥
सबका तुम पालनहारा ॥ जग. ॥ ३ ॥
करुणानिधि दीन दयाला शरणागत जन प्रतिपालाजी ॥
ब्रह्मानंद है दास तुमारा ॥ जग. ॥ ४ ॥

---

५८ (राग—बनजारा)

जगदीसमें शरण तुमारी प्रभु सुनिये विनति हमारी ॥ टेर. ॥
यह पांच विषयकी धारा सब बह्या जात संसाराजी ॥
करुणाकर पार उतारी ॥ जग. ॥ १ ॥
पंछी जिम जाल अधीना तिम जिव कर्म वस कीनाजी ॥
मोहे लिजिये वेग उबारी ॥ जग. ॥ २ ॥
तन धन सुत बांधव नारी सब झूठ जगतकी यारीजी ॥
तुमबिन नहि को हितकारी ॥ जग. ॥ ३ ॥
यह प्रबल कर्मकी माया जांमे जीव फिरे भरमायाजी ॥
ब्रह्मानंद करो प्रभु न्यारी ॥ जग. ॥ ४ ॥

५९ (राग—बनजारा)

सुन सत्य वचन नर मेरा मिटे जनम मरण दुख तेरा ॥ टेर. ॥
कर परमेश्वरसे प्रीति नहि हेतनकी परतीतीजी ॥
पल छिनमें कूंच होय डेरा ॥ सुन. ॥ १ ॥
मनसे तज विषय विकारा करले संत संगत विचाराजी ॥
विन ज्ञान मिटे न अंधेरा ॥ सुन. ॥ २ ॥
नित बैठ एकांत सदनमें धर ध्यान ईश्वरका मनमेजी ॥
मत दूर जानहे नेरा ॥ सुन. ॥ ३ ॥
सब जग मिथ्या कर जानो ब्रह्मानंद स्वरूप पहचानोजी ॥
छुटे लख चौरासी फेरा ॥ सुन. ॥ ४ ॥



६० (राग—बनजारा)

सुननाथ अरज अब मेरी में शरण पडा प्रभु तेरीजी ॥ टेर. ॥
तुम मानुष तन मोहे दीना नहि भजन तुमारो कीनाजी ॥
विषयोंने लई मति घेरी ॥ सुन. ॥ १ ॥
सुत दारादिक परिवारा सब स्वारथका संसाराजी ॥
जिन हेत पापकीये ढेरी ॥ सुन. ॥ २ ॥
मायामे जीव भुलाना नहि रूप तुमारो जानाजी ॥
पडा जन्म मरणकी फेरी ॥ सुन. ॥ ३ ॥
भवसागर नीर अपारा कर कृपा करो प्रभु पाराजी ॥
ब्रह्मानंद करो नहि देरी ॥ सुन. ॥ ४ ॥



६१ [राग—गजल ताल दादरा]

विना प्रभुके भजन मुफत जनम गमाया, दुनीयाकी मौजमें फिर सदाही भुलाया ॥ टेर. ॥
पश्वारवार देह मनुजका न मिलेगा, डालींसेंटूटागुलनगुल्स्तामे खिलेगा ॥
दिन च्यार पांचके लिये क्या ढंढग जमाया ॥ विना प्रभुके० ॥ १ ॥
जिनकोतुं मानताहें मेरे पियारें, वोछोडकर तुझे जंगलमे घरको सिधारे॥
परलोकमे न तेरे कोइ होत सहाया विना प्रभुके० ॥ ॥२॥
मोहकीमदिराको पीकेमरण भूलया, घृसचृस विषया रसकुं फिरत फूलया ।
जबतक नचूहे को बील्लीनें मुखमें ऊठाया ॥ विना प्रभुके० ॥३॥
कहता हे ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद लीजीये, सदा प्रभुको भजन दिल ओर जांनसें कीजीये० करनेसें फिर जिस्के कोई लोटके न आया ॥ विना प्रभुके० ॥ ४ ॥

६२ (राग—गजल ताल दादरा)

अये दीन बंधु आज मेरी अरज सुन जरी, दया निधांन जांन आंन शरणयेपडी ॥ टेर ॥
काम क्रोध लोभ मोह चोर धन हरें, तेरे विना दयाल कौन पालना करें॥
वडे हें जोरदार हार खाय में डरी, अये दीन बंधु० ॥ १ ॥
अज्ञानका पडदा मेरे दिलसे उठाईये, विषयोकें जालसे प्रभु मुजको बचाईये
भवसिंधुको तिरासोई जिसपें दया करी ॥ अये दीन बंधु० ॥ २ ॥
जन्म मरणाका रोग मेरा नास कीजीये, चरण कमलकी भक्ति जान दास दीजीयें, मिटेगेंदुर वसवींजवी ॥
गुणहीन जानकर मुझे दिलसे न टारीये, जनम जन्मका दास जानकर संभारीये ॥
ब्रह्मानंद तेरे नामकी मे टेकें मन धरी अये दीन बंधु० ॥ ३ ॥

६३ [राग---गजल ताल दादरा]

मांन मांन मांन कह्या मानते मेरा, जांन जांन जांनरूप जानले तेरा॥टेर॥
जाने विना स्वरूपके मिटे न गम कबी, कहता हे शास्त्र वारवार वात यह
सबी, हुंसीयार हो निहार यार डारमे मेरा । मांन मांन० ॥ १ ॥
जाता हे देखनेसे जिसे काशी दुवारका, मुकामहैं वदनमें तेरे उसहियारका॥
लेकिन विना विचारके किसीने नहीं हेरा मांन मांन० ॥ २ ॥
जो नैनकाभी नैन वैनका भी वैन हैं जिसके विना शरीरमें न पलक चैनहैं॥
पिछानले व खूबसो स्वरूप हे तेरा मांन मांन० ॥ ३ ॥
कहताहे ब्रह्मानद ब्रह्मानंद तुं सही, वात यह पुरांण वेद ग्रंथमें कही॥
विचार देख मिटे जन्म मरणका फेरा मांनमांन० ॥ ४ ॥



६४ [राग—गजल ताल दादरा]

जाग जागजागमोह नींदसे जरा। भाग भाग भाग भोग जालसे परा॥टेर॥
विषयोंके जालमें फसा छुटे नही कबी, जनम जनममें विषयसंग होत हेसबी
विना वैरागके न भवसिंधु कोन तिरा जाग जाग०॥ १ ॥
वर्ष गया मास गया दिन गई घडी। दुनीयाके कार वारमें खबर नही पडी॥
नजदीक काल आ गया मनमे नहि डरा ॥ जाग जाग० ॥ २ ॥
संगतसे देहके स्वरूपको विसारीया। जगतको सत्यमानके मनको पसारिया
दिन रात करे सोच रागद्वेषसे भरा ॥ जाग जाग० ॥ ३ ॥
अपने स्वरूपको विचार देखले सही। ईश्वर तेरे पास वो तुझसे जुदा नही॥
ब्रह्मानंद येहि सुनके पंचम स्वरा ॥ जाग जाग० ॥ ४ ॥



६५ [राग—गजल ताल दादरा]

गाफिल तुं जाग देख क्या तेरा स्वरूप है। किस वास्तें पडा जन्म मरण के रूप है ॥ टेर ॥
यह देह गेह नाशवान है नही तेरा, वृथाभिमान जालमें फिरे कहां वेरा ॥
तूं तो विनाशसें परे सदा अनूप है ॥ गा. ॥ १ ॥
भेद दृष्टिकी न जवी दीन हो गया, स्वभाव अपनेसे आप हीन हो गया ॥
विचार देख एक तूं भूपनका भूप है ॥ गा. ॥ २ ॥
तेरे प्रकाशसें शरीर चित्त चेतता, तूं देह तीन दृश्यकूं सदा हे देखता ॥
द्रष्टा नहि होता है कवी दृश्य रूप है ॥ गा. ॥ ३ ॥
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद पाईये, इस बातको विचार सदा दिलमे लाइये॥
तूं देख जुदा करके जैसा छाय धूप है ॥ गा. ॥ ४ ॥

६६ [राग-गजल ताल दादरा]

अपनेको आप भूलके हैरान हो गया, मायाके जालमे फसा विरान हो गया ॥ टेर ॥
जड देहको अपना स्परूप मान मन लिया, दिन रात खानपान कामकाज दिल दिया ॥ पानीमे दूध मिलके एक जान हो गया ॥ अ. ॥ १ ॥
विपयोंको देख देखके लालचमे आ रहा, दीपकमे ज्यो पतंग जायके समा रहा ॥ विना विचारके सदा नादान हो गया ॥ अप. ॥ २ ॥
कर पुण्य पाप स्वर्ग नरक भोगता फिरे तृष्णाकि डोरसें बंधा सदा जनम धरे ॥ पीकरके मोहकि सूरा वेभान हो गया ॥ अप. ॥ ३ ॥
सतसंगमे जाकर दिलमें विचारले वदनमे अपने आप रूपको निहार ले॥
ब्रम्हानंद मिले मोक्ष जवी ज्ञान हो गया ॥ अप. ॥ ४ ॥



६७ [राग-गजल ताल दादरा]

गफलितसे जाग देख क्या लूतफकि बात है नजदीक यार हे
मगर नजर न आत है ॥ टेर ॥
दुईकी गरदसें चश्मकी रोशनी गई महबूबके दीदारकी ताकत ना रही॥
इस वासते दुनियांके फंदमे फसात है ॥ गफ. ॥ १ ॥
विसियार तलब है अगर तुझे दिदारकी मुरशदके सुखनसे चलो
गली विचारकी ॥ जिससें पलकमें फंद सबी टूट जात है ॥ गफ. ॥ २ ॥
जिसके जलूससे तेरा रोशन वजूद है दुनियांकि सबी खूबियोंकाभी
जो खूब है ॥ वही हे तेरा यार पकर लोक गात है ॥ गफ. ॥ ३ ॥
कहता है ब्रह्मानंद नही तेरेसे हे जुदा निहार ले वदनमे तेरे हे
सही खुदा ॥ जाने न उसके रूपको पावे न जात है ॥ गफ. ॥ ४ ॥

६८ (राग--गजल रेखता]

अगर हे मोक्षकी वांछा छोड दुनियांकी यारी है ॥ टेर ॥
कोई तेरा न तूं किसका सबी मुतलबका हे साथी ॥
फसा क्यों जाल मायाके काल सिरपर सवारी है ॥ अ. ॥ १ ॥
बेठ संगतमे संतनकी रुप अपनेको पहचानो ॥
तजो मद लोभ अहंकारा करो भक्ति पियारी है ॥ अ. ॥ २ ॥
बसो एकांतमे जाकर धरो नित ध्यान ईश्वरका ॥
रोक मनकी चपलताई देख घटमें उजारी है ॥ अ. ॥ ३ ॥
जलाकर कर्मकी ढेरी तोड मायाके बंधनको ॥
ब्रह्मानंदमे मिलो जाकर सदा जो निर्विकारी है ॥ अ. ॥ ४ ॥

६९ राग–गजल रेखता ॥

सुनो दिलको लगा प्यारे धुनी अनहदकी होती है ॥ टेर ॥
वने वंशी वावीणाहै शंख घडियाल मिरदंगा ॥
गरज वादलकि है भारी कर्मकी मैल धोती है ॥ सुनो. ॥ १ ॥
उठे धुनके सहारेसे वदन सारेमे गुंजारा ॥
अमृतकी धार तालूसें सदा मुखमे निचोती है ॥ सुनो. ॥ २ ॥
लगे मन नादके अंदर भुले तनकी खवर सारी ॥
हिरेदेके वीचमें सुंदर प्रगट होदीय जोती है ॥ सुनो. ॥ ३ ॥
खुले जव दृष्टिकें पडदे नजर आवे भुवन सारे ॥
वो ब्रह्मानंदकी लेहरी प्रेमरसमेभी गोती है ॥ सुनो. ॥ ४ ॥

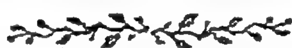


७० राग–गजल रेखता ॥

विना प्रभु नामके सुमरे गति नही होय गीतेरी ॥ टेर ॥
लगाले भस्म इस्तनमे करो तप जाके वा वनमें
समजले खूव यह मनमें मिटे नही जन्मकी फेरी ॥ विना. ॥ १ ॥
फिरो मथुरा वा काशी हे सदा तीरथ निवासी हे ॥
रहो सवसे उदासी हे छुटे नहि आस मन केरी ॥ विना. ॥ २ ॥
करो व्रत नेम अरु दाना फिरो जंगलमे मस्ताना ॥
जो प्रभुका रुप नही जाना जले नहि कर्मकी ढेरी ॥ विना. ॥ ३ ॥
जपा प्रभु नाम सुखकारी झूट दुनियाकि हे यारी ॥
ब्रह्मानंद काल वल कारी करो मत भूल कर देरी ॥ विना. ॥ ४ ॥

७१ रागगजल रेखता ॥

करो प्रभुका भजन प्यारे, ऊमर सब वीत जातीहै ॥ टेर ॥
पूर्व शुभ कर्म कर आया, मानुष तन धरणमें पाया ॥
फिरें विषयोंमें भरमाया, मौत नही याद आती है ॥ करो. ॥ १ ॥
बालापन खेलमें खोया, जोबनमे काम वश होया ॥
बूढापें खाटपर सोया । आशा मनको सताती हैं ॥ करो. ॥ २ ॥
कुटुंब परिवार सुत दारा, स्वपन सम देख जग सारा ॥
माया ने जाल विस्तारा, नहि यह संग जाती है ॥ करो. ॥ ३ ॥
जो प्रभु चरण चित लावें, सो भवसागरको तर जावे ॥
ब्रह्मानंद मोक्ष पद पावे, शास्त्र वाणी सुनाती है ॥ करो. ॥ ४ ॥



७२ राग—गजल ॥ बोलो चाहे न बोलो दिल जांनसे फिदाहूं ॥

प्रभुको समर पियारे, ऊमरां विहा रही हैं ॥
दिन दिन घडी घडीमें छिन छिनमे जा रही हैं ॥ टेर ॥
दीपकीकी जोत जावे, नदीयोंका नीर धावे ॥
जाती नजर न आवे, चंचल समा रही हैं ॥ प्रभुको. ॥ १ ॥
पिछली भली कमाई, मानुषकी दे हवाई ॥
प्रभु हेत ना लगाई, विरथा गमा रही हैं ॥ प्रभुको. ॥ २ ॥
घर माल मित्र नारी, दुनीयाकी मौज भारी ॥
होवे पलकमें न्यारी, दिलको फसा रही है ॥ प्रभुको. ॥ ३ ॥
क्या नींदमे पडा हैं, सिरकाल आ खडा है ॥
ब्रह्मानंद दिन चढा है, रजनी बीता रही हैं ॥ प्रभुको. ॥ ४ ॥

७३ [राग--गजल पूर्ववत्]

क्या भूलीया दिवानें दूनीयामें सार नांही, दिनच्यारका तमासा आखिर करार नांही ॥ टेर ॥ क्या भूलीया०

राजा वजीर रांनी. पंडित सुरवीर ज्ञानी, सब हो गये है फानी, जिनका सुमार नांही ॥ क्या भूलीया० ॥ १ ॥

सूरज वा चांद तारे, सागर पहाड भारे, होवेगा नाश सारें, तनका आधार नांही ॥ क्या भूलीया० ॥ २ ॥

दुनीयासे हो न्यारा, सतसंग कर पियारा, सुन ज्ञानका विचारा, नर जन्म हार नांही ॥ क्या भूलीया० ॥ ३ ॥

भवसिंधु नीरभारी, प्रभु नांम पार उतारी, ब्रह्मानंद मोक्षकारी, दिलसें विसार नांही ॥ क्या भूलीया० ॥ ४ ॥

७४ [राग गजल--पूर्ववत्]

गाफिल तुं सोच मनमें, प्रभु नाम क्यो विसारा, सुनता नही वजेहे, सिर कालकान गारा ॥ टेर ॥ गाफिल०

जोवन भरी हे नारी, दिलको लगे पियारी, जब मौतकी तियारी, तुझसे करे किनारा ॥ गाफिल० ॥ १ ॥

घरमाल वा खजाना, संगमे कोई न जाना, क्यों देखके लुभाना, सब झूट है पसारा ॥ गाफिल० ॥ २ ॥

सुंदर रहें देह तेरी, होवे भस्मकी ढेरी, पलकी लगे न देरी, विरथा करे विचारा ॥ गाफिल० ॥ ३ ॥

मायाके जाल मांही, मूर्ख रहा फसाई, ब्रह्मानंद मोक्ष पाई, प्रभु चरणकोसहारा ॥ गाफिल० ॥ ४ ॥

७५ (राग गजल–पूर्ववत.)

ईश्वर में दास तेरो, मुझको नहि विसारो, भवसिंधुमें पडाहुं,
प्रभु वेगे पार तारो ॥ टेर ॥ ईश्वरमें
जगकी अपार माया जिन खेल यह रचाया, मनको मेरे भुलाया,
नही खयाल है तुमारो ॥ ईश्वरमें० ॥ १ ॥
मद लोभ मोह यारी, दुस्मन बडे हैं भारी, करते हैं मार मारी,
प्रभु दीजीये सहारो ॥ ईश्वरमें० ॥ २ ॥
अंजलीका नीर जावें, ऊमरा सवि विहावें, फिर के गई न आवे,
पलका नही आधारो ॥ ईश्वरमें० ॥ ३ ॥
सुत मात तात चेंरा, कोई नहि है मेरा, ब्रह्मानंद बाल तेरा,
करके दया निहारो ॥ ईश्वरमें० ॥ ४ ॥

७६ राग--खमाच ताल ३ ॥

चंचल मन निशदिन भटकत हैं, एजी भटकत है भटाकावत है ॥टेर॥
जिम मर्कट तरु उपर चढकर, डार डार पर लटकत है ॥ चंचल.॥ १ ॥
रुकत जतनसें क्षण विषयनतैं, फिरति नहीमें अटकत हैं ॥ चंचल.॥ २ ॥
काचके हेत लोभकर मूर्ख, चिन्तामणिको पटकत हैं ॥ चंचल.॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद समीप छोडकर, तुच्छ विषय रस गटकत है ॥ चंचल.॥ ४ ॥

७७ राग--खमाच ताल ३ ॥

अनहद धुनि सिरप वाज रही, एजी बाज रही अरु गाज रही ॥ टेर ॥
बाजत शंख मृदंग वंसरी, घन गर्जन अति छाय रही ॥ अनहद. ॥ १ ॥
सुनकर मरत भया मन मेरा, चंचलता सब भाज गई ॥ अनहद. ॥ २ ॥
तनके धर्म कर्म सब छूटे, लोक वदेकी लाज गई ॥ अनहद. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद गिरा गम नांही, शुन्य समाधि विराज रही ॥ अनहद. ॥ ४ ॥

७८ राग--खमाच ताल ३ ॥

मेरी सुरत गगनमें जाय रही, पयी जाय रही अरु धाय रही ॥ टेर॥ मेरी.
त्रिकुटी महलमें चढकर देखा, जगमग जोत जगाय रही ॥ मेरी. ॥ १ ॥
अमृत वरसे, वादल गर्जे, विजली चमक मन भाय रही ॥ मेरी. ॥ २ ॥
दशवे महलमें सेज पियाकी, चुनचुन फूल विछाय रही ॥ मेरी. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद देह सुध वीसरी, सहज स्वरुप समाय रही ॥ मेरी. ॥ ४ ॥

७९ राग--जिला ठुमरी, चाल, गोविंद भजनकी येही विरिया० ॥

दे दर्शन मोहे आज सावरीया, विनदर्श नमन धीर न धरियाह ॥ टेर॥
सांवरी सुरत मेरे दिलमांद समाई, खांन पांन तन सुध विसराई ॥
कलन पडत निशदिन पल घडीया ॥ दे दर्शन० ॥ १ ॥
विन चातक वर्षा विन होई, नेमके मिलन विन ममगति सोई ॥
तडप रही विन नीर मछरिया ॥ दे दर्शन० ॥ २ ॥
मेरे अवगुण नाथ विसारो करकृपा मम धांम पधारो ॥
जनम जनमकी मे दास तुमरीयां ॥ दे दर्शन० ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद दर्शकी पियासी, करुणा करो जांन निज दासी ॥
वारवार येहि मांगे हमरीया ॥ दे दर्शन० ॥ ४ ॥

८० राग जिला ठुमरी ॥

अव तो तजो नर रति विषयनकी, करले फिकर परलोक गमनकी ॥ टेर॥
वालपणा जिम गई जवानी, सुंदर काया भई पुराणी ॥
तदपि मिटे नही लालच मनकी ॥ अव तो तजो० ॥ १ ॥

जरा दूत लेव यमराज पठाया, रोग फोज संग लेकर आया ॥
मूर्ख आश करे क्या तनकी ॥ अब तो तजो. ॥ २ ॥
स्वारथ हेत करे सब प्रीती, सकल जगतकी यह हे रीती ॥
छोड ममत धन धांमसु तनकी ॥ अब तो तजो. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद वचन सुण लीजे निशदिन प्रभु चरण न चित दीजे ॥
पास कटे तेरी जन्म मरणकी ॥ अब तो तजो ॥ ४ ॥



८१ गजल--चाल--जोके हम तुमसे करार था ॥

जोके गर्भका ईकरार था तुमे याद होके न याद हो ॥ टेर ॥
उलटे वदनसें वो लटकना, अरु लख चौरासी भटकना ॥
फिर सोचकर शिर पटकना, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके गर्भ० ॥ १ ॥
पिछले जन्मका वो संभारना, सब कर्मका वो विचारना ॥
फिरईसईस पुकारना, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके गर्भ० ॥ २ ॥
विषयेंसें दिल को हटावना, प्रभुके चरणमें लगावना ॥
किसी जीवको न सतावना, तुमेयाद हो के न याद हो ॥ जोके गर्भ० ॥ ३ ॥
उस वातका विसरावना, दुनीयाकी मौज उडावना ॥
ब्रह्मानंद फिर दुख पावना, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके गर्भ० ॥ ४ ॥

८२ गजल ताल ३--चाल पूर्ववत् ॥

जोके ईसका उपकार था, तुमे याद होके न याद हो ॥ टेर ॥
करी गर्भमें तेरी पालना, फिर सुखसे वाहिर निकालना ॥
कुचीयोमे दूधका डालना, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके ईसका० ॥ १ ॥
सूरज वा चांद सितार है, जल पवन भोग अपार है ॥
तेरे वासते यह वहार है, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके ईसका ॥ २ ॥

नर जन्म यह वहू कामका, तुजको दियाहै वे दामका ॥
अब भजन उसके नामका, तुमे याद हो के न याद हो ।।जोके ईसका. ॥ ३ ॥
प्रभुके भजनविन वेवफा, तुजको मिले न कबी नफा ॥
ब्रह्मानंदका कहना सफा, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके ईसका. ॥४॥

८३ गजल ताल ३--चाल पूर्ववत् ॥

जोके मोतकादि न आयगा, तुमे याद हो के न याद हो ॥ टेर. ॥
दुनीयामे दिलको मिला दिया, प्रभुके भजनको भुला दिया ।
मनुषा जनमको रुला दिया, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके.॥१॥
जब रोग आय सतायगा, खटियामे तुजको लिटायगा ॥
कोईकार काम न आयगा, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके.॥२॥
सुतमित वांधव नारीया, धन माल महाल अटारीया ॥
तेरी छूट जायगी सारीया, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके. ॥३॥
यमदूत लेकर जायगा, तुझे नर विच गीरायगा ॥
ब्रह्मानंद फिर पछतायगा, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके. ॥ ४॥

८४ राग--बतादो सखी कौन गली गये शाम. ॥

भजन विन विरथा जन्म गयो ॥ टेर ॥
वालपणो सव खेल गमायो, यौवन काम रह्यो ॥ भजन. ॥ १ ॥
बूढे रोगग्रसी सव काया, परवश आप भयो ॥ भजन. ॥ २ ॥
जप तप सुक्रत कछु न कीनो, नही प्रभु नांम लह्यो ॥ भजन. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद विना प्रभु समरण, जाकर नरक पर्यो ॥ भजन. ॥ ४ ॥

८५ राग–पूर्ववत् ॥

भजन विन भव जल कोन तरे ॥ टेर ॥
काम क्रोध मद ग्राह वसतहै मारगमे पकरे ॥ भजन. ॥ १ ॥
कुच कंचन दोऊ घेर पडत है सब जग डूब मरे ॥ भजन. ॥ २ ॥
दान पुण्य तप निर्मल नौका अधविच टूट पडे ॥ भजन. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद करो प्रभु सुमरन, सब दुख दूर टरे ॥ भजन. ॥ ४ ॥



८६ राग–पूर्ववत् ॥

मुसाफर क्या सोवे अव जाग ॥ टेर ॥
इन विर छनकी थिर नहि छाया, देख भुलाया वाग ॥ मुसा. ॥ १ ॥
इस सरायमे रहना नाही, काहे करत हे राग ॥ मुसा. ॥ २ ॥
यह सब चोर लगे संग तेरे, इनसे वच कर भाग ॥ मुसा. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद देर मत कीजे, अपने मारग लाग ॥ मुसा. ॥ ४ ॥



८७ राग–पूर्ववत्. ॥

सुन मेरे मना अव तो समज कर चाल ॥ टेर ॥
वाल्य गयो योवन पुनि आयो, श्वेत भये सव वाल ॥ सुन. ॥ १ ॥
जो न तजे तूं इन विषयनको, आन छुडासी काल ॥ सुन. ॥ २ ॥
जाना दूर मुसाफर तुजको, पास नही कछु माल ॥ सुन. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद मिलनके कारण, छोड जगत जंजाल ॥ सुन. ॥ ४ ॥



८८ राग-पूर्वधन ॥

करोरे नर प्रभु चरनमें हेत ॥ टेर ॥
बालपणो सब खेल गमायो, यौवन तरुणी तन लपटायो ॥
बाल भये अब सेत ॥ करोरे. ॥ १ ॥
जिनके कारण पाप कमावे, संग तेरे कोई नहि जावे ॥
मरकर होवत प्रेत ॥ करोरे. ॥ २ ॥
श्रवण सुने नहि नैन निहारे, मात पिता परलोक सिधारे ॥
अबहु तो समझ चेत ॥ करोरे. ॥ ३ ॥
जो जन प्रभुसे हेत लगावे, सो ब्रह्मानंद निश्चय पावे ॥
जन्म सुफल कर लेत ॥ करोरे. ॥ ४ ॥

---

८९ राग-मंगल प्रभाती ॥

घटहिमें उजियारा साधो, घटहिमें उजियारारे ॥ टेर ॥
पास बसे अरु नजर न आवे, बाहिर फिरत गंवारारे ॥
बिनसत गुरुके भेद न जाने, कोटि जतन कर हारारे ॥ घट. ॥ १ ॥
आसन पद्म बांधकर बेठो, उलट नैनका तारारे ॥
त्रिकुटी महलमें ध्यान लगावो, देखो खेल अपरारे ॥ घट. ॥ २ ॥
नहि सूरज नहि चांद चांदनी, नही बिजली चमकारारे ॥
जगमग जोत जगे निस बासर, पार ब्रम बिस्तारारे ॥ घट. ॥ ३ ॥
जो जोगी जन दर्शन पावे, उघडे मोक्ष दुवारारे ॥
ब्रह्मानंद सुनोरे अवधूं, वोहे देश हमारारे ॥ घट. ॥ ४ ॥

---

९० राग--मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

घटहीमे अविनासी साधो ॥ घट. ॥ टेर ॥
काहे रे नर मथुरा जावे काहे जावे काशीरे ॥
तेरे तनमे बसे निरंजन जो वैकुंठ* विलासीरे ॥ घट. ॥ १ ॥
नहि पताल नहि स्वर्गलोकमें, नही सागर जल राशीरे ॥
जो जन सुमरन करत निरंतर, सदा रहे तिन पासी ॥ घट. ॥ २ ॥
जो तूं उस्को देखा चाहे, सबसे होय उदासीरे ॥
बैठ एकांत ध्यान नित कीजे, होय जोत परकासीरे ॥ घट. ॥ ३ ॥
हिरदेमे सब दर्शन होवे, सकल मोह तम नाशीरे ॥
ब्रह्मानंद मोक्ष पद पावे, कटे जनमकी फासीरे ॥ घट. ॥ ४ ॥



९१ राग--मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

जोग जुगत हम पाई साधो ॥ जोग. ॥ टेर ॥
मूल द्वारमे बंध लगायो, उलटी पवन चलाईरे ॥
षट चक्रका मारग सोधा, नागन जाइ उठाईरे ॥ जोग. ॥ १ ॥
नाभिसे पश्चिमके मारग, मेरु डंढ चढाईरे ॥
ग्रंथी खोल गगनपर चढीया, दसवे द्वार समाईरे ॥ जोग. ॥ २ ॥
भवर गुफामें आश न माच्यो, काया सुध विसराईरे ॥
चंदा विन सूरज निशदिन, जगमग जोत जगाईरे ॥ जोग. ॥ ३ ॥
परमातमको मेल भयो जब, मुंनमे सेज विछाईरे ॥
ब्रह्मानंद सत गुरु कृपासे आवागमन मिटाईरे ॥ जोग. ॥ ४ ॥

---

* मोक्ष.

९२ राग–मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

अनहदकी धुन प्यारी साधो ॥ अन. ॥ टेर ॥
आसन पद्म लगाकर करसें, मुंद कानकी बारीरे ॥
जीनी धुनमे सुरत लगावो, होत नाद झनकारीरे ॥ अनहद० ॥ १ ॥
पहले पहले रिलमिल बाजे, पीछे न्यारी न्यारीरे ॥
घंटा शंख बंसरी वीणा, ताल मृदंग नगारीरे ॥ अनहद० ॥ २ ॥
दिन दिन सुनत नाद जब बिकसे, काया कंपत सारीरे ॥
अमृत बुंद झरे मुखमांही जोगीजन सुखकारीरे ॥ अनहद० ॥ ३ ॥
तनकी सब सुध भूल जात है, घटमें होय उजारीरे ॥
ब्रह्मानंद लीन मन होवे देखी बात हमारीरे ॥ अनहद० ॥ ४ ॥



९३ राग–मंगल ताल प्रभाती ॥

सोहं शब्द विचारो साधो ॥ सोहं० ॥ टेर ॥
माला करसें फिरत नही है, जीभ न वरण उचारोरे ॥
अजपा जाप होत घटमांही, तांकी ओर निहारोरे ॥ सोहं० ॥ १ ॥
हं अक्षरसे स्वास उठावो, सोसे जाय बिठारोरे ॥
हंसो उलट होत है सोहं, जोगी जन निरधारोरे ॥ सोहं० ॥ २ ॥
सब ईकीस हजार मिलाकर, छेसो होत सुमारोरे ॥
अष्ट पहरमे जागत सोवत, मनमे जपो सुखकारोरे ॥ सोहं० ॥ ३ ॥
जो जन चिंतन करत निरंतर, छोड जगत व्यवहारोरे ॥
ब्रह्मानंद परम पद पावे, मिटे जनम संसारोरे ॥ सोहं० ॥ ४ ॥



९४ राग--मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

नाम निरंजन गावो साधो ॥ नाम निरंजन गावोरे ॥ टेर ॥
नाम जहाज बेठकर दुस्तर, भवसागर तर जावोरे ॥
मानुष देह मिली यह दुर्लभ, काहे वृथा गमावोरे ॥ नाम० ॥ १ ॥
घरकी जीभ नांम विन दामा, फिर क्यों देर लगावोरे ॥
उठत बेठत सोवत जागत, मनसें नहि विसरावोरे ॥ नाम० ॥ २ ॥
कलि केवल इक नाम अधारा, दुजा भरम भुलावोरे ॥
ब्रह्मानंद नाम विन प्रभुके कबहु मोक्ष नहि पावोरे ॥ नाम० ॥ ३ ॥

९५ राग--मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

सत संगत जग सार साधो सत संगत जग साररे ॥ टेर ॥
काशी नाये मथुरा नाये नाये हरि द्वाररे ॥
चार धाम तिरथ फिर आये मनका नहि सुधाररे ॥ सतसंगत ॥ १ ॥
वनमे जाय कीयो तप भारी, काया कष्ट अपाररे ॥
इंद्रीजीत करी वश अपने, हीरदे नहि विचाररे ॥ सत० ॥ २ ॥
मंदिर जाय करे नित पूजा, राखे बडो आचाररे ॥
साधु जनकी कदर न जाने, मिले न [1]सर्जनहाररे ॥ सत० ॥ ३ ॥
विन सत संगत ज्ञान नहि उपजे, करले जतन हजाररे ॥
ब्रह्मानंद खोज गुरु पूरा, उतरो भवजल पाररे ॥ सत० ॥ ४ ॥

९६ (राग--मंगल ताल ३ प्रभाती)

गुरु विन कोन मिटावे भव दुख, गुरु विन कोन मिटावेरे ॥ टेर ॥
गहरी न दियां वेग वडो हे, वहत जीव सब जावेरे ॥
कर कीरपा गुरु पकड भुजासे, खंच तीर पर लावेरे ॥ गुरु विन० ॥ १ ॥

---

१ परमात्मा.

काम क्रोध मद लोभ चोर मिल, लूट लूट कर खावेरे ॥
ज्ञान खड्ग दे करकरमांही, सबको मार भगावेरे ॥ गुरु विन० ॥ २ ॥
जाना दूर गल अंधियारी, गेला नजर न आवेरे ॥
सीधे मारग पर पग धर कर, सुखसे धाम झुगावेरे ॥ गुरु विन० ॥ ३ ॥
तन मन धन सब अर्पण करके, जो गुरुदेव रिझावेरे ॥
ब्रह्मानंद भवसागर दुस्तर सो सहजे तर जावेरे ॥ गुरु विन० ॥ ४ ॥

९७ (राग-मंगल ताल ३ प्रभाती)

यह जग सुपना है रजनीका, क्या कहे मेरा मेरारे ॥ टेर ॥
मात तात सुत दार मनोहार, भाई बंध अरु चेरारे ॥
अपने अपने स्वारथके सब, कोई नहि है तेरारे ॥ यह० ॥ १ ॥
जिनके हेत करत धन संचय, करकर पाप घनेरारे ॥
जब यमराज पकड लेजावे, कोइ न संग चलेरारे ॥ यह० ॥ २ ॥
उंचे उंचे महल बनाये, देश दिगंतर बेरारे ॥
सबहि ठाठ पडा रह जावे, होत जंगलमें डेरारे ॥ यह० ॥ ३ ॥
अत्तर फुलेल मिले जिस तनको, अंत भस्मकी ढेरारे ॥
ब्रह्मानंद रूप विन जानें फिरत चौरासी फेरारे ॥ यह. ॥ ४ ॥

९८ [राग-प्रभाती]

जाग मुसाफिर क्या सुख सोवे, आखिर तुजको जाना है ॥ टेर ॥
इस सरायमे रहण न पावे, क्या राजा क्या राणा है ॥
काहे पैर फेलावे मूरख, घडी पलक ठैराना है ॥ जाग० ॥ १ ॥
इक आवत दूजा चल जावे, कायम नही ठिकाणा है ॥
ये विष भरिया सुंदर परिया, काहे देख लुभाना है ॥ जाग० ॥ २ ॥
इस मकानमे चोर बसतहै, अपना माल बचानाहै ॥
आ परदेश खरच मत कीजे, यहां तो तुझे कमाना है ॥ जाग० ॥ ३ ॥

दूर देशमें जाना तुजको, पास न कछु समाना है ॥
ब्रह्मानंद सुकृत कर प्राणी, जो आगे सुख पाना है ॥ जाग० ॥ ४ ॥

९९ राग–प्रभाती ॥

रे चेतन पोते तूं परना छिद्र चितारे तूं ॥ निर्मल होत कर्मका दमसूं॥
निजगुण अंबु नितारे तूं ॥ रे चेतन० ॥ १ ॥
सम्यक् दृष्टी नाम धरावे, सेवे पाप अठारे तूं ॥
नरक निगोद थकी क्यूं छूंटे, जो पर हियो न ठारे तूं ॥ रे चेतन० ॥२॥
ज्यूं त्यूं करने सोभा अपनी, या जगमांही दिखावे तूं ॥
प्रगट कहावे धर्मको धोरी, अंतर छलन निवारे तूं ॥ रे चेतन० ॥ ३ ॥
परमेश्वर घटघटको साखी, जांकी सरम न धारे तूं ॥
कुंभीपाक नरकमें पचशी, अंतश्च भरियो विकारे तूं ॥ रे चेतन० ॥ ४ ॥
पर निंदा अघ पिंड भरीजे, आगम साखन संभारे तूं ॥
विनयचंद कर आतम निंदा, भवभव दुष्कृत टारे तूं ॥ रे चेतन० ॥ ५ ॥

१०० राग–प्रभाती ॥

चिंता वेग हरो चिंतामण, पारशनाथ हमारी ॥ टेर ॥
धरणींद्र पद्मावती तेरे, सेवककूं हितकारी ॥ चिंता० ॥ १ ॥
चिंतामणि पायां सुख प्रगटे, पूरे इच्छा सारी ॥
तूं आनंद कंद वामा सुत, महिमा विदित निहारी ॥ चिंता० ॥ २ ॥
वो चिंतामणि जड पुद्गल है, तिनहीके गुण भारी ॥
तूं चेतन चिंतामणि पारश परतिख पर उपकारी ॥ चिंता० ॥ ३ ॥
तूं चिंतामणकू मिय न राखे आपे रिद्ध अपारी ॥
तूं ठाकुर त्रिभुवनको स्वामी अशा पूरवनारी ॥ चिंता० ॥ ४ ॥

इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ प्रथम खण्डे पद्याभिधम्
तृतीय प्रकरणं समाप्तम् ॥



(श्रीमत् पूज्यजी महाराज श्री नथमलजी महाराज कृत)

॥ प्रकरण चौथा ॥ स्तवन ॥



१०१ राग–मत विलमावै ए मत भरमावै ए. ॥

प्यारा लागैजी, रूडा लागैजी, जिनजी तीन भवन मनमोहन गाराजी, पारस प्यारा लागैजी, ॥ टेर ॥

काशी देश बनारसी नगरी जो, जठे सोभा छे सारा जगरी जी ॥ पारश. ॥ अश्वसेन नृपतम धुरी वाणीजी, ज्यांरे वामादेजी पटराणीजी ॥ पारश. ॥ १ ॥ ज्यांरी कूंखे प्रभू चत्र आयाजी, एतो स्नप्ना चवदे दिखायाजी ॥ पारश. पोस असित दशमी जायाजी, ज्यांरा इंद्र इंद्राणी मंगल गायाजी ॥ पारश. ॥ २ ॥ जोवन वय दिक्षा धारीजी, प्रभू छांडी प्रभावती प्यारीजी ॥ पारश. ॥ प्रभू वनमें काउ-स्सग्ग करीयोजी, जरा कमठासुर कोपैं भरीयोजी ॥ पारश. ॥ ३ ॥ जगत जीवन जिहां आवेजी, यो तो दशभव वैर जितावेजी ॥ पारश. ॥ काली कांठल आभो छावैजी, कोई आभामे वीजनमावेजी ॥ पारश. ॥ ४ ॥ सजल सघन घन वरषेजी, कोई गाजै गगन अति फडकैजी ॥ पारश. ॥ पडैं मूसलधारा पाणीजी, एतो सरिता अति पूराणीजी ॥ पारश. ॥ ५ ॥ जलकर देही ढंकाईजी, प्रभुरैना सातक

नदीयां आईजी ।। पारश. ।। प्रभू घोर परिसह मांहीजी, जिनजी ऊभा अचल गिरराईजी ।। पारश. ।। ६ ।। धरणेंद्र पद्मावती आयाजी, जरा जिनजीनें सीस चढायाजी ।। पारश. ।। नृत्य करती इंद्राणी हरषेजी, अनमिषनैंन जिनंद मुख निरषैजी ।। पारश. ।। ७ ।। हरतो कमठ मद भागोजी, ओतो जिनजी रै चरणा लगोजी ।।पारश.।। वार वार अपराध खमावैजी, यो तो देव परिसह पिछतावैजी ।। पारश.।। ।। ८ ।। करै कंचन जे लोहानैजी, तेतो पासर जड पाषानैजी ।। पारश. ।। आप पारस गुण रहानैजी, तूठाकर देवो आप समानैजी ।। पारश. ।। ९ ।। जिनजी केवल पायाजी, च्यारूं घातिक कर्म खपायाजी ।। पारश. ।। पांपां पद अविकारैजी, जिनजी लोकालोक निहारैजी ।। पारश. ।। १० ।। पांच तीसकी शाल चोमासोजी, कोई साहे पुरै लीनो वासोजी ।। पारश. ।। नथमल कै प्रभू माहाराजी, एतो जगत जीवन आधाराजी ।। पारश. ।। ११ ।। इति. ।।



१०२ राग–सावण आयो हो मांरा कमधजीया उमराव भमरजी सा० ॥

अरज सुणीजे हो, मारा नव भवरा भरतार, प्रभुजी, अरज सुणीजे हो, दरशन दीजे हो, सासू सेवा देजीरानंद, सांवरिया, दरशन. ।।टेर।। ।। जान वनाई हो, प्रभु, आगे वजाय निसान, नेसीसर अर्ज.।। हरि हलधर साहो, साथे वडा वडा राजान ।। सांवरी. ।।१।। ।। त्रिभुवन मांही हो, प्रभु, प्रगटयो हर्ष अपार, नेमी० ।। नेम सरिखा हो, प्रभु, वींदराज लसीनार, ।। सांव. ।। २ ।। ।। तोरण आया हो, जद पसूंवां करीरे पुकार, नेमी० ।। तेल चढीनै हो प्रभु त्याग चल्या

गिरनार, सांव० ॥३॥ ॥ यानहि जाणी हो, प्रभु, जासोमोय छिटकाय, नेमी. ॥ गूंथ्या मनोरथ हो, मांरा रह्या मनरा मनमांय, सांव, सांव० ॥ ४ ॥ विण अवलापर हो, प्रभु, क्यूं करो इतनो रोस, नेमी. ॥ जोतजणी विचारी हो, प्रभु, तोरे काढयो हुं तो दोस, सांव० ॥ ५ ॥ नवभव न्यारी हो, प्रभु, नकरी रापी पास, नेमी. ॥ दशमा भवमे हो, प्रभु, कांइरे करोछो निरास, सांव० ॥ ६ ॥ अव पाछा पधारो हो, प्रभु, मतिरे हसावो लोग, नेमी. ॥ इम घरत जीयां हो, प्रभु, न मिलै सिव वधु योग, नेमी. ॥ ७ ॥ पुरुप पनोता हो, प्रभु, तुम जादवकुल भाण, नेमी. ॥ इम हठ ताण्या हो, प्रभु, जन हासी घरहाण, सांव० ॥ ८ ॥ अवला दुपणी हो, प्रभु, चीव पडयो जंजाल, नेमी. ॥ दया दिल नाणो हो, प्रभु, वाजो दीन दयाल, सांव० ॥ ९ ॥ इम जूरणा कीधा हो, सती, ए जल भर भर नैण, नेमी. ॥ फिरमन समजायो हो, सती, मेटी भव दुखद हैण, सांव. ॥ १० ॥ पिव पहली हो, सिवपहुंती कर्म खपाय, नेमी. ॥ शाल छतीसै हो, मुनि नथमल गुण गाय, सांव० ॥ ११ ॥ भाद्रव मासे हो, कोई वडीतीस सुविलास ॥ मेदनिपुरमें हो, कोई सुपे रह्या चउमास ॥ सांव० ॥ १२ ॥ इति ॥



१०३ राग—(नाथ कैसें गजको फंद छुडायो.)

जिणंद मोरी करणी नाहि निहारो, थांरो विरुद विचारी नैं तारो ॥ जि० ॥ टेर ॥ हिंसा झूट अदत्त मिथुनमें, राच रह्यो मन मारो, पाप अठारामें एक न छूटो, हूं अवगुन आगारो ॥ जि० ॥ १ ॥ तपजप लेश वनै नहि मोसूं, नवनै पर उपगारो, करत करत परतात रातदिन, वीतत मोहि ज मारो ॥ जि० ॥ २ ॥ विकथा वात कुशास्त्र तनी रुच, आगम लगत न प्यारो, हिंसा धर्म अमृत सम लागै, दया

धर्म लागै पारो ॥ जि० ॥ ३ ॥ इंद्री पांचूं प्रबल होय रही अपने अपने विकारो, एकही इंद्री वस नहि मोरै, सो दीसै वहुल संसारो ॥ जि. ॥ ४ ॥ पुदगलके रंग रातो मातो वांध्यो पापको भारो, ग्यान क्रियाकी रुच नहि मनमें, सो कैसें व्हैगो निस्तारो ॥ जि. ॥ ५ ॥ पिउ पिउ शब्द रटै ज्यूं पपइयो, नाम रटूं तिम थांरो, अवरतो साज सकल डूवणको, एकयोही आधारो ॥ जि० ॥ ६ ॥ वेकर जोरी नथमल विनवै भक्तवछल अवधारो, पतित उधारन विरुद तुमारो, वो मो सम पतित उधारो ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥



१०४ [राग—टोडी]

वागुर कोउर ध्यान हमारै सो भव सायर पार उतारै ॥ वा. ॥ टेर ॥ तिनतिय हार अहिमणि किंकर, शत्रु मित्र सकल इक सारै, समित गुपत युत, इष्ट सवनकूं, मीष्ट वचन मित सहित उचारै ॥ वा. ॥ १ ॥ रक्तरहत नितमन संजममें लहु दीर्घ दूषण सव टारै, न करै अंजन नैन मंजन तन, भव दुख भंजन सो अन गारै ॥ वा. ॥ २ ॥ भरमत महरन विरुद भानको, खांडो हाथ ग्यानको धारै, विक्रम रस वैराग्य आन उर कर्म सवल दल मारच्य छारै ॥ वा. ॥ ३ ॥ सीत घाम पावस ऋतु केसव, सहै परिस हन सोच लिगारै, प्रासुक भोगी साचा जोगी तपो धनी तन ममत्व निवारै ॥ वा. ॥ ४ ॥ गुणसत वीस सहित दीपत नित भक्तवछल करुणा भंडारै नथमल नमत जास पद पंकज भव दुख फास पलकमें टारै ॥ वा. ॥ इति ॥ ५ ॥

१०५ (राग—टोडी)

सुगरुकि सीख सुनो चतुरारे तोड डारो मोहका पिंजरारे ॥ सु. ॥ टेर. ॥ ए संसार असार दुखालय, जानत नहि जीवरा, अघरा रे, हो रहे वे हाल कुटुंबनी सगतें, वा जीगरकाज्यूं बदरारे ॥ सु. ॥ १ ॥ तन धन जोवन अथिर पतग रग, व्योम माहि जैसे बदरारे, विखरत वेर कछु नहीं लागत, क्यूं सूतो गाफल निदरा ॥ सु. ॥ २ ॥ विषय व्यामोह होय व्यामको, मानत सुख मनमें मधुरारे, फल कि पाक समान विषय घन, नर्क निगोद तणी जडुरारे ॥ सु. ॥ ३ ॥ जिन चक्री हरि हलधर सुरपत स्वर्ग निवासी सहु अनगारे, सकल जगत ग्रासी जव आया नहि बलवंत ऐसे नमरारे ॥ सु. ॥ ४ ॥ यह जान भयो बोधजा सहिय दीये छांड सकल लगरारे, रागरिथार नमत नथमल जिन सोध लीया मारग अपरारे ॥ सु. ॥ ५ ॥ इति. ॥

---

१०६ (राग–चलत)

अब तूं चेतरे भाई, हारे तोनें सत गुरु वाट वताई ॥ अ. ॥ टेर ॥ काल अनत कर्म वस भटक्यो, लक्ष चौरासी माही, नाना भव करतां मुसकलसूं मानव देह या पाई ॥ अ. ॥ १ ॥ नरभव रतन मिल्यो एनीको, खोवै क्यूं विरथाई, काच साटे नर पाप गमावै, कांकहीये निठुराई ॥ अ. ॥ २ ॥ लडक पनै खेल्यो अरु दोडयो भोलपणामें भाई, आपापरकी समज न मनमें का जान धर्म वाई ॥ अ. ॥ ३ ॥ जो बन जोरै द्रव्य बहु जोरे, कर करके कपटाई, कै विषयांध होय अवरहीयो, ललना संग लपटाई ॥ अ. ॥ ४ ॥ जो

कन चटको छै दोय दिनको, खटको राख पहलाई, आई जरा जोवन जब बिगड्यो, दूर गई वैलाई ॥ अ. ॥ ५ ॥ सिर आये धोला तन थया खोला, दशनर हे मुंहनाई, परणी नार प्यार नहि पेखत, घातग्ला नमन मांई ॥ अ. ॥ ६ ॥ असी जान समज मन जीवडा काल लगाई धाइ, पलक एकमें लेत ऊटक कैं, वगम छरीकी दांई ॥ अ. ॥ ७ ॥ इकतीसै वैशाख वनेडै वारु ढाल बनाइ, कै नथमल धर्म आराध्यां, जन्म मरण मिट जाइ ॥ अ. ॥ ८ ॥ इति ॥



१०७ (राग–क्टाय डालूंनींबूवा)

समज मन जीवडा ४, हांरे गुरु उपदेश ॥ स. ॥ टेर ॥ या जग अपनो को नहि रे ४, स्वार्थीयो परिवार ॥ स. ॥ सुखमें सव सीरी हुवे रे, दुखमे दगा दार ॥ स. ॥ १ ॥ तन धन जोवन कारमोरे, जैसो रंग पतंग ॥ स. ॥ दोय दिनूंमें देखतां, पर तरंगमें भंग ॥ स. ॥ २ ॥ कायाका गर्भ कहा करै रे, जो वो सनतकुमार ॥ स ॥ सुरपति रूप प्रसंसीयोरे, देवायेकर नदिदार ॥ स. ॥ ३ ॥ चक्रीमान कीयो घणो रे, विगर गयो सवरूप ॥ स. ॥ कृमिकुल पूरित तन थयोरे, भये वैरागी जव भूप ॥ स. ॥ ४ ॥ धनका गर्भ कहा धरै रे, जो वो कृष्ण ने राम ॥ स. ॥ प्रभुता तो त्रिहुं खंडनी रे, कमलापत जाको नाम ॥ स. ॥ ५ ॥ जिनकूंही जिनने छेह दयो, कमलागनिका नार ॥ स. ॥ कैासंवी वनमें पधारीया, सही विपत अपार ॥ स. ॥ ६ ॥ जोवन गर्भ कहा करै रे, चटको दिन दोय ॥ स. ॥ जरा आयां तन जोसरोरे, जतन करंता होय ॥ स. ॥ ७ ॥ काला काहू वा उजलारे ऊजले गये भाज ॥ स. ॥ साठी बुध नाठी

कहैरे । जरा गमाई लाज ॥ स. ॥ ८ ॥ एहवी जाणी भव्य प्राणी- यारे । आराहो जिनधर्म ॥ स. ॥ दुख दोहग दूरे टलै रे । पावो सिवसर्म ॥ स. ॥ ९ ॥ पाल्हीमे पूजय धणीयारे । तीना केरी साल ॥ स. ॥ होली चउमासी करी रे । नथमल जोडी ढाल ॥ स. १० ॥



१०८ [राग—हीडेकी.]

लख चउरासीमांहे रुलतां काल अनत गमायोरे ॥ पूर्व पुण्य करीनें प्राणी, रूडो नरभव पायोरे ॥ चेतन चेतोरे चेतन चेतोरे ॥ थांरे काल भवांतर झटके लेसीरे ॥ चेतन. ॥ १ ॥ आरजखेत्र उत्तम कुल जनम्यो, देह निरोगी पाईरे ॥ शुध आचारी सतगुरु मिलीया, पुण्यमें कसरन कांईरे ॥ चेतन. ॥ २ ॥ मानव भव चिंतामणि सरिखो, जो कीजे सो होवेरे ॥ मूरख विषया रसके मांही, अहल जमारो खोवेरे ॥ चेतन. ॥ ३ ॥ बालपणो लडकांके साथे व्यर्था खेल गमायोरे ॥ भरजोबनमें आंधो हूवो, तरुणी संग लपटायोरे ॥ चेतन. ॥ ४ ॥ जोबन मदके झूले गर्भमें, मनमे बहु मगरूरीरे ॥ देह तणे खेलागण नहि दे, राखे फिटक सिंदूरीरे ॥ चेतन ॥ ५ ॥ जोबन वीतां जराज व्यापी, सिरपर धोळा आयारे ॥ नैणज दोनूं झरवा लागा, कंपन लागी कायारे ॥ चेतन. ॥ ६ ॥ न्याती गोती सार न पूछे, सब मतलबके गरजीरे ॥ डोकरीयो अब मरयो वांछे, करे रामसूं अरजीरे ॥ चेतन. ॥ ७ ॥ काल बलि केहने नहि छोडे, क्या राजा क्या राणारे॥ पलकमें पकडी लेजावे, चीडी भणिसोचा- णारे ॥ चेतन. ॥ ८ ॥ एहवी जाणीनें भव्य प्राणी, धर्मध्यान जो करस्योरे ॥ परभवमांही सुखीया होस्यो, सिवरमणीनें वरस्योरे

॥ चेतन. ॥ ९ ॥ संवत उगणीसे, वरस इकवीसे सहर कृष्ण गढ माईरे ॥ ढाल रसाल अधिक नथमलजी, गुरु कृपासुं गाईरे ॥ चेतन. ॥ १० ॥ इति. ॥



१०९ राग–कांइरे जवाब करूं रसीया. ॥

कांईरे गुमान करे जीवडा, मान करे लोगु मान करेलो ॥ तो नीची गत मांहे जाय पडैलो ॥ कांईरे. ॥ टेर. ॥ नृप हरचंद तणी पटराणी, तारा ते चोहटामें विकाणी ॥ कांईरे. ॥ आप भूप मेत घरपानी, भरीयो गहन गति कर मानी ॥ कांई. ॥ १ ॥ रंग महलमें रहती प्यारी, मोत्यां सुंतो भरती भारी ॥ कांई. ॥ एक दिन कर्म दशा आई खारी, जद घर घरकी हुई पणिहारी ॥ कांई ॥ २ ॥ निरख निरख सुंदरता तनमें, मूरख मान करे घणो मनमे ॥ कांई. ॥ काल आण पहूंतो इक छिनमें, बासो तो जद हो गयो वनमें ॥ कांई ॥ ३ ॥ पेच समार बांधतो पागां, फुलडा चिहुं दिस रहता लागा ॥ कांई ॥ झीणा झीणा पहिरतो बागा, मैल तणा न मुंनाता दागा ॥ कांई. ॥ ४ ॥ सुंदर नार श्रृंगार बनाई, हाजर ऊभी सुखगल आई ॥ कांई ॥ बारू कोमल सेज बिछाई, मूरख तिगसुं रह्यो लपटाई ॥ कांई ॥ ५ ॥ दर्पण हाथ ले रूप निहाले, तिवडा छोगा सिरपर राले ॥ कांई ॥ वांको वांको जमीपर चाले, धर्म वात रति नहि झाले ॥ कांई. ॥ ६ ॥ एहवी संपदा होती सोतो, एकदिन कर्म आय दियो गोतो ॥ कांई. ॥ सर्व विलाई रह गयो रोतो, अब तोरोवणो छे भाया थोथो ॥ कांई. ॥ ॥ ७ ॥ वडा वडा सुरन्दर नागो, ज्यांरो ही मान निभ्यो नहि सारो ॥ काई. ॥ तो गुमानी थांरो कितो एक भारो, सुगणे पणे मनमांहिं बिचारो ॥ काई. ॥ ८ ॥ सेखे काल मेदिनिपुरमांही, बारु इधकी ढाल बनाई ॥ कांई. ॥ नथमलके लोग लुगाई, ये मान म कर मनरे माई ॥ काई. ॥ ९ ॥ इति ॥

११० राग--जिल्लाकी. ॥

गुमानी जीवडा गुरु ग्यान बतावेरे ॥ सुग्यानी जीवनें सत गुरु समजावेरे ॥ टेर ॥ तन गोरे रंग देखनेरे, मन फूले तूं अंग ॥ दोय दिनमें देखतांरे, थांरा रंगमें पडसी भंग ॥ गुमानी. ॥ १ ॥ डोडी पागज बांधनेरे, भयो ज्वानीमें मग्न ॥ पाप करण हुंसीयार तूंरे हवो धर्म करणनें ग्वरन ॥ गुमानी. ॥ २ ॥ नेन कजल ससी दांतनेरे, मुख चावे नागर पान ॥ दान करी बुद्ध पापमेंरे, हवो धर्म करण नादान ॥ गुमानी. ॥ ३ ॥ तार जमावे रोजना, पीवे ठंडायां घोट ॥ पिण धर्मनो तार जम्या विना, थांरे आगे लागेला चोट ॥ गुमानी. ॥ ॥ ४ ॥ वाग वाडी गोठ घूघरीमें, भटके थाके नाय ॥ सत गुरु सेवामें आवतारे, थणो डमीर ज थाय ॥ गुमानी. ॥ ५ ॥ विषये वस उनमत भयोरे, थांरे पर समजीभूंचाव ॥ एल फेल सुख सूं कहेरे, पिण आगे व्हेला न्याव ॥ गुमानी. ॥ ६ ॥ एहवी जाणी भव्य प्राणीयारे, तजज्यो ससारना फेल ॥ धर्म करो उल्लासमूंरे, ज्यूं पावो सिवपुर सहेल ॥ गुमानी. ॥ ७ ॥ चोमासो नवानगरमेंरे, गुण तीसेरी साल ॥ पूजनणे प्रसादसूं गांगी, फलीमनोरथ माल ॥ गुमानी. ॥ ॥ ८ ॥ पार्श्वप्रभु दशमी दिने, आगे आशु मास ॥ नथमल कहे भव्य जीवने, थे कीज्यो धर्म हुल्लास ॥ गुमानी. ॥ ९ ॥ इति ॥

दोहा ॥

नेम वंदन चाली सती, मग विच वूठो मेह ॥ चीर सूकावण कारणे, गई गुफामें तेह ॥ १ ॥ चीर सुकावे महासती, जन्म अवस्या धार ॥ मणी प्रभाइव वपुप्रभा, वीजलको झबकार ॥ २ ॥



१११ राग–जोडानी. ॥

गूफामें ध्यान धर्यो रहनेम, देख राजल जाग्यो प्रेम ॥ दूषण लागेलो ॥ कहे रहनेम तजी कुल लाज, मेल मिल्यो भल आज॥ दू. ॥ १ ॥ ए तुज रूप अनूपम गात, सची सम साक्षात॥ दू. ॥ हूं हरि सम भोगव भोग, सारीखो संयोग ॥ दू. ॥ २ ॥ सती डरी जाणी पुरुष कुपात्र, बैठी संकोची गात्र ॥ दू. ॥ समुद्र बीजे सुत रहनेम, मा डर धर मन प्रेम ॥ दू. ॥ ३ ॥ दुर्लभ मानवको अवतार, सुख विलसो सुजलार ॥ दू. ॥ भर जोबन विलसीनें भोग, पाछे ले सांजोग ॥ दू. ॥ ४ ॥ जाणि रहनेम सति चिंते चीत, भय नहि छे या भीत ॥ दू. ॥ जातवंत ये अश्व समान, जानव देइमवान ॥ दू. ॥ ५ ॥ सुण सुण हो मोटा मुनिराय, महाव्रत भागेलो, महाव्रत थांरो भागेलोजी, मुनि मन राखो इक ठाम ॥ दू. ॥ स्वप्नामें न धरूं मन पाप, आवे सुरपत आप ॥ दू. ॥ अगंधन कुल अहिजारे देह, वमियो विष न लेह ॥ दू. ॥ ६ ॥ अजसजीवी तुजने धिःकार, वांछे वमीयो विकार ॥ दू. ॥ मर्न सिरे नहि या श्रेय वात, देख देवर कुल जात ॥ दू. ॥ ७ ॥ भो जग नृप पौत्रीमें जोय, अंधक पौत्र तूं होय ॥ दू. ॥ गंधन कुलका सर्प समान, मत होय समता आन ॥ दू. ॥ ८ ॥ घरघर जासो लेन अहार, देख सो सुंदर नार ॥ दू. ॥ रूप देख धर सोउन माद, तो कुण कहसी साध ॥ दू. ॥ ९ ॥ हडना माया दंपपर जोय, अथिर आतम तुज होय ॥ दू. ॥ इन कारन वहूं में धर राग, मान वचन महा भाग ॥ दू. ॥ १० ॥ पचास रंभा सरखी नार, तजलीयो संजम भार ॥ दू. ॥ रमणी रूप देखी मत भूल, नारी दुखांरो छे मूल ॥ दू. ॥ ११ ॥ नर्कनी दीवी कही जिनराज, पाप सरोवर पाज ॥ दू. ॥ सर्वापदनो है संकेत, कलह दालिद्रनो खेत ॥ दू. ॥ १२ ॥ असुच अंग मलमूत्रनी खान,

दीगा देवी समान ॥ दृ. ॥ नारी नहि या विषकी वेल, देवै नरकां-मेल ॥ दृ. ॥ १३ ॥ एह वचन सुन सती तणा ताम, रूप कीया दृढ परिणाम ॥ दृ. ॥ अंकुश कर करि आवै ठाम, तिम आयो संजम धाम ॥ दृ. ॥ १४ ॥ दोनूं मुगत गये कर्म तोड, नथमल नमे कर-जोड ॥ दृ. ॥ मह्ना वद बीज मेडता माय, प्रणम्या पातिक जाय ॥ दृ. ॥ ॥ १५ ॥ इति. ॥



११२ राग—चलित ॥

रटीये नाम नीरंजनकोरे ॥ र. ॥ टेर ॥ कर्म काष्ठ जारन हुत भुगसम, मृगपति मृग अघ गंजनको ॥ असनि समान नाम जिनव-रनो, सकल दुखा चल भंजनको ॥ र. ॥ १ ॥ कुमति रमाकी केलको बाधक, साधक सिव मग साधनको ॥ भवोदधि तारन मनमथ मारन, कारन पतित ऊधारनको ॥ र. ॥ २ ॥ मिथ्या मयल मलिन हृदय चरव, अंजन सम जस मंजनको ॥ कै कर जोडो नथमल मधुकर, प्रभु-पद रूपी कंजनको ॥ र. ॥ ३ ॥ इति ॥



११३ राग--चलित ॥

वृथा जन्म गमायो जिनेसर ॥ वृ. ॥ टेर ॥ क्रोध मान माया महि उलज्यो, लालचमें ललचायो हो ॥ दान शील तप भाव इत्या-दिक कछु शुक्रतवन नायो हो ॥ वृ. ॥ १ ॥ पर वंचनकी धर उर आसा, धर्मी नाम धरायो हो ॥ बुगला भगत जगतमें बनकर, पूज्य कहि पूजायो हो ॥ वृ. ॥ २ ॥ निजगुन पर अवगुन सुन मुज मन,

वारिज ज्यूं विकसायो हो ॥ शुद्ध मग भूल जूल अथग अघ, निज स्वरूप नहि पायो हो ॥ दू. ॥ ३ ॥ करन नैननासार सनातन, इंद्री मोय हटायो हो ॥ नथमल नाथ निरजन तोरे, चरन सरन अब आयो हो ॥ दू. ॥ ४ ॥ इति ॥



११४ चाल--नाडाके छुरीयां बांध मति ॥

चाल सखी चितचावसूं तोय कहतीथी ॥ आया सत गुरु आज सखी तोय कहतीथी ॥ सतगुरुकी सेवा भूल मती, कलुष हरो गुरु भक्ति करो ॥ तो. ॥ गुरु है गरीब निवाज ॥ श. ॥ १ ॥ भूल मती तूं भूल मती, मिथ्या भर्मके मांय ॥ स.॥ टेर ॥ सतगुरु इण संसारमे तो॥ भारी गुण भंडार ॥ स. ॥ कोड जीभ सुरगुरु कहे ॥ तो. ॥ पावे तोहि न पार ॥ स. ॥ २ ॥ पंच महाव्रत पालता ॥ तो. ॥ अरु पाले पंच अचार ॥ स. ॥ कहणी करणी एकसी ॥ तो. ॥ धन चालै खांडा धार ॥ स. ॥ ३ ॥ करे रक्षा खट कायनी ॥ तो. ॥ विचरें निरवद्यबाट ॥ स. ॥ सत भय वाऱ्या सतगुरु ॥ तो. ॥ अलग कीया मद आट ॥ स. ॥ ४॥ बाल ब्रह्मचारी बडा ॥तो. ॥ नारि न निरखे नैण ॥ स. ॥ धारक दश विध धरमना ॥ तो. ॥ सब जीवा सैण ॥ स. ॥ ५ ॥ मधुर गिरा महाराजजी ॥ तो. ॥ दे मीठो उपदेश ॥ स. ॥ जगवासी भव्य जीवना ॥ तो. ॥ काटे भव दुख क्लेश ॥ स. ॥ ६ ॥ खारा सतगुरु खांडसा ॥ तो. ॥ मेला मोती मान ॥ स. ॥ ओछा सतगुरु एहवा ॥ तो. ॥ सरिता पति सम जान ॥ स. ॥ ७ ॥ अंधकार करे अर्क ज्यूं ॥ तो. ॥ लघु मेरु गिर लेख ॥ स. ॥ थिरी भूत एक थांनमे ॥ तो. ॥ पवन मन सम पेख

॥ स. ॥ ८ ॥ किसमिसनी पर कठिन है ॥ तो. ॥ केसर जिस कुरग ॥ स. ॥ उष्ण चंदन वा डडुसा ॥ तो. ॥ सतावीस गुण संग ॥ स. ॥ ९ ॥ दयाल पुरस गुरु देवसा ॥ तो. ॥ दूजा नही दिखाय ॥ स. ॥ काढे भवदुख कूपथी ॥ तो. ॥ मेले मुक्ति मांय ॥ स. ॥ ॥ १० ॥ पर्म महा सुख उपजे ॥ तो. ॥ दीठां गुरु दिदार ॥ स. ॥ नथमलके नित चावना ॥ तो. ॥ हम गुरु जीवो हर्ष हजार ॥ स. ॥ ११ ॥ इति. ॥



११५ राग–फागनी ॥

दर्शन पायो मे सतगुरको ॥ द. ॥ सतगुरु दर्श हुवो भुरजागी, जब मेरो दाहिण अंग फुरको ॥ द. ॥ १ ॥ रोम रोमेण आनंद प्रगट्यो, विघट्यो अज्ञान अखिल उरको ॥ द. ॥ २ ॥ सतगुरु चरन फरस अघ भागो, ज्यूं कुटक ते जोर हटै जुरको ॥ द. ॥ ३ ॥ हरु करमी गुरु देख राजी व्है, मन द्वेष धरै भारी करमो सुरखो ॥ द. ॥ ४ ॥ नथमलके श्रीगुरु देवां रस्तो, बतायो मोनें शिवपुरको ॥ द. ॥ ५ ॥ इति. ॥



११६ राग–फागनी ॥

मन थिर कर सुनियो जीन वानी ॥ म. ॥ लाभ हानि सुख दुःख कर्मवस, काहेको सोच करो प्रांनी ॥ म. ॥ १ ॥ सब दिन एक भावे मति पचना, भाग्य लिख्योसु मिलेगो आनी ॥ म. ॥ २ ॥ कूपमें भरमावे भर सागर, पात्र प्रमान लहे पानी ॥ म. ॥ ३ ॥ इह जिय जान आनहिय समता, आकुलता तजज्यो ज्ञानी ॥ म. ॥ ४ ॥ नथमल भाखे धन्य पुरुषवे, जिनवानी जाके मन मानी. ॥ म. ॥ ५ ॥ इति. ॥

११७ राग–जीवना कदरी खडी छूंजी राज नींबू डारा बागमें ॥

जी जीवा पंचाश्रव दुखदाय, जाणीनें परिहरो ॥ जी जीवा समतार समन ल्याय, जनम सफलो करो २ आगम दिलमे धरो ॥ १ ॥ जीवा पायो नरभव रत्न, हारे क्यूं अज्ञानमें २ खोवे क्यूं मानमें ॥ जीवा पायो नरभव रत्न हारे क्यू प्रमादमें ॥ टेर ॥ जी. ॥ प्राणी वधमें पाप, ज्ञानी जब रोक है ॥ जी. ॥ दोनूं भव संतापक, जिणसे तील है २ दालद्री रहे ॥ जी. ॥ २ ॥ जी. ॥ दूजो आश्रय झूठ बोलतां पत घटे ॥ जी. ॥ जावे प्रतीतज ऊठ, कारजको नांपटे, २ यों जिनवर रटे पछे सबमें सिटे ॥ जी. ॥ ३ ॥ जी. ॥ अण दीधी तिलमात, वस्तु लेणी पारकी ॥ जी. ॥ बूरी ए नहीं छे बात, वीजी इण सारखी, २ मिले तासूं नारकी ॥ जी. ॥ ४ ॥ जी. ॥ रमणीने संयोग प्राणी नवलक्ष मरे ॥ जी. ॥ इम जाणी त्रिय भोग सुज्ञानी नहा करे २ परभवसूं मरे ॥ जी. ॥ ५ ॥ जी. ॥ परिग्रह अनरथ मूल कुमति दायक अछे ॥ जी. ॥ मनने करे प्रतिकूल स्वजनसूं फासी रचे २ परस्पर मन खचे ॥ जी. ॥ ६ ॥ जी. ॥ इसमो अनरथ जान आश्रव सेवो मति ॥ जी. ॥ संवर गुनकी खान मिले तासूं सिवगती २ जंपयों जिनपती ॥ जी. ॥ ७ ॥ जी. ॥ नथमल कहे एम गुरुशीख धारीए ज्यूं पावो शिवपुर खेम ॥ जी. ॥ आश्रवनें निवारिये २ आतमने तारिये ॥ जी. ॥ ८ ॥ इति ॥

---

११८ राग—घूमरनी ॥

इतरानें दीक्षा मति दीजियो थांरी आतमरो सुख चाहो मुनिराज ॥ टेर. ॥ राजपुत्रनो व.तिक प्रथम वीजो रमणीनो रसियो जानो..

मुनिराज ॥ चोरई जेने झूटा बोलो थारो लोभमति माणो मुनिराज ॥ इ. ॥ १ ॥ रसनो गृद्धि मूर्ख भेठो योतो मितरा करे लोथांसूं खेटो मुनि. ॥ भेष धारीने अति लघु बालक उसा चेलारी ममता मेटो ॥ मु. ॥ इ. ॥ २ ॥ क्रोधी स्नेही तर तम योगे जे भाषा बोल न जाने ॥ मु. ॥ अंग हीणनें अंधे बधिर फुनियी नद्धी निद्रावाने ॥ मु. ॥ इ. ॥ ३ ॥ सकलंकी बलि अरयत बूढो दासी सुत ऋणरोगी ॥ मु. ॥ निंदनीक कुल जेहने वरज्यो कातर कतूहली सोगी ॥ मु. ॥ ॥ इ. ॥ ४ ॥ वेंडो नरने जिनकी अनाज्ञा ताकूं भेष मति दीज्यो ॥ मु. ॥ द्रव्य खेत्रने काल भाव चिउं देखीनें कारज कीज्यो ॥ मु. ॥ इ. ॥ ॥ ५ ॥ साधूज्यूंही अरजका समजो पिण अठेव होत विचारो ॥ मु. ॥ काल पंचमो जात त्रियाकी झीणो छे मजम भारो ॥ मु. ॥ इ. ॥ ६ ॥ गुणवत शिक्ष मिल्यां शिक्ष करणो वडा साधूरे पासे रहणो ॥ मु. ॥ गुणवत विन दिक्षा नही देणी ये मानो सूत्रनो कहणो ॥ मु. ॥ इ. ॥ ७ ॥ निधि शिव नेत्र निधान निशापति सवत एकमु जानो ॥ मु. ॥ भाद्रव कृष्ण बीज कहे नथमल नूतनपुर शुभ थानो ॥ मु. ॥ इ. ॥ ॥ ८ ॥ इति ॥



११९ [राग–प्रभाती उमादे भटियाणीनी]

वामानंदन वंदनहो कांइ कर्म निकंदन साहिबा ॥ तुम भव दुख भंजन हार, तव मुख निरखत नासत हो कांइ कर्म निकाचित सचिन, प्रभु मन वंछित फल दातार ॥ वामा. ॥ १ ॥ हर्ष धरी उमायो हो तिसायो थांरा दर्शरो ॥ प्रभू पायो पुन्यकर आज ॥ मानूं अमृत पीधो हो कांइ लीधो लाभ ए जन्मनो म्हांरो सीधो सघलो काज ॥ वामा. ॥

॥ २ ॥ सफल जमारो ज्यांरो हो प्रभू थांरो दर्शन देखतां तूं मोहन गारो देव ॥ नीलवर्ण तन छाजत हो कांई राजत लंछन नागनो पद्म सचिपत सारत सेव ॥ वामा. ॥ ३ ॥ उपमम रसनो दरियो हो गुण भरियो करिया सिरघणी, दिल ध्यान धरूं दिनरेण हरिहरादि देवा होनीबोली जेवा किम रुचे प्रभु मिलिया मेवाजेण ॥ वा. ॥ ४ ॥ धरणेंद्रने पद्मावती हो जगनायक तांहरा नामनां कांई अधिष्टायक जाण ॥ श्री जिनवरने जापे हो दुख कापे सेवकना सहू कांई आपे कोड कल्याण ॥ वा. ॥ ५ ॥ वाणारशी नगरी जनम्या हो कांइ पोष वद दशमीने दिने चवि दशमा स्वर्गथी जार ॥ अश्वसेन अभिरामा हों गुणधामा अवनीसर पिता प्रभु वामा मात मल्हार ॥ वा. ॥ ६ ॥ करुणा कर करुणा कीजे हो शरणागत नथमल दासने कांइ प्रभु चरणा त्रिसवास ॥ जन्मरु मरण निवारो हो विचारो बिरुद एरावलो श्रीफल वद्धी पास ॥ वामा. ॥ ७ ॥ इति ॥

१२० [राग--गालकी]

मुज गुरुंको निंदो मती ॥ नृप कहती हूं ॥ क्यूं पकड्यो पक्षपात पियाजी थांने कहती हूं ॥ जिन गुरुकी निंदा करो मती ॥ मम गुरु तव गुरु मांहिने ॥ नृ. ॥ अंतर दिन नै वात ॥ पियाजी० ॥ १ ॥ न्याय धरो पक्षपात हरो, करो मतकूडी ताण ॥ पि. ॥ टेर ॥ मम गुरु करुणा सागरु ॥ नृ. ॥ सत्यवादी मृदु वैण ॥ रा. ॥ तृणन गृह अवग्रह विना ॥ नृ. ॥ सव जीवारासैण ॥ रा. २ ॥ नारी नागन सारखी ॥ नृ. ॥ ज्यांरे धन है धूल समान ॥ पि. ॥ जीत्या परिग्रह लोभने ॥ नृ. ॥ निरमळ ज्यांरो ज्ञान ॥ रा. ॥ ३ ॥ जीव घाती छे तुम गुरु ॥ नृ. ॥ छोड्यो नही ज्यां कूर ॥ रा. ॥ अदत त्याग ज्यांरे

नही ॥ नृ. ॥ छै नारी तणा मजूर ॥ पि. ॥ ४ ॥ कलिया परिग्रह कीचमे ॥ नृ. ॥ धन धन लागी लाय ॥ रा. ॥ रीस न मानी साहिबा ॥ नृ. ॥ ए गुरु नावे दाय ॥ रा. ॥ ५ ॥ तिरे सोतारे अवरने ॥ नृ. ॥ मनमें करो विचार ॥ रा. ॥ जो सुख चावो मोक्षना ॥ नृ. ॥ सांचा गुरु ल्यो धार ॥ पि. ॥ ६ ॥ इति. ॥



१२१ राग–किण विध काढूं हो वाईजी थांरो सीयालो ॥

किण विध भेटूं हो जिणंद थांरा चरणानें । किण विध आऊं हो जिणंद थांरा दर्शननें ॥ टेर ॥ दिलडो उमाह्यो हो ॥ जि. ॥ थांनें देखवा पिणमोसूं आयो यन जाय २ दूर दिशावर हो ॥ जि. ॥ अवखो घणो जिहां वस्या जिनराय २ ॥ कि. ॥ १ ॥ विदेह खेतरमे हो साहिब सीमंधरू हूं भरतमें आर २ सांगृ इसडो हो ॥ जि. ॥ पिणको नही ल्यावे २ थांरा समाचार ॥ कि. ॥ २ ॥ विषम मार-गीयो हो ॥ जि. ॥ थांरा देशनो विच घणी जंगी आड २ नदियां विचमे हो ॥ जि. ॥ जवरी घणी केई आडा परवत काड २ ॥ कि ॥ ॥ ३ ॥ देव विद्याधर हो ॥ जि. ॥ वसमें नही देवे मोने प्रभुजी पैंमेल २ लवध विद्या पिण हो ॥ जि. ॥ इसडी नही आऊं २ मारग छेल २ ॥ कि. ॥ ४ ॥ मनडो तो दुखियो हो ॥ जि. ॥ मिलवा भणी तडफ रह्यो दिनरात २ सफल मनोरथ हो ॥ जि. ॥ मांरो जद हुसी कृपा करोला जगनाथ ॥ २ ॥ कि. ॥ ५ ॥ दिलरा तो भावजहो ॥ जि. ॥ देखी रह्या ध्यान धरूंस सनेह फलकने भूलूं हो सीमंधर स्वामीनें जेम पपइयो मेह २ ॥ कि. ॥ ६ ॥ ओरतो सारो हो ॥ जि. ॥ मांरो को नही जपूं थांरो निशदिन नाम नथमलनें हो ॥ जि. ॥ कृपा करी दीज्यो २ मुकत मुकाम २ ॥ कि. ॥ ७ ॥ इति. ।



१२२ राग--गीतनी ॥

हांजी प्रभुजी लख चोरासी मांही जिणंदमे बहु दुख पायो हांजी हां जगतपति बहु दुख पायो हांजी हां कृपानिधी बहु दुख पायोजी दिलरा प्यारा त्रिभुवन साहिबाजी ॥ टेर ॥ हां. ॥ प्र. ॥ नव २ कीना भेख ॥ जि. ॥ अब सरणे आयो ॥ हांजी हां कृपानिधि अब सरणे आयो ॥ जी. दि ॥ १ ॥ हां. ॥ अपनो बिरुद विचार ॥ जि.॥ मोहिताऱ्यो चहीये ॥ हांजी हां कृपानिधि ताऱ्यो. ॥ हांजी प्र. ॥ तुमसा समरथ छोड अवरने किणने कहीये ॥ हांजी हां कृपा. ॥ जी दिल. ॥ २ ॥ हांजी प्र. ॥ हूं सेवक तुमसांम अवरसूं कांम न कोई ॥ हांजी हां कृपा. ॥ चातक जलधर जेम ॥ जि. ॥ मांरी मनसा ओही ॥ हांजी हां कृपा. ॥ जी दिल. ॥ ३ ॥ हांजी प्र. ॥ थांरा सेवक बाज ॥ जि. ॥ फिर दुःखित रहीये ॥ हांजी हां कृपा. ॥ दु. ॥ हांजी प्र. ॥ नीकी नहिया बात नाथ दिल सोची चहिये ॥ हांजी हां कृपा ॥ सोची. ॥ जी दिल. ॥ ४ ॥ हांजी प्र. ॥ अम सरखानें देख लाज जो दिलमें लावो ॥ हां जी हां कृपा. दिल. ॥ हां जी प्र. ॥ निज गुनकी बगसीस करो किन कृपन कहावो हांजी हां कृपा. ॥ जी दिल. ॥ ५ ॥ हांजी प्र. ॥ नरम गरम सुन वचन बडा तो कबहू न खीजे ॥ हांजी हां कृपा. कब. ॥ हांजी प्र. ॥ बालक मुखकी बात लात तो सुनकर रीजे ॥ हांजी हां कृपा. सुन. ॥ जी दिल. ॥ ६ ॥ हां जी प्र. ॥ कै नथमल जिनराज काज मुज पेस करीजे ॥ हांजी हां कृपा. पेस. ॥ हां जी प्र. ॥ नवके उपर दोय जिणंद किरपा कर दीजे ॥ हांजी हां कृपा. किर. ॥ जी दिल. ॥ ७ ॥ इति ॥



१२३ (राग—चांदा थांरी चानणी यासी रातरे)

समवसऱ्या कोसंबी श्री जिनराज रे कोई प्रभुजी रेक प्रभुजी जंगम सुरतरु उदायन नृप वंदन केरे काजरे कोई आयो रेक जेसे कोणिक नरवरु ॥ १ ॥ वीरागम सुन जयवती गुन गेहरे कोई दुल सी रेक २ रोमांचित थई प्रभुजी सेती अधिको धर्म सने हरे कोई दोडीने कहोमभोजाट पगट ॥ २ ॥ प्रभावती सूं भाषे वचन रसा-लरे कोई आव्या रेक २ प्रभुजी बागमे घर बेठांही गंगा आवी चा-लरे कोई कसर न रेक कसरन अपना भागमे ॥ ३ ॥ कांने सुणता गोत्र अने अभिधानरे तिणफल रेक तिणफलरो कहिणो कीसूं ॥ ४ ॥ सुग भोजाई पाछी भाषे एमरे वाइजी होक कीधी तुम किरपा घणी जाण्यो थांरो आज ए पूरण प्रेम हो कोई दीधी हो कहीवी भली वधामगी ॥ ५ ॥ स्नानादिक कर हो गई शीघ्र तयार रे कोई घरना रेक घरना कारज वीसरी रथ वेठीने दास्याने परिवाररे कोइ नणदलरे भोजाट वंदन नीसगी ॥ ६ ॥ अभिगमनादिक सांचव स-घली रीतरे कोइ आवी रेक समवसरण आनंद भरी तीन प्रकारे आणी अधिकी प्रीतरे नृप आगल रेक करने सेवक रे खरी ॥ ७ ॥ मोहन गारा चोवीसमा जिण चंदरे कोइ त्रिभुवन रेक त्रिभुवनमें बीजूं नहीं सकल जगतना शुभ पुद्गलना खंदरे कोइ जिनतन रेक जिनतन लागा छे सही ॥ ८ ॥ शांति सुधारस अमृतमइ अनूपरे कोइ सूरत रेक सूरत भव दुःख सोधनी अनमिख नयणे निरखे प्रभुनो रूपरे कोइ विकसी रेक शशिनें देख कमोदनी ॥ ९ ॥ धर्म कथा प्रभु भाषे चार प्रकार रे कोइ राजा रेक नणद भोजाइ सांभले अमृत धुन जिनवानी को वि-स्ताररे कोइ सुणतां रेक सुणतां सब संसय टले ॥ १० ॥ राजा राणी आव्या जिण दिश जायरे जयवंती रेक पूछा प्रश्न ए भगवती शतकबारमे द्वितीय देश कमायरे कोइ उत्तर रेक भिन्न भेल भाष्याइ

जगपती ॥ ११ ॥ धन्य जयवंती लीधो संजम भार रे कोइ अनुक्रम देक कर्म क्षय कर शिव वसी नथमल कहे विक्रम पुरमे झाररे मधुमास अरेक शुक्ल पक्ष तिथि द्वादशी ॥ १२ ॥ इति. ॥



१२४ (राग--कर्म समो नहि कोइ)

निंदक सम पापी नही जगमें नीत शास्त्रमें गाई सर्व चंडालोंमें वो मुखियो ओर ओपम दे कांईरे ॥ १ ॥ निंदा कर पराई रे भाई तूं निंदा ॥ टेर ॥ सामाइक पोसा पडिकमणा तपस्या कर देह ताई चूक निंदा कोप डगयो चालो डूबी सर्व कमाइ रे ॥ भाई तूं. ॥ २॥ साच झूठको राख हिये डर दुरगत है दुखदाई वहां पोल चाले नही गुणा लेखो राई राई रे ॥ भा. ॥ ३ ॥ समज दिल अंतर स्याणा सतगुरु सीख सुनाई कै नथमल जो निंदाही करणी तो करो अपनी भलाई रे ॥ भाई तूं. ॥ ४ ॥ इति ॥



१२५ राग-- गुजराती गीरबो ॥

में तने वरजूं रे स्यानां परनारी संग मति जानां ॥में.॥टेर॥ परनारी संगेरे जातां कोई भुगते ओजकारातां जस कीरत खोवेरे थाथां ज्यांरी लोक करे मुख वातां ॥ मं. ॥ १ ॥ परनारीसूंहि बडोरे दीसे जिन पर जन दांतज पीसे कोई दिन भूंडोरे दीसे जद पड़े पजारां सीसे ॥ मं. ॥ २ ॥ राज सिपाईरे आवे झट मुसक्या बांध ले जावे पग खोडामेंरे फावे परनारी संग या थावे ॥ मं. ॥ ३ ॥ जवरो पापजरे फुटे ऊंधो टेर कोरडासं कूटे लोहीकी सेडांरे छुटे

बलिधन घरको सब लूंटे ॥ मे. ॥ ४ ॥ लागतीका दुखियारे होवे कर ऊंचो मुख नही जोवे जीवत पति नारीरे रोवे लंपट सब बात विगोवे ॥ मे. ॥ ५ ॥ परभव दुर गतिरे जावे जमदेव जहां स्वाद चखावे अग्निमइ पुतलीरे करावे लंपटने बाथ भरावे ॥ मे. ॥ ६ ॥ परनारी दुखनोंरे खेत है सर्वोपद संकेत शिवपुर द्वार जरे देत जिके कियो परनारीसूं हेत ॥ मे ॥ ७ ॥ कोडीनो पुरुखजरे वाजे कमावे पर त्रिय काजे द्रगवचतन खोवेरे लाजे कोडीकी कीमत भाजे ॥ मे. ॥ ८ ॥ परनारीके चालेरे लागन या विरची छुरी ज्यूं वावन विषभरी कालीरे नागन नथमल धन्य करे जे त्यागन ॥ मे. ॥ ९ ॥ इति. ॥

१२६ राग–यारांसे प्रीत लगाय मती ॥

मानव भव निरफल हार मती रेत गुरुकी शीख विसार मती ॥ मा. ॥ टेर ॥ मुसकल लाधा नरभव नही वाधा कादामें केसर डार मती ॥ मा. ॥ १ ॥ तन धन योवन थिर नही सजन किन जनसे रख खार मती ॥ मा. ॥ २ ॥ सतगुरुकी सेवा कर नित मेवा कुगुरु कुदेवा धार मती ॥ मा. ॥ ३ ॥ नारी संग मोचे द्रगभर जोवे खोवे क्यूं बांधी पैट छती ॥ मा. ॥ ४ ॥ भाषे नथमल ज्ञान क्रिया वल सुनो सकल जन नही मुगती ॥ मा. ॥ ५ ॥ इति. ॥



१२७ अथ पूज्यगुणाष्टक ॥

पूज कनीरामजीरो जाप करो, दुख.दोहग सोगने दूर हरो, धन धान्य तणा भंडार भरो, धर प्यार हिय भवी ध्यान धरो ॥ १ ॥ जक्ष

राक्षस भूत अलग जावे, डांकनी सांकनी नही संतावे, तावते जरो नही आवे, पूज नाम लीया सता पावे ॥ २ ॥ राज काजमे जाय रूपे, दील ध्यान धऱ्या अरी होत दफे, तेजे करी सबमे तेह तपे, जो पुज तणो मन जाप जपे ॥ ३ ॥ लक्ष्मी बहु वीण जे लाभ लहे, दालिद पापनो मूल दहे, रस रंग सदासूंजरहे, बेठा गृहमांहि गंग वहे ॥ ४ ॥ टामण टुमण अहि दूर टले, गड गुंवड द्रुसी तुरत गले, चोर चूगल वलि नांह छले, पुज नाम मनोरथ माल फले ॥ ५ ॥ कपटी धुत्तारा कपट करे, पेखे छलछिद्र चोफेर फीरे, उण विरियां याद करे हिवडे, डग भरीने सके पलमांहि डरे ॥ ६ ॥ अन्य मंत्र मुधा कुण आराधे, सद नाम पुजनो जे साधे, लीलायुत पुत्र कलित्र लाधे, वसुधा जसवांण घणो वांधे ॥ ७ ॥ गछ नायक गुणगण स्तवन गुणो, श्रोताजन चीत्त लगाय सुणो, दुरीत घटे पुन्य वांधे घणो, नथमलके नहचो पुज नाम तणो ॥ ८ ॥ इति ॥



१२८ अथ पुन्हा पूज्यगुणाष्टक ॥

पुज नाम तणी महिमा भारी, नीत ध्यान धरो तुम नरनारी, दुख मिट जावे तनमनरो, पुज कनीराम जीशे जाप करो. ॥ १ ॥ पुज नाम रटे जो शुध भावे, जिण घरमे टोटो नही आवे ॥ त्रिन जे वहू लाभ लेहे धनरो ॥ पु. २ ॥ अष्ट भय नेडा न आवे वली उपजे ॥ भय विनसी जावे, मन इच्छत काज सरे सबलो ॥ पुज० ॥ ॥३॥ कृष्न अष्टमी दिन जाया, वलि ऊणही दिन सुरपद पाया, इण कारण अष्टमी दिन सखरो ॥ पुज ॥ ४ ॥ उपवास आंबिल एक भक्त करो, अथवा विगज सब दूरहरो, निशि भोजन पालो शील खरो ॥ पुज ॥

॥ ५ ॥ इमया क्रियानेकिमहेरो पुज नामतणी माला फेरो, पारनरहें शुग भवमुखरो ॥ पुज ॥ ६ ॥ एक माला नित नेम रखो, पुज नांम सजीवन जांण पको, धको न उपजें तिन्ह जितरो ॥ पुज ॥ ७ ॥ स्वामीदास गच्छ नायको, स्वशिष्यने सदा सहायको, नथमलजी ध्यांन धरे नितरो ॥ पुज ॥ ८ ॥

॥ अथ मूर्खखट् तीसी. ॥



१२९ (राग–श्रावक धर्म करो सुखदाइ)

बालक[1]मूतो प्रीतकरे[1] विन, कारज परघर[2] जावेजी, गुरू[3] माय[4] तनें[1] नीच कहि बोलें व्यर्था पाप[5] कमावेजी ॥ १ ॥ यां लक्षणासुं मूर्ख जांणो ॥ टेर ॥

विना प्रयोजन[6] करे लडाई, दांन देतानै[7] पालेजी परने[8] दुख दे, बडा नर बैठा आडो[9] अवलो सवलो हालेजी ॥ यां ॥ २ ॥ धर्म कथा[10] विच वाता मोटें नेह नींचसू[11] राखेजी वडांको अविनय[12] करे तियसूं छांनी[13] वात जे दाखेजी ॥ यां ॥ ३ ॥ वृक्षतले[14] जंगल जे जावे, वडांसूं[15] सामो जे बोलेजी झूठ वदे[16] दरवारमें परतियसेतीकरतकितोलैजी[17] ॥ यां ॥ ४ ॥ चाकरसू[18] जे करे दुसमणना, वेद्य करतां[19] वात करावेजी दुष्ट[20] राजा[21] आगे पदमासण नीच[22] तिया घर जावेजी ॥ यां ॥ ५ ॥

जान [२३]सोनारसूं प्रीत करे वलि, जांण [२४]कुकर्मनें ठानेंजी, वाद करें [२५]पंडितसुं
[२६]रामतमें, शुरुनो [२७]कथन नही मानेजी ॥ यां ॥ ६ ॥ नृप [२८]विश्वास करे
मार्गमें, [२९]जातीतियवत लावेजी ॥ वेद्यने [३०]पहली रोगकी पूछैं, डर
फिर [३१]मारग जावेजी ॥ यां ॥ ७ ॥ एक वणांसूं [३२]वाद करे वात कहता
[३३]हुंकारो न देवेजी. आप [३४]वात कहि आप हसैं अरु भणतां [३५]प्रमादें सेवेजी
॥ यां ॥ ८ ॥ उकडु वेसें जे [३६]वहुयारे, अणजांण्यां [३७]साथ सिधावेजी
॥ [३८]निर्बुद्धिसुं मिसलत बांधे, ऊकडु वेसीने [३९]खावेजी ॥ यां ॥ ९ ॥
[४०]राजपंथमे बेठ करें, [४१]खाता ऊठे नें बेठेजी ॥ लाजरहित करे [४२]मुखवातां,
धर्म [४३]करता आलसमें पेठेजी ॥ यां ॥ १० ॥ दाढी [४४]समारतां जे मुख
बोले, शकुन [४५]पालता चालेजी ॥ विन [४६]अपराधे गाली काढें, दीपथी
[४७]अग्न प्रजालेजी ॥ यां ॥ ११ ॥ लडतां [४८]पहली चोट जे घाले, अण
[४९]भातो जे खावेजी ॥ घडता [५०]खाती पासे बेसें, उंडे [५१]पांणी तेरूविन
जावेजी ॥ यां ॥ १२ ॥ [५२]जीमतां [५३]भणतां रोस करे, जाता [५४]साप सिंघनें
[५५]छेडेजी, असवार [५६]विना असवारी करें, परघर जावे [५७]विन तेडेजी ॥
॥ यां ॥ १३ ॥ [५८]आपणा गुणनो गर्भ करे नर, मंत्रीनें [५९]अपमानेजी दांन
देईनें [६०]मान करे, [६१]पखवालासूं वाद जे तानेंजी ॥ यां ॥ १४ ॥ छती स-

[62] गत नर धर्म करे नही, [63] धर्म करंताने पालेजी॥ गुझकी [64] वात कहे घणा आगे [65] धन कारण चोरी विचारेजी ॥ यां ॥ १५॥ [66] तुरत पांणी पीवे जीमीनें, [67] राह चालतां खावेजी ॥ [68] पारकी निंदा करे मुखसेती, [69] शिष्य [70] बेटाने घणो लडावेजी ॥ यां ॥ १६ ॥ [71] बेटा मनुपने शिक्षा देवें, [72] परने ज-गडो करावेजी ॥ रूपवती तियसूं [73] करें परचो, [74] लायलागां साकडो जावेजी ॥ यां ॥ १७ ॥ वेध विना जे [75] वेधपणो करे, [76] कूप [77] वापी काठे हासेजी ॥ त्रे [78] जणां वात करे जिहां जावे, निज तिय मर्म [79] प्रकासेजी ॥ यां ॥ १८ ॥ राजा रीझ [80] देतां नटे, करे वेश्यासुं प्रीत [81] अथागेजी ॥ [82] राजा [83] गुरु [84] मायतना अवगुण, बोले जे किण आगेजी ॥ यां ॥ १९ ॥ लौकिकनो [85] व्यवहार उठावे, हितकी [86] कह्यासूं कोपेजी ॥ [87] आलसी गुणवंतकी व्यावचमें, [88] उपगार कीया ने लोपे जी॥ यां॥ २०॥ [89] पाप करी हर्ष पांमे, चालता करे [90] प्रमाद उजारेजी॥ विगर [91] बोलाया स-भामे बोले वलि नृपने [92] दरबारेजी ॥ यां ॥ २१ ॥ दंपति [93] बेठा छाने जावे, [94] अछतो आल शिर लेवेजी ॥ सगत [95] विना जो करे तपस्यां, पर-[96] नारीसूं मैथुन सेवेजी ॥ यां ॥ २२ ॥ अपनी [97] किर्ति आपही बोले, [98] मंत्रीसु करे कलेसेजी ॥ जातो साथ छोडी [99] रहे पाछौ, करे [100] अजाण्यो

असेजी ॥ यां॥ २३ ॥ [१०१]पंचा माहे झूठ वदे [१०२]देव[१०३]गुरूकी निंदा ठानेजी ॥ धनके [१०४]अर्थ जुवा जे खेले, [१०५]चोरीकी वस्तु आनेजी ॥ यां ॥२४॥ मानके [१०६]कारण धन जे खरचे, व्यर्थ [१०७]क्लेश करे घरमेंजी ॥ दुःख आ-या बहु [१०८]दीनपणो करे, [१०९]फूले आया समेंजी ॥ यां ॥ २५ ॥ [११०]धन उप-यांत करे आडंबर, ग्रामेसरने [१११]रीसावेजी, अप्रतीत [११२]कारचांसु व्योहार करे, आप [११३]आपनो वैर जितावेजी ॥ यां ॥ २६ ॥ पाणी [११४]पीकर कांम करे जे, [११५]पूर्व क्लेश ऊदीरेजी ॥ नृपसूं [११६]बहु मंत्रीपणो मांडे, सोवे जे [११७]अग्नि क्षीरेजी ॥ २७ ॥ वडां तणो [११८]कथन नहि मांनें रेसाणने [११९]धन खरचेजी, [१२०]विश्वासघात अरू [१२१]अपघात करें, [१२२]कुगुरू [१२३]कुदेवने अरचेजी ॥ यां ॥ २८॥ [१२४]परने खोटी सला देवे, [१२५]धर्म अर्थे जीव हणावेजी॥ [१२६]हिंस्यामांही धर्म परूपें, [१२७]तपस्या कर पछतावेजी ॥ यां ॥ २९ ॥ [१२८]अरि विश्वास [१२९]धनवंतसुं ल-डाई, [१३०]करे करणी करनें निहाणोजी, [१३१]गुरु [१३२]मायतसुं अंतर राखें, [१३३]चाकर को वधावे मानोजी ॥ यां ॥ ३० ॥ साकडी [१३४]गलियांमांही दोडे, सीख [१३५]कुगुरुकी मांनेजी, राजा [१३६]सेती करे साहशता, लीधा [१३७]सोगन भानेजी ॥ यां ॥ ३१ ॥ छती [१३८]जोगवाई दान न देवे, दान देई [१३९]पछतावेजी ॥ [१४०]ओछा राजके वास वसे तो, ते निश्चे दुख पावेजी

॥ या ॥ ३२ ॥ देख्याविन जो सगपण कीजै, कपटी विश्वास धरीजेजी॥ तपसीवडाका अवगुण बोलै, ओछो बोगे करीजेजी ॥यां॥३३॥ क्रोधी रांकसु वाद करे, होडा होडे द्रव्य गमावेजी, अरथ विना वैरीने छेडे, काम विगड्यां पीछे पछतावेजी ॥ यां ३४ ॥ एवं टेढसों बोल मूरखना, ग्रंथमें नहि देख्या चाल्याजी॥ पत्रमांही लिखी थोडा वांन्या, एक ढालमांही घाल्याजी ॥ यां ॥ ३५ ॥ संवत् उगणीसे पेंतीसें, साहपुरे चोमासेजी॥ मूर्ख खट्तीसी चतुर सुणीजो, नथमल इम भासैजी ॥ यां ॥ ३६ ॥ ईति ॥

१३० [राग–नाजकडी व्याहण आवे]

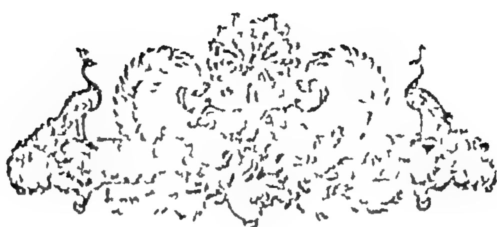
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमत पदम सुखकारी ॥ सुपारसजीने चंदा प्रभुजी, जामन मरण नीवारीरे ॥ १॥ मैं जिन चौवीसै वंदु, भव भव पाप निकंदुरे, ॥ मैं ॥ टेर ॥

सुबुद्धि शीतल श्रेयांश वासपुज, विमल विमलमतिदाता ॥ अनंत धर्म श्रीशांतिजिनेश्वर, वरताई सुखदाता ॥ मैं ॥ २ ॥ कुंथु अरह मल्लि मुनिसुव्रतजी, भवोदधि तारणहारो॥ नमि नेम पार्श्व महावीरजी, सासणना सिरदारो ॥ मैं ॥ ३ ॥ ए चौवीसे जिनवर मोटा, अजरामर पद पाया, लोक शिखर प्रभु जाय विराज्या, जठे कर्म नही कायारे ॥ मैं० ॥ ४ ॥ ए चोवीसे जे नर समरें, मन वच तन सुध करने ॥ ते नर निश्चे सिवपद पामें, महा भवोदधि तरनेरे ॥ मैं ॥ ॥ ५॥ ईण भव दुख दोहग नहि आवे, ध्यावे जो शुध भावे ॥कमला केल करे तसु घरमें, सुख संपन बहु पावै ॥ मै० ॥ ६ ॥ सरपख निधि भूशालमें विचरत, सहर कृश्नगढ आया ॥ माघ कृष्ण एकम दिन जिनना, नथमल ए गुण गाया ॥ मैं. ॥ ७ ॥ ईति ॥

१३१ (राग—एक दिवस लंकापति)

प्रणमूं सिरीमंधर सांमी, युगमंदिर अंतरजामी, सिरनामी, बाहु सुबाहु वंदीयेए ॥ पांचमा सुजातए, स्वयं प्रभू विख्यातए, दिन रातए, प्रणमी पाप निकंदीयेए ॥ १ ॥ ऋषभानंदन सातमा, अनंतवीर्य परमात्मा, शुधातमा, सूरप्रभू नवमा नमूंए ॥ दशमा श्री विशालए, वज्रधर सुरसालए, गुन मालए, चंद्रानन पद चितरमूंए ॥ २ ॥ चंद्र बाहू चित ध्याईए, भुजंगेश्वर गुण गाईए, शिर नाईए, नेमप्रभू चरणां विखेए ॥ श्री वीरसेन महाभद्रए, देवजस अक्षूद्रए, समुद्रए, अजितवीर्य गुण कुण लिखैए ॥ ३ ॥ धनुष पंचसे परमाणू, अवगाहन सहुनी जांनू, त्रिभुवन भालुं, सहस्र आठ लक्षण धणीए ॥ पूर्व चौरासीलाखए, आयु सहुनो दाखए, अभिलाषए, मोमन जिन दर्शन तणी ए ॥ ४ ॥ दीप अढाईमे राजे, वाणी अमृत धुनि गाजे, संसय भाजै, भव्य जीवना मन तणाए, ॥ चौतिस अतिसय जिनराया, इंद्र चोसठ पुजै पाया, गुण गाया, न रहे फिर कांई मणाए ॥ ५ ॥ तजीये सागरुरीसए, भजीये जिनवर वीसए, अहनीसए, धर्म ध्यांन भविमण करोए, ॥ दया धर्म जिनवर तणो, किणही जीवने मतिहणो, सहू सुणो, नरभव रत्न मिल्यो खरोए ॥ ६ ॥ च्यार तीन नव एकए, श्राव मास सुविशेषए, सुद एकए, जोड करि उमंगसूए ॥ जिनवर वीसे गुण बहु, मंद मतिमें किम कहु, श्रावक सहु, गावो निशदिन रंगसूए ॥ ७ ॥ पूज श्री रेखराजजी, तारण तिरण जहाजजी, सुखराजजी, महि मंडल जस छाईयाए, तेह गुरुनेसु पसायजी, हरिदुर्गपुरमांयजी, सुखदायजी, नथमल जिन गुण गाईयाए ॥ ८ ॥ ईति ॥

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ प्रथम खण्डे स्तवनाभिधं चतुर्थ प्रकरणम् ॥



अथ प्रकरण-पांचवा-लावणी.

१३२ (राग--चलत--लावणी)

महावीरजिन जन्मसु दिन सुन, सुर मंगल गावे;
दसों दिशा उमगत दिव्यधुनि, जंगल हरपावे ॥ महावीर ॥ १ ॥
दुंदुभी ताल मृदंग वंसरी, वाजत मंजीरं;
अपछरा थई थई करत, भई देवभीरं ॥ महावीर. ॥ २ ॥
सुरपति नरपति शेप नागपति, भरे मोद भारं,
धनपति गनपति प्रणमत, नित करे जयजयकारं ॥ महावीर. ॥ ३ ॥
शक्र भक्त फुनिलेय सुकरजिन, धरिहिगीरसीसं,
इंद्रचंद्र धरणेंद्रचिउंदिश, सुलकत जगदीसं ॥ महावीर. ॥ ४ ॥
प्रेमपियूष पानकर उधत, झटित कलस लीने,
क्षीरनीर पावन प्रभुके शिर, सवहि ढोर दीने ॥ महावीर. ॥ ५ ॥
अति उदार हितकार महोत्सव, करके श्रीकारं,
आनिठानि जननी करउपर, गई देवभीरं ॥ महावीर. ॥ ६ ॥
चंपाराम धाम काम तज, गानईहकारं,
सतगुरु कहे नाम तेरा नित, तुं उतरे पारं ॥ महावीर. ॥ ७ ॥



१३३ (राग--लावणी.)

भला गुरु सोहीहे जगमे. २ तृष्णा लोभ त्याग परिग्रह तज,
खडा मुक्त मगमे. ॥ भला. ॥ टेर ॥
ध्यान मस्त अवधूत भेषमें, सत्य वचन बोलें,
संसय ग्रंथ जगत जीवनके—अंतरको खोले ॥ भला गुरु. ॥ १ ॥
तेजवंत अति शांत क्रांत युत, करुणा अधिकारी,
भव्यजीव तारनको मिथ्या, पकर पटक मारी ॥ भला गुरु. ॥ २ ॥
कर्म बंधन काटनको अतिशय, सुध मारग ज्यांका,
चंपा राम सरणे लेयाकी, जनम सफल ताका ॥ भला गुरु.॥ ३ ॥

१३४ (राग—पूर्ववत्—लावणी.)

श्रावक सबही हे सचा, इष्ट कष्ट लखि नष्ट होत नही,
श्री जिनका कचा ॥ टेर ॥
विना शक्ति संजमतें न्यारे, भक्ति सुरस पीवे,
स्वल्प नेम व्रत धारे केते, शुभ उद्यम जीवे ॥ श्रावक० ॥ १ ॥
द्वादश व्रत धरे गुरु मुखतें, कि ते करे ध्यानं,
सिद्धान्त के शरने केते, सुने केते पुरानं ॥ श्रावक०॥ २ ॥
निजगुरु चरण शरण सवहीने, गहिसे वारा ते,
पंच परमपद चउवीसे जिन, या समझत माते ॥ श्रावक० ॥ ३ ॥
मिथ्यामत जो मिले जगतमें, सो माने नही एकं,
यथा ज्ञान समकित दश सुचमे लहि पकरेऽटेकं ॥ श्रावक० ॥ ४ ॥
कालपाय शुभ पहुंचें शिवपद, जितने ए भाइ,
चंपा राम प्यार सवसे, करनींकी चतुराइ ॥ श्रावक. ॥ ५॥

१३५ [राग--पूर्ववत्--लावणी]

वडा गुण शीलतणा जगमे, २ जेसा सोभितपूर्ण चन्द्रमा,
नभ गामी खगमे. ॥ टेर ॥

इन्द्र नरिंद्र शेप सव पूजे, पग वाही जनके,
जोत्रिय भोग त्याग कुन त्यागे, भवविकार मनके॥वडा गुण शील.॥१॥

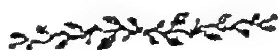
अगनि नीर पौन विप आयुध, नां लगे कोई,
चंपाराम शील धारी सम, वडा नहि कोई ॥ वडा गुण शील० ॥ २ ॥



१३६ (राग--पूर्ववत्--लावणी)

भलाहे दांन सदा दैना २, देश क्षेत्र अरु काल पात्र लखि,
सेवा फल लैना ॥ टेर ॥

जैसा पुरुप मिले तैसी विध, उचित्त भक्ति लीजैं,
असनवसन औषधि अरु महिमा, यथा शक्ति कीजे॥भलाहे दांन० ॥१॥
दुःखित क्षुधित दीन हीनपें, करुणा चित दीजे,
चंपाराम सुजस सुख परभव, सुधापांन पीजे ॥ भलाहे दांन० ॥ २ ॥



१३७ (राग--पूर्ववत्--लावणी)

सजन तप निहचें कर तपनां, २ देह नेहकूं त्याग देत किन,
॥ सजन० ॥ १ ॥
ए नांहि अपना
गढ मढ कोट महल जल शलकी, जेती ए थपनां,
काल पाय नासत खिनमें, जैसे निशि सपना ॥ सजन० ॥ २ ॥

कर वैराग देख समतातैं, अंत समें खपना,
चंपाराम कालसैं डर नित, ईष्ट नांम जपनां ॥ सजन० ॥ ३ ॥

१३८ (राग--पूर्ववत्--लावणी)

सुज्ञानी जबलग मन गंधा, तबलग कोड उपाय करे. किन,
सब झूठा धंधा ॥ १ ॥ टेर ॥
क्रोध मांन लोभ मायातें, चित तेरा मैला,
एक लाख गुरू करे क्यो न तू नहि मिले गैला ॥ सुज्ञानी ॥ २ ॥
याते मोह महा भ्रमतजके, भाव शुध करना,
चंपाराम बनेतां केवल, भवसागर तिरना ॥ सुज्ञानी० ॥ ३ ॥



१३९ [राग--पूर्ववत्--लावणी]

सजन सुन क्रोध नहि करनां २, क्रोधपाय राजनकों जुधकर,
परया नरक परना ॥ टेर ॥ १ ॥
जाके काज क्रोध तिन कीना, सोसवरी छोडी,
जमी जायगां धन संतति त्रिय, कर ममता जोडी ॥ सजन सुन० ॥ २ ॥
सरना जोर नहि काउका, जमदेवे मारे,
चंपाराम क्रोध शूली भोगे, ना कोउ टारे ॥ सजन सुन० ॥ ३ ॥

१४० (राग-- पूर्ववत्--लावणी)

सजन सुन मांन वैंग त्यागो, मांन कियो रावण निज कलको,
सीस चक्र लागो ॥ टेर ॥ १ ॥
मांन ठांन सब घरकूं खोया, दुर्योधन मांनी,
देख सोर अपने भाईनकों, टेकक्रु मन ठानी ॥ सजन सुन० ॥ २ ॥

मांनविपाक नीच कुल उपजें, भव भव दुख पावे,
चंपारांम सीख आगम, सुन सबको समझावै ॥ सजन सुन० ॥ ३ ॥

१४१ [राग--पूर्ववत्--लावणी]

सजन सुन माया दुखदाता, २ मायाके परसंग पलकमें,
प्यार टूट जाता ॥ टेर ॥ १ ॥
मात तात भ्रात सुत घरकें, अरु जेते प्यारे,
माया कपट कूड छल बल लखि, सब होते न्यारे ॥ सजन सुन० ॥ २ ॥
माया देख मित्र ममता तज, तुरत शत्रु होवे,
माया विमाया सबसूं कर, वृथा जन्म खोवे ॥ सजन सुन० ॥ ३ ॥
यहतो जानतहै सब कोई, ज्ञानी इम बोले,
चंपारांम पाय पशुगति, जनम जनम डोले ॥ सजन सुन० ॥ ४ ॥

१४२ [राग--पूर्ववत्--लावणी]

सजन सुन लोभ दुष्ट भारी, आठों पहर पिंड नहि छोडे,
अतिही दुखकारी ॥ टेर ॥ १ ॥
ईन्द्र चन्द्र धरणेंद्र सुरासुर, याहि नांहि छोडे,
याहिके परसंग जगतमें, पड्यो जीव खोडें ॥ सजन सुन० ॥ २ ॥
कौडी मात्र परिग्रह नांही, आतम रस पागे,
चंपारांम पूज्य सबहीको, जो यांकूं त्यागे ॥ सजन सुन० ॥ ३ ॥

१४३ [राग--पूर्ववत्--लावणी]

फकीरी या विधि ते साची ॥ फ० ॥ दुनिया हवस त्यागके रसनां,
कलमां पढिनाची ॥ फकीरी० ॥ १ ॥

जरब मारके दिलको खोले, समजी करे फाका,
करे पोर परतीत रीततें, ध्यान करे ताका ॥ फकीरी. ॥ २ ॥
खुदी छांड खुद खुदा पिछाने, अरु कुरान कहणा,
सीखे सीखदेन दुनियाको, संगरहित रहना ॥ फकीरी० ॥ ३ ॥
रंग जंगमे फिकर खुसी नही, साफ चित्त रहनां,
टुकडा मिले तब कल सेती, जो अपना लहना ॥ फकीरी० ॥ ४ ॥
ताको खाय सुरत अल्लामें, लगा रूह धोवे,
बैठ एकंत शांति समतातें, ध्यान जोत जोवे ॥ फकीरी० ॥ ५ ॥
चंपाराम परम सो दिलका, मुसलमान पावे,
दरजा पाय पीर कावलमें, ला मकान जावे ॥ फकीरी० ॥ ६ ॥

१४४ (राग पूर्ववत्--लावणी)

सजन तूं गाफल किस बलतेंरे ॥ सजन० ॥
धन संपति उपजे विनसें सब ज्योल हरे जलतें ॥ सजन० ॥ १ ॥
छिनही छिन तेरी आयु जातहै, ज्यो प्रवाह जलका,
जोबन जोर जरा नहि ठहरे, ज्यो बिजली झलका ॥ सजन० ॥ २ ॥
मंत्र तंत्र देव यातें, कछु नही विचार होवे,
काल तीन लोकको जालिम, समे समे खोवे ॥ सजन० ॥ ३ ॥
चंपाराम प्रमाद पलकहूं, करे नाहीं ज्ञानी,
तेही धन्य सुध सतगुरुकी, आज्ञा पहचानी ॥ सजन० ॥ ४ ॥

१४५ (राग चलत--लावणी)

जै शिव कामि निकंत वीर भगवंत, अनंत सुखाकरहै,
विधिगिर गंजन बुध मनरंजन, भ्रम तम भंजन भास्करहै ॥ टेर० ॥

जिन उपदेशो द्विविध धर्मजो, सो सुर सिद्धि रमाकरहै,
भवि उर कुमुद न मोदन भव तप, हरण अनूप निशाकरहै।।जै शिव०।।१।।
जासो अनंत सुगुणगणकों नित, गणति गणी गण थाकरहै,
इंद्र फणींद्र खगेंद्र चंद्र जग, ठाकुर जांके चाकरहै ॥ जै शिव० ॥ २ ॥
परम विराग रहें जगतें पै, जग जंतु रक्षा करहै,
जां प्रभुके पद नव केवल लिब्धसूं, है कमला कमलाकरहै ।।जैशिव॥३।।
जांके ध्यान कृपा न राग रुव फांसी हरण समता करहै,
दोलनमे पदकूं हरण भव, वाधा शिव राधाकरहै ।। जै शिव. ।। ४ ।।



१४६ [राग मरहटी--लावणी]

लखी जिनचंद छवी थारी, भर्म बुधि आज गई म्हारी ।। टेर. ।।
नासिका अग्र दृष्टि जोहै, नेत्र चंचलता अव रोहै,
पर्म समरसी भावसोहै, भविक नर सुर मुनि मन मोहै,
पर्म वैराग्य भावकारी ।। भर्म. ।। १ ।।
ज्ञान आवरणी विधि नास्यो, लोक अरु अलोक परगास्यो,
द्रव्य गुण परज भाव भास्यो, नित्य निज आतममें वास्यो,
शांति रस उछरत हितकारी ॥ भर्म. ।। २ ।।
दरस वल वीर्य अतुल धारे, अभ्यंतर गुण समुद्र भारे,
अल्पमति कवि किम उच्चारे, शेपगण पति कथ कथ हारे,
वडी कमला अचिरज कारी ॥ भर्म. ॥ ३ ।।
प्रभू तनपर कांति छाजे, कोटि रवि मदन छवी लाजे,
छत्र त्रय मस्तकपर राजे, लख ततखिणही अघ भाजे,
समव शरणादि लच्छि न्यारी ।। भर्म. ।। ४ ।।
वस्त्र शस्त्रादी सव डारे, सकल रागादि भाव टारे,

ध्यान वरकर कृपा न धारे, महा भठ मोह राय मारे,
भयो निर आकुल सुख भारी ॥ भर्म. ॥ ५ ॥
नही कोइ तुम समान देवा, इंद्र शहु करत चरण सेवा,
भवार्णव पोत परम खेवा, रत्न त्रय निधि निधीश देवा,
परम जस कीरति विस्तारी ॥ भर्म ॥ ६ ॥
कर्म वश भव भय भटकाई, तुम्ही सव जानत जिनराई,
आजि मम समय लब्धि आई, लह्यो जिन दर्शन सुखदाई,
काज सब सरे सुहितकारी ॥ भर्म. ॥ ७ ॥
तुंही जिनराज पतित पावन्, तुंही सिव मारग दरसावन्,
तुंही विधि पर्वत केढावन्, तुंही जर भरण हरण जामन्,
वसत मान कमन छविधारी ॥ भर्म. ॥ ८ ॥



१४७ [राग--चलित--लावणी]

जात वंत शिक्ष हुवे सुपातर सबइक सरखे मत जानोरे
भाई सब इक सरखे मत जानो ॥ विनय वंत गुरु इंगित ग्याता
के एसे शिष्य गुन खानो ॥ टेर ॥
ग्यानी ध्यानी बडे बयरागी, नीची दृष्ट करी चाले,
गुरु बहु बेर काज फरमावे, नाकमां यसल नही घाले,
तहत कहिनें करे अंगी.कृत्य, आप वचन है परिमानो ॥ जात. ॥ १ ॥
पदपद यत्न करे श्री गुरुके, दर्श देख दिलमें फूले २
खान पान अरु सयनासनमें, गुरु भक्ति कूं नहि भूले,
सवकार जत जयासे तिष्ठे, जब गुरु.वांचे व्याक्षपानो ॥ जात. ॥ २ ॥
गुरु अवनीत शिष्य जो होवे, तांकूं मुख नहि बतलावे २
वाकी संग कीयें तें आपही संगत जैसा फल पावे,
बिगरै पय कांजी विंदूतें एह वात उरमें आनो ॥ जात० ॥ ३ ॥

रात दिवस गुरु पासे तिष्ठे, विन यासन कर मृदुनाई,
सभा मांहि गुरु विच नहि बोले, चितमें जाके चतुराई,
जो होय व्यंग वातमें, सोतो गुरुसे नहि रखे छानो ॥ जात० ॥ ४॥
गुरु असंभव वात कहे जो सोही सीस चढालेवे,
गुरु वचनकी रखे आसता, पीछा उत्तर नहि देवे,
सर्प माप शिष्य हुवो, निरुजतन, ए निश्चय करके माने ॥जात.॥५॥
ऐसे विनयवंत शिष गुरुके, सो जिन मारग दीपावे,
सूत्रगिनाता ध्येन पंचमें, पंथककी ऊपम यावे,
नथमल युगभव भलाजो चाहो, तो गुरुका विनय ठानो॥जात.॥६॥



१४८ [राग--चलित--लावणी)

अब अवनीत शिष्य भयज एसे, कथन गुरूका नहि करता,
महा मद मस्त वडे अविवेकी, लोक लाजसे नहि डरता ॥ टेर ॥
माहो माही गुरु भाईसें, अंतस हेत नहि धरता,
छिन में राजी घूटेज वातां, लजा तज छिनमें लरता ॥ अब० ॥१॥
रस इंद्रीके भये लोलपी, महिप जेम अशिदिन चरता,
गुरु देवनकी सार करे कुन, पेहले पेट अपना भरता ॥ अब० ॥२॥
थानक सेती गुरु देवनसूं, विन पूछयांही नीसरता,
घरघरमें गलियार तणी परे, विना प्रयोजन वे फिरता ॥ अब.॥ ३॥
सीषनकी बुधसिरे शास्त्रकी, तो पिण उद्यम नहि करता,
सूतां रहनां वातां करना, रात दिवस एसे गरता ॥ अब. ॥ ४॥
हित शिक्षाकी वात करे गुरु, श्वान जेम भुस भुस करता,
कीच वीच पाथर डारेतें, मुख वस्तर अपना भरता ॥ अब. ॥ ५ ॥

गुरु व्यावचके डरके मारे, न करे गुरू पासे स्थिरता,
अदृष्ट होय दृष्टके तिष्टे, कहो गुरुके दिल किम ठरता ॥ अव. ॥६॥
अकृत्य देख गुरु देत सिक्षामन, कटुक वचन पीछा झरता,
गुरु भाईके सगे म समझो, जो जन गुरुसे नही टरता ॥ अव. ॥७॥
उत्तरा ध्येन अध्येन प्रथममें, एसे कुशिष्य नही तिरता,
नथमल वा शिष्यकी बलिहारी, गुरु आंण सिर पर धरता ॥ अव. ८॥



१४९ [राग-चलित-लावणी]

करामात कलजुगमें थोडी भोले खाते गोता है,
निज पुर स्वारथ कोंतज कातर, जन जन आगल रोता है ॥ टेर. ॥
भेख देख मत भूले भोला, हिरदे क्यों नही जोता है,
असन वसनको फिरे झींकते, उनसे कहो क्या होता है ॥करामात॥१॥
परकू यंत्र मंत्र लिख देवे, आय सिद्धाई जोता है,
इतनो सोचो क्यूं नही दिलमे, नागा कहा निचोता है ॥करामात॥२॥
लागवता कर सिद्ध बने फिर, भोले जनको मोता है,
मिले उस्ताद भेद जब पावे, बंधी पैठ डबोता है ॥करामात.॥३॥
साचा सिद्ध प्रगट नहि होता, ठग बाजीगर बोता है,
थोथा ढुंग वधा कर मूरख, बीज दुर्गतका बोता है ॥ करामात॥४॥
हिमिया किमिया फिरे हेरते, हाथे बात विगोता है,
जो इस चाले लागे जगतमें, तन धन अपना खोता है॥करामात॥५॥
आसा तृसना जीते सो सिद्ध, और सिद्ध सब थोथा है,
नथमल साचा इलमी सद्गुरु, निजपद आतम धोता है ॥करामात.॥६॥



१५० [राग मुसलमानी–लावणी]

अरे वागुवा गुलमत करे गुलसें गुलको हसने दे,
में गरीव वुल वुल मेराई, इस गुलचेमे घर वसने दे ॥ टेर ॥
अंझलाके वोलीयुं वुल वुल, नया एक तूं है माली,
एह वोही वागहै यांपर, कितनेही कक्कर गये रखवाली,
जिन कलीयोंकूं तूं काटेथा, वडी दुखांसूं है पाली,
लोसल देखिये खुलेंगे फूल, झुकेगी सव डाली,
मान कह्याले विछावूं दावन, आव जोल्सके फसने दे ॥ में गरीव. ॥ १ ॥
आपही अपनी फसल पेसाखी, सव दरखतकी फूटेंगी,
वोहोत सीकलियां खीलेंगी जव, खुदवा खुद यह टूटेंगी,
जव ए क्यारा भरेगा जलसे, नहरे जिस वक्त छूटेंगी,
इसी चिमनका हमेसां मजा वुल वुल लूटेंगी,
वैरी नागन डसे है तनकूं, मती मनेंकर डसने दे ॥ में गरीव. ॥ २ ॥
छूटेंगे जव होद फुंवारे, च्यारो तरफसे व्है जारी ॥
छूटेंगी चदर वोलेंगे, मोर सोर व्हैंगे भारी ॥
अनेक तरेंके वोले ज्यानवर, हूक लगे उनकी प्यारी ॥
सुनकर यहां पर, आवेंगे सव नर नारी ॥
दे दरवाजा खोल वागका, सारी खलकको धसने दे ॥ में गरीव. ॥ ३ ॥
रसाल गिरजी कहेंके इकदिन, यह वुल वुल उडजावेगा ॥
इसी चिमन पे निजर भर, फेर निजर नही आवेंगा ॥
जसु सिंध कहे कोई मालकसें ध्यान लगावेगा ॥
तुम सुनो जगनजी अपनी आवा गमन मिटावेगा ॥
कसता है वो अपने भक्तकों, मती मनेकर कसने दे ॥ मेंगरीव. ॥ ४ ॥



१५१ [राग–लावणी]

नाम प्रभुका दिलसें प्यारे कभी भूलाना ना चहिये,
पाकर नरका वदन रतनको, खाकमिलाना ना चाहिये ॥ टेर ॥
सुंदर नारी देख पियारी मनको लुभाना ना चहिये,
जलती अगनमें जान पतंग समान जलाना ना चहिये,
बिन जाने परिणाम कामको हाथ लगाना ना चहिये,
कोई दिनका ख्याल कपटका जाल बिछाना ना चहिये
॥ नाम प्रभुका. ॥ १ ॥
यह माया बिजलीका चमका मनकों जमाना ना चहिये,
बिछडेगा संजोग भोगका रोग लगाना ना चाहिये,
लगे हमेशा रंग संग दुर्जनके जाना ना चाहिये,
नदी नावकी रीत किसीसें प्रीत लगाना ना चाहिये ॥ नामप्रभुका. ॥ २ ॥
बांधव जनके हेत पापका खेत जमाना ना चाहिये,
अपने पैरपर अपने कर कर चोट लगाना ना चाहिये,
अपना करना भरना दोष किसीपर लाना ना चहिये,
अपनी आंख है मंद चंदको दोष बतलाना ना चहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥ ३ ॥
करना जो शुभ काज आजकर देर लगाना ना चहिये,
कल जाने क्या हाल कालको दूर पिछाना ना चहिये,
दुर्लभ तनको पाय जाय विषयोंमें गमाना ना चहिये,
भवसागरमें नाव पाय चकरमें डुबाना ना चहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥ ४ ॥
दारादिक सबगेर फेर तिनमें अटकाना ना चहिये,
करि वमनके उपर फिरकर दिल ललचाना ना चहिये,
जान आपनो रूप कूप गृहमें लटकाना ना चहिये,
पूरे गुरुको खोज मजबका बोझ उठाना नाचहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥ ५ ॥

वचा चाहे पापनसे मनसे मौत भुलाना ना चहिये,
जो हे सुखकी लागतो कर सब त्याग फिराना ना चहिये,
जो चाहेतुं ज्ञान विषय के बाण विसामा ना चहिये,
जो है मोक्ष आश संगकी पाश फसाना ना चहिये ॥ नाममभुका.॥ ६॥
परमेश्वर हेतनमे वनमें, खोज न जाना ना चाहिये,
कस्तूरी है पास मिरगको, घास सुगाना ना चहिये,
कर संतसंग विचार निहार, कबी विसराना ना चहिये,
बिनसत जनसे कोटि जतनसें, पर पर पद पाना ना चहिये ॥ ७ ॥
॥ नाम मभुका. ॥
आतम सुखको भोग, भोगमें फिर भटकाना ना चाहिये,
पाई जिसको खांड, छांड तिस्को खल खाना ना चहिये,
यह जग स्वपना जांन ध्यानसें, मनको डुलाना ना चहिये,
ब्रमानंदको हेर फेर भवमें भरमाना ना चहिये ॥ नाम मभुका. ॥ ८ ॥



१५२ (लावणी--लंगडी)

सुन दिल प्यारे भज करले जिनवरका वारंवारा ॥ टेर. ॥
इस दुनियांमे एक बगीचा रंग रंगके फूल खिले,
कोई सावत कोई सुरजे कोई आजकेहे निकले,
आगे पीछे खिर जावेंगे वारी वारीमें सगले,
कोइ किसिका संग न साथी आवत जावत हे ईकले,
इनसे प्रीत करे क्या मूरख ईकदिन हो जासी न्यारा ॥ सुनदिल. ॥ १ ॥
इस दुनियांमे एक रतन है, मिलता वारंवार नही,
जैसे फूल गिराडा लीसे, फिर होता गुलजार नही,
उस्की किंमत हैबडी भारी, जानत लोग गँवार नहि,

परमेश्वरके मिलनेका, फिर उस्के विन दुवार नही,
काच खरीद करे वदले में देकर उस्कुं मति मारा ॥ सुनदिल. ॥ २ ॥
इस दुनियामे ईक पूतलीने एसा भारी जाल रचा,
स्वर्ग लोक पाताल जमीपर, कोई न उस्के हात वचा,
क्या जोगी क्या पीर पगंवर, सबकों उसनें दीया नचा,
फसा नहि जो उस वंधनमें, सोइ है गुरुदेव सच्चा,
मोक्ष मारगके जानेमें, सो ठग जानो लुटनहारा ॥ सुनदिल. ॥ ३ ॥
इस दुनियामे एक अचंवा, हमने देखा है जो वडा,
एक छोडकर चला जमीकुं दुजा करता है जगडा,
वो नहि मनमें समजे मूर्ख, मे भी जावन हार खडा,
घडी पलकका नही ठिकाना, किसके भरोसे भूल पडा,
आगे जाना समान करले, तियार नहि करवारा ॥ सुन दिल. ॥ ४ ॥
ईस दुनियामें एक कूप है, जिस्का पार कोई नहि पावे,
तिसके भरने कारन प्राणी, देश दिगंतर कौ जावे,
ध्यान भजन चिंतन ईश्वरका, उस्के कारण विसरावे,
दीन भया पर घरमें जाकर, सेवा कर कर मर जावे,
जिसने बनाया सोई भरेगा शोच फिकर तज देशारा.
॥ सुन दिल. ॥ ५ ॥
इस दुनियामे एक वृक्षपर पंछी करत वसे राहे,
सांज पडे जव सब मिल जावे, विछुरे होत सबे राहे,
चार घडीके रहने कारण, करते मेरा मेरा.हे,
एसी वात न मनमें लावे, वस वस गया वडेराहे,
क्याले आ क्या ले जासी, वृथा करत हे अंकारा ॥ सुनदिल ॥ ६ ॥
इस दुनियाके वीच निरंतर, एक नदी चलती भारी,
दिन दिन पल पल छिन छिन उसका वेग वडा हे वलकारी,

पसु पक्षी नरदेव मनुज, उसमें दुनीया वहती सारी,
जमे न उस्मे पैर कीसीका, करके जतन सव पचहारी,
विना ईश्वरके सुमरन तेरा, कवी न होगा निस्तारा ॥ सुनदिल ॥ ७॥
ईस दुनियामें एक अंधारा सवीकी आंखो मे छाया,
जिस्के कारन सूझ पडे नही, कोन हुं मे कांसे आया,
कोन दिसामें जांना मुझकुं, जिस्कु देखकर ललचाया,
कोन मालिक हे इस दुनियाका, किसने रची है या माया,
ब्रम्हानंद ज्ञान विनकवहुं मीटे नहि यह संसारा ॥ सुनदिल. ॥ ८ ॥



१५३ [राग--लावणी--सरल)

करो प्रभुका भजन जन्म यह, वार वार फिर नहि आता,
दिनदिन पलपल छिनछिन नलिनी दल जल लवचंचळ जाता ॥ टेर ॥
वालपणे केली रस रसियो, योवन तरुणी मद माता,
वृद्ध भयो तव चिंता जलयो, पलयो ढलयो सव गाता,
माला लेकर चले भजनको, जले भवन जलखो दाता,
मणीका फेरे मन चउं फेरे, हेरे मरकटके भ्राता ॥ करो प्रभुका.॥ १ ॥
कोटी पाप करकर धन संचय, मरणेसे नही डर पाता,
जिनके कारण करत दुरित नर, संग तेरे कोई नही आता,
यह सव पथ समागम जानो, भ्रात तात कांता माता,
जगमे जीवन जान सुजान समान, पाणि जल चल आता.॥ करो प्रभुका.॥ २॥
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठराता,
विना हरिके भजन कुजन, नरकानल जल विन जल जाता,
गेर रतन वहु काम तमाम, निकाम काचपर ललचाता,
गया दाव नहि आवे पुनरत्तर मरकर मूर्ख पछताता ॥ करो प्रभुका. ॥ ३॥
गर्भावासका काल संभाल, हवाल वाल क्यो विसराता,

भोग जोगकी आश, पाश, मायाके मूर्ख फस जाता,
ब्रह्मानंदके वाक मनाक चलाक जवी दिलमें लाता,
पाश मायाकी तोर मरोर सजोर गगन तल चल जात्ता ॥ करो प्रभुका. ॥ ४ ॥



१५४ (राग-लावणी)

गर्भवासमे कौल किया था, मेने प्रभुके गुन गानेकी ॥
मै भूला तुजको, प्रभुजी मेने देखी मौज जमानेंकी ॥ टेर ॥
बालपनेकी कहूं हकीकत, बडी मौजमें सूतेथे,
कंईपर हस्ते कईपर खडे खडे हम रोते थे,
उदम धूम मचाते थे, पांनीमे लगाते गोते थे,
चकरी भँवरा गोलियां खेल खेल दिन खोते थे,
नित लडाई लाते थे, तकमारी चोट निसानेकी ॥ मेंभूला. ॥ १ ॥
बालपना गया गुजर प्रभुजी, अब ज्वानीका नूर चढा,
मे बिलकुल भूला जैसे काम क्रोधका पूर चढा,
जाहांतहां गली कुचामे, पर स्त्रीया संग घूर खडा,
संग खडा मै अलग जिनराज भजनसे दूर खडा;
सारी बात विसर गया प्रभुजी, फिकर बसरई कमाने खानेकी
॥ मे भूला. ॥ २ ॥
बुढापनकी कहूं हकीकत, सब दुरबल हो गया शरीर;
गई जवानी जैसे ढलक गया नंदियोंका नीर;
हात पांव इंद्री थकित भई, अब चलती नही है ततवीर,
अब तो भरोसा आसरा तेरा मुजे है महावीर,
अब दिलमे लगन लगी है तेरे चरन लिव लानेकी ॥ मेंभूला. ॥ ३ ॥
बडी फजरका भूला भटका एजी कांई हो जावे शांम,
शांमका भूला मुझे मिलता नही है कई आंराम,

रामचंद्र कहे अरे तुम रटा करो जिनवरका नाम,
जिननाम रटेसे सकल हो वांछित पूरण काम,
हर्षचंद्र प्रभु रखो लाज पत यहि जैन केवानेकी ॥ मैं भूला. ॥ ४॥

२५५ [राग-लावणी]

श्री जिन नाम निज सार मंत्र है, जिनवरसे विसरना ना चहिये,
प्रभु नाम छोडके, ओरके गुनकूं गाना ना चहिये ॥टेर॥
गंगा जमुना छोड नदी नालोंमें, न्हाना ना चहिये,
जंगलके कुवेपर डेर लगाना ना चहिये,
घरकि स्त्रियांकूं छोड माल वेश्यांकू खिलाना ना चाहिये,
ओर रूसो तो रूसो भलाई भगवंत रूठा ना चाहिये ॥प्रभु नाम. ॥ १ ॥
हात शस्त्र न होय शेरभूतेको जगाना ना चहिये,
दान पुण्य कर पीछे पस्ताना ना चहिये,
शूरवीर हो लडे कैदमें पीछे हटाना ना चहिये,
विना साथके देश प्रदेशकूं जाना ना चहिये ॥ प्रभु नाम. ॥ २ ॥
अपने घरकी त्रियाकूं दिलका भेद बताना ना चहिये,
अपने घरके पास वैरीकूं वसाना ना चहिये,
होवे काला सर्प तिनोकूं गोद खिलाना ना चहिये,
सर्पके हलकमें अंगुली डालना ना चहिये,
अपने करके नीचे डंक विछुका दबाना ना चाहिये, ॥ प्रभु नाम. ॥ ३ ॥
क्षत्रीके घर जन्म पायके रणमें भगना ना चहिये,
ब्राह्मण होके उसीको वेद छोडना ना चहिये,
वनियाको व्यापार शूद्रको खेति छोडना ना चहिये.

धर्मकूं वढाकर धर्म घटाना ना चहिये,
रस्ते चलते सुनो कवही खाना पीना ना चहिये ॥ प्रभु नाम ॥ ४ ॥
चाहे जैसा अमीर होय के गरीबकूं सताना ना चहिये,
अपने दिलका दर्द मित्रसे छुपाना ना चहिये,
देवद्वार अरु राजद्वारमें झूट वोलना ना चहिये,
और गुरुकी सेवा कपटसे करना ना चहिये ॥ प्रभु नाम ॥ ५ ॥
दानासूं दुष्मनता प्रीतना दानसूं करना ना चहिये,
वेश्याके जाय कभी उस्के वश होना ना चहिये,
साधु संत अरु ज्ञती सती राजासे अडना ना चहिये,
अपने हातसूं सर्पकूं दूध पिलाना ना चहिये,
कहे सद्गुरु भविक जन प्रभु नाम भूलना ना चहिये ॥ प्रभु नाम ॥ ६ ॥

१५६ [राग–लावणी–सरल]

त्रिया सात घरोंसे निकली, जल भरण, कुवेपर सुज्ञानी,
नसेबाज सातोंके पिया दुख, रोती जाय भरे पानी ॥ टेर ॥
पहली सखीयें कहे सखीरी, मेरा पिया भंग पियां करे,
पीकर भंग जंग हम सेती, नाहक किस्सा कियां करे,
ओर रहे भर चुल्लुंमे उल्लुं वे लोटे लियां करे,
ना जानूं क्या मजा उन्हे सब घरके ताने दियां करे,
अच्छे घरमें लाडला, कैसी कीनीहककताला,
वो भंग पिये रहे मतवाला, एसेसें पडा मेरा पाला, २
पाला योंही चली ज्वानी ॥ नशेवा. ॥ १ ॥
सखी दुसरी कहे सखीरी मेरा पियानें चरस पिया,
बडी फजरसें पिया चरस पीपीके क़लेजा फूंक दिया,

जे पीना दो छोड पिया कुछ चंद रोज तुम चाहो जिया,
कफ खांसी खुरी उनको दई मारे चरसनें जोर किया,
वे पिये चरस जिटानी, नही कही हमारी मानी,
लाचार हूई खिसयानी, गई इसी फिकरसे ज्वानी,
ज्वानी सखीरी शोधत उनकी नहि जानी ॥ नशेवा. ॥ २ ॥

सखी तीसरी कहे पियानें अफीमका सीखा खाना,
सुका दिया तन वदन जिस्मका, गया खूंन फिर नहिं आना,
वहु तेरा समझाया पियाकों कह्या हमारा नहि माना,
वहुत वुराहे सोक अफीमका नहि छूटेजी संग जाना,
सुंदरकी किसमत फूटी, टूटीको नहि लगे वूटी,
ना अफीम उनसे छुटी, ज्वानी योंही वीती,
सखीरी योंही लिखि मेरे खवानी ॥ नसेवा. ॥ ३ ॥

सखी चोथी यों कहे सखीरी वहुत बुरां गांजा पीना,
मेरे पियानें वहुत पिया रंग जरद गांजेनें करदीना,
यही वस्फ गांजेका सखीरी फुंका जिगर जल गया सीना,
नहि ताकत कुछ रही वदनमें थका जोर मुशकल जीना,
गांजेकी उन्है धत भारी, भर भरके पीये हरवारी,
उनका या जला दई सारी, है उमर हमारी वारी,
है उमर हमारी सखीरी यही मुशिवत पडी उठानी ॥ नशेवा. ॥ ४ ॥

सखी पांचमी कहे पिया मेरा सरावका पीनेवाला,
भर प्याली वोतल कर खाली, घरका पट परकर डाला,
हो गाफिल रहे पडा मुझे दुःख वडा ओर कहे भरवाला,
रहे नशेमें चूर सखीरी दिनभर वो तो मतवाला,
पीपी सरावकी प्याली, करडाली वोतले खाली

काया हुइ जल भुन काली, कहि कहिके उनसें मैं हारी,
कहि कहि सखीरी ए नोवत सुन कहानी ॥ नशेवा. ॥ ५ ॥
छठी सखी यों कहे पिया मेरा, छांन पोस्त पिये वडी फजर,
कहे सो करना पडे सखीरी हमें हुकमसे क्या है उजर,
लगे पिंग बेहोस नशेमें, चूर जो देखे भरके नजर,
इसी फिकरमें सुनो सखीरी, जल भुन काया हो गइ पिंजर,
उन पोस्त पिया मन भाया, सुख जरा न हमनें पाया,
कोंसो जिन्होने पिलवाया, सब जनम योंही गमाया,
गमाया पियानें सार हमारी नहि जानी ॥ नशेवा. ॥ ६ ॥
सखी सातमी कहे पिया मायाके नशेमे चूर रहे,
वोही नसा अकसीरक जिस्से दुःख दालिदर दूर रहे,
लखो करे खुशामद उनकी खिदमतगारीमें हजूर रहे,
रामचन्द्रजी महाराज हमारे सदा ज्ञान भरपूर रहे,
हर्षचंद्र मुनियों फुरमाते, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष साते,
तजो नशा भविक प्रानी ॥ नशेवा. ॥ ७ ॥

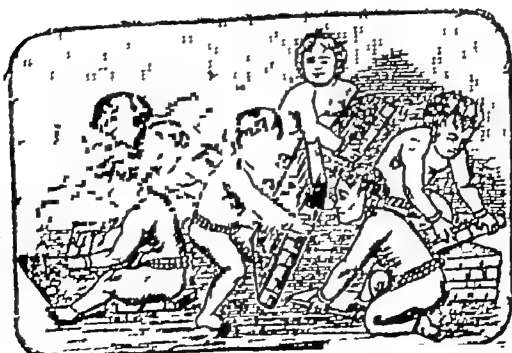


१५७ (राग–लावणी)

वे वे कर्मोके हात अंट लिखनेका
कछु राइ घटेना तिल नहि बधनेका ॥ टेर ॥
कइ रथ पालनकी बगी बैठ फिरता है,
कइ सिरपर बोजा लियां लियां फिरता है ॥ वे वे. ॥ १ ॥
कइ थिरमा शाल दुशाल ओढ फिरता है,
कइ गरीब गुरबा ठंडि लेर मरता है ॥ वे वे. ॥ २ ॥
एक लखिख सेठ लखोंका बिनज करता है,
जब पड जावे टोटा, इधर उधर फिरता है ॥ वे वे. ॥ ३ ॥

एक राजहंस समुद्रांके बीच रहता है,
पूरवले पुण्यसे मोति चुग खाता है ॥ वे वे. ॥ ४ ॥
एक अजब शेर गुलजार अयोध्या भारी,
दशरथके घरमे रामचंद्र अवतारी ॥ वे वे. ॥ ५ ॥
एक पिता वचनसे वन खंड लिया है धारी,
एक लारे लक्ष्मण रामके सीता नारी ॥ वे वे. ॥ ६ ॥
एक सूर्य चंद्रमा दोनूं ज्योति जगता है,
जग पडजावे फीका ग्रहण आय लगता है ॥ वे वे. ॥ ७ ॥
कीडीकु कण हस्तीकु मण मिलता है,
पूरवले पुण्यणे अपना पेट भरता है ॥ वे वे. ॥ ८ ॥
एक तुकन गिरी उस्ताद यों कहता है,
सायबको हिरदे धार बहिस्त जाता है ॥ वे वे. ॥ ९ ॥

इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ प्रथम खण्डे
लावण्याभिधं पंचमं प्रकरणं
समाप्तम् ॥





प्रकरण-छट्टा-होरी

१५८ ॥ दोहा ॥

प्रथम पुरुष राजा प्रथम प्रथम तीर्थंकर देव ।
श्री नाभेय अमेय गुण चरण कमल प्रणमेव ॥ १ ॥
सस मुख बांणी भारती नमी सरस्वती मात ।
चतुर मासिक होलिका कथा कहूं अवदात ॥ २ ॥
मांहे तो माता सुणे बाहिर सुणे ते बाप ।
होली कलहेको मूल है बोले उघाडा पाप ॥ ३ ॥
होली कलहनो मूलहै अकलहीन नर थाय ।
बालक तो जिहां तिहां रह्यो अकल बुढाकी जाय ॥ ४ ॥
आतम निंदा होलियें कीधी बारंबार ।
तेह कथा हिवे वर्णऊं, लिखित कथा अनुसार ॥ ५ ॥

(ढाल १ राग-तुमे तो भले विराजोजी)

आतम निंदा करियें प्राणी जैसे कीधी होली ।
गुण नही ग्रह्यो अवगुण आदरीयो ऐसी दुनिया भोली ॥ १ ॥
तुम तो आछा लागोजी आतम निंदा करके परनी निंदा त्यागोजी ॥ टेर ॥

वसंतपुर पत्तननो स्वामी, जितशत्रु महीपाल
राणी गोमती पुत्र गंगेवो, अरीयण कंद कुंदाल ॥ तुम. ॥ २ ॥
देवश्रम ब्राह्मणनी नारी, देवानंदा नामे ।
पांच पुत्रों परि छठी पुत्री, होली नाम निकामे ॥ तुम. ॥ ३ ॥
रूपलावण्य सोभाग सुंदरी, चतुराई गुण जाण ।
ओर नारीसूं उणहीज नगरे, इधकी इधकि वखाण ॥ तुम. ॥ ४ ॥
स्त्री कला चोठ्ठ सविजाणे, गीत नृत्य बहु राग ।
विनय भावसूं सब लोगनमे, तेहनो है सोभाग ॥ तुम. ॥ ५ ॥
पिण कुमारी सील वर्जीता, एहीज मोटी खोड ।
कोई न करीये केहनो हासो, कर्म तणो एनिचोड ॥ तुम. ॥ ६ ॥
मात पिता भाई ने मामा, लोक करे मुख मोड ।
करि बालागाए परणावो, जिम तिम जोडो जोड ॥ तुम. ॥ ७ ॥
मालव देश उजेणी नगरी, गोविंदने परणावी,
घणो दत्तडाय जो लेकर, होली सासरे आवी ॥ तुम. ॥ ८ ॥
सासू सुसरो जेठ देवरियो, नणदी नें जेठांणी ॥
भक्ति भाव भोजन संतोषे, पाछे पीवे पाणी ॥ तुम. ॥ ९ ॥
सविने सूता पाछे निशनी, द्वार खोल उठ जावे ।
उंच नीच पुरुषांथी राचे, कर्मए नाच नचावे ॥ तुम. ॥ १० ॥
न्यात जात भाई ने बंधव, गोविंदने समजावे ।
आपना कुलने एह विडंबे, रात्रनि बाहिर जावे ॥ तुम. ॥ ११ ॥
गोविंदरी सकरीने वरजे, दांते कडकडी बांटी ।
होली हांस करीने हसती, रहिरे मोल्या माटी ॥ तुम. ॥ १२ ॥
गोविंद जाणी नही घर लायक, पीहरडे पुंहचावी ।
सब कोई छयल हूवा मन राजी, होली पिहर आवी ॥ तुम. ॥ १३ ॥
उंच नीच सबहीसूं राजी, लोक करे बहु कथनी ॥
भातो मनमे कांइ न आणे, फिरे घुमती हथणी ॥ तुम. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

पिता परम दुख पावही, माता राखे मोह ।
घर.बाहिर काढी परी, एहनो स्युं अंदेह ॥ १ ॥
पिण माता मोही थकी, चाली तेहनी लार ।
होली करे कुटीरका, नगर तणे हिवे बार ॥ २ ॥



[ढाल २ राग—यतनीकी]

रहे राग तणे रंग राती, होली निज फागनें गाती ॥
माता पिण रहती न्यारी, करी पांचसे छयलसुं यारी ॥ १ ॥
गावे दुकडा मृदंग वजावे, प्याला भर भर भांगा पावे ॥
मदमाती रहे निसदीस, नित बेसे उघाडे सीस ॥ २ ॥
कोटवाल सुणी ए वात, देखो होलीरा अवदात ॥
राजासूं अरजी कीधी, राजा बालवानी आज्ञा दीधी ॥ ३ ॥
पहली डोकरडीने जाली ज्यो, पछे होलीने बालीज्यो ॥
एह आदेश दीधो राय, क्रोधथी इम कर्म बंधाय ॥ ४ ॥
पांचसे पुरुष छे तेहनें संघाते, याते सूती सुखभर राते ॥
तिन समे कोटवालज आई, मातानी कुटील गाई ॥ ५ ॥
सहू हा हा करनें जाग्या, होलीनें फुंकण लाग्या ॥
कोई नीसरवा नही पाया, पांचसे दोय मनुष्य जलाया ॥ ६ ॥
आर्तध्यान करीने मूवा, राक्षस राक्षसणी हूवा ॥
पूर्व भवनो वैर जणावे, वैक्रय करी रूप वणावे ॥ ७ ॥
कडेला सरीखो माथो, भोगल सारीखो हाथो ॥
छाजले सरीखा कान, ज्यांरो मुहडो गुफा समान ॥ ८ ॥

कुदाल्या सरीखा दांत, उंडो अति पेट अत्यंत ॥
आंख ऊंडी आतुर हुवा, जाणे साठीका कुवा ॥ ९ ॥
ज्यांरे लूंकडी पूंछसी मूछे, मूंहरा तालोडीरी पूंछ ॥
पग जेहवा पथरला लोट, जिणरा ऊंठ सरीखा होट ॥ १० ॥
राजा वसंत रमवाने आयो, राक्षसांने धूंवाढ उढायो ॥
राजा जिम करेने नाठो, सच सहे जबरो लाठो ॥ ११ ॥
लोक सबही दिसोदिस भागा, राक्षस चोडे रमवा लागा ॥
हांसी हस सहूने विहावे, तेहने सांम्हो कोइ न आवे ॥ १२ ॥
राजा मंत्रवादीनें बुलाया, राक्षस ते हाथ न आया ॥
मंत्र यंत्र न लागे टूणो, वैर मांगे राक्षस दूणो ॥ १३ ॥
मनुषांने भक्षीयर जावे, राजानें उदासी आवे ॥
हिवेस्यों होवे पिछताणें, इमनें चाल्या किसेगनाहणें ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसर तिहां आवीया, पांचसे मुनी परवार ॥
श्री गुणाकरसूरजी, करता पर उपगार ॥ १ ॥
तिण वन आवी ऊतऱ्या, कहे नगरना लोक ॥
स्वामी इहां न रहीजिए, राक्षस तणे संजोग ॥ २ ॥
साधु कहे भय एहनो, अम ऊपर नवी थाय ॥
राक्षस राक्षसणी सुलभ, ते देख्यां समझाय ॥ ३ ॥



[ढाल ३ मांरो प्रिउ ब्रह्मचारी]

राक्षस राक्षसणी तब आया, रात्रमें ते ध्याया हो ॥ साधुजी गुणधारी ॥
अट्टहास करवा लागा, खांडा जेहने हाथे नागा हो ॥ साधुजी ॥ १ ॥

ध्यान धरीनें मुनिवर बैठा, राक्षसडा चितमे पैठा हो ॥
वीतरागवा धर्म प्रसादे, सहू थंभ्या चित उन्मादे हो ॥साधुजी.॥२॥
होली पूछे तुम कुण होई, धर्म दया बतावो सोई हो ॥ साधु. ॥
समज समज मनमा हेस याणी, ए आपणोही अवगुण जाणीहो॥साधुजी॥३॥
कर अव तूं आतम निंद्या, होलीयें सदूगुरु वंद्या ॥ साधु. ॥
नगर राय लोक सब बोलावी, कहे मुज घट समकित आवीहो॥साधुजी॥४॥
हाथ जोडी पूछ्यो सब लोके, एह उपद्रव्य केहवे थोकेहो ॥ साधु. ॥
पहली तुममें अमे अवगुण जाण्यो गुरु वचनें आपो पिछाण्यो हो ॥सा.॥५॥

॥ दोहा ॥

अमचो अवगुण ए लह्यो, तुमचो दोस न कोय ॥
हिव एकार्य तुम करो, जिम मन राजी होय ॥ १ ॥
मैं पापणी विखीयावसे, कीधा पाप अघोर ॥
ते तुम सहूने सुणावजो, मुंहसे करी बकोर ॥ २ ॥
फागण सुद पूर्णिमा दिने, होलीए हवे नाम ॥
मोटी करी कुटीरका, मिलजो सारो गाम ॥ ३ ॥
छोटी कुटीरका मातनी, तेहनें प्रथम जलाय ॥
गाल राड करनें घणी, दीजो होली लगाय ॥ ४ ॥



(ढाल ४ गिरनारके पहाडीपरे)

सहुको राक्षसरूप थईनें, राक्षस रंग पहरी चोरी ॥ १ ॥
आपणो अब पाप प्रकाशे होरी ॥ टेर ॥
अब निंदारी एह जगतमें, फेरा फिरज्यो मुज दोरी ॥ अपणो. अब.॥२॥
चैत्र वद एकमनें दिवसे, धूल उडावज्यो भरजोरी ॥अपणो.अब.॥३॥

अनाचार एहवो आदरसे, तेहनें सिरपर ए ढोरी ॥अपणो.अव.॥४॥
चावल दाल लापसी लाडू, तुम जीमी ज्यो मिल टोरी ॥अपणो.अव.॥५॥
केहनो सोग संत.पन राखो पापण इसी गई कोरी ॥अपणो.अव.॥६॥
वरसां वरस एही तुम करज्यो, आतम निंद्या है मोरी ॥अपणो.अव.॥७॥
भव्या वस्त्र पहरी तिण वासर, सहुनें नमज्यो मद छोडी ॥अपणो.अव.॥८॥
देव गुरु अने धर्म आराधो, सुणीयो पुरुष अने गोरी ॥अपणो.अव.॥९॥
जो नही समजा एहमे, तो तेहनें भवथितहे बहुरी ॥अपणो.अव.॥१०॥
आतम निंदा एहवी कीधी, होरीनें भवथित करी थोरी ॥ अ.अ.॥११॥
महाविदेहमे मुक्ते जासी, आठुई कर्मके दुख तोरी ॥अ. अ.॥१२॥
अजर अमर पदवी पापसे, अनंत सुखाकी लगी डोरी ॥अ.अ.॥१३॥
अविनासी अविकार निरंजन विनयचंद कहे करजोरी ॥ अ.अ.॥१४॥

॥ इति होलीनो चौढालियो ॥



१५९ [होरी–राग–नाथ कैसे गजको फंद छुडायो]

राक्षस रूप बनें सब दुनिया लाज रहे नहि थोरी ॥
विकलवके जिम कूकर नांई, लाज रहे नहि थोरी ॥
हमारे कुण खेले ऐसी होरी ॥ जामें आवागमनकी डोरी ॥ हमारे.॥१॥
तात मात अरुगुरु लोकनकी, मर्यादा सब तोरी,
विन मद पांनकि येंही मूरख, करतो फिरत बकोरी ॥ हमारे. ॥ २ ॥
रासभ वाहन स्याम मुख करके, चमर बुहारी ढोरी,
धारत छत्र छाजको सिरपर, आगें बजे डफ डोरी ॥ हमारे. ॥ ३ ॥
गलीयें गलीयें फिरत उडावत, धूरनकी भर झोरी
मानत मोज माननी मनमे, मलमूत्रन जल ढोरी ॥ हमारे. ॥ ४ ॥

विनही हेर धन सांग चोरको, वनत पापको धोरी,
जमके चोर कंत हे येरो, ऐसें चिंतत गोरी ॥ हमारे. ॥ ५ ॥
रमत गेहर जिम नरक निवासी, मार मची घन घोरी,
कोई डंडल कुट पाहनते, नांखत पर सिर फोरी ॥ हमारे. ॥ ६ ॥
ऐसे काम्यपें कहत वडो दिन, ऐसी दुनिया भोरी,
रेखराज कहे या होरीतें, दूर सदा विचरोरी ॥ हमारे. ॥ ७ ॥



१६० (होरी राग–पूर्ववत्)

हमारे एसी होरी मन भावें, जातैं आवागमन मिट जावे ॥ टेर ॥
अपूर्व करन आगए दर्शन, सप्त कर्म जरावे
चेतन भूलकी भस्म ऊडाई, शुध मन मंदिर आवे ॥हमारे.॥ १ ॥
संवर अंवर भलपन भूषन शुध श्रृंगार सजावे,
क्रिम तमो क्रिया कुशम छरी लेकरमें रमन स्वसहज रमावे ॥हमारे.॥ २ ॥
निरमम नीर चरन गुन चंदन, करन कपुर मिलावे,
करूणा केशर अवीर अध्यातम, अद्भुत रंग रचावे ॥हमारे.॥ ३ ॥
बानक वसंत वीराग वनचारू अनुभो आवास सुहावे,
सुमती सखी संग समरस पीकें, चेतन फागवनावें ॥हमारे.॥ ४ ॥
पर अवगुण त्याग पकर पिचकारो, भरभर रंग चलावें,
सुबुध सखी संग रीझ्यो चेतन, ग्यांन गुलाल ऊडावे ॥हमारे.॥ ५ ॥
सुभ चित्त चंग मृदंग मार्दव, भेरी भावना भावे,
सुरत शरणाई जयाणा झांझा, प्रभु गुन पडह वजावें ॥हमारे.॥ ६ ॥
धर्म कथादि धमाल रागनी, गहिरेस्वर कर गावें,
निकट भव्य ख्याली सुनश्रवणे, रोम रोम विकसावे ॥हमारे.॥ ७ ॥

अनुक्रम जोगनीरूंधी लेश्या, सयलेशी पद ठावे,
रेखराज एसी होरी तें, अजर अमर पद पावे ॥ हमारे० ॥ ८ ॥
रस परव निधि भूशालनगीनें, फागुन मास सुहावें,
शुक्ल चतुर्दशी ये पद कीयो, सुन श्रोता विकसावें ॥ हमारे० ॥ ९ ॥



१६१ [होरी–राग–मति ताको नार वीसांणी]

या विधि होरी मचावे, जव जियरा सुख पावे, ॥ टेर ॥
तत्वारथ चरचा चर चोवा, मलि मलि अंग लगावे,
शांति सुधारस रंग राचकर, राग गुलाल ऊडावे ॥ जव जियरा. ॥१॥
श्री जिन आगम धुनि सुपान कर, मन वच तन छक जावे,
सुमति नार जुन हर्ष हर्षके, श्री जिनके गुण गावे ॥ जव जियरा. ॥२॥
जिनवर गुण वा निज स्वरूपको, एक रूप दरसावे,
निरमल सरधा धर्म दिढाई, ग्रह तन नेक अघावे ॥ जव जियरा. ॥३॥
परतें त्याग दान करतें जव, निजमें निज विरमावे,
मानकयों वड भाग खेल कर, आवागमन मिटावे ॥जव जियरा. ॥४॥

१६२ (होरी–राग–पूर्ववत्)

सुमति गृहे होरी मचाई, चतुर चित चेतन राई ॥ टेर ॥
ईतमें सुमति राधिका ठाडी चित चिदरायकनाई,
काल लब्धि यह ऋतु वसंतमें दंपती मिल विहसाई,
हरव अंग अंगन समाई ॥ सुमति० ॥ १ ॥
ज्ञान सलीलदृग केशररंग छिरकत मानु घन वरषाई,
राग गुलाल अवीर ऊडावत मुख मद छकनि छकाई,
बहुत भ्रमतपन बुझाई ॥ सुमति० ॥ २ ॥

भय तृज नृन्य कारणी नाचत, स्यात्पद सुर जत्र जाई,
गुरु उपदेश ताल मधुरि धुनि, होत श्रवण सुखदाई,
भलि विधि नीज गुणगाई, ॥ सुमति० ॥ ३ ॥

यह विधि होरी रचावत दंपत, सोभा वरणी न जाई,
विलखत क्रूर कुमति हेसो मूढनके चित भाई,
बहुत दुरगति दुखदाई, ॥ सुमति० ॥ ४ ॥

आज सुमति गृह आनंद मंगल बहु विधि होत वनाई,
मानक धन्य चतुर चेतन तिन, सुमति सुनी अपनाई,
भयो त्रिभुवनकोराई ॥ सुमति० ॥ ५ ॥



१६३ [होरी—राग—पूर्ववत्]

या कहा आदत पिय तोरी, नित खेले कुमति संग होरी ॥ टेर ॥
कुमति क्रूर कुबला संग राच्यो, लाज सरम सब छोरी ॥ नित. ॥ १ ॥
राग द्वेष मय धूलि लगावें, नाचे ज्यौं चकडोरी,
मोह महा मद छाक छाककें, पायो दुख करोरी ॥ नित. ॥ २ ॥
तुच्छ विषय रंसगभर पिचकारी, कुमति कुतिय संग ढोरी,
जा प्रसंग दुखि भये फिर, भिति करत वर झ्योरी ॥ नित. ॥ ३ ॥
निज घरकी पिय सुध विसारकैं, परत पराई पौरी,
तीन लोकके ठाकुर कहियेतुं, सो विधि सबही बोरी ॥ नित. ॥ ४ ॥
वरज रही वरज्यो नहि मानत, ठानत हटत्र जोरी,
हट तज सुमति भज मानक, तो विलसो सिव गोरी ॥ नित. ॥ ५ ॥



१६४ [होरी आत्मापर--राग पूर्ववत्]

शाम कैसी खेलत होरी, अचरज खुब बनोरी, कोई जन भेद लहोरी ॥टेर॥
तनरंग भूमिवनी अति सुंदर, वाल्न बाग लगोरी,
नाडी जहां अनेक गली शोभत, खेले तहां सांवरोरी,
संग वृषभान किशोरी ॥ शांम कैसी० ॥ १ ॥
पांच सखी मिल, पाच रंगभर देतवहोर वहोरी, राधिका लेकर डारे सांमपर,
सब तन दियो भिगोरी, कृष्ण मन मोद भयोरी ॥ शांम कैसी० ॥ २ ॥
होरीमे मोद मान कर शांमने राधिका भेष धरोरी, मिल सखियन संग फाग मचायो,
खेलत मगन भयोरी आप सूधी भूल गयोरी ॥ शांम कैसे० ॥ ३ ॥
खेलत खेलत जान न पायो, दीर्घ काल गयोरी, वन वन फिरत मिले
जब सतगुरु सखियन संग विछरोरी शांम ब्रह्मानंद मिलोरी ॥शांम कैसी.॥४॥

१६५ (होरी आत्मापर--राग पूर्ववत्)

आयो वसंत सखीरी, मिल खेलीये होरी ॥ टेर ॥ आयो वसंत. ॥
परके भूल गई गृह काजन मनमे तापरयोरी,
जिन जिन खेली होरी शांमसंग तिन वड भाग लयोरी, ॥ आयो वसंत.॥ १॥
तज सब काज आज घरकेरें लाजको दूर धरोरी,
फागुनके दिन वितेजातहें फिर पीछे पछतोरी ॥ आयो वसंत. ॥ २॥
सतसंगति वृंदावन जाकर, शामको खोज करोरी,
मकर विचार जुगति वेरो जानन पावे वहोरी ॥ आयो वसंत.॥ ३ ॥
मन पचकारी पकड कर सुंदर ध्यानको रंग भरोरी,
प्रेम गुलाल मलो मुख उपर ब्रह्मानंद रसलोरी ॥ आयो वसंत. ॥ ४ ॥

१-आत्मा २-बुद्धि ३-हाम्मय ४-विषय

१६६ (होरी आत्मापर--राग पूर्ववत्)

सखी मिल खेलो शांम संग होरी, आयो वसंत समोरी ।टेर॥ सखी.॥

मिल व्रज[1] नारी चली वृंदावन[2] मारग चूक गयोरी, मारग चूक गयोरी,

इत उत ढूंढत सोच करत मन, मिलत नहीं सांवरोरी ॥ सखी. ॥ १ ॥

ढूंढत ढूंढत थकित भई जब, नारद[3] आंन मिलोरी ॥ सखी. ॥ २ ॥

काहेको शौच करतहो ववरी, या दिश शांम गयोरी ॥ सखी. ॥ ३ ॥

देखत २ जात डगरमें मोहन पाय गयोरी

लंपट झपट कर चारी तर्फसें, मिलकर जापकडोरी ॥ सखी. ॥ ४ ॥

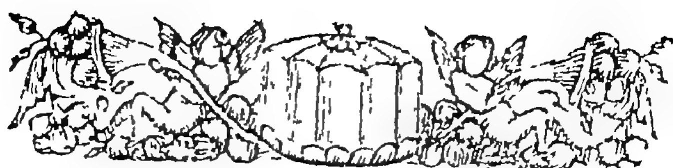
कोइ गुलाल मलत मुख ऊपर कोइ देत रंग बोरी,

कोइ लपट कटिकोपट[4] खेंचत, ब्रह्मानंद बरसोरी ॥ सखी. ॥ ५ ॥

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ प्रथम खण्डे
प्होर्‍याभिधं षष्ठ प्रकरणम्.



१–जिज्ञासुजन, २–परमार्थ विषय, ३–सतगुरु, ४–अज्ञानका पडदा.



अथ प्रकरण सातवा–व्याख्यान.



१ (अथ अक्षय तृतीयापर आदिनाथ चरित्र.)



(राग–चलित)

आदि नृपपद धरी वरण रचना करी आदिहि संजम केवलिए
आदि त्रिभुवन पती दायक शुभ मती वंदत शाश्वति रंगरलीए १

दूहा.

नाभीराय मन मोहनी, मरु देव्या वरनार।
सरवारथ सिद्धथी चवी, आय लियो अवतार ॥ १ ॥

राग–चौपाई

उत्तरा पाढा चार कल्याण, अभीचमांही पहुतां निर्वाण।
परमानंददायक भगवान, पणमूं आदीश्वर जग भान ॥ १ ॥

दूहा.

सुख सेज्याये सोवतां, अर्ध निशा मोझार
मरुदेवी मन भावता, स्वप्न लह्या दश चार ॥ १ ॥

(ढाल १ ली. राग–सुपनारी तथा उमादे भटयाणीकी.)

पहलडै सुपनैजी कांइ देख्यो वृषभ धड़कतो, गाजंतो गजराज, तीजे तो सुपनेजी खंधालो दीठो केहरी, श्री देवी सुभ साज ॥ १ ॥ आदीश्वर जयकारी हो, सुखकारी स्वप्न दिखाइया ॥ टेर ॥ पांचमे मालाहो सुविशाला कुसुम तणी भली, रसमें पूरण चन्द, सातमे दिनकर हो तम हरतो निर्मल ऊगतो, आठमे धूज महेंद ॥ आ० ॥२॥ नवमे तो निरख्यो मन हरख्यो, कुंभ सुहामणो, पद्म सरोवर सार, एकादशमे उदधि हो जल पूरण बहु परिवारसूं, देवयान सुखकार ॥ आ० ॥ ३ ॥ षोडश जातीहो बहु भांती राशज रत्नी, अग्नि शिखादी पंत, निरखी हरखे राणी हो चतुर्दश स्वप्न सुणावीया, फल दाखो मुज कंत ॥ आ० ४ ॥ सुखदायक जगनायक हो, मन भायक सुत तुम जनमस्यो, होसी मंगल माल, सुण राणी सुख पाईहो, हिव करती गर्भनी पालना, पूरण पहली ढाल ॥ आ० ५ ॥

दूहा.

असित चतुर्थि आसाढकी, चवीया आदि जिनंद ।
चैत असित अष्टमी दिने, जन्म्या त्रिजगानंद ॥ १ ॥
आवी छप्पन कुमारका, शक्र आदि अधिकार ।
जंबुद्वीप पन्नत्तीये, उच्छवनो विस्तार ॥ २ ॥

ढाल २ (राग–दलालीकी देशी)

जिन जननीको आनंद निरखन, आवे शचिनको साथ
करजोरी कहै धन्य हो माता, तें जायो जगनाथ ॥
आज आनंद भयो भरत खेत्रमे धर्म दिवाकर प्रगट भयो ॥ टेर ॥ १ ॥

सीस नमावे जिनगुण गावे, भावे नृत्य करंत,
अनमिखने न भया जिन निरखन, तन मन धन विकसंत ॥ आ० ॥ २ ॥
सुरपति जगपति जननी प्रणमी, कहे धन्य हो तुम मात,
रतन कुक्ष धारणी धोरणी, महिमा कहियन जात ॥ आ० ॥ ३ ॥
धरणेंद्र वरसावे कंचन, रत्न अखंडित धार,
तिहूं लोक आनंद भयो है, मुख मुख जयजयकार ॥ आ० ॥ ४ ॥

(ढाल ३ राग—सिवाके नंदना.)

नाभजूके नंदन, जाऊं बलिहारी ॥ मरुदेव्या नंदन ॥ जा० ॥
तुम सिव सुखके दातार ॥ ना० ॥ टेर ॥
सुपन तणे अणुसारथी, ऋषभ दियो जिन नाम,
चंद्र कला जिम वाधतो, रूप महा अभिराम ॥ ना० ॥ १ ॥
सुरनारी कर कमलमे, मधुकर ज्यूं विचरंत,
रमण हसन चलने करी, माता मन मोहंत ॥ ना० ॥ २ ॥
घम घम वाजे घूगरा, ठम ठम ठुमके चाल
मेरे छंगन मंगना, राच रयो अति ख्याल ॥ ना० ॥ ३ ॥
कवहूं आंख अंजावतो, परहो छिटकी जाय,
त्यायोही फिर नावही, माता पकडे धाय ॥ ना० ॥ ४ ॥
तव रहै प्रभु रीसायके, तब कल कलिकराय,
युगलिक सुरनर मानवी, सबही रहे रिजाय ॥ ना० ॥ ५ ॥

दूहा.

क्रीड़ा करण पाणी ग्रहण, पुरि निवसन परिवार ॥
कला रचन आदिक सकल, आद चरित्र अधिकार ॥ १ ॥

राग—छप्पय.

प्रभू परण्या पद्म निदोय, सुमंगला ने सुनंदा,
सुनंदानेंनंद हुवानि नाणु अमंदा, सुमंगलानें एक टेक
अविचल बाहूबल, ब्राह्मी सुंदरि धीय सती,
सत्यवंती निरमल, पाटोधर श्री भर्तजी,
सो पुत्रांके माय, शालि वृक्ष परिवार त्यूं महिमा कहिय न जाय ॥१॥

चौपाई

बीस लाख पूरव परिमाण, कुमर पदे रहिया भगवान,
तरेसठ लाख पुरव रही राज, पाछे सान्या आतम काज ॥ १ ॥

ढाल ४ राग—बन्नाकी

हांजी प्रभु लोकांतिक सुर आवीया ॥ हां ॥ दे जिननें उपदेश ॥हां॥ अठारे कोडा कोडिनो ॥ हां ॥ मेटो अग्यान कलेश ॥ १ ॥ आदनाथजीनी शिविकाबनी अति सोहति ॥ टेर ॥ हां ॥ रत्नजडित रलियामणी ॥ हां ॥ चिहुं दिश लटके लूंब ॥ हां ॥ रत्नजडित आसन विचे ॥ हां ॥ सिरपर लटके झूंब ॥ आ. २ ॥ हां ॥ सुदर्शन नामें सिविका ॥ हां ॥ बैठा आद जिणंद ॥ हां ॥ भूषण सहु जिन तन धऱ्या ॥ हां ॥ साथे सुरनर वृंद ॥ आ० ३ ॥ हां ॥ इंद्र धरी प्रभु पालखी ॥ हां ॥ गीत नृत्य नहि अंत ॥ हां ॥ सिधारथ उद्यानमें ॥ हां ॥ आव्या श्री भगवंत ॥ आ० ४ ॥ हां ॥ चतुमुष्टी लोचन करी ॥ हां ॥ अशोक तरु तल साम ॥ हां ॥ चार सहस नृप संगसूं ॥ हां ॥ संजम लीनो स्वाम ॥ आ० ५ ॥

दूहा.

चेत वद अष्टमी दिने, बेलानो पचखाण ।
सुध ध्यान मन ध्यावतां, उपनो चोथो ग्यान ॥ १ ॥

कीयो विहार विनिता थकी, लारे बहु परिवार ॥
प्रभु वंदी घर आवीया, साले विरह अपार ॥ २ ॥

सोरठा.

मौन्य धरी महाराज, विचरे पुर बहु गाममे,
तोडन कर्म इलाज, सहै परिसह नाथजी ॥ ३ ॥

[ढाल ५ शुकृत कर ले रे मूंजी.]

भिक्षा कारण श्री जग तारण घर घर गोचरि जावे, भोला जन मन भेद न समजे, ओर वस्तु ले आवे ॥ १ ॥ काइं कल्योजी ३ आदीश्वर स्वामीकां ॥ टेर ॥ जुगलिक नरनो वारो नेडो, किणहीन मांगी भिक्षा, केंम मुनीनें दानज दीजे, किणहीन देखी दिक्षा ॥ कां० ॥२॥ कन्या कंवारी अति सिणगारी भूषण सोहै भारी, ए प्रभु लीजे ढील न कीजे, मानो अरज हमारी ॥ कां० ३ ॥ गज सिणगारी हो दो भारी, गल रतननकी माला, ए प्रभु लीजे आप चढीजे ॥ कांई फिरो थे पाला ॥ कां० ४ ॥ हयवर मातो चाले तातो, रंगमे रातो नीको, रत्न जडित पलान सुहातो, लीजे मुज मन तीखो ॥ कां० ॥ ॥ ५ ॥ रथ वाहनी सिवका पीनस, जे चाहे ते लीजे जग नायक तुम अंतरजामी, पाला नही फिरीजे ॥ कां० ६ ॥ मुक्ताफल भर थाल विशालहि, प्रभुके सन्मुख आवे, कंचन रतन्न भाजन मन गमता, ल्यो तो मन सुख पावे ॥ कां० ७ ॥ भुजबंध कंठी एह अंगुठी, कणदोरो ने माला हार अर्द्धहार ए रूडा ल्यो, थिरमा ने दुसाला ॥ कां ॥ ॥ ८ ॥ फूल गुलाव केवडा ने चंपा, गूंथ २ नें ल्यावे पिण प्रभुजी मनमें नही वांछे, तव मनमें अकुलावे ॥ कां० ९ ॥ चारोली विदाम ने पिसता, श्रीफल ओर सुपारी, वरक लगावै बहु विध ल्यावै ॥

अरु बीडी पानारी ॥ कां० १० ॥ सचित अचितनो भेद न समजे, न मिल्यो शुद्ध अन पाणी ॥ च्यार हजार चेला चिंत चिंतै वावै करडी ताणी ॥ कां० ॥ ११ ॥ च्यार हजार चेला प्रभु गोडै, कर वाला कूका ॥ थे मुख नवि बोलो मून न खोलो ॥ म्हे मरांछां भूखा ॥ कां ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

कछ महा कछ आद दे, लिंग अनेरो धार ॥
भूखां मरता भागीया, साधू चार हजार ॥ १ ॥
पूरवली अंतरायथी, वीता बारै मास ॥
हिवै पधार्‍या गजपुरे, काज करण श्रेयांश ॥ २ ॥
बाहूबलनो सुत सुखद, सोमप्रभ राजान ॥
तस सुत श्री श्रेयांश ए, युवराजा गुण खान ॥ ३ ॥

(ढाल ६–राग पणिहारी)

श्री श्रेयांश सुपनो लह्यो ॥ जग नायकजी ॥ लागो सुदर्शन काटहो ॥ सुख दायकजी ॥ मे निज हाथथी धोइयो ॥ ज० ॥ दूर कियो निर्धाट हो ॥ सु० ॥ १ ॥ टेर ॥ सोम प्रभ पुरपति लह्यो ॥ ज० ॥ सुभट करत संग्राम ॥ हो. ॥ वेर्‍यो मिल शत्रु घणा ॥ ज० ॥ कुमर सहाज दियो ताम ॥ हो. ॥ २ ॥ सुबुधि सेठ रवि कीरणने ॥ ज. ॥ भूमि पतन करंत ॥ हो. श्रेयांशे भुज बल करी ॥ ज० ॥ मंडल मांहि धरंत ॥ हो. ॥ ३ ॥ तीनूं मिल नृपनी सभा ॥ ज० ॥ कीयो एह निदान ॥ हो. ॥ कुमरजी श्रेयांशजी ॥ ज० ॥ लहिसैं लाभ महान ॥ हो. ॥ ४ ॥ इतरै भमता गोचरी ॥ ज. ॥ आय गया जिनराय ॥ हो. ॥ श्रेयांश देख गवाक्षथी ॥ ज० ॥ चित आनंदित थाय ॥ हो. ॥ ५ ॥

॥ दूहा ॥

जाती समरण ग्यान तद, उपजीयो सुखकार ॥
नव भवना संबंधनो, जाण लीयो अधिकार ॥ १ ॥

[ढाल ७--राग जीलानी.]

स्वामी ललितांगज देव हुवारिध भारीजी ॥ सुखकारी जिनराज ॥ स्वा. ॥ स्वयंप्रभा मेंहूती प्रभुनी प्यारिजी ॥ जि० ॥ स्वामी वज्र जंघ भूपमें श्रीमति राणीजी ॥ सु. २ ॥ तीजे भवमें युगल युगल निजाणीजी ॥ जि० ॥ १ ॥ सुधर्म स्वर्गमे मित्र तणो पद पाया हो ॥ सु० २ ॥ पंचम भव प्रभु आनंद वैद्य कहायाजी ॥ जि० ॥ सेठ पुत्रमें केशव नाम धरायोजी ॥ सु० २ ॥ रसमें भव अच्युत मित्रपणो मन भायोजी ॥ जि० ॥ २ ॥ सामी सप्तम भवमे वज्रनाभ नर देवाजी ॥ सु. २ ॥ भूप तणो सुत सारथी व्है करि सेवाजी ॥ जि० ॥ अष्टम भवमें परम अनूत्तर वासीजी ॥ सु. २ ॥ नवमे भवमे हुवा ऋपभ सुविलासीजी ॥ जि० ॥ ३ ॥ में पिण प्रभुको पर पोतो कहिवायोजी ॥ सु. २ ॥ नाम श्रेयांशए देख दर्श सुख पायोजी ॥ जि० ॥ गोखथी उतरी चरणे सीस नमायोजी ॥ सु. २ ॥ फली मनोरथ माल सफल दिन आयोजी ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥

गोख थकी उतर तदा, प्रणमें प्रभुना पाय ।
तीन प्रदक्षणा देयनें, आण्या निज घर माय ॥ १ ॥
इखु रस घट भेट नृप, आण्या जन तिण वार ।
करै विनती स्तवन युता, श्री श्रेयांसकुमार ॥ २ ॥

(ढाल ८—राग मरहटी लावणी)

तूं पुरुषोत्तम त्रिजग उत्तम तूंहि विधाता सुखदाता । सब जग ज्ञाता सबको ग्याता ॥ तव गुण पार नही पाता ॥ टेर ॥ तूंही बुध तूंही सुध निरंजन तूं शंकर ईश्वर धाता, तूंहिज विष्णु तूं जग जिष्णूं, तूं चतुरानन विधाता ॥ तूं० ॥ १ ॥ तूं सुख करता सब दुख हरता, तूं शिव भर्ता शिवगामी ॥ तूं अविकारी महिमा भारी, जग वच्छल अंतरजामी ॥ तूं० ॥ २ ॥ तूं मन मोहन तूं जग सोहन । कोहन मोहन नवि माया, नहि तुज लोहन सब जग थोहन द्रोहन रंचन शिव राया ॥ तूं० ॥ ३ ॥ करुणा कीजे मेहर धरीजे । इक्षुरस हमपें लीजे । लाभ ए दीजे हम मन रीझे । जगजीवन पावन कीजे ॥ तूं० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ कवि चतुराई.

दाहिन कर बोल्योतिसै । करुणा निधि अवधार ॥
मुज कर भोजन लीजीए । मै तुम आग्याकार ॥ १ ॥

॥ कवत ॥ सवइया २३

बालपनेही तें सेव धरो चित्त । अंगुष्ठ तें अमी पान करायो ॥
इक्षु ग्रहे हीतें वंश चल्यो । तुम तिलक कीयो जब राज दिरायो ॥
भरतादि निज नंदनकूं । अरुमे रेही शुभ लंछन सुखदायो ॥
भोजन पूजन सम्मन दानन । लोचनमें फिर आडोही आयो ॥ १ ॥

॥ वामकर उक्तः दोहा ॥

रेरे नीच निठुर निलज । वृथा धरै अभिमान ॥
आपहि आपो वखानता । होवत नही महान ॥ १ ॥

आद थकी मेला वस्या । छानो नही गिमार ॥
मार्पे गुन मोसालको । करतन लजत लिगार ॥ २ ॥

॥ सवइया २३ ॥

ढालकूं राख वचावत स्वामीकूं चाप धरूं अरु वीर तापाऊं ।
अंकनको गिनवो हमतें अरु वामेही गर्दभ काज कराऊं ॥
वामेही पास सोये सुख पावत । भोजन करत मे माखी उडाऊं ।
व्याहन भोजन रहत अकेलो चोर जुवारी कितें गुण गाऊं ॥ २ ॥

॥ दूहा ॥

करत विवादहि करवींहूं । निज २ गुरूता मान ॥
मानूं याते वर्ष लग । भूख मरे भगवान ॥ १ ॥
कहे श्रेयांश कृपा करो । द्यो अवद्रोह मिटाय ॥
होय भले अवलीजीए । मुज मन वंछित थाय ॥ २ ॥



[ढाल ९—ख्यालकी]

ऋषभ जिनेसर कीयो पारणो । मांरी रस सेलडी ॥ म. टेर ॥ घडा एकसो आठ सेलडी । रस भरीया छैनीका ॥ दान दीयो श्रेयांश कुमरजी । मांडलीया प्रभुनूं काजी ॥ मां० ॥ १ ॥ देव वजावे दुंदुभी सने । सोनइयानी विरपा ।कीयो पारणो आद जिनेसर । मिटी भूख नें तिरखाजी ॥ मां० ॥ २ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारज मनो कामना । घर २ मंगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा ॥ मारैं आखातीज तिंवारजी ॥ मा० ॥३॥ संकट काटो विपत विडारो । राखो हमारी लाज । नानूराम करजोडी कहता । ऋषभदेव महाराजजी ॥ मां० ॥ ४ ॥

॥ छप्पय ॥

वरस सहस्र छदमस्थ । रह्या जिन त्रिभुवन भूषण । मास फाल्गुन असित पक्ष ग्यारस निरदूषन । प्रात समय महाराज सकड मुख नाम उद्यानही । निगोध वृक्ष तल नाथ धर्‍यो जब तूरिय ध्यानहि । अष्ट भक्त तपनें विषै उपनो पंचम ग्यान । अव परिवार बखान हूं । सूनो मन निश्चल आन ॥ १ ॥ चऊरासी गणसार चउरासी गणधर कहिये । मुनि चउरासि हजार । लाख तिहूं समणी लहिये । श्रेयांश प्रमुख तीन लाख अरु पांच हजारहि । श्रावक उत्तम जान व्रत द्वादश शुध धारही । सुभद्रा आदे करी श्रावकणी परिवार । पांच लाख अरु उपरै कही चोपन हजार ॥ २ ॥ संहस चार शत सात पचास मुनि पुरवधारी । अवधिग्यानी नव सहस्र केवली वीस हजारी । वैक्रयी वीस हजार शतही षट उपर जानो । विपुल मतिवारे हजार सार्द्ध शत षटहि प्रमाणो । एताही वादी मुनिए अनुत्तरोपपाती जान । संहस बावीस षट् सत भला प्रणमूं गुण मणि खांण ॥३॥

चंद्रायणो

माघ मास पक्ष असित तिथी तेंरस दिने । गिर अष्टापद शिखर स्वाम पद्मासने ॥ षट् उपवास संथार प्रातःसमय सही ॥ अरिहां ॥ दश सहस्र मुनी साथ नाथ शिव गति लही ॥ ४ ॥

॥ अथ घनकी चाल ॥

जपो तुम नाभिनंद भगवान । नाम तें होय जावें कल्याण । प्रभूकी महिमा है असमान ॥ धरो तुम उजल चित्तसें ध्यान । जिनुसे खुलेगी सुखकी खान । वचन एक रखीजे परमाण । प्रभूकूं एक चित्त ध्यावें । आपदा जडहीतें जावैजी ॥ १ ॥ जपो तुम मरुदेव्याके नंद । जिनुसें

होय जावे आनंद । जाय टरे कर्मनके सब फंद । प्रगट होय जावे सुखके कंद । छोरद्यो जूठा ए जग धंध । खुलेगी निज गुणकी मकरंद सीख ए मेरी सुन लीजे । जिनेंदका जाप सदा कीजेजी ॥ २ ॥
नगीनें नगर वीच आया । बसें जिहां जिन धर्मी भाया ॥ अक्षय तृत्तीयाका दिन पाया । जवि ए जिनके गुण गाया । सुनतही ज्ञान हुलसाया । मंदमती मनमें सुर जाया । चरित्र ए रेखराजजी गावे । प्रभु गुण भव्यने मन भावेजी ॥ ३ ॥

इति अक्षय तृतीया व्याख्यान.

॥ २ छन्द ॥

श्री ऋषभ जिणेसर जगत सिरे । सुरनर सम भर तूं एण अरे
हित सागर नागर विघ्न हरे । इम दास सदा तुज आस धरे ॥ १ ॥
अही अग्नि उदक भय हेल हटे । अरि करि हरि रोग निरोग मिटे ।
जिण जाप किया संताप कटे । तिण ऋषभ २ सहु लोक रटे ॥ २ ॥
विकराल अकाल जिम काल धसे । जणवीहै मुखदोइ जीहलसे ।
विषहर आसी विषके मडसे । तुज चरण कमल चित जासबसे ॥ ३ ॥
गिरि गहन सघन बन जन न मिले । बहु सावज साच पिसाच छले ।
घस वंस दावानल प्रवल वले । प्रभु समरण संकट तेह टले ॥ ४ ॥
दरियो भरियो जन देखि डरे । फिर गिर सम मगर अनेक फिरे ।
उछले जल जोर जिहाज भरे । तो बिन कुण तेहथी सहाय करे ॥ ५ ॥
सूरा पूरा खग हाथ गहै । कायर वाशु जिम धूज रहै ॥ धडके धड रुधिर प्रवाह वहै ॥ प्रभु पछतिहांजइलछल है ॥ ६ ॥
परतख गिरिपर ईं उंचपणे । ए रावण जिम घर इंद्र तणे । कुंजर मद झर बहु लोक हणे । तुज सेवक गज अज जेम गिणे ॥ ७ ॥
झाड्स नाहर जे निज जंपे । आपड चापड गयगड कंपे । नख-

भर मोती घर २ भंजे । जनते जिनते मृगपति गंजे ॥ ८ ॥ बंध पडीयो रोह रुडीयो छूटे । बेडी पिण घण नेडी तूटे । हथ कडियां पाय जडीयां छूटे । प्रभु नाम लीया लीला लूंटे ॥ ९ ॥ जसु अंगज लोदर संगनमे । प्रतिकूल सदा सिर शूल खमे । अति कुष्ट गती अति दुष्ट समे । प्रभु व्याधि उपाधि असाधि गमे ॥ १० ॥ धन धान्य निधान घणी संपे । चतुरंग चमू घर २ चंपे केविसुणवाकहीये कंपे । जो नेह धरी निज जन जंपे ॥ ११ ॥ बहु चाकर वृंद चलै केडै । नरपति पिण अति हित कर तेडै । जिणरै समरथ साहिव-नेडै । तीन भवनमें तस कुण छेडै ॥ १२ ॥ गज गामिनी भामिनी भाग भरी । अति रूप निरूपम जानपरी । जिण देव खरी मुज सेव-करी । तिणरे घर धरणी सतीसखरी ॥ १३ ॥ बिलसे जग भोग जिसा भावे । सुखकंद दोगंधक सुरदावे । परभव पिण अति शुद्ध गति पावे । धन नाभ नृपत सुत जे ध्यावे ॥ १४ ॥ तुज सुजस करी त्रिभुवन छायो । तूं आगम निगम आगम गायो । षट् दरसण पिण तूंहिज ध्यायो । इम जान सुजान शरण आयो ॥ १५ ॥ अति दीन दयाल कृपाल इसो नहि नायक लायक राज जिसो । जिनराज अवरसूं काज किसो । निरखो मुनि जर भर दास दीसो ॥ १६ ॥ जिणसे सतणे फण सहस्र सही । फण २ वलि दोय २ जीहलही । गुण छेहन पावै तेह अही मुख एक सकूं मे केम कही ॥ १७ ॥ गु-छराती लूंका गछ धणी । सिवपाट दिपे सिंघराज गणी । तसु सील कृपाल ये हित भणी । किर्ति ए इम मुनि कृष्ण भणी ॥ १८ ॥

इति ऋषभप्रभु छन्द.



३ [अथ खंदक षट्‌विंशो--राग चंद्रगुप्त राजा सुनो.]

सावत्थी नगरी वसे । कात्यायनी खंदक नामरे । परिव्राजक पंडित महा । ज्ञाता मृदु परिणामरे ॥ १ ॥ मन वसीयोजी महावीरमें ॥ टेर ॥ वेसालिक श्रावक भलो, वसे पिंगल निर्ग्रंथरे, पूछे आय खंदक भणी । लोक सांत अनंतरे ॥ म० ॥ २ ॥ जीव सिद्धि अरु सिद्धजी, सांत अनंत बतायरे, हानि वृद्धि संसारनी, कवन मरनथी थायरे ॥ म० ॥ ३ ॥ पांचही प्रश्न पूछतां, शंकित कखितहोयरे,पुनः पुनः पिंगल पूछीयो । नांदे उत्तर कोयरे ॥ म० ॥ ४ ॥ मून करी जव मुनी गयो । खंदक मन दिलगीररे, इतरे निमुणि पधारीया क- यंगलाये वीररै ॥ म० ॥ ५ ॥ जातां जन देखी हर्षीयो । फलिया वंछित आजरे । भ्रमर तिमिर हरवारवी । पूछूं जई जिनराजरे ॥ म० ॥ ६ ॥ वंदन नमन विधी करी । प्रश्न अर्थ सहेतुरे चिंतवी आश्रम जइ लीया उपकर्ण चवदे समेतुरे ॥ म० ॥ ७ ॥ आवै अति उमंगसूं । जिन गोयमनें भाखेरे । पूर्व संगति ताहरो । मिलसीधर अवि लाखेरे ॥ म० ॥ ८ ॥ पूछें कुण किन कारणे । मिलसी किति यक वाररे । जिन कहे खंदक आवीयो। दाख्यो सर्व विचाररे ॥ म० ॥ ॥ ९ ॥ अद्यैव मिलसी जिन कहै । पूछै बलीगणधाररे । प्रभु संजम ग्रहि वाके नही । हंताहुसी अणगाररे ॥ म० ॥ १० ॥ इतरे निकटज आवीयो । गोतम सनमुख जायरे । द्रव्य निक्षेपस रागथी । वाजिन ज्ञान दिपायरे ॥ म० ॥ ११ ॥ खंदक भलाही तूं आवियो । वचन सराग प्रकाशरे । पिंगल प्रसन पूछियां ।नायां आयो विमासरे ॥ म० ॥ ॥ १२ ॥ सांची छैकए वारता हंता सत्य निसंदेहरे । किम जाणीं मुज मन तणी । कहै वीर वचनथी ए हरे ॥ म० ॥ १३ ॥ धरमा चारज माहरा, सववेता जगनाथरे। कहै खंदकतसुं वंदवा । चालुं तां-

हरी सांथरे ॥ म० ॥ १४ ॥ जथा सुख जेजकरोमती । आवै गोतम संगरे । देख्यो दिदारज वीरनो उपज्यों उत्कृष्ट उमंगरे ॥ म० ॥ ॥ १५ ॥ वियटभोजी वीरजी । अविभूषित सोभायरे शुभ पुदगल सहु लोकनां । लागा जिनतन आयरे ॥ म० ॥ १६ ॥ दोष रहित सब गुण भऱ्या । समता सिंधु जिनेंदरे दोषसिंधु अन्य देव है । कहां खद्योत दिनेंदरे ॥ म० ॥ १७ ॥ विधिपूर्वक वंदन करी । कथी जिन गोयम जेमरे । मनगत भाव बतावीयो । उपज्यो पूरण पेमरे ॥ म० ॥ १८ ॥ अमृत ध्वनि जिन दाखवै । प्रश्नोत्तर विस्ताररे । लोक जीव सिद्धि सिद्धजी । द्रव्यादि चतुः प्रकाररे ॥ म० ॥ १९ ॥ द्रव्य क्षेत्रथी सांत है काल भावथी है अनंतरे । बाल पंडित द्विभेदथी । मरण कहैं भगवंतरे ॥ म० ॥ २० ॥ चलितादि द्वादश बालना । मरनथी भ्रमण संसाररे। पंडित द्विभेदें करी । जीव लहे भव पाररे॥ म० ॥ २१ ॥ एम सुणी प्रति बुद्धियों । कहै दाखो जिन धर्मरे । निसुणी मन वयरागीयो । मिट गयो मिथ्या भ्रमरे ॥ म० ॥ २२ ॥ संजम ग्रही शुद्ध भावसूं । भणिया अंग इग्यांररे । प्रतिमा गुणरत्न संवछरे । तप कीयो विविध प्रकाररे ॥ म० ॥ २३ ॥ थांकी शक्ती शरीरनी । धन्ना जेम शरीररे । आज्ञा लही अनसन कीयो । वैभारगिर परधीररे ॥ म० ॥ २४ ॥ दीक्षा द्वादश वर्षकी । अनसन मास प्रमाणरे । उत्कृष्टायु स्वर्ग बारमे चवि विदेहैं निरवानरे ॥ म० ॥ २५ ॥ पंचमांग दूजा शतकमे । आदि उद्देशानुसाररे । ढाल करी खाचरो दमें । खंदकनो अधिकाररे ॥ म० ॥ २६ ॥ कलश ॥ पूज्य श्री कनीरामजीको चरणकज[1] सेवक सदा । कहै कीर्तन खंदक मुनिकी । सुनतही लहे संपदा ॥ वेद भू अंक शिवही संवत् असित नवमी असाढमें वार मंगल करन मंगल सुनत श्रोता मन गमे ॥ १ ॥

इति खंदक षड्विंशी.

1—खेमराज.

४ (अथ फाटका निषेध.)

॥ दोहा ॥

अहो एह कलियुग विषे, तज्या सकल व्यापार ॥
मेहलीला मरु फाटको, इनहीको अधिकार ॥ १ ॥
सधन थकी निरधन हुवे, स्ववस पर आधीन ॥
सन्नीपात किसी दशा, भये दीन परवीन ॥ २ ॥

(ढाल एक)

सुणियोरे बाबू० ए देशी ॥ सुणियो नरस्याणा मतिय करो तुम फाटका, घरकार होय न घाटका । देवे छे सतगुरु चाटका ॥ सु०॥ मत पिवै जहेर भर बाटका, ख्याल बना है जाटका ॥ सु० ॥ टेर. ॥ आरत ध्यान रहै नित मनमें, धर्म ध्यान नहि सूजे, जोको मिलै अलिया गलियामे, प्रथम भावकी बूजेरे ॥ सु० १ ॥ अब कै भैया तेजी भारी सुण जीव होय गयो राजी, घरमे आय कहै सुन प्यारी। करो रसोई ताजीरे ॥ सु० २ ॥ कंचनमई करायूं बाजू करसूं पीरी जर्द, भूषण सर्व भांतका भारी । तो जाणी ज्यो मर्दरे ॥ सु. ॥ ॥ ३ ॥ भांगा घोटे तार जमावे, बाजारा विच जावे, इतराहीमे मंदीहाली, छाने डुसक्या खावेरे ॥ सु० ४ ॥ देख कामिनी बोले कंता । दीसै वदन उदासी । बोल्यो सटक खोलदे गेणा, नही तो खाऊं फासीरे ॥ सु. ५ ॥ बोली त्रिया पहला मे वरज्या, चंगो नहि ए चालो, गहणो सर्व सासूका कर को, इणकी वाट न नालोरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ नैन लाल कर बोल्यो त्रडकी, खोले छे के नाई, थाग वापको नही छे गहणो, तूंजकठासूं ल्याइरे ॥ सु० ७॥ जो मुजसे तूं करै जिंदगी, तो कूवै पड जाऊं. हाथ जोड बोल्यो सुण प्यारी,

बेगो एह छोडाऊंरे ॥ सु० ८ ॥ ज्यूं त्यूं छली चालियो छांनै, अब वोहरापें आवे, दूणो द्रव्य व्याज अरु दूणो, काटो लार लगावेरे ॥ सु० ९ ॥ इते सुणी वन्द आव्यो अबधू, नेन पलक नही खोले, फरक अंक उनसे नहि छाना, जो कुछ बचन ज बोलेरे ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ लटका कर कर करे डंडोता, जो कुछ बात बतावै, जावै बजार पेडा ले आवे, गांजा चडस पिलावेरे ॥ सु० ११ ॥ पलक खोल कहै सुनरे बच्चा । माई शक्ति हुकुम सुनाया, इतना फरक धर कमती रख्खे, फिरतो अलख जगायारे ॥ सु० १२ ॥ जाजा कही सिख जब दीनी, किनकूं नही सुनादो, आय सदन धन सब सूंचायो, वावो कर गयो बावोरे ॥ सु० १३ ॥ मुल्ला फकीर ज्योतिषी जिंदा, भाव भैरूंका गावे, अक्कलबंध सबहीकूं धोखे, फिर दलिद्र जोग नहि जावैरे ॥ सु० १४ ॥ इनभव एह फजीति होवे, परभवमें दुख पावे, तो पिण भोले नर नहि समजे, अंदर ज्ञान न आवेरे ॥ सु० १५ ॥ साल बयाल उगणीसेकाती, चवदश चोमासि चारू, नवेनगर हलुकरमि हितकूं, बदी ढाल एवारूरे ॥ सु० १६ ॥ रेखराजजी कहै सदा सुख चावो, तो इणनें छिटकावो, लाभ हान करमां अनुसारे, धर्म ध्यान लय ल्यावोरे ॥ सु० १७ ॥

इति फाटका निषेध.



५ (अथ दीपमालिकापर महावीर स्वामिनो जन्म कल्याण.)

दोहा.

कुंडनपुरवर अवतर्या, सिद्धारथ महाराय ॥
रत्नकूख तसल्लासनी, प्रगट हूवा जिन आय ॥ १ ॥

छपन दिसा कुमारिका, नमी मात उमंग ।
नृत्य गीत करवा भणी, आंणि हिये उमंग ॥२॥

॥ढाल १ ली--राग चलत.॥

ताल मृदंग रंग चंग वाजे, मादल भेरीनै वंसरी, वीणा तूणा ढोल वाजे, धऊ ३ करत धऊंसरि॥१॥ ढंकण ताल कंसाल तलीया, काख वाजित्र कीकरी ॥ संख घंटा वंश वाजे ॥ खुरमुहीनें पुरपुररी ॥ २ ॥ रणसिंघो रणतूर वाजे ॥ मेरु कंड उडंवरी ॥ सुरणाइ सुरनाद वाजे ॥ मंजरीनें खंजरी ॥ ३ ॥आरवी अरवाण वाजे ॥ रणक वाजा झल्लरी ॥ सतारो ने तूंव वीगा ॥ तंदुरो हुल्हालरी ॥ ४ ॥ सारंगी रवाव वाजे ॥ खंभायचोनें रणतुरी॥ नोवत वाजा घोर वाजे ॥ वाजानो अति सुर करी ॥ ५ ॥ झणणथी झणकार हुवे ॥ तणण वीणा तंतरी ॥ वाजा नें झणकार थांहे ॥ मधूर मधुर सुर वंसरी ॥६॥

दोहा.

गीत विनोद करे घणा, रूप अनूपम सार ॥
अचरिज पामें देखतां, नाटिकना झिणकार ॥१॥

॥ ढाल--तेहिज. ॥

ककैक सकत, खखैख मकित गगै ग्रूंमर देतरी ॥ घघै वाजा घोर वाजै, फिर २ फेरी लेतरी॥१॥ नने नाचत कुमर२ कुमरी, चचे अति चूं पेकरी ॥ जजे अतिही जोत दीपै, सोमे अति रूपे करी ॥२॥ जजे अति जणकार करती, नने नाटिक सुंदरी, टटै टपके झिमक झिमके, ठठे ठाव पुरंदरी ॥३ ॥ डडे डंवर अति भारी, ढढे ढणकत झामरी, रणणा टरणकार करती, तता थइ २ करवरी ॥ ४॥

थयेथिरसू नाच करतां, दद्दे ताली देकरी॥ धधे धरती हेतधरसू, नने फेरी लेतरी ॥ ५ ॥ पपे पल २ फरू फीर, ववे वांहस वारती ममे मोटी राग कर २, कोयल शब्द सुणावती ॥ ६ ॥ जजे जपती नाम प्रभुको, ररे रामतमैरमे ॥ लले लयावे रूप नव २ देख मन सहूके गमे ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ जी. ॥

धन तसलादे तो ॥ भगो हे, धन कुल धन अवतारो ॥ धन कूंष तुमारी ॥ देवंगणा मिल इम कहे हैं ॥ गांवे मंगल दो चारो ॥धन० ॥ १ ॥ पूर्व पुण्य कीधा घणा है ॥ तैं जायो तिलोकीरो नाथ ॥ ध० ॥ रतन कूखतें ऊर धर्यो है ॥ जग तारण जगनाथ ॥ ध०॥ ॥ २ ॥ देइ प्रदक्षिणा भावसुं हे ॥ देव्यां वैठी आंगणमायो ॥ ध० ॥ मधुर २ स्वर गावती है ॥ वले ढोले सीतल वायो ॥ ध० ॥ ३ ॥ महा पुण्यवंत तूं सही है । धनकूंख रतनारी खांग ॥ ध० ॥ दरसण दीठो ताहरो हे ॥ थाये कोड कल्याण हे ॥ ध० ॥ ४ ॥ धन माता मोटी सती है ॥ पुत्रपदार्थ एह ॥ ध० ॥ एक सहस्र आठ लक्षण धणो हे ॥ वालक सोवन वरणी देह ॥ ध० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३ री–राग अंबलारो वाडो बनडी. ॥

कीरत वधारी हे माता जगतमें आरी ॥ मुरत थारी हे वारी मैं वलिहारी हे माता ॥ तूं पुण्यवंत मोटी ॥ १ ॥ पुत्र रतन जायो जग जस पायो ॥ देव इंद्राणी मिल मंगल गायो हे माता ॥ तु० ॥ २ ॥ माताने भावे जेहना मंगल गावे ॥ हर्ष वधावे इंद्र तुम गुण गावे हे माता ॥ तु० ॥ ३ ॥ मधुरीतो २ देव्या वोले छे वाणी ॥ राजा सिद्धारथ घर, तिसलादे राणी हे माता ॥ तू० ॥ ४ ॥ प्रभुजीनी माता हे रयण कुख धारिणी ॥ वैकुंठ वासो ताहरी मोटी करणी हे माता ॥ तूं० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ४ थी–राग तेल चढी मृगानेणी हो. ॥

दान सुपात्र दीधो हे ॥ तिसलादे राणी ॥ सेव्यां केइसा धरसाल जीवदया दिल आंणी हे ॥ ति० ॥ तो घर मंगल माल ॥ १ ॥ सील सदा तें समगत धारी हो ॥ ति० ॥ कीधा केइ व्रत रसाल ॥ तप्पतप्पा केइरूडा हे ॥ ति० ॥ तोडया केइ कर्मना जाल ॥ २॥ भाव भगत सतगुरनी हे ॥ ति० ॥ सुणिया केइ ज्ञान रसाल ॥ व्रत वारे तें पाल्या हे ॥ गति० ॥ अतिचार सहु टाल ॥ ३ ॥ इंद्र आवीने गुण गावे हे ॥ ति० ॥ जोडी वळे दोनूंही हाथ ॥ रतन कुक्ष धर मोटी हे ॥ ति० ॥ जन्म्या श्री जगनाथ ॥ ४ ॥



॥ ढाल ५ वी–राग वाडी तो खुली ला० ॥

हिवै माता नो पोढे पारंग महिल मैहे ॥ सेज्या तो अति सुख आल हे माता ॥ पुण्यवंत जस जग ताहिरै ॥ माता जायो तैं पुण्यवंत वाल हे माता ॥ पुत्र रतन तें जनमियो ॥ १ ॥ सुख करता त्रिहुं लोकमे, पुण्य पोर सै जाण हे माता ॥ सर्व लक्षण कर सोभतो, अपनो गर्भमे आण हे ॥ माता पु० २ ॥ माता अवर नाही काइ तो जिसी ॥ र्इण स्वर्ग मृत्यु पाताल हे माता ॥ इंद्र नरेंद्र सहुथी वडो ॥ ए छे नाथ त्रिलोकी वाल हे माता ॥ पु० ३ ॥ मुक्ति मारग देखाडसी ॥ दुखियाने सुख आधार हे माता ॥ रोग ने सोग निवारिसी ॥ भव देसी पार उतार हे ॥ माता ॥ पु० ४ ॥ माता धीरज मोटी ताहरी ॥ आयो धीरज पुरुष अवतार हे० ॥ प्रभुजी तूठा आप क्षमा करे ॥ मेटा सिवपुरना दातार हे० ॥ पु० ५ ॥



॥ ढाल ६--राग काफी ॥

सोहमसुरपतमन इम चिंतवै ॥ हिरण गमेखी बुलाऊंरे ॥ प्र-भुजीरो जन्म भयो हे ॥ जिन मुख निरखण जाऊंरे ॥ १ ॥ जांणवि मांण वणाय मनोहर ॥ घंट सुघंट बजावुंरे ॥ प्र० २ ॥ संपत स-हित निरखण माता मुख ॥ चरणे सीस नमाउंरे ॥ प्र० ३ ॥ अपछर सर्व लगी एक ओले ॥ निरख हरख सुख पाऊं रे ॥ प्र० ४ ॥ छ

॥ ढाल ७--राग झाझना गीतनीः ॥

पडि वंधो धर पास ॥ माता अंकथी लियैरेहां ॥ पंच रूप कर संच ॥ सिखर पर आविया हां ॥ १ ॥ मिलिया चोसठ इंद ॥ अति उछव करे हां ॥ अठ सहस्र चोसट कलस जलसूं ॥ भरेरेहां ॥ २ ॥ ढाले श्री जिन सीस, नाटक नव २ रमेरेहां ॥ कर २ राग छतिस । सहूनै मन गमेरेहां ॥ ३ ॥ शक्र वृषभ कर रूप ॥ उछव करै मन रलीरेहां ॥ लाया जननी पास ॥ आस पूगी भलीरेहां ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥

वस्त्र जोडो कुंडल जुगल । कोड वत्तिस सोवन्न ॥
हुकम थकी उसके अमर । भरै भंडार रतन ॥ १ ॥
नंदीश्वर सगला अमर । मोछव करै अपार ॥
दीदी वधाइ नृप भणी । घर २ मंगलाचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ८--राग हिरणी जव चरे ॥

धन सिद्धारथ राजवी ॥ ललना ॥ ललाहो धन तसलादेजी नार ॥ जिनवर जनमिया ॥ ललना ॥ ओछव मोछव करे घणा ॥ ॥ ललना ॥ वोलाव्यो सहु परिवार ॥ जिन ॥ १ ॥ करे दसोटण भावसूं ॥ ललना ॥ भोजन विविध प्रकारे ॥ जिनवर

अथ दसोटण भाषा.

मांडयो उत्तंग तोरण मांडवो ॥ तेतो नीपजाव्यो तुरत नवौ ॥ वली वैसिवानै आंगणो ॥ तेतो नील रतन तणौ ॥ सगासणीजा घरे आया ॥ सिद्धार्थराजानें मन भाया ॥ सखरा मांड्या आसण ॥ वैसता किसी विमासण ॥ आंगे मूकी सोनानी आडणी ॥ ते किम जायै छांडणी ॥ ऊपरि सोनाना थाल ॥ अत्यंत घणुं विसाल ॥ विचमे चउसटि वाटकी । लिगार नही जाति काटकी ॥ गंगोदक दीधा ॥ थालक चोलाने हाथ पवित्र कीधा ॥ सगली पांती बैठी ॥ तितरै परूसण हारी पैठी ॥ ते केहवी छे ॥ सोले श्रृंगार सज्या ॥ वीजां काम तज्या ॥ हाथनी रूडी ॥ विहुं वांहे खलके चूडी ॥ लघु लाघवी कला ॥ मन कीधा मोकला ॥ चित्तनी उदार ॥ अति घणुं दातार ॥ दौलतरी हाथ ॥ परमेसर देजे तेहनो साथ ॥ धसमसती आवी ॥ सगलानें मन भावी ॥ पहिली फलहली परूसे ॥ सगला नाही याहिसे ॥ पाका आंवानी कातली ॥ ते बूरा खांडसूं भरी वली पातली ॥ पाका केला ॥ ते वली खांडसु कीधा भेला ॥ सरवरा करणा ॥ ते वली पीला वरणा ॥ नील्या नारंगा ॥ रगै दीसता सुरंगा ॥ नी कोयली रायण ॥ परूसी भायणि ॥ दाडिम कुली ॥ खांतां पूजैरली ॥ निमजानें अखोड ॥ खातां पूजै कोड ॥ दाख नें विदाम ॥ केई कागदी अनेकेईस्याम ॥ सीलेमी खारक ने खिजूर ॥ ते पिण परूस्या भरपूर ॥ नालेरनी गरी ॥ ते मालवी गुलसुं भरी ॥ नींवु खाटा नें मीठा ॥ एहवा कदे न दीठा ॥ चारोलीनें पिसता लोक जीमैं हसता ॥ वली सेलडीने सदाफल ॥ ते पिण परूस्या परिघल । हिवै पकवान आणै ॥ ते केहवा वखाणै ॥ सतपुडा खाजा ॥ तुरत ना कीधा ताजा ॥ सदलानें साड्या ॥ मोटा जाजे मासादना छाजा ॥ पछै

परूस्या लाडू ॥ जाणे नान्हा गाडू ॥ कुण २ ते नाम ॥ जीमता मन रहे ठाम ॥ मोतिया लाडू ॥ दालिया लाडू ॥ सेविया लाडू ॥ कीटीरा लाडू ॥ नांदोलिरा लाडू ॥ तिलना लाडू ॥ मगरीया लाडू ॥ जगरिया लाडू ॥ सिंह केसरीया लाडू ॥ वली बीज्या आण्या पकवान ॥ जीमतां वाधइं मुखनोवान ॥ कुण २ जाति ॥ नवी २ भांति ॥ दहिवडा ॥ गूंदवडा ॥ फीणा ॥ अति घणं जीणा ॥ सखरा सोट ॥ मांहे नही खोट ॥ पातली सेव ॥ परूसी रूडी टेव ॥ तरताऊ घेवर ॥ कीधा तेवर ॥ तल्या गूंद ॥ श्वेत जाणे मुचकुंद ॥ कुंडलाकृत जिलेवी ॥ ते पिण सहुंइंलेवी ॥ सीरां नें पूरी ॥ हूंस न रह अधूरी ॥ मीठो मगद ॥ आप्यो माल नगद ॥ वले परूसी मुरकी ॥ जीम डिखांवानें फुरकी ॥ वले खांडनो चूरमो ॥ साकरनो चूरमो ॥ पछै आंणी लापसी ॥ नान्हा मोटा सहुको धापसी ॥ पछै परूसी साली ॥ ते जिमीये विचाल ॥ ते कुण २ भेद ॥ सांभलतां उपजे उमेद ॥ सुगंधशाली ॥ सुवर्णशाली ॥ धवलीशाली ॥ रातीशाधी ॥ पिलीशाली ॥ शुद्धशाली ॥ कौमुदीशाली ॥ कमलशाली ॥ कुंकणिशाली ॥ देवजीरशाली ॥ राय भोग शाली ॥ वले साठी खोखा ॥ अखंड चोखा ॥ निवली स्त्री खांड्या ॥ सबली स्त्री छड्या ॥ हलवे हाथ सोह्या ॥ नखवती स्त्री वीण्या ॥ उत्तम स्त्री उज्या ॥ सुघड स्त्री ओसाया ॥ सुजाण स्त्री उतान्या ॥ एहवा अणियाला ॥ सुगंध सरस फरहरा कूर परूस्या ॥ वले परूसी दाली ॥ ते पिण घणुं रसाल ॥ कुण २ अने केहवी ॥ मंडोयरा मुंगानी दाली ॥ कावली चिणांनी दाली ॥ गुजराथी तूवरनी दाली ॥ आलरनी दाली ॥ मटरनी दाली ॥ वरणें पीली ॥ परिणामें सीली ॥ वले परूस्या विरतपरिघल ॥ जे खाधां होइ अतिवल ॥ पिण ते केहवा ॥ आजना ताव्या घी ॥ भैंसना घी ॥ मजीठ वरणा घी ॥ केसर वरणा घी ॥ सूरहा घी ॥

नाकपेय घी ॥ सदा आदेय घी ॥ हिवै पोली परूसी पिण ते केहवी २ ॥ आछी पोली ॥ घीमांहे झबोली ॥ फंकरी मारी फलसे जाय ॥ इकस पोलिनो एक कवलीयो थाय ॥ हिवै सालणा परूस्या पिण ते केहा २ ॥ नीली छमकाई डोडीना सालणा ॥ टींडोरीना सालणा ॥ टींडसीना सालणा ॥ चीभडाना सा० ॥ कोहलाना सालणा ॥ करेलाना सालणा ॥ कंकोडाना सालणा ॥ करमदाना सालणा ॥ कालिंगडाना सालणा ॥ केल्हाना सालणा ॥ आयरियाना सालणा ॥ तोरियाना सालणा ॥ मुंठ कचराना सालणा ॥ खरबूजा सालणा ॥ मतिराना सालणा ॥ मोगरीना सालणा ॥ नीबुना सालणा ॥ आंबोलना सालणा ॥ वाल्होलना सालणा ॥ वले चवलानी फलीना सालणा ॥ सरघूनी फलीना सालणा ॥ सांगरीना सालणा ॥ आंमलाना सालणा ॥ कैरना सालणा ॥ फूलना सालणा ॥ फोगना सालणा ॥ नीली मिरिचांना सालणा ॥ नीली पीपरना सालणा ॥ वले रायता सालणा ॥ खाटा सालणा ॥ खारा सालणा ॥ मीठा सालणा ॥ गल्या सालणा ॥ तल्या सालणा ॥ वघान्या सालणा ॥ धुंगान्या सालणा ॥ छमकाया सालणा ॥ वले परूसी भाजी ॥ ते उपरि सहु कोराजी ॥ ते कुण २ ॥ सरसवनी भाजी ॥ सोवानी भाजी ॥ मूलांनी भाजी ॥ वथुवानी भाजी ॥ चिणानी भाजी ॥ चिल्हनी भाजी ॥ चंदलेवानी भाजी ॥ मेथीनी भाजी ॥ हिवै वडा आवै ॥ ते सहूनें भावे ॥ ते केहवा २ ॥ मिरिचाला वडा ॥ तल्या वडा ॥ कोरा वडा ॥ कांजीना वडा ॥ घोल वडा ॥ मूंगाली दालीना वडा ॥ मोठानी दालीना वडा ॥ उडदानी दालीना वडा ॥ घणे घोलेना भीना ॥ घणै तैले सीना ॥ मरीचाना घणा चमतकार ॥ अत्यंत सुकुमार ॥ हांथि लीधां ऊछलै ॥ मुहडै घाल्या तुरत गछे ॥ घणु स्यु स्वर्गना देवता देवी पिण खावानें मन टल

वले ॥ हिवै पलेव आवे ॥ पिण ते केहवी ॥ चोखानी पलेव ॥ जवानी पलेव ॥ बाजारीनी पलेव ॥ हलदीया पलेव ॥ पींपरिया पलेव ॥ सूंठिया पलेव ॥ सबडकीया पलेव ॥ हिवै भोजन विचे पीवाना पाणी आवे ॥ ते केहवा ॥ साकरना पाणी ॥ दाखना पाणी ॥ गंगाना पाणी ॥ पालर पाणी ॥ कपूर वासत पाणी ॥ एलची वासत पाणी ॥ ताढा हिमवंत पाणी ॥ हिवे दही अने दहीना घोल आवे ॥ ते केहवा ॥ गायना दही ॥ भैंसना दही ॥ काढा जाम्या दही ॥ मधुरा दही ॥ वले सखरा सजीराला ॥ सलवणा ॥ जाडा घोल ॥ तेहना भर्या कचोल ॥ चांवलासूं जिमता थया रंगरोल ॥ वले सखरा करवा ॥ भरी आण्या झरशा ॥ मांहे छगी राई ॥ जीमतां दील नदी कांई ॥ उपरि जीरालूंणनो प्रतिवास ॥ करणहारी पिण खास ॥ हिवै चलूनां पाणी आवे ते केहवा २ ॥ केवडाना पाणी ॥ काथाना पाणी ॥ कपूर वास्या पाणी ॥ पाडल वास्या पाणी ॥ चंदन वास्या पाणी ॥ एलची वास्या पाणी ॥ सुगंध पाणी ॥ गंगोदक पाणी ॥ पालर पाणी ॥ तिणसूं चलू कीधा ॥ हिवै मूंछण दीजे ॥ ते केहवा ॥ वांकडी सोपारीनी फल ॥ चिकल सोपारीनी फल ॥ ते पिण केंसर कपूर वासित ॥ वली तीखा लवंग ॥ जावंत्री नें जायफल ॥ मोटा डोडा ॥ पाका नागरवेलना पान ॥ घणां आदर ने मान ॥ घणा गीतमें गान ॥ घणा तान नें मान ॥ पछें भल वस्त्र पहिराया ॥ ते कुण २ ॥ देव दुस्य वस्त्र ॥ रत्न जडित वस्त्र ॥ पांभडी वस्त्र ॥ क्षीरोदक वस्त्र ॥ अटाण वस्त्र ॥ खासा वस्त्र ॥ महमूंदी वस्त्र ॥ अधोतर वस्त्र ॥ नरमा वस्त्र ॥ सेल्हा वस्त्र ॥ कपूरधूली वस्त्र ॥ मलमल वस्त्र ॥ ससवी वस्त्र ॥ जरवाफ वस्त्र ॥ मुखमल वस्त्र ॥ चीणी वस्त्र ॥ बुलबुल चसमा वस्त्र ॥ मसंजर वस्त्र ॥ कथीपा वस्त्र ॥ पाट्ट वस्त्र ॥ टसरिया वस्त्र ॥ सिणिया वस्त्र ॥ भैरव वस्त्र ॥ नारीकुंजर वस्त्र ॥ श्री साप वस्त्र ॥ पीतांबर प्रमुख

वस्त्र दीया ॥ पचरंगा वागा पहिराया ॥ वलि काशमीरी केसरना छांटणा कीधा, वलि भला विलेपन सुगंध लगाया ॥ वले बावना चंदनना विलेपन कीधा ॥ अरगजा लगाया ॥ वली सखराचोवा ॥ चंपेल । केवडेल । मोगरेल । जवादिपोईसडा लगाडया ॥ वले जाई । जुई । कुंद । मचकुंद । केवडो । चंपो ।मरुवो ।मोगरो। दमणो। केतकी । मालती । प्रमुखना फूल पहिरागा, पछे वली मुगट। तिलक। कुंडल। हारदोर। वीरवलय। अंगद बहिरखा। नवग्रही । मूंदडी । कंदोरा। हाथना सांकला । पगना सांकला प्रमुख पहिराया ।इत्यादि॥

॥ अथाग्रे ढाल तेहिज. ॥

जीम्या सहु जन रंगसूं ॥ ललना ॥ ललाहो असणादिक आहार कें ॥ जि० २ ॥ वस्त्रभूषन सवने देई ॥ ललना॥ ललाहो दीधी सीख जीवारके ॥ जिन० ॥ चिरंजीव रहो नाथजी ॥ ललना ॥ ललाहो दे आसीसनरनारके ॥ जिन० ॥ ३ ॥ जोवन वय जुगतसूं ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ परण्या पदमण नार ॥ जिन० ॥ सुख विलस्या संसारना ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ सर्व पुण्य प्रकार ॥ जिन० ॥४॥ कर अणसण आराधना ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ मातापिता कीयो काल ॥ जिन० ॥ बारमें कल्पै ऊपना ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ वरत्या मंगलमाला । जिन० ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ९ मी--राग जोगणीकी जोगमाया० ॥

हांजी प्रभु लोकांतकसुर आवीयो ॥ हांजी प्र० ॥ एम करै उपदेश ॥ महावीरजीकी सीखकावणी अति शोभती ॥ हां० ॥ समगत जोग प्रकासीये ॥ हां० ॥ मेटो अग्यानकलेस ॥ मा० ॥ १ ॥ हा०॥ रत्न जडित रलियामणी ॥हां० ॥ चिहुंदिस लटके झुंब ॥मा० ॥हा०॥

रत्नजडित आसण बेठा ॥ सिरपर लटके झुंब ॥ मा० ॥ २ ॥ हां० ॥ कल्पवृक्ष सम अंग बण्यो ॥ हां० ॥ मुकुट रह्यो सिरफाव ॥ मा० ॥ हां० ॥ धवली देवे देवंगणा ॥ हां० ॥ वाडी खुली गुलाव ॥ मा० ॥ ३ ॥ हां० ॥ देव उपाडे चिहुंदिसां ॥ हां० ॥ छत्र धरे सुरराय ॥ मा० ॥ हां० ॥ नरनारी बीचै नीसरै ॥ हां० ॥ ग्यांत खंडमे आय ॥ ४ ॥

॥ ढाळ १० वी. ॥

मणि पीठकासुरकरै ॥ तिणऊर आसण धरे ॥ भविक जन ॥ ऊपर बैठे वीर जिणंद ॥ सोभैरे जिम पुनम चंद ॥ १ ॥ श्री जिनजी सूं मारो मन लागो ॥ आभूषण अलगा कीया ॥ शक्रेंद्रजे लेली- या ॥ भ० ॥ बोले चले अमृत वैण ॥ निरखेरे जिन भर २ नैण ॥ श्री ॥ २ ॥ सर्व साव जनै परिहरे ॥ पंच महाव्रत उचरे ॥ भ० ॥ हरख्यारे सुरनरना वृंद ॥ पाम्यारे परमाणंद ॥ श्री० ॥ ३ ॥ सगत सारू व्रत आचरे ॥ जिनवरने पाये परै ॥ भ० ॥ आवैरे सहु निज आवास ॥ मन डोरे एक जिनवर पास ॥ श्री० ॥ ४ ॥

॥ ढाल ११--राग ते मिने मिछामि दुकडं ॥

चारित्र ले प्रभु चिंतवै ॥ पोतै कर्म कठोर ॥ तोड्यां बिन तूटै नही ॥ नही बीजानो जोर ॥ धन २ सासणराधणी ॥ १ ॥ श्री जिन- वर मुख आगलै ॥ इंद्र करै अरदास ॥ कष्ट तुमानै छै घणो ॥ हूं रहूं तुमारे पास ॥ ध० ॥ २ ॥ जिन कहै आहूंई नही ॥ नही हुवै वात ॥ कर्म निकाचित आपरा ॥ तूटै किण साथ ॥ ध० ॥ ३ ॥ लाट देस जिनवर गया ॥ अनारज देस ॥ चोर करिनें पकडिया ॥ तूं तो ठगदरवेस ॥ ध० ॥ ४ ॥ कुताल गाया काटणा, मोटा कराल ॥ मांसतणा वटका भरै ॥ वळे चोले गाळ ॥ ध० ॥ ५ ॥ काने खीला

खोभिया ॥ पग विच रांधी क्षीर ॥ इसा परीसा वै सहे ॥ धन २ महावीर ॥ ध० ६ ॥ अभवी संगम आय ॥ कीधो घणो अन्याय ॥ छै मासां लग दुख दीयो ॥ सुत्र आवसकमांह ॥ ध० ॥ ७ ॥ बारे वरस लग तप कीयो ॥ अनै तेरे पारव ॥ नीद कदे लीधी नही, एह सूत्रनी साख ॥ ध० ८ ॥

॥ दोहा. ॥

रजु बालका नदी तटे, सांमगालाथा पतिनो खेत ॥
साल वृक्ष तल आवीया, खुलिया केवल नेत ॥ १ ॥

॥ ढाल १२ वी--राग शंकर वसे रे कैलामें ॥

चोसट इंद्र त्रिगडो रचे ॥ तिण पर त्रिभुवन सांमीरे ॥ चोतीस अतिसे प्रगट्या पूर्ण जिनपद पांमिरे ॥ वीर नमु सासण धणी ॥ १ ॥ चमर च्यार मनोहरू ॥ छत्र रह्या सिरफावरे ॥ इंद्र नरेंद्र मुख आगलै वाडी खुली गुलावरे ॥ वी० ॥ २ ॥ जग रच्यो द्विज दीपतो ॥ इंद्र भूति अधिकारीरे ॥ सुर टलिया देखी करी ॥ आवे घर अहंकारीरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ वडा विरुद् बुलावतो ॥ पांचसे सिद्ध साथोरे ॥ चित चकियो जिन देखने ॥ जाण्यो त्रिभुवन नाथोरे ॥ वी० ॥ ४ ॥

॥ ढाल १३ मी–राग कोड पूर्व लग पामी. ॥

मान धरीने गौतम आया ॥ वीर जिणंदनै दीठाजी ॥ गोतम आया वीर वतलाया ॥ ज्यारां वचन अमीर समीठाजी ॥ १ ॥ श्री गोतम सामी वीर जिणंदरे, शिष्य हुवा सहु पहिलाजी ॥ उपनय विगमय धुवतीनेपद ॥ गोतमनें दिया सीखाइजी ॥ चवदे पूरवद्वाद संगी ॥ गोतम लियां वणाईजी ॥ श्री० ॥ २ ॥ सोळेहजार तीनसे

तयासी ॥ स्याइरा ढीगला कीजेजी ॥ हाथी अंबावाडी बरोबर तरै चवदै पूर्व लिखीजेजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥

॥ दोहा. ॥

जगपति जगमे विचरिया । करता पर उपगार ॥
समणी संहस छतीसजी । मुनिवर चवदे हजार ॥ १ ॥

॥ढाल १३ वी–राग तीरथ ते नमूरे ॥

पावापुरिय पधारिया भवतारियारे ॥ जगपति दीन दयालके वीर सासण धणीरे ॥ चर्म चोमासो कीजीयै ॥ ग्यान दीजीयेरे ॥ अरज करै महिपालके ॥ वी० ॥ १ ॥ सिंघासण आसणठवै सुर चिंतवैरे ॥ मिलिया चोसट इंदके ॥ सिर आसोक ॥ सुहामणो ॥ रलियांमणोरे ॥ तिण तलै वीर जिणंदके ॥ वी० ॥ २ ॥ सघला मिल सेवा करे ॥ सिव सुख वरैरे कर २ आतम काम ॥ वी० ॥ देवश्रमण प्रति बोधवा ॥ कर्म रुंधवारे ॥ मुकिया गोतम स्वांमके ॥ वी० ॥ ३ ॥

॥ ढाल १४ वी--राग मेदिना गीतनीः ॥

नवमली नवलछीराय ॥ देस अठारे राजीया ॥ श्री वीर समीपे आय पखी पोसा ठावीया ॥ १ ॥ गोतमने मेल दीया महावीर देव समण प्रति वोधवा ॥ उतराध्येन अध्येन छत्तीस ॥ काती वद अमावस कह्या ॥ एकसो नें दश अध्येन ॥ सूत्र विपाक तणा लह्या ॥ गो० ॥ २ ॥ छेलो चर्म जोग निरोध ॥ सुगत नगरमे संचरे ॥ ओतो मिट गयो भाव उद्योत ॥ द्रव्य उद्योत राजा करे ॥ ॥ गो० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

विलख वदन सुरवर मिल्या । दीठा गोतम सांम ॥
वीर पहुतां मुगतमें । चिंतातुर थयो तांम ॥ १ ॥

॥ ढाल १५ वी---राग धन्यासरी ॥

जाण्यो थारो भावहो प्रभुजी ॥ जां ॥ गोतम अरज करे प्रभु सेती ॥ मेल्यो इण प्रस्तावहो ॥ प्र० ॥ जा० ॥ १ ॥ शिव नगरी कायमकी वेला ॥ मोसूं कर गया डाव ॥ प्र० ॥ जा० ॥ २ ॥ बालक भाव करी तुमसेती ॥ करतो नही अटकाव हो ॥ प्र० ॥ जा० ॥ ॥ ३ ॥ एक रुखी प्रिति करे किम चेतन ॥ इण मेलावनसावहो ॥ प्र० ॥ जा० ॥ ४ ॥ लही केवल निजरूप रतन निज ॥ मेट चपल चित भावहो ॥ प्र० ॥ जा० ॥ ५ ॥

॥ इति महावीर जन्म कल्याण समाप्तिः ॥



७ (अथ मृषावाद पर सत्यघोष चरित्रं)

॥ दोहा. ॥

॥ गुरु गौतम वांदू सदा । कदा न उपजे क्लेश ॥
पदपंकज प्रणम्यां लहे । चारु बुद्धि विशेष ॥ १ ॥
महाव्रत पावूं कठिन । पालेवा नही सेज ॥
दूजो अति दुकर माहा । पालंता सचभेज ॥ २ ॥
सत्यवंत नर वाजके । झूठ वचन बोलंत ॥
सत्यघोप विप्रनी परे । पामे दुःख अनंत ॥ ३ ॥
सत्यघोप ते किम हुवो । बोल्यों केम अलीक ॥
तेह कथा हिव भवि जनां । सुणज्यो दिल धरपीक ॥ ४ ॥

॥ ढाळ १ ली. नित करूं ए साधुजीनें वंदना ॥ ए देशी.

सकट देश रलियामणो ॥ सिधपुर नगर उदारो ए ॥ महल मंदिर कर सोभतो ॥ भूं भामनि गलहारो ए ॥ भाव धरी भवियण सुणो ॥ १ ॥ सिंहसेन नृप दीपतो ॥ रामदत्ता पटराणी ए ॥ रूप-शील सत्य बुध भली ॥ वारु जेहनी वाणी ए ॥ भा० ॥ २ ॥ धाय माय मानी जती ॥ निपुण मति अभिधानो रे ॥ यथा नाम तथा गुणा ॥ राणीनैं प्रांण समानोरें ॥ भा० ॥ ३॥ श्रीभूत प्रोहित भलो ॥ श्रीदत्ता प्रोहीताणीरे ॥ इक दिन आव्या विचरतां ॥ मुनि-वर निरमल नाणीरे ॥ भा. ॥ ४ ॥ मृषाबादनें निंदीयो ॥ पातक जगमें मोटारे ॥ झूट सरीखो को नही ॥ इण देखतां सवही छोटोरे ॥ भा. ॥५ ॥ प्रोहित निज मुखथी कीया ॥ त्याग गुरुजन साखीरे ॥ अंतःकरण तो सुध नही ॥ माया मनमें राखीरे ॥ भा. ॥ ६ ॥ लोक दीयो सत्यघोषजी ॥ नाम झूठ कहे नाहीं ए ॥ राखे कतरणी जने उमे ॥ जनमें ठगाई जमाई ए ॥ भा. ॥ ७ ॥ लोकवोक समुझे नही ॥ धन २ करीये वखानै ए ॥ महिमा सारा सहरमें ॥ पूरी प्रतीत राजानें ए ॥ भा. ॥ ८ ॥ पद्म खंड पुरवासीयो ॥ सुमित्र सेठ उदारो ए ॥ घरटोटो आव्यो जरां ॥ कीयो प्रदेश विचारो ए ॥ भा. ॥ ९ ॥ रत्न पांच तिणरै कनै ॥ रस्तामैं सिधपुर आयो ए ॥ रत्न मेंलूं कोई साहपैं ॥ इम चिंतव्यो मनभायोए ॥ भा. ॥ १० ॥

॥ दोहा. ॥

मध्य वजारें आयनें । पूछे जनजे कोक ॥
सत्यवादी कुण नगरमें । लोक कहे सत्यघोष ॥ १ ॥
परधन समझे धूल सम । प्रवा नही तिलमात ॥

प्राण तजै झूठ न वदे । वसुधा मांही विख्यात ॥ २ ॥
सुणी वात पुरजनतणी । पाम्यो हर्ष अपार ॥
सत्यघोष घर आवीयो । बोलै वचन विचार ॥ ३ ॥



॥ ढाळ २ री—राग मोरीयानी. ॥

सेठ कहे सुणो देवजी ॥ पांच रतन मुझ पास ॥ प्रोहितजी ॥ राखी जे ए तुम कने ॥ ए मांहरी अरदास ॥ प्रोहि० से० ॥ १ ॥ मैं जाऊं प्रदेशमें ॥ कमावणनें काज ॥ प्रो० ॥ पाछो आय लेजावसूं ॥ जितरे राखो महाराज ॥ प्रो० ॥ से० ॥ २ ॥ इम सुणनें सत्यघोषनें ॥ ऊठी लोभनी ज्वाल ॥ प्रो० ॥ एतो रत्न पचावणा ॥ अछै अमामो माल ॥ प्रो० से० ॥ ३ ॥ कपटी कपट करी कहै ॥ परधन राखा नांय ॥ सेठजी ॥ निद्रा वेची ओजको ॥ कुण चाले घरमांहि ॥ से० ॥ प्रोहित कहै सुणो सेठजी ॥ ४ ॥ सिर भूषण धर चरणमें ॥ बोल्यो दीन वचन ॥ प्रो० ॥ मया करो मो ऊपरै ॥ राखो एह रतन ॥ प्रोहि० ॥ से० ॥ ५ ॥ थांरा हाथसूं जायनैं ॥ घरजावो डावामाय ॥ सेठजी ॥ पाछा थारा हाथसूं ॥ लेई ज्याजो आय ॥ से० ॥ प्रो० ॥ ६ ॥ पिण किणनें कहीज्यो मती ॥ रत्न राखणकी वात ॥ से० ॥ आज तलक राखी नही ॥ मैं किणहीरी आथ ॥ से० ॥ प्रो० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

रत्न धर्या प्रोहित कनें । मनमें हर्ष अपार ॥
ज्याझ मांझ तव बैसनें । चाल्यो समुद्र मंझार ॥ १ ॥

॥ ढाल ३ री–राग बिंछियानी ॥

हांरे लाला ॥ शुभ सुकने प्रेर्‍यो थको ॥ वाज्यो अनुकुल वायरे ॥ लाला ॥ जिण नगरीकी वांछा हुती॥ तिण नगरी पुंहच्या जायरे ॥ लाला ॥ पुण्य प्रबल संसारमें ॥ १ ॥ हां. ॥ जो व्यापारज एकरै ॥ सो संवलो पडे पुण्य जोगरे ॥ लाला ॥ वीज ससि जिम धन बढै ॥ दूर गयो दिलसोगरे ॥ लाला. ॥ पु० २ ॥ हां० ॥ जस घणो एहनो नगरमें ॥ सत्यवादी बंधपुर पेठरे ॥ लाला ॥ राजमांहे पिण खातरी ॥ हूवो कोडीधज सेठरे ॥ लाला. ॥ पु० ॥ ३ ॥ सेठ चिंते निज घर भणी ॥ जावो अब तत्कालरे ॥ लाला ॥ वारू ज्याजवणायनें ॥ मांहे भरियो अमामोमालरे ॥ लाला. ॥ पु० ४ ॥ ॥हां०॥ निजघर आतां सेठजी॥ मन करता कोड अपाररे ॥ लाला ॥ मन चिंतव्यो हुवै नही ॥ होवे कर्म अनुसाररे ॥ लाला. ॥ भावी पदार्थ ना मिटे ॥ ५ ॥ वाज्यो अंकाले वायरे ॥ घटा चढी घनघोररे ॥ लाला ॥ गगनमैं लागो गाजवा ॥ माच्यो जिहाजमें सोररे ॥ लाला ॥ भा० ६ ॥ भैरू भोया देवी देवता ॥ ध्यायरया जनसोयरे ॥ लाला ॥ साहे कहो अब कुण करै ॥पुण्य पुरा गया होयरे ॥लाला॥भा०॥ ७॥ फाटी जिहाज धन डूवियो ॥ सेठ पाट्यो झालंतरे ॥ लाला ॥ आव्यो वाहिर उदधिनें ॥ तीनदिवसनें अंतरे लाला ॥ भा.॥ ८ ॥ तट वैठो चिंता करे ॥ वांकी कर्मनी चालरे ॥ लाला॥ वडा २ नें विटंवीया ॥ ज्यांमें हुवा किसा हवालरे ॥ लाला. ॥ भा०॥ ॥९॥ हीमत मत हारैहीया ॥ राख तूं मन कराररें ॥ लाला ॥ हीमत विन कीमत नही ॥ इण वनमें कुण आधाररे ॥ लाला॥ भा० ॥१०॥ तो हिव सिधपुर जायनें ॥ लेउं रत्न अमोलरे.॥ लाला ॥ भूंडा मांही भली थई ॥ आव्यो सिद्धपुर पोलरे ॥ लाला. भा० ११ ॥ मो-

हित देखीनें ओलख्यो ॥ रत्न पचावन काजरे ॥ लाला ॥ लोकांनें कहै रायनें ॥ मैं सुपनो दीठो आजरे ॥ लाला. भा. १२ ॥ इक पांच रतन मोपै मांगीया ॥ इक नर इसो सहिनानरे ॥ पहली वांकवधानें करूं ॥ सहू कहै धन थारो ज्ञानरे ॥ लाला. भा. १३ ॥

॥ दूहा ॥

इते सेठ कहे आयनें । आपो पांच रतन ॥
इथी जिहाज समुद्रमें । डूबो सघलो धन ॥ १ ॥

तुम प्रसादथी ए वच्या । नांतर जाता एह ॥
ए उपगार भूलूं नही । जब लग थिर रहे देह ॥ २ ॥

सत्यघोष कहै नागडा । हमको देत कलंक ॥
पहिरण फाटा चीथरा । रत्न कहांतेरंक ॥ ३ ॥

लोकां मिल धुरकारियो । पहली कही महाराज ॥
कै धूरत कै वावलो । नागो दिल नही लाज ॥ ४ ॥

॥ ढाल ४ थी—राग निहालदीमें ॥

सुमित्र मनमें चिंतवैजी ॥ कांई ॥ अब कहो कुण आधार ॥ जाण्यो विप्र सत्यवादीयोजी ॥ कां. ॥ निकस्यो धूरत चंडाल ॥ भवि जन तजवो मुसकल लोभनोजी ॥ १ ॥ आथज डूबी उदधिमें ॥ कां० ॥ ते दुख हुंतो अपार ॥ रत्न पांच इण दावीयाजी ॥ दाधां ऊपर खार ॥ भ० २ ॥ जाय पुंकारूं रायनैजी ॥ कां० ॥ और न कांइ उपाय ॥ इम चिंतव गयो राव लैजी ॥ कांई ॥ अरज सुणो महाराय ॥ भ० ३ ॥ रत्न धर्यां सत्यघोषपैंजी ॥ कांई ॥ जाणी नै परतीत ॥ अब मांगूं आपे नहिजी ॥ कांई निपट विगारी नीत

॥ भ० ४ ॥ नृप दाषै सत्यघोषनैजी ॥ कांई ॥ पर धन धूल समान ॥ मन करनैं वांछे नही ॥ कांई ॥ अरज करो कोई आंन ॥ ॥ भ० ५ ॥ सुमित्र चित चिंता बढीजी ॥ कांई ॥ नृपनां सुणी पुकार ॥ आस निरास अब ए हूवोजी ॥ कांई ॥ फिरतां नगरमेंझार ॥ भ० ६ ॥ दयावन्त नर इक मिल्यो ॥ कांई ॥ पूछ्यो सब कही बात ॥ तेह कहे राणी बिनाजी ॥ कांई ॥ रत्न न लागै हाथ ॥भ०॥ ॥७ ॥ राणी महिल पीछो कडैजी ॥ कांई ॥ अंब वृक्ष सुविलास ॥ प्रातकाल चढै तिण परैजी ॥ कांई ॥ नित करीये अरदास ॥ भ० ॥ ॥ ८ ॥ (यतः) पांच रतन मुझ दाबीया ॥ सत्यघोष चंडार ॥ कोइ दिरावो करमया ॥ ए मोटो उपगार ॥ (ढालः) नितप्रत इमकू काकरैजी ॥ कांई ॥ इक दिन राणी तांम ॥ वातायन बैठी थकीजी ॥ सुण तेड्यो निज स्वाम ॥ भ० ९ ॥ कर जोडी राणी कहैजी ॥ कांई ॥ न्याव करीजे साच ॥ सत्यघोष दाब्या अछैजी ॥ कांई ॥ एहना रत्न ए पांच ॥ भ० १० ॥ राय कहै छे वावरोजी ॥ कांई ॥ झूठो लेतसु नाम ॥ सत्यवादी सत्यघोषसोजी ॥ कांई ॥ दूजो नहि इण गाम ॥ भ० ११ ॥ राणी सुण गइ करोजी ॥ यो नित्य करै पुकार ॥ फिर राणी सुण चिंतवैजी ॥ हैयां वात विचार ॥ भ० १२ ॥

॥ दोहा ॥

धाय भणी कहे जायने । वणिक भणी इणवार
रत्न दिरांसी ताहरा । मत कर सोच लिगार ॥ १ ॥
राणी फिर नृपसूं कहै । निसुणो नाह सुजान ॥
वणिक न्याव प्रभु कीजीये । एह नही कफ खान ॥ २ ॥
राजा राणीसूं कहे । एह करो तुम न्याव ॥
रत्नदिरावो एहना । देखां बुद्धिप्रभाव ॥ ३ ॥

राणी कहै सत्यघोष संग । रमसूं पासा सार ॥
रत्न दिदाऊं एहना । नही संदेह लिगार ॥ ॥ ४ ॥
धाय भणी राणी घणी । समजावी ससनेह ॥
करणो कारज इणपरै । कठै नाम नवि लेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५ वी--राग सासू कहै रीसाइजी ॥ ए देशी ॥

राणी धाय पठाईजी ॥ कहै जा विप्र पासे ॥ ल्याजे इहां बोलाईजी ॥ ऊंचो आवासै ॥ १ ॥ धायजी चाली आईजी ॥ तव सत्यघोष घरे ॥ वारू बात बणाईजी ॥ राणी याद करै ॥ २ ॥ सत्यघोष थयो राजीजी ॥ राणी बोलायो ॥ एह बात तो ताजीजी ॥ तव् खिण ऊमायो ॥ ३ ॥ ऊंचो महलमें आयोजी ॥ हर्वे भन्यो हीयो ॥ आसनपर बैठायोजी ॥ आदरमान दीयो ॥ ४ ॥ राणी कहे तुम मेल्लूंजी ॥ पासा सारसही ॥ हर्ष धरीनें खेलूंजी ॥ ए मुझ हूंस थई ॥ ५ ॥ सत्यघोष कहै ठीकजी ॥ रमिये वेग सही ॥ मांरे मन पिण पीकजी ॥ तिल भर ढील नही ॥ ६ ॥ एकज संका आवैजी ॥ मोमन असमानै ॥ जीव दोनूं राजावैजी ॥ राजा जो जाने ॥ ७ ॥ तव वलती कहै राणीजी ॥ नृपनें पूछ लीयो ॥ बोली मधुरी वाणीजी ॥ कुसराखो हीयो ॥ ८ ॥ वाजी प्रथम लगाईजी ॥ मुदरीजीपलई ॥ ए सहि नाणि दिखाईजी ॥ आणो रत्न सही ॥ ९ ॥ धाय मुद्रिले आवैजी ॥ तव सत्यघोष घरै ॥ विप्रजी रत्न मंगावैजी ॥ मुद्री आनै घरे ॥ १० ॥ वैही आय लेजासीजी ॥ मोनै खबर नही ॥ फिर गइ धाय विमासीजी ॥ राणीनै जाय कही ॥ ११ ॥ रायतमें वडो सवादोजी ॥ जेसरखा जरमें ॥ राणी भेद ए लाधोजी ॥ रत्न अछै घरमें ॥ १२ ॥ वीजीवार कै मांही जी ॥ कतरणी वाजी ॥ जीतीनें फेर पठाईजी ॥ धाय आई भाजी ॥ १३ ॥ कैंची तांम दिखाईजी ॥ कह्

मांही अछै ॥ आणी आवै नांईजी ॥ पिछतासी पछै ॥ १४ ॥ एक वार फिर जावोजी ॥ जितरे हूं हेरूं ॥ तीजी सहनाणी ल्यावोजी ॥ पाछे नही फेरूं ॥ १५ ॥ फिर आया तव धाजीजी ॥ कहै अरज मांरी ॥ अबके तो रमल्यो वाजीजी ॥ फिर मरजी थांरी ॥ १६ ॥ तीजी वारकै मांहीजी ॥ जनेऊल्याई ॥ धाय धावती आईजी ॥ वि-प्रणी धवराई ॥ १७ ॥ रत्न काढ तिय सूंप्याजी ॥ धायकै करमांई ॥ आय राणीनें आप्याजी ॥ कारज सिध थाइ ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

सीख समापी विप्रनें । राणी कर सतकार ॥
हारीतेसूं पीति हुं । राणी महर भंडार ॥ १ ॥
राणी नृपनें तेडनें । भाखे करि जतन ॥
सत्यघोषके पासथी । आण्या एह रतन ॥ २ ॥
नृप नारीनें इम कहे । तुमहो मति भंडार ॥
न्याव भलो नींको कीयो । विरली थां सम नार ॥ ३ ॥

॥ सोरठो ॥

फिर बोल्यो महिपाल ॥ वचन तुमारो राखवा ॥
घरसूं रत्न निकाल ॥ सांचो कीधो वणिकनें ॥ १ ॥
राणी कहै महाराय ॥ रत्नथालमे रत्न ए ॥
भेली सेठ बोलाय ॥ ओलखावो रूबरूं ॥ २ ॥

॥ ढाल ६ वी.—राग यतनीनी ॥

नृप आरूं सभा बनाई ॥ सहू जंवरीनै लीधा बोलाई ॥ पांचू रत्न देखाया ॥ सहि नाण करी ओलखाया ॥ १ ॥ उमरावांनें कीना

साखी ॥ जोवो राणीकी मति पाकी ॥ बांकी न रही कांइ मांसारू ॥ राणी न्याव कीयो छै वारूं ॥ २ ॥ भंडार सूं रत्न कढाया ॥ पांचू ते मांहि मिलाया ॥ सुमित्र भणी वो लाई ॥ नृप भाखै निसुणो भाई ॥ ३ ॥ रत्न थालथी रत्न ॥ थारा टालीलै करि जत्न ॥ सुण सेठ हुवो कुस्याली ॥ निज रतनाने लीधा टाली ॥ ४ ॥ सहूको मन अचीरज पाई ॥ राणीकी बुध सराई ॥ रत्न लेई करी परणाम ॥ सुमित्र गयो निज ठाम ॥ ५ ॥ नृप दाखे दांतज पीसी ॥ अब आणो विप्रनें घीसी ॥ दुष्ट नगरी कै माही ॥ इण ऐसी ठगाई जमाई ॥ ६ ॥ जन जमसा होयनैं ध्याया ॥ सत्यघोप सदनपैं आया ॥ कहै किहां गयो सत्य बोलो ॥ लाग्यां पैजारां सिरहोसीपोलो ॥ ७ ॥ सुणी वात धूझवानैं लाग्यो ॥ मनमें भय रतनारो जाग्यो ॥ नारी पैं मांगे आई ॥ जब धाय आइसो सुखाई ॥ ८ ॥ विप्र चिंतै राणी मंत्र मतऱ्या ॥ छानैं २ कानज कतऱ्या ॥ अंबे कांई होवे पिछताया ॥ एतो पाप उदै मारे आया ॥ ९ ॥ सेंठी करनें विप्रनी काया ॥ चोटी पकडी नृपपैं ल्याया ॥ नृप देख क्रोधगें जलियो ॥ मांनूं पावकमें घृत मिलियो ॥ १० ॥ राय भाखै सत्यव्रती वननें ॥ तैं ठगिया घणारा धननें ॥ घणा दिन तो पाप छिपाया ॥ पिण आज भेद मे पाया ॥ ११ ॥ है तो एहवो प्राण गमाऊं ॥ पिण विप्र हत्या भय पावूं ॥ नृप तीन दंड फुरमावै ॥ लीजे दिल दायजो आवै ॥ १२ ॥ कै तो घरको धन सब दीजे ॥ कैमल मुष्टी तीन खाईजै ॥ कै भैंस गोवर तीन थारे ॥ खाई जे विप्र विचारे ॥ १३ ॥ धन गया मूंवां समानें ॥ मल मुष्टीथी जावै प्रानै ॥ गोवर खावो यो चोखो ॥ मिट जासी सबलोही धोखो ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

विप्र कहे स्वामी सुणो । मंगावो भर थाल ॥
गोबर खाऊं जन सहू । हसन लग्यो महिपाल ॥ १ ॥

भैंस तणो गोबर नृपत । मंगायो भर थाल ॥
अब बेगो आरोगीये । गर्म २ ततकाल ॥ २ ॥

॥ढाल ७ वी.--राग देवकीनंदन जगत सिरोमण ॥ए देशी॥

एक थाल तो दोरो सोरो ॥ विप्र बापडे खायो ॥ अब तो कंठा उतरे नाहीं ॥ खातो २ अघायो ॥ १ ॥ झूठ न बोलो ॥ झूठ महा दुखदाई ॥ समझोरे सब भाई ॥ पहिलां तोलो ॥ टेर ॥ हाथ जोड कहे निसुणो स्वामी ॥ अब खाणी नही आवै ॥ नृप कहै सत्यव्रत जे पाल्यो ॥ तेह तणो फल पावै ॥ झू० ॥ २ ॥ नृप कहे दोय पांति धन दीजे ॥ कै दोय मुष्टी खाईजे ॥ दोय मांयथी दाय आवैजे ॥ एक दंडहिवलीजे ॥ झू० ॥ ३ ॥ विप्र चिंते धन तो नहि देणो ॥ मुष्टी महारज खांणो ॥ कर उपचार साजो होय जासूं ॥ लोभमें देखो लोभाणो ॥ झू० ४ ॥ राय हुकमथी मलतब धाया ॥ थर २ धरणी धूजाता ॥ होट डसंता दांत घसंता ॥ रोस करीनें राता ॥ झू० ५ ॥ पहेली मुष्टी लागत पड्यो नीचो ॥ दूजीमें प्राणज नाठा ॥ मर नृप कोस सर्पपणे उपनो ॥कर्मोरा फल छे माठा ॥झू०॥ ॥ ६ ॥ भव अनेक तणो छे वरनन ॥ श्री हरि वंश पुराणें ॥ कीयो सबंध इहां इतरोही ॥ सुणज्यो चतुरसुजाणे ॥ झू० ७ ॥ धन आडो कछु नायो कांइ ॥ इन भव बहु दुख पायो ॥ परभव मांही घणोहिज रूलसी ॥ श्री जिनवर फुरमायो ॥ झू० ८ ॥ एहवो जाणीनें भव्य प्राणी ॥ झूठ वचन तज दीज्यो ॥ परधन कैनेडा मति जाज्यो ॥

सुगुरु शीख मानीज्यो ॥ ज्ञा० ९ ॥ पूज श्री कनीरामजी मोटा ॥ ज्ञानमै गैातम जेवा ॥ तत शिक्ष ज्ञान गेह रेखराजजी ॥ तेहनां गुण कहुं केवा ॥ ज्ञा० १० ॥ तस पद पंकजनो मधुकर ॥ नथमल कथा प्रकाशी ॥ विद्वदजन होवै सो वांची ॥ मत कीज्यो मांरी हांसी ॥ ज्ञा० ॥ ॥ ११ ॥ संमत उगणीसै बरस एकवीसे ॥ मास फाल्गुन वदि सातै ॥ सहर सुभटपूरमें ए भाखी ॥ ढाल सात विख्यातें ॥ ज्ञा० १२ ॥

॥ इति मृषावाद पर सत्यघोष चरित्रं ॥



८ (अथ मुम्मन श्रेष्ठी चरित्रं)

॥ दोहा ॥

अर्हंतादि पंच पद । प्रणमूं ऊठ प्रभात ॥
सुधे मन कर समरतां । पातिक दूर पुलात ॥ १ ॥
चतुर्गीति संसारको । हेतू च्यार कषाय ॥
रजमांही तज काढतां । अधिको लोभ कहाय ॥ २ ॥
सकल पापको मूल है । नांखै नर शिर काय ॥
ए ओखाणो जगतमें । लोभ पापको बाप ॥ ३ ॥
लोभी जन धन जोडवा । तत्पर होत अपार ॥
असह कष्ट नित प्रत सहे । करे नीच आचार ॥ ४ ॥
तिणपर मुम्मन सेठकी । कथा सुणो भवि लोय ॥
लोभी नर एसा हुवै । सुणतां अचिरज होय ॥ ५ ॥



॥ ढाल १ ली--राग इग सखरियारी पाल ॥ ए देशी ॥

जंबू भर्त्तमे मगधदेश महिमा निलोहो ॥ लाल ॥ दे० ॥ सर्व समृद्धिरहह राजगृह पुर भलोहो ॥ लाल ॥ रा०॥ श्रेणिक नामे राय शुद्ध समकित मतीहो लाल ॥ शु० ॥ न्याय निपुण जिन भक्तिमांही अधि कीरती हो ॥ लाल ॥ मां० ॥ १ ॥ चेलणा पटनार धर्ममें निरमली हो ॥ लाल ॥ ध० ॥ रूप कला पति प्रेम गुणे कर आगली हो ॥ लाल ॥ गु० ॥ मंत्री अभयकुमार जेष्ठ सुत नृपतणो हो ॥ लाल ॥ ॥ जे० ॥ च्यारु बुद्धि निधान सुजसपुरमें घणो हो ॥ लाल. ॥ ॥ सु० ॥ २ ॥ तिण पुर निवसै सेठ कोटीश्वर छैखरो हो ॥लाल॥ ॥को०॥ मुम्मन सेठनो नाम कृपण शिरसे हरो हो ॥ लाल ॥कृ०॥ सरस खान सतपान करत छाती फटै हो॥ लाल ॥ क० ॥ चाहे ज्यूं भरणो पेट रखे घर धन घटै हो ॥ लाल ॥ र० ॥ ३ ॥ नही दान सन्मान आयारो नहि करै हो ॥ लाल ॥ आ० ॥ पडेजी मावणो भात ॥ कै इण दुःखसूं डरै हो ॥ लाल ॥ इ० ॥ पाडोसी घर देखजीमतो पावणो हो ॥ लाल ॥ जी० ॥ चाले पेटमें पीड लगे अलखावणो हो ॥ लाल ॥ ल. ॥ ४ ॥ करत दान भल भोजन देख, दिलधर कही हो॥ लाल ॥ दे० ॥ याचक सुख स्वनाम सुणी नवि हरखही हो ॥ लाल ॥ सु० ॥ स्नान नहि नहि वस्त्र धापन क्रिया तनपरै हो ॥ लाल ॥ कि० ॥ श्रीपिन इसडे सदन जाय वासो करैहो ॥ लाला ॥ जा० ॥ ५ ॥ यतः

॥ दोहा ॥

देव गुरु धर्म तत्त्वनी। श्रद्धा नाही हजूर ॥
पचैरात दिन धंधमे । माया तणो मजूर ॥ १ ॥

॥ ढाल २ री--राग शंकर वसैरे कैलाशमे ॥ ए देशी ॥

लोभग्रसित हुवो करै ॥ अजुक्तो व्यापाररे ॥ नील गुली वेचै निरदई ॥ साजी साबू खाररे ॥ लोभ बुरोरे संसारमें ॥ १ ॥ खेती करावे खातसूं ॥ पोटया आप फिरावेरे ॥ लाभ दीसे जिण कममे ॥ सोही विनज करावैरे ॥ लो० ॥ २ ॥ इण विध पचतां सेठजी ॥ बहुलो द्रव्य कमायोरे ॥ जत्तन करन रत्नांमई ॥ वृषभ एक करायोरे ॥ लो० ॥ ३ ॥ ऊपर गृह स्थापन कीयो ॥ जतन करीनें भारीरे ॥ क्षण इक गाफल ना रहै ॥ पूंजी प्राणसुं प्यारीरे ॥ लो० ॥ ४ ॥ बीजो वृषभ करन भणी ॥ विविध उपाय वनावैरे ॥ एतले प्राट्ट ऋतु भली ॥ घन उमटते आवैरे ॥ लो० ॥ ५ ॥ वर्षामे धन जोडवा ॥ अन्य उपाय न पायोरे ॥ आधी रात्र घन वर्षतां ॥ वाजे शीतल वायरे ॥ लो० ॥ ६ ॥ तन कोपीनज बांधनें ॥ घोर अंधारा मांहीरे ॥ थर २ कांपत आवीयो ॥ पुर वाहिर चल मांहीरे ॥ लो० ॥ ७ ॥ सरिता तट ऊभो खडो ॥ वह्ट काष्ठनी जोवैरे ॥ आवै वहतो तो ग्रहूं ॥ लाभ घणेरो होवैरे ॥ लो० ॥ ८ ॥ एतले काष्ठज आवीयो ॥ भारी बांध उठावैरे ॥ माथे धरनें चालियो ॥ राज भवन तल आवैरे ॥ लो० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसर वातायनें । श्री श्रेणिक नरनाथ ॥
राणी संगरसरंगमें ॥ बैठा दंपति साथ ॥ १ ॥

॥ ढाल ३ री–राग म्हारो पिउ ब्रह्मचारी ॥ ए देशी ॥

हूवो उद्योत विद्युतनो जवही । चेलणा निरखे तवहीहो ॥ कोई नर दुखियारो ॥ मस्तक भार नगनतन कंपे ॥ राणी नृपसूं जंपेहो ॥

कोई० ॥ नर दुखियारो ॥ छैयो विचारो ॥ इण त्रिरियां वहै ॥ शिर भारोहो ॥ को० ॥ १ ॥ करुणासागर करुणा करिजे ॥ दुःखितनो दुःख हरीजेहो ॥ को० ॥ धनवंतनैं धनवंत कांई करणो ॥ भरीयानोस्यूं भरणो हो ॥ को० ॥ २ ॥ पिन प्रभु ए नरछै निर नाथै ॥ पूरो वस्त्र नही छै माथै हो ॥ को० ॥ दया करीनें दरिद्र मिटावो ॥ अरुबरु बोलावोहो ॥ को. ३ ॥ इमसुण नृपनैं करुणा जागी ॥ मृदु चित हुवै बडभागी हो ॥ को० ॥ चरभेजी नृप ऊंचो बोलाई ॥ पूंछे स्यूं दुःख भाईरे ॥ को० ॥ ४ ॥ भो वृद्ध इण वेलांमांही ॥ तो नेजक क्यूं नांहीरे ॥ को० ॥ घन वर्षेंरु अंधारी रातें ॥ माथै भार उघाडै गाते रे ॥ को० ॥५ ॥ स्यूं दुःख छै कहो संका छोडी ॥ तब बोल्यो करजोडीरे ॥ को० ॥ भो स्वामिन्मम सदन मंझारी ॥ वृषभ एक छै भारीरे ॥ को० ॥६॥ वीजो वृषभ करणनें काजे ॥ करूं उपाय महाराजे हो ॥ को० ॥ विरखा कालै अन्य व्यापारें ॥ लाभ न दीठो लिगारै हो ॥ को० ॥ ७ ॥ इंधण इण ऋतुमैंहगो आवै॥ मुसकल सेती पावेहो ॥ को० ॥ इम चिंतव ए काम अभिलाख्यो ॥ भेद भूपनें भाख्यो हो. ॥ को० ८ ॥

॥ दोहा ॥

महीपत भाखै महर कर । जा वृद्ध करी विवेक ॥
गैाखानांसू देखकर । लै तूं वृषभ ज एक ॥ १ ॥
श्वेत वर्ण शोभा सदन । शीघ्र कर्ण तनपीन ॥
सीग सुघट सूं सावता ॥ नीका वृषभ नवीन ॥ २ ॥

॥ ढाल ४ थी राग—लावणी मरेठी ॥

इसा वृषभ दिखाया । महिपत दाय न लागा मनमांही ॥ स्वामी वृषभ मांहरे ॥ इणसम निज रन आयो फिर कांही ॥ धिग् २ लोभ

थोभ नही इनकै ॥ कठिन जीतणो है भाई ॥ धरै दिल संतोष रोकए पक्की ॥ और उपाय नहै कांई ॥ टेर ॥ १ ॥ इमसुण भूप वृषभ देखणकी ॥ चूंप जगी है चित आई ॥ सब परिवार लेय मुम्मन घर ॥ आत नगारे दे घाई ॥ धिग् २ ॥ २ ॥ दह दिश करत उद्योत रत्न मई, वृषभ देख इचरज पाई ॥ चिंते भूप राज्य सब वेचे ॥ इण सम मोल अवै नाई ॥ धिग् ३ ॥ कहै भूप धन इतो सदन, तब तो क्यूं करै कृपणताई ॥ कीजे मोज.दान कर दीजे धर्म करीजे सुखदाई ॥ धिग् ४ ॥ दुर्लभ जन्म मिल्यो नर भवको ॥ पूरव पुन्य प्रभुतापाई ॥ अव क्यूं न करे शुक्रत मूरख आथ साथ न चले कांई ॥धि० ५॥ इम कही रायजीमगयो पाछो ॥ मूरख तो समज्यो नाही॥ कर बहु कष्ट वृषभ कीयो ॥ दूजो तो पिण इच्छा नहि धाई ॥ धि० ॥ ॥६ ॥ धन धन करत मरी गयो दुर्गत ए उपदेश सुणी भाई ॥ तजो लोभ संतोष भजो ॥ मन ज्यूं दोनूं भव सुख थाई ॥ धि० ७ ॥ गोतम कुलक ग्रंथ अनुसारे ॥ जोड करी ए मन भाई ॥ पूज प्रसादे नथमल भाखै ॥ लोभ वडो है दुखदाई ॥ धि० ८ ॥

॥ कलश ॥

चंद्र वेदरु निधी इंदु, वर्ष फाल्गुन मास ए ॥
शुक्लपक्ष तिथि पूर्णमासी । हुवो हर्ष हुलास ए ॥
सहरनो अजमेर ॥ चारु वस्ती वारु सोभ ए ।
सेठ मुम्मन जेम भविजन ॥ कीजीयो मति लोभ ए ॥ १ ॥

॥ इति लोभपर मुम्मन श्रेष्ठी चरित्रम् ॥

अथ ढाल सागरांतर्गत गाफलरी ढाल ॥

हांरे गाफल मत रहेरे, मेरी जान गाफल मत रहेरे ॥ गाफल गीखांना, चले गये वडे वडे राणा, गाफल मत रहेरे ॥ टेर ॥साधो

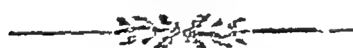
की संगति गह रे, जिनवांणीकूं सरदहरे, एह कुटुंब सब स्वारथका, भलां तु करले निज जीवनका ॥ गाफल. ॥ १ ॥ हांरे क्रोध विच डोले, मेरी जान क्रोध वस डोले, मानवमुं छकीयो बोले, मायाकी गांठ न खोले, लालचसूं झुकतो तोले, भण्या तूं किताब काजीका, तमासाचेहरबाजीका ॥ गाफल. ॥ २ ॥ हांरे जुग विच बडे बडे रायाके, होय गयी बादलकी छाया तुजे कहा बाडा बनवाया, दिल विच खोज ना कीजे, लाहास मरणका लीजे ॥ गाफल. ॥ ३ ॥ हांरे मथुराको राजा कंसे, ते उपजो यादव वंशे, पकड्यो उग्रसेन अवतंसे, कुलकी मरजादा मेटीके, परण्यो जरासिंध बेटी ॥ गाफल ॥ ॥ ४ ॥ हांरे एकदिन सभा पूरांणी, तिहां आव्यो जोतिक नांणी, तिहां बोले भूपति वांणी, नंही कोई जगतमें ऐसा के, हमसें जंग करे जेसा ॥ गाफिल. ॥ ५ ॥ तब विबुध वचन इम बोले, भूपतना श्रुत पट खोले, तूं भोले भावे भूले, जो जादव वंस उधारेगा, सोही भूपति तुजे मारेगा ॥ गाफल. ॥ ६ ॥ हांरे पूतना दमसी, महाराज पूतना दमसी, जाकी मुष्टी है जमसी, सो वृंदावनमें रमसी, गोवरधन धारेगा सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गाफल. ॥ ७ ॥ हांरे नाग है काली, नाथेगा नाथने झाली, अरिजन पर निजर कराली, गोकल गांव वधारेगा, सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गा. ॥ ८ ॥ हांरे जुमलसें जंगी, सूरति सोहे इकुरंगी, जाकी जगतमें कीरति चंगी, जो गज-दंत उखालेगा. के, सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गा. ॥ ९ ॥ हांरे सो वैनागकी सेज्या, जाकी सतभामा हुवे भज्या, धरे तीन खंडकी ल-ज्या, जो मल्लमांन विडारेगा. के, सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गाफिल. ॥ ॥ १० ॥ हांरे सारंग धनुष चढावे, जो गदाको मदी वावे, संख पं-चायण वजावे, फूलकी माला अमलांणी, आग्या तीन खंड मांनी ॥ गाफल. ॥ ११ ॥ हांरे देवकी नंदा, वसुदेव तनु आनंदा, द्वारापति

तेज दिनंदा, एह सुणी विद्युद्धतणी वाणी, कंसकी छाती धुजांणी ॥ गा. ॥ १२ ॥ श्री वसुदेवपें आवे, करी वातासूं ललचावे, वसुदेव भेद नही पावे, मांग्या गर्भ देवकीका, कंस तूं तीन भुवन टीका ॥ गा. ॥ १३ ॥ हांरे सुलसादेवत समरी, जिण मांग्या कुमरा कुमरी, हिरणमेखी सक्ति है जवरी, छउं नंदन उठवाया, शेठधर महोछव मंडवाया ॥ गाफल. ॥ १४ ॥ हांरे जव जन्मे सारंगपागि, कंसकी धरती धुजांणी, तालांकी झल फांजल फांणी, सीहांकी दाढा वंधाणी, ऐसें पुण्यवंत जाणी के, जमुना भेद दीयो पांणी ॥ गाफल. ॥ १५॥ मुरारी नंद घरे आया, गवालन नाला गवराया, जसोदा हाथे दुलराया, कांनजी कुमर पद खेले. क, मांखण गोरसमें रेले ॥ गा. ॥१६॥ कदही सापण कूं साहे, कदही आंगण जल वाहे, कदही जमुना तट जावे, फिरे लालजी निसंका, वजावे कंस पर डंका ॥ गा. ॥ १७ ॥ कदही सांड पकड आंणे, कदही महिष पीलांणे, कदही अंग उलहांणे, अधरपर वंसरी राखे, दांण महियनको मांगे ॥ गा. ॥ १८ ॥ देवकी दरसणकूं जावे, नवि नवि वस्तू ले आवे, भले भले वस्त्र पहीरावे, चिरंजीवो नंदलाला, वैरियां भंजण जदुपाला ॥ गा. ॥ १९ ॥ गोवर्धन धाऱ्यो निज हाथे, काली नागकूं नाथे, गोप्या फिरती हर साथे, ऐसे पुन्यके पुंजे, फिरते मधुवनके कुंजे ॥ गा. ॥ २० ॥ भाइ वलभद्र सहाई, किसीकी संक नही काइ, गवालनि दधि वेचन जाइ, मुरारी काण नही राखे के, दधिभर आंगुलिया चाखे ॥ गा. ॥ ॥ २१ ॥ लालजी मुजकूं मत छेडे, कंसकी नगरि अती नेडे, वध्जो तुं गुजरके खेडे, कंसकी चढति पुन्याइ. के, फिरती तीन खंड दुहाइ ॥ गा. ॥ २२ ॥ कहे कान्ह कैसे म्हैं डरहूं, कंसकूं फीटो म्हैं करहूं, अवरनकूं राजपद धरहुं, जाय पुकारे कंसके आगे, मोपें डांण महियनको मांगे. ॥ गा. ॥ २३ ॥ इम वरस सोले जव वीते, कंसकूं थाना सव चिंते, भांमाका व्याव मनाय लीजे, सव भूपति वुलवाया

सयंब्ररा मंडप मंडवाया ॥ गा. ॥ २४ ॥ हांरे भूपति सब बैठे, मुरारी मथुरामें पेठे, मुजसूं जंग करण सेंठे, कंसकी निजरां जब आया, खड्ग ले मारणकूं धाया ॥ गा. ॥ २५ ॥ करमांहि वंसकी लकडी, कंसकी चोटी जब पकडी, फेरत ज्यूं डोरकी चकरी, मार्या है घाव लकरीका, गल्या ज्यूं चक्र चक्रीका. ॥ गा. ॥ ॥ २६ ॥ हांरे सभा सबसंकी, आई ओजसा सकलंकी, बोले है वाणी वंकी, मार्यो है मुझ पीया प्यारा, ऐसा अही रह त्यारा. ॥ गा.॥ २७ ॥ बुलाया उग्रसेन राजा, बजाया जीतका वाजा, कंसको करिये अब काजा, जसा कहे मुखसूं इम वांणी, करुंगी मोसम सब रांणी ॥ गा. ॥ २८ ॥ तव उग्रसेन हाकारी, पिता पैं जाय पुकारी, कही वै बात मांडी सब सारी, सुणनें जरासिंध कोप्यो कै, जादव पर झंडो आरोप्यो ॥ गा. ॥ २९ ॥ सबही मिल मिसलत तव कीनी, भूंमकी ममता तज दीनी, विबुधपैं बात पूछ लीनी, दिस सुध पछिमकूं जाणा, जिहां है खारा महिरांणा ॥ गा. ॥ ३० ॥ हांरे जादव सव भाजे, जराके बेटे सब गाजे, जादव जाय किहां खोजे, जोर करी काली कुमर चढीयो कै, बिचमे देवी भुंगडीयो ॥ गा. ॥ ॥ ३१ ॥ हांरे समदपे आगए, तब ते लोक राव ए, लवणथी देवन चलि आए इंद्रपे विनती कीनी के, कनकमें नगरी वसाय दीनी ॥ गा. ॥ ३२ ॥ हांरे सोवनमें द्रीगरे, महाराज सोवनमें द्रिगरे, एकरे मणिरेके कंगुरे ॥ मणि सोवनमें घर सगरे, नव जोजन चवडाई, लंबी बारा योजन ताई ॥ गा. ॥ ३३ ॥ वसेवहोत्तर कोड घर पुरमें, कीये गोख जालीया जुरमें, ऐसी नगरी नहिमें दुरमें, ऐसी देवत विध कोरी कै, बाहिर घर है साठ कोडी ॥ गा. ॥ ३४ ॥ इकदिन सहस चोवीसे, हरि मंदिर अधिक जगीसे, सव छिन्नुं सहस वरीसे उंची इकवीस मजलुंके, सोवन मयघर सघलुं ॥ गा. ॥ ३५ ॥ हांरे मंदिरकी सेणी, सवही सात भोम गिण लेणी, वसे तिहां पुन्यवंत प्रांणी,

जिहां है राज माधवका, जगमें जो राजा देवका ॥ गा. ॥ ३६ ॥ जिहां जलन दीपके जाए, व्यापारी चलकर आये, निज वस्तु मोल नहि पाए, सबही राजगृही आया, जसापें हितधरी बतलाया ॥ गा.॥ ॥ ३७ ॥ हांरे जवनके बातां, हम देखी द्वारका आतां, हरि जसको पारन गातां, एसी सुंणि जीवजसा वांणीके, दिलमें अतिहि मुर जांणी ॥ गा. ॥ ३८ ॥ तिहां जरासिंध चढि आयो, हरिजी पिण सांह्मो धायो, हरि जोर देखी दुख पायो, तिण विद्या जरा मुंकी, गिरे सब परवतके टूंकी ॥ गा. ॥ ३९ ॥ तब नेमनाथ वर दीधा, हरिजी सब जाग्रत कीधा, करचक्र सुदर्शन लीया, हरि पायो जस थुंणीयो-के, वलतो जरासिध हणियो ॥ गा. ॥ ४० ॥ हांरे राज सब लीनो, भयो नाथ सकल पृथवीनो, इक बरस सहस लगकीनो, उदे जब पाप दसा आई नगरीद्वारा बिलाई ॥ गा. ॥ ४१ ॥ हांरे हरी समसूरा, महाराज हरी समसूरा, ते राजगुणां करि पूरा, पिणकर मकट कहे क्रूरा, तिणां पिण एहदसा पांमी, अवरांके मटले खांमी ॥ गा. ॥४२॥ भजो श्रीनेमनाथ जिनराया, सब पाप पडल हटाया, अचल सुख मोखना पाया, दिलधरी विनेचंद वदे, सुणतां मोमन आनंदे ॥ गाफल. ॥ ४३ ॥

॥ इति गाफलकी ढाल समाप्त ॥



२ (राग केरवो.)

देखोजी कनईयो खेले नंदजीको डावरो ॥ दे. ॥ टेर ॥
जमुनाके तीर आवे, धेनूयां चरावे,
बंसरी बजाय मन करदीयो बावरो ॥ दे. ॥ १ ॥

किलंगी अद्भूत सोहे, देखतही मन मोहे,
माधव मोहनलाल रंगको तो सावरो ॥ दे. ॥ २ ॥
शुद्ध बुध भूल गई, मेरे दिल वस रही,
देखूंरे सूरत रवि उगेरे ऊंतावरो ॥ दे. ॥ ३ ॥
पांनीके प्रपंच कर, देखे आय गिरधर,
नाचतो निरख रंग उलट्यो ऊछावरो ॥ दे. ॥ ४ ॥
नादको अस्वाद पाय, कुरंगगन रहे थाय,
नाचत भुजंग संग, अनंगज गावरो ॥ दे. ॥ ५ ॥
देखे मथुराके वासी, मिले जिम त्रण प्रासी,
होवत हुलास अति पारन उमावरो ॥ दे. ॥ ६ ॥
छिनमें जमुनाके पार, छिनहीमे घरद्वार,
छिनमें गोपनिसंग वनमें उतावरो ॥ दे. ॥ ७ ॥
लूटके माखन खाय, वरज्योही रहे नाय,
चाखे सबथर नही राषे डर रावरो ॥ दे. ॥ ८ ॥

३ (अथ रुखमणीको कागद—राग वासंत)

पत्री लिखी रुषमण प्यारी, वांचत है कृष्ण मुरारी ॥ प. ॥ टेर ॥ सिघश्रीनें सकल शुभोपम, लायक, तुम गिरधारी, कुंदनपुरथी लिखत आपकों. दाशी निज चरणारी ॥ प. ॥ १ ॥ अत्र कुशल है प्रभु कृपाथी, तुम कुस भगती सारी, चाहत मोमन निशदिन ऐसें, ज्यूं चातक जलधारी ॥ प. ॥ २ ॥ अप्रंच एह समाचार तुम, वांचीयो सुविचारी, पनिहारी घटनटके वर्ततिम, मम तुमसें इकतारी ॥ प. ॥ ३ ॥ नारद वचनें प्रेम लग्यो मुज, देख्यां चाहूं दिदारी, आज्यो वेग मिटाज्यो विरह, मोपरमेहर विचारी ॥ प. ॥ ४ ॥ काचित वसत गणेश-

रुशंकर, काचित भेरूं मातारी, मोमन वसत माधव माधो, मनकी जानत श्री विधनारी ॥ प. ॥ ५ ॥ मुख जवानी कुशल दूतपें, पूछीयो प्रभु समाचारी, लाख वातकी एक वात है, आवो वेग गिरधारी ॥ प. ॥ ६ ॥

॥ इति रुखमणी पत्रिका ॥

॥ अथ लिख्यते राम चरित्रांतर्गत ॥

१ ॥ रावणं प्रति सचिव वाक्यं ॥ लावणी ॥

॥ कहे मंत्री शरनाथ वात हम मानो २ सीताकी छोडो गेलटेक मतितानो ॥ टेर ॥ पद्मनो प्रवल प्रताप ऊगतो भानो २ सौमित्री वलवंत जगत नहि छानो ॥ भामंडल सुग्रीव आदिराजानो २ वल गइ वहु चमू वंधू पलटानो ॥ पाजी जन लागे लरन दशन पिछानो २ ॥सी. ॥ १ ॥ कुण जानि नाथ नृप हस्त प्रहस्त कट जासी ॥ कुण जानी ऋण वीचराक्षस घट जासी ॥ कुण जानी सुग्रीव आदि छुट जासी कुण जानि विभीखण राज्य मणी फुट जासी ॥ देखो फिर तुम नंद भ्रात वंधानो ॥ सी. ॥ २ ॥ कुण जानी जंबू माली नंद मर जासी २ ॥ कुणजानी लंक ढमढेर कपि कर जासी ॥ कुण जानि शक्ति प्रहार खाली टल जासी २ ॥ कुण जानि मनोरथ राम तणा फल जासी ॥ तव नंदन वंधन छूटन नहि ठिकानो २ ॥ सी० ३ ॥ सीया पाछी दिया वात वन जावे २ ॥ नंदन वंधन छूट अपन घर आवे ॥ जो अमची ए नाथ वात नहि भावे २ ॥ तो लेसो फल चाख सचिव समजावे ॥ अपना दुःखथी नाथ आंन दुख जानो ॥ सी० ४ ॥ नरम गरम वहु भांति कही इम वानी २ ॥ रावण पकडी

टेक एक नही मानी ॥ जगजवरोहोवनहार लाग्यो है आनी २ ॥ नथमल अब रावणकी काल निसानी ॥ टारी न टरे कोय कही भगवानो ॥ क० ॥ सी० ५ ॥

॥ इति ॥

२॥राग गहरो फूल गुलाबरो. ॥ ए देशी॥

पाछी आई मंदोदरि राणी ॥ मोरा साहिबा ॥ समजावेजी निज नाथने ॥ थारी बुध क्रांत लोपाणी ॥ मो. ॥ जाणली बीजी इण बातनें ॥ १ ॥ थांसू अरज करूंछूं रढियाला ॥ मोरा साहिबा ॥ हठिला ॥ मो० ॥थेमांनो मो० ॥ परत्रिय प्रेम न कीजीये ॥ टेर ॥थेतो रामचंद्रजीरी रानी ॥ मो० ॥ जाने उठायरे ल्यावीया ॥ यातो बुध करी नहि स्यानी ॥ मो० ॥ जगमें लंपट कहावीया ॥ थां० २॥ थे तो राज काज सब भूल्या ॥ मो० ॥ शुद्ध नहीजी किण वातरी ॥ हूं तो रात दिवस दुखमें झूलूं ॥ मो० ॥ देखदशाजी थांरी नाथरी ॥ ॥थां. ॥ ३ ॥ थेतो हिवडारे मांहि बिचारो ॥ मो० ॥ ऊंठ आछी नही पारकी ॥ थांरे रमणी छे सहस्र अढारो ॥ मो० ॥ प्रतक्ष रंभा सारखी ॥ था० ॥ ४ ॥ थारो सीतासूं मन क्यूं उमायो. ॥ मो० ॥ धवल दिन कीनी रातडी ॥ थानें सासुजी जणीनें कांइ खायो ॥ मो० ॥ मानो नहीजि मांहरी बातडी ॥ थां. ५ ॥ थानैं सूं सगलारा कह्यो मानो ॥ मो० ॥ सूंप आवो जी पाछी जांनकी ॥ थे तो इसडी टेक मतितानो ॥ मो० ॥ सीतायाग्राहक प्रांनकी ॥ थां० ६ ॥ जोइतरी कह्यां ही नही मानो ॥ मो० ॥ तोहो नहार ज्यों हो वसी ॥ थासी घणारें घर हांनी ॥ मो० ॥ लोक तमासा जो वसी ॥ था. ७ ॥ राणी थाक गई समझाई ॥ मो० ॥ दशकंधर भरतारनें ॥ नथमल

कहे जग माई ॥ मो० ॥ भविजन ॥ क्रूं न टाले जीहो नहारनै ॥ ॥ थां० ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

३ ॥ राग—बरवो ॥

कैसे आवेरी इणठाय ॥ मुदरिया ॥ कैसे आवेरी इणठाय ॥ टेर ॥ एह मूदरी प्रभुजिके करकी ॥ टुक भर अलगे न थाय ॥ मु० ॥ १ ॥ पेख मूंदरी प्रति सिय इन पर ॥ बोलत मुखसें वाय ॥ मु. २ ॥ अरी मूंदरी तूंभी बिछुरी॥प्रभुकी सगी हुईनाय ॥ मु०॥ ॥३॥ आज थकी अवतिय जातकी ॥ सही प्रतीत नसाय॥ मु० ४ ॥ एह मुदरी अलग होइसो ॥ प्रभु विपतकेमाय ॥ मु० ५ ॥ एम कहत चित अत अकुलानी ॥ नैनोमें पानी चवाय ॥ मु० ६ ॥ देख उदासी हनु तव प्रगटे ॥ लागे सियाके पाय ॥ मु० ७ ॥ प्रभूजी के कुशल लक्ष्मणके ॥ मानो सुख तुमे माय ॥ मु० ८ ॥ नथमल वचन सुनत शिय हनूके ॥ आनंद उपज्यो आय ॥ मु० ९ ॥

॥ इति ॥

४ ॥ राग--मायरान। ॥ देशी ॥

रावणंप्रति शूर्पनखा वाक्यं ॥ ॥ वीरा सीता २ रो रूप अपार हो ॥ वीरा ॥ इंद्रानी नखनें अंकुरैजी ॥ थांरी राण्या २ सहस्त्र अठार हो ॥ वीरा ॥ सीतारै.जोडै कुन जुरैजी ॥ १ ॥ वीरा मुखडो २ पुनमचंद हो ॥ वीरा ॥ पिकवयनी गजगामनीजी ॥ वीरा काया २ कोमल कंदहो ॥ वीरा मृगनयणी राणी रामनीजी ॥ २ ॥ वीरा कहां

लग २ करूं वखान हो ॥ वीरा ॥ हरिहर ब्रह्मा थक रहैजी ॥ वीरां राणीमैं रत्न समान हो ॥ वीरा वाणी एक गुण कुण कहैजी ॥ ३ ॥ वीरा जेहना २ जबरा भागहो ॥ वीरा ॥ तिणघर एहवी पदमनीजी वीरा जावो २ ल्यावो धर राग हो ॥ वीरा ॥ वाजो छो त्रिखंड धणीजी ॥ ४ ॥ वीरा देख्या २ पडसी तोलहो ॥ वीरा विगर देख्यां मालुम किसीजी ॥ वीरा ॥ मनडो ॥ वीर आघो पाछा मति डोलहो ॥ वीरा त्रिभुवन नारी नहि इसीजी ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ३१ सा. ॥

इंद्रकी परीहै किधूं धरी है विधाता आप चंद्रमातैं चीर काढी ॥ सीर अमि पानकी ॥ कंचन वरन तन रंचन दिखात घोर ॥ सावन कीतीजमानु वीज असमानकी ॥ रूपको वखान भ्रात ॥ वानी तें कह्यो न जात ॥ करत प्रसंस मेधा भ्रमत सुरानकी ॥ स्वरग पताल लोक नरलोक ढूंढ देखो ॥ कामनी न दूजी ऐसी जैसी नाथ जानकी ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

वीराभ्यासो २ करसो विलास हो ॥ वीरा पाछै पडसी खवर सहीजी ॥ वीरा मुझने २ देज्यो स्यावासहो ॥ वीरा ॥ वैनडरी बुध मैं कसर नहीजी ॥ ६ ॥ रावण निसुणी २ अमृत पीध हो ॥ चितमांही लागी चटपटीजी ॥ वेनड भलीए २ वधाई दीधहो ॥ वैनड वोल्यो भूधव झटपटीजी ॥ ७ ॥ वेनड जासूं २ जलदी चालहो ॥ वैनड राम लक्ष्मणने मारसूंजी ॥ वेनड ल्यासूं २ सीता रसाल हो ॥ वैनड तिण संगे सुख विलसूंजी ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

५ ॥ राग-उंची हवेलीवालो ॥ ए देशी ॥

वीनवै नरनारो ॥ पाछा नाथ पधारो ॥ सीया वरजीहो ॥ हो जी रघुपतजीहो ॥ आछा भूमिपतजीहो ॥ वीनतडी अवधारो ॥ वीनतडी अवधारो ॥ वनवासै मतिए पधारो ॥ सि. ॥ वी० ॥ टेर ॥ राज करीजे थांरो ॥ तुम विन कुण आधारो ॥ सी० १ ॥ शशि विन रजनी कारी ॥ विन दीपक जाग अंधारी ॥ सी० ॥ प्रभु विन नगरी सारी ॥ धणियां विन भयकारी ॥ सी० २ ॥ भर्त अयोध्या स्वामी ॥ नहि सोहै अंतरजामी ॥ सी० ॥ अश्व अनूपम होवै ॥ गज भारतो गजनेही सोवै ॥ सी० ॥ ३ ॥ राणीजी वर मांग्यो ॥ राजाजी पण नहि भांग्यो ॥ सी० ॥ आप मुखे फुरमायो ॥ ऋण उतर्यो पंच नमन भायो ॥ सी० ४ ॥ नाथ विचारो ऊंडी ॥ नारी कलहकी कूंडी ॥ सी० ॥ सब जन आपने केसी ॥ ओलंभा तुम सिर रेसी ॥ सी० ॥ ५ ॥ परजाराजा नें राणी ॥ विनवै गद २ वाणी ॥ ॥ सी० ॥ सूरतती विलखाणी ॥ वरसैनें नामें पाणी ॥ सी० ॥ ६ ॥ वार २ अमे वारा ॥ नही मानसो तो रहसां लारां ॥ सी० ॥ इण विध हव सहु करता ॥ राम लार संचरतां ॥ सी० ७ ॥ राम कहै मति आवो ॥ निज २ स्थानक जावो ॥ सी० ॥ राज भर्त्त भाई करसी ॥ मारो वचन नही फिरसी ॥ सी० ८ ॥ राम न मानी वातै ॥ तब कहे कोसल्या मातै ॥ सी० ॥ सीता छै कोमल काया ॥ जतन करीयो जाया ॥ सी० ९ ॥ वाटमें धीमा वहियो ॥ तजनै आगै मत जड्यो ॥ सी० ॥ मांरी त्रिसुत शुध लहियो ॥ आतां साथ संदेसो कहियो ॥ सी० ॥ १० ॥ पुरजन पाछा आया ॥ प्रभु तीनूं आगे सिधाया ॥ सी. ॥ नथमल गत करमारी ॥ छत्रधारी हुवा वन चारी ॥ सी० ११ ॥

॥ इति ॥

६ ॥ ढाल--राग हेलीवालारै महेल दीयो वलै ॥ ए देशी ॥

देखो सहेल्यां, सीरी राजाधिराजा, राम पधारीया, निरखो अजोध्याना नाथ ॥ दे० ॥ टेर ॥ ऊंचे सिंघासन रामजी ॥ सन्मुख लक्ष्मण भ्रात ॥ विहूं पासै हे विहु बंधवा ॥ सोभा तो वरणी न जात ॥ दे० १ ॥ हाथ्यारो हलकोहे आगलै ॥ लारै छै घुडलांरी धूम ॥ लंकापत कपिपत आददे ॥ साथे राजानी घणी धूम ॥ दे० २ ॥ सीता विसल्या पटरांगनी ॥ आदे राणी बहु लार ॥ मोत्या हीरारा चकडोलमें ॥ केई कासां असवार ॥ दे० ३ ॥ राक्षसी बानरी पलटना ॥ मुवागल नव २ थाट ॥ शिर छत्र रवि जिम फावतो ॥ चमरांकी उड रही जाट ॥ दे० ४ ॥ वाजै नगारा नैं नोबतां ॥ फर रह्या उतंग निसान ॥ बंदीजन जस अति बोलतां ॥ ज्यानें देवै छै नृप दांन ॥ दे० ५ ॥ चांदी सोनारा घोटानें छड्या चालै लाखां छडीदार ॥ बोलै वीदावली गूंजता ॥ अमृत ध्वन धूंकार ॥ दे० ६ ॥ सहिये सुहागण सामठी ॥ भर २ मोत्यांना थाल ॥ आवै वधावै महाराजनै ॥ दे आसीस रसाल ॥ दे० ७ ॥ अविचल रहिजो ए संपदा ॥ च्यारूं भायांरी है जोड ॥ कोड वरस चिरंजीवज्यो ॥ पूरजो प्रजाना कोड ॥ दे० ८ ॥ इणविध प्रभुजी पधारीया ॥ आजोध्यामें कियो प्रवेश ॥ नथमल कहै माया पुण्यनी ॥ कीजो भाई पुण्य विशेष ॥ दे० ९ ॥ इति ॥

७ ॥ राग---असवारीनी ॥

सीयावरकी देखण दो असवारी ॥ परी हो जा, वैरणमांरी ॥ रघुपतनी, निरखण दे असवारी ॥ टेर ॥ इकना इक २ परतें ॥ बोलत मुखसे गारी ॥ कौतुक निरखण प्रेम प्रगटियो ॥ शुध बुध

सर्व विसारी ॥ सी० ॥ १ ॥ इचरज कीधा इण अवसरमें ॥ नगर तणी जे नारी ॥ कटिमेखल तो पहियों गलेमें ॥ हार दियो कटि-डारी ॥ सी० ॥ २ ॥ मंजन छांड अधूरो आंज्यो ॥ अंजन इकनै नांरी ॥ आधो परुस्यो भोजन भाणै ॥ छांड चली भरतारी ॥सी०॥ ॥३॥ सीस गूंथावत भाज चली बिच ॥ उतावलकी मारी ॥ चूटिया बंध दीये नही पूरे ॥ नाय न बकत विचारी ॥ सी० ॥ ४ ॥ इण विध नार उतावल करती ॥ निज २ साथणलारी ॥ उण आगैवा उण आगैवा ॥ भीड मची अति भारी ॥ सी० ॥ ५ ॥ धन कौसल्या मात सुमित्रा ॥ जनम्या सुत अवतारी ॥ तात थकी तो भाग सवायो ॥ सूरतरी बलिहारी ॥ सी० ६ ॥ च्यारूं भाइ, से जोडै सोहै ॥ मूरत मोहनगारी ॥ इंद्र थका पिण अधिका दीपै ॥ सो गयो गगने हारी ॥ सी० ॥ ७ ॥ इति.

८ ॥ राग—चलित. ॥

वेगा जावो गंधा बुलावो ॥ लिछमन प्रान बचावो हो ॥ हनुमत ॥ गद् २ वयण राम फुरमावे ॥ छाती भरी २ आवै हो ॥ वे.॥ ॥ १ ॥ लछमन मरें हमभि मरजैहै ॥ सीया सुन तजे देह ॥ सबके प्राण उवारो ॥ पवन सुत ॥ इतनो सुजस अवलेह ॥ वे० ॥ २ ॥ एतला दिनथो सेवक मारो ॥ आजथी बंधु समान ॥ लछमन जीवायां थी मानूं मोकूं ॥ दीधो जीत व दान हो ॥ वे० ॥ ३ ॥ लछमनकों जलदी, जीवावो तो जांनु ॥ कीयो दीर्घ उपगार ॥ दीन वचन रघुनंदन दाखै ॥ हो तुम करुणा भंडार ॥ वे० ॥ ४ ॥ एम सुणी भामंडल हनुमंत ॥ बोले सीस नमाय हो ॥ सोच न करीये प्रभु प्रशादे ॥ आनां विसल्या उठाय हो ॥ वे० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

९ ॥ राग चलित. ॥

कहत केकै सुनो श्री राम ॥ अविचार्यो कीयो काम ॥ तुमसे सुत गुणमणि आवास ॥ ताकों दीयो वनवास ॥ १ ॥ कौशल्या सौमित्रामाय ॥ दोनूंनैं हूई दुखदाय ॥ अरु नगरजन दुखी घोर ॥ अजस लह्यो जगजोर ॥ २ ॥ कलहकारी नारीजात ॥ प्रगट शास्त्रैंमे बांत ॥ कृत्या कृत्य कोन करै विचार ॥ माहा अविवेक आगार ॥ ३ ॥ होणी सोतो होगइ नाथ ॥ हो नहार कै साथ ॥ अब तुम होइ समुद्र अगाध ॥ क्षमोमात अपराध ॥ ४ ॥ वीनती ए मुझ वारंवार ॥ पाछा पुर पाधार ॥ गादी विराज करीजेजी ॥ माहरी तुमनें लाज ॥ ५ ॥ भक्तिवंत छै भर्त्त सुभाय ॥ रहसी सेवामाय ॥ मानीजे करुणा भंडार ॥ माय तणी मनुंहार ॥ ६ ॥

१० ॥ राग चलित ॥

तुम घर जावो मोरा वीर ॥ भरत भाई ॥ तु० ॥ हमभी चलेंगे तुमभि चलोगे ॥ जननी क्यूं धर हैं धीर ॥ भ० १ ॥ मात चिहूं की आणंमे रहीयो ॥ प्रजाको हरियो पीर ॥ भ० २ ॥ मर्याद भंग संगनी चनकी ॥ मत जइयो परदाराकी तीर ॥ भ० ३ ॥ पर धन तोप रोपक्र पूजनमें ॥ विपत मैं धरियो धीर ॥ भ० ४ ॥ पुर जनकी आसीस लीज्यो ॥ कीज्यो जतन शरीर ॥ भ० ५ ॥ लघुवंध व प्रिय शत्रुघनकों ॥ मत करियो दिलगार ॥ भ० ६ ॥ जननी जनक अरुवंश दिपाज्यो ॥ एही है वात अखीर ॥ भ० ७ ॥ एह वचन सुन भर्त रामके ॥ नेनां भरानें नीर ॥ भ० ८ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ नेमचरित्रांतर्गत तृतीयोपरि सखी प्रति राजुल वाक्यम् ॥

१ ॥ कवित्वं ॥

शृंगारकी चरचूं तन केसेरी, आंखकु आंज मेंदी दोउं हातें ॥
तंबोल करी मुख केसें रंगुं, भांलकु तिलक, नाककुं नाथें ॥
चीर बनाय, बिलास करूं, सखि बात करूं रहुं कोनके साथे ॥
नेमतो आनेकु नेमकियो, अलि वीज पडो इण तीजके माथे ॥ १ ॥

२ ॥ दीप मालिकोपरि राजुल वाक्यम् ॥

सुंदर मंदिर ढोर मनोहर, चित्र विचित्र किवी चित्रशाली ॥
मेरेतो घोर अंधार पिया विन, भावतनां दिलमे जुदिपाली ॥
आठ भवोंकी स्नेहकी आथ, वढायनमे भव नाहिं संभाली ॥
राजुल कहे सखि आड दिपालीपें नेम विना मोरे फीकी दिवाली ॥ २ ॥

३ ॥ होरीपर राजुल वाक्यम् ॥

फागुनमेंज सुहागन, भागन खेलत होरि पिया संग गोरी ॥
लाल गुलाल उडात चलात, भरी पिचकारी ॥ अबीरजु घोरी ॥
गावत राग धमाल वजावत ताल कंसाल रसाल घनोरी ॥
राजमती कहे नेम विना मेरे, होरि नही हिय ऊठत होरी ॥ ३ ॥

४ ॥ गण गोर पर राजुल वाक्यं ॥

वालपनैहितैं गोरीकूं पूजिमैं, गायकैं गीत शखी संग मोरी ॥
दो वहरी २ आनधरी, नित, व्रत कीये तोही जोरी विखोरी ॥ नाही
डरूं सजनी इन तैं अव, तूंसजहो किनरूं सर होरी ॥ नेम तो छोरी
गये फिर नावत ॥ गोरि निगोरी कै आगल गोरि ॥ ४ ॥

५ ॥ कवित्वं. ॥

पियकी महिमा सुनके, जलिके मुख, हर्ष बढयो हियरा भरके ॥ कब व्हें दिन आंखिसे देखु, दिदार मनोरथ मार रहा करके ॥ निरखी हरखी प्रभुको जइ तें, अरि दाहिण नैन बुरो फुरकै ॥ जगनाथ मिलै न मिलै सजनी ॥ अब कांह कहूं छतियां धरके ॥ ५ ॥

६ ॥ राजमती प्रति सखि वाक्य. ॥

एशी बरात करी जदुनाथनें ॥ इंद्र घटा जिम घोर खरोरी ॥ फैली रही महिमा त्रिहु लोकमें, नेमशोबींद नही दुसरोरी ॥ तोरणपें प्रभु आय गये, अब नाहक क्यूं मन लूखो करोरी ॥ कहैत सखी तुम बोलत बाइजी, चूको मति मुख थूंको परोरी ॥ ६ ॥

कीये विलाप बहु मन वालके ॥ चरन ग्रह्यो संसारकूं छोडी ॥ मुक्ति वनीसूं उमाय रहे, प्रभू राजुलसें चितकूं लियो चोरी ॥ पीवके पैलियों मुक्ति गई नथमल्ल कहै सती कर्मकूं तोरी ॥ राजलके मन मोद बढयो ॥ शिव शोकको रूप विलोकन कोरी ॥ ७ ॥

॥ इति नेमिचरित्रांतर्गत कवित्व सप्तकम्. ॥

॥ सवैय्या. ॥

(१) नमूं श्री अरिहंत ॥ कर्मांको कियो अंत ॥ हुवाशो केवलवंत ॥ करुणा भंडारी है ॥ अतिशय चौतिसधार ॥ पैंतीस वाणी उच्चार ॥ समजावे नरनार ॥ परउपगारी है ॥ शरीर सुंदर आकार ॥ सुर जेसों झळकार ॥ गुणहै अनंत सार ॥ दोष परिहारी है ॥ कहतहैं त्रिलोकरिख मन वच काया करी ॥ लुळ लुळ वारंवार ॥ वंदना हमारी है ॥ १ ॥

(२) सकल करमटाल ॥ वस कर लियो काल ॥ मुगतीमे रय्या माल ॥ आत्माको तारी है ॥ देखत सकल भाव ॥ हुवा है जगतराव ॥ सदाहि क्षायक भाव ॥ भये अविकारी है ॥ अचल अ-

टलरूप ॥ आवे नहि भव कूप ॥ अनुप सरुप उप ॥ ऐसे सिद्ध धारी है ॥ कहत है तिलोकरिख ॥ बताओ ए वास प्रभु ॥ सदाई ऊगंते सूर ॥ वंदना हमारी है ॥ २ ॥

(३) गुण है छत्तीसपुर ॥ धरत धरम ऊर ॥ मारत करमक्रूर ॥ सुमति विचारी है ॥ शुद्धसो आचारवंत ॥ सुंदर हे रूपकंत ॥ भणिया सविसिद्धंत ॥ वांचणी सुप्यारी है ॥ अधिक मधुर वेण ॥ कोइ नहि लोपे केण ॥ सकल जीवाका सेण ॥ कीरत अपारी है ॥ कहत हे तिलोकरिख ॥ हितकारी देत सीख ॥ एसा आचारज ताकुं ॥ वंदणा हमारी हे ॥ ३ ॥

(४) पढत इग्यारा अंग ॥ करमासूं करे जंग ॥ पाखंडीको मान भंग ॥ करण हुस्यारी है ॥ चऊद पुरवधार ॥ जानत आगम सार ॥ भविनके सुखकार ॥ भ्रमता निवारी है ॥ पढावे भविकजन ॥ थिरकर देतमन ॥ तप करि तावे तन ॥ ममता निवारी हे ॥ कहत हे तिलोकरिख ॥ ज्ञान भानुपरतिख ॥ एसे उपाध्याय ॥ ताकुं वंदणा हमारी हे ॥ ४ ॥

(५) आदरी संजम भार ॥ करणि करे अपार ॥ सुमति गुपति धार ॥ विकथा निवारि हैं ॥ जयणा करे छैकाय ॥ सावद्य न बोले वाय ॥ बुजाई कपायलाय ॥ किरिया भंडारी हे ॥ ज्ञान भणे आठें जांम ॥ लेवे भगवंत नांम ॥ धरमको करे कांम ॥ ममताको मारी हें ॥ कहत हे तिलोकरिख ॥ करमांको टाले विख ॥ एसा मुनिराज ताकूं ॥ वंदणा हमारी हे. ॥ ५ ॥

॥ इति पंचपरमेष्ठी देव स्तुतिः ॥

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ
प्रथम खण्डे
व्याख्यानाभिधं सप्तम् प्रकरणम्.

इति श्री

सिद्धान्त शिरोमणि

प्रथम खंड.

॥ समाप्तिः ॥

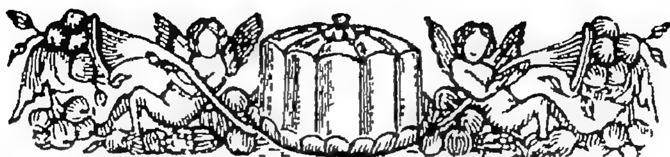
श्लोकः

रचितमिदममोघं पुस्तकं चारु चारु

प्रकरण बहुभिः श्री कुंदनांघ्रिप्रसादात्

निज गुरु पदिदत्तं रामचंद्रेण सर्वं

भवतु किल जिनस्य श्रावकानां विभूत्यै ॥ १ ॥



द्वितीय खंडः ॥



प्रकरण पहिला—नवतत्व ॥



हवे विवेकी सम्यक्त्व दृष्टि जीवने । नव पदार्थ जेहवा छे । तेहवा । तथा रूप बुद्धि प्रमाणे गुरु आम्नायथि धारवा ॥ ते नव पदार्थना नाम कहे छे ॥ जीव तत्व ॥ १ ॥ अजीव तत्व ॥ २ ॥ पुण्य तत्व ॥ ३ ॥ पाप तत्व ॥ ४ ॥ आश्रव तत्व ॥ ५ ॥ संवर तत्व ॥ ६ ॥ निर्जरा तत्व ॥ ७ ॥ बंध तत्व ॥ ८ ॥ मोक्ष तत्व ॥ ९ ॥

॥ अथ जीवतत्वना लक्षण ॥

जीवतत्व ते केहने कहिये ॥ चैतन्य लक्षण ॥ सदा सउपयोगी ॥ असंख्यात प्रदेशी । सुख दुःखनो जाण ॥ सुख दुःखनो वेदक-तेहने जीवतत्व कहिये ॥ १ ॥ जीवनो एक भेद ॥ सकल जीवोनुं चैतन्य लक्षण एक छे ॥ माटे संग्रहनये करि एक भेदे जीव कहिये ॥

तथा जीवना दो भेद ॥ त्रस १ अने थावर २ ॥ तथा ॥ सिद्ध ॥१॥ अने संसारी ॥ २ ॥ तथा जीवना तीन भेद ॥ स्त्री वेद ॥ १ ॥ पुरुष वेद ॥ २ ॥ नपुंसक वेद ॥ ३ ॥ तथा भव सिद्धिया ॥ १ ॥ अभव सिद्धिया ॥ २ ॥ नो भव सिद्धिया । नो अभव सिद्धिया ॥ ३ ॥ अथ जीवका चार भेद ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ मनुष्य ॥ ३ ॥ देवता ॥ ४ ॥ तथा ॥ चक्षु दर्शनी ॥ १ ॥ अचक्षु दर्शनी ॥ २ ॥ अवधि दर्शनी ॥ ३ ॥ केवल दर्शनी ॥ ४ ॥

॥ अथ जीवना पांच भेद ॥

एकेंद्रिय ॥ १ ॥ बेइंद्रिय ॥ २ ॥ तेइंद्रिय ॥ ३ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ४ ॥ पंचेंद्रिय ॥ ५ ॥ तथा ॥ सयोगी ॥ १ ॥ मन योगी ॥ २ ॥ वचन योगी ॥ ३ ॥ काय योगी ॥ ४ ॥ अयोगी ॥ ५ ॥

॥ अथ जीवना छे भेद ॥

पृथिवी काय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पति काय ॥ ५ ॥ त्रस काय ॥ ६ ॥ तथा ॥ स कषायी ॥ १ ॥ कोह कषायी ॥ २ ॥ मान कषायी ॥ ३ ॥ माया कषायी ॥ ४ ॥ लोभ कषायी ॥ ५ ॥ अकषायी ॥ ६ ॥

॥ अथ जीवना सात भेद ॥

नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ तिर्यंचणी ॥ ३ ॥ मनुष्य ॥ ४ ॥ मनुष्यणी ॥ ५ ॥ देवता ॥ ६ ॥ देवी ॥ ७ ॥

॥ अथ जीवना आठ भेद ॥

सलेशी ॥ १ ॥ कृष्ण लेशी ॥ २ ॥ निल लेशी ॥ ३ ॥ कापुत लेशी ॥ ४ ॥ तेजु लेशी ॥ ५ ॥ पद्म लेशी ॥ ६ ॥ शुकल लेशी ॥ ७ ॥ अलेशी ॥ ८ ॥

॥ अथ जीवना नव भेद ॥

पृथवी ॥ १ ॥ अप ॥ २ । तेउ ॥ ३ ॥ वाउ ॥ ४ ॥ वनस्पति ॥ ५ ॥ बेइंद्रिय ॥ ६ ॥ तेइंद्रिय ॥ ७ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ८ ॥ पंचेंद्रिय ॥ ९ ॥

॥ अथ जीवना दश भेद ॥

एकेंद्रिय ॥ १ ॥ बेइंद्रिय ॥ २ ॥ तेइंद्रिय ॥ ३ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ४ ॥ पंचेंद्रिय ॥ ५ ॥ ए ५ ना अप्रजाप्ता । अने । प्रजाप्ता । एवं दश भेद जाणवा ॥ १० ॥

॥ अथ जीवना इग्यारे भेद ॥

एकेंद्रिय ॥ १ ॥ बेइंद्रिय ॥ २ ॥ तेइंद्रिय ॥ ३ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ४ ॥ नारकी ॥ ५ ॥ तिर्यंच ॥ ६ ॥ मनुष्य ॥ ७ ॥ भवनपति ॥ ८ ॥ वाणव्यंतर ॥ ९ ॥ ज्योतिषी ॥ १० ॥ वैमानिक ॥ ११ ॥

॥ अथ जीवना बारा भेद ॥

पृथवी काय ॥ १ ॥ अपकाय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पति काय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ ए ६ अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्ता ॥ एवं बारा भेद जाणवा ॥ १२ ॥

॥ अथ जीवना तेरा भेद ॥

कृष्ण लेशी ॥ १ ॥ निल लेशी ॥ २ ॥ कापुत लेशी ॥ ३ ॥ तेजु लेशी ॥ ४ ॥ पद्म लेशी ॥ ५ ॥ शुकल लेशी ॥ ६ ॥ ए ६ अप्रजाप्ता । अने । प्रजाप्ता । एव ॥ १२ ॥ अने ॥ एक अलेशी ॥ एवं ॥ १३ ॥

॥ अथ जीवना चवदा भेद ॥

सूक्ष्म एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १ ॥ नें प्रजाप्तो ॥ २ ॥ बादर एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ४ ॥ बेइंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ५ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ६ ॥ तेइंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ७ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ८ ॥ चउरिंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ९ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १० ॥ असंज्ञी पंचेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ११ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १२ ॥ संज्ञी पंचेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १४ ॥ एवं जघन्य जीवना चवदा भेद जांणवा ॥

॥ अथ उत्कृष्टा जीवना पांचसो त्रेसट (५६३) भेद कहे छे ॥ तेमां नारकीना १४ भेद ॥ तिर्यंचना ४८ भेद ॥ मनुष्यना ३०३ भेद ॥ देवतांना १९८ भेद ॥ एवं सर्व मिली (५६३) भेद जांणवा ॥

॥ हिवे नारकीना १४ भेद कहे छे ॥

॥ सात नारकीकें नाम ॥

रत्नप्रभा ॥ १ ॥ सर्कर प्रभा ॥ २ ॥ वालु प्रभा ॥ ३ ॥ पंक प्रभा ॥ ४ ॥ धूम्र प्रभा ॥ ५ ॥ तम प्रभा ॥ ६ ॥ तमातम प्रभा ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ रत्नप्रभा किसको कहिये ॥ पेहली नारकीमें १६००० योजनको १ एक रत्नकरंड है ॥ जिसकी प्रभा पडती है । जिसको रत्नप्रभा कहते हैं ॥ दुसरीमें तीक्ष्ण कंकर हैं । जिसको सर्करप्रभा कहते हैं ॥ तिसरीमे तपतपती धूल्र हैं । जिसको वालु प्रभा कहते हैं ॥ चोथीमें कर्दम हैं । जिसको पंक प्रभा कहते हैं ॥ पांचवीमें धुंवा हैं ।

जिसको धूम्रप्रभा कहते हैं ॥ छठीमें अंधारा है। जिसको तमप्रभा कहते हैं॥ सातवीमें महान् अंधारा हैं। जिसको तमातम प्रभा कहते हैं ॥ ये सात नारकीना अपजाप्ता अने पजाप्ता ॥ एवं चौदा भेद जाणवा ॥

॥ अथ सात नारकीनो यंत्र करी नाम गोत्रादि दिखाते हैं ॥

नारकी	नारकी नाम	नारकीना गोत्र	नारकीना पिंड	नारकी-रा पाथडा	नारकी-रा आंतरा	नरका वासा
१	घंमा	रत्न प्रभा	१८००००	१३	१२	३००००००
२	वंसा	सर्कर प्रभा	१३२०००	११	१०	२५०००००
३	सीला	वालु प्रभा	१२८०००	९	८	१५०००००
४	अंजना	पंक प्रभा	१२००००	७	६	१००००००
५	अरीठा	धूम्र प्रभा	११८०००	५	४	३०००००
६	मघा	तम प्रभा	११६०००	३	२	९९९९५
७	माघवती	तमातमप्रभा	१०८०००	१	नथी	५

॥अथ तिर्यंचना ४८ भेद कहे छे॥

वेइंद्रियना २ भेद ॥ अपजाप्ता १ पजाप्ता २ ॥ तेइंद्रियना २ भेद॥ अपजाप्ता १ पजाप्ता २ ॥ चउरिंद्रियना २ भेद ॥ अपजाप्ता १ पजाप्ता २ ॥ एव ६ ॥

॥ अथ पंचेंद्रियना २० भेद कहे छे ॥

जिसका मूल भेद २ । समूर्छिम (१) गर्भज (२) गर्भजरा– मूल भेद(५)जलचर(१)स्थलचर (२)खेचर(३)उर्पर (४) भुजपर (५)

(१) जलचर किसको कहिये ॥ जलमे उपजे ते जलचर ॥ कच्छ । मच्छ । इत्यादि अनेक नांम जाणवा ॥

(२) स्थलचर किसको कहिये ॥ पृथ्वीपर चाले ते स्थलचर ॥ जिसका ४ भेद ॥ गंडी पदा । सनह पदा ॥ गंडी पदा ते गेंडा हाथी प्रमुख अनेक नाम जाणवा ॥ सनह पदा ते सिंह–श्वान प्रमुख अनेक नाम जाणवा ॥

इखुरा ॥ दुखरा ॥ इखुरा ते अश्व–खर और खचर इत्यादि ॥ दुखुरा ते गाय–भेंस–बैल–मृग इत्यादि अनेक नांम जाणवा ॥

(३) खेचर किसको कहिये ॥ आकाशमे चाले ते खेचर ॥ जिसका चार भेद ॥ रोम पंखी ॥ १ ॥ चर्म पंखी ॥ २ ॥ समुग पंखी ॥ ३ ॥ वितत पंखी ॥ ४ ॥

रोमपंखी ते रोमवाली पांखां ॥ सुवटो–मैना–कोयल–हंस चिडी–कमेडी–इत्यादि अनेक नांम जाणवा ॥

चर्मपंखी ते चामडारी पांखां ॥ वागल–चमचेड इत्यादि अनेक नाम जाणवा ॥ समुग पंखी ते डावाराढकणा सरीखी पांखां ॥

विततपंखी ते अरटियारी ताडियां सरिखी पांखां ॥ अढाई द्वीपमें तो चर्मपंखी–रोमपंखी ए २ जातना पंखी छे ॥ अने अढाई द्वीपके बारे च्यारूंई जातना पंखी छे ॥

(४) उरपर किसको कहिये ॥ पेटसे चाले ते उरपर ॥ उरपरमे सर्प इत्यादि जाणवा ॥

(५) भुजपर ते भुजासे चाले ॥ भुजपरमे नौलिया—किरकांटिया--कोल--मूंसा इत्यादि जाणवा ॥ ए पांच सन्नी--पांच असन्नी॥ इनका अप्रजाप्ता अने प्रजाप्ता ॥ एवं २० ॥

॥ अथ एकेंद्रियना २२ भेद कहे छे ॥

पृथ्वी कायना ४ भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ अने वादर २ ॥ अप्रजाप्ता ३ ॥ प्रजाप्ता ४ ॥ अपकायका चार भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ वादर २ ॥ अप्रजाप्ता ३ ॥ प्रजाप्ता ४ ॥ तेउकायना चार भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ वादर २ ॥ अप्रजाप्ता ३ ॥ प्रजाप्ता ४ ॥ वाउकायना चार भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ वादर २ ॥ अप्रजाप्ता ३ ॥ प्रजाप्ता ४ ॥ वनस्पति कायना छे भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ साधारण २ ॥ अने प्रत्येक ३ ॥ ए तीनोका अप्रजाप्ता अने प्रजाप्ता ॥ एवं सर्व मिली तिर्यंचना ४८ भेद जाणवा ॥

॥ अथ मनुष्यना ३०३ भेद कहे छे ॥

॥ १५ ॥ कर्म भूमिना मनुष्य ॥ ३० ॥ अकर्मभूमिना मनुष्य ॥ ५६ ॥ अंतरद्वीपना मनुष्य ॥ एवं ॥ १०१ ॥ क्षेत्रना गर्भेज मनुष्यना ॥ अप्रजाप्ता नें प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ २०२ ॥ ने एकसोने एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ॥ एवं ॥ ३०३ ॥ भेद मनुष्यना ॥ हिवे कर्म भूमि ते कहने कहिये ॥ असी ॥ १ ॥ मसी ॥ २ ॥ कृपी ॥ ३ ॥ ए ३ प्रकारना व्यापारे करी जीवे तेहने कर्म भूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते कर्म भूमिना क्षेत्र केटला छे ॥ ५ ॥ भरत ॥ ५ ॥ इरवत ने ॥ ५ ॥ महा

विदेह । एवं ॥ १५ ॥ ते कर्म भूमि किहां छे ॥ एकलाख योजननो जंबुद्विप छे ॥ तेहमां ॥ १ ॥ भरत ॥ १ ॥ इरवर्त ॥ १ ॥ महाविदेह ए ३ क्षेत्र कर्म भूमिनां जंबुद्विपमां छे ॥ तेहने फरतो ॥ बें लाख योजननो लवण समुद्र छे ॥ तेहने फरतो चार लाख योजन-नो धातकी खंडद्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ ॥ भरत ॥ २ ॥ इरवत ॥२॥ महाविदेह छे ॥ तेहने फरतो ॥ ८ ॥ लाख योजननो । कालोदधि समुद्र छे ॥ तेहने फरतों ॥ ८ ॥ लाख योजननो । अर्ध पुष्करद्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ भरत ॥ २ इरवर्त ॥ २ महाविदेह छे ॥ एवं । छ दु ॥ १२ ॥ ने ॥ ३ ॥ पनर कर्म भूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे ३० अ-कर्म भूमिना मनुष्य कहे छे ॥ अकर्म भूमि ते केहने कहिये ॥ ३ कर्म रहित दश प्रकारना कल्पवृक्षे करीने जीवे तेहने अकर्म भूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते केटला छे ॥ ५ ॥ हेमवय ॥ ५ ॥ हिरणवय ॥ ५ ॥ हरिवास ॥ ५ ॥ रमकवास ॥ ५ ॥ देवकुरु ॥ ५ ॥ उत्तर कुरु ॥ एवं ॥ ३० ॥ हवे जंबुद्विपमां ॥ १ हेमवय ॥ १ हिरणवय ॥ १ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ १ देवकुरु ॥ १ उत्तर कुरु ॥ एवं ॥६॥ क्षेत्र जंबुद्विपमां छे ॥ धातकि खंडमां बे बे जाणवा ॥ एवं ॥ १८ ॥ अर्द्ध पुष्कर द्विपमां बे बे जाणवा ॥ एवं ॥ ३० ॥ अकर्म भूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे छपन अंतरद्विपना मनुष्य कहे छे ॥ जंबुद्विप-ना भरत क्षेत्रनि मर्यादानो करणहार ॥ चुल हिमवंत नामा पर्वत छे ॥ ते पीला सोनामय छे ते सो योजननो उंचो छे ॥ सो गाउनो उंडो छे ॥ एक हजार बावन योजनने बारे कलानो पहोलो छे ॥ चोविश हजार नवशें बत्रिश जोजननो लांबो छे ॥ तेहने पूर्व पश्चिमने छेहडे बे बे डाढा निकली छे ॥ एकेकि डाढा चोराशीशें–चोराशी-शें जोजननी झाझेरी लांबी छे ॥ ते एकेकि डाढा उपरे ॥ सात-सा-त अंतरद्विपा छे ॥ ते अंतरद्विपा किहां छे ॥ जगतिना कोट

थकी ॥ ३०० ॥ जोजन लवण समुद्रमां जाइये ॥ तिवारे पहेलो अंतर द्विपो आवे ॥ ते ॥३००॥ जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ तिहांथी ॥ ४०० ॥ जोजन जाइये ॥ तिवारे बिजो अंतरद्विपो आवेते ॥ ४००॥ जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ तिहांथि ॥ ५०० ॥ जोजन जाइये तिवारे ॥ त्रिजो अंतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ५०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ तिहांथि ॥ ६०० ॥ जोजन जाइये तिवारे ॥ चोथो अंतरद्विपो आवे ते ॥ ६०० ॥जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ तिहांथी ॥ ७०० ॥ जोजन जाइये तिवारे ॥ पांचमो अंतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ७०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ तिहांथी ॥ ८०० ॥ जोजन जाइये तिवारे ॥ छठो अंतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ८०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ तिहांथी ॥ ९०० ॥ जोजन जाइये तिवारे ॥ सातमो अंतरद्विपो आवे ॥ते॥ ९०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ एवं । सात चोकुं ॥ २८ ॥ अंतरद्विपा जाणवा ॥ एमज इरवर्त क्षेत्रनी मर्यादानो करणहार शिखरी नामा पर्वत छे ॥ ते चुल हिमवंत शरिखो जाणवो ॥ तिहां पण ॥ २८ ॥ अंतरद्विपा छे ॥ अठाविश दु ॥ ५६ ॥ अंतरद्विपा जाणवा ॥ अंतरद्विपाना मनुष्य ते केहने कहिये ॥ हेठे समुद्र छे ॥ अने उपर अधर डाढामां द्विपाना रहेनार छे ॥ माटे अंतर द्विपाना मनुष्य कहिये ॥ हिवे ॥ १०१ ॥ क्षेत्रना सम्मुर्छिम मनुष्य ॥ १४ ॥ स्थानकमां उपजे छे ते कहे छे ॥ उच्चारे सुवाते—वडिनितमां उपजे ॥ १ ॥ पासवणे सुवाते—लघुनितमां उपजे ॥ २ ॥ खेले सुवाते—वलखामां[1] उपजे ॥ ३ ॥ संघाणे सुवाते—लिंटमां[2] उपजे ॥ ४ ॥ वंते सुवाते—वमनमां ऊपजे ॥ ५ ॥ पीते सुवाते—निला पिला पीतमां उपजे ॥ ६ ॥ पुइएसुवाते--परुमां[3] उ-

---

१—बेलार २—नाकनो मेल ३—रस्सी

पजे ॥ ७ ॥ सोणिए सुवाते–रुद्धिरमां उपजे ॥ ८ ॥ सुक्के सुवाते–विर्यमां उपजे ॥ ९ ॥ सुक पोगल परिसाडिए सुवाते–विर्यादिकना पुद्गल सुकाणा ते फिरि भिना थाय तेहमां उपजे ॥ १० ॥ विगयजीव कलेवरे सुवाते–मनुष्यना कलेवरमां उपजे ॥ ११ ॥ इत्थि पुरिस संजोगे सुवाते–स्त्री पुरुषना संजोगमां उपजे ॥ १२ ॥ नगर निधमणे सुवाते–नगरनी खालोमां उपजे ॥ १३ ॥ सव्वे सुचेव असुइठाणे सुवाते–सर्व मनुष्य संबंधि अशुचि स्थानकोमां उपजे ॥ १४ ॥ एवं ॥ १०१ ॥ क्षेत्रना समुछिंम मनुष्य अप्रजाप्ता ॥ एवं सर्व मिली ॥ ३०३ ॥ भेद मनुष्यना कह्या ॥

॥ हिवे देवताना १९८ भेद कहे छे ॥

मूळ भेद चार ॥ भवनपति (१) बाणव्यंतर (२) ज्योतिषी (३) विमानिक (४)

उत्तरभेद (१९८) ते कहे छेः–भवन पतिना दस भेद–असुर कुमार (१) नाग कुमार (२) सुवर्ण कुमार (३) अग्नि कुमार (४) विद्युत् कुमार (५) दीप कुमार (६) उदधि कुमार (७) दिशा कुमार (८) पवन कुमार (९) स्तनित कुमार (१०)

॥ हिवे १५ परमाधामी कहे छे ॥

अंबे (१) अंबरसे (२) सामे (३) रुद्दे (४) विरुद्दे (५) काळे (६) महाकाळे (७) सबळे (८) धनु (९) कुंभे (१०) वालू (११) वैतरणी (१२) असिपत्ते (१३) खरस्वर (१४) महाघोषे (१५)

॥ हिवे सोळे प्रकारके वाणव्यंतर देव कहे छे ॥

पिशाच्च (१) भूत (२) यक्ष (३) राक्षस (४) किन्नर (५) किं-

पुरुष (६) महोरग (७) गंधर्व (८) आणपन्नी (९) पाणपन्नी (१०) इसीवाई (११) भुईवाई (१२) कंदिय (१३) महाकंदिय (१४) कोहंड (१५) पयंग देव (१६)

॥ हिवे दस प्रकारके तिर्यक् जंभका देव कहे छे ॥

आण जंभका (१) पाण जंभका (२) लयन जंभका (३) सयन जंभका (४) वत्थ जंभका (५) फल जंभका (६) पुष्फ जंभका (७) फल पुष्फ जंभका (८) अग्गी जंभका (९) वीज्जु जंभका (१०)

॥ हिवे दस प्रकारके ज्योतिषी देव कहे छे ॥

चंद्रमा (१) सूर्य (२) ग्रह (३) नक्षत्र (४) तारा (५) ए ५ चर ते अढिद्विपमां छे ॥ नें ५ स्थिर ते अढिद्विप वाहिर छे ॥ एवं ॥ १० ॥

॥ हिवे तीन प्रकारके किल्बिषि देव कहे छे ॥

त्रण पलिया ॥१॥ त्रण सागरिया ॥२॥ तेर सागरिया ॥३॥

॥ हिवे नव लोकांतिक कहे छे ॥

सारस्वत (१) आदित्य (२) विन्हि (३) वरुण (४) गर्द्दतोया (५) तोपिया (६) अव्यावाधा (७) अगिच्चा (८) रिठा (९)

॥ हिवे वारे देवलोक कहे छे ॥

सुधर्म (१) इशान (२) सनत्कुमार (३) महेंद्र (४) ब्रह्म लोक (५) लंतक (६) महाशुक्र (७) सहस्रार (८) आणत (९) प्राणत (१०) आरण (११) —

॥ हिवे नव ग्रीवेक कहे छे ॥

भद्दे (१) सुभद्दे (२) सुजाए (३) सुमाणसे (४) प्रिय दर्शणे (५) सुदर्शने (६) आमोहे (७) सुपडिबद्धे (८) जशोधरे (९)

॥ हिवे पांच अनुत्तर विमान कहे छे ॥

विजय (१) विजयंत (२) जयंत (३) अपराजित (४) सर्वार्थसिद्ध (५)

चौदे नारकीना ४८–तिर्यंचना ३०३–मनुष्यना १९८–देवताना एवं सर्व मिली ५६३ जीवना भेद जाणवा ॥

॥ इति जीवतत्व समाप्त ॥

॥ अथ अजीवतत्व कहे छे ॥

अजीव किसको कहिये ॥ अजीव जड लक्षण सुख दुखने जाणे नही, साता असाता वेदे नही, उपयोग रहित, परजा प्राण रहित, जिसको अजीवतत्व कहिये ॥

॥ अजीवतत्वके जगन्य १४ भेद ॥

धर्मास्तिकायका ३ भेद ॥ स्कंध (१) देश (२) प्रदेश (३) अधर्मास्तिकायका ३ भेद ॥ स्कंध (१) देश (२) प्रदेश (३) आकाशस्तिकायका ३ भेद ॥ स्कंध [१] देश [२] प्रदेश [३] एवं [९] दसमो काल ॥ ए (१०) भेद अरूपि अजीवना कह्या ॥ हिवे रूपि अजीवना (४) भेद कहे छे ॥ पुद्गलास्तिकायका (४) भेद ॥ स्कंध (१) देश (२) प्रदेश (३) परमाणु पुद्गल (४) एवं ॥ १४ ॥

॥ उत्कृष्टा अजीवतत्वका (५६०) भेद तेहमा (३०) भेद अजीव अरूपीना कहे छे ॥

धर्मास्तिकाय-द्रव्य थकी एक द्रव्य (१) क्षेत्रथकी लोक प्रमाणे (२) काल थकि अनादि अनंत (३) भावथकि अवर्णे अगंधे--अरसे-अफासे-अमूर्ति [४] गुणथकि चलण सहाय [५] अधर्मास्ति काय--द्रव्यथकी एक द्रव्य [६] क्षेत्रथकि लोक प्रमाणे [७] कालथकि अनादि अनंत [८] भावथकि अवर्णे-अगंधे-अरसे--अफासे--अमूर्ति [९] गुण थकि स्थिर सहाय [१०] आकाशास्ति काय-द्रव्यथकि-एक द्रव्य [११] क्षेत्रथकि लोकालोक प्रमाणे [१२] काल थकि अनादि अनंत (१३) भावथकि अवर्णे--अगंधे--अरसे--अफासे--अमूर्ति [१४] गुण थकी ॥ अवगाहनादान [१५] हिवे काल--द्रव्यथकी अनेक द्रव्य [१६] क्षेत्रथकि-अढिद्रिप प्रमाणे [१७] कालथकी-अनादि अनंत [१८] भावथकि अवर्णे-अगंधे-अरसे-अफासे-अमूर्ति [१९] गुणथकि वर्तना लक्षण [२०] एवं ॥ २० ॥ और धर्मास्ति अधर्मास्ति आकास्ति इन तीनोंके तीन तीन भेद अने एक काल एवं सर्व मिली अरूपि अजीवना [३०] भेद कह्या ॥

हिवे रूपि अजीवना [५३०] भेद कहे छे ॥

वर्ण पांच—काळो [१] नीलो [२] रातो [३] पीळो [४] धोळो [५] एक एकेका वर्णमांही वीस वीस भेद लाभे ॥ ते कहे छे ॥ दोय २ गंध-पांच ५ रस-पांच ५ संठाण-आठ ८ स्पर्श एवं वीस [२०] पंचा शो ॥ १०० ॥

हिवे गंध दोय २ ॥ ते दुर्गंध [१] सुगंध [२] एकेका गंध

मांही तेवीस तेवीस भेद लाभे-पांच ५ वर्ण, पांच ५ रस, पांच ५ संठाण, आठ ८ स्पर्श एवं २३ दु-छियालीस [४६].

हिवे रस पांच ५-तीखो [१] कडुवो (२) कषायलो [३] खाटो [४] मीठो (५) एकेका रसमांही वीसवीस भेद लाभे–पांच ५ वर्ण, दोय २ गंध, पांच ५ संठाण, आठ ८ स्पर्श एवं वीस पंचा सो [१००]

हिवे संठाण पांच ५–परिमंडल संठाण (१) वटसंठाण (२) त्रंस संठाण (३) चौरंस संठाण (४) आयतन संठाण (५) एकेका संठाणमांही वीस वीस भेद लाभे–पांच ५ वर्ण, दोय २ गंध, पांच ५ रस, आठ ८ स्पर्श एवं वीस पंचा सो (१००)

हिवे स्पर्श ८ आठ -खरखरो (१) सुंहालो (२) हलको (३) भारी (४) ठंडो (५) ऊनो (६) लुखो (७) चोपडयो (८) एकेका स्पर्शमांही तेवीस तेवीस भेद लाभे-५ पांच वर्ण, २ दोय गंध ५ पांच रस, ६ छे स्पर्श, ५-पांच संठाण* एवं (२३) तेवीस अट्ठा (१८४)

एवं सो (१००) वर्णना–छिंयालीस (४६) गंधना–सो (१००) रसना–सो (१००) संठाणना एकसो चैाराशी (१८४) स्पर्शना ए पांचशो तीस [५३०] अजीव रूपीना और तीस [३०] अजीव अरूपीना [जे पूर्व कह्या ते] सर्व मिली (५६०) अजीवना भेद जाणवा ॥

॥ इति अजीव तत्वं समाप्तम् (२) ॥

* खरखरोमें-खरखरो और सुंहालो ए दोय स्पर्श वर्जवा-एम सर्वत्र दो दो स्पर्श वर्जवा

॥ अथ पुण्य तत्व कहे छे ॥

पुण्य तत्व ते दुःखे दुःखे बांधे सुखे सुखे भोगवे जिसको पुण्य तत्व कहिये ॥

पुण्य तत्वके जघन्य नव [९] भेद ते कहे छेः—

अन्न पुन्ने [१] पाण पुन्ने [२] लयण पुन्ने (३) सयण पुन्ने (४) वत्थ पुन्ने (५) मन पुन्ने [६] वचन पुन्ने [७] काय पुन्ने (८) नमस्कार पुन्ने (९)

ए (९) नव भेदे पुण्य उपार्जे और उत्कृष्टा (४२) भेदे पुण्य भोगवे ते कहे छेः—

शाता वेदनीय (१) उंच गोत्र (२) मनुष्य गति (३) मनुष्यानुपूर्वी (४) देवतानि गति (५) देवानुपूर्वी (६) पंचेंद्रियनि जाति [७] उदारिक शरिर [८] वैक्रेय शरिर (९) अहारक शरिर (१०) तैजस शरिर (११) कार्मण शरिर (१२) उदारिकना अंग उपांग [१३] वैक्रेयना अंग उपांग (१४) आहारकना अंग उपांग (१५) वज्जरिषभ नाराच संघयण [१६] समचउरंश संठाण [१७] शुभवर्ण (१८) शुभगंध (१९) शुभरस (२०) शुभस्पर्श (२१) अगुरु लघुनाम (२२) पराघात नाम (२३) उस्वास नाम [२४] आताप नाम (२५) उद्योत नाम (२६) शुभ चालवानि गति (२७) निर्माण नाम (२८) त्रस नाम (२९) वादर नाम (३०) प्रजाप्त नाम (३१) प्रत्येक नाम (३२) स्थिर नाम [३३] शुभ नाम (३४) सौभाग्य नाम (३५) सुस्वर नाम (३६) आदेय नाम (३७) जशो कीर्ति नाम (३८) देवतानुं आउपूं (३९) मनुष्यनुं आउपूं (४०) तिर्यचनुं आउपूं जु-

गल वत् (४१) तिर्थंकर नामकर्म ॥ ४२ ॥ एवं (४२) भेद पुण्यना जाणवा ॥

॥ इति पुण्य तत्वं समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ पाप तत्व कहे छे ॥

पाप तत्व ते सुखे सुखे बांधे और दुःखे दुःखे भोगवे जिसको पाप तत्व कहिये ॥

पाप तत्वके जघन्य अढारा (१८) भेदः—

प्रणातिपात (१) मृषावाद (२) अदत्तादान (३) मैथुन (४) परिग्रह (५) क्रोध (६) मान (७) माया (८) लोभ (९) राग (१०) द्वेष (११) कलह (१२) अभ्याख्यान (१३) पैशून्य (१४) परपरिवाद (१५) रति अरति (१६) माया मोसो (१७) मिछादंसण सल्ल(१८)

ए अढारे प्रकारे पाप उपार्जे और उत्कृष्टा (८२) प्रकारे पाप भोगवे ॥ ते कहे छेः—

मतिज्ञानावरणिय (१) श्रुतज्ञानावरणिय (२) अवधिज्ञानावरणिय (३) मनपर्जव ज्ञानावरणिय (४) केवलज्ञानावरणिय [५] दानांतराय (६) लाभांतराय (७) भोगांतराय (८) उपभोगांतराय (९) वीर्यांतराय (१०) निद्रा (११) निद्रानिद्रा (१२) प्रचला (१३) प्रचला प्रचला (१४) थीणद्धिनिद्रा (१५) चक्षु दर्शनावरणिय (१६) अचक्षु दर्शनावरणिय (१७) अवधि दर्शनावरणिय (१८) केवल दर्शनावरणिय (१९) निच गोत्र (२०) अशाता वेदनीय [२१] मिथ्यात्व मोहनिय (२२) स्थावरपणुं [२३] सूक्ष्मपणुं [२४] अपजा-

तपणुं [२५] साधारपणुं [२६] अस्थिर नाम [२७] अशुभ नाम [२८] दौर्भाग्य नाम [२९] दुःस्वर नाम (३०) अनादेय नाम [३१] अजशोकीर्ति नाम (३२) नरकनि गति [३३] नरकनुं आउषूं [३४] नरकानुपूर्वी (३५) अनंतानुवंधि क्रोध (३६) मान (३७) माया (३८) लोभ (३९) अपच्चखाणावरणिय क्रोध (४०) मान (४१) माया (४२) लोभ (४३) पच्चखाणावरणिय क्रोध (४४) मान (४५) माया (४६) लोभ (४७) संजलनो क्रोध (४८) मान (४९) माया (५०) लोभ (५१) हास्य (५२) रति (५३) अरति (५४) भय (५५) शोक [५६] दुगंछा (५७) स्त्रीवेद (५८) पुरुषवेद [५९] नपुंसकवेद (६०) तिर्यंचनी गति [६१] तिर्यंचनी अनुपूर्वी (६२) एकेंद्रियपणुं (६३) वेइंद्रियपणुं (६४) तेइंद्रियपणुं [६५] चउरिंद्रियपणुं (६६) अशुभ चालवानी गति (६७) उपघात नामकर्म (६८) अशुभ वर्ण (६९) अशुभ गंध (७०) अशुभ रस (७१) अशुभ स्पर्श (७२) ऋषभ नाराच संघयण (७३) नाराच संघयण (७४) अर्द्धनाराच संघयण (७५) किलिका संघयण (७६) छेवटु संघयण (७७) निगोह परिमंडल संठाण (७८) सादियो संठाण (७९) वामन संठाण (८०) कुब्ज संठाण (८१) हुंडक संठाण (८२) एवं (८२) भेद पाप तत्वना जाणवा ॥

॥ इति पापतत्वं समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ आश्रव तत्व कहे छे ॥

आश्रव तत्व किसको कहिये ॥ जीवरूपीयो तलाव कर्म रूपीयो पांनी आश्रवरूपी नाला करीनें आवे जिसको आश्रव तत्व कहीये॥

आश्रव तत्वके जघन्य वीस (२०) भेदः—

मिथ्यात्व आश्रव [१] अव्रत आश्रव [२] प्रमाद आश्रव

[३] कषाय आश्रव [४] अशुभजोग आश्रव [५] प्राणातिपात आश्रव [६] मृषावाद आश्रव [७] अदत्तादान आश्रव [८] मैथुन आश्रव [९] परिग्रह आश्रव [१० श्रोतेंद्रिय वसंन करे तो आश्रव [११] चक्षुइंद्रिय वसन करे तो श्रव [१२] घ्राणेंद्रिय वसन करे तो आश्रव [१३] रसेंद्रिय वसन करे तो आश्रव [१४] स्पर्शेंद्रिय वसन करे तो आश्रव (१५) मन वसन करे तो आश्रव [१६] वचन वसन करे तो आश्रव (१७) काय वसन करे तो आश्रव (१८) भंड उपगर्ण अज्जयणासें लेवे अज्जयन.सें मेले तो आश्रव (१९) सुई कुसग अझयणासे लेवे ओर अझयणासे मेले तो आश्रव (२०)

उत्कृष्टा (४२) भेदः—

पांच (५) आश्रव ओर पांच (५) इंद्रियके भेद (पूर्व कह्या जे) एवं दस (१०) क्रोध (११) मान (१२) माया (१३) लोभ (१४) और तीन (३) अशुभ जोग ते मन (१५) वचन (१६) काया (१७) और (२५) क्रिया तेहना नांमः—

कायिया (१८) अधिगरणिया (१९) पाउषिया (२०) पारितावणिया (२१) पाणाइ वाईया (२२) आरंभिया (२३) परिग्गहिया (२४) मायावत्तिया (२५) अपच्चखाणवत्तियां (२६) मिछादंशणवत्तिया (२७) दिठीया (२८) पुठिया (२९) पाडुचिया (३०) सामतो वणिया (३१) नेसथिया (३२) सहथिया (३३) अणवणिया (३४) विदारणिया (३५) अणाभोगी (३६) अणवकंखवतिया (३७) अनापउगी (३८) सामुदाणी [३९] पेजवतिया [४०] दोसवतिया (४१) इरियावहिया क्रिया (४२) एवं (४२) भेद आश्रव तत्त्वना जाणवा ॥

॥ इति आश्रव तत्त्वं समाप्तम् ॥ ५ ॥

अथ संवर तत्व कहे छे ॥

संवर तत्व किसको कहिये ॥ जीवरूपी तलाव, कर्मरूपी पानी, आश्रव रूपिया नाला करी आवतांने रोके जिसको संवर तत्व कहिये ॥

संवर तत्वके जघन्य वीस (२०) भेदः—

समकित संवर [१] व्रतपच्चखाण संवर [२] अप्रमाद संवर (३) अकषाय संवर (४) शुभजोग संवर (५) प्रणातिपात–ते जीवकी हिंसा नही करे तो संवर (६) मृषावाद–ते झूठ नही बोले तो संवर (७) अदत्तादान--ते चोरी नही करे तो संवर (८) मैथुन नही सेवे तो संवर (९) परिग्रह नही राखे तो संवर (१०) श्रोत्रेंद्रिय वश करे तो संवर (११) चक्षुइंद्रिय वश करे तो संवर (१२) घ्राणेंद्रिय वश करे तो संवर (१३) रसेंद्रिय वश करे तो संवर (१४) स्पर्शेंद्रिय वश करे तो संवर (१५) मन वश करे तो संवर (१६) वचन वश करे तो संवर (१७) काया वश करे तो संवर (१८) भंड उपगर्ण जयणासें लेवे जयणासें मुके तो संवर (१९) सुई कुसग जयणासे लेवे जयणासें मुके[1] तो संवर (२०)

उत्कृष्टा (५७) भेदः—

इर्या सुमति (१) भाषा सुमति (२) एषणा सुमति (३) आयाण भंडमत्त निखेवणा सुमति (४) उच्चार पास वण खेल जल सिंघाण पारिठावणीया सुमति (५) ॥ ए ॥ ५ ॥ सुमति ॥ अनें ॥ (३) गुप्ति ॥ मन गुप्ति (१) वचन गुप्ति (२) काय गुप्ति (३) ॥ ए (८) हिवे

1–मेले

(२२) परिसह कहे छे ॥ क्षुधा परिसह (१) तृषा परिसह (२) शीत परिसह (३) ताप परिसह (४) दंश मंश परिसह [५) अचेल परिसह (६) अरति परिसह (७) स्त्री परिसह (८) चरिया परिसह (९) निसिया परिसह (१०) सेजा परिसह (११) आक्रोश वचन परिसह (१२) वध परिसह (१३) जाचवा परिसह (१४) अलाभ परिसह (१५) रोग परिसह (१६) त्रगसपर्श परिसह (१७) मेल परिसह (१८) सत्कार पुरस्कार परिसह(१९) प्रज्ञा परिसह(२०) अज्ञान परिसह (२१) दंशण परिसह (२२) ॥ ए ॥ २२ ॥ नें ॥ ८ ॥ पूर्वे कह्या ते ॥ एवं ॥ ३० ॥ खंति (३१) मुत्ति (३२) अज्जवे (३३) मद्दवे (३४) लाघवे (३५) सच्चे (३६) संजमे (३७) तवे (३८) चियाए (३९) बंभचेर वासे (४०) ॥ ए ॥ १० ॥ प्रकारे जति-धर्म आराधवो ॥ नें ॥ १२ ॥ भावना भाववी ॥ ते कहे छे ॥ अ-नित्य भावना (१) अशरण भावना (२) संसार भावना (३) एकत्व भावना (४) अणित्त्व भावना (५) अशुचि भावना (६) आश्रव भावना (७) संवर भावना (८) निर्जरा भावना (९) लोक भावना (१०) वोध भावना (११) धर्म भावना (१२) ॥ ए ॥ ४० ॥ नें. ॥ १२ ॥ ५२ ॥ सामायक चारित्र (५३) छेदो पस्थापनिय चारित्र ॥ ५४ ॥ परिहार विशुद्ध चारित्र (५५) सुक्ष्म संपराय चारित्र ॥ ५६ ॥ जथाख्यात चारित्र ॥ ५७ ॥ ए ॥ ५७॥ भेद संवर तत्वना जाणवा ॥

॥ इति संवर तत्वं समाप्तम् ॥ ६ ॥

॥ अथ निर्जरा तत्व कहे छे ॥

निर्जरा ते देस थकी कर्म तोडीने देस थकी जीवने ऊजलो करे ॥ जिस्को निर्जरा तत्व कहिये ॥

निर्जरा तत्वके जघन्य (१२) भेदः—

अनसण (१) अणोदरी (२) भिक्षाचरी (३) रस परि-त्याग (४) काय क्लेश (५) पडिसलीणया (६) ए ॥ ६ ॥ भेद बाह्य तपना कह्या ॥ हिवे ॥ ६ ॥ भेद अभ्यंतर तपना कहे छे ॥ प्रायश्चित्त [७] विनय [८] वेयावच्च [९] सजाय [१०] ध्यान [११] काउसग्ग [१२] एवं ॥ १२ ॥

हिवे विस्तार करी निर्जराना भेद कहे छेः—

[१] अनसण—ते तीन (३) अहार तथा चार [४] अहारको त्याग करे ॥ तिणरा दोय [२] भेद ॥ ईतरिय [१] और आव[२] ॥ ईतरिय--ते उपवासादि छै-महिने तक तप करे जिणने ईतरिय कहिये ॥ १ ॥ आव—ते जाव जीवतक अहारनो त्याग करे जि-णने आव कहिये ॥ २ ॥

तिणरा (२) भेद ॥ पादोपगमन (१) भक्त प्रत्याख्यान (२) पादोपगमन किणने कहिये । पडिया वृक्षनी डालनी परे हाले चाले नही । जिणरा (२) भेद । व्याघात थकी (१) निरव्याघात थकी (२) ॥ व्याघात--ते उपद्रव उपज्यां करे (१) निरव्याघात—ते विना उपद्रव उपज्यांही करे (२) चोविहारनें पडिक्रमणा रहित । भगत प्रत्याख्यान--ते तीन अहारका तथा चार अहारका त्याग करे । तिणरा (२) भेद । व्याघात थकी (१) नें । निरव्याघात थकी करे [२] ॥ हलन चलनकी क्रिया करे । पडिकमणा सहित संथारो करे जिणनें भगत प्रत्याख्यांन कहीजें ॥ २ ॥ इति अणसण ॥ १ ॥

(२) अणोदरीरा भेद कहे छे ॥

अणोदरीरा मूल भेद ॥ २ ॥ द्रव्य अणोदरी ॥ १ ॥ भाव अणोदरी ॥ २ ॥ द्रव्य ऊंणोदरी--ते द्रव्य ऊंणा करे ॥ १ ॥ भाव ऊंणोदरी--ते कषायादिक ऊंणा करे ॥ २ ॥ द्रव्य ऊंणोदरीका (२) भेद ॥ उपगरण ऊंणोदरी ॥ १ ॥ भक्त पच्चखांण ऊंणोदरी ॥ २ ॥ उपगरण ऊंणोदरी किणनें कहीजें ॥ बस्त्र पात्र इत्यादिक उपगरण घटावें ॥ भक्त पच्चखाण ऊंणोदरी--ते कवलको प्रमाण करेणो ॥ पुरुषना कवल बत्तीस । अस्त्रीना कवल २८ । नपुंसकना कवल २४ । जिणमें एक एक कवल क्रमसैं घटावे जिणनें भक्त पच्चखाण ऊंणोदरी तप कहिजें ॥

भाव ऊंणोदरीरा अनेक भेद । अल्प क्रोध । अल्प मान । अल्प माया ।-अल्प लोभ । अल्प शब्द । इत्यादि अल्प करे ॥ २ ॥

[३] भिख्याचरी--ते गोचरी करे । जिणरा मूल भेद ॥ ४ ॥ द्रव्य थकी ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी ॥ २ ॥ काल थकी ॥ ३ ॥ भाव थकी ॥ ४ ॥ द्रव्य थकी-ते नांम खोल कहे । अमुक द्रव्य लेस्युं ॥ क्षेत्र थकी कहे फलाणा क्षेत्रमें लेस्युं ॥ काल थकी कहे-उण वखतमें मिले तो लेस्युं ॥

भावथकीरा अनेक भेद ॥ स्तुती करे । तथा निंदा करे । तथा मुंन करे । तथा बोलतां-थै-तोलुं । इंणही तरे॥ इत्यादिक आपरा मनरा भाव धारे ॥ ॥ जिण प्रमाणें लेवे जिणनें भावथकी भिक्षाचरी तप कहिये ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ रस परित्याग किणनें कहिये ॥ रसरो त्याग करे ।

पांच विगेरो त्याग करे ॥ आंवलनीवी अरस आहार । निरस आहार आदि देइने करे। जिणनें रस परित्याग कहीये ॥ ४ ॥

(५) काय कलेस किणनें कहिये ॥ नाना प्रकारका आसन करे। उकडु । पालखी । पदमासन । गोदुहासन । वीरासन । आतापना इत्यादिक कायानें क्लेस देवे ते काय कलेस कहिये ॥ ५ ॥

(६) पडीसलीणिया किणनें कहिये ॥ आश्रवनें रोके ॥ जिणरा (४) भेद ॥ इंद्री पडिसंलीणता ॥ १ ॥ कषाय पडिसंलीणता ॥ २ ॥ जोग पडीसंलीणता ॥ ३ ॥ विवित्त सयणासण सेवणया ॥ ॥ ४ ॥ इंद्री पडिसंलीनता ते पांच इंद्रीयां जीते । मनोज्ञ । शद्ध-रूप-रस-गंध-स्पर्श उपर तो राग न करे ॥ अमनोज्ञ शद्ध रूप—रस गंध-स्पर्श ऊपर द्वेष न करे ॥ १ ॥ कषाय प्रतिसंलीनता ते चार कषाय, नवा तो करे नही नें पुरातन ऊप समावे ॥ २ ॥ जोग प्रति संलीनता ते । असुभ मन—असुभ वचन—असुभ कायानो जोग—रुंधे । सुभ मन-सुभ वचन—सुभ कायानो जोग प्रवर्तावें । जिणनें जोग प्रतिसंलीनता कहिये ॥ ३ ॥ विवत्त सयणा सण सेवणया किणनें कहिये ॥ निरवद्य जायगा । निरवद्य पीठफलग सेज्या संथारो-भोगवे । जिणनें विवत्त सयणासण सेवणीया कहीयें ॥ ४ ॥ इति बाह्य तपना भेद ॥

हिवे अभ्यंतर तपना ६ भेद कहे छे ॥

प्रायश्चित्त (१) विनय (२) व्यावच्च (३) सझाय (४) ध्यान (५) काउसग्ग (६)

प्रायश्चित्तका दस (१०) भेद ॥ आलोयणारिहे—ते आलो-

यणासुं सुद्ध हुवे (१) पडिकमणारीहे-ते मिच्छामि दुकड दीया सुद्ध हुवे (२) तदुभयारीहे-ते आलोयणा पडिकमणा कीयांसुं सुद्ध हुवे [३] विवेगारीहे--ते असुद्ध भात पांणी टालवासुं सुद्ध हुवे (४) विउसगारिहे--ते काउसग्गसूं मिटे (५) तवारिहे--ते तपसुं मिटे (६) छेदारीहे--ते छेद दीयां मिटे (७) मूलारिहे--ते दूजीवार महाव्रत उचरावे (८) अणवठ्ठप्यारिहे--ते मोटो अतिचार लागो हुवे तो गृहस्थनो वेष पहिरावीनें नवि दिक्षा देवे (९) पारंचिया रीहे-ते साधवी सथा राजारी राणीसुं अनाचार सेवे तो छे महिना उत्कृष्टा बारा वरस गृहस्थका भेषमें राख। श्रावकोरे पगे लगाय पछे दीक्षा देवे [१०] इति प्रायश्चित भेद ॥ १ ॥

विनयरा भेद ॥ ७ ॥ ग्यांन विनय ॥ १ ॥ दरसन विनय ॥ २ ॥ चारित्र विनय ॥ ३ ॥ मन विनय ॥ ४ ॥ वचन विनय ॥ ५ ॥ काया विनय ॥ ६ ॥ लोकीक विनय ॥ ७ ॥

ग्यांन विनयका पांच (५) भेद ॥ मतिग्यांन विनय ॥ १ ॥ श्रुतग्यांन विनय ॥ २ ॥ अवधिज्ञान विनय ॥ ३ ॥ मनपर्यवज्ञान विनय ॥ ४ ॥ केवलज्ञान विनय ॥ ५ ॥

दर्शन विनयका मूल भेद ॥ २ ॥ सुश्रुषा विनय ॥ १ ॥ अण-चा सायणया विनय ॥ २ ॥ सुस्रुषा विनयना अनेक भेद। गुरु आयां ऊभो हूंवे। आसण देवै चार प्रकारको निरवद्य आहार देवै। सत्कार सनमान देवै। वनणा करे। हाथ जोडे। सांहमो जावे। जाता पोहचावे। इत्यादिक अनेक भेद ॥ १ ॥ अणचा सायणया विनयका (४५) भेद ॥ श्री अरिहंत देव जीनी आसातना टाळे ॥ १ ॥ श्री अरिहंत परूपीया धरमकी आसातना टाळे ॥ २ ॥ आचारजजीकी आसातना

टाले ॥ ३ ॥ उपाध्यायजीकी आसातना टाले ॥ ४ ॥ थीवरजीकी आसातना टाले ॥ ५ ॥ कुलकी आसातना टाले ॥ ६ ॥ गणकी आसातना टाले ॥ ७ ॥ स्रमण संघकी आसातना टाले ॥ ८ ॥ किरियापात्रकी आसातना टाले ॥ ९ ॥ संभोगीकी आसातना टाले ॥ १० ॥ मतिग्यांनकी आसातना टाले ॥ ११ ॥ श्रुतग्यांनकी आसातना टाले ॥ १२ ॥ अवधिग्यांनकी आसातना टाले ॥ १३ ॥ मनपर्यवज्ञांनकी आसातना टाले ॥ १४ ॥ केवलज्ञांनकी आसातना टाले ॥ १५ ॥ ऊपर लिखिया जिके पनरे बोलांरी आसातना टाले एवं १५ ओर । ए १५ नी भगती करे । ए पनरेंरा गुणग्रांन करे ॥ एवं १५ तीगा ४५ अणत्रासायणया विनयका भेद जांणवा ॥ २ ॥

चारित्र विनयका (५) भेद ॥ सामायक चारित्र विनय ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय चारित्र विनय ॥ २ ॥ परिहार विसुधी चारित्र विनय ॥ ३ ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्र विनय ॥ ४ ॥ यथाक्षायक चारित्र विनय ॥ ५ ॥ ३ ॥

मन वियनका [२] भेद ॥ प्रसस्थ [१] अप्रसस्थ [२] वचन विनयका २ भेद ॥ प्रसस्थ [१] और अप्रसस्थ [२] प्रसस्थ वचन किणनें कहिजे। निरवद्य वचन बोले [अर्थः] अप्रसस्थ वचन विनय ते सावद्य वचन नही बोले ॥ ५ ॥

काय विनयका दोय [२] भेद ॥ प्रसस्थ [१] अप्रसस्थ (२) प्रसस्थ काय विनयका (७) भेद ॥ जयणासुं आगमन (१) गमन (२) बेसवो (३) सुयवो (४) उलंघवो (५) पाछो आयवो (६) इंद्रीय गोपवो (७) ए (७) कांम जयणासूं करे ॥ अप्रसस्थना एहिज (७) बोल अजयणासुं न करे ॥ ५ ॥

लौकीक संबंधी विनयका (७) भेद ॥ गुरु समीपे वरतवो [१] गुरांकी मरजी प्रमाणें रहिवो (२) ज्ञानादिक निमतै भात पांणी आंणि देवो (३) ग्यांननो दातार जांणी विनय करिवो (४) ऊपसमते समताभाव राखिवो (५) प्रस्थाव ते अवसर देख वरतवो (६) सर्व कारजमें सन्मुख वरतवो (७)

व्यावचका (१०) भेद। आचार्यकी [१] ऊपाध्यायजीकी (२) नवदीक्षत शिष्यकी [३] रोगी ग्लांनीकी (४) तपसीकी (५) थिवरजीकी [६] सधरमीकी (७) कुलकी (८) गणकी (९) संघकी [१०]॥ इणं दसोंकी व्यावच करे। एवं व्यावचका भेद (१०) हिवे सजायका (५) भेद ॥ वाचणा ते गुरु समीप वाचणी लेवे (१) पडी पुछणा ते संदेहनो पूछवो (२) परियट्टणा ते वारंवार गुणवो (३) अणुप्येहाते अर्थनो चिंतविवो (४) धरम कथा ते धरम कहिवो (५)॥ हिवे ध्यांनका चार [४] भेद ॥ आर्त्तध्यान [१] रुद्र ध्यान (२) धरम ध्यांन [३] शुक्ल ध्यांन (४) आर्त्त ध्यानरा [४] भेद ॥ अमनोज्ञ शब्द। रूप-रस-गंध फरसनो विजोग चिंतविवो ॥ १ ॥ मनोज्ञ शब्द। रूप-गंध-रस-फरसनो संजोग चिंतविवो ॥ २ ॥ रोगादिक उपनां विजोगनो चिंतविवो ॥३॥ काम भोगादिकना संजोगनो चिंतविवो ॥४॥

हिवे आर्त्त ध्यानरा ४ लक्षण कहे छेः—

मोटे सादे विलापनो करिवो ॥ १ ॥ दीनपणो आंणिवो ॥२॥ आंसु नांखवो ॥ ३ ॥ निसासो मेल्हवो ॥ ४ ॥ ॥ रुद्रध्यानका चार (४) लक्षण ॥ हिंस्याका भाव प्रवर्ते ॥ १ ॥ कुशास्त्र हिंस्या दिढावे ॥ २ ॥ हिंस्यामें लवलीन रहे ॥ ३ ॥ हिंस्या करि जाव जीव लगे पश्चात्ताप नही करे ॥ ४ ॥ धरम ध्यानका ४ भेद ॥ जिन वच-

नकी प्रतीत राखे ॥ १ ॥ रागद्वेष अल्प करे ॥ २ ॥ करमका फलको विचार करे ॥ ३ ॥ दीप समुद्रादिक क्षेत्रको विचार करे ॥ ४ ॥

धर्मध्यानरा ४ लक्षणः—

जिनाज्ञा प्रमाणें रहे ॥ १ ॥ समकित निश्चल राखे ॥ २ ॥ उपदेशकी रुचि राखे ॥ ३ ॥ सूत्र सिद्धांतरी प्रतीत राखे ॥ ४ ॥ धर्मध्यानरा (४) आलंबन ते किसा ॥ २ ॥ वाचना ते वाचणीरो लेवो ॥ १ ॥ पुछणा ते संदेहनो पुछिवो ॥ २ ॥ परियट्टणा ते ग्यांनको चितारवो ॥ ३ ॥ धरम कथा ते धरमनो कहिवो ॥ ४ ॥

धर्मध्यानरी ४ अनुप्रेक्षा ते कहे छेः—

अनुप्रेक्षा-ते अर्थको चितवनो तिणरा चार भेद ॥ ओ संसार सर्व अनित्य छे ॥ इण रीतसुं विचारवो ॥ १ ॥ इण संसारमें किणहीरो सरणो नथी ॥ २ ॥ ओ जीव एकलो आयो एकलो जावसी । कोई लारे चाले नथी ॥ ३ ॥ संसार चार गति दुखनो भंडार छे ॥ ४ ॥ इति धर्मध्यानरा १६ भेद संपूर्ण ॥ शुक्ल ध्यानरा [४] भेद ॥ शब्द अर्थको भेद विचारवो ॥ १ ॥ एक द्रव्यको द्रव्य गुण पर्यायको विचारवो ॥ २ ॥ सूक्ष्म क्रिया रुंधवी ॥ ३ ॥ समस्त जोग लेश्या रुंधवी ॥ ४ ॥ शुक्ल ध्यानरा (४) लक्षण ॥ देह थकी आत्मा जुदी चितवे ॥ १ ॥ सर्व संसारको त्याग करे ॥ २ ॥ देवादिकका उपसर्गसूं चले नही ॥ ३ ॥ ममत भावमें मुरजे नही ॥ ४ ॥

हिवे शुक्ल ध्यानका [४] आलंबन ते किसा ॥ क्षमा ॥ १ ॥ निरलोभता ॥ २ ॥ सरलता ॥ ३ ॥ निरभिमानता ॥ ४ ॥

शुक्ल ध्यानकी [४] अनुप्रेक्षा ते किसी ॥ अर्थ विचारवो पांच आश्रव द्वार नें अनर्थ हेतु चिंतववो ॥ १ ॥ संसारको असुभपणो चिंतववो ॥ २ ॥ संसारको अनित्यपणो चिंतववो ॥ ३ ॥ संसारको खिणभंगुर स्वभाव विचारवो ॥ ४ ॥

काउसग्गका [२] भेद ॥ द्रव्य काउसग्ग ॥ १ ॥ भाव काउसग्ग ॥ २ ॥ द्रव्य काउसग्गका चार भेद ॥ शरीर काउसग्ग ते शरीरको तजवो ॥ १ ॥ गण काउसग्ग ते गछको तजवो ॥ २ ॥ ऊपधी काउसग्ग ते वस्त्रादिक तजवो ॥ ३ ॥ भात पांणी काउसग्ग ते भात पांणीको तजवो ॥ ४ ॥

भावकाउसग्गका (३) भेद ॥ कषाय काउसग्ग ॥ १ ॥ कर्म काउसग्ग ॥ २ ॥ संसार काउसग्ग ॥ ३ ॥ कषाय काउसग्गका ॥ ४ ॥ भेद ते कहे छे ॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ इणां च्यारांको तजवो ॥ कर्म काउसग्ग ते आठुं करमांरो तजवो ॥ ८ ॥ संसार काउसग्ग ते च्यारुं गतिको तजवो ॥ काउसग्गरा भेद संपूर्ण ॥

इति निरजरा तत्वं समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ बंध तत्व कहे छे ॥

बंध तत्व किणनें कहिजे। जीव पुद्गलानें एकठा करे। जिस्को जिनरा (४) भेदः—

प्रकृति बंध (१) थिति बंध (२) अनुभाग बंध (३) प्रदेश बंध (४) ॥ प्रकृति बंध ते स्वभाव (१) थिति बंध ते कर्मांकी थिति [२] अनुभाग बंध ते शुभाशुभ रस (३) प्रदेश बंध ते जीव कर्मरो एकठापणो जिम तिल्में तैल, दूधमें घृत, धातुमें माटी ॥ बंध उपर

मोदकनो दृष्टांत जिम लाडुरो सभाव वाय हरे। पित्त हरे। इत्यादिक सभाव ते थिति वंध। लाडुरा रसरी स्थिति। अनुभाग। जिम लाडु मीठो। चरको खारो। इत्यादिक रस प्रबंध ते लाडुरा द्रव्य जिम। करमांरी प्रकृति ऊपरे। मोदकना दृष्टांतनी परे। च्यारुं वंध जाणवा। प्रकृति ते। आठ कर्मारो स्वभाव। ग्यांनावरणी कर्मरो सभाव। जिम आख्यां आडो पाटो बांध्यां दीसे नही। तिम ग्यांनावरणी करमरा उदयसूं ग्यांन आवे नही॥ १॥ दरसनावरणी कर्म पोलीया समान। जिम पोलीयो राजासुं मिलवा न दें। जिम दरसनावरणी कर्म सुद्ध दरसण होणे देवे नही॥ २॥ वेदनी कर्म मधु लिप्त खडा धारा समान॥ ३॥ मोह कर्म ऊपर मदिराको दृष्टांत। मदिरा पीयां कछुंही सुध रेहवे नही। जिम मोह कर्मरे ऊदे समकित चारित्रकी सुधता नही रेहवे॥ ४॥ आउखा कर्म ऊपरि खोडाको दृष्टांत। खोडामांहे पग दीया खोडा वारे निसर सके नही। जिम आउखा करमरी थिति भोगवियां विना छूटे नही॥ ५॥ नाम कर्म-ते चितारोके दृष्टांत। जिम चितारो नाना प्रकारका सुभ असुभ चित्रांम करे। तिम नांम कर्मके उदय सुभ नांम असुभ नांम पावे॥ ६॥ गोत्र कर्म उपरि कुंभारको दृष्टांत। जिम कुंभारनो कीयो घडो ऊंचके घर गयां उत्तम कहावो अनें नीचके घरे गयां मध्यम कहावे। तिम गोत्र कर्मके ऊदे ऊंच गोत्र नीच गोत्र वाजे॥ ७॥ अंतराय कर्म ऊपरे। राजाका भंडारीको दृष्टांत। जिम राजाको भंडारी दांनादिक देवा देवे नही। तिम अंतराय कर्म दांनादिक गुण प्रगट होवा देवे नही॥ ८॥ इति प्रकृति वंध लक्षणः॥

हिवे थिति वंध कहे छे। ग्यांनावरणी॥ १॥ दरसनावरणी॥ २॥ अंतराय॥ ३॥ इण तीन करमांरी थिति जघन्य तो अंतर्मुहुर्त्तकी॥ उत्कृष्टी (३०) कोडाकोड सागरकी। वेदनीकी जघन्य दोय

समयकी ते वीतरागीके होय। उत्कृष्टी (३०) कोडाकोड सागरकी। मोहनी कर्मकी जघन्य अंतर्मुहुर्त्तकी। उत्कृष्टी (७०) कोडा कोड सागरकी॥ आउखा कर्मकी जघन्य अंतर मुहुर्त्तकी। उत्कृष्टी (३३) सागरकी। क्रोडपूरवरो तीजो भाग इधक नांम करम गोत्र करमकी जघन्य (८) मुहुर्त्तकी उत्कृष्टी। (२०) कोडा कोड सागरकी॥ इति थिति बंध॥

हिवे अनुभाग बंध; सुभ असुभ रस आठ कर्मांमे। च्यार तो घातीया कर्म च्यार अघातिया कर्म॥ इति अनुभाग बंध॥

हिवे प्रदेस बंध कहे छे॥ ग्यांनावरणी कर्म छै बोलां करीनें बांधे। ग्यांनको प्रत्यनीक होय॥ १॥ ग्यांनका दातार गुरुनें गोपवे॥ २॥ ग्यांनकी अंतराय पाडे॥ ३॥ ग्यांन ऊपर द्वेष करे॥४॥ ग्यांनकी आसातना करे॥ ५॥ ग्यांनको विपरीत उपदेश देवे॥ ६॥ ए॥ ६॥ दरसनावरणी कर्म छै बोलांकरी बांधे। छै बोल एहीजनें ग्यांनकी जागह दरसन केहणो॥ वेदनी कर्मरा दोय भेद। साता वेदनी [१] असाता वेदनी [२] साता वेदनी [१२] बोलांकरके बांधे॥ प्राण भूत जीव सत्वकी अनुकंपा करतो॥ १॥ दुख नही उपजावतो॥ २॥ तापना नही उपजावतो॥ ३॥ पर प्राणीनें सोच नही उपजावतो॥ ४॥ कलेस नही उपजावतो॥ ५॥ परितापना नही उपजावतो॥ ६॥ ए॥ ६॥ बोलतो एक जीव आश्रीनें। एहीज छै घणा जीव आश्री एवं॥ १२॥ असातावेदनी बारें बोलां कर बांधे। ऊपर लिखिया जिकेही (ऊलटा) कहणा। मोहनीकर्म च्यार बोलांकर बांधे। तीव्र क्रोध करी। तीव्र मांन करी। तीव्र माया करी। तीव्र लोभ करी। आउखो कर्म जीव (१६) बोलांकरी बांधे॥ च्यार बोलां करी जीव नारकीनो आउखो बांधे। मोटो आरंभ करे तो

[१] परिग्रहरी मोटी तृष्णा करतो ॥ २ ॥ पंचेंद्रीनो वद्ध करतो ॥ ३ ॥ दारु मांस आचरे तो ॥ ४ ॥ च्यार वोलां करी जीव तिरजंचको आउखो वांधे । तीव्र क्रोध करतो ॥ १ ॥ तीव्र मान करतो ॥ २ ॥ कूडी साख भरतो ॥ ३ ॥ कूडा तोल कूडा माप करतो ॥ ४ ॥ च्यार वोलां करी मनुष्यको आउखो वांधे । प्रकृतिको भद्रीक ॥ १ ॥ प्रकृतको विनीत ॥ २ ॥ जीवकी अनुकंपा करतो ॥ ३ ॥ अमछर भाव राखतो ॥ ४ ॥ च्यार वोलांकरि देवताको आउखो वांधें ॥ ४ ॥ सराग संजम करके ॥ १ ॥ संजमा संजम करके ॥ २ ॥ वाल तप करके ॥ ३ ॥ अकाम निरजरा करके ॥ ४ ॥

नाम करमरा (२) भेद । सुभ नाम ॥ १ ॥ असुभ नाम ॥ २ ॥ सुभ नाम च्यार वोलां करके वांधे । काय सरल ॥ १ ॥ भावसरल ॥ २ ॥ भाषासरल ॥ ३ ॥ सत्यवादी ॥ ४ ॥ असुभ नाम करम च्यार वोलां करके वांधे । ऊपर लिखिया जिके वोल (ऊलटा) केहणा । गोत्रकर्मका (२) भेद ॥ ऊंच गोत्र [१] नीच गोत्र [२] ऊंच गोत्र आठ वोलांकर वांधे ॥ आठ मद नही करे तो जाति मद ॥ १ ॥ कुल मद ॥ २ ॥ वल मद ॥ ३ ॥ रूप मद ॥ ४ ॥ तप मद ॥ ५ ॥ लाभ मद ॥ ६ ॥ सूत्र मद ॥ ७ ॥ ठकुराई मद ॥ ८ ॥ ए आठ वोल न करे तो ऊंच गोत्र वांधे ने ॥ ए आठ वोल करे तो नीच गोत्र वांधे ॥ अंतराय कर्म पांच वोलां करी वांधे । दांनकी ॥ १ ॥ लाभकी ॥ २ ॥ भोगकी ॥ ३ ॥ उपभोगकी ॥ ४ ॥ तपस्याकी ॥ ५ ॥ ए (५) अंतराय देवे तो अंतराय कर्म वांधे ॥ एवं आठ कर्म वांधवाका [८५] वोल संपूर्ण ॥

आठ कर्म (९३) भेदे भोगवे ते कहेछे ॥

ग्यानावरणी कर्म (१०) भेदे भोगवे ॥ सोयावरणे ॥ १ ॥

सोयाविनांण वरणे ॥ २ ॥ इमहीज चक्षु इंद्री ॥ ३ ॥ घ्राण इंद्री ॥ ४ ॥ रस इंद्री ॥ ५ ॥ फरस इंद्री ॥ ६ ॥ इंणारो आवरण नें विज्ञान आवरण। आवरण ते सुंणे नही। विग्यांन आवरण ते समजे नही। ए (१०) दरसनावरणी कर्म नव भेदे भोगवे। चक्षु दरसनावरणी ॥ १ ॥ अचक्षु दरसनावरणी ॥ २ ॥ अवधि दरसनावरणी ॥ ३ ॥ केवल दरसनावरणी ॥ ४ ॥ निद्रा ॥ ५ ॥ निद्रा निद्रा ॥ ६ ॥ प्रचला ॥ ७ ॥ प्रचला प्रचला ॥ ८ ॥ थीणधी ॥ ९ ॥

वेदनी कर्म दोय भेदे भोगवे ॥ साता वेदनी ॥ १ ॥ असाता वेदनी ॥ २ ॥ साता वेदनी आठ प्रकारे भोगवे ॥ मनोज्ञ शब्द (१) मनोज्ञ रुप (२) मनोज्ञ गंध (३) मनोज्ञ रस (४) मनोज्ञ स्पर्श (५) मन सुख (६) वचन सुख (७) काय सुख (८) एवं आठ ॥ असाता वेदनी आठ प्रकारे भोगवे ॥ अमनोज्ञ शब्द (१) अमनोज्ञ रुप (२) अमनोज्ञ गंध (३) अमनोज्ञ रस (४) अमनोज्ञ स्पर्श (५) मन दुःख (६) वचन दुःख [७] काय दुःख (८) एवं [८] मोहोनीय कर्म पांच प्रकारे भोगवे ॥ समकित मोहोनी [१] मिथ्यात्व मोहोनी [२] मिश्र मोहोनी [३] कषाय मोहोनी [४] नोकषाय मोहोनी [५] एवं पांच ॥

आऊखो कर्म चार प्रकारे भोगवे ॥ नरकनो आउखो [१] तिर्यंचनो आउखो [२] मनुष्यनो आउखो [३] देवतानो आउखो [४] एवं चार ॥

नाम कर्मना दोय भेदः-शुभ नाम कर्म १ और अशुभ नाम कर्म [२] शुभ नाम कर्म चवदे प्रकारें भोगवे ॥ भलो शब्द (१) भलो रूप [२] भलो गंध (३) भलो रस (४) भलो स्पर्श (५) भली गति (६) भली स्थिति [७] भली लावण्य (८) यशो कीर्ति (९)

इष्ट उठाण (१०) कर्म (११) वल [१२] वीर्य (१३) पुरुषाकार पराक्रम [१४] एवं (१४)

असाता वेदनी (१४) चवदा प्रकारे भोगवे ॥ माठो शब्द (१) माठो रूप (२) माठो गंध (३) माठो रस (४) माठो स्पर्श (५) माठी गति (६) माठी स्थिति (७) माठी लावण्य (८) अयशो किर्ति (९) अनिष्ट उठाण (१०) दुष्कर्म (११) निर्वल (१२) निर्वीर्य (१३) अपुरुषाकार पराक्रम (१४) एवं (१४)

गौत्र कर्मका दोय भेद ॥ ऊंच गोत्र (१) नीच गोत्र (२) ऊंच गोत्र (८) प्रकारे भोगवे ॥ जाति ऊंच (१) कुल ऊंच (२) वल ऊंच (३) रूप ऊंच (४) तप ऊंच (५) लाभ ऊंच (६) सूत्र ऊंच (७) ठकुराई ऊंच (८) एवं (८)

हिवे नीच गोत्र (८) आठ प्रकारे भोगवेः—नीच जाति (१) नीच कुल [२] इत्यादि आठ वोल पूर्ववत् जानना ॥

अंतराय कर्म पांच प्रकारे भोगवे ॥ दानांतराय (१) लाभांतराय (२) भोगांतराय (३) उपभोगांतराय [४] वीर्यांतराय (५) एवं (९३) वोल संपूर्ण ॥

॥ इति वंध—तत्वं समाप्तम् ॥ ८ ॥

॥ हिवे मोक्ष तत्व कहे छे ॥

मोक्ष तत्वके नवद्वारः—सत्यपद प्ररूपनाद्वार (१) द्रव्य प्रमाणद्वार (२) क्षेत्र प्रमाणद्वार (३) स्पर्शनाद्वार (४) कालद्वार [५] अंतर्द्वार (६) भागद्वार (७) भावद्वार (८) अल्पा वहुत्वद्वार [९] एवं (९)

हिवे सत्यपद प्ररूपनाद्वार ऊपरे चवदे मार्गणा कहे छे ॥ चार गतीमां मनुष्य गती विना मोक्ष नथी (१) पांच जातमां पंचेद्रिय विना मोक्ष नथी (२) छे कायमां त्रष् काय विना मोक्ष नथी (३) अकषाई विना मोक्ष नथी (४) अयोगी विना मोक्ष नथी (५) अवेदी विना मोक्ष नथी (६) केवलज्ञान विना मोक्ष नथी (७) केवलदर्शन विना मोक्ष नथी (८) यथा क्षायक चारित्र विना मोक्ष नथी (९) शुक्ल लेशा विना मोक्ष नथी (१०) भव्य विना मोक्ष नथी (११) क्षायक समकित विना मोक्ष नथी (१२) सन्नी विना मोक्ष नथी (१३) अनारिक विना मोक्ष नथी (१४)

॥ इति सत्यपद प्ररूपना द्वार ॥ १ ॥

हिवे द्रव्य प्रमाणद्वार कहे छे ॥ निश्चे नैमे तो आठ कर्मांसूं छूटा तेहिज मोक्ष कहिजे ॥ और मोक्ष तेही सिद्ध ॥ ते सिद्ध कितने ॥ द्रव्य थकी तो अभव्य जीवसूं अनंतगुणा पडवाई सम्यग् दृष्टी॥ ते थकी अनंत गुणा सिद्ध छे ॥

॥ इति द्रव्य प्रमाणद्वार ॥ २ ॥

हिवे क्षेत्र प्रमाणद्वार कहे छे ॥ सर्वार्थसिद्ध विमानसूं बारा जोजन ऊपरे सिद्ध स्थान छे ॥ ते सिद्ध शिला पेंतालीस लाख योजननी लांबी चौडी छे ॥ और एक क्रोड बंयालीस लाख गुनतीस हजार दोयसो गुण पचास योजन जाझेरी तेहनी परधी छे ॥ और छेडे माखीनी पांखथी पतली छे ॥ जिण ऊपर सिद्ध भगवान् बिराजमान छे ॥

॥ इति क्षेत्र प्रमाणद्वार ॥ ३ ॥

हिवे स्पर्शना द्वार कहे छे ॥ जेटलो क्षेत्र सिद्ध स्पर्शे छे ॥ ते थकी स्पर्शना इधकी छे॥ एक सिद्ध छे जठें अनंता सिद्धारां प्रदेश छे॥

॥ इति स्पर्शनाद्वार ॥ ४ ॥

हिवे काल्द्वार कहे छे ॥ एक सिद्धा श्री आदी छे पिण अंत नही ॥ घणा सिद्धा श्री आदिभी नही अंतभी नही. ॥

॥ इति कालद्वार ॥ ५ ॥

हिवे छट्ठो अंतद्वार कहे छे ॥ ने सिद्धामें आंतर नथी ॥ क्योंकी सिद्धपणो पायां पछे फिर मिटे नही ॥ तथा सिद्ध भगवानमें कोई सिद्ध उपजे नही ॥ और विहे पडे तो जघन्य एक समयको उत्कृष्टो छै महिनाको इति अंतद्वार ॥ ६ ॥ हिवे भागद्वार कहवे छे॥ सिद्ध भगवान कितने छे ॥ सर्व जीवांके अनंतमें भागे॥ पृथ्वीकाय (१) अपकाय (२) तेऊकाय (३) वाऊकाय (४) त्रसकाय (५) इनसें अनंतगुणा ज्यादा छे॥ और वनस्पती कायसूं अनंतमे भाग छे ॥७॥

॥ इति भागद्वार ॥ ७ ॥

हिवे भावद्वार कहे छे ॥ उदय भाव (१) उपशम भाव (२) क्षायक भाव (३) क्षयोपशम भाव (४) प्रणामिया भाव [५] ए पांच भावमेसूं सिद्ध भगवानमे दोय भाव पावे ॥ क्षायक भाव १ और प्रणामिया भाव २ ॥ एवं दोय २ ॥

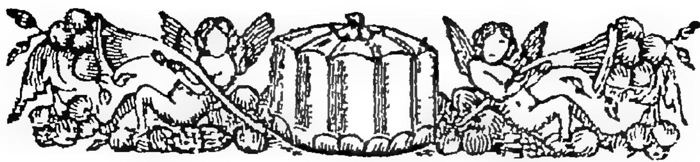
॥ इति भावद्वार ॥ ८ ॥

हिवे अल्पा वहुतद्वार कहे छे ॥ सर्वसूं थोडा नपुंसक लिंग सिद्धा ते थकी स्त्री लिंग सिद्धा संख्यात गुणा ॥ ते थकी पुरुष लिंग सिद्धा संख्यात गुणा ॥ ९ ॥

॥ इति अल्पा वहुतद्वार ॥ ९ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे नवतत्वाख्यं प्रथमं प्रकरणम्. ॥





प्रकरण दूसरा–लघुदंडक.

॥ गाथा ॥

शरीर (१) अवग्गहणा (२) संघयण (३) संठाण (४) कसाय (५) तहहुंति सन्नाओ [६] लेसिं (७) दीय [८] समुघाए (९) सन्नि (१०) वेदेय (११) पज्जत्ती ॥ १ ॥ (१२) दिठी (१३) दंशण (१४) न्नाण [१५] अनाणे (१६) जोग (१७) उवओगे (१८) तहाकम्मं आहारे (१९) उववाय (२०) ठिई (२१) समोहाए (२२) चवण (२३) गया गई (२४) पांग (२५) जोगे (२६). ॥ २ ॥

अर्थः—(शरीर-ते ५ उदारीक शरीर (१) वैक्रेय शरीर (२) आहारीक शरीर (३) तैजस शरीर (४) कार्मण शरीर [५].

विवेचनः—उदार कहिये श्रेष्ट तथा मुक्ति इस शरीरसूं जावै, जिसको उदारीक शरीर कहिये. ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीरः-ते मन इच्छित रूप बनावे, जिससें वैक्रेय शरीर कहिये ॥ २ ॥ आहारीक शरीरः—ते चवदे पूर्वधारी मुनिराज संसे हरवाने शरीरमेंसूं पूतलो काढे जिसको आहारीक शरीर कहिये ॥ ३ ॥ तैजस शरीरः—ते आहारादिक पुद्गलकूं पचावे जिससे तैजस शरीर कहिये ॥ ४ ॥ कार्मण शरीर-ते आहारादिक पुद्गलने खांचे जिससे कार्मण शरीर कहिये.॥५॥

(२) अवग्गहणा—ते २ ॥ भवधारणिक (१) उत्तर वैक्रेय (२)
विवेचनः--भवधारणिक ते मूलगो शरीर। जघन्य आंगुल नें असंख्यातमें भाग। उत्कृष्टी हजार योजन जाझेरी ॥ १॥ उत्तर वैक्रेय ते जघन्य आंगुल ने असंख्यातमें भाग उत्कृष्टी लाख योजननी अवग्गहणा ॥ २॥

(३) शंघयण ते ६ वज्रऋषभ नाराच शंघयण (१) ऋषभ नाराच शघयण (२) नाराच शंघयण (३) अर्द्धनाराच शंघयण (४) कीलीका शंघयण (५) छेवट शंघयण (६).

विवेचनः--वज्रकी कीली--वज्रको पाटो-वज्रका मर्कट--बंधन हुवे जिसको वज्रऋषभ नाराच शंघयण कहिये. ॥ १ ॥ वज्रो पाटो बंधण ए दोनूं हुवे कीली नथी जिसको ऋषभ नाराच शंघयण कहिये. ॥ २ ॥ नाराच-ते वज्रमयी बंधन हुवे जिणने नाराच शंघयण कहिये. ॥ ३ ॥ अर्द्ध वज्रमयी बंधन हुवे जिसको अर्द्ध नाराच संघयण कहिये. ॥ ४ ॥ कीली-ते हाड कीली संयुक्त हुवे जिसको कीलिका शंघयण कहिये. ॥ ५ ॥ छेवट-ते हाड चर्मसूं बंध्या होय-जिसको छेवट शंघयण कहिये. ॥ ६ ॥

(४) संठाण-ते ६ सम चौरंस संठाण (१) नग्रोध परिमंडल संठाण (२) सादियो संठाण (३) वावन्न संठाण (४) कुब्ज संठाण (५) हूंडक संठाण (६).

विवेचनः—चारो तरफ बरोबर डोर लागे तथा संपूर्ण अंग शोभायमान हूवे जिसको समचौरंस संठाण कहिये ॥ १ ॥ नग्रोध ते वट समान शरीर हो तथा ऊपरलो अंग शोभायमान हूवे जिसको नग्रोध परिमंडल संठाण कहिये ॥ २ ॥ सादीयो—ते नीचलो अंग शोभायमान हुवै जिसको सादियो संठाण कहिये ॥ ३ ॥ वावन्न—

ते शरीर ठेंगणा हुवै जिसको वावन्न संठाण कहिये ॥ ४ ॥ कुब्ज-- ते शरीर कुबडो हुवै जिसको कुब्ज संठाण कहिये ॥ ५ ॥ हूंडक— ते सर्व अंगोपांग अशोभित हुवे जिसको हुंडक संठाण कहिये ॥६॥

(५) कषाय--ते ४. क्रोध कषाय (१) मान कषाय (२) माया कषाय (३) लोभ कषाय (४).

(६) संज्ञा--ते ४. आहार संज्ञा [१] भय संज्ञा [२] मिथुन संज्ञा (३) परिग्रह संज्ञा [४].

[७] लेशा--ते ६. कृष्ण लेशा [१] नील लेशा [२] कापोत लेशा (३) तेजू लेशा (४) पद्म लेशा (५) शुक्ल लेशा (६).

[८] इंद्रिय--ते ५. श्रोतेंद्रिय (१) चक्षुइंद्रिय (२) घ्राणेंद्रिय (३) रसना इंद्रिय (४) स्पर्शेंद्रिय (५).

[९] समुद्‌घात--ते ७. वेदना समुद्‌घात [१] कषाय समु-द्‌घात (२) मारणांतिक समुद्‌घात (३) वैक्रिय समुद्घात [४] तैजस समुद्‌घात (५) आहारक समुद्‌घात (६) केवल समुद्‌घात [७].

विवेचनः—वेदना—ते शरीरमें तीव्र वेदना करी प्रदेशांनीं प-रस्पर घात हुवै जिसको वेदना समुद्‌घात कहिये. (१) कषाय—ते तीव्र कषाय करी प्रदेशांनी परस्पर घात हुवे जिसको कषाय समु-द्‌घात कहिये ॥ २ ॥ मारणांतिक ते आउखाना अंतमे आपका श-रीरसूं उत्पत्ति स्थानताई ताणो बांधे जिसको मारणांतिक समुद्‌घात कहिये ॥ ३ ॥ वैक्रिय--ते संख्याता जोजनरो दंड काढे पेर दूजी वार समुद्‌घात फोरवीनें सार २ पुद्गल ग्रहण करे फिर मन वांछित रूप बणावे जिसको वैक्रिय समुद्‌घात कहिये ॥ ४ ॥ तैजस- ते

तेजू लेश्यानी लब्धि फोरे तथा दंड काढै प्रदेशानी परस्पर घात करे जिसको तेजस समुद्घात कहिये ॥ ५ ॥ आहारक ते शरीरमेसूं पूतलो काढै जिसको आहारक समुद्घात कहिये ॥ ५ ॥ केवल ते केवली (४) कर्म वेदनी (१) आउखो (२) नाम [३] गोत्र (४) यांनें समुद्घात करीनें बरोबर करै–करतां (८) समां लागै जिसको केवल समुद्घात कहिये ॥ ७ ॥

(१०) सन्नी–ते २ ॥ सन्नी (१) असन्नी (२).

विवेचनः—सन्नी–ते मनकरके सहित होय तथा गर्भसूं उपजे या उत्पातसूं उपजे जिसको सन्नी कहिये. ॥ १ ॥ असन्नी––ते जोम न करके रहित होय जिसको असन्नी कहियें ॥ २ ॥.

(११) वेद–ते ३. ॥ स्त्रीवेद (१) पुरुष वेद (२) नपुंसक वेद (३)

विवेचनः—स्त्री वेदनी विषय मींगण्याकीकऊं समान कहिये ॥ १ ॥ पुरुष वेदनी विषय बलता पूला समान कहिये ॥ २ ॥ नपुंसक वेदनी विषय नगरका दाह समान कहिये ॥ ३ ॥*

(१२) पजत्ते यानें परजा ६ ॥ आहार परजा (१) शरीर परजा (२) इंद्रिय परजा (३) श्वासोश्वास परजा (४) भाषा परजा (५) मन परजा (६).

विवेचनः––ए ६ परजा अधूरी होय जबतक अपर्याप्त कहिये ॥ और ए ६ परजा पूरण होने बाद पर्याप्त कहिये. ॥

---

* ए तीन विषय सहित होय उस्को सवेदी कहिये और सर्वथा विषय रहित हो उस्को अवेदी कहिये.

(१३) दृष्टी ते ३. ॥ सम्यग् दृष्टि (१) मिथ्या दृष्टी (२) सम्यग् मिथ्यादृष्टी (३)

विवेचनः--सम्यग्दृष्टी--ते .देव गुरु धर्म यथार्थ मानैं जिसको सम्यग्दृष्टी कहिये. ॥ १ ॥ मिथ्यादृष्टी--ते अयथार्थ मानैं जिसको मिथ्यादृष्टि कहिये ॥ २ ॥ सम्यग् मिथ्यादृष्टि–ते यथार्थ अयथार्थ दोनूं सममानैं जिसको सम्यग् मिथ्यादृष्टि कहिये ॥ ३ ॥

(१४) दर्शन--ते ४ ॥ चक्षु दर्शन (१) अचक्षु दर्शन (२) अवधि दर्शन (३) केवल दर्शन (४)

विवेचनः–चक्षु--ते नेत्र करी दर्शन ते देखे जिसको चक्षु दर्शन कहिये ॥ १ ॥ अचक्षु–ते नेत्र विना च्यार इंद्री करी दर्शन ते देखे जिसको अचक्षु दर्शन कहिये ॥ २ ॥ अवधिदर्शन–ते अवधि करीनें देखे जिसको अवधि दर्शन कहिये ॥ ३ ॥ केवल दर्शन–ते संपूर्ण समस्त पदार्थ देखै जिसको केवल दर्शन कहिये ॥४॥

[१५] णाणते ज्ञान–५. ॥ मति ज्ञान (१) श्रुत ज्ञान (२) अवधि ज्ञान (३) मनपर्यव ज्ञान (४) केवल ज्ञान (५)

विवेचनः—मति ज्ञान–ते आपकी बुद्धीसें पंचेंद्रिय ओर छठो मन--यहषट् करीनें पदार्थनें जाणै–जिसको मति ज्ञान कहिये ॥ १ ॥ श्रुत ज्ञान ते सुणवा करीनें जाणें जिसको श्रुत ज्ञान कहीये ॥ २ ॥ अवधिज्ञान ते मर्यादा लीयां प्रत्यक्ष द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणैं जिसको अवधि ज्ञान कहिये ॥ ३ ॥ मनपर्यवज्ञान ते सन्नी पंचेद्रीका, मनोगत भाव प्रत्यक्ष जाणें जिसको मनपर्यवज्ञान कहिये ॥ ४ ॥ केवलज्ञान.ते संपूर्ण समस्त पदार्थ ओर द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणें जिसको केवलज्ञांन कहिये ॥ ५ ॥

[१६] अणाण-ते अज्ञान ३ ॥ मति अज्ञान (१) श्रुत अज्ञान (२) विभंग अज्ञान (३).

विवेचनः—मति अज्ञान ते (५) इंद्रिय ओर छटो मन ये छे करीनें पदार्थनें अयथार्थ जांने जिसको मति अज्ञान कहिये ॥ १ ॥ श्रुत अज्ञान-ते सुणवा करीनें अयथार्थ ज्ञान हुवे जिसको श्रुत अज्ञान कहिये ॥ २ ॥ विभंग ज्ञान-ते विपरीत ज्ञान होय जिसको विभंग ज्ञान कहिये ॥ ३ ॥

(१७) जोग ते (१५) मनका भेद (४) सत्य मनयोग (१) असत्य मनयोग (२) मिश्र मनयोग (३) व्यवहार मनयोग (४) ॥ सत्य भाषा (५) असत्य भाषा (६) मिश्र भाषा (७) व्यवहार भाषा (८) उदारीक काययोग (९) उदारिक मिश्रकायको योग (१०) वैक्रिय काय योग (११) वैक्रिय मिश्रकायको योग (१२) आहारिक काययोग (१३) आहारिक मिश्रकायको योग (१४) कार्मण काय योग (१५) ॥

विवेचनः—सत्य मनयोग—ते यथार्थ चिंतवणा करै (यथा) घटनें घटही चिंतवे जिसको सत्य मन योग कहिये ॥ १ ॥ असत्य मन योग ते अयथार्थ चिंतवणा करे (यथा) घटनें पट चिंतवै जिसको असत्य मनो योग कहिये ॥ २ ॥ मिश्र मन योग ते सांच झूठ सामिल चिंतवे (यथा) मृत्तिकारा घटनें ताम्र घट चिंतवै जिसको मिश्र मन योग कहिये ॥ ३ ॥ व्यवहार मन योग ते सत्य मृषा दोनूंही नही. जिसको व्यवहार मन योग कहीयें ॥ ४ ॥ ओर सत्य भाषादिक कें च्यार भेद पूर्ववत् जानना ॥एवं ॥ ८ ॥ हिवे सात कायाके योग ॥ उदारिक ते केवल जिसमें उदारिक शरीरको व्यापार होय जिसको उदारिक काययोग कहिये ॥ ९ ॥ उदारिकमें दूजा शरीरनो

व्यापार मिल्यो होय जिसको उदारिक मिश्रकाययोग कहिये ॥१०॥ वैक्रिय शरीरनो व्यापार होय जिसको वैक्रेय शरीर काययोग कहिये ॥ ११ ॥ वैक्रेयका व्यापारमे दूसरे शरीरका संबंध होय जिसको वैक्रेय मिश्र काययोग कहिये ॥ १२ ॥ आहारिक शरीरनो व्यापार होय जिसको आहारिक काययोग कहिये ॥ १३ ॥ आहारिकके व्यापारमें दूसरे शरीरका व्यापार होय जिसको आहारिक मिश्र काय योग कहिये ॥ १४ ॥ कार्मण योग ते केवल कार्मण शरीरको व्यापार हुवे जिसको कारमण योग कहिये ॥ १५ ॥

(१८) उपयोग–ते ॥ १२ ॥ पांच ज्ञान ॥ तीन अज्ञान ॥ चार दरसण ॥ नांम पूर्ववत् जांणवा ॥

[१९] तहाकम्मं आहारे यानें आहार लेवे जिसका दोय भेद ॥ व्याघात आश्री (१) और निर्व्याघात आश्री [२]

विवेचनः--व्याघात आश्री ते लोकनें अंतमें रहे हुवे जीव जघन्य तीन दिसको उत्कृष्टो चार दिशनो तथा पांच दिशनो आहार लेवे (१) निर्व्याघात आश्री ते लोकके मध्यमें रहे हुवे जीव छे दिशनो आहार ग्रहण करे ॥ २ ॥ छे दिशीके नाम पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर ऊंची नीची ॥

(२०) उववाय ते उपजे एक समयमें कितने जीव उपजे जघन्य १--२--३ ॥ उत्कृष्टा संख्याता असंख्याता अनंता उपजे ॥

(२१) ठिई यानें स्थिती जघन्य समुच्चय अंतर मुहुरतनी उत्कृष्टी तेतीस ३३ सागरनी ॥ ये स्थिती आउखा कर्माश्री कहि ॥

(२२) मरण ते २ प्रकारके ॥ एक तो समोहया (१) और दूसरा असमोहया (२)

विवेचनः—समोहया मरण ते मरणांतिक समुद्घात करी श्रेणी वांधमरे जिसको समोहया मरण कहिये ॥ १ ॥ असमोहया मरण ते विना समुद्घात मरे अर्थात् वंदुकनी गोळीके समान सिधो जाय उपजे जिसको असमोहया मरण कहिये ॥ २ ॥

(२३) चवण ते एक समयमे कितनें जीव चवे जघन्य १--२--३ उत्कृष्टा संख्याता असंख्याता अनंता चवे ॥

[२४] गया गई ते गती और आगती. । गती ते आयु पूरण करीनें कितनें दंडकमे, जावे उसको गती कहिये ॥ १ ॥ आगती ते आयु पूरण करीनें कीतनें दंडकनो जीव आय कर उपजे उसको आगती कहिये ॥ २ ॥

(२५) प्पांण ते प्राण ॥ १० ॥ श्रोतेंद्रिय वलप्राण [१] चक्षुरिंद्रिय वलप्राण [२] घ्राणेंद्रिय वलप्राण (३) रसनेंद्रिय वलप्राण [४] स्पर्शेंद्रिय [५] मन वलप्राण (६) वचन वलप्राण (७) काय वलप्राण (८) श्वासोश्वास वलप्राण [९] आयु वलप्राण (१०)

विवेचनः—वलप्राण ते पराक्रम जाणवो. ॥

(२६) जोग ते समुच्चय ३ ॥ मनजोग (१) वचनजोग (२) कायजोग (३) ॥ इति गाथार्थः ॥

॥ अथ २४ दंडक ऊपरे २६ द्वार कहे छेः—

सात नारकीनो एक दंडक ॥ * सातेंही नारकीमे शरीर पावे तीन ॥ वैक्रीय [१] तैजस (२) कार्मण (३)

---

* ते सात नारकीना नाम—घमा (१) वंसा (२) सीला (३) अंजगा (४) रिठा (५) मघा (६) माघवई (७) हिवे सात नारकीना गोत्र—रतनप्रभा (१) सकरप्रभा (२) वालुप्रभा (३) पंकप्रभा (४) धूमप्रभा (५) तमप्रभा (६) तमातमप्रभा (७) ए सातनो एक दंडक जाणवो ॥

अवग्गाहणा ॥ समुच्चय सातोहीं नारकीनी, जघन्य आंगुलके असंख्यातमे भाग ॥ उत्कृष्टी पांचशे धनुषनी ॥

उत्तर वैक्रेय अवग्गहणा समुचय जघन्य आंगूलने संख्यातमे भाग ॥ उत्कृष्टी हजार धनुषनी ॥ हिवे न्यारी न्यारी कहे छे ॥

पेहली नारकीनी भव धारणिक अवग्गाहणा पुणा आठ धनुष और छे अंगूलनी ॥ उत्तर वैक्रेय उत्कृष्टी साडा पंधरा धनुष और बारा अंगुलनी ॥ अवग्गहणा ॥ दूजी नारकीमें भव धारणिक साडा पंधरा धनुष और बारा अंगुलनी उत्तर वैक्रेय सवा इकतीस धनुषनी अवग्गहणा ॥

तीजी नारकीमें भव धारणिक सवा इकतीस धनुषनी उतर वैक्रेय साढे बासट धनुषनी अवग्गहणा ॥

चौथी नारकीमें भव धारणिक साडा बासट धनुषनी उत्तर वैक्रेय सवासै-धनुषनी-अवग्गहणा ॥

पांचवी नारकीमें भव धारणिक सवासे धनुषनी उत्तर वैक्रेय अढाईसै धनुषनी अवग्गाहणा ॥

षष्ठीमें भव धारणिक अढाईसे धनुषनी उत्तर वैक्रेय ५०० पांचसे धनुषनी अवग्गाहणा ॥

सातवी नारकीमें भव धारणिक पांचसे धनुषनी उत्तर वैक्रेय हजार धनुषनी अवग्गाहणा ॥ २ ॥

संघयण सातोंही नारकीमें नथी ॥ ३ ॥

संठाण सातोहीं नारकीमे एक हुंडक पावे ॥ ४ ॥

कषाय सातोहीं नारकीमें चारुहीं पावे ॥ ५ ॥

संज्ञा सातोही नारकीमें चारुंही पावै ॥ ६ ॥
लेशा समुच्चय नारकीमें ३ पावै ॥

हिवे न्यारी २ कहे छे॥

पेहली दूजीमे कापोत ॥ तीजीमे कापोत और नील ॥ कापोतका घणा नीलका थोडा ॥ चौथीमे नील ॥ पांचवीमे नील और कृष्ण ॥ नीलका घणा कृष्णका थोडा ॥ छठीमें एक कृष्ण ॥ सातवीने महा कृष्ण ॥ ७ ॥ इंद्रिय सातही नारकीमें पांच पावै ॥ ८ ॥

समुद्घात—सातोही नारकीमें चार चार पावें पहली ॥ सन्नी असन्नी पहली नरकका अपर्यासामें सन्नी असन्नी दोनूंही पावै असन्नी आय उपजे जिणसूं ॥ पहली नारकीना पर्यासामें शेष ५–६ नारकीमें सन्नीही जपावे ॥ १० ॥

वेद--सातांहीमे एक नपुंसक वेद पावै ॥ ११ ॥

पजत्ते पर्यास ५ पावै भाषा मन साथेही पूरी करै जिणसूं पांच गिणणी ॥ १२ ॥

दिष्टी सातांहीमें ३ पावे--सातमीरा अपर्यासामे १ मिथ्यादृष्टि पावे ॥ १३ ॥

दरसण--सातांहीमें तीन तीन पावै केवल दर्शन टल्यो ॥ १४ ॥

नाण--ते ज्ञान सातूंहीमे ज्ञान ३ पावै ॥ प्रथम सातमीरा अपर्यासामें ज्ञान नास्ति ॥ १५ ॥

अज्ञान--सातांहीमें तीन तीन पावे ॥ १६ ॥

जोग—सातांहीमें ॥ ११ इग्यारे २ पावे ४ मनका—४ वचनका ३ कायाका वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कारमण. एवं ११. ॥

उपयोग साताहीमे ९ नव २ पावै ॥ तीन ज्ञान ३ अज्ञान ३ दरसन एवं ९ सातमीरा अपर्याप्तामैं ६ ॥ तीन ज्ञान नास्ति ॥ १८ ॥

आहार ६ दिशाको लेवे ॥ १९ ॥

उववाय ऊपजे एक समयमें सातांहीमैं जघन्य १--२--३ उत्कृष्टा असंख्याता ऊपजे सातूंहीमैं ॥ २० ॥

थिती ॥ समुचय जघन्य १० हजार वरसकी उत्कृष्टी ३३ सागरकी न्यारी २ कहै छे ॥

पहिली नारकीनी थितीनें जघन्य १० हजार वरसकी उत्कृष्टी १ सागरकी ॥ १ ॥ दूजी नारकीनी स्थिती जघन्य १ सागरकी उत्कृष्टी ३ सागरकी ॥ २ ॥ तीजी नारकीनी स्थिती जघन्य ३ सागरकी उत्कृष्टी सातसागरकी ॥ ३ ॥ चोथी नारकीनी स्थिति जघन्य ७ सागरनी उत्कृष्टी १० सागरनी ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीनी स्थिती जघन्य १० सागरनी उत्कृष्टी १७ सागरनी ॥ ५ ॥ छट्ठी नारकीनी स्थिती जघन्य १७ सागरनी उत्कृष्टी २२ सागरनी ॥ ६ ॥ सातवी नारकीनी स्थिती जघन्य २२ सागरनी उत्कृष्टी ३३ सागरनी ॥७॥२१॥

समोहया असमोहया ॥ मरण साताहीमें दोय २ पावै ॥ २२ ॥

चवण सातूंहीमे एक समयमें जघन्य १–२–३ चवे उत्कृष्टा असंख्याता चवे ॥ २३ ॥

गतागत--पहलीसूं छट्ठी तांई २ दंडककी गति ओर २ की ॥ आगति तिर्यंच पंचेंद्री, मनुषकी ॥ सातमीमे आगत २ की एहीज गत १ तिरजंच पचेंद्रीकी ॥ २४ ॥

प्रांण साताहीमें १० दस २ पावै ॥ २५ ॥

जोग साताहीमे तीन २ पावै ॥ २६ ॥

॥ इति प्रथम दंडकं नरकाख्यं ॥

हिवे १० भुवनपतीना १० दस दंडक ॥ *तेमां शरीर पावे ३ तीन ॥ वैक्रेय--तेजस--कार्मण ॥ १ ॥ अवग्गहणा ॥ भव धारणीक भवनपतिनी ॥ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी सात हातनी ॥ अनें ॥ उत्तर वैक्रेय करे तो जघन्य अंगुलने संख्यातमे भाग–उत्कृष्टी लाख योजननी ॥ २ ॥ सघयण नथी ॥ ३ ॥ संठाण पावे एक समचउरं ससंठाण ॥ ४ ॥ कषाय पावे चार पिण देवताने लोभ घणो ॥ ५ ॥ संज्ञा पावे चार ॥ पण ॥ देवताकें परिग्रह संज्ञा घणी ॥ ६ ॥ लेशा पावे चार कृष्ण लेशा ॥ नील लेशा--कापुत लेशा–तेजुलेशा ॥ ७ ॥ इंद्री पावे पांच ५ ॥ ८ ॥ समुद्घात पांच पावे ॥ वेदनी कषाय मारणांतिक ॥ वैक्रेय ने तेजस ॥ ९ ॥ संज्ञी असंज्ञी वे जाणवा ॥ १० ॥ वेद पावे वें स्त्री ने पुरुष ॥ ११ ॥ मजा ५ पावे भाषा मन मेला वांधे तिण आश्री ॥१२ ॥ दृष्टी पावे तिन ॥ १३ ॥ दर्शण पावे तिन केवल दर्शन नही ॥ १४ ॥ ज्ञान पावे तिन ॥ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे तिन ॥ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगअज्ञान ॥ १६ ॥ जोग इग्यारे ॥ चार मनना, चार वचनना, तिन कायाना ॥ वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ॥ कार्मण कायजोग ॥ एवं इग्यारे ॥ १७ ॥ उपयोग पावे नव ॥ तिन ज्ञान ॥ तिन अज्ञान ॥ तिन दर्शन ॥ एवं नव ॥ १८ ॥ आहार ॥ जघन्य ने उत्कृष्टो छ दिसनो ले ॥ १९ ॥ उववाय ते जघन्य एक समये १--२--३ ऊपजे ऊत्कृष्टा असंख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिती:–

---

* तेह नाम —असुर कुमार (१) नाग कुमार (२) सुवर्ण कुमार (३) अग्नि कुमार (४) विद्युत कुमार (५) द्वीप कुमार (६) उदधि कुमार (७) दिशा कुमार (८) पवन कुमार (९) स्तनित कुमार (१०) ए दश दंडक भवनपतिना जांणवा ॥

भवन पतिमां दक्षण दिसना ॥ असुर कुमारनी ॥ जघन्य दश हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक सागरनी ॥ तेहनी देवीनी जघन्य दश हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी साडा त्रण पल्योपमनी ॥ तेहना नवनी कायना देवतानी ॥ जघन्य दस हजार वरसनी उत्कृष्टी दोढ पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी जघन्य दस हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी पोंण पल्यनी ॥ उत्तर दिसना असुर कुमारनी स्थिती ॥ जघन्य दसहजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक सागर झाझेरी॥ तेहनी देवीनी स्थिति जघन्य दशहजार वर्षनी ॥ उत्कृष्टी साडाचार पल्योपमनी ॥ तेहना नवनिकायना देवतानी स्थिति जघन्य दसहजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी बे पल्योपम देस ऊणी ॥ तेहनी देवीनी स्थिति जघन्य दस हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक पल्योपम देस उणीनी ॥ २१ ॥ समोहिया असमोहिया ए दोय मरण पावे ॥ २२ ॥ चवण ते जघन्य एक समयमें १-२-३ चवे उत्कृष्टा असंख्याता चवे ॥२३॥

गयागई ते गति पांचनी बादर पृथ्वी (१) पांणी (२) वनस्पती (३) तिर्यंच पचेंद्रिय [४] ओर मनुष्य [५] एवं (५) आ गति दोयनी तिर्यंच पचेंद्रिय (१) ओर मनुष्य (२) एवं दोय ॥ २४ ॥ प्रांण दस पावे ॥ २५ ॥ जोग तिन पावे (२६)

॥ इति दस भवनपतिना दस दंडक संपूर्ण ॥

॥ हवे पांच स्थावरना पांच दंडक कहे छे ॥

पृथिवी (१) पाणी (२) तेऊ (३) वनस्पति (४) ए चारमें शरीर तिन ॥ उदारिक तेजस नें कार्मण ॥ अने वाउमे शरीर पावे चार ॥ उदारिक वैक्रेय तेजस नें कार्मण ॥ १ ॥ अवघेणा भव धारणिक पृथिवी पाणी तेउ ॥ जघन्य नें उत्कृष्टी अंगुल नें असंख्यातमे

भाग ॥ उत्तर वेक्रेय नथी वाउकायमें गर्भधारणिक उत्तरवेक्रेय ज० उ० आंगुल ने असंख्यातमे भाग अने वनस्पतिनी जघन्य अंगुल ने असंख्यातमे भाग ॥ उत्कृष्टी हजार जोजन झाझेरी कमळ प्रमुखनी उत्तरवैक्रेय नथी ॥ २ ॥ संघयण एक छेवट्टु ॥ ३ ॥ संठाण एक हुंडक ॥ हिवे पांचेना सठाण न्यारा २ कहे छे ॥ पृथिवीतुं संठाण मसुरनी दाल तथा चंद्रमाने आकारे ॥ १ ॥ पाणीतु संठाण पाणीना परपोटाने आकारे ॥ २ ॥ तेउनुं सठाण सोयना भाराने आकारे ॥ ३ ॥ वायरानु रांठाण धजापताकाने आकारे ॥ ४ ॥ वनस्पतिनुं संठाण नाना प्रकारनुं ॥ ५ ॥ ४ ॥ कषाय चारे ॥ ५ ॥ संज्ञा चार ॥ ६ ॥ लेशा वादर पृथिवी पाणी वनस्पतिमें चार २ पावे पेहेली ॥ अने पांचुहिसुक्षाथावरोमे वादर तेऊ वाऊमे लेशा तिन पावे पेहेली ॥ ७ ॥ इंद्री पावे एक कायाकी ॥ ८ ॥ समुद्घात पृथिवी पाणी तेउ वनस्पतिमें ॥ ३ ॥ पावे वेदनी कषाय मारणांतिक ॥ अने वायरामें समुद्घात च्यार पावे वैक्रेय वधी ॥ ९ ॥ संज्ञी ते पांचे थावर असज्ञी ॥ १० ॥ वेद पावे एक नपुंसक ॥ ११ ॥ पर्या चार पावे ॥ आहार पर्या ॥ शरीर पर्या ॥ इंद्री पर्या ॥ श्वासोश्वास पर्या ॥ १२ ॥ दृष्टि पावे एक मिथ्यात ॥ १३ ॥ दर्शन पावे एक अचक्षु दर्शन ॥ १४ ॥ ज्ञान नथी ॥ अज्ञान पावे दोय मति अज्ञान ॥ श्रुत अज्ञान ॥ १५ ॥ जोग पृथिवी पाणी तेउ वनस्पतीने तीन पावे ॥ उदारीक ॥ १ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ कार्मण काय जोग ॥३॥ अने वायरामें पांच ते ॥ वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ॥ एवे वध्या ॥ १६ ॥ उपयोग पावे तीन ॥ दोय अज्ञान ॥ एक अचक्षु दर्शन ॥ एवं तीन ॥ १७ ॥ आहार ॥ जघन्य तीन दिसनो उत्कृष्टी छे दिसनो लेवे ॥ १८ ॥ उववाय ते पृथ्वी अप तेउ वाऊ ए च्यार थावरोमें पाचूं थावर आश्री समय २ मे असंख्याता उपजे निरंतर ॥ वनस्पतीकायमें

वनस्पती आश्री समय २ निरंतर अनंता ऊपजे (शेष) दंडक आश्री पांचेही थावरोमें जघन्य एक समयमे १-२-३ ऊपजे उत्कृष्टा असंख्याता ऊपजे ॥ १९ ॥

स्थिति पृथिवीनी जघन्य अंतर्मूहूर्त उत्कृष्टी २२ हजार वरसनी आउनी जघन्य अंतमू० उत्कु० ७ हजार वरसनी तेऊनीतंनी ॥ जघ० अंतर्मु० उत्कृष्टीत्रण अहोरात्रनी ॥ ३ ॥ वायरानी जघन्य अंतर्मूहूर्तनी उत्कृष्टी त्रग हजार वरसनी ॥ ४ ॥ वनस्पतिनी जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी दसहजार वरसनी ॥ २० ॥ समोहिया असमोहिया मरण दोनुही पावे ॥ २१ ॥ चवण ते पृथवी आदि च्यार थावरोमें समय २ असंख्याता चवे वनस्पतिमे समय २ अनंता चवे ॥ २२ ॥ गया गई बादर पृथ्वी पाणी वनस्पती ए तीनोकी आगती २३ की नारकी वरजी सुक्ष्म पृथ्वी पाणी वनस्पतीकी गति १० ते [५] थांवर (३) विगलेंद्रीय तिर्यंच पचेंद्रिय मनुष्य तेउ वाऊनी नवकी गति ओर दशकी आगती पृथ्वीनी परे ॥ २३ ॥

प्राण पांचे ने चार ॥ एक इंद्रिपणुं ॥ १ ॥ कायबल ॥ २ ॥ श्वासो श्वास ॥ ३ ॥ आउखू ॥ ४ ॥ जोग पावे एक काय जोग ॥ २६ ॥

॥ इति पांच थांवरना पांच दंडक ॥

॥ हिवे तीन विगलेंद्रीयना ३ दंडक कहे छे ॥

बेइंद्री तेरंद्री चोरिंद्रीमां शरीर पावे तीन ॥ उदारिक तेजस कार्मण ॥ १ ॥ अवगाहणा भवधारणिक बेइंद्रीनी जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी बारा जोजननी ॥ तेरिंद्रीनी जघन्य अंगूलनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी तिन गाउनी ॥ चउरिंद्रीनी जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी चार गाउनी

उत्तर वेक्रेय नथी ॥ २ ॥ संघयण पावे एक छेवट्ठ ॥ ३ ॥ सटाण पावे एक हुंडक ॥ ४ ॥ कपाय पावे चारे ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चारे ॥ ६ ॥ लेशा पावे तीन पेहेली ॥ ७ ॥ इंद्री बेरिंद्रीने दोकाया ॥१॥ जिभ (२) तेरिंद्रीनें इंद्री तीन ॥ नासिका वधी ॥ चउरिंद्रीनें इंद्री चार ॥ आंख वधि ॥ ८ ॥ समुदूघात पावे तीन वेदनी कपाय नें मारणांतिक ए तीन ॥ ९ ॥ संज्ञी नास्ति असंज्ञी हे ॥ १० ॥ वेद एक नपुंसक पावे ॥ ११ ॥ पर्या पांच पावे मन नही ॥ १२ ॥ द्रष्टी पावे दोय ॥ समकित द्रष्टी नें ॥ मिथ्यात द्रष्टी ॥ १३ ॥ दर्शन बेइंद्री तेइंद्रीमें एक अचक्षु दर्शन ॥ चउरिंद्रीमें दो दर्शन ॥ चक्षु दर्शन ने ॥ अचक्षु दर्शन ॥ ॥ १४ ॥ ज्ञान बे–मति ज्ञान ने श्रुत ज्ञान ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे बे- मति अज्ञान १ श्रुत अज्ञान २ ॥ १६ ॥ जोग पावे चार उदारिक १ उदारिकनो मिश्र २ कार्मण काय जोग ३ व्यवहार वचन ४ ॥ १७॥ उपयोग पावे बेंइद्री तेइंद्रीनें पांच ॥ बे ज्ञान बे अज्ञान एक अचक्षु दर्शन । ए पांच ॥ चउरिंद्रीनें उपयोग छ ॥ बे ज्ञान बे अज्ञान बे दर्शन ए छै ॥ १८ ॥ आहार ले ॥ जघन्य अनें उत्कृष्टी छ दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उववाय ते एक समयमे जघन्य १–२–३ उपजे उत्कृष्टा असंख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिति बेंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी बारे वरसनी ॥ तेइंद्रिनी जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ओगण पचास दिवसनी ॥ चउरिंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी छै महिनानी ॥ २१ ॥ समोहया । अने असमोहिया मरण दोय पावे ॥ २२ ॥ चवण ते एक समयमे जघन्य १–२–३ चवे उत्कृष्टा असंख्याता चवे ॥ २३ ॥ गया गई ते दशकी गति० दशकी आ गति पाच थावर तीन विकलेंद्री तिर्यंच पचेंद्री ओर मनुष्य एव १० ॥ २४ ॥ प्राण बेंद्रियमे पावे छै. स्पर्श (१) रसना (२) कायाल [३] श्वासोश्वास [४] आउख् (५) वचन (६) ए छै ॥ तेरिंद्रीनें

सात प्रांण । ते नासिका वधी । चउरिंद्रीनें आठ प्रांण आंख वधी ॥ २५ ॥ जोग दोय ॥ वचन जोग ने काय जोग ॥ ॥ २६ ॥

॥ इति त्रण विगलेंद्रीना त्रण दंडक ॥

॥ हिवे वीसमो तिर्यंच पंचेंद्रियनो दंडक. ॥

जिनरा २ भेद असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री १ और सन्नी तिर्यंच पंचेंद्री ॥ २ ॥

हिवे असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री पर २६ द्वार उतारिये छे ॥ शरीर पावै ॥ ३ ॥ उदारिक तेजस कार्मण ॥ १ ॥

अवग्गहणा भव धारणीक जघन्य आंगूल ने असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी हजार योजननी ॥ स्थलचरनी जघन्य आंगूल ने असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी पृथक् * गाउनी ॥ खेचरनी जघन्य आंगूल ने असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी पृथक् धनुषनी ॥ उरपरनी जघन्य आंगूल ने असंख्यातमे भाग उत्कृष्टी पृथक् योजननी ॥ भुजपरनी जघन्य आंगूल ने असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी पृथक् धनुष्यनी ॥ २ ॥ उत्तर वैक्रेय नास्ति ॥ इंद्रिय पांचोहीमें पांच पांच पावै ॥ ८ ॥

स्थिती—जघन्य पांचोहीनी अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी जलचरनी कोड पूरवनी ॥ स्थलचरनी चौरांशी हजार वरसनी ॥ खेचरनी बहोत्तर हजार वरसनी ॥ उरपरनी त्रेपन हजार वरसनी भुजपरनी बंयालीस हजार वरसनी ॥ २१ ॥

गति आगति—बावीसनी गती ते विमानिक ज्योतिषी वरजीने शेष बावीस दंडकनी ॥ आगति दशनी चौरेंद्रियवत् ॥ २४ ॥ प्राण पावे नव ॥ श्रोत्र वध्यो ॥ २५ ॥

शेषद्वार चौरेंद्रियवत् जाणवा ॥ २६ ॥ इति ॥

---

* पृथक्—दोयसें लेकर नवतक कहिये

॥ हिवे सन्नी पंचेंद्रि उपर २६ द्वार कहे छे ॥

शरीर पावे चार ॥ आहारीक टळयो ॥ १ ॥ अवग्रहणा जघन्य सर्वनी आंगुलनें असंख्यातमे भाग उत्कृष्टी जलचरनी हजार योजननी ॥ स्थलचरनी छे गाऊनी ॥ खेचरनी पृथक् धनुषनी ॥ उरपरनी हजार योजननी ॥ भुज परनी पृथक् गाउनी ॥ ये भव धारणिक अवग्गहणा कही ॥ हिवे उत्तर वैक्रेय अवग्गहणा सर्वनी जघन्य आंगूलने संख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी सर्वनी नवशे योजननी ॥२॥ शंघयग छे पावे ॥३॥ संठाण छे पावे ॥४॥ कषाय पावे ४॥५॥ संज्ञा पावै चार ॥ ६ ॥ लेशा पावै छे ॥ ७ ॥ इंद्रीय पावै पांच ॥ ८ ॥ समुद्घात पावे पांच ॥ प्रथम ॥ ९ ॥ सनी है ॥ असन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद पावे तीन ॥ ११ ॥ परजा पावे छे ॥ १२ ॥ दृष्टी पावै तीन ॥ ॥१३ ॥ दर्शन पावै तीन ॥ केवल दर्शन वर्जित ॥ १४ ॥ ज्ञान पावै प्रथम तीन ॥ १५ ॥ अज्ञान पावै तीन ॥ १६ ॥ जोग पावै तेरा ॥ आहारीक वर्जित ॥ १७ ॥ उपयोग पावे नव ॥ तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शन ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उववाय ते एक समयमें जघन्य ॥ १–२–३–उपजे उत्कृष्टा असंख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिती जघन्य सर्वनी अंतर्मुहूर्तनी ॥ उत्कृष्टी जलचर उरपर भुजपरनी क्रोड २ पूर्वनी (पूरव किसको कहिये ॥ सितर लाख क्रोड वर्ष छप्पन्न हजार क्रोड वर्ष बीते जिसको एक पूरव कहिये ॥) स्थळचरनी तीन पल्योपमनी ॥ खेचरनी पल्योपमना असंख्यातमा भागनी ॥ २१ ॥ समोहया असमोहया मरण दोनूंही पावे ॥ २२ ॥ चवण ते एक समयमे जघन्य १–२–३ चवे उत्कृष्टा असंख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति ते सन्नी तिर्यंच पंचेद्रीनी २४ नी गति ॥ आगति २२ नी ॥ २४ ॥

माण १० दश पावे ॥ २५ ॥ जोग ३ पावै ॥ २६ ॥

॥ इति तिर्यंच पंचेद्रीनो वीसमो दंडक ॥

॥ हिवे एकवीसमो मनुष्यनो दंडक कहे छे ॥

जिनरा दोय भेद ॥ असन्नी मनुष्य १ और सन्नी मनुष्य २ ॥ सन्नी मनुष्यना भेद २ ॥ कर्म भूमि १ और अकर्म भूमि २ ॥ हिवे असन्नी मनुष्य उपरे २६ द्वार उतारिये छे ॥ शरीर पावै तीन पृथ्वी वत् ॥ १ ॥ अवग्गहणा भव धारणिक जघन्य उत्कृष्ट आंगूलनें असंख्यातमो भाग ॥ २ ॥ संघयण १ पावे चरम ॥ ३ ॥ संठाण एक पावे चरम ॥ ४ ॥ कषाय चार पावे ॥ ५ ॥ संज्ञा पावे चार ॥ ६ ॥ लेशा पावे तीन प्रथम ॥ ७ ॥ इंद्रीय पावे पांच ॥ ८ ॥ समुद्घात पावै तीन प्रथम ॥ ९ ॥ असन्नी है ॥ सन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद पावे १ नपुंसक ॥ ११ ॥ प्रज्ञा पावै चार ॥ अधूरी प्रथम ॥ १२ ॥ दृष्टी पावे एक ॥ मिथ्यादृष्टि ॥ १३ ॥ दर्शण पावे एक ॥ अचक्षु ॥ १४ ॥* ज्ञान नास्ति ॥ १५ ॥ अज्ञान दोय प्रथम पावे ॥ १६ ॥ जोग पावे ३ । उदारिक उदारिकनो मिश्र कार्मण जोग ॥ १७ ॥ उपयोग पावे तीन तथा चार ॥ पूर्ववत् ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उववाय ते जघन्य एक समयमे १–२–३ उपजे उत्कृष्टा असंख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिती जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनी ॥ २१ ॥ समोहया असमोहया मरण दोनुंही पावै ॥ २२ ॥ चवण एक समयमें जघन्य १–२–३ चवे उत्कृष्टा असंख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति ते असन्नी मनुष्यनी दसकी गति ॥ पांच स्थावर । तीन विकलेंद्री तिर्यंच पंचेद्री मनुष्य । एवं दश ॥ आगति

---

* तथा केइ कोइ माने चक्षु, अचक्षु ॥

आठकी ॥ पूर्व कह्या जिसमेसूं तेउ वाउ टळया ॥ २४ ॥ प्राण पावे आठ ८ ॥ मन वचन प्राण टळया ॥ २५ ॥ जोग पावे १ कायजोग ॥ २६ ॥

॥ इति असन्नी मनुष्य उपरे २६ द्वार ॥

॥ हिवे कर्म भूमी सन्नी मनुष्य उपरे २६ द्वार कहे छैं ॥

तेमां शरीर पावे पांच ॥ १ ॥ अवग्गहणा भव धारणिक समुच्चय जघन्य आंगूलने असंख्यातमे भाग उत्कृष्टी पांचशे धनुषनी ॥ उत्तर वैक्रेय समुच्चय जघन्य आंगुलने संख्यातमे भाग उत्कृष्टी लाख योजननी ॥

पांच भर्त पांच ईरवर्त ये दस क्षेत्रोंमें छे आरा वर्ते । जिसमे अवसर्पणी काल आश्री अवग्गहणा कहे छे ॥

पेहले आरे लागतां ३ गाऊनी अवग्गहणा उतरतां २ गाऊनी ॥ १ ॥ दूजे आरे लागतां दो २ गाऊनीं उतरतां एक गाऊनी ॥ २ ॥ तीजे आरे लागतां एक १ गाऊनीं उतरतां पांचशे ५०० धनुषनी ॥ ३ ॥ चौथे आरे लागतां पांचशे धनुषनी उतरतां सात ७ हातनी ॥ ४ ॥ पांचमे आरे लागतां सात ७ हातनी उतरतां एक १ हातनी ॥ ५ ॥ छट्ठे आरे लागतां १ एक हातनी उतरतां एक हात मठेरी ॥ ६ ॥

॥ हिवे उत् सर्पणी काल आश्री अवग्गहणा कहे छे ॥

पेहेलो आरो लागता १ हाथ मठेरी उतरतां एक हातनी ॥ दूजो आरो लागतां १ हातनी उतरतां ७ हातनी ॥ २ ॥ तीजो आरो लागतां सात ७ हातनी उतरतां पांचशे धनुषनी ॥ ३ ॥ चौथो आरो ला-

गतां पांचशे धनुषनी उतरतां १ एक गाऊनी ॥ ४ ॥ पांचमो आरो लागतां १ एक गाऊनी उतरतां २ दोय गाऊनी ॥ ५ ॥ छठो आरो लागतां २ दोय गाऊनी उतरतां ३ तीन गाऊनी ॥ ६ ॥

पांचमाविदेहमें जघन्य आंगूलनें असंख्यातमे भाग उत्कृष्टी पांचशे धनुषनी ॥ २ ॥

संघयण पावे छे ॥ ३ ॥ संठाण पावे छे ॥ ४ ॥ कषाय पावे चार ॥ ५ ॥ संज्ञा पावे चार ॥ ६ ॥ लेशा पावे छे ॥ ७ ॥ इंद्रिय पांवे पांच ॥ ८ ॥ समुद्घात पावे सात ॥ ९ ॥ सन्नी है । असन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद पावे तीन तथा अवेदी पिण हुवे ॥ ११ ॥ परजा पावे छे ॥ १२ ॥ दृष्टी पावे तीन ॥ १३ ॥ दरशण पावे चार ॥ १४ ॥ ज्ञान पावे पांच ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे तीन ॥ १६ ॥ जोग पावे पंधरा तथा अयोगी पिण हुवे ॥ १७ ॥ उपयोग पावे बारा ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उववाय ते जघन्य एक समयमे १–२–३ उपजे उत्कृष्टा संख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिती समुच्चय जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी क्रोड पूरवनी ॥

हिवे पांच भर्त्त पांच ईरवर्तमें अवसर्पणी काल आश्री स्थिती कहे छेः—

पेहलो आरो लागतां ३ पल्योपमनी उतरतां २ पल्योपमनी ॥ १ ॥ दूजो आरो लागतां २ पल्योपमनी उतरतां १ पल्योपमनी ॥ २ ॥ तीजो आरो लागतां १ पल्योपमनी उतरतां क्रोड पूरवनी ॥ ३ ॥ चौथो आरो लागतां क्रोड पूरवनी उतरतां एकसोवीस (१२०) वरसनी ॥ ४ ॥ पांचमो आरो लागतां एकसोवीस (१२०)

वरसनी उतरतां वीस वरसनी ॥ ५ ॥ छठो आरो लागतां वीस (२०) वरसनी उतरतां सोळे [१६) वरसनी ॥ ६ ॥

॥ हिवे उत् सर्पणी काल आश्री स्थिती कहे छे ॥

पेहलो आरो लागतां १६ वरसनी उतरतां २० वरसनी ॥ १ ॥
दूजो आरो लागतां २० वरसनी उतरतां १२० वरसनी ॥ २ ॥
तीजो आरो लागतां १२० वरसनी उतरतां क्रोड पूरवनी ॥ ३ ॥
चौथो आरो लागतां क्रोड पूरवनी उतरतां एक पल्योपममनी ॥ ४ ॥
पांचो आरो लागतां एक पल्योपमनी उतरतां २ पल्योपमनी ॥ ५ ॥
छठो आरो लागतां २ पल्योपमनी उतरतां ३ पल्योपमनी ॥ ६ ॥
पांचमाविदेहमां जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी क्रोड पूरवनी * ॥ २१ ॥

समोहया असमोहया मरण दोय पावे ॥ २२ ॥ चवण एक समयमे जघन्य १-२-३ चवे ॥ उत्कृष्टा असंख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति कर्मभूमी सन्नी मनुष्यनी गत २४ दंडकनी ॥ आगत २२ नी तेऊ वाऊनो दंडक वर्जी ॥ २४ ॥ प्राण पावे दस ॥ २५ ॥ जोग पावे ३ । मनजोग । वचनजोग । कायजोग ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ हिवे युगुलिक मनुष्य ऊपरे २६ द्वार कहे छे ॥

शरीर पावे तीन उदारिक तेजस कार्मण ॥ १ ॥ अवग्गहणा भव धारणिक जघन्य पांचशे धनुप जाझेरी उत्कृष्टी ३ गाऊंनीं कर्म भूमि युगुलिया आश्री कही ॥ हिवे अकर्म भूमी युगुलीया आश्री कहे छे ॥ पांच देवकुरु पांच उत्तरकुरूमे जघन्य देश उणी ३ गा-

---

* क्रोड पूरवसें अधिक आउखो तथा पांचशे धुनुपसें अधिक अवगाहना युगुलिक मनुष्यके शिवाय अन्य मनुष्यकी न होय.

ऊनीं ॥ उत्कृष्टी ३ गाऊंनी ॥ पांच हरिवास पांच रम्यकवासमें जघन्य देश उणी २ गाऊनी उत्कृष्टी २ गाऊंनी ॥ पांच हेमवय पांच हरणवयमे जघन्य देश उणी २ गाऊनी उत्कृष्टी १ गाऊंनी ॥ छप्पन अंतर्द्वीपामें (८००) आठशे धनुपनी ॥ २ ॥ शंघयण पावे १ वज्र ऋषभ नाराच संघयण ॥ ३ ॥ संठाग पावे १ सम चौरंस ॥ ४ ॥ कषाय पावे चार (४) ॥ ५ ॥ संज्ञा पावे चार (४) ॥ ६ ॥ लेशा पावे ४ पेहेली ॥ ७ ॥ इंद्रीय पावे पांच (५) ॥८॥ समुद्घात पावे तीन [३] प्रथम ॥ ९ ॥ सन्नी हे असन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद पावे दोय (२) ॥ ११ ॥ परजा पावे छे ॥ १२ ॥ दृष्टी पावे (१) एक मिथ्यादृष्टी पल्यसूं ऊणां आउखावाळामें ॥ १ पल्योपमसूं लेकर तीन पल्योपमनो आउखातांइ दृष्टी पावे (२) दोय ॥ सम्यक्दृष्टी और मिथ्यादृष्टी ॥ १३ ॥ दर्शन पावे [२] दोय चक्षु दर्शन और अचक्षु दर्शन ॥ १४ ॥ ज्ञांन एक पल्योपमसूं उणा आउखावाळामें नास्ति ॥ एक पल्योपमसूं तीन पल्योपमना आऊखावाळामे ज्ञान पावै (२) दोय प्रथम ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे दोय (२) ॥ १६ ॥ जोग पावे ग्यारा ४ मनका ४ वचनका ॥ एवं ८ ॥ उदारिक ॥ ९ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥ १० ॥ कार्मण ॥ एवं ११ ॥ १७ ॥ उपयोग १ पल्योपमसूं ऊणा आउखावाळामे ४ पावे ॥ अज्ञान दोय, दर्शण दोय ॥ एक पल्योपमना आउखासूं ३ पल्योपमना आउखातांइ उपयोग पावे छे ॥ २ ज्ञान २ अज्ञान २ दरसण ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उववाय एक समयमें जघन्य १-२-३ ऊपजे उत्कृष्टा संख्याता ऊपजे ॥ २० ॥ स्थिति जघन्य क्रोड पूरव जाझेरी उत्कृष्टी तीन पल्योपमनी ॥ ये कर्म भूमिक जुगलीया आश्री कही ॥ हिवे अकर्मभूमि आश्री कहे छे ॥ पांच देवकुरुमें ॥ पांच उत्तरकुरुमें ॥

जघन्य देश उणी तीन पल्योपमनी उत्कृष्टी ३ पल्योपमनी ॥ पांच हरिवास पाच रमकवासमें जघन्य देश ऊणी २ पल्योपमनी उत्कृष्टी २ पल्योपमनी पाच हेमवय पांच एरणवयमें जघन्य देश उणी १ पल्योपमनी उत्कृष्टी १ पल्योपमनी ॥ छपन्न (५६) अंतर द्विपामें जघन्य उत्कृष्ट पल्योपमरा असंख्यातमा भागनी ॥ २१ ॥ समोहया असमोहया मरण २ पावे ॥ २२ ॥ चवण एक समयमे जघन्य १–२--३ चवे उत्कृष्टा संख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति एक पल्यसूं उणा आउखावाला जुगलियाकी ओर छपन्न (५६) अंतरद्वीपकी जुगलियांकी ॥ गति ११ नी १० दस भवनपति ओर वाणव्यंतर एवं ११ ॥ पांच देवकुरु पांच उत्तरकुरु पांच हरिवास पांच रमकवास पांच हेमवय पांच एरणवय ए (३०) अकर्म भूमि युगलियांनी १३ की गति ॥ ज्योतिषी विमाणीक ॥ ए २ दंडक वध्या ॥ आगति सर्व जुगलियांनी २ नी ॥ तिर्यंच पचेंद्री (१) ओर मनुष्य (२) ॥ २४ ॥ प्राण १० पावै ॥ २५ ॥ जोग ३ पावै ॥ २६ ॥

इति ईकवीसमो मनुष्यनो दंडक ॥

॥ हिवे २२ मो वाणव्यंतराना दंडक उपर २६ द्वार कहे छे ॥

वाणव्यंतरनो अधिकार भवनपतीनी परे जांणवो (नवरं) आउखानो फेर ॥ वाणव्यंतर देवतानो आउखो जघन्य १० हजार वरसनो उत्कृष्टो १ पल्योपमनो ॥ वाणव्यंतरोंनी देवीनो जघन्य १० हजार वरसनो उत्कृष्टो अर्द्ध पल्योपमनो ॥ इति २२ मो वाणव्यंतरनो दंडक ॥

॥ हिवे ज्योतिषीनो अधिकार कहिये छे ॥

तेवीस द्वार तो भवनपतिनी परै जांणवा ॥ शेष ३ बोलनो

फेर ॥ लेशा १ तेजू ॥ ८ ॥ सन्नीहै । असन्नी नास्ति असन्नी मरी ज्योतिषी विमाणीकमे ऊपजे नही ॥ १० ॥ स्थिती ते चंद्रमानी जघन्य १ पल्योपमना चोथा भागनी उत्कृष्टी १ पल्योपम १ लाख वरसनी तेहनी देवीनी जघन्य पल्योंपमना चोथा भागनी उत्कृष्टी अर्द्ध पल्योपम पांचसे वरसनी ॥ ग्रहनी जघन्य तो पूर्ववत् उत्कृष्टी १ पल्योपम १ हजार वरसनी तेहनी देवीनी जघन्य पूर्ववत् उत्कृष्टी अर्द्ध पल्योपमनी ॥ नक्षत्रनी जघन्य पूर्ववत् उत्कृष्टी अर्द्ध पल्योपमनी ॥ नक्षत्रनी देवीनी जघन्य पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्टो पल्योपमनो चोथो भाग जाझेरो ॥ तारानी जघन्य पल्योपमना ८ मा भागनी तेहनी देवीनी जघन्य पल्योपमनो ८मो भाग उत्कृष्टी पल्योपमना ८ मो भाग जाझेरी ॥ ए पांचानी स्थिति जाती आश्री जाणवी ॥इंद्रनी तो उत्कृष्टीज हुवै ॥

॥ इति २३ मो ज्योतिषिनो दंडक ॥

॥ हिवे विमाणिक देवतां उपर २६ द्वार कहे छे ॥

विमाणिक देवतामें १२ तो स्वर्ग तेहनां नाम ॥ सुधर्म देवलोक (१) ईशान देवलोक (२) सनत्कुमार देवलोक (३) माहेंद्र देवलोक (४) ब्रह्मदेवलोक (५) लांतक देवलोक (६) महा शुक्र देवलोक [७] सहस्रार दे० (८) आनत देवलोक (९) प्राणत दे० (१०) आरण दे० (११) अच्युत दे० (१२) हिवे नवग्रीवेकके नामः- ॥ भद्र (१) सुभद्र (२) सुजात [३] सुमानस (४) प्रिय दर्शने (५) सुदर्शने (६) अमोघ (७) सुमति भद्र (८) जसोधर (९) ॥ हिवे पांच अणुत्तर विमाणके नामः-विजय (१) विजयंत (२) जयंत (३) अपराजित (४) सर्वार्थसिद्ध (५) एवं २६ यामें ॥

शरीर तो ३ पावे वैक्रिय १ तेजस २ कारमण ३ ॥ १ ॥ अवगाहणा भव धारणीक समुचय जघन्य आंगुलने असंख्यातमे भागनी उत्कृष्टी ७ हातनी ॥ उत्तर वैक्रैय जघन्य आंगुलने संख्यातमे भागनी उत्कृष्टी लाख योजननी ॥ बारमां देवलोक आगे उत्तर वैक्रिय नास्ति ॥

॥ हिवे भवधारणिक उत्कृष्टी न्यारी २ कहे छे ॥

पहिला दूजा स्वर्गमे ७ हातनी ॥ तीजा चौथामे ६ हातनी ॥ पांचमें छट्ठामें ५ हातनी ॥ सातमें आठमामें ४ हाथनी ॥ ९ नवमां दसमां इग्यारा बारामें ३ हाथनी ॥ नवग्रैवेकमे २ हाथनी ॥ पांच अणुत्तर विमाणमें १ हाथनी ॥ २ ॥ संघयण नास्ति ॥ ३ ॥ संठाण भवनपतिनी परे ॥ ४ ॥ कषाय पावे चार ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चार ॥ ६ ॥ लेशा पावे समुच्चय ३—तेजू १ पद्म २ शुक्ल ३ ॥ हिवे न्यारी २ कहे छे ॥ पहला दूजामे तेजू ॥ तीजा चोथा पांचमांमे पद्म ॥ छट्ठाथी आगे शुक्ल ॥ ७ ॥ इंद्रिय पावे पांच ॥ ८ ॥ समुद्घात पावे प्रथम पांच ॥ १२ मां स्वर्गतांइ प्रवृत्ति रूप है ॥ आगे ३ तो प्रवृत्तिरूप तेजस वैक्रिय सत्तारूप है ॥ ९ ॥ सन्नी है असन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद पहिला दूजामें २ पावे—स्त्री वेद १ पुरुष वेद आगे १ पुरुष वेद ॥ ११ ॥ परजा ५ भवन पतीवत् ॥ १२ ॥ दृष्टी १२ मां स्वर्गतांई ३ । नवग्रीवेकमें २ सम्यक् दृष्टी १ मिथ्यादृष्टी २ ॥ पांच अणुत्तर विमानमें १ सम्यग्दृष्टी ॥ १३ ॥ दरसण पावे ३ ॥ १४ ॥ ज्ञान पावै ३ ॥ १५ ॥ अज्ञान ३ नवग्रीवेकतांई अणुत्तर विमानमें अज्ञान नास्ति ॥ १६ ॥ जोग ११ चार मनरा ४ वचनरा वैक्रिय वेक्रियना मिश्र कारमण ॥ १७ ॥ उपयोग नव ग्रैवेकतांई ९ पावै अणुत्तर वि-

मानमें उपयोग पावे छे ॥ ३ अज्ञान नास्ति ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उववाय ते ८ मां स्वर्गताइ एक समयमें जघन्य १–२–३ उपजे उत्कृष्टा असंख्याता ऊपजे ॥ ९ मां स्वर्गसूं आगे जघन्य १–२–३ ऊपजे उत्कृष्टा संख्याता ऊपजे ॥ २० ॥ स्थिति समुचय जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी ३३ सागरनी ॥

॥ न्यारी न्यारी कहे छे ॥

पहेला देवलोकमें जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी दो सागरनी॥ देवीनी जाति दोय परिग्रहीता १ और अपरिग्रहीता ॥ परिग्रहीतानी स्थिती जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी सात पल्योपमनी ॥ अपरिग्रहीतानी स्थिती जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी ५० पल्योपमनी ॥ दूजा देवलोकमा जघन्य १ पल्योपम जाझेरी उत्कृष्टी दोसागर जाझेरी ॥ देवी परिगृहीतानी जघन्य १ पल्योपमनी जाझेरी उत्कृष्टी नव पल्योपमनी अपरिगृहीतानी जघन्य १ पल्योपम जाझेरी उत्कृष्टी ५५ पल्योपमनी ॥ तीजा देवलोकमे जघन्य २ सागरनी उत्कृष्टी ७ सागरनी ॥ चोथा देवलोकमे जघन्य २ सागर जाझेरी उत्कृष्टी ७ सागर जाझेरी ॥ पांचमे देवलोकमें जघन्य ७ सागरनी उत्कृष्टी १० सागरनी ॥ छट्ठे देवलोकमें जघन्य १० सागरनी उत्कृष्टी १४ सागरनी ॥ सातमां देवलोकमें जघन्य १४ सागरनी उत्कृष्टी १७ सागरनी ॥ ८ में देवलोकमें जघन्य १७ सागरनी उत्कृष्टी १८ सागरनी ॥ ९ मा देवलोकमें जघन्य १८ सागरनी उत्कृष्टी १९ सागरनी ॥ १० मा देवलोकमे जघन्य १९ सागरनी उत्कृष्टी २ सागरनी ॥ ग्यारमां देवलोकमें जघन्य २० सागरनी उत्कृष्टी २ सागरनी ॥ बारमा देवलोकमे जघन्य २१ सागरनी उत्कृष्टी २

सागरनी ॥ प्रथम ग्रैवेकमे जघन्य २२ सागरनी उत्कृष्टी २३ सागरनी ॥ दूजा ग्रैवेकमे जघन्य २३ सागरनी ॥ उत्कृष्टी २४ सागरनी । तिजा ग्रैवेकम जघन्य २४ सागरनी । उत्कृष्टी २५ सागरनी । चोथा ग्रैवेकमें जघन्य २५ सागरनी । उत्कृष्टी २६ सागरनी। पांचमा ग्रैवेकमें जघन्य २६ सागरनी । उत्कृष्टी २७ सागरनी । छट्ठे ग्रैवेकमें जघन्य २७ सागरनी । उत्कृष्टी २८ सागरनी । सातवां ग्रैवेकमें जघन्य २८ सागरनी । उत्कृष्टी २९ सागरनी । आठमां ग्रैवेकमें जघन्य २९ सागरनी । उत्कृष्टी ३० सागरनी । नवमां ग्रैवेकमें जघन्य ३० सागरनी । उत्कृष्टी ३१ सागरनी । विजयंतादिक चार अनुत्तर विमानमें जघन्य ३१ सागरनी । उत्कृष्टी ३३ सागरनी । सर्वार्थ सिद्ध विमानमें जघन्य उत्कृष्ट ३३ सागरनी ॥ २१ ॥ मरण समोहया असमोहया दोनूंही पावे ॥ २२ ॥ चवण आठमां स्वर्गताई जघन्य एक समयमें ॥ १—२—३ चवे ॥ उत्कृष्टा असंख्याता चवे ॥ नवमा स्वर्गसूं लेकर सर्वार्थ सिद्धताई जघन्य एक समयमें ॥ १—२—३ चवे । उत्कृष्टा संख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति पहिला दूजा देवलोकनी पांचकी गती । बादर पृथ्वी (१) पाणी (२) वनस्पति (३) तिर्यच पंचेंद्रीय [४] मनुष्य (५) एवं (५) आगति दोयनी तिर्यंच पंचेंद्रीय (१) मनुष्य [२] ए दोय तीजा स्वर्गसूं लेकर आठमा स्वर्गताई दोयकी गति दोयकी आगति ॥ तिर्यंच पचेंद्रीय और मनुष्य ॥ नवमा स्वर्गसूं लेकर सर्वार्थसिद्धताई एक मनुष्यनी गति और आगति ॥ २४ ॥ प्राण पावे (१०) ॥ २५ ॥ जोग पावे (३) मन जोग । वचन जोग । काय जोग ॥ २६ ॥

॥ इति २४ मो विमानिक देवनो दंडक ॥

हिवे सिद्धनो द्वार कहे छे ॥ शरीर नथी अशरीरी है ॥ १ ॥ अवग्गहणा जघन्य एक हात आठ आंगुलनी ॥ मझम चार हात सोला अंगुलनी ॥ उत्कृष्टी (३३३) धनुष बत्तीस आंगुलनी ॥ या आतम प्रदेशांकी अवग्गहणा जाणवी ॥ २ ॥ संघयण नास्ति । असंघयणी है ॥ ३ ॥ संठाण नास्ति । अमूर्तिक है ॥ ४ ॥ कषाय नास्ति । अकषायी है ॥ ५ ॥ संज्ञा नास्ति । नो सन्ना बहूत्ता है ॥ ६ ॥ लेशा नास्ति । अलेशी है ॥ ७ ॥ इंद्रिय नास्ति । अनिंद्रिय है ॥ ८ ॥ समुद्घात नास्ति । असमुद्घाती है ॥ ९ ॥ सन्नी असन्नी नास्ति । नोसन्नी नोअसन्नी है ॥ १० ॥ वेद नास्ति । अवेदी है ॥ ११ ॥ परजा नास्ति । नोप्रजाप्त नोअप्रजाप्त है ॥ १२ ॥ दृष्टी एक सम्यक् दृष्टी है ॥ १३ ॥ दरसण एक केवल दरसण है ॥ १४ ॥ ग्यांन एक केवल ज्ञान पावे ॥ १५ ॥ अज्ञान नास्ति ॥ १६ ॥ जोग नास्ति । अयोगी है ॥ १७ ॥ उपयोग पावे दोय केवलज्ञान (१) केवल दरसण (२) ॥ १८ ॥ अहार नास्ति । अणाहारीक है ॥ १९ ॥ उववाय ते उपजवो नास्ति । एक समयमें सिद्ध हुवे तो १–२–३ उत्कृष्टा (१०८) सिद्ध होवे १ सो ३२ तांई सीजे तो ८ समातांई सीजे ॥ तेतीससो ४८ तांई सीझे तो ७ समातांई सीझे ॥ गुणंचाससोसाठतांई सीझे तो ६ समातांई सीझे ॥ (६१ सो ७२) तांई सीझे तो ५ समातांई सीझे ॥ (७३ सो ८४) तांई सीझे तो ४ समातांई सीझे ॥ (८५ सो ९६) तांई सीझे तो ३ समातांई सीझे ॥ (५७ सो १०२) तांइ सीझे तो २ समातांइ सीझे ॥ (१०३ सो १०८) तांई सीझे तो एक समातांई सीझे ॥ पछे विरह पडे ॥ २० ॥ थिति आयु कर्मनी नास्ति । एक सिद्ध आश्री "साइये अपज्जव सीये" कहिजे । आदिहै । अंत नथी । घणा सिद्ध आश्री "अणाईये अपज्जवसीये" (यानें) आदिभी नास्ति

ओर अंतभी नास्ति ॥ २१ ॥ समोहया असमोहया मरण दोनुही नास्ति ॥ २२ ॥ चवण नास्ति ॥ २३ ॥ गतागति नास्ति आगति १ मनुष्यना दंडकनी ॥ २४ ॥ प्राण नास्ति । निश्चय प्राण पावे (४) सुख [१] सत्ता [२] बोध (३) चेतन (४) ॥ २५ ॥ योग नास्ति अयोगी है ॥ २६ ॥

॥ इति सिद्ध द्वार ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे लघुदंडकाख्यं द्वितीय प्रकरणम् ॥





प्रकरण तीसरा-भवन द्वार.



हिवे प्रथम नाम द्वार कहे छे ॥ सात नारकीके नामः--

रतनप्रभा (१) सकरप्रभा (२) वालुप्रभा (३) पंखप्रभा (४) धूम्रप्रभा (५) तमप्रभा (६) तमातमप्रभा (७) इति नामद्वार ॥ १ ॥ हिवे पिंडद्वार कहे छे ॥ पेहेली नारकीनो एक लाख अेंशी हजार (१८००००) योजनरो पिंड जिणमें एक हजार (१०००) योजन उपर छाडिजे ॥ और एक हजार योजन नीचे छोडिजे (१०००) बीचमें एक लाख अठयाहात्तर (१७८,०००) हजार योजनकी पोलाड छे ॥ तिणमें तेरे पाथडा और बारा आंतरा छे ॥ १ ॥ दूजी नारकीनो एक लाख बत्तीस हजार (१३२०००) योजननो पिंड जिणमेंसूं एक हजार योजन ऊपर छोडिजे ॥ और एक हजार योजन नीचे छोडिजे ॥ बीचमें एक लाख तीसहजार (१३००००) योजननी पोलाड छे ॥ तिणमें इग्यारे पाथडा और दस आंतरा छे ॥२॥ तीजी नारकीनो एक लाख अठ्ठावीस हजार (१२८०००) योजननो पिड जिणमेसूं एक हजार योजन ऊपर छोडिजे ॥ और एक हजार योजन नीचे छोडिजे ॥ बीचमे एक लाख छव्वीस हजार

(१२६०००) योजनकी पोलाड छे ॥ तिणमें नव पाथडा और आठ आंतरा छे ॥ ३ ॥ चोथी नारकीनो एक लाख वीस हजार (१२००००) योजननो पिंड जिणमेंसूं एक हजार योजन ऊपर छोडिजे ॥ और एक हजार योजन नीचे छोडिजे ॥ वीचमें एक लाख अठरा हजार (११८०००) योजनकी पोलाड छे ॥ तिणमें सात पाथडा छे आंतरा छे ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीनो एक लाख अठरा हजार (११८०००) योजननो पिंड जिणमेंसूं एक हजार योजन ऊपर छोडिजे ॥ और एक हजार योजन नीचे छोडिजे ॥ वीचमे एक लाख सोला हजार (११६०००) योजनकी पोलाड छे ॥ तिणमे पांच पांथडा चार आंतरा छे ॥ ५ ॥ छठी नारकीनो एक लाख सोले हजार योजननो पिंड जिणमेंसूं एक हजार योजन ऊपर छोडिजे ॥ और एक हजार योजन नीचे छोडिजे ॥ वीचमें एक लाख चवदे हजार योजनकी पोलाड छे ॥ तिणमें तीन पाथडा दोय आंतरा छे ॥ ६ ॥ सातमी नारकीनो एक लाख आठ हजार योजननो पिंड जिणमेसूं साडा बावन्न हजार योजन ऊपर छोडिजे ॥ और साडा बावन्न हजार योजन नीचे छोडिजे ॥ वीचमे तीन हजार योजनकी पोलाड छे ॥ तिणमें पाथडो एक आंतरो नथी.

॥ इति पिंड द्वार ॥ ३ ॥

॥ हिवे अंतरद्वार कहे छे ॥

पहिली नारकीके प्रत्येक पाथडे इग्यारे हजार (११५४३) पांचसे तयालीस योजन एक योजनका त्याथीआ दोय भागको अंतर छे ॥ १ ॥ दूजी नारकीके प्रत्येक पाथडे नव हजार सातशे योजनको अंतर छे ॥ २ ॥ तीजी नारकीके प्रत्येक पाथडे बारा हजार पेंगाचारसे योजनको अंतर छे ॥ ३ ॥ चोथी नारकीके प्रत्येक

पाथडे (१६१६६) सोळे हजार एकसें छासट योजन और एक योजनका त्यायीआ दो भागनो अंतर छे ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीके प्रत्येक पाथडे सवा पचीस हजार [२५२५०] योजनको अंतर छे ॥ ५ ॥ छठी नारकीके प्रत्येक पाथडे साडा बावन्न हजार [५२५००] योजनको अंतर छे ॥ ६ ॥ सातमी नारकीमें पाथडो छे पिण अंतर नथी ॥ ७ ॥

॥ इति अंतद्वार ॥ ३ ॥

॥ हिवे नरकावासा द्वार कहे छे ॥

पेहेली नारकीना तीस लाख नरकावासा [१] दूजी नारकीना (२५०००००) पचीस लाख नरकावासा (२) तीजी नारकीना [१५०००००] पंधरा लाख नरकावासा ॥ ३ ॥ चोथी नारकीना दस लाख [१००००००] नरकावासा ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीना तीन लाख (३०००००) नरकावासा ॥ ५ ॥ छठी नारकीना एक लाख नरकावासा (१०००००) ॥ ६ ॥ सातवी नारकीना [५] पांच नरकावासा ॥ ७ ॥ एवं सर्व मिली सातोंही नारकीना चवऱ्याशी लाख (८४०००००) नरकावासा जांणवा ॥

॥ हिवे नरकावासा कितना लंबा चौडा छे ते कहे छे ॥

केइएक नरकावासा संख्याता योजनका छे॥ केइ एक असंख्याता योजनका है ॥ संख्याता असंख्याता योजनको मान कहे छे॥ एक शीघ्र गतीनो धणी तथा चपल गतीनो धणी देवता आठ लाख पचास हजार सातशे चालीस योजनको एक डग भरे॥ इसी चालसे छे महिना तक चाले ॥ और चालनां जितनो क्षेत्र स्पर्शे उसको संख्याता

योजन कहिये ॥ और असंख्याता योजनकी गणती नथी॥संख्याता योजनका नरकावासामें संख्याता नारकीका नेरिया छे ॥ और असंख्याता योजनका नरकावासामें असंख्याता नारकीना नेरिया छे

॥ इति नरका वासा प्रमाण द्वार ॥ ४ ॥

हिवे अलोक द्वार कहे छे ॥ ५ ॥ पेहली नारकीसूं बारा योजन पीछे अलोक छे ॥ १ ॥ दूजी नारकीसूं बारा योजन ॥ एक योजनको तीन भाग पछे अलोक छे ॥ २ ॥ तीजी नारकीसूं तेरा योजन ॥ पछे अलोक छे ॥ ३ ॥ चौथी नारकीसूं चवदा योजन पछे अलोक छे ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीसूं चवदा योजनका एक भाग पछे अलोक छे ॥ ५ ॥ छठी नारकीसूं पंधरा योजनका दोय भाग पीछे अलोक छे ॥६॥ सातवी नारकीसूं सोला योजन पछे अलोक छे ॥ ७॥

॥ इति अलोक द्वार ॥ ५ ॥

हिवे क्षेत्र वेदना द्वार कहे छे ॥ नारकीमें दस प्रकारकी क्षेत्र वेदना ॥ अनंती भूख (१) अनंती तृपा (२) अनंतो शीत (३) अनंत उष्ण (४) अनंतो पराधीनपणो (५) अनंतीदहा (६) अनंतीखाज (७) अनंतोभय (८) अनंतो शोक (९) अनंती जरा ॥ १० ॥ ये दस प्रकारनी क्षेत्र वेदना नरकना नैरिया शाश्वती भोगवे छे

॥ इति क्षेत्र वेदना द्वार ॥ ६ ॥

हिवें भवनपति द्वार कहे छे ॥ पेहेले 'नारकीमें बारा आतरा कह्या जिणमेसूं दोय आंतरा छोड दीजे ॥ शेप दस आंतरामे दस प्रकारका भवनपति रहे छे ॥ असुर कुमार (१) नाग कुमार (२) सुवर्ण कुमार (३) विद्युत्कुमार (४) अग्नी कुमार ॥ ५ ॥ द्वीप कुमार ॥ ६ ॥ उदधि कुमार ॥ ७ ॥ दिशि कुमार ॥ ८ ॥ वायु कु-

मार ॥ ९ ॥ स्तनित कुमार ॥ १० ॥ एवं दश ॥ असुर कुमारके राखडीको चिन्ह ॥ नाग कुमारके सर्पको चिन्ह ॥ सुवर्ण कुमारके गरुड पंखीको चिन्ह ॥ विद्युत्कुमारके वज्रको चिन्ह ॥ अग्नी कुमारके पूर्ण कलशको चिन्ह ॥ द्वीप कुमारके सिंहका चिन्ह ॥ उदधि कुमारके घोडाका चिन्ह ॥ दिशि कुमारके हातीको चिन्ह ॥ वायुकुमारके मच्छको चिन्ह ॥ स्तनित कुमारके वर्द्धमान सरावलाको चिन्ह ॥

ए दश प्रकारना भुवन पतियोंका सात क्रोड बहैत्तर लाख भवन छे ॥ चार क्रोड छे लाख दक्षिण दिशका भवनपत्याकां भवन छे ॥ न्यारा न्यारा कहे छे ॥

दक्षिण दिशके असुर कुमारके ३४००००० चौतिस लाख भवन ॥ नागकुमारके चंमालीस लाख भवन ॥ सुवर्ण कुमारके अडतीस लाख भवन ॥ विद्युत्कुमारके चालीस लाख भवन ॥ अग्नीकुमारके चालीस लाख भवन ॥ द्वीपकुमारके चालीस लाख भवन ॥ उदधि कुमारके चालीस लाख भवन ॥ दिशीकुमारके चालीस लाख भवन ॥ वायुकुमारके पचास लाख भवन ॥ स्तनित कुमारके चालिस लाख भवन ॥ ए दक्षिण दिशके भुवनपत्याकां भवन कह्या ॥

हिवे उत्तरदिशके भुवनपत्यांकां भवनकी संख्या कहे छे ॥ असुर कुमारके [३००००००] तीस लाख भवन ॥ नागकुमारके चालीस लाख भवन ॥ सुवर्ण कुमारके चोतिस लाख भवन ॥ वायु कुमारके छंयालीस लाख भवन शेष छे भुवनपत्याकें छतीस २ ३६ लाख भुवन जाणवा ॥ एवं सर्व मिली सात क्रोड बेहेत्तर लाख भुवन हुवा ॥

हिवे भवनोको लांबापणा तथा चौडापणो कहे छे ॥ कइएक भवन संख्याता योजनका छे ॥ कइएक भवन असंख्याता योजनका छे

॥ इति भवनपतिद्वार ॥ ७ ॥

हिवे वाणव्यंतरद्वार कहे छे ॥ पेहेली नारकीनी एक हजार योजनकी ऊपरकी ठीकरी कही ॥ जिणमेसूं सौ योजन ऊपर छोडिजे और सौ योजन नीचे छोडिजे ॥ बीचमें आठसे योजनकी पोलाड छे ॥ तिणमें असंख्याता "सोळे-जातका" वाणव्यंतरा देवतां ओका नगर छे ॥ एक एक नगर जघन्य भरतक्षेत्र प्रमाणें 'मज्झम महाविदेह प्रमाणें उत्कृष्ट जंबुद्वीप प्रमाणें मोटा छे ॥ एक एक भवन सवासो सवासो योजनका लंबा चौडा छे ॥ जिणमें बाग, तलाव कुवा सरोवर पोखरणी सिद्धायतन ध्वजा पताका वावडी इत्यादिक आदि हे " पांच प्रकारना सुख वाण व्यंतर देव भोग रह्या छे

॥ इति वाणव्यंतर देवद्वार ॥ ८ ॥

॥ इति सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे भवन-द्वाराख्यं तृतीय प्रकरणम् ॥





॥ प्रकरण चोथा–ज्योतिषीद्वार ॥



जंबुद्वीपमां दोय चंद्रमा दोय सूर्य एकसो छी अंतर्गृह छप्पन नक्षत्र एक लाख तेहतीस हजार नवसे पचास क्रोडा क्रोडी तारा छे॥ सूर्यना एकसो चवऱ्याशी (१८४) मांडला छे ॥ तेमां ६५ पेंसट मांडला जंबुद्वीपनी जगतीथी मांही एकसो अशी योजन जाइये एटली सुधीमां छे अने जगतीथी ३३० तीनसोतीस जोजन लवण समुद्रमां जाइये एटली सुधीमां एकसो उगुणीस मांडला छे ॥ सर्व मिली पांचशे दश [५१०] योजनमां (१८४) एकसो चवऱ्याशीं मांडला रह्या छे ॥ सर्वाभ्यंतर [प्रथम] मंडलथी बाहिरला अनें छेला मांडला के पांचशे दश योजनकी छेटी छे ॥ एकेक मांडलाके परस्पर दो दो योजननी छेटी छे ॥ सूर्यनो विमान एक योजनना $\frac{४८}{६१}$ भागनूं लांबो पहूलो छे ॥ अने $\frac{२४}{६१}$ भागनो जाडो छे ॥ जंबुद्वीपमां सूर्यनो प्रथम मांडलो मेरु पर्वतथी (४४८२०) योजननें छेटे छे ॥ इम मांडले २ दोदो योजनने $\frac{४८}{६१}$ भाग वधारता छेलुं १८४ मो मांडलो मेरुथी (४५३३०) योजनने छेटे आवे इमज छेला मांडलाथी मांहिले २ मांडले आवतामां (२) जोजनने $\frac{४८}{६१}$ भाग घटाडता जाव प्रथम मंडल (४४८२०) योजननें छेटे आवे ॥ सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मांडलो

(९९६४०) योजननुं लांबु पहोलुं छे ॥ ने तेनि परिधि (३१५०८९) योजन जाझेरानि छे ॥१॥ दूजो मंडलो [९९६४५] योजनने ३५/६१ भागनुं लांबू पहोलूं छे, ने तेनि परिधि (३१५१०७) योजननि छे इम निकलता लांबपणा पहोलपणामां (५) योजननें ३५/६१ भाग वधारता नें परिधिमां अठारे योजन वधारता छेलुं (१८४) मूमांडलो (१००६६०) योजननुं लांबु पहोलूं छे नें तेनि परिधि (३१८३१५) योजननी छे, इम छेला मंडलथी माहिले मांडले प्रवेश करता पण पूर्वोक्त रीते लांबपणां पहोलपणां परिधिमांथी पूर्वोक्त रीते घटाडतां जाव प्रथम मांडलानुं लांब पहोलपणुं तथा परिधि आवे जीवारे सूर्य सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंडलने आश्रिने गति करे तिवारे एक मुहूर्त्ते (५२५१) योजननें २९/६० भाग चाले ॥ तिवारे इहांना मनुष्यने (४७२६३) योजननें २१/६० भाग वेगलेथी उगतो सूर्य नजरे आवे ॥ जिवारे दूजा मांडलानें आश्रीनें गति करे तिवारे एक मुहूर्त्ते (५२५१) जोजननें ४७/६० भाग चाले तिवारे (४७११९) योजनने ५७/६० भाग वेगलेथी उगतो सूर्य नजरे आवे ॥ इम निकलतां मांडले २' चालमां भाग १८/६० वधारता नें नजरे आवे, तेमां ८४ योजन वधारता २, छेले १८४ में मांडले एक मुहूर्ते (५३५०) योजनने १५/६० भाग चाले ने (३१८३१) योजनने ३०/६० भाग वेगलेथि उगतो सूर्य नजरे आवे, इम मांही प्रवेश करता मांडले २, मुहूर्त गतिमांनें नजरे आवे, तेमां पूर्वोक्तरीते घटाडता २, प्रथम मांडले पूर्वोक्त मान आवे ॥ जीवारे सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मांडलाने आश्रिनें सूर्य गति करे तिवारे (१८) मुहूर्तनो दिवस नें (१२) मुहूर्तनि रात्रि होय दूजा मांडलाने आश्रिने गति करे तिवारे पूर्वोक्तमांथी २/६१ भाग दिवसमांथि घटाडता नें रात्रीमां वधारता जाव (७८४) में मांडले (१०) मुहूर्त तो दीननें (१८) मुहूर्तनी रात्रि होय

इम छेले मांडलेथी प्रथम मांडले आवता पूर्वोक्त भाग दीन रात्रीमां वधारता घटाडता (१८) मुहूर्तने दीननें (१२) मुहूर्तनि रात्रि आवे ॥ जीवारे सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मांडलानें आश्रिने सूर्य गति करे तिवारे तापक्षेत्रनो आकार ऊर्ध्व मुखे कलंबु वनस्पतिनां फुलने आकारे मांहि संकुचित ॥ बाहिर लवण तरफ विस्तृत मांही मेरु पांसे, अर्ध वलयाकारे बाहीर लवण तरफ पहोलो मांहि पलाठीना मुखनें आकारे, बाहिर गाडानि उद्धिनें आकारे ॥ ते तापक्षेत्रनि बे पांसे (२) अवस्थित बाहा छे, ते पीशतालीश २ हजार योजननी लांबी छे ॥ अनें-एकेकी ताप क्षेत्र संस्थितरुप बाहानें (२) अनवस्थित बाहा छे, मेरु समीपे सर्वाभ्यंतर बाहा, अनें लवण तरफ सर्व बाहिरली बाहा तेनि सर्वाभ्यंतर बाहा, मेरु पांसे (९४८६) योजनने $\frac{९}{१०}$ भाग परिधिपणे छे, ते किम, मेरुनि परिधिने (३) गुणी (१०) भांगे तो पूर्वोक्त मांन आवे ॥ ते ताप क्षेत्र निसर्व बाहिरनि बाहा, लवण पांसे [९४८६८] योजन नें $\frac{४}{१०}$ भागनी परिधिपणे छे, ते किम, जंबुद्वीपनि परिधिनें (३) गुणी (१०) भांगता पूर्वोक्त मान आवे ॥ तिवारे ताप क्षेत्र (७८३३३) योजनने $\frac{१}{२}$ भाग लांबपणे छे, सगडनिउद्धिने आकारे तिवारे अंधकार, क्षेत्राकार, ताप क्षेत्राकारनि परें जाणवो ॥ मेरु ... अंधकार क्षेत्रनि सर्वाभ्यंतर बाहा (६३२४) योजनने $\frac{६}{१०}$ ...गनि परिधिपणे छे, ते किम, मेरुनि परिधिनें (२) गुणी [१०] भांगता पूर्वोक्त मांन आवे ॥ ते अंधकार क्षेत्रनि सर्व बाहिरनि बाहा लवण समीपें (६३२४५) योजन $\frac{६}{१०}$ भाग परिधिपणे छे, ते किम; जंबुद्विपनि परिधिने [२] गुणी (१०) भांगता पूर्वोक्त मान आवे

जीवारे-सूर्य बाहिरला मांडलाने आश्रिने गति करे तिवारे, ताप क्षेत्राकार पूर्ववत् (नवरं एटलो फेर) जे अंधकारनुं प्रमाण वर्णव्युं ते ताप क्षेत्रनुं प्रमाण जाणवुं ॥

॥ इति सूर्याधिकारः ॥

हिवे, चंद्रमाना (१५) मांडला छे ॥ तेमां जगतीथि (१८०) योजनमांहि जाइये एटला क्षेत्रमां (५) मांडला छे ॥ ने जगतीथि (३३०) योजन लवणमां जाइये एटला क्षेत्रमां (१०) मांडला छे ॥ एवं सर्व मिली (५१०) योजनमां (१५) मांडला रह्या छे ॥ प्रथम मांडलाथी छेलु मांडलो पण (५१०) योजनने छेटे छे ॥ एकेक चंद्रमंडलने (३५) योजन $\frac{30}{61}$ भाग $\frac{4}{7}$ भागनुं अंतर छे, एक मंडल $\frac{56}{61}$ भागनुं लांबु पहोल छे ने $\frac{28}{61}$ भागनुं जाडुं छे ॥ सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंडल मेरुथि (४४८२०) योजनने छेटे छे ॥ दूजो मंडल मेरुथी (४४८५६) योजनने $\frac{25}{61}$ भागने $\frac{4}{7}$ भागने छेटे छे ॥ इम निकलता मांडले २, छत्रिस योजनने $\frac{25}{61}$ भागने $\frac{4}{7}$ भाग वधारनार, छेलु पंदरमुं मांडलुं, मेरुथी (४५३३०) योजनने छेटे आवे ॥ इम मांडले २, माहीली कोरे प्रवेश करता, पूर्वोक्त योजन घटाडता २, प्रथम मंडल मेरुथि पूर्वोक्त छेटे आवे ॥ सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंडल (९९६४०)योजननुं, लांबु पहोलुं छे, नें तेनि परिधि (३१५०८९) योजन जाझेरानि छे, दूजो मंडल (९९७१२) योजन $\frac{51}{61}$ भागने $\frac{1}{7}$ भागनुं लांबु पहोलुं छे, ने तेनि परिधि (३१५३१९) योजन जाझेरानि छे, इम निकलता मांडले २, लांब पहोलपणामां (७२) योजनने $\frac{51}{61}$ भागने $\frac{1}{7}$ भाग वधारता नें परिधिमां (२३०) योजन मांडले २, वधारता छेलुं (१५) मो मांडलो (१००६६०) योजननुं लांबु छे, नें तेनि परिधि (३१८३१५) योजननी आवे ॥ इम बाहिरथि मांहिले मांडले प्रवेश करता, पूर्वोक्त लांब पहोलपण-

मांथी, पूर्वोक्त योजन घटाडताने, परिधिना मानमांथी, पण पूर्वोक्त योजन घटाडता, प्रथम मंडलनुं लांबपणुं पहोलपणुं तथा परिधि आवे ॥ जिवारे चंद्र सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंडलनें, आश्रिने गति करे, तिवारे एक मुहूर्ते चंद्र (५०७३) योजनने एक योजनना (१३७२५) भाग करिये तेवा $\frac{७७४४}{५३७२५}$ भाग चाले तिवारे इहाना मनुष्यनें (४७२६३) योजननें $\frac{२१}{६०}$ भाग वेगलेथी उगतो चंद्र नजरे आवे जीवारे चंद्र दूजा मांडलाने आश्रिनें गति करे तिवारे (१) मुहूर्ते (५०७७) योजनने $\frac{३६७४}{१३७२५}$ भागचाले एवं निकलता मांडले २, मुहूर्त गतिमां (३) योजनने $\frac{८६५५}{१३७२५}$ भाग वधारता यावत्, छेले [१५] मांडले [१] मुहूर्ते (५१२५) योजनने $\frac{६८७०}{१३७२५}$ भाग चाले, इम मांही प्रवेश करतां मांडले २, मुहूर्त गतिमांथी. पूर्वोक्तरीते, योजन भाग घटाडता प्रथम मांडले, मुहूर्त गति आवे, ते दीनें चंद्र उगतो (३१८३१) योजनथी नजरे आवे ॥

॥ इति चंद्राधिकारः ॥

हिवे नक्षत्राना [८] मांडला छे तेमां जगतीथी (१८०) योजन जंबुद्वीपमां पेशिये, एटलामां (२) मंडल छे नें जगतिथी [३३०] योजन लवणमां जइये, एटलामां नक्षत्रला [६] मांडला छे सर्व मिली [५१०] योजनमां [८] मांडला रह्या छे, सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंडलथी, छेलुं (८) मुं मंडल (५१०) योजनने छेटे छे ॥ नक्षत्रना मांडला (२) नें (२) योजननुं आंतरुं नक्षत्रनुं मांडलो १ गाउनुं लांबु पहोलु नें अर्द्ध गाउनुं जाडुं छे ॥ मेरुथी [४४८२०] योजनने छेटे प्रथम मांडलो छे मेरुथी (४५३३०) योजनने छेटे छेलुं (८) मुं मांडलो छे प्रथम मांडलो (९९६४०) योजननुं लांबु पहोलु छे; नें (३९५०८९) योजन जाझेरानि तेनि परिधि छे ॥ बाहिरलुं [८] मुं, मांडलो (१००६६०) योजननुं, लांबू छें नें

(१३८३१५) योजननि तेनि परिधि छे, जीवारे प्रथम मांडले चाले तिवारे (१) एक मुहूर्ते (५२६५) योजनने $\frac{१८२६३}{२१९६१०}$ भाग चाले जीवारे छेला मांडलानें आश्रिने गति करे तिवारे मुहूर्ते (५३१९) योजनने $\frac{१३३६५}{२१९६१०}$ भाग चाले (८) नक्षत्रना मांडला १–३–६–७–८–१०–११–१५ मां, चंद्र मंडल साथे भेला छे, एक मुहूर्ते चंद्र जे जे मांडलाने आश्रिने गति करे ते ते, मांडलानी परिधिना (१७६८) भाग चाले ते मंडलनि परिधिनें (१०९८००) छे दिये तेवा सूर्य (१) मुहूर्ते (१८३०) भाग चाले नक्षत्र (१८३५) भाग चाले ॥

॥ इति नक्षत्राधिकारः ॥

हिवे (५) संवछरना नामः–नक्षत्र संवछर [१] युग संवछर (२) प्रमाण संवछर (३) लक्षण संवछर (४) शनैश्चर संवछर (५) नक्षत्र संवछरना (१२) भेद कहे छे ॥ श्रावण जाव आषाढ ॥ (अथवा) बृहस्पति नामे ग्रह (१२) वर्षे सर्व नक्षत्रनां मांडलाने पूर्ण करे नक्षत्र भोगवी ले ते नक्षत्र संवछर कहिये ॥ १ ॥ युग संवछरना पांच भेद ॥ चंद्र (१) चंद्र चंद्र (२) अभिवर्द्धित [३] चंद्र (४) अभिवर्द्धित (५) ॥ प्रथम चंद्र संवछरन (२४) पर्व एवं दूजा चोथाना पण (२४) पर्व जांणवा ॥ अभिवर्द्धितोना छवीस २, पर्व, एवं [५] संवछरे (१) युग १२४ पर्व ॥२॥ प्रमाण संवछरना ५ भेद ॥ नक्षत्र (१) चंद्र (२) ऋतु (३) आदित्य (४) अभिवर्द्धित [५] ॥३॥ लक्षण संवछरना (५) भेद ॥ सम नक्षत्र (जे वखते जेनो जोग जोइये ते) जोग जोडे सम ऋतु परिणमे, अति ताप टाढ नहि, बहु उदक वर्षे, तेने नक्षत्र संवछर कहिये [१] पूर्णिमाए चंद्र साथे विषम चार नक्षत्रनो योग होय, तावे टाढे, अति दारुण घणो

मेह वर्षे, तेने चंद्र संवछर कहिये ॥ २ ॥ वनस्पतिना प्रवाल विषम परिणमे, ऋतु विना अकाले फुल फल आवे, वर्षा सम्यक प्रकारे न वर्षे, तेने कर्म संवछर कहिये ॥ ३ ॥ थोडे मेहे करी, पृथिवी पाणीनो रस, फुल फलनो रस आपे, सम्यक् प्रकारे धान्य निपजे तेने आदित्य संवछर कहिये ॥ ४ ॥ सूर्यने तापे करि तप्या थका, क्षण लव दिवस, ऋतु परिणमे, नें नीचा स्थानक जले करि पुराय तेने अभिवर्द्धित संवछर कहिये ॥ ५ ॥ ४ ॥ अभिजितादि (२८) नक्षत्रोनें, शनैश्चर महाग्रह ३० वर्षे भोगवी ले, तिवारे शनैश्चर संवछर (अथवा) ए संवछर (२८) प्रकारनो ते अभिच, जाव, उत्तराषाढा (५) एक संवछरना (१२) मास तेना (२) प्रकारे नांम, लोकिक पक्षे श्रावण जाव आषाढ ॥ लोकोत्तर पक्षे अभिनंदित (१) प्रतिष्ठित (२) विजय (३) प्रीति वर्द्धन (४) श्रेयांस (५) शीव (६) शिशिर (७) हिमवंत (८) वसंत (९) कुसुम संभव (१०) निदाघ (११) वनविरोध (१२) एक मासना (२) पक्ष बहुल पक्ष (१) शुक्ल पक्ष २, एक पक्षना (१५) दिवस ते प्रतिपदा दिवस जाव पंचदशी दिवस ॥ हिवे (१५) दिवसना (१५) नाम ते ॥ पूर्वांग (१) सिद्ध मनोरम (२) मनोहर (३) यशोभद्र (४) यशोधरा (५) सर्व काम समृद्ध (६) इंद्र मूर्द्धाभिषिक्त (७) सोमणस (८) धनंजय (९) अर्थ सिद्ध (१०) अभिजात (११) अत्यासन [१२) शतंजय (१३) अग्निवेश्म (१४) उपशम (१५) हिवे [१५] दिवसने [१५] तिथी ते नंदा (१) भद्रा (२) जया [३] तुछा [४] पूर्णा (५) ए रीते (५) नें ३ वार उथलावता (१५) थाय, एक पक्षनि (१५) रात्रि ते प्रतिपदा जाव पंचदशी ॥ हिवे (१५) रात्रिना नांम, ते उत्तमा (१) सुनक्षत्रा (२) एलापत्य। (३) यशोधरा [४] सोमणसा (५) श्री संभूता [६] विजया

(७) विजयंती [८] जयंती [९] अपराजिता (१०) इच्छा (११) समाहारा [१२] तेजा (१३) अति तेजा [१४] देवानंदा [१५] हिवे रात्रिनी (१५) तिथि कहे छे ॥ उग्रवती (१) भोगवती [२] यशोवती (३) सर्व सिद्धा (४) शुभ नाम (५) ए रीते ३ वार, उथलावता (१५) तिथी थाय ॥ एक अहोरात्रना (३०) मुहूर्तना नांम ॥ रौद्र (१) श्वेत (२) मित्र (३) वायु (४) सुपीन (५) अभिचंद्र (६) माहेंद्र (७) बलवान (८) ब्रह्म (९) ब्रह्म सत्य (१०) इशान (११) त्वष्टा (१२) भावितात्मा (१३) वैश्रमण (१४) वारुण [१५] आनंद (१६) विजय (१७) विश्वसेन (१८) प्राजापत्य (१९) उपशम (२०) गांधर्व (२१) अग्नि वैश्य (२२) शतवृषभ (२३) आतपवान् (२४) अमम (२५) ऋणवान् (२६) भौम (२७) वृषभ (२८) सर्वार्थ (२९) राक्षस (३०) हिवे करण (११) ना नांम, ॥ बव (१) बालव (२) कौलव (३) स्तिमित लोचन (४) गरादि (५) वणिज (६) विष्टि (७) शकुनि [८] चतुष्पद (९) नाग (१०) किंस्तुघ्न (११) तेमां ७ करण चर, ते प्रथमना ७, नें उपरला ४ करण स्थिर छे, शुक्लपक्षे पडवा रात्रे बव करण ॥ दूजे दीवशे बालव करण, रात्रे कौलव ॥ एवं तिथीना दिवस रात्रिनें ॥ करण एकेक पछि एकेक एम लेता मुकता जाव पूर्णिमा ए दीवशे विष्टि रात्रे बव बहुल पक्षे पडवाने दिवशे बालव रात्रे कौलव एवं दीवश रात्रे अनुक्रमे करण लेता मुकता जाव चतुर्दशी ए दिवशे विष्टि रात्रे शकुनी अमावास्या ए दीवशे चतुष्पद रात्रे नाग शुक्लपक्षनें पडवा दिवशे किंस्तुघ्न चरकरणते बदलाय ॥ स्थिर ते हमेश तेज तिथिये आवे ॥ संवछरमां आदि चंद्र ॥ अयनमां आदि दक्षिणायन ॥ ऋतुमां आदि प्रावृट् ॥ मासमां आदि श्रावण ॥ पक्षमां आदि बहुल ॥ अहोरात्रमां आदि दिवस ॥ मुहूर्तमां आदि

रौद्र ॥ करणमां आदि बालव ॥ नक्षत्रमां आदि अभिजित् ॥ युगना संवछर (५) ॥ अयन (१०) ऋतु (३०) मास (६०) पक्ष [१२०] अहोरात्र [१८३०] [५४९००] मुहूर्त ॥ हवे नक्षत्रना नाम कहे छे॥ अभिच (१) श्रवण (२) धनिष्ठा (३) शतभिषा (४) पूर्वा भाद्रपद [५] उत्तरा भाद्रपद (६) रेवति (७) अश्विनी (८) भरणी (९) कृत्तिका [१०] रोहिणी (११) मृगशीर [१२] आर्द्रा (१३) पुनर्वसु (१४) पुष (१५) आश्लेषा (१६) मघा (१७) पूर्वाफाल्गुनी (१८) उत्तरा फाल्गुनी [१९] हस्त (२०) चित्रा (२१) स्वाति (२२) विशाखा (२३) अनूराधा (२४) ज्येष्टा (२५) मुल (२६) पूर्वाषाढा (२७) उत्तराषाढा (२८) तेमां मृगशीर [१] आर्द्रा (२) पूष (३) आश्लेषा (४) हस्त [५] मूल [६] ए (६) नक्षत्र चंद्रने बाहिर ले (१५) में मांडले दक्षिणे जोग जोडे छे ॥ अभिच (१) श्रवण [२] धनिष्ठा (३) शतभिषा (४) पूर्वा भाद्रपद (५) उत्तरा भाद्रपद (६) रेवती (७) अश्वनी [८] भरणी (९) पूर्वा फाल्गुनी (१०) उत्तरा फाल्गुनी (११) स्वाती (१२) ए सदा चंद्रथी उत्तरमां जोग जोडे छे ॥ कृत्तिका (१) रोहिणी [२] पुनर्वसु (३) मघा [४] चित्रा (५) विशारवा (६) अनूराधा (७) ए (७) नक्षत्र चंद्रनें उत्तर दक्षिणे प्रमर्दिने जोग जोडे छे ॥ पूर्वाषाढा (१) उत्तराषाढा (२) ए (२) नक्षत्र सर्व बाहीरले मांडले दक्षिणे चंद्रमानें प्रमर्दिने जोग जोडे नें १ ज्येष्ठा नक्षत्र सदा चंद्रने प्रमर्दिने जोग जोडे ॥ हवे नक्षत्रना देव कहे छे ॥ ब्रह्मा (१) विष्णु (२) वसु (३) वरुण (४) अज (५) अहिर्बुध्न (६] पूष (७) अश्व (८) यम [९] अग्नि (१०) प्रजापति (११) सोम (१२) रौद्र (१३) अदिति (१४) बृहस्पति (१५) सर्प (१६) पितृ (१७) भग (१८) अर्यम (१९) सविता (२०] त्वष्टा (२१) वायु (२२) इंद्राग्नि (२३) मित्र (२४) इन्द्र (२५) नैर्ऋति (२६) जल (२७) विश्व (२८) हिवे

नक्षत्रना तारा अनुक्रमे कहे छे ॥ ३–३-५–१००–२–२–३२–३–३–६–५–३–१–५–२–६–७–२–२–५–१–१–५–४–३–११–४–४ हिवे नक्षत्रना गोत्र कहे छे ॥ मुद्गलायन (१) सांख्यायन (२) अग्रभात्र (३) कर्णिलायन (४) जातुकर्ण (५) धनंजय (६) पुष्पायन [७] अश्वायन (८) भार्गवेश (९) अग्निवेश [१०] गौतम (११) भारद्वाज (१२] लौहित्य (१३) वासिष्ठ (१४) अवमज्जायन (१५) मांडव्यायन (१६) पिंगलायन (१७) गोवल्लायन (१८) काश्यप (१९) कौशिक (२०) दर्भायन (२१) चामरछाय (२२) शृंगायन (२३) गोलव्यायन (२४) तिमिछायन (२५) कात्यायन (२६) अव्यायन (२७) व्याघ्रापत्य (२८) हिवे नक्षत्रना आकार कहे छे ॥ गो शीर्पावली (१) कावड (२) शकुनि पंजर (३) पुष्पोपचार (४) वापि (५) नावा (६) अश्वखंध (७) भग (८) क्षुरप्र (९) शकटउद्धि (११) मृगशीर्पावलि (१२) रुधिर विंदु (१३) तुला (१४) वर्द्धमान (१५) पताका (१६) प्राकार (१७) पल्यंक (१९) हस्त (२०) मुखाभरण [२१] कीलक (२२) दामणि (२३) एकावली (२४) गजदंत (२५) वृश्चिक लांगूल (२६) गजविक्रम [२७] सिंह निषीद (२८) अभिचनो योग चंद्रमा साथे [९] मुहूर्तनें $\frac{२७}{६७}$ भागनो सूर्य साथे ४ अहोरात्रि ने छै मुहूर्तनो ॥ शत भिषा १ भरणी २ आर्द्रा ३ अश्लेषा ४ स्वाति ५ ज्येष्ठा ६ ए (६) नो चंद्र साथे योग (१५) मुहूर्तनो नें सूर्य साथे ६ अहोरात्र ने २१ मुहूर्तनो ॥ उत्तरा भाद्रपद १ उत्तरा फाल्गुनी २ उत्तरापाढा ३ पुनर्वसु ४ रोहिणी ५ विशाखा ६ ए [६] नो योग चंद्र साथे ४५ मुहूर्तनो ॥ सूर्य साथे २० अहोरात्र ने ३ मुहूर्तनो ॥ शेष नक्षत्र चंद्र साथे ३० मुहूर्त ने ॥ सूर्य साथे १३ अहोरात्र ने १२ मुहूर्त जोग जोडे अठावीस [२८] नक्षत्रमां [१२] कुल ते धनिष्ठा [१] उत्तरा

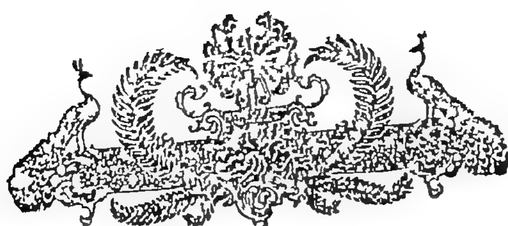
भाद्रपद (२) अश्विनी (३) कृत्तिका [४] मृगशीर [५] पुष्य (६) मघा [७] उत्तराफाल्गुनी (८) चित्रा [९) विशाखा (१०) मूल (११) उत्तराषाढा [१२] एवं (१२) अभीच (१) शतभिषा (२) आर्द्रा ३ अनूराधा (४) ए (४) कुलोपकुल शेष उपकुल ॥ श्रावणी पूर्णिमा ए ३ नक्षत्रमांथी जोग जोडे ॥ ते अभिच १ श्रवण २ धनिष्ठा ॥१॥ भाद्रपदी पूर्णिमाए शतभिषा (१) पूर्वाभाद्रपद (२) उत्तराभाद्रपद (३) ॥२॥ आश्विनी पूर्णिमाए रेवती १ अश्विनी २ ॥ ३ ॥ कार्तिकी पूर्णिमाए भरणी [१] कृत्तिका [२] ॥ ४ ॥ मार्गशिरी पूर्णिमाए रोहिणी (१) मृगशीर (२) ॥ ५ ॥ पोषि पूर्णिमाए आर्द्रा [१] पुनर्वसु [२] पूष (३) ॥ ६ ॥ माघी पूर्णिमाए आश्लेषा (१) मघा (२) ॥ ७ ॥ फाल्गुनी पूर्णिमाए पूर्वाफाल्गुनी (१) उत्तराफाल्गुनी [२] ॥ ८ ॥ चैत्री पूर्णिमाए हस्त (१) चित्रा (२) ॥ ९ ॥ वैशाखी पूर्णिमाए स्वाति (१) विशाखा (२) ॥ १० ॥ ज्येष्ठी पूर्णिमाए अनूराधा (१) ज्येष्ठा (२) मूल (३) ॥ ११ ॥ आषाढी पूर्णिमाए पूर्वाषाढा (१) उत्तराषाढा (२) नक्षत्र जोग जोडे ॥ १२ ॥ श्रावणी अमावास्याए आश्लेषा (१) मघा (२) ॥१॥ भाद्रपदीए पूर्वाफाल्गुनी (१) उत्तरा फाल्गुनी (२) ॥ २ ॥ आश्विनीए हस्त (१) चित्रा (२) ॥ ३ ॥ कार्तिकीए स्वाति (१) विशाखा (२) ॥ ४ ॥ मार्गशिरीए अनूराधा (१) ज्येष्ठा (२) मूल (३) ॥ ५ ॥ पोषीए पूर्वाषाढा (१) उत्तराषाढा (२) ॥ ६ ॥ माघीए अभिच (१) श्रवण (२) धनिष्ठा (३) ॥ ७ ॥ फाल्गुनीए शतभिषा (१) पूर्वाभाद्रपद (२) उत्तराभाद्रपद (३) ॥ ८ ॥ चैत्रीए रेवती (१) अश्विनी (२) ॥ ९ ॥ वैशाखीए भरणी (१) कृत्तिका (२) ॥ १० ॥ ज्येष्ठीए रोहिणी (१) मृगशीर (२) ॥ ११ ॥ आषाढीए आर्द्रा (१) पुनर्वसु (२) पुष (३) ॥ १२ ॥ जिवारे श्रावणी पूर्णिमाए जे नक्षत्र होय तेज नक्षत्रे

माघी अमावास्या होय इम जिवारे माघी पूर्णिमा जे नक्षत्र होय तेज नक्षत्रे श्रावणी अमावास्या होय इम एकांतर मासे २ पुनमे अमावास्याए वे महिनाने ॥ अंतरे २ एनाए नक्षत्रो आवे॥ श्रावणे ४ नक्षत्र रात्रि पुगाडे ते उत्तराषाढा १४ दीन ॥ अभीच ७ श्रवण ८ धनिष्ठा १ दीन ॥ नें मासने छेल्ले दहाडे २ पगने ४ अंगुले पौरुषी आवे ॥ एव सर्वत्र नक्षत्र आगल अंक ते दीन संख्या जाणवी ॥ १ ॥ भाद्रवे ४ नक्षत्र ते धनिष्ठा १४ शतभिषा ७ पूर्वा भाद्रपदा ८ उत्तरा भाद्रपदा १ ॥ पौरुषी २ पगने ८ अंगुले आवे ॥ २ ॥ आशोए उत्तरा भाद्रपदा १४ रेवती १५ अश्विनी १ ॥ पौरुषी ३ पगे आवे ॥ ३ ॥ कार्तिके अश्विनी १४ भरणी १५ कर्तिका १ ॥ पोरुषी ३ पगने ४ अंगुले आवे ४ मार्गशिरे कृत्तिका० १५ रोहिणी १४ मृगशीर्ष १ ॥ पौरुषी ३ पगने ८ अंगुले आवे ५ ॥ पोषे ॥ मृग० १४ आर्द्रा ८ पुनर्वसु ७ पुष १ ॥ पौरुषी ४ पगे आवे ॥ ६ ॥ माघे पुष्प १४ आश्लेषा १५ मघा १ पौरुषी ३ पगने ८ अंगुले आवे ॥ ७ ॥ फाल्गुने मघा १४ पूर्वाफाल्गुनी १५ उत्तरा फाल्गुनी १ ॥ पौरुषी ३ पगने ४ अंगुले आवे ॥ ८ ॥ चैत्र उत्तरा फाल्गुनी १४ हस्त १५ चित्रा १ पौरुषी ३ पगे आवे ॥ ९ ॥ वैशाखे चित्रा १४ स्वाती १५ विशाखा १ पौरुषी २ पगने आठ ८ अंगुले आवे ॥ १० ॥ जेठे विशाखा १४ अनूराधा ८ ज्येष्ठा ७ मूल १ पौरुपी २ पगने ४ अंगुले आवे ॥ ११ ॥ आपाढे मूल १४ पूर्वाषाढा १५ उत्तराषाढा १ पौरुषी २ पगे आवे ॥ १२ ॥ मेरुथी ११२१ योजन छेटे ने ॥ लोकांनथी ११११ योजनमांही ज्योतिष चक्र फिरे छे ॥ सर्वाभ्यंतर मांहिले मांडले अभिच्चने सर्वथि बाहिरले मांडले मूल ॥ भरणी सर्वथि हेठेनि ॥ स्वाति सर्वथि उपर चाले छे ॥ ज्योतिषीना विमान विमानने व्याख्यान सहित आंतरु पडे तो तरुप्र

[२६६] योजननुं उत्कृष्टी [१२२४२] योजननुं निर्व्याघात आंतरुं पडे तो जघन्य (५००) धनुषनी उत्कृटी [२] गाउनुं ॥ हवे (८८) ग्रहना नामः–अंगारक (१) विकालक (२) लोहितांक (३) शनैश्चर (४) आधुनिक (५) प्राधुनिक (६) कण (७) कनक (८) कग कणक (९) कण वितानक (१०) कण संतानक (११) सोम (१२) सहित (१३) अश्वासन (१४) कार्योपग (१५) कर्बुरक (१६) अजकरक (१७) दुंदुभक (१८) शंख (१९) शंखन भ (२०) शंख वर्णाभ (२१) कंश (२२) कंशनाभ (२३) कंशवर्णाभ (२४) नील (२५) नीलाव भास [२६] रूप (२७) रूपात्र भास [२८] भस्म (२९) भस्म राशि (३०) निल (३१) तिल पुष्पवर्ण (३२) दक (३३) दक वर्ण (३४) काय (३५) वंध्य (३६) इंद्राग्नि (३७) धूमकेतु (३८) हरि (३९) पिंगलक (४०) बुध (४१) शुक्र (४२) बृहस्पति (४३) राहु (४४) अगस्ति (४५) माणवक [४६] काम स्पर्श (४७) धुरक (४८) प्रमुख (४९) विकट (५०) विसंधि कल्प (५१) प्रकल्प (५२) जटियाल (५३) अरुण (५४) अग्निल (५५) काल (५६) महाकाल (५७) स्वस्तिक (५८) सौवास्तिक (५९) वर्द्धमाणक (६०) प्रलंबक (६१) नित्यालोक (६२) नित्योद्योत (६३) स्वयंप्रभ (६४) अवभास (६५) श्रेयस्कर (६६) क्षेमंकर (६७) आभंकर (६८) प्रभंकर (६९) अरजा (७०) विरजा (७१) अशोक (७२) वीतशोक (७३) विमल (७४) वितप्त (७५) विवस्त्र (७६) विशाल (७७) शाल (७८) सुव्रत (७९) अनिवृत्ति (८०) एक जटी (८१) द्विजटी (८२) करक (८३) करिक (८४) राजा (८५) अर्गल (८६) पुष्पकेतु (८७) भावकेतु (८८)

॥ इति ग्रह नामानि ॥

॥ इतिश्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे ज्योतिष-
द्वाराख्यं चतुर्थ प्रकरणम् ॥



प्रकरण पाचवा–विमानिकद्वार.



हिवे विमानिकना २६ द्वार कहे छे ॥

नामद्वार (१) संठाणद्वार (२) प्रतरद्वार (३) विमानद्वार (४) पंक्तिबंधद्वार (५) संख्याता असंख्यातात्द्वार (६) राजुद्वार (७) आधारद्वार (८) मेहेलातद्वार (९) अंगणाईद्वार (१०) वर्णद्वार (११) चिन्हद्वार (१२) सामानिकद्वार (१३) आत्मरक्षकद्वार (१४) लोकपालद्वार (१५) त्रायतंशकद्वार (१६) अणिकाद्वार (१७) प्रखदाद्वार (१८) अग्रमेषीद्वार (१९) प्रचारणा द्वार (२०) विमानद्वार [२१] आनाजानाद्वार (२२) ज्ञानद्वार [२३] शक्तिद्वार [२४] पुण्यद्वार (२५) परिग्रह्या अपरिग्रह्याद्वार (२६)

॥ इति षड्विंशति विमानिकद्वार नामानि ॥

(१) प्रथम नामद्वारमें बारे देवलोकोंकें नाम ९ लोकांतिकके नाम ९ नवग्रीवेकके नाम और पांच (५) अणुत्तर विमानकें नांम 'नवतत्व' मे लिखे प्रमाणें पूर्ववत् जानना ॥

॥ इति नामद्वार ॥ १ ॥

(२) हिवे संठाणद्वार कहे छे ॥ पहिलो। दूजो ।.तीजो । चोथो । नवमो। दसमो। ग्यारमो। बारमो देवलोक अर्ध चंद्रमाके आकार ॥ पांचमो छट्ठो सातमो आठमो देवलोक और नव ग्रीवेक और सर्वार्थ सिद्ध विमान पूर्ण चंद्रमाके आकार ॥ चार अणुत्तर विमान सिंघोडाके आकार ॥

॥ इति संठाणद्वार ॥ २ ॥

हिवे प्रतरद्वार कहे छेः—सर्व देवलोकोंमें (६२) प्रतर ॥ न्यारे न्यारे कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमे (१३) प्रतर ॥ तीजा चोथा देवलोकमें (१२) प्रतर ॥ पांचमा देवलोकमें (६) प्रतर ॥ छट्ठा देवलोकमें (५) प्रतर ॥ सातमे देवलोकमें (४) प्रतर ॥ आठमे नवमे दशमे इग्यारमें बारमे देवलोकमे चार २ प्रतर ॥ नव ग्रीवेकके (९) प्रतर ॥ पांच अणुत्तर विमानका एक प्रतर ॥

॥ इति प्रतरद्वार ॥ ३ ॥*

हिवे विमानद्वार कहे छे ॥ पेहेला देवलोकमें (३२०००००) बत्तिस लाख विमान ॥ दूजा देवलोकमे (२८) लाख विमान ॥ तीजा देवलोकमें बारा लाख विमान ॥ चोथा देवलोकमें आठ लाख विमान ॥ पांचमां देवलोकमे चार लाख विमान ॥ छट्ठा देवलोकमें पचास हजार विमान ॥ सातमा देवलोकमे चालीस हजार विमान ॥ आठमां देवलोकमे छे हज्जार विमान ॥ नवमां दसमा देवलोकमे चारशे विमान ॥ इग्यारा बारमां देवलोकमे (३००) विमान ॥ नवग्रीवेकना तीन त्रिगडा ॥ पहिले (ऊपरला) त्रिगडामें (१११) विमान ॥ दूसरा (वीचला) त्रिगडामें (१०७) विमान ॥ तीजा [नीचला] त्रिग-

* (प्रतर संख्या) १३–१२–६–५–४–४–४–४–९–१–एवं सर्व (६२) प्रतर क्रमसे गीण लेना.

डामें (१००) विमान ॥ पांच अणुत्तर विमानमें [५] विमान ॥

॥ इति विमानद्वार ॥ ४ ॥

* हिवे पङ्क्तिबंध द्वार कहे छे ॥ पहिला दूजा देवलोकमे गुणतीस्से (२९००) पचीस २५) पङ्क्ति ॥ तीजा चोथा देवलोकमे (२१००) इक्कीससे पङ्क्ति ॥ पांचमा देवलोकमे (८३४) आठसे चौतीस पङ्क्ति ॥ छठा देवलोकमे (५८५) पंक्ति ॥ सातमे देवलोकमे (३९६) तीनसे छिन्नु पंक्ति ॥ आठमे देवलोकमे (३३२) तीनसे वत्तिस पंक्ती ॥ नवमा दसमा देवलोकमें [२६८] पंक्ती ॥ इग्यारमे बारमे देवलोकमे (२०४) पक्ति ॥ नवग्रीवेकका तीन त्रिगडा ॥ पहिला त्रिगडामें (१११) पंक्ति ॥ दूसरा त्रिगडामें (७५) पंक्ति ॥ तीसरा त्रिगडामें (२९) पंक्ति ॥ पांच अणुत्तर विमानमें (५) पंक्ति ॥ एवं सर्व मिली (७८७४) पंक्ति जांणवी ॥

॥ इति पंक्तिबंध द्वार ॥ ५ ॥

हिवे संख्याता असंख्याता द्वार कहे छे ॥ सर्व ऊर्ध्वलोकके (८४९७०२३) विमान छे ॥ जिनका पांच भाग कीजे (१६९९४०४ विमान प्रत्येक भागमे रहे छे) एक योजनका तीन भाग मांहीला दोय भाग लीजे ॥ एक भागमें संख्याते योजनका विमानोमें संख्याता देवता रहे छे ॥ और चार भागमें असंख्याता योजनका विमानोमें असंख्याता देवता रहे छे ॥

॥ इति संख्याता असंख्याता द्वार ॥ ६ ॥

* (विमान संख्या) पेहेला देवलोकेसे लेकर सर्वार्थसिद्धतक क्रमसे जानना (३२०००००) २८०००००) १२०००००) ८०००००) ४०००००) ५००००) ४००००) ६००) ४००) ३०००) १११) १०७) १००) ५) एवं सर्व ८४९७०२३ विमान—

हिवे राजुद्वार कहे छे॥ पेहेलो दूजो देवलोक सं भूमतलाथी देड राजू उंचो ॥ तीजो चोथो देवलोक अटाई राजू ऊंचो ॥ पांचमो देवलोक सवातीन राजू उंचो॥ छठो देवलोक साडातीन राजू उंचो॥ सातमो देवलोक पूणाचार राजू ऊंचो ॥ आठमो देवलोक चार राजू ऊंचो ॥ नवमो दसमो इग्यारमो बारमो देवलोक पांच राजू ऊंचो ॥ नव ग्रीवेक छे राजू ऊंचा॥ पांच अणुत्तर विमान सात राजू मेठरा ऊंचा॥

॥ इति राजुद्वार ॥ ७ ॥ *

हिवे आधार द्वार कहे छे ॥ पेहेलो दूजो देवलोक घनवायके आधार ॥ तीजो चोथो पांचमो देवलोक घनोदधिके आधार ॥ छठो सातमो आठमो देवलोक घनवाय अने घनोदधिके आधार ॥ नवमां देवलोकसें लेकर सर्वार्थ सिद्ध विमान तक केवल आकाशके आधार॥

॥ इति आधारद्वार ॥ ८ ॥

हिवे मेहेलात द्वार कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमे [५००] पांचशे २, योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ तीजा चोथा देवलोकमे छेस्से २, योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ पांचमे छठे देवलोकमे सातशे २, योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ सातमे आठमे देवलोकमे आठसे २, योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ नवमे दसमे इग्यारमें बारमे देवलोकमें नवशे २, योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ नव नव ग्रीवेकमें, हजार २, योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ पांच अणुत्तर विमानमें इग्यारे इग्यारेसें योजनकी ऊंची मेहेलात ॥

॥ इति मेहेलात द्वार ॥ ९ ॥

* एक राजु जमीनका प्रमाण ३-८१--२७--९७० मगका एक लोहका गोलाको एक 'भार' कहा जाता हैं एसे हजार गोलेका एक गोला वनाके कोई देवता ऊचा जाके उस्को निचा डाले 'तव वो गोला ६ महिने ६ दिन ६ प्रहर और ६ घटिकामे जीतनी जगा (आकाश) उल्लंघे उतनी जगाको एक " राजु " की जगा कही जाती है.

हिवे अंगणाईद्वार कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमें सत्तावीससे योजनकी अंगणाई ॥ तीजा चोथा देवलोकमां छव्वीसे योजनकी अंगणाई ॥ पांचमा छट्टा देवलोकमे पचीस्से योजनकी अंगणाई ॥ सातमे आठमे देवलोकमे चौवीस्से योजनकी अंगणाई ॥ नवमा दसमा इग्यारमां बारमां देवलोकमे तेवीस्से योजनकी अंगणाई ॥ नवग्रीवेकमे बावीस्से योजनकी अंगणाई ॥ पांच अणुत्तर विमानमे एकवीस्से योजनकी अंगणाई ॥

॥ इति अंगणाई द्वार ॥ १० ॥

हिवे वर्णद्वार कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमे वर्ण पावे पांच तीजा चोथा देवलोकमे वर्ण पावे चार कालो टळयो ॥ पांचवे छट्ठे देवलोकमे वर्ण पावे तीन कालो नीलो टळयो ॥ सातमे आठमे देवलोकमें वर्ण पावे दोय कालो नीलयो रातो टळयो॥ नवमे दसमे देवलोकसूं लेकर सर्वार्थ सिद्ध तक वर्ण पावे एक ॥

॥ इति वर्णद्वार ॥ ११ ॥

हिवे चिन्हद्वार कहे छे ॥ पेहेला देवलोकके इंद्रके मुकुटमांही मृगको चिन्ह ॥ दूजा देवलोकके इंद्रके मुकुटमांही भैंसाको चिन्ह ॥ तीजा देवलोकके इंद्रके सुयरको चिन्ह ॥ चोथा देवलोकके इंद्रके बोकडाको चिन्ह ॥ पांचमे देवलोकके इंद्रके मेंढाको चिन्ह ॥ छट्ठे देवलोकके इंद्रके हाथीको चिन्ह ॥ सातमे देवलोकके इंद्रके घोडाको चिन्ह ॥ आठमा देवलोकका इंद्रके सर्पको चिन्ह ॥ नवमे दसमे देवलोकके इंद्रके गेंडाको चिन्ह ॥ इग्यारमा बारमा देवलोकके इंद्रके वृषभको चिन्ह ॥ आगे चिन्ह नथी ॥

॥ इति चिन्हद्वार ॥ १२ ॥

हिवे सामानिक द्वार कहे छे॥ पेहेला देवलोकके इंद्रके चैार्याशी हजार सामानिक देवता॥ दूजा देवलोकके इंद्रके अशी हजार सामानिक देवता॥ तीजा देवलोकके इंद्रके वेहेत्तर हजार सामानिक देवता॥ चोथा देवलोकके इंद्रके सत्तर हजार सामानिक देवता॥ पांचमे देवलोकके इंद्रके साठ हजार सामा०॥ छट्ठे देवलोकके इंद्रके पचास हजार सामानि०॥ सातमे देवलोकके इंद्रके चालिस हजार सामा०॥ आठमे देवलोकके इंद्रके तीस हजार सामानिक देवता॥ नवमे दसमे देवलोकके इंद्रके वीस हजार सामा०॥ इग्यारमे बारमे देवलोकके इंद्रके दस हजार सामा०॥ आगे नास्ति॥

॥ इति सामानिकद्वार॥ १३॥

हिवे आत्मरक्षकद्वार कहे छे॥ पेहेला देवलोकके इंद्र महाराजके तीन लाख छत्तीस हजार आत्मरक्षक देवता॥ दूजा देवलोकके इंद्र महाराजके तीनलाख वीस हजार आत्मरक्षक०॥ तीजे देवलोकके इंद्र महाराजके दोय लाख अठयाशि हजार आत्मरक्षक०॥ चोथे देवलोकके इंद्र महाराजके दोय लाख अशी हजार आत्मरक्षक०॥ पांचमा देवलोकके इंद्र महाराजके दोय लाख चालिस हजार आत्मरक्षक०॥ छट्ठे देवलोकके इंद्रमहाराजके दोय लाख आत्मरक्षक०॥ सातमा देवलोकके इंद्र महाराजके एक लाख छासट हजार आत्मरक्षक०॥ आठमा देवलोकके इंद्र महाराजके एक लाख वीस हजार आत्मरक्षक०॥ नवमे दसमे देवलोकके इंद्र महाराजके अशीहजार आत्मरक्षक०॥ इग्यारमे वारमे देवलोकके इंद्रमहाराजके चालीस हजार आत्मरक्षक०॥ आगे नास्ति॥

॥ इति आत्मरक्षकद्वार॥ १४॥

हिवे लोकपाल द्वार कहे छे ॥ एकेक इंद्र महाराजके चार २, लोकपाल ॥ लोकपालोंके नाम सोम १ यम २ वरुण ३ वैश्रवण ४ ॥ सोमकी राजधानी पूर्वकी तरफ ॥ यमकी राजधानी दक्षिणकी तरफ ॥ वरुणकी राजधानी पश्चिमकी तरफ ॥ वैश्रवणकी राजधानी उत्तरकी तरफ ॥

॥ इति लोकपाल द्वार ॥ १५ ॥

हिवे त्रायतंशक द्वार कहे छे ॥ एकेक इंद्र महाराजके तेवीस २ त्रायतंशक देवता माता पिता गुरु स्थानक जांणवा ॥

॥ इति त्रायतंशक द्वार ॥ १६ ॥

हिवे अणीकाद्वार कहे छे ॥ एकेक इंद्रमहाराजके सात २ अणिकाका अधिपति ॥ तेना नाम हाथी घोडा रथपायक नाटक गंधर्व वृषभ ॥ पेहेला देवलोकके इंद्र महाराजके प्रत्येक अणिकामे एक क्रोड एक लाख अडसट हजार सैन्य० ॥ दूसरे देवलोकके इंद्र महाराजके प्रत्येक अणिकामे एक क्रोड एक लाख साठ हजार सैन्य ॥ तीसरा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० एक्याणवे लाख चंमालीस हजार सैन्य ॥ चोथा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० अठयाशी लाख नव्वेह हजार सैन्य ॥ पांचमे देवलोकके इंद्र महाराजके प्रत्ये० अ० छेंत्तर लाख वीस हजार सैन्य ॥ छट्ठा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० त्रेसट लाख पचास हजार सैन्य ॥ सातमा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० पचास लाख अशी हजार सैन्य ॥ आठमा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० अडतीस लाख दस हजार सैन्य ॥ नवमा दसमा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० पचीस लाख चालीस हजार सैन्य ॥ इग्या-

रमे बारमे देवलोकके इंद्र महाराजके म० अ० बारा लाख सत्तर हजार सैन्य ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति अणिकाद्वार ॥ १७ ॥

हिवे प्रखदाद्वार कहे छे ॥ प्रखदा ३ प्रकारकी ॥ अभ्यंतर १ मध्य २ बाहिर ३ ॥ पहिले इंद्र महाराजके अभ्यंतरकी प्रखदा बारा हजार ॥ मध्यमकी प्रखदा चवदा हजार ॥ बाहिरकी प्रखदा सोला हजार ॥ दूसरे दे० इं० म० अभ्यंतरकी प्रखदा दस हजार ॥ मध्यमकी० बारा हजार ॥ बाहिर० चवदे हजार ॥ तीसरे दे० इं० म० अभ्यंतरकी० आठ हजार ॥ मध्यमकी० दस हजार ॥ बाहिरकी० बारा हजार ॥ चोथे दे० इं० महा० अभ्यंतरकी० छे हजार ॥ मध्यकी० आठ हजार ॥ बाहिरकी० दस हजार ॥ पांचमे दे० इं० महा० अभ्यंतरकी० चार हजार ॥ मध्यकी० छे हजार ॥ बाहिरकी० आठ हजार ॥ छट्ठे देव लो० इं० महा० अभ्यंतरकी० दोय हजार ॥ मध्यकी० चार हजार ॥ बाहिरकी० छे हजार ॥ सातमे दे० इं० महा० अभ्यंतरकी० एक हजार ॥ मध्यकी० दोय हजार ॥ बाहिरकी चार हजार ॥ आठमे देवलोक० इं० महा० अभ्यंतर० पांचशे ॥ मध्यकी० १ हजार ॥ बाहिरकी० दोय हजार ॥ नवमा दसमा दे० इं० महा० अभ्यंतर० अढाईसे ॥ मध्यकी० पांचशे ॥ बाहिरकी० १ हजार ॥ इग्यारमां बारमां दे० इं० महा० अभ्यंतर० सवासे ॥ मध्यकी० अढाईसे ॥ बाहिरकी० पांचशे ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति प्रखदा द्वार ॥ १८ ॥

हिवे अग्रमेपी द्वार कहे छे ॥ पेहला दूसरा देवलोकके इंद्रके आठ २ अग्रमेपी ॥ एकेक अग्रमेपीके सोले २ हजार परिवार ॥ एक लाख अट्ठावीस हजार तो मूलगी देवी ॥ एकेक देवी भोग

निमित्तें उत्तर वैक्रयसे सोळे २ हजार रुप करे ॥ सर्व रुप दो अब्ज चारक्रोड अशी लाख रुप थया ॥ इतनेही रुप इंद्र करे ॥

॥ इति अग्रमेषी द्वार ॥ १९ ॥

हिवे प्रचारणा द्वार कहे छे ॥ पहिला दूजा देवलोकमे मनुष्यनी परे प्रचारणा ॥ तीसरे चोथे देवलोकमे स्पर्श संबंधी प्रचारणा ॥ पांचमे छठे देवलोकमे वचन संबंधी प्रचारणा ॥ सातमे आठमे देवलोकमे रुप संबंधी प्रचारणा ॥ नवमे दसमे इग्यारमे बारमे देवलोकमे मन संबंधी प्रचारणा ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति प्रचारणा द्वार ॥ २० ॥

हिवे विमानद्वार कहे छे ॥ पेहेलो पालक नामे विमान ॥ दूसरो पुष्कल नामे विमान ॥ तीसरो सुमानस नामे विमान ॥ चोथो सुवछल नामे विमान ॥ पांचमो नंदीवर्द्धन नामे विमान ॥ छठ्ठो कांम नामे विमान ॥ सातमो धाम नामे विमान ॥ आठमो विदग् नामे विमान ॥ नवमो विमल नामे विमान ॥ दसमो सर्वोद्‌भद्र नामे विमान ॥ इग्यारमो बारमो प्रियंगु नामे विमांन ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति विमानद्वार ॥ २१ ॥

हिवे आनाजानाद्वार कहे छे ॥ पेहेली नारकीमें चारों जातका देवता आवे ॥ दूसरी नारकीमे तीन जातका देवता आवे ॥ तीसरी नारकीमें दो जातका देवता आवे ॥ ज्योतिषी वाणव्यंतर टळ्या ॥ चोथी नारकीसे सातमी नारकी तक एक विमानिक देवता आवे जावे ॥

॥ इति आनाजानाद्वार ॥ २२ ॥

हिवे ज्ञानद्वार कहे छे ॥ वाणव्यंतर ज्योतिषी देवता ऊंचो या नीचो देखे तो पचीस योजन तक देखे ॥ भुवनपति असुरकुमार ऊंचा देखे तो पेहेला दूजा देवलोक तक देखे ॥ नीचा देखे तो पेहेली नारकी तक संपूर्ण देखे ॥ तिरछा देखे तो असंख्याता द्वीप समुद्र देखे ॥ पेहेला दूजा देवलोकवाला ऊपर अपनी ध्वजा पताका तक देखे ॥ नीचा देखे तो पेहेली नारकीके अंत तक देखे ॥ तिरछा देखे तो असंख्याता द्वीप समुद्र देखे ॥ तीसरा चोथा देवलोकवाला ऊंचा तिरछा पूर्ववत् देखे ॥ नीचा दूसरी नारकीतक देखे ॥ पांचमा छठ्ठा देवलोकवाला ऊंचो तिरछो पूर्ववत्० ॥ नीचा तीसरी नारकी तक० सातमा आठमा देवलोकवाला ऊं० ति० पू० ॥ नीचा चोथी ना० ॥ नवमासे बारमा देवलोकवाला ऊं० ति० पू० ॥ नीचा पांच ना० ॥ नव ग्रीवेकवाला देवता ऊं० ति० पू० ॥ नीचो छठ्ठी ना० ॥ पांच अणुत्तर विमानवाला देवता ऊ० ति० पू० ॥ नीचो सातमी ना० ॥

॥ इति ज्ञानद्वार ॥ २३ ॥

हिवे शक्तिद्वार कहे छे ॥ असुरकुमारके इंद्र शक्तिसे उत्तर वैक्रेय करे तो जघन्य एक जंबुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा असंख्याता भरे ॥ पेहेला देवलोकके इंद्र शक्तिसे उत्त० ॥ जघन्य दोय जंबुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा अस ॥ दूजा देवलोकके इंद्र श० उ० तो जघन्य दोय जंबुद्वीप जाझेरा भरे ॥ उत्कृष्टा असं० ॥ तीसरा देवलोकके इंद्र श० उ० जघन्य चार जंबुद्वीप० ॥ उत्कृष्टा अस० । चोथा दे० इं० श० उ० ज० चार जंबुद्वीप जाझेरा ॥ उ० असं० ॥ पांचमा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० जघन्य आठ जंबुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा असं० ॥ छठा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० ॥ जघन्य आठ जंबुद्वीप जाझेरा भरे ॥ उत्कृष्टा असं० ॥ सातमा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० जघन्य सोला जंबुद्वीप भरे ॥

उत्कृष्टा असं० ॥ आठमा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० जघन्य सोला जंबुद्वीप जाझेरा भरे ॥ उत्कृष्टा असं० ॥ नवमा दसमा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० जघन्य ३२ जंबुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा असं० ॥ इग्यारमा बारमा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० जघन्य ३२ जंबुद्वीप जाझेरा० ॥ उत्कृष्टा असंख्याता द्वीप समुद्र भरे ॥ आगे उत्तर वैक्रेय नास्ति ॥

॥ इति शक्तिद्वार ॥ २४ ॥

हिवे पुण्यद्वार कहे छे ॥ वाणव्यतर देवता सो बरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना ज्योतिषी देवता २०० वरसमें क्षय करे ॥ ज्योतिषी देवताके इंद्र तीनसे वरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना भुवनपति चारसे वरसमे क्षय करे ॥ भुवनपतीके इंद्र पांचशे वरसमें जितना पुण्य क्षय करे उतना पेहेला दुसरा देवलोकवाला हजार वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ तीसरा चोथा देवलोकवाला [२०००] वरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना पांचवा छट्ठा देवलोकवाला (३०००) वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ सातमा आठमा देवलोकवाला (४०००) वरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना नवमा दसमा इग्यारमा बारमां देवलोकवाला (५०००) वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ नव नवग्रीवेकका तीन त्रिगडा ॥ पहिला त्रिगडावाला जितना एक लाख वर्षमें पुण्य क्षय करे उतना दूसरा त्रिगडावाला (२०००००) वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ तिसरा त्रिगडावाला जितना (३०००००) वरसमे पुण्य क्षय करे उतना चार अणुत्तर विमानवाला (४०००००) वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ चार अणुत्तर विमानवाला चार लाख वरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना सर्वार्थसिद्ध विमानका देवता (५०००००) वरस पीछे पुण्य क्षय करे ॥

॥ इति पुण्यद्वार ॥ २५ ॥

हिवे परिगृह्या अपरिगृह्या द्वार कहे छे ॥ पेहेला देवलोकके देवता जघन्य एक पल्योपमके आयुवाली उत्कृष्टी सात पल्योपमके आयुवाली देवी भोगवे ॥ दुसरे देवलोकवाला दे० जघन्य एक पल्योपमके आ० उत्कृष्ट० नव पल्योपमके आ० भोगवे ॥ तीसरे दे० जघन्य सात पल्योपमके आ० उत्कृष्ट दस पल्यो० भोगवे ॥ चोथे दे० जघन्य नव पल्योपमके आ० उत्कृष्ट (१५) पल्योपमके आ० भोगवे ॥ पांचमे देवलोकके दे० जघन्य (१५) पल्योपमके आ० उत्कृष्ट (२०) पल्योपमके आ० भोगवे ॥ छठा देवलो० जघन्य वीस (२०) पल्योपमके आ० उत्कृष्ट पचीस (२५) पल्योपमके आ० भोगवे ॥ सातमा देवलो० जघन्य पचीस पल्योपमकी आ० उत्कृष्ट (३०) पल्योपमकी आ० भोगवे ॥ आठमा देवलोकवाला दे० जघन्य [३०] पल्योपमकी आ० उत्कृष्ट (३५) पल्योपमकी आ० भोगवे ॥ नवमे देव० दे० जघन्य (३५) पल्योपमकी० उत्कृष्ट (४०) पल्योपमकी आ० भोगवे ॥ दसमां देवलोकवाला दे० जघन्य (४०) पल्योपमकी आ० उत्कृष्ट (४५) पल्योपमकी आ० इग्यारमे दे० जघन्य (४५) पल्योपमकी आ० उत्कृष्ट (५०) पल्योपमकी आ०॥ बारमे दे० जघन्य (५०) पल्योपमकी आ० उत्कृष्ट (५५) पल्योपमकी आ० ॥ आगे देवी नास्ति ॥

॥ इति परिगृह्या अपरिगृह्या द्वार ॥ २६ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे विमानिक द्वाराख्यं पंचम प्रकरणम् ॥





॥ प्रकरण छठ्ठां गुणठाणाद्वार ॥

॥ गाथा ॥

नाम (१) लख्खण गुण (२) ठिइ (३) क्रिरिया [४] सत्ता (५) बंध [६) वेदेय [७] उदय (८) उदिरणा (९) चेव ॥ निज्जरा (१०) भाव (११) कारणा [१२] ॥ १ ॥

परिसह [१३] मग्ग (१४) आयाय (१५) जीवाय भेदे (१६) जोग (१७) उविओग(१८) ॥ लेस्सा (१९) चरण (२०) सम्मत्तं (२१) अप्पा बहुच्च (२२) गुणठाणे हिं ॥ २ ॥

(अर्थः) हिवे पहिलो नामद्वार कहे छे ॥ पहिलुं मिथ्यात्व गुणठाणुं ॥ १ ॥ बिजुं सास्वादान गुणठाणुं ॥ २ ॥ तीजो मिश्र गुणठाणुं ॥ ३ ॥ चोथुं अविरति सम्यक्त्वदृष्टि गुणठाणुं ॥ ४ ॥ पांचमुं देशविरति गुणठाणुं ॥ ५ ॥ छठुं प्रमत्तसंजति गुणठाणुं ॥६॥ सातमुं अप्रमत्तसंजति गुणठाणुं ॥ ७ ॥ आठमुं नियट्टि बादर गुणठाणुं ॥ ८ ॥ नवमुं अनियट्टि बादर गुणठाणुं ॥ ९ ॥ दशमुं सुक्ष्मं संपराय गुणठाणुं ॥ १० ॥ इग्यारमुं उपशांत मोहणी गुणठाणुं ॥ ११ ॥ बारमुं क्षिण मोहणी गुणठाणुं ॥ १२ ॥ तेरमुं सजोगि केवलि गुणठाणुं (१३) चउदमुं अजोगि केवलि गुणठाणुं ॥ १४ ॥

॥ इति नामद्वार समाप्त ॥ १ ॥

॥ हिवे लक्षण ओर गुणद्वार कहे छे ॥

पहिला मिथ्यात्व गुणठाणाना लक्षण कहे छे ॥ श्री वीतरागनि वाणिथि ओछुं । अधिक । विपरीत शर्द्दहे परूपे फरसे तेहने मिथ्यात्व कहिये । ओछि परूपना ते केहने कहिये । जिम कोइ कहे जे जीव अंगुठा मात्र छे । तंडुल मात्र छे ॥ शांमा मात्र छे ॥ दीपक मात्र छे । तेहने ओछि परूपणा कहिये ॥ १ ॥

अधिकी परूपणा ते केहने कहिये ॥ एक जीव सर्व लोक ब्रह्मांड मात्रमां व्यापि रह्यो छे ॥ तेहने अधिकी परूपणा कहिये ॥ २ ॥

विपरीत परूपणा ते केहने कहिये ॥ कोइ कहे जे पंचभूत थकि आत्मा उपनो छे ॥ अने एहने विनाशे जीव पण विणशे छे ॥ ते जड छे । ते थकि चैतन्य उपजे विणशे । इम कहे तेहने विपरीत परूपणा कहिये ॥ ३ ॥

ए मिथ्यात्व इम नव पदार्थनुं विपरीतपणुं सरदहे परूपे फरसे तेहने मिथ्यात्व कहिये ॥ अने जैन मार्गे आत्मा अकृत्रिम अखंड अविनाशी नित्य छे । शरिर मात्र व्यापक छे ॥ तिवारे गैातम स्वामी। हाथ जोडी मान मोडी वंदणा नमस्कार करीनें श्री भगवंतने पूछता हुवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्युंगुण निपनो ॥ तिवारे श्री भगवंते कह्युं, के । जीवरूप दडिनें । कर्मरूप गेडिये करि ४ गति २४ दंडक ८४ लाख जीवाजोनिमांही वारंवार परिभ्रमण करे पण संसारनो पार पामे नही ॥ १ ॥

हिवे दूजा गुणठाणाना लक्षण कहिये छे ॥ जिम कोइ पुरुष खिरखांडनुं भोजन जिम्यो ॥ तिवार पछि वमन कर्युं ॥ तिवारे को-

इक पुरुषे पुछ्युं भाइ कांइ स्वाद रह्यो । तिवारे कहे जे थोडो स्वाद रह्यो । ते समान समकित अने वम्यो ते समान मिथ्यात्व ॥ १ ॥ दूजो दृष्टांत कहे छे । जेहवो घटानो नाद पहिलो गहेर गंभीर । पछि रणको रहि गयो ॥ गहेर गंभीर समान समकित ने रणको रही गयो ते समान; मिथ्यात्व ॥ २ ॥ हवे तिजो दृष्टांत आंबानो । जीवरूप आंबो नें प्रमाणरूप डाल । समकितरूप फल । ते मोहरूप वायरे करि ॥ प्रणामरूप डालथी । समकित रूप फल त्रुट्युं । मिथ्यात्वरूप धरतीये आवि पड्युं नथि विचमां छे ॥ तिहां सुधि सास्वादन कहिये ॥ अने जीवारे धरतीये आवि पड्युं । तिवारे मिथ्यात्व ॥ ३ ॥ तिवारे गौतम स्वामि हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतने पूछया हवा ॥ स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो ॥ तिवारे श्री भगवंत कहे छे । कृष्ण पक्षी हतो ते शुकल पक्षी थयो ॥ अर्ध पुद्गल संसार भोगववो रह्यो । जिम कोई पुरुषने माथे लाख क्रोडनूं देणु हतुं ते परदेश जइने कमाई आव्यो देणु देतां एक अधेलिनुं देणु रह्यु रे हतुं व्याज थयुं । अर्द्ध पुद्गल संसार भोगववो रह्यो । सास्वादन समकित पांचवार आवे ॥ २ ॥

हिवे तिजा गुणठाणानां लक्षण कहिये छे ॥ तिजुं मिश्र गुण ठाणुं । ते दोय वस्तु मिलीनें मिश्र श्रीखंडनो दृष्टांत ॥ श्रीखंड जिम खाटो ने मिठो । मिठास समान समकित ने खटास समान मिथ्यात्व ॥ ते जिन मार्ग पण रुडो जाणे ॥ तथा अन्य मार्ग पण रुडो जाणे, जिम कोइक नगर बाहिर साधु महा पुरुष पधार्या छे ॥ तेहने श्रावक वांदना जाय छे ॥ तेहनामां मिश्रदृष्टिवालो मित्र मिल्यो ॥ तिणे पुछ्युं जे किहां जावोछो ॥ तिवारे श्रावक कहे, जे साधु महा पुरुषनें वांदवा जइये छे । तिवारे मिश्र दृष्टिवालो कहे ॥ एहने वांदे स्युं थाय ॥ तिवारे श्रावक कहे जे महा लाभ थाय ॥ तिवारे

कहे जे हुं पण आवुं । इम कहिने मिश्र गुणठाणावाले । वांदवाने पग उपाडयो ॥ तेहवामां दूजो महा मिथ्यात्वी मित्र मिल्यो ॥ तेणे पुछ्युं के स्यांभणि जावोछो । तिवारे मिश्र गुणठाणावालो कहे, जे । साधु महा पुरुष ने वांदवा जइये छे ॥ तिवारे महा मिथ्याति कहे जे । एहने वांदे स्युं थाय । ए तो मेला घेला छे ॥ इम कहिने भोलवि नांख्यो पाछो बेठो । तिवारे साधु ज्ञानिने श्रावके वांदिनें पुछ्युं जे स्वामि वांदवा पग उपाडयो, तेहने स्युं गुण निपनो । तिवारे ज्ञान गुरु कहे छे । जे काला ऊडद सरिखो हतो ते छडि-दाल सरिखो थयो ॥ कृष्ण पक्षी टलिने शुक्ल पक्षी थयो ॥ अनादि कालनो उलटो हतो ते सुल्टो थयो ॥ समकित सन्मुख थयो पण पग भरवा समरथ नहि ॥ तिवारे गौतम स्वामि हाथ जोडी मान मोडी वंदणा नमस्कार करीनें पूछता हुवा । स्वामीनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो ॥ तिवारे श्री भगवंत कहे छे ॥ ते जीव चार गति (२४) दंडकमां भमीनें पिण देश उणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तनमां उत्कृष्टो संसारनो पार पामशे ॥ ३ ॥ चोथो अविरिति सम्यक्त्वदृष्टि गुणठाणुं तेहना स्युं लक्षण ॥ सात प्रकृतीनें क्षयोप समावे । अनं-तानुबंधी क्रोध (१) मान (२) माया (३) लोभ (४) सम्यक्त्व मोहनीय (५) मिथ्यात्व मोहनीय (६) मिश्र मोहनीय (७) ए सात प्रकृतीनें कांइक उदय आवे ॥ तेहने क्षय करे ॥ अने सत्तामा दल छे तेहनें उपसमावे तेहनें क्षयोपसम सम्यक्त्व कहिये ॥ ते सम्यक्त्व असंख्याती वार आवे ॥ अने सात प्रकृतीना दलने सर्वथा उपसमावे ढांके तेहने उपसम सम्यक्त्व कहिये ॥ ते समकित पांचवार आवे । अने सात प्रकृतीना दलने सर्वथा क्षय करे । तिवारे क्षायक समकित्व कहिये ॥ ते समकित्व एकवार आवे ॥ चोथे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ ॥ द्रव्य थकी (१) क्षेत्र थकी (२) काल थकी (३) भाव थकि (४) नवकार

सियादि ॥ छे मासी तप जाणे सरदेह परूपे पण फरशी सके नही॥ तिंवारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतनें पूछता हुवा ॥ स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो ॥ तिंवारे श्री भगवंत कहे छे । हे गौतम ते जीव समकित व्यवहारपणें शुद्ध प्रवर्ततो थको जघन्य तीजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो पंधरे भवे मोक्ष जाय॥ वेदक समकित एकवार आवे एक समयनी स्थिति छे। पूर्वे जो आ-युष्यनो वंध न पडयो होय तो ॥

॥ हिवे ये सात बोलामां बंध पाडे नही ते कहे छे ॥

नरकनो आयुष्य (१) भवनपतीनो आयुष्य (२) वाणव्यंतरनो आयुष्य (३) ज्योतिषीनो आयुष्य (४) तिर्यंचनो आयुष्य (५) स्त्री वेदनो आयुष्य (६) नपुंसक वेदनो आयुष्य (७) ए सात बोलामां आयुष्यनो वंध पाडे नही ते जीव समकितना आठ आचार अराधी चतुर्विध संघनी परम हर्षसें भक्ती करतो थको जघन्य पहिले देव-लोके उपजे ॥ उत्कृष्ट बारमे देवलोके उपजे । पन्नवणानी साखे ॥ पूर्व करमने उदे करी व्रत पच्चखाण करी न सके ।, पण अनेक व-र्षनी श्रमणोपासकनी प्रवर्ज्या पालक कहिये॥ दशाश्रुतस्कंधे श्रावक कह्या छे ते माटे ॥ दरशन श्रावकने अवीरीय समदीठी कहिये ॥४॥

हिवे पांचमुं देशविरति गुणठाणुं तेहना स्युं लक्षण ॥ इग्यारे प्रकृतीनें क्षयोप समावे ॥ सात तो पूर्व कही ते ॥ अने प्रत्याख्यानी क्रोध (८) मान (९) माया (१०) लोभ (११) एवं इग्यारे प्रकृतीनें क्षय करे तेहने क्षायक समकित कहिये ॥ अने इग्यारे प्रकृतीनें कां-ईक ढांके कांईक क्षय करे तेहनें क्षयोपसम समकित कहिये ॥ पां-चमे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ द्रव्यथी क्षेत्रथि कालथि भावथि नोकारसी आदि देइने छे मासी तप जाणे सरदहे परूपे

शक्ति प्रमाणें फरसे ॥ एक पच्चखाणथि मांडिने १२ व्रत ॥ ११ श्रावकनी पडिमां आदरे जावत् संलेखणा सुधि अनशन करि आराधे। तिवारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतने पूछता हुवा। ते जीवने स्युं गुण निपनो। तिवारे श्री भगवंते कह्युं ॥ जघन्य तिजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टा १५ भवे मोक्ष जाय ॥ जघन्य पहिले देवलोके उपजे ॥ उत्कृष्टा १२ मे देवलोके उपजे। तेने साधुना व्रतनि अपेक्षाये देशविरति कहिये ॥ पण परिणामथि अव्रतनी क्रिया उतरी गई छे ॥ अल्प इच्छा ॥ अल्प आरंभ ॥ अल्प परिग्रही ॥ सुशील। सुव्रति ॥ धार्मिष्ट। धर्मव्रति। कल्प उग्रविहारी। महा संवेग विहारी ॥ उदासो ॥ वैराग्यवंत ॥ एकातआर्य ॥ सम्यग्मार्गी ॥ सुसाधु। सुपात्र ॥ उत्तम। क्रियावादि। आस्तिक्य। आराधक। जैनमार्ग प्रभावक ॥ अरिहंतना शिष्य वर्णव्या छे। गीतार्थ जाणे छे ॥ सिद्धांतनि शाख छे। श्रावकपणुं। एक भवमां प्रत्येक हजारवार आवे ॥ ५ ॥

हिवे छठुं प्रमत्त संजति गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण ॥ १५ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ११ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने पच्चखाणावरणीय क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ एवं १५ प्रकृतिने क्षय करे तो १ क्षायिक समकित कहिये ॥ अने १५ प्रकृतिने ढांके तो उपशम समकित कहिये ॥ अने कांइ ढांके ने कांइ, क्षय करे तो क्षयोपशम समकित कहिये ॥ तिवारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतने पूछता हुवा। ते जीवने स्युं गुण निपनो। तिवारे श्री भगवंते कह्युं जे ॥ ते जीव द्रव्यथि क्षेत्रथि काळथि भावथि जीवादिक नव पदार्थने तथा नोकारसी आदि छे मासि तप जाणे–सरदहे–परूपे–फरसे ॥ साधुपणुं एक भवमां नवसें वार आवे। ते जीव जघन्य तिजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टा १५ भवे

मोक्ष जाय ॥ आराधक जीव । जघन्य पहिले देवलोके उपजे । उत्कृष्टा अनुत्तर विमाने उपजे ॥ १७ भेदे संजम निर्मल पाले ॥ १२ भेदे तपस्या करे पण जोग चपल।कषाय चपल। वचन चपल। दृष्टि चपलताना अंश छे। तेणे करिने यद्यपि उत्तम अप्रमादि थका रहे छे। तोपण प्रमाद रहे छे माटे प्रमादपणे करि ॥ तथा कृष्णादिक लेश्या॥ अशुभ जोग ॥ कोइक काले प्रणति प्रणमे छे माटे ॥ कषाय प्रकृष्ट मत्त थइ जाय छे ॥ तेहने प्रमत्त संजति गुणठाणुं कहिये ॥ ६ ॥

सातमुं अप्रमत्त संजति गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण ॥ पांच प्रमाद छांडे । तिवारे सातमे गुणठाणे आवे । ते ॥ ५ ॥ प्रमादना नाम ॥ गाथा ॥ मद[1] विसय[2] कसाया[3] । निंद्रा[4] विगहा[5] पंचमा भणिया । एए पंच पमाया । जीवा पडंति संसारे ॥ १ ॥

ए ५ प्रमाद छांडे अने १६ प्रकृतिनें उपशमावे॥१५ ॥ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने संजलनो क्रोध। एवं १६ प्रकृतिनें क्षयोपशमावे॥ तेहने स्युं गुण निपनो ॥ ते जीव जीवादि पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि तथा नोकारसि आदि देइने छे मासी तप ध्यान जुगतपणे जाणे—सरदहे—परूपे—फरसे ॥ ते जीव जघन्य । तेज भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो तिजे भवे मोक्ष जाय ॥ गति तो प्राये कल्पातीतनी थाय ॥ ध्यानने विषे ॥ अनुष्ठानने विषे। अप्रमत्त उद्यत थका रहे छे। तथा शुभ लेश्यापणेज करिने नथि प्रमत्त कषाय जेहने तेहने अप्रमत्त संजति गुणठाणुं कहिये ॥ ७ ॥

आठमुं नियट्टि बादर गुणठाणुं तेहनुं स्युंलक्षण ॥ १७ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ १६ ॥ पूर्वे कहि ते अने संजलनो मान। ए ॥१७॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे । तिवारे गौतमस्वामी । हाथ जोडी मानमोडी॥ श्री भगवंतने पूछता हुवा । स्वामीनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो ।

तिवारे श्री भगवंते कहुं ॥ परिणामप्रकारा । अपूर्व करण ॥ जे कोई काळे जीवने कोइ दिने आव्युं नथि । ते श्रेणी जुगत जीवादिक पदार्थ । द्रव्यथि । क्षेत्रथि । कालथि । भावथि । नोकारसी आदि देइ छे मासी तप जाणे–सरदहे–परुपे–फरसे । ते जीव । जघन्य । तेज भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टा तिजे भवे मोक्ष जाय । इहांथि श्रेणि २ करे । उपशम श्रेणि ॥ १ ॥ ने क्षपक श्रेणि ॥ २ ॥ उपशमश्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने उपशमावे तो इग्यारमा गुणठाणा सुधि जाय ॥ पडिवाइ पण थाय । हायमान परिणाम पण परिणमे ॥ अने क्षपक श्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने खपावतो शुद्ध मूलमांथि निर्जरा करतो । नवमे दशमे गुणठाणे थइने बारमे गुणठाणे जाय । अपडिवाइज होय । वर्द्धमान परिणाम परिणमे । हिवे नियट्टि वादरनो अर्थ ते निवर्त्यो छे वादर कषायथि । वादर संपराय क्रियाथि । श्रेणिकरसे । अभ्यंतर परिणामे । अध्यवसाय स्थिरथते वादर चपलताथि निर्वृत्यो छे । माटे नियट्टि वादर गुणठाणुं कहिये । तथा दूजुं नांम । अपूर्व करण गुण ठाणुं पण कहिये ॥ स्या .माटे जे ॥ कोइ काले जीवे पूर्वे श्रेणि करि नहंति । अने ए गुणठाणे पहिलुंज करण ते ॥ पंडित वीर्यनुं आवरण क्षयकरण रुप करण परिणाम धार । वर्द्धनरुप श्रेणि करे ॥ तेहने अपूर्व करण गुणठाणुं कहिये ॥ ८ ॥,

हिवे नवमुं अनियट्टि वादर गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण ॥ एकविश प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ॥ १७ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने संजलनि माया ॥ १ ॥ स्त्री वेद ॥ २ ॥ पुरुष वेद ॥ ३ ॥ नपुंसक वेद ॥ ४ ॥ एवं ॥ २१ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ तिवारे गैातम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतने पुछ-

ता हुवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो ।। तिवारे भग- वंते कह्यु । ते जीव जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदि देइने छमासी तप ।। द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि निर्विकार अमायी ।। विषय निरवंछापणे । जाणे सरदहे परूपे फरसे ते जीव ।। जघन्य तेज भवे मोक्ष जाय । उत्कृष्टा तीजे भवे मोक्ष जाय ।। हवे अनियट्टि बादर ते । सर्वथा प्रकारे निवर्त्यो नथि अंश मात्र हजि बादर संप- राय क्रिया रहि छे माटे अनियट्टि बादर गुणठाणुं कहिये ।। तथा आठमा नवमा गुणठाणाना शब्दार्थ घणा गंभीर छे ।। ते अन्य पंच संग्रहादिक ग्रंथ तथा सिद्धांतथि समजवा ।। ९।। दशमुं सूक्ष्म संपराय गुणठाणु तेहनुं स्युं लक्षण ।। २७ ।। प्रकृतिनें क्षयोप समावे ।।२१।। प्रकृति पूर्वे कहि ते । अनें । हास्य ।। १ ।। रति ।। २ ।। अरति ।। ३ ।। भय ।। ४ ।। शोक ।। ५।। दुगंछा ।। ६ ।। एवं ।। २७ ।। प्रकृतिने क्षयोप शमावे ।। तिवारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मानमोडी ।। श्री भगवंतने पूछता हुवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो । तिवारे भगवंते कह्युं । ते जीव ।। द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदी देईने छेमासी तप निरभि- लाप निर्वंछक निर्वेदकतापणे निरागी अव्यामोह अविभ्रमपणे जाणे सरदहे परूपे फरसे ते जीव । जघन्य तेज भवे मोक्ष जाय.। उत्कृष्टा तीजे भवे मोक्ष जाय ।। सूक्ष्म थोडिक लगारेक पातलीसी संपराय क्रिया रहि छे तेहने सूक्ष्म संपराय गुणठाणुं कहिये ।। १० ।।

इग्यारमुं उपशांत मोह गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण ।। २८ ।। प्रकृतीने उपशमावे ते २७ प्रकृति पूर्वे कही ते । अने संज- लनो लोभ ।। १ ।। एवं ।। २८ ।। मोहनीय कर्मनि प्रकृतिने उपशमावे—सर्वथा ढांके । भस्म भारि प्रच्छन्न अग्निवत् । तिवारे गौतमस्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतने पूछता हुवा ।

स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो। तिवारे श्री भगवंते कह्यु। ते जीव जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि नोकारसी आदि देइने छ मासी तप वीतराग भावे जथाख्यात चारित्रपणे॥ जाणे–सरदहे–परुपे–फरसे। एहवामां जो काल करे तो। अनुत्तर वीमानमां जाय पछि मनुष्य थइ मोक्ष जाय। अने जो सूक्ष्म लोभनो उदय थाय तो कषाय अग्नि प्रकटे पछि पडे दशमांथि पडे तो पहिला गुणठाणा सुधि जाय। पण इग्यारमेंथी चढवूं तो नथि। उपशांत ते उपशम्यो छे मोह सर्वथा जले करि अग्नि ओलव्यानिपरे टाल्यो नही ढांक्यो छे माटे उपशांत मोह गुणठाणुं कहिये ॥ ११ ॥ बारमुं क्षीणमोह गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण जे ॥ २८ ॥ प्रकृतिने सर्वथा खपावे। क्षपक श्रेणि। क्षायकभाव। क्षायक समकित ॥ क्षायक जथाख्यात चारित्र ॥ करणसत्य। जोग सत्य। भावसत्य अमायी अकषायी वीतरागी। भाव निर्ग्रंथ। संपूर्ण संबुड ॥ संपूर्ण भावितात्मा ॥ महा तपस्वी। महा सुशिल। अमोही। अविकारी। महाज्ञानी ॥ महाध्यानी ॥ वर्द्धमान परिणामी। अपडिवाइ थइ अंतर्मुहुर्त्त रहे। ए गुणठाणे काल करवो नथि। पुनर्भव छे नहि। छेहले समये पांच ज्ञानावरणिय ॥ नव दर्शनावरणिय ॥ पंच विध अंतराय क्षयकरणोद्यमकरि ॥ तेरमा गुणठाणाने पहिले समये क्षय करि। केवल ज्योति प्रकटे माटे क्षीण ते क्षय कर्यो छे मोह सर्वथा जे गुणठाणे तेहने क्षीण मोह गुणठाणुं कहिये ॥ १२ ॥

तेरमुं सजोगि केवलि गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण। दश बोल सहित तेरमे गुणठाणे विचरे ॥ सजोगी ॥१॥ सशरिरी ॥२॥ सलेशी ॥ ३ ॥ शुक्ल लेशी ॥ ४ ॥ जथाख्यात चारित्र ॥ ५ ॥ क्षायक समकित ॥ ६ ॥ पंडित वीर्य ॥ ७ ॥ शुकलध्यान ॥ ८ ॥ केवल ज्ञान ॥ ९ ॥ केवलदर्शन ॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोल सहित ॥

जघन्य । अंतर्मुहुर्त्त । उत्कृष्टा देशे उणी पूर्व कोडि सुधि ॥ विच घणा जीवने तारि प्रतिबोधि निहाल करीने ॥ दूजा तिजा शुकल ध्यानना पायाने ध्याइने चउदमे गुणठाणे जाय ॥ सजोगी ते शुभ मन वचन कायाना जोग सहित छे बाहाज्यचलोप करण छे । गम-नागमनादिक चेष्टा शुभसहित छे । केवल ज्ञान केवल दर्शन । उप-योग समयांतर । अविछिन्नपणे शुद्ध प्रणमे माटे सजोगि केवलि गुणठाणुं कहिये ॥ १३ ॥

हिवे चउदमुं अजोगि केवलि गुणठाणुं तेहनुं स्यु लक्षण ॥ शुक्ल ध्याननो चोथो पायो समुछिन्न क्रिय अनंतर अप्रतिपाती । अनिवृति ध्याता मन जोग रुंधि वचन जोग रुंधि कायजोग रुंधि आन प्राण-निरोध करि रूपातीत परम शुकलध्यान ध्याता ॥ ७ ॥ बोल सहित विचरे । तेरमे ॥ १० बोल कह्या तेहमांथि । सजोगी ॥ १ ॥ सलेशी ॥ २ ॥ शुकललेशी ॥ ३ ॥ ए ३ वर्जीने शेष ॥ ७ बोल सहित सकल गिरीनो राजा मेरु तेहनिपरे । अडोल । अचल । स्थिर अवस्थाने पामे शैलेशी पणे रहि पंच लघु अक्षर उच्चार प्रमाण काल रहि ॥ शेष वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ कर्म क्षीण करिने मुक्तिपद पामे ॥ शरिर उदारिक । तेजस कार्मण । सर्वथा छांडिने समश्रेणि ऋजुगति अन्य आकाश प्रदेशानावगाह तो अणफर सतो । एक समय मात्रमां । उर्द्ध गति । अ-विग्रह गतिये तिहां जाय । एरंडबीज बंधन मुक्तवत् । निर्लेप तुंबिवत् । कोदंड मुक्त बाणवत् ॥ इंधनवन्हि मुक्त धूम्रवत् । तिहां सिद्धक्षेत्रे जे साकारोपयोगे सिद्ध थाय । बुद्ध थाय ॥ पारांगत थाय । परंपरगत थाय । सकल कार्य अर्थ साधि ॥ कृतकृतार्थ । निष्ठितार्थ । अतुल सुखसागर निर्मग्न ॥ सादि अनंत भागे सिद्ध

थाय ॥ ए सिद्ध पदनो भाव स्मरण ॥ चितन मनन कदा काले मुझने होशे । सो घटि पल धन्य सफल होशे ॥ हवे अजोगी ते । जोग रहित केवल सहित विचरे ॥ तेहने अजोगी केवली गुणठाणुं कहिये ॥ १४ ॥

॥ इति लक्षण गुणद्वार ॥ २ ॥

हिवे स्थिति द्वार कहे छे ॥ पहिला गुणठाणानि स्थिति ३ प्रकारनि छे ॥ अणादिया अपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि ने अंत पण नथि ते अभव्य जीवना मिथ्यात्व आश्रि ॥ १ ॥ अणादिया सपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि पण अंत छे ते भव्य जीवना मिथ्यात्व आश्रि ॥ २ ॥ सादिया सपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि पण छे ने अंत पण छे ते पडिवाइ समदिठिना मिथ्यात्व आश्रि ॥ तेहनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्त ॥ उत्कृष्टा अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणी पछि अवश्य समकित पामिने मोक्ष जाय॥ ॥ ३ ॥ १ ॥ दूजा गुणठाणानि स्थिति । जघन्य ॥ १ समय । उत्कृष्टा ६ आवलिकाने ७ समयनि ॥ २ ॥ तिजा गुणठाणानि स्थिति ॥ जघन्य उत्कृष्टा अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ ३ ॥ चोथा गुणठाणानि स्थिति जघन्य । अंतर्मुहूर्त्त । उत्कृष्टा ॥ ६६ सागरोपम झाझेरानि ते २२ सागरोपमनि स्थितिये ३ वार बारमे देवलोके उपजे । त्रिण पूर्व कोडि अधिक मनुष्यना भव आश्रि जाणवि ॥ तथा बेवार अनुत्तर विमानमां ३३ सागरोपमनि स्थितिये उपजे ॥ ३३ दु छासट सागरोपमने पूर्वकोडि ३ अधिक मनुष्यना भव आश्रि जाणवि ॥ ४ ॥ पांचमा छठा तेरमा गुणठाणानि स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त्तनी उत्कृष्टी देशे उणि ते साढा आठ वर्षे उणि पूर्व कोडनि ॥ सातमांथि ते इग्यारमा गुणठाणा सुधि जघन्य ॥ १ समयनी ॥ उत्कृष्ट अंत । बारमां गुणठाणानि । स्थिति जघन्य । उत्कृष्टा । अंतर्मुहुर्त्तनि ॥ चउदमा गुणठाणानि स्थिति पांच

ह्रस्व अक्षर । अ । इ । उ । ऋ । लृ । बोलवा प्रमाणे जाणवि ।

॥ इति तिजो स्थितिद्वार समाप्त ॥ ३ ॥

हिवे चौथो क्रियाद्वार कहे छे । पहिलेने तिजे गुणठाणे ॥ ॥ २४ ॥ क्रिया लाभे । इरियावहिया क्रिया वर्जिने ॥ दूजे । चोथे गुणठाणे ॥ २३ ॥ क्रिया लाभे इरियावहिया ॥ १ ॥ ने मिथ्यात्वनि ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ पांचमे गुणठाणे ॥ २२ क्रिया लाभे मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ इरियावहिया ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ वर्जिने ॥ छठे गुणठाणे ॥ २ ॥ क्रिया । आरंभिया ॥ १ ॥ माया-वत्तिया ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ लाभे । सातमे गुणठाणेथि ते दशमा गुणठाणा सुधि ॥ १ ॥ मायावत्तिया क्रिया लाभे ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे ॥ १ ॥ इरियावहिया क्रिया लाभे । चउदमे गुणठाणे कोइ क्रिया लाभे नही ॥

॥ इति क्रिया द्वार ॥ ४ ॥

हिवे पांचमो सत्ताद्वार कहे छे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते इग्या-रमा गुणठाणा सुधि । आठ कर्मनि सत्ता । बारमे ॥ ७ ॥ कर्मनि सत्ता १ मोहनिय कर्म वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे गुणठाणे ॥ ४ ॥ कर्मनि सत्ता । वेदनीय ॥१॥ आयुष ॥२॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥

॥ इति सत्ताद्वार ॥ ५ ॥

हिवे छठो बंधद्वार कहे छे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते सातमा गुणठाणा सुधि तिजुं गुणठाणुं वर्जिने ॥ ८ कर्म बांधे । अने जो ॥ ७ बांधे तो आयुष वर्जिने । तिजे आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ७ ॥ सात कर्म बांधे आयुष वर्जिने ॥ दशमे गुणठाणे ॥ ६ कर्म बांधे । आयुष ॥ १ ॥ ने मोहनीय ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे

तेरमे गुणठाणे ॥ १ ॥ साता वेदनीय बांधे ॥ चउदमे गुणठाणे । अबंध ॥

॥ इति बंधद्वार ॥ ६ ॥

हिवे ॥ ७ मो वेद ने ॥ ८ मो उदयद्वार भेलो कहे छे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते दशमा गुणठाणा सुधि ॥ ८ कर्म वेदे ने ॥ ८ नो उदय इग्यारमे बारमे ॥ ७ कर्म वेदे ने ॥ ७ नो उदय मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे ॥ ४ कर्म वेदे ने ॥ ४ नो उदय ॥ वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥

इति ॥ ७ मो वेद ने ८ मो उदय द्वार समाप्त ॥ ७ ॥ ८ ॥

हवे नवमो उदीरणाद्वार कहे छेः—पहिला गुणठाणाथि मांडिने ॥ ७ मा गुणठाणा सुधि ॥ ८ कर्मनि उदीरणा । तथा ७ नी करे तो आयुष वर्जिने ॥ आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ७ कर्मनि उदीरणा ते आयुष वर्जिने । तथा ६ नि करे तो । आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने । दशमे ॥ ६ नि उदीरणा करे ॥ आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने । अने ५ नि करे तो ॥ आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ वेदनीय ॥ ३ ॥ ए ३ वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे ५ नि उदीरणा । आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ वेदनीय ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ वर्जिने । तथा २ नि करे तो । नाम ॥ १ ॥ गोत्र ॥ २ ॥ ए २ नि ॥ तेरमे गुणठाणे ॥ २ कर्मनि उदीरणा ॥ नाम ॥ १ ॥ गोत्र ॥ २ ॥ ए २ नि ॥ चउदमे गुणठाणे उदीरणा करे नही ॥

॥ इति उदीरणा द्वार ॥ ९ ॥

हिवे दसमो निर्जराद्वार कहे छे ॥ पहिलाथि ते ११ मा गुणठाणा सुधि ॥ ८ ॥ कर्मनि निर्जरा ॥ बारमे ॥ ७ कर्मनि निर्जरा मोहनीय वर्जिनें ॥ तेरये चउदमें ४ कर्मनि निर्जरा । वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ४ नि ॥

॥ इति निर्जराद्वार ॥ १० ॥

हिवे इग्यारमो भावद्वार कहे छे ॥ उदयभाव ॥ १ ॥ उपशम भाव ॥ २ ॥ क्षायक भाव ॥ ३ ॥ क्षयोपशम भाव ॥ ४ ॥ परिणामिक भाव ॥ ५ ॥ संनिवाइ भाव ॥ ६ ॥ पहिले ने तिजे गुणठाणे ॥ ३ भाव । उदय ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ पारिणामिक ॥३॥ दुजे गुणठाणे चोथे गुणठाणे पांचमे गुणठाणे छठे गुणठाणे सातमे गुणठाणे आठमेथि ते इग्यारमा गुणठाणा सुधि उपशम श्रेणीवालाने ॥ ४ भाव उदय ॥ १ ॥ उपशम ॥ २ ॥ क्षयोपशम ॥ ३ ॥ पारणामिक ॥ ४ ॥ तथा कोइक उपशमने ठेकाणे क्षायक पण कहे छे ॥ अने ८ मांथि मांडिने बारमा सुधि क्षपक श्रेणिवालाने ॥ ४ भाव उदय ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ क्षायक ॥ ३ ॥ पारिणामिक ॥४॥ तेरमे चउदमे गुणठाणे ॥ ३ भाव उदय ॥ १ ॥ क्षायक ॥ २ ॥ पारिणामिक ॥ ३ ॥ सिद्धमां ॥ २ भाव । क्षायक ॥ १ ॥ पारिणामिक ॥ २ ॥

॥ इति भावद्वार ॥ ११ ॥

हिवे बारमो कारण द्वार कहे छे ॥ कारण ॥ ५ कर्म बंधना ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरत्ति ॥ २ ॥ प्रमाद ॥ ३ ॥ कषाय ॥ ॥४॥ जोग ॥ ५ ॥ पहिले । तिजे गुणठाणे ॥ ५ कारण लाभे ॥ दूजे चोथे ॥ ४ कारण लाभे ॥ मिथ्यात्व वर्जिने । पांचमे छठे गुणठाणे ॥ ३ कारण लाभे ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ ए ॥ २ वर्जिने ॥ सातमेथि ते दशमा गुणठाणा सुधि ॥ २ कारण

लाभे ॥ कषाय ॥ १ ॥ जोग ॥ २ ॥ ए २ लाभे ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे १ कारण लाभे ते ॥ जोग १ ॥ चउदमे कोइ कारण नथि ॥

॥ इति कारणद्वार ॥ १२ ॥

हिवे तेरमो परिसहद्वार कहे छे ॥ पहिलाथि ते चोथा गुणठाणा सुधि यद्यपि परिसह २२ लाभे पण दुःख रूप छे । निर्जरा रूप प्रणमे नही ॥ पांचमाथि ते नवमा गुणठाणा सुधि २२ परिसह लाभे ॥ एक समये २० वेदे । टाढनो तिहां तापनो नहि तापनो तिहां टाढनो नही ॥ चालवानो तिहां बेसवानो नही ॥ बेसवानो तिहां चालवानो नहि ॥ दशमे इग्यारमे बारमे ॥ १४ परिसह लाभे ॥ आठ जे मोहनीय कर्मने उदये हता ते वर्ज्या ॥ ते कहे छे ॥ अचेलनो ॥ १ ॥ अरतिनो ॥ २ ॥ स्त्रीनो ॥ ३ ॥ बेसवानो ॥ ४ ॥ आक्रोशनो ॥ ५ ॥ मेलनो ॥ ६ ॥ सत्कार पुरस्कारनो ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ चारित्र मोहनीय कर्मने उदय हता ते ॥ ने ८ मो दंशण परिसह दर्शन मोहनीयने उदय हतो ते ॥ ए ८ वर्जिने शेष ॥ १४ रह्या ॥ ते मांहिला एक समये ॥ १२ वेदे ॥ टाढनो तिहां तापनो नहि । तापनो तिहां टाढनो नहि ॥ चालवानो तिहां थानकनो नहि । थानकनो तिहां चालवानो नहि ॥ तेरमे चउदमे गुणठाणे ॥ ११ ॥ परिसह लाभे ॥ पूर्वे ॥ १४ कह्या तेहमांथि ॥ प्रज्ञानो ॥ १ ॥ अज्ञाननो ॥ २ ॥ ए २ ज्ञानावरणिय कर्मने उदय हता ते ॥ अने ॥ १ अलाभनो अंतराय कर्मने उदय हतो ते । ए ३ वर्जिने शेष ११ रह्या ॥ ते मांहिला ॥ १ समये ९ वेदे ॥ टाढनो तिहां तापनो नहि । तापनो तिहां टाढनो नहि । चालवानो तिहां थानकनो नहि । थानकनो तिहां चालवानो नहि ॥

॥ इति परिसहद्वार ॥ १३ ॥

हिवे ॥ १४ मो मार्गणाद्वार कहे छे ॥ पहिले गुणठाणे मार्गणा ॥ ४ ॥ तीजे चोथे पांचमे सातमे जाय ॥ दुजे गुणठाणे मार्गणा ॥ १ ॥ पडे तो पहिले आवे पण चढवूं नथि ॥ तिजे मार्गणा ॥ ४ पडे तो पहिले आवे। अने चढे तो चोथे पांचमे अने सातमे जाय॥ चोथे मार्गणा ॥ ५ पडे तो पहिले दूजे तिजे आवे। अने चढे तो पांचमे सातमे जाय ॥ पांचमे मार्गणा ॥ ५ पडे तो पहिले दूजे तिजे चोथे आवे। अने चढे तो सातमे जाय ॥ छठे मार्गणा ॥ ६ पडे तो पहिले दूजे तीजे चोथे पांचमे आवे। अने चढे तो सातमे जाय ॥ सातमे मार्गणा ॥ ३ पडे तो छठे चोथे आवे। अने चढे तो ८ मे जाय ॥ आठमे मार्गणा ॥ ३ पडे सातमे चोथे आवे। चढे तो नवमे जाय ॥ नवमे मार्गणा ॥ ३ पडे तो आठमे चोथे आवे। अने चढे तो दशमे जाय ॥ दशमे मार्गणा ॥ ४ पडे तो नवमे चोथे आवे। चढे तो इग्यारमे बारमे जाय ॥ इग्यारमे मार्गणा ॥ २ काल करे तो अनुत्तर विमाने जाय। पडे तो दशमाथि पहिला सुधी आवे। चढवुं नथि ॥ बारमे मार्गणा ॥ १ तेरमे जाय ॥ पडवुं नथि ॥ तेरमे मार्गणा ॥ १ चउदमे जाय। पडवुं नथि । चउदमे मार्गणा एके नथि मोक्ष जाय ॥

॥ इति मार्गणाद्वार ॥ १४ ॥

हिवे पनरमो आत्माद्वार कहे छे ॥ आत्मा ८ ॥ द्रव्य आत्मा ॥ १ ॥ कषाय आत्मा ॥ २ ॥ योग आत्मा ॥ ३ ॥ उपयोग आत्मा ॥ ४ ॥ ज्ञान आत्मा ॥ ५ ॥ दर्शन आत्मा ॥ ६ ॥ चारित्र आत्मा ॥ ७ ॥ वीर्य आत्मा ॥ ८ ॥ पहिले तिजे गुणठाणे ६ आत्मा। ज्ञान ने चारित्र ए २ वर्जिने ॥ दूजे चोथे गुणठाणे ॥ ७ आत्मा चारित्र वर्जिने ॥ पांचमे गुणठाणे पण ॥ ७ आत्मा देशथि चारित्र छे ॥

छठेथि दशमा गुणठाणा सुधि ॥ ८ आत्मा । इग्यारमे वारमे तेरमे ॥ ७ आत्मा कषाय वर्जिने ॥ चउदमे ६ आत्मा कषाय ने जोग वर्जिने । सिद्धमां ॥ ४ आत्मा ॥ ज्ञान आत्मा ॥ १ ॥ दर्शन आत्मा ॥ २ ॥ द्रव्य आत्मा ॥ ३ ॥ उपयोग आत्मा ॥ ४ ॥

॥ इति आत्माद्वार ॥ १८ ॥

हिवे १६ मो जीव भेदद्वार कहे छे । पहिले गुणठाणे ॥ १४ भेद लाभे ॥ दूजे गुणठाणे ६ भेद लाभे ॥ बेइंद्रिय ॥ १ ॥ तेइंद्रिय ॥ २ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ३ ॥ असंज्ञि तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ ना अपर्जाप्ताने संज्ञी पंचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने पर्जाप्तो ॥ ए ६ तिजे गुणठाणे ॥ १ संज्ञी पंचेंद्रियनो पर्जाप्तो लाभे । चोथे गुणठाणे ॥ २ भेद लाभे । सज्ञी पंचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने । पर्जाप्तो ॥ ए २ ॥ पांचमांथि ते ॥ १४ ॥ मा गुणठाणा सुधि १ संज्ञि पंचेंद्रियनो पर्जाप्तो लाभे ॥

॥ इति जीवभेदद्वार ॥ १६ ॥

हिवे १७ मो जोगद्वार कहे छे ॥ पहिले दूजे ने चोथे गुणठाणे जोग ॥ १३ ॥ लाभे दोय अहारकना वर्जिने ॥ तिजे गुणठाणे १० जोग लाभे ॥ ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥ १ उदारिकनो ॥ १ वैक्रेयनो । ए ॥ १० लाभे ॥ पांचमे गुणठाणे ॥ १२ जोग ॥ आहारकना ॥ २ ने एक कार्मणनो ए ३ ॥ वर्जिने १२ ॥ लाभे ॥ छठे गुणठाणे ॥ १४ जोग लाभे ॥ १ कार्मणनो वर्जिने । सातमे गुणठाणे ॥ ११ जोग ॥ ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥ १ उदारिकनो ॥ १ वैक्रेयनो ॥ १ आहारकनो । एवं ११ ॥ आठमांथि मांडिने १२ मा गुणठाणा सुधि जोग ॥ ९ लाभे ॥ ४ मनना ॥ ४ वचनना ने ॥ १ उदारिकनो । ए ९ ॥ तेरमे गुणठाणे जोग ॥ ७

लाभे ॥ दोय मनना ॥ दोय वचनना । ए ४ ने उदारिकनो १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ कार्मणकाय जोग ३ ॥ एवं ७ ॥ चउदमे गुणठाणे जोग नथि ॥

॥ इति जोगद्वार ॥ १७ ॥

हिवे १८ मो उपयोगद्वार कहे छे ॥ पहिले ने तीजे गुणठाणे ६ ॥ उपयोग लाभे ॥ ३ अज्ञान ने ३ दर्शन । एवं ६ ॥ दूजे चोथे पांचमे गुणठाणे ६ उपयोग लाभे ॥ ३ ज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ एवं ६ ॥ छठाथि ते बारमा गुणठाणा सुधि उपयोग ७ ॥ लाभे ॥ ४ ज्ञान ने ३ दर्शन ॥ एवं ७ ॥ तेरमे चउदमे गुणठाणे तथा सिद्धमां ॥ २ उपयोग । केवल ज्ञान ॥ १ ने । केवल दर्शन २ ॥

॥ इति उपयोगद्वार ॥ १८ ॥

हिवे १९ मो लेशाद्वार कहे छे ॥ पहिलाथि ते छठा गुणठाणा सुधि ॥ ६ लेशा लाभे ॥ सातमे गुणठाणे उपलि ॥ ३ लेशा लाभे। आठमेथि मांडीने बारमा गुणठाणा सुधि ॥ १ शुकल लेशा लाभे ॥ तेरमे गुणठाणे ॥ १ परम शुकललेशा लाभे । चउदमे गुणठाणे लेशा नथि ॥

॥ इति लेशाद्वार ॥ १९ ॥

हिवे २० मो चारित्रद्वार कहे छे ॥ पहिलाथि ते चोथा गुणठाणा सुधि कोइ चारित्र नथि । पांचमे गुणठाणे देशथि सामायक चारित्र छे । छठे सातमे गुणठाणे ॥ ३ चारित्र लाभे । सामायक चारित्र ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय चारित्र ॥ २ ॥ परिहार विशुद्ध चारित्रे ॥ ३ ॥ ए ३ लाभे । आठमे नवमे गुणठाणे ॥ २ चारित्र लाभे । सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ॥ २ ॥ दशमे गुणठाणे

१ सूक्ष्म संपराय चारित्र लाभे ॥ इग्यारमेथि ते चउदमा गुणठाणा सुधि १ जथाख्यात चारित्र लाभे ॥

॥ इति चारित्रद्वार ॥ २० ॥

हिवे २१ मो समकितद्वार कहे छे ॥ पहिले ने तिजे गुणठाणे समकित नथि ॥ दूजे गुणठाणे १ सास्वादान समकित लाभे ॥ चोथेथि ते सातमा गुणठाणा सुधि ॥ ४ समकित लाभे ॥ उपशम ॥१॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ वेदक ॥ ३ ॥ क्षायकसमकित ॥ ४ ॥ आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ३ ॥ समकित लाभे ॥ उपशम ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ क्षायक ॥ ३ ॥ दशमे इग्यारमे गुणठाणे ॥ २ समकित लाभे ॥ उपशम ॥ १ ॥ क्षायक ॥ २ ॥ बारमे तेरमे चउदमे गुणठाणे तथा सिद्धमां ॥ १ क्षायक समकित लाभे ॥

॥ इति समकितद्वार ॥ २१ ॥

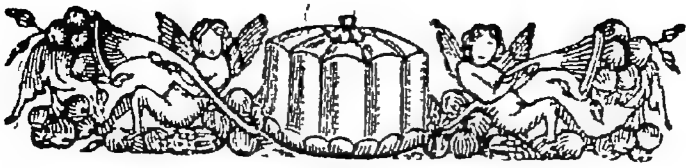
हिवे २२ मो अल्प बहुद्वार कहे छे ॥ सर्वथि थोडा इग्यारमा गुणठाणावाला एक समये उपशम श्रेणिवाला ५४ जीव लाभे माटे ॥ १ ॥ तेथि बारमा गुणठाणावाला संखेजगुणा एक समये क्षपक श्रेणिवाला एकसो ने आठ जीव लाभे माटे ॥ २ ॥ तेथि आठमा नवमा दशमा गुणठाणावाला संखेज गुणा ॥ जघन्य बसे ॥ उत्कृष्टा नवसें लाभे माटे ॥ ३ ॥ तेथि तेरमा गुणठाणावाला संखेज गुणा ॥ जघन्य दोय क्रोडी ॥ उत्कृष्टा नव क्रोडि लाभे माटे ॥ ४ ॥ तेथि सातमा गुणठाणावाला संखेज गुणा । जघन्य । बसे क्रोडि । उत्कृष्टा । नवसे क्रोडि लाभे माटे ॥ ५ ॥ तेथि छठा गुणठाणावाला संखेज गुणा । जघन्य दोय हजार क्रोडि । उत्कृष्टा नव हजार क्रोडि लाभे माटे ॥ ६ ॥ तेथि पांचमा गुणठाणावाला असंखेज गुणा । तिर्यंच श्रावक भल्या माटे ॥७॥ तेथि दुजा गुणठाणावाला असंखेज गुणा

४ गतिमां लाभे माटे ॥ ८ ॥ तेथि तिजा गुणठाणावाला असंखेज गुणा ४ गतिमां विशेष छे माटे ॥ ९ ॥ तेथि चोथा गुणठाणावाला असंखेज गुणा घणि स्थिति छे माटे ॥ १० ॥ तेथि चउदमा गुणठाणावालाने सिद्ध भगवंतजी अनंतगुणा ॥ ११ ॥ तेथि पहिला गुणठाणावाला अनंतगुणा एकेंद्रिय प्रमुख सर्व मिथ्यादृष्टि छे माटे ॥ १२ ॥

॥ इति अल्पबहुद्वार ॥ २२ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे गुणठाणद्वाराख्यं षष्ठ प्रकरणम् ॥





॥ प्रकरण सातवा पदवीद्वार ॥

नामद्वार (१) अर्थद्वार (२) अवग्गहणाद्वार (३) उवजणद्वार (४) आगतद्वार [५] गतद्वार [६] पावणद्वार (७) सेवणद्वार (८) कालद्वार (९) दंडकद्वार (१०) गुणठाणाद्वार (११) वेदद्वार (१२) क्षेत्रद्वार (१३) लोकद्वार [१४] लिंगद्वार (१५) अवग्गाहणा पदवीद्वार (१६)

॥ इति द्वार नामानि ॥

हिवे नामद्वार कहे छे ॥ सात एकेंद्री रतनना नांम ॥ चक्ररतन [१] छत्र रतन (२) चरम रतन [३] डंड रतन (४) मणि रतन (५) खड्ग रतन (६) कागणी रतन (७) ॥ सात पंचेंद्री रतनना नांम ॥ सैन्यापति (१) गाथापति (२) वढेई (३) प्रोहित (४) अस्व रतन (५) गज रतन [६] श्रीदेवी (७)॥ नव मोटी पदवीनां नांम ॥ तीर्थंकर (१) चक्रवर्ती (२) बलदेव (३) वासुदेव (४) केवली [५] साधु (६) श्रावक (७) समदृष्ट [८] मंडलीक (९) ॥

॥ इति नामद्वार ॥

हिवे अर्थद्वार कहे छे ॥ चक्र रतन कीणने कहिजे छे खंडमे आण मनावे (१) ॥ छत्र रतनकी० ४८ कोस छत्र करे (२) ॥

चरमरतकी० पाणी उपर नावानो परे पार उतारे ४८ कोशमे चोतरो करे (३) दंड रतनकी० ऊंची नीची भुमि समी करे तमस गुफाखंड मपात गुफा एहना बारणा उघाडे (४) मणी रतनकी० ४८ कोसमे उजवालो करे (५) कागणी रतनकी० ४९ मांडला तमस गुफा खंड मपात गुफामे करे ऋषभ कूट उपर नाम लीखे [६] खड्ग रतनकी० वेरीरो माथो ल्यावे [७] सेन्यापतीकी० चार प्रकाररी सेन्या भेली करे (१) गाथा पतीकी० (२४) जातरोधांन नीपजावे १८ भार वनसपती नीपजावे (२) वढ्ढई रतनकी० दोय घडीमे ४२ भोम्या मेहल निपजावे नगरी वसावे (३) प्रोही रतनकी० मूहूर्त देवे सांती कर्म करे गांव साजा करे (४) अस्व रतन, गज रतनकी० असवारीने कांम आवे (५-६) श्री देवीकी० चक्रवरतने भोग आवे ॥

॥ इति अर्थद्वार ॥ २ ॥

हिवे अवग्गहणाद्वार कहे छे॥ चक्ररतन पइडानें आकारे लांबो चोडो वांम प्रमाणे (१) छत्र (२) चर्म (३) दंड रतन २ हाथरा लांबा चवडा (४) मणी रतन ४ आंगुल लांबो दोय आंगुल पोहलो (५) कागणी रतन ४ आंगुल लांबो पोहलो ६ तला ८ खुणा १२ हांस ते अहिरणने आकारे (६) खड्ग रतन ५० आंगुल लांबो १६ आंगुल चोडो आधी आंगुलरो जाडो छे ४ आंगुलरी मूठ छे (७) सैन्यापती (१) गाथापति (२) वढ्ढई (३) प्रोहित (४) ए चार रतन चक्रवर्तनी अवगहणा प्रमाणे ४ कमलापती नामे घोडो १०८ आंगुल लांबो ८० आंगुल ऊंचो छे ९९ अंगुलरी परिधी छे ३२ आंगुलरो मुंडो छे आंगुलरा कांन छै २० अंगुलनी सातल छे ४ आंगुल नागोडा १६ आंगुलनी पीडी ४ आंगुलना गीरिया एवं ८० अमी आंगुल ऊंचो छे (५) गज रतन

चक्रवर्तसु दुणो ऊंचो हुवे ६ श्री देवी चक्रवर्तसु ४ आंगुल नींची हुवे (७)

॥ इति अवग्गहणाद्वार ॥ ३ ॥

हिवे उपजणद्वार कहे छे ॥ चक्र रतन (१) छत्र रतन (२) चरम रतन (३) दंड रतन (४) ए चार आयुधसालामे उपजे खड्ग रतन (५) मणि (६) कागणी रतन (७) ए (३) लक्ष्मीना भंडारमें उपजे सेन्यापति (१) गाथापती (२) वद्धई [३] प्रोहित (४) ए ४ रतन निज नगरमे उपजे अस्व रतन (५) गज रतन [६] ए दोय वैताढ्य परवतनी मुलमे उपजे श्री देवी विद्याधरोनी श्रेणीमे उपजे ७॥

॥ इति उपजणद्वार संपूर्ण ॥ ४ ॥

हिवे आगतद्वार कहे छे ॥ पेहेली नारकीना नीकल्या १६ पदवी पामे ७ एकेंद्री रतन टल्या ॥ १ ॥ दूजी नारकीना नीकल्या १५ पदवी पामे १६ मांसु चक्रवर्त टल्या ॥ २ ॥ तीजी नरकना नीकल्या १३ पदवी पांमे १५ मासु बलदेव (१) वासुदेव (२) ए टली ॥ ३ ॥ चोथी नारकीना नीकल्या १२ पदवी पांमे १३ मांसु १ तीर्थंकर टल्या ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीना नीकल्या ११ पदवी पांमे १२ मांसू १ केवलिरी टली ॥ ५ ॥ छठी नारकीना नीकल्या १० पदवी पामे ११ मांसुं १ साधुरी पदवी टली ॥६॥ सातमी नारकीना नीकल्या ३ पदवी पांमे हाथी १ घोडो २ आद्रति समदृष्टी (७) भवनपती (१) वाणव्यंतर (२) ज्योतिषी [३] ए तीनना नीकल्या २१ पदवी पांमे २३ मांसु तीर्थंकर (१) वासुदेव ए दोय पदवी टली ॥ ८ ॥ १५ परमाधामीना ओर पहिला कलमेषीना नीकल्या १८ पदवी पामे २३ मासुं ५ प्रथम पदवी टली १० ॥ २ कल्मेषीना नीकल्या ११ पदवी पांमे १८

मांथी ७ एकेंद्री रतन वरज्या (९–१०) पेला बीजा देवलोकना नीकल्या २३ पदवी पांमे (११) तीजा देवलोकसूं लेने आठमा देवलोक तांइरा नीकल्या १६ पदवी पांमे ७ एकेंद्री रतन टल्या (१२) नवमा देवलोकसूं लेने ९ ग्रैवेग तांइरा नीकल्या (१४) पदवी पांमे १६ मांसू हाथी (१) घोडो (२) ए २ टली (१३) पांच अणुत्तर विमानथी निकल्या ८ पदवी पांमे ते ९ मोटकी पदवीमांसू १ वासुदेवरी पदवी टळी (१४) पृथिवी पाणी वनस्पति सनी तिर्यंच सनी मनुष्यना निकल्या ११ पदवी पांमे तीर्थंकर (१) चक्रवर्त (२) बलदेव (३) वासुदेव (४) ए ४ टली (१५) तेउ (१) वाउना नीकल्या ९ पदवी पावे ७ एकेंद्री रतन हाथी (१) घोडो (२) ॥ ९ पांमे (१६) बेंद्री तेंद्री चोइंद्री असनी तिर्यंच असनी मनुष्यना नीकल्या पदवी १८ पांमे २३ मांसूं पांच पदवी प्रथम टली (१७) सिद्धांमे पदवी १ समदृष्टीनी पावे १८ ॥

॥ इति आगतद्वार ॥ ५ ॥

हिवे गतिद्वार कहे छे ॥ पेहेले नारकीसूं लेने चोथी नारकी तांई ११ पदवीको धणी जाय ७ एकेंद्री रतन चक्रवर्त (१) वासुदेव (२) मंडलीक (३) समदृष्टी (४) एवं ११ (१) पांचमी छट्ठी नारकीमे ९ पदवीरो धणी जाय ११ मांसु हाथी (१) घोडो (२) ए २ टल्या (२) सातमी नारकीमे सात पदवीरो धणी जाय ९ मांसुं श्री देवी (१) समदृष्टी (२) ए २ टल्या (३) भुवनपती वाणव्यंतर ज्योतिषी इणमे १० पदवीको धणी जाय सात पंचेंद्री रतनमांसू एक श्री देवी टली ६ तो पंचेंद्री रतन साधु (१) मंडलीक राजा (२) श्रावक (३) समदृष्टी (४) एवं १० पदवीको धणी जाय (४) [परं मूल गुण विराधक जाय] पहेला दूजा देवलोकमाहे १० पदवीरो धणी जाय परं उत्तर गुण विराधक साधु श्रावक जाय आराधक पिण

जाय (५) तीजा देवलोकसूं लेने आठमा देवलोक तांई एहि १० पदवीको धणी जाय परं अराधक जाय(६)नवमां देवलोकसुं लेइनें १२ मां देवलोक तांई ८ पदवीको धणी जाय एही १० पदवी मांसु हाथी (१) घोडो (२) ए २टल्या (७) नव ग्रीवेक ५ अणुतर विमानमे २ पदवीको धणी जाय साधु समदृष्टी (८) ५ थावर असन्नी मनुष्यमे १४ पदवीनो धणी जाय ७ एकेंद्री रतन ६ पंचेंद्री रतन (१ श्रीदेवी टली) मंडलीक राजा एवं १४ (९) ३ विकलेंद्री गर्भेज तिर्यंच मनुष्य असन्नी तिर्यंचमे १५ पदवीको धणी जाय सात एकेंद्री रतन ६ पंचेंद्री रतन मंडलीक राजा समदृष्टी एवं १५ पदवीको धणी जाय (१०)

॥ इति गतिद्वार ॥ ६ ॥

हिवे पदवी पावणद्वार कहे छे ॥ तीर्थंकरमे ६ पदवी पावे मंडलीक राजानी (१) चक्रवर्तनी (२) तीर्थंकरनी (३) साधुनी (४) समदृष्टनी (५) केवलीनी (६) [१] चक्रवर्तमे एहीज ६ पदवी पावे (२) बलदेवमे ५ पदवी पावे मंडलीकनी [१] बलदेवनी (२) साधुनी (३) समदृष्टीनी [४] केवलीनी (५) एवं ५ पावे (३) वासुदेवमे ३ पदवी पावे मंडलीकनी (१) वासुदेवनी (२) समदृष्टीनी (३) एवं ३ (४) केवलीमें तथा साधुमे ८ पदवी पावे नव मोटकी पदवीमेसूं १ वासुदेवनी टली (५–६) श्रावकमे ३ पदवी पावे १ श्रावकनी १ समदृष्टीनी १ मंडलीकनी एवं (३) (७) मंडलीकमे ६ पदवी पावे मंडलीकनी (१) साधुनी (२) श्रावकनी (३) समदृष्टीनी [४] केवलीनी (५) वासुदेवनी एवं ६ पावे (८) समदृष्टिमे १५ पदवी पावे ९ मोटकी ६ पंचेंद्री रतन १ श्री देवी टली (९)

॥ इति पदवी पावणद्वार ॥ ७ ॥

हिवे सेवणद्वार कहे छे॥७ एकेंद्री रतन ७ पंचेंद्री रतन एवं १४ रतननी एक एक हजार देवता सेवा करे (१) तीर्थंकरनी ६४ इंद्र असंख्याता देवता सेवा करे (२) चक्रवर्तनी २ हजार तो दोय भुजाना ओर १४ रतनना १४ हजार एवं (१६) सोले हजार देवता सेवा करे (३) बलदेवनी ४ हजार देवता सेवा करे (५) केवलीनी अनेक देवता सेवा करे (६) साधु श्रावक समदृष्टी ए ३ नी एक एक देवता सेवा करे (९)

॥ इति सेवनद्वार ॥ ८ ॥

हिवे कालद्वार कहे छे ॥ पहलो आरो ४ कोडा कोड सागररो दूजो ३ कोडाकोड सागरनो ए दोय आरामे पदवी पावे १ समदृष्टीनी (१) तीजो आरो दोय कोडाकोड सागरनो पदवी २१ पावे बलदेवनी वासुदेवनी ए २ टली (२) चोथो आरो १ कोडाकोड सागरनो जीणमे ४२ हजार वरस गये वाद पदवी पावे २३ (३) पांचमे आरेमें ५ पदवी पावे [४] छठ्ठा आरामे पदवी नथी ए तो अवसरपणी काल आश्री कही (६) अव उत्त. सरपणी काल आश्री कहे छे ॥ पेला आरामे पदवी नथी (१) दूजा आरामे पदवी पावे १ समदृष्टीनी (३) तीजा आरामां पदवी २१ पावे (४) चोथा आरामां पदवी २३ पावे (५) पांचमां आरामे ५ पदवी पावे (६) छठ्ठा आरामे १ पदवी पावे समदृष्टिनी (६)

॥ इति कालद्वार ॥ ९ ॥

हिवे दंडकद्वार कहे छे ॥ एक दंडक सांतुनारकीनो दस भवनपतीना दस दंडक ओर ज्योतीषी वीमानीक देवताना दोय दंडक एवं १४ में एक पदवी समदिष्टीनी पावे (१) पृथिवीकायमे पदवी पावे सात एकेंद्री रतन (२) ४ थावर असन्नी मनुष्यमे पदवी नथी (३)

विकलेंद्री असन्नी तिर्यंच अपरज्यासामें पदवी १ पावे समदिष्टिनी (४) सन्नि तिर्यंचमें पदवी ४ पावे हाथी (१) घोडो (२) श्रावक (३) समदिष्टि एवं ४ (५) अढीद्वीपनी बारला तिर्यंचमे २ पदवी पावे श्रावक (१) समदृष्टी [२] एवं २ (६) असन्नीमे पदवी ८ पावे सात तो एकेंद्री रतन एक समदृष्टि एवं ८ (७) सन्नीमाहैं १६ पदवी पावे (७) एकेंद्री रतन टल्या (८) मनुष्यमें १६ पदवी पावे ७ एकेंद्री रतन टल्या (९)

॥ इति दंडकद्वार ॥ १० ॥

हिवे गुणठाणाद्वार कहे छे ॥ पेहेला गुणठांणामे १४ पदवी पावे ७ एकेंद्री रतन [६ पंचेंद्री रतन [१ श्री देवी टली] मंडलीक राजा एवं (१४) (१) दूजे गुणठांणेमें १ पदवी पावे समदिष्टीनी (२) तीजा गुणठाणे २ पदवी पावे श्री देवी मंडलीक एवं २ (३) चोथा गुणठांणेमें ६ पदवी पावे तीर्थंकर (१) चक्रवर्त (२) बलदेव (३) वासुदेव [४] समदृष्टि [५] मंडलीक (६) [४] पांचमे गुणठांणेमें ३ पदवी पावे [१] समदिष्टिनी [२] श्रावकनी (३) मंडलीकनी एवं ३ (५) छठा गुणठाणांसुं लेने १० गुणठाणा तांई पदवी २ पावे साधुनी (१) समदृष्टिनी ए २ पावे [६] ११ मा १२ मां गुणठाणांमे १ पदवी पावे [७] १३ मा १४ मा गुणठाणामे ३ पदवी पावे [१] तीर्थंकरनी (२) केवलीनी (३) साधुनी ए ३ [८]

॥ इति गुणठाणाद्वार ॥ ११ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ स्त्री वेदमां पदवी ४ पावे श्री देवी (१) श्रावकनी (२) साधुनी (३) समदृष्टि ए (४) (१) एक मनुष्यणीमे ६ पदवी पावे (१) श्री देवी (२) साध (३) श्रावक (४) समदृष्टि (५) तीर्थंकर (६) केवली ए छें [२] ॥ समचे पुरुष वेदमां पदवी

१३ पावे २३ पदवीमांसू ७ एकेंद्री रतन ८ श्री देवी ९ तीर्थंकर १० केवली ए १० टली (३) समचे मनुष्यमे पदवी ११ पावे ४ पंचेंद्री रतन ९ मोटकी मांसू तीर्थंकर (१) केवली २ ए २ टली (४) मनुष्य पुरुषमां पदवी १३ पावे तीर्थंकर केवली ए २ वधी ११ तेहीज, एवं १३ (५) जन्म नपुंसकमे २ पदवी पावे १ श्रावक २ समदृष्टि ए (६) कृत नपुंसकमे ४ पावे (१) श्रावकनी (२) साधुनी (३) समदृष्टिनी (४) केवली ए ४ पावे (७) अवेदीमां ४ पावे [१] समदृष्टी (२) साधु (३) तीर्थंकर (४) केवली ए ४ पावे [८] अमर पदवी १ वलदेवनी इण पदवीमे मरे नही (९)

॥ इति वेदद्वार ॥ १२ ॥

हिवे क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ भर्तक्षेत्रमा जघन्य १ पदवी पावे समदृष्टिनी (१) मज्जम भरतक्षेत्रमें ८ पदवी पावे चक्रवर्त टल्यो [२] भरतक्षेत्रमे उत्तकृष्टी २१ पदवी पावे (१) वलदेव (२) वासुदेव दोय ए टली (३)

॥ इति क्षेत्रद्वार ॥ १३ ॥

हिवे लोकद्वार कहे छे ॥ ऊंचा लोकमां ५ पदवी पावे [१] केवली (२) साधुनी [३] श्रावकनी [४] समदृष्टिनी (५) मंडलीक राजानीं ए (५) पावे [१] नीचा लोकमे २३ पावे (२) त्रीछा लोकमे २३ पावे (३)

॥ इति लोकद्वार ॥ १४ ॥

हिवे लिंगद्वार कहे छे ॥ स्वलिंगीमां ४ पदवी पावे (१) तीर्थंकर (२) साधुनी (३) समदृष्टी (४) केवली ए ४ पावे (१) अन्य लिंगीमां ४ पावे (१) समदृष्टी (२) श्रावक (३) साधुनी (४) केवली ए ४ पावे (२) ग्रह लिंगीमे १३ पावे १ सेन्यापति (२) गाथा

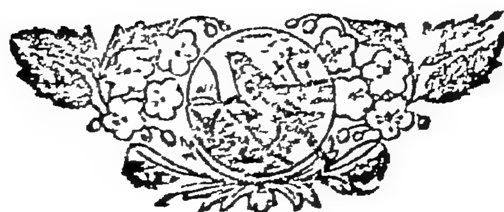
पति (३) वढ्ढई [४] प्रोहित (५) श्री देवी (६) चक्रवर्त (७) बलदेव [८] वासुदेव (९) केवली (१०) साधु [११] श्रावक (१२) समदृष्टि (१३) मंडलीक ए १३ पावे (३)

॥ इति लिंगद्वार ॥ १५ ॥

हिवे अवग्गहणाद्वार कहे छे ॥ मनुष्यनी जघन्य अवग्गहणामे पदवी १ पावे समदृष्टिनी (१) मज्झम अवग्गहणामे १४ पावे १ सैन्यापति (२) गाथापति [३] वढ्ढई (४) प्रोहित (५) श्रीदेवी (६) तीर्थंकर (७) चक्रवर्त (८) बलदेव (९) वासुदेव (१०) केवली (११) साधु (१२) श्रावक (१३) समदृष्टि (१४) मंडलीक ए १४ पावे (२) उत्कृष्टी अवग्गहणामां पदवी २ पावे (१) केवली (२) समदृष्टी ए २ पावे (३) ८ कर्मना वेद गामे २१ पावे (१) तीर्थंकर (२) केवली ए २ टली (४) सात कर्मना वेद गामे (२) पावे १ साधुनी २ समदृष्टिनी ए २ पावे ॥ ५ ॥

॥ इति अवग्गाहणा पदवीद्वार ॥ १६ ॥

॥ इतिश्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे पदवी द्वाराऽऽख्यं सप्तम प्रकरणम् ॥ ७ ॥





प्रकरण आठवां-सिझणद्वार ॥

(१) पहिली नर्कना निकल्या एक समये (१०) सिझे.

(२) दूजी नर्कना निकल्या एक समये (१०) सिझे.

(३) तीजी नर्कना निकल्या एक समये (१०) सिझे.

(४) चउथी नर्कना निकल्या एक समये (४) सिझे.

(५) भवनपतिना निकल्या एक समये (१०) सिझे.

(६) भवनपतिनी देवीना निकल्या एक समये (५) सिझे.

(७) पृथ्वीना निकल्या एक समये (४) सिझे.

(८) पाणीना निकल्या एक समये (४) सिझे.

(९) वनस्पतिना निकल्या एक समये (६) सिझे.

(१०) पंचेंद्री तिर्यंच गर्भेजना निकल्या एक समये (१०) सिझे.

(११) तिर्यंचणीना निकल्या एक समये (१०) सिझे.

(१२) मनुष्यना निकल्या एक समये (१०) सिझे.

(१३) मनुष्यणीना निकल्या एक समये (२०) सिझे.

(१४) वाणव्यंतरना निकल्या एक समये (१०) मिझे.

(१५) वाणव्यंतरनि देवीना निकल्या एक समये (५) सिझे.

(१६) ज्योतिषीना निकल्या एक समये (१०) सिझे.

(१७) ज्योतिषीनी देवीना निकल्या एक समये (२०) सिझे.

(१८) वैमानिकना निकल्या एक समये (१०८) सिझे.
(१९) वैमानिकनि देवीना निकल्या एक समये (२०) सिझे.
(२०) स्वलिंगी सिझे तो (१०८) सिझे.
(२१) अन्य लिंगी सिझे तो (१०) सिझे.
(२२) गृहस्थ लिंगी सिझे तो (४) सिझे.
(२३) स्त्री लिंगी (२०) सिझे.
(२४) पुरुष लिंगी (१०८) सिझे.
(२५) नपुंसकलिंगी (१०) सिझे.
(२६) उर्द्ध लोके (४) सिझे.
(२७) अधोलोके (२०) सिझे.
(२८) त्रिछा लोके [१०८] सिझे.
(२९) उत्कृष्टि अवगाहनावाला एक समये (२) सिझे.
(३०) जघन्य अवगाहनावाला एक समये (४) सिझे.
(३१) मझम अवगाहनावाला एक समये (१०८) सिझे.
(३२) समुद्रमां [२] सिझे.
[३३] नदी प्रमुख शेष जलमां (३) सिझे.
(३४) तिर्थमां [१०८] सिझे.
[३५] अतिर्थमां (१०) सिझे.
[३६] तिर्थंकर [२०] सिझे.
[३७] अतिर्थंकर (१०८) सिझे.
(३८) स्वयंबुद्ध [४] सिझे.
(३९) प्रत्येक बुद्ध (१०) सिझे.
(४०) बुद्धबोहि [१०८] सिझे.
[४१] एक सिद्धांते एक समये [१] सिझे.
[४२] अनेक सिद्धांते एक समये उत्कृष्टा (१०८) सिझे.

[४३] विजय विजय मते एक समये विश विश सिझे.

(४६) भद्रशाल वन (१) नंदन वन [२] सोमनसवन (३) ए ३ मा च्यार च्यार सिझे.

(४७) पंडगवनमां (२) सिझे.

(४८) अकर्मभूमिमां (१०) सिझे.

[४९] कर्म भूमिमां (१०८) सिझे.

(५०–५१–५२–५३) पहिले (१) दूजे (२) पांचमे (३) छठे (४) ए (४) ओर (१०) दश सिझे.

(५४–५५) तिजे (१) चउथे (२) ए (२) ओर [१०८] एकसो आठ सिझे.

(५६–५७) अवसर्पिणी (१) उत्सर्पिणी (२) ए (२) मां (१०८) एकसो आठ सिझे.

(५८) नो उत्सर्पिणीनो अवसर्पिणीमां (१०८) सिझे.

(५९) एकथि मांडिने (३२) लगे सिझे तो समय सुधि.

(६०) ३३ थि मांडिने (४८) सुधि सिझे तो (७) समय लगे.

(६१) ४१ थि मांडिने (६०) सुधि सिझे तो (६) समय लगे.

(६२) ६१ थि मांडिने (७२) सुधि सिझे तो (५) समय लगे.

(६३) ७३ थि मांडिने [८४] सुधि सिझे तो (४) समय लगे.

(६४) ८५ थि मांडिने (९६) सुधि सिझे तो ३ समय लगे.

(६५) ९७ थि मांडिने (१०२) सुधि सिझे तो (२) समय लगे.

(६६) १०३ थि मांडिने (१०८) सुधि सिझे तो (१) समय लगे.

॥ इति सिझणद्वार ॥

॥इतिश्री सिद्धांत शिरोमणौ द्वितीय खण्डे सिझण द्वाराख्यं अष्टम प्रकरणम् ॥





प्रकरण नोवो विरहद्वार ॥



समुच्चय ४ गतिनो विरह काल ॥ जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो (१२) मुहुर्त्तनो ॥ हिवे पहिली नरके जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो (२४) मुहुर्त्तनो ॥ १ ॥ दूजी नरके जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो (७) दिननो ॥ २ ॥ तीजी नरके जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो (१५) दिननो ॥ ३ ॥ चोथी नरके जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो (१) मासनो ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ॥ जघन्य (१) समयनो उत्कृष्टो (२) मासनो ॥ ५ ॥ छठी नरके जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो (४) मासनो ॥ ६ ॥ सातमी नरके जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो (६) मासनो ॥७॥ उपजवानो तथा चववानो विरह पडे ॥ हिवे दस भवनपतीनो जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो (२४) मुहूर्त्तनो ॥ पांच एकेंद्रिय अविरहिया संख्याताने ठामे संख्याता उपजे ॥ असंख्याताने ठामे असंख्याता उपजे ॥ अनंताने ठामे अनंता उपजे ॥ समय समय उपजे ॥ समय समय चवे ॥ त्रण विगलेंद्रियनो जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो अंतर्मुहुर्त्तनो ॥ समूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रीयनो जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो अंतर्मुहु-र्त्तनो ॥ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीयनो जघन्य [१] समयनो ॥ उत्कृष्टो

[१२] मुहुर्त्तनो ॥ सम्मुर्छिम मनुष्यनो जघन्य [१] समयनो उत्कृष्टो (२४) मुहुर्त्तनो ॥ गर्भेज मनुष्यनो जघन्य [१] समयनो ॥ उत्कृष्टो [१२] मुहुर्त्तनो ॥ वाणव्यंतर ज्योतषी वैमानिकमां पेहला दूजा देवलोक सुधीनो ॥ जघन्य [१] समयनो ॥ उत्कृष्टो [२४] मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ तिजे देवलोके ॥ जघन्य (१) समयनो उत्कृष्टो (९) दिन ने वीस मुहुर्त्तनो ॥ चोथे देवलोके ॥ जघन्य [१] समयनो ॥ उत्कृष्टो (१२) दिन ने १० मुहुर्त्तनो ॥ पांचमे देवलोके ॥ जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो साढा बावीस दिननो छठे देवलोके ॥ जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो (४५) दिननो ॥ सातमे देवलोके जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो (८०) दिननो विरहकाल ॥ आठमे देवलोके जघन्य (१) समयनो उत्कृष्टो (१००) दिननो ॥ नवमे दशमे देवलोके ॥ जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो संख्याता मासनो ज्यां लगे वरस न होय ॥ इग्यारमे बारमे देवलोके जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो संख्याता वरसनो ज्यां लगे सो वरस न होय ॥ पहिली त्रिके जघन्य (१) समयनो उत्कृष्टो संख्याता सेंकडा वर्षनो ज्यां लगे हजार वरस न होय ॥ दूजी त्रिके जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो संख्याता हजार वर्षनो ज्यां लगे लाख वरस न होय ॥ तीजी त्रिके जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो संख्याता लाख वरसनो ज्यां लगे क्रोड वरस न होय ॥ च्यार अनुत्तर विमानमां ॥ जघन्य (१) समयनो ॥ उत्कृष्टो पल्यना असंख्यातमा भागनो विरहकाल ॥ सर्वार्थसिद्धमां जघन्य (१) समयनो उत्कृष्टा पल्यना संख्यातमा भागनो विरहकाल ॥ सिद्धनो विरह जघन्य [१] समयनो ॥ उत्कृष्टो छ मासनो विरहकाल ॥

च्यार गतिमा पंचेंद्रिय आश्री विरहकाल जघन्य [१] समयनो ॥ उत्कृष्टो (१२) मुहुर्त्तनो ॥ सर्व इंद्र स्थानकनो विरह जघन्य (१) समयनो उत्कृष्टो (६) मासनो ॥

॥ इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ द्वितीय खण्डे विरह द्वाराख्यं नवम प्रकरणम् ॥





॥ प्रकरण दसवा—रुपी अरुपी द्वार ॥



(१८) पापस्थानक (८) कर्म (१) मन (१) वचन जोग [१] कार्मण शरीर ए (२९) मे १६ बोल पावे ते किसा ५ वरण (२) गंध [५] रस (४) फरस (१) उनो (२) ठाढो (३) चीगटो (४) लुखो ए (२९) चोफरसि जाणवा ॥ हिवे जीवसंजुक्तपुद्गल अठफरसी कहे छे (४) शरीर (६) छेलेस्या (१) घणोदधि (१) वणवाय [१] तणवाय (१) कायारो जोग ए १४ बोलमें बीस बोल पावे ते कहे छे ५ वरण (५) रस (२) गंध (८) फरस ए २० बोल पावो ॥ हिवे जीवरहित पुद्गलना भेद (२) पावे अनंत प्रदेसी सीक्षबंध (१) सुषम (२) बादर हिवे अनंत प्रदेसी सूक्ष्म बंध ते किसा (५) वरण (५) रस (२) गंध (४) फरस उनो ठंडो लुपो चीगटो ए १६ बोल ॥ हिवे अनंत प्रदेसी बादर पंध ते किसा (२०) बोल उपर मंडीयाते हिवंखंधना प्रदेशमे बोल जघन्य पावे ५ उत्कृष्टा २० बोल पावे हिवे (१) प्रदेसीया प्रमाणुवाला पुद्गलमे पावे (१) वरण (१) रस (२) बोल सित्तराते कीसा चीगटो लुपो तथा (२) बोल उसणारा लुपो चींगटो ॥ रुपी पुद्गलना बोल संपूर्ण ॥ हिवे अरूपीना बोल कहे छे ॥ जीवनीज गुणना बोल ॥ जीवनी कलंक (१) जीवास्तीकाय संसारी (२) जिवसिध ॥ हिवे संसारी जीवना भेद

कहे छे (६) भावलेस्या प्रवर्तमान (३) दृष्टि सरदहणारूप (१२) उपीयोग जाणवा रूप (४) संगन्या (२४) दंडकमाहे संगन्या समभाव वर्ते ॥ जीवना प्रणमां (१८) पापसूं निवर्तवो (४) बोल कहे छे (१) उठाण कहतां उभा थायवो (२) कर्म कहतां गमण कीरीया कर्वी; (३) वलते कहतां शरीरनो प्राक्रम (४) वीर्य कहतां जीवनो उछाव हीमत करे वीर्यना दोय भेद (१) सकर्ण ते संसारी जीवमे पावे [२] अकर्ण ते सिद्धांमे पावे पुरसाकार ते कहता अभी-मान करने सगलांना काम करे (४) बुद्धिना नांम (१) उतपातिया (२) वीनीया (३) कमीया (४) परणामीया (४) मतिना बोल कहे छे ॥ उग्र कहेतां हेलो पाडे ते सुणे (२) इहां कहतां हेलो कीणने दीनो चिंतवे (३) उवाइ कहतां ओलख्यो हेलो फलाणाने दीनो (४) धारणा समाचार सुणीने हीये धारलीना ए (४) बोल अरुपी अजीव (१) धरमास्ती (२) अधरमास्ती (३) अकासास्ती (४) कालास्ती ए (४) जीवसंजुक्त पुदगल ए (२९) चोपरसी ए (१४) अठपरसी (१) पुदगल चोपरसी (अथवा) अठपरसी जीवरहित पुद-गलमे (१६) सूक्ष्ममे (२०) बादरमे एक ॥ प्रमाणुंमे जघन्य (५) बोल पावे उत्कृष्टा (२०) बोल पावे ॥

॥ इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ द्वितीय खण्डे रूपी अरूपी द्वाराख्यं दशम प्रकरणम् ॥



प्रकरण इग्यारवा–सो बोलनो बासठियो॥

गाथा.

जीव[1] गई[2] इंदीय[3] काए[4] जोए[5] वेय कसाय[6] लेशाय[7] समत्त[8] णाय[9]
दंसणे[10] संजए[11] उव[12] उग्ग अहारे[13] (१) भासग[14] परित[15] पज्जत्ते[16] सुहुम[17]
सन्नी[18] भवत्थ[19] चरिमेय[20] जीव खेते वंधे पोग्गले महादंडए चेव (२)

		जीवका भेद	गुण ठाणा	जोग	उपयोग	लेश्या	
१	समुच्चे जावमें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसूं थोडी मनुष्यनी १
२	नारकीमें	३	४	११	९	३	ते थकी मनुष्य असंख्यात गुणा २
३	तिर्यंचमें	१४	५	१३	९	६	नेरिया असंख्यात गुणा ३
४	तिर्यंचणीमें	२	५	१३	९	६	तिर्यंचणी असंख्यात गुणी ४
५	मनुष्यमें	३	१४	१५	१२	६	देवता असंख्यात गुणा ५
६	मनुष्यणीमें	२	१४	१३	१२	६	देवांगना संख्यात गुणी ६
७	देवतामें	३	४	११	९	६	सिद्ध भगवान अनंत गुणा ७
८	देवांगनामें	२	४	११	९	४	तिर्यंच अनंत गुणा ८
९	सिद्ध भगवानमें	०	०	०	२	०	समुच्चय जीव विशेसाहिया ९ इति जीवद्वार ॥ १ ॥
१०	सइंद्रियामें	१४	१२	१५	१०	१	सर्वसूं थोडा पंचेंद्रिया १
११	एकेंद्रियामें	४	९	५	३	४	ते थकी चौरिंद्रिया विशेसाहिया २

१२	बेइंद्रियामें	२	२	४	५	३	तेइंद्रिया विसे साहिया ३
१३	तेइन्द्रियामें	२	२	४	५	३	बेइंद्रिया विसे साहिया ४
१४	चउरिंद्रियामें	२	२	४	६	३	अनेंद्रिया अनंतगुणा ५
१५	पंचेंद्रियामें	४	१२	१५	१०	६	एकेंद्रिया अनंतगुणा ६
१६	अनेंद्रियामें	१	२	७	२	१	सइंद्रिया विसेसाहिया ७ इति इंद्रियद्वार ॥ २ ॥
१७	सकाइयामें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसूं थोडा त्रसकाइया १
१८	पृथ्वीकाइयामें	४	१	३	३	४	तेउकाइया असंख्यात गुणा २
१९	अपक इ न मे	४	१	३	३	४	पृथ्वीकाइया विसेसाहिया ३
२०	तेउकाइयामें	४	१	३	३	३	अपकाइया विसेसाहिया ४
२१	वाउकाइयामें	४	१	३	३	३	वाउकाइया विसेसाहिया ५
२२	वनस्पति काइयामे	४	१	३	३	४	अकाइया अनंतगुणा ६
२३	त्रस काइयामे	१०	१४	१५	१२	६	वनस्पति काइया अनंतगुणा ७
२४	अकाइयामें	०	०	०	२	०	सकाइया विसेसाहिया ८ इति कायद्वार ॥ ३ ॥
२५	सजोगीमें	१४	१३	१५	१२	६	सर्वसूं थोडा मन जोगी १
२६	मन जोगीमें	१	१३	१४	१२	६	वचन जोगी असंख्यातगुणा २
२७	वचन जोगीमें	५	१३	१४	१२	६	अजोगी अनंतगुणा ३
२८	काय जोगीमें	१४	१३	१५	१२	६	कायजोगी अनंतगुणा ४
२९	अजोगीमें	१	१	०	२	०	सजोगी विसेसाहिया ५ इति जोगद्वार ॥ ४ ॥
३०	सवेदीमें	१४	९	१५	१०	६	सर्वसूं थोडा पुरुषवेदी १

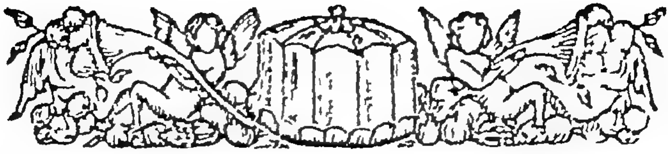
३१	स्त्री वेदीमें	७	९	१३	१०	६	स्त्री वेदी संख्यात गुणी ७
३२	पुरुष वेदीमें	२	९	१५	१०	६	अवेदी अनत गुणा ३
३३	नपुसक वेदीमें	१४	९	१५	१०	६	नपुंसक वेदी अनत गुणा ४
३४	अवेदीमें	१	५/६	११	९	१	सवेदी विसेसाहीया ५ इति वेदद्वार ॥ ५ ॥
३५	सकपायीमें	१४	१०	१५	१०	६	सर्वसूं थोडा अकपाई १
३६	क्रोध कपाईमें	१४	९	१५	१०	६	ते थकि मान कपाई अनत गुणा २
३७	मान कपाईमें	१४	९	१५	१०	६	क्रोध कपाई विसेसाहिया ३
३८	माया कपाईमें	१४	९	१५	१०	६	माया कपाई विसेसाहिया ४
३९	लोभ कपाईमें	१४	१०	१५	१०	६	लोभ कपाई विसेसाहिया ५
४०	अकपाईमें	१	४	११		१	सकपाई विसेसाहिया ६ इति कपायद्वार ॥ ६ ॥
४१	सलेशीमें	१४	१३	१५	१२	६	सर्वसूं थोडा सुकललेशी १
४२	कृष्ण लेशीमें	१४	६	१३	९	१	पद्मलेशी असंख्यातगुणा २
४३	नील लेशीमें	१४	६	१२		१	तेजूलेशी असंख्यातगुणा ३
४४	कापोत लेशीमें	१४	६	१३		१	अलेशी अनंतगुणा ४
४५	तेजू लेशीमें	३	७	१५	१०	१	कापोतलेशी अनतगुणा ५
४६	पद्म लेशीमें	२	७	१५	१०	१	नीललेशी विसेसाहिया ६
४७	सुकल लेशीमें	२	१३	१५	१२	१	कृष्णलेशी विसेसाहिया ७
४८	अलेशीमें	१	१	०	२	०	सलेशी विसेसाहिया ८ इति लेशाद्वार ॥ ७ ॥
४९	सन्नाणीमें	६	१२	१५	९	६	सर्वसूं थोडा मनपर्यवनाणी १

५०	मति नागीमें	६	१०	१५	७	६	अवधि नागी असंख्यात गुणा २
५१	श्रुत नागीमें	६	१०	१५	७	६	मति नागी श्रुत नागी माहो-माहीतुल्ला विसे साहिया ३-४
५२	अवधि नागीमें	२	१०	१५	७	६	विभंग अन्नाणी असंख्यात गुणा ५
५३	मन पर्यव नागीमें	१	७	१२	७	२	केवलनागी अनंतगुणा ६
५४	केवल नागीमें	१	२	७	२	१	सन्नागी विसे साहिया ७
५५	मति अनाणीमें	१४	२	१३	६	६	मति अन्नागी श्रुत अन्नागी माहोमाहीतुल्ला अनंत गुणा ८-९
५६	श्रुत अनागीमें	१४	२	१२	६	६	
५७	विभग अनागीमें	२	२	१३	६	६	इति नाग द्वार ॥ ८ ॥
५८	सम्यक्दृष्टीमे	६	१२	१५	९	६	सर्वसूं थोडा सास्वादान समकिती १
५९	मिथ्यादृष्टीमें	१४	१	१३	६	६	उपशम समकिती असंख्यात गुणा २
६०	समा मिथ्या दृष्टीमें	१	१	१०	६	६	समा मिथ्या दृष्टी संख्यात गुणा ३
६१	सास्वादान समकितमें	६	१	१३	६	६	वेदक
६२	उपसम समकितमें	२	८	१५	७	६	क्षयोपशम समकिती माहोमाही तुल्ला संख्यात गुणा ४-५
६३	वेदक समकितमें	२	४	१५	७	६	क्षायक समकिती अनंत गुणा ६
६४	क्षयोपशम समकितमें	२	४	१५	७	६	मिथ्या दृष्टी अनत गुणा ७ / सम्यक् दृष्टी विसेसा हिया ८
६५	क्षायक समकितमें	२	११	१५	९	६	इति समकित द्वार ॥ ९ ॥
६६	चषु दरसगमें	६	१२	१४	१०	६	सर्वसूं थोडा अवधि दर्शनी १
६७	अचषु दरसगमें	१४	१२	१५	१०	६	चषु दर्शनी असंख्यात गुणा २

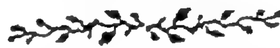
६८	अवधि दर्शनमें	६	१२	१२	१०	६	केवल दर्शनी अनत गुणा ३
६९	केवल दर्शनमें	१४	१२	१५	१०	६	अचक्षु दर्शनी अनत गुणा ४ इति दर्शन द्वार ॥ १० ॥
७०	समुच्चे संजतीमें	१	९	१५	९	६	सर्वसूं थोडा सूक्ष्म सपरायना धणी १ परिहार विसुद्धिना
७१	सामाइक छेदोपस्थापनी चारित्रमें	१	४	१४	७	६	धणी सख्यात गुणा २ यथा
७२	परिहार विसुद्धी चारितमें	१	२	९	७	१	ख्यातना धणी संख्यात गुणा ३ छेदोपस्थापनी चारितना धणी
७३	सूक्ष्म सपराय चारित्रमें	१	१	९	७	३	सख्यात गुणा ४ सामाइक चारितना धणी सख्यात
७४	यथा ख्यात चारित्रमें	१	४	११	९	१	गुणा ५ सजती विसे साहिया ६ सजता सजती असख्यात
७५	असयतीमें	१४	४	१३	९	६	गुणा ७ नो संजतीनो असजतीनो सजता सजती अनत
७६	सजता सयतीमें	१	१	१२	६	६	गुणा ८ असजती अनत गुणा ९
७७	नो सजतीनो असजतीनो सजता सजतीमें	०	०	०	२	०	इति सजयद्वार ॥ ११ ॥
७८	साकार वउत्तामें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसूं थोडा अनाकार वउत्ता १ साकार वउत्ता सख्यात गुणा २
७९	अनाकार वउत्तामें	१४	१३	१५	१२	६	इति उपयोग द्वार ॥ १२ ॥
८०	आहारिकमें	१४	१३	१४	१२	६	सर्वसूं थोडा अनाहारीक १ अहारीक असख्यात गुणा २
८१	अनाहारिकमें	८	५	१	१०	६	इति आहारीक द्वार ॥ १३ ॥
८२	भासकमें	५	१३	१४	१२	६	सर्वसूं थोडा भासक १ अभासक अनत गुणा २
८३	अभासकमें	१०	५	५	११	६	इति भासक द्वार ॥ १४ ॥
८४	परतमें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसूं थोडा परत १
८५	अपरतमें	१४	१	१३	६	६	नोपरतनो अपरत अनत गुणा २

८६	नोपरतनो अपरतमें	०	०	०	२	०	अपरत अनंतगुणा ३ इति परतद्वार ॥ १५ ॥
८७	पर्जाप्तामें	७	१४	१५	१२	६	सघस थोडा नोपर्जाप्तानो अपर्जाप्ता १
८८	अपर्जाप्तामें	७	३	५	९	६	अपर्जाप्ता अनंतगुणा २
८९	नोपर्जाप्तानो अपर्जाप्तामें	०	०	०	२	०	पर्जाप्ता संख्यात गुणा ३ इति पर्जाप्तद्वार ॥१६॥
९०	सूक्ष्ममें	२	१	३	३	३	सर्वसूं थोडा नोसूक्ष्मनोबादर१ बादर अनन्तगुणा २
९१	बादरमें	१२	१४	१५	१२	६	सूक्षम असंख्यात गुणा ३
९२	नोसूक्षमनो बादरमें	०	०	०	२	०	इति सूक्ष्मद्वार ॥ १७ ॥
९३	सन्नीमें	२	१२	१५	१०	६	सर्वसूं थोडा नो सन्नी १ नो सन्नी असन्नी अनंतगुणा २
९४	असन्नीमें	१२	२	६	६	४	असन्नी अनंतगुणा ३
९५	नोसन्नीनो असन्नीमें	१	२	७	२	१	इति सन्नीद्वार ॥१८॥
९६	भव्यमें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसूं थोडा अभव्य १ नोभव्यनो अभव्य अनंतगुणा२
९७	अभव्यमें	१४	१	१३	६	६	भव्य अनंतगुणा ३
९८	नोभव्यनो अभव्यमें	०	०	०	२	०	इति भव्यद्वार ॥ १० ॥
९९	चरममें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसूं थोडा अचरम १ चरम अनंतगुणा २
१००	अचरममें	१४	१	१३	८	६	इति चरमद्वार ॥ २० ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे शत संज्ञाऽख्यं एकादश प्रकरणम् ॥



प्रकरण बारवा–९८ बोलनो बासठीयो.



हिवे पन्नवणाजी सूत्रके तीजा पदणे अनुसारें ९८ बोल कहे छे. ॥						
१	सर्वसूं थोडा गर्भज मनुष्यमे	२	१४	१७	१२	६
२	मनुष्यनी संख्यातगुणीमे	२	१४	१३	१२	६
३	बादर तेउकाईया अपर्याप्ता असंख्यात गु०	१	१	१	३	३
४	पांच अनुत्तर विमानवासी देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	६	१
५	नवग्रीवेकका उपरली त्रिकका देवता संख्यात गु	२	३	११	९	१
६	नवग्रीवेकका विचली त्रिकका देवता संख्यातगुणा०	२	३	११	९	१
७	नवग्रीवेकका नीचली त्रिकका देवता संख्यातगु०	२	३	११	९	१
८	बारमा देवलोकका देवता संख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
९	इग्यारमा देवलोकका देवता संख्यात गुणामे	२	४	११	९	१
१०	दसमा देवलोकका देवता संख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
११	नवमा देवलोकका देवता संख्यातगुणामे.	२	४	११	९	१
१२	सातमी नरकना नेरीया असंख्यात गुणामे	२	४	११	९	१

१३	छट्ठी नरकना नेरीया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१४	आठमा देवलोकका देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१५	सातमा देवलोकका देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१६	पांचमी नरकना नेरिया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	२
१७	छट्ठा देवलोकना देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१८	चौथी नरकना नेरीया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१९	पांचमा देवलोकना देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२०	तीजी नरकना नेरिया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	२
२१	चोथा देवलोकना देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२२	तीजा देवलोकना देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२३	दूजी नरकना नेरीया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२४	समूर्च्छिम मनुष्य असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
२५	दूजा देवलोकना देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२६	दूजा देवलोकनी देवी असंख्यातगुणीमे	२	४	११	९	१
२७	पेला देवलोकना देवता संख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२८	पेला देवलोकनी देवी संख्यातगुणीमे	२	४	११	९	१
२९	भवनपती देवता असंख्यातगुणामे	३	४	११	९	४
३०	भवनपतीनी देवी संख्यातगुणीमे	२	४	११	९	४

३१	पेली नरकना नेरिया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
३२	खेचर पुरुष असंख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
३३	खेचरणी संख्यातगुणीमे	२	५	१३	९	६
३४	स्थलचर पुरुष संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
३५	स्थलचरणी संख्यातगुणीमे	२	५	१३	९	६
३६	जलचर पुरुष संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
३७	जलचरणी संख्यातगुणीमे	२	५	१३	९	६
३८	वाणव्यंतर देवता संख्यातगुणामे	३	४	११	९	४
३९	वाणव्यंतरनी देवी संख्यातगुणीमे	३	४	११	९	४
४०	ज्योतिषी देवता संख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
४१	ज्योतिषीनी देव्या संख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
४२	खेचर नपुंसक संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
४३	स्थलचर नपुंसक संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
४४	जलचर नपुंसक संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
४५	चोरिंद्री पर्याप्ता संख्यातगुणामे	१	१	२	४	३
४६	पंचेंद्री पर्याप्ता विसेसाहियामे	२	१२	१५	१०	६
४७	बेरिंद्री पर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	२	३	३
४८	तेरिंद्री पर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	२	३	३

४९	पंचेंद्री अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	३	३	५	९	[illegible]
५०	चोरिंद्री अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	२	३	६	३
५१	तेरिंद्री अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	२	३	५	३
५२	बेरिंद्री अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	२	३	५	३
५३	बादर वनस्पती काइया प्रजाप्ता प्रत्येक शरीरी असं०	१	१	१	३	३
५४	बादरनिगोदा पजाप्ता शरीर असंख्यातगुणा	१	१	१	३	३
५५	बादर पृथ्वीकाइया पजाप्ता असंख्यातगुणा	१	१	१	३	३
५६	बादर अपकाइया पजाप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	१	३	३
५७	बादर वाउकाइया पर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	४	३	३
५८	बादर तेउकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
५९	प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतीकाइया अप० संख्या०	१	१	३	३	४
६०	बादरनीगोदा अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
६१	बादर पृथ्वीकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	४
६२	बादर अपकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	४
६३	बादर वाउकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा	१	१	३	३	३
६४	सूक्ष्म तेउकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा	१	१	३	३	३
[illegible]	सूक्ष्म पृथिवीकाइया अपर्याप्ता विसेसाहिया	१	१	३	३	३
६६	सूक्ष्म अपकाइया अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	३	३	३

६७	सूक्ष्म वाउकाइया अपर्याप्ता विसेसाहियामें	१	१	३	३	३
६८	सूक्ष्म तेऊकाइया प्रजाप्ता संख्यात गुणामे	१	१	१	३	३
६९	सूक्ष्म पृथ्विकाइया पर्याप्ता विसेसाहियामें	१	१	१	३	३
७०	सूक्ष्म अपकाइया पर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	१	३	३
७१	सूक्ष्म वाउकाइया पर्याप्ता विसेसाहियामें	१	१	१	३	३
७२	सूक्ष्म निगोदा अपर्याप्ता असंख्यात गुणामे	१	१	३	३	३
७३	सूक्ष्म निगोदा पर्याप्ता सख्यात गुणामे	१	१	१	३	३
७४	अभव्य जीव अनंत गुणा	१४	१	१३	६	६
७५	पडवाई सम्यगदृष्टि अनंत गुणा	१४	१	१३	६	६
७६	सिद्ध भगवान अनंत गुणा	०	०	०	२	०
७७	बादर वनस्पतिकाइया पर्याप्ता अनंत गुणा	१	१	१	३	३
७८	बादर पर्याप्ता विसेसाहिया	६	१४	१५	१२	६
७९	बादर वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	४
८०	बादर अपर्याप्ता विसेसाहिया	६	३	५	९	६
८१	समुच्चय बादर विसेसाहिया	१२	१४	१५	१२	६
८२	सूक्ष्म वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता असंख्यात गुणामे	१	१	३	३	३
८३	सूक्ष्म अपर्याप्ता विसेसाहिया	१	१	३	३	३
८४	सूक्ष्म वनस्पतीकाइया पर्याप्ता संख्यात गुणामे	१	१	१	३	३

८५	सूक्ष्म पर्याप्ता विशेसाहिया	३	१	१	३	३
८६	समुच्चय सूक्ष्म विशेसाहिया	२	१	२	२	३
८७	भवसिद्धिया जीव विसेसाहिया	१४	१४	१५	१२	६
८८	निगोदा जीव विसेसाहिया	४	१	३	३	३
८९	वनस्पतीकाइया विसेसाहिया	४	१	३	३	४
९०	एकेंद्री जीव विसेसाहिया	४	१	५	३	४
९१	तिर्यंच विसेसाहिया	१४	५	१३	९	६
९२	मिथ्यादृष्टि जीव विशेसाहिया	१४	९	१३	६	६
९३	अविरती जीव विसेसाहिया	१४	४	१३	९	६
९४	सकसाई विसेसाहिया	१४	१०	१५	१०	६
९५	छद्मस्थ जीव विसेसाहिया	१४	१२	१५	१२	६
९६	सजोगी जीव विसेसाहिया	१४	१३	१५	१२	६
९७	संसारथा जीव विसेसाहिया	१४	१४	१५	१२	६
९८	सर्व जीव विसेसाहिया	१४	१४	१५	१२	६

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डेऽष्ठनवति संज्ञाऽख्यं द्वादश प्रकरणम् ॥ १२ ॥ (बोल)





प्रकरण तेरवां—योगको थासठियो.

श्री	योगको थासठियो.	जीव	गुणठाणा	जोग	उपयोग	लेश्या	भाव	आत्म	दंडक
१	समुचै जीवमे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
२	पेहला गुणठाणामे	१४	१	१३	६	६	३	६	२४
३	दूजा गुणठाणामे	६	१	१३	६	६	३	७	१९
४	तीजा गुणठाणामे	१	१	१०	६	६	३	६	१६
५	चोथा गुणठाणामे	२	१	१३	६	६	५	७	१६
६	पांचमा गुणठाणामे	१	१	१२	६	६	५	७	२
७	छठ्ठा गुणठाणामे	१	१	१४	७	६	५	८	१
८	सातमा गुणठाणामे	१	१	५	७	३	५	८	१
९	आठमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	५	८	१
१०	नवमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	५	८	१
११	दसमा गुणठाणामे	१	१	५	४	१	५	८	१
१२	इग्यारमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	५	७	१
१३	बारमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	४	७	१

१४	तेरमा गुणठाणामे	१	१	७	२	१	३	७	१
१५	चवदमां गुणठाणामे	१	१	०	२	•	३	६	१
१६	सच मन जोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१६
१७	असत मनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
१८	मिश्र मनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
१९	विचहार मनजोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१६
२०	सत वचनजोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१६
२१	असत वचनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
२२	मिश्र वचनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
२३	विहार वचनजोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१९
२४	उदारिक जोगमे	१४	१३	१५	१२	६	५	८	१०
२५	उदारिक मिश्रमे	९	६	१५	१२	६	५	८	१०
२६	वैक्रेय जोगमे	३	६	१४	१०	६	५	८	१७
२७	वैक्रेय मिश्रमे	३	५	१४	१०	६	५	८	१७
२८	आहारीक जोगमे	१	१	१४	७	६	५	८	१
२९	आहारीकमिश्रमे	१	१	१४	७	६	५	८	१
३०	कार्मण जोगमे	८	४	१	१०	६	५	८	२४
३१	उदय भावमे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४

३२	उपशम भावमे	२	८	१५	७	६	५	८	१६
३३	क्षायक भावमे	२	११	१५	९	६	५	८	१६
३४	क्षयोपशम भावमे	१४	१२	१५	१०	६	५	८	२४
३५	परिणामिक भावमे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
३६	द्रव्य आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
३७	कषाय आत्मामे	१४	१०	१५	१०	६	५	८	२४
३८	योग आत्मामे	१४	१३	१५	१२	६	५	८	२४
३९	उपयोग आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
४०	ज्ञान आत्मामे	६	१२	१५	९	६	५	८	१९
४१	दर्शन आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
४२	चारित्र आत्मामे	१	९	१५	९	६	५	८	१
४३	वीरी आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
४४	मिथ्यात्व आश्रवमे	१४	१	१३	६	६	३	६	२४
४५	अवृती आत्मावमे	१४	५	१३	९	६	५	७	२४
४६	प्रमाद आश्रवमे	१४	६	१५	१०	६	५	८	२४
४७	कषाय आश्रवमे	१४	१०	१५	१०	६	५	८	२४
४८	योग आश्रवमे	१४	१३	१५	१२	६	५	८	२४
४९	समकित संवरमे	१	१०	१५	९	६	५	८	२

५०	वृत संवरमे	१		१५	९	६	५	८	
५१	प्रमाद संवरमे	१	८	७	९	३	५	८	१
५२	कषाय संवरमे	१	४	७	९	१	५	७	१
५३	अजोग ते संवरमे	१	१	०	२	०	३	६	१
५४	उपशम चारित्रमे	१	१	५	७	१	५	७	१
५५	क्षायक चारित्रमे	१	३	७	९	१	४	७	१
५६	क्षयोपशम चारित्रमे	१	५	१४	७	६	५	८	१
५७	बार बीरजेमे	१४	४	१३	९	६	५	७	२४
५८	पंडीत बीरजमे	१	९	१५	९	६	५	८	१
५९	बालपंडित विरज	१	१	१२	६	६	५	७	२
६०	सीधोमें	०	०	०	२	०	२	४	०

॥ इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ द्वितीय खण्डे योग कोष्ठाऽख्यं त्रयोदश प्रकरणम् ॥





प्रकरण चवदवां–४३ बोलकी अलपाबहुत.

(१) सर्वसूं थोडा मिश्र दृष्टी.

(२) ते थकी पुरुपवेदी असंखेजगुणा.

(३) ते थकी स्त्रीवेदी संखेजगुणा.

(४) ते थकी देवगतीया विसेसाहिया.

(५) ते थकी सन्नी संखेजगुणा.

(६) ते थकी भापक संखेजगुणा.

(७) ते थकी सइंदिया असंखेजगुणा.

(८) ते थकी अभव्य जीव अनंतगुणा.

(९) ते थकी परत अनंतगुणा.

(१०) ते थकी शुक्लपक्षी विसेसाहिया.

(११) ते थकी अजोगी अनंतगुणा.

(१२) ते थकी अणेंदीया.

(१३) नोसन्नी नोअसन्नी तुल्ला विसेसा०

(१४) ते थकी सम्यक् दृष्टि विसेसाहिया.

(१५) ते थकी असन्नीका अलद्धीया विसेसा०

(१६) ते थकी भव्यका अलद्धिया.

(१७) अचर्म तुल्ला विसेसाहिया.

(१८) ते थकी वादर जीव अनंतगुणा.

(१९) ते थकी अणाहारी असंखेजगुणा.

(२०) ते थकी अमजाप्ता असंखेजगुणा.

(२१) ते थकी मजाप्ता संखेजगुणा.

(२२) ते थकी आहारीक विसेसाहिया.

(२३) ते थकी सूक्ष्मजीव विसेसाहिया.

(२४) ते थकी कृष्णपक्षी विसेसाहिया.

(२५) ते थकी अपरत विसेसाहिया.

(२६) ते थकी भव चरम.

(२७) अचरम तुला विसेसाहिया.

(२८) ते थकी असन्नी विसेसाहिया.

(२९) नपुंसक विसेसाहिया.

(३०) ते थकी तिर्यंच विसेसाहिया.

(३१) ते थकी कृष्ण लेशी विसेसाहिया.

(३२) ते थकी मिथ्यात्वी विसेसाहिया.

(३३) ते थकी अनाणी विसेसाहिया.

(३४) ते थकी अविरती विसेसाहिया.

(३५) ते थकी फार्सेंदिया विसेसाहिया.

(३६) ते थकी आहारथा विसेसाहिया.

(३७) ते थकी संसारथा, नो भव, नो अभव, ना,

(३८) अलद्धीया तुला विसेसाहिया.

(३९) ते थकी अभवका अलद्धीया विसे०

(४०) ते थकी रसेंद्रीना अलद्धिया विसे०

(४१) ते थकी पंचेंद्रीना अलद्धिया विसे०

(४२) ते थकी अभासक विसेसाहिया.

(४३) ते थकी सन्नीना अलद्धिया विसेसाहिया.

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे त्रिचत्वारिंशत् संज्ञाऽल्प बहुत्वाऽख्यं चतुर्दश प्रकरणम्. ॥





प्रकरण पंदरवां ६५ बोलनी अल्पाबहुत.



(१) सर्वसूं थोडो समयनो काल.

(२) ते थकी आवलिकानो काल असंखेजगुणो.

(३) ते थकी जघन्य अंतर्मुहूर्तनो काल विसेसाहिया १ समयाधिक.

(४) ते थकी जघन्य आयुबंधनो काल संखेजगुणो.

(५) ते थकी उत्कृष्ट आयुबंधनो काल संखेजगुणो.

(६) ते थकी अपजाप्त एकेंद्रीनो जघन्य काल विसेसाहिया.

(७) अपजाप्त एकेंद्रीनो उत्कृष्ट काल विसेसाहिया.

(८) पजाप्त एकेंद्रीनो जघन्य काल विसेसाहिया.

(९) पजाप्त नीगोदको उत्कृष्ट काल विसेसाहिया.

(१०) तसकायनो उत्कृष्ट विरह काल संखेजगुणो.

(११) अपजाप्ता बेयेंद्रीनो जघन्य काल विसेसाहिया.

(१२) अपजाप्ता बेयेंद्रीनो उत्कृष्ट काल विसेसाहिया.

(१३) पजाप्ता बेंद्रीनो जघन्य काल विसेसाहिया.

(१४) अपजाप्ता तेयेंद्रीनो जघन्य काल विसेसाहिया.

(१५) अपजाप्ता तेयेंद्रीनो उत्कृष्ट काल विसेसाहिया.

(१६) पजाप्ता तेयेंद्रीनो जघन्य काल विसेसाहिया.

(१७) अपजाप्ता चोयेंद्रीनो जघन्य काल विसेसाहिया.

(१८) अप्रजाप्ता चोयेंद्रीनो उत्कृष्ट काल विसेसाहिया.
(१९) प्रजाप्त चोयेंद्रीनो जघन्य काल विसेसाहिया.
(२०) अप्रजाप्ता पंचेंद्रीनो जघन्य काल विसेसाहिया.
(२१) अप्रजाप्ता पंचेंद्रीनो उत्कृष्ट काल विसेसाहिया.
(२२) प्रजाप्ता पचेंद्रीनो जघन्य काल विसेसाहिया.
(२३) उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनो काल संखेजगुणो.
(२४) मुहूर्तनो काल विसेसाहिया एक १ समयाधिक.
(२५) अहोरात्रनो काल संखेजगुणो.
(२६) तेउकायनी उत्कृष्ट थितनो काल संखेजगुणो.
(२७) पक्षनो काल संखेजगुणो.
[२८] मासनो काल संखेजगुणो.
[२९] तेयेंद्रीनो उत्कृष्ट थितनो काल विसेसाहिया.
[३०] ऋतुनो काल विसेसाहिया.
[३१] चोरंद्री उत्कृष्टी थितनो वा अयननो काल विसेसाहिया.
[३२] वर्षनो काल संखेजगुणो.
[३३] युगनो काल संखेजगुणो.
[३४] बेयेंद्रीनी उत्कृष्ट थितनो काल संखेजगुणो.
[३५] वाउकायनी उत्कृष्ट थितनो काल संखेजगुणो.
[३६] अपकायनी उत्कृष्ट थितनो काल संखेजगुणो.
[३७] नरक देवतानी जघन्य थितनो काल ओर वनस्पती कायनी उत्कृष्ट थितनो काल संखेजगुणो.
[३८] पृथिवीकायनी उत्कृष्ट थितनो काल संखेजगुणो.
[३९] उद्धार पल्यना जघन्य असंख्यातमे भागनो काल संखेजगुणो.
[४०] उद्धार पल्यनो काल असंखेजगुणो.
(४१) उद्धार सागरनो काल संखेजगुणो.
(४२) अद्धापल्यना जघन्य असंख्यातमे भागनो काल संखेजगुणो.

(४३) अद्धापल्यना उत्कृष्ट असंख्यातमे भागनो काल असंखेजगुणो.
(४४) अद्धापल्यनो काल संखेजगुणो.
(४५) मनुष तिर्यंचनी उत्कृष्ट थितनो काल संखेजगुणो.
(४६) अद्धासागरनो काल संखेजगुणो.
(४७) नरकदेवनी उत्कृष्ट थितनो काल संखेजगुणो.
(४८) कालचक्रनो काल संखेजगुणो.
(४९) क्षेत्रपल्यनो काल संखेजगुणो.
(५०) क्षेत्र सागरनो काल संखेजगुणो.
(५१) तेउकायनी उत्कृष्ट कायथितनो काल असंखेजगुगो.
(५२) वाउकायनी उत्कृष्ट कायथितनो काल विसेसाहिया.
(५३) अपकाइया कायनीथितनो विसेसाहीया.
(५४) पृथिवीकायनी कायथितनो विसेसाहिया.
(५५) कार्मण पुद्गल प्रावर्तनो काल अनंतगुणो.
(५६) तेजस पुद्गल प्रावर्तनो काल अनंतगुणो.
(५७) उदारिक पुद्गल प्रावर्तनो काल अनंतगुणो.
(५८) श्वासोश्वास पुद्गल प्रा० काल अ० ॥
(५९) मन पुद्गल प्रावर्तननो काल अनंतगुणो.
(६०) वचन पुद्गल प्रावर्तननो काल अनंतगुणो.
(६१) वैक्रेय पुद्गल प्रावर्तननो काल अनंतगुणो.
(६२) वनस्पतीकायनी उत्कृष्ट थितनो काल असंखेजगुणो.
(६३) अतीत काल अनंतगुणो.
(६४) अनागत काल वि. १ समाधिक.
(६५) सर्व काल विसेसाहिया.

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे पंचषष्टि संज्ञाऽल्प बहुत्वाऽख्यं पंचदश प्रकरणम् ॥



प्रकरण सोलवा ६२ बोलकी अलपावहुत.

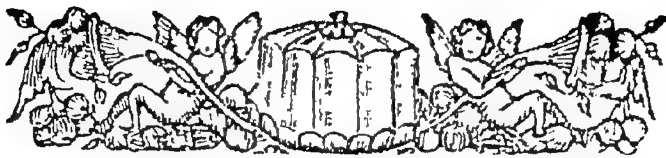
(१) सर्वसूं थोडा छपन्न अंतर्द्वीपना स्त्री पुरुष माहोमाही तुल्ला.
(२) ते थकी देवकुरु उत्तरकुरुना स्त्री पुरुष संखेज गुणा.
(३) ते थकी हरीवास रम्यकवासना स्त्री पुरुष संखेजगुणा.
(४) ते थकी हेमवय एरणवयना स्त्री पुरुष संखेजगुणा.
(५) ते थकी भरत ईरवर्तना पुरुष माहोमाही तुल्ला संखेजगुणा.
(६) ते थकी भरत ईरवर्तनी स्त्री माहोमाही तुल्ला संखेजगुणी.
(७) ते थकी महाविदेहना पुरुष संख्यात गुणा.
(८) ते थकी माहाविदेहनी स्त्री संख्यातगुणी.
(९) अणुत्तर विमानना देवता असंखेजगुणा.
(१०) नव नवग्रीवेकना उपरली त्रिकना पुरुषाः [देवता] संख्यातगुणा.
(११) ते थकी वीचली त्रिकना पूरुषाः [देवता] संख्यातगुणा.
(१२) ते थकी नीचली त्रिकना पुरुषाः [देवता] संख्यातगुणा.
(१३) ते थकी वारमा देवलोकना पुरुषाः [देवता] संख्यातगुणा.
(१४) ते थकी ग्यारमा देवलोकना पुरुषाः (देवता) संख्यातगुणा.
(१५) ते थकी दसमा देवलोकना पुरुषाः (देवता) संख्यातगुणा.
(१६) ते थकी नवमां देवलोकना पुरुषाः (देवता) संख्यातगुणा.
(१७) ते थकी सातमी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंखेजगुणा.
(१८) ते थकी छट्ठी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंखेजगुणा.

(१९) ते थकी आठमां देवलोकना पुरुषाः (देवता) असंख्यातगुणा.
(२०) ते थकी सातमां देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
(२१) ते थकी पांचमी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंख्यातगुणा.
(२२) ते थकी छट्ठा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
(२३) ते थकी चोथी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंख्यातगुणा.
(२४) ते थकी पांचमां देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
(२५) ते थकी तीजी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंख्यातगुणा.
(२६) ते थकी चोथा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
(२७) ते थकी तीजा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
(२८) ते थकी दूजी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंखेजगुणा.
(२९) ते थकी ५६ अंतर्द्वीपना नपुंसक असंखेज गुणा.
(३०) ते थकी देवकुरु उत्तरकुरुना नपुंसक संखेजगुणा.
(३१) ते थकी हरिवास रम्यकवासना नपुंसक संखेजगुणा.
(३२) ते थकी हेमवय एरणवयना नपुंसक संखेजगुणा.
(३३) ते थकी भरत ईरवर्तना नपुंसक संखेजगुणा.
(३४) ते थकी महाविदेहना नपुंसक संखेजगुणा.
(३५) ते थकी दूजा देवलोकना पुरुषाः (देवता) असंखेजगुणा.
(३६) ते थकी दूजा देवलोकनी स्त्री (देवी) संखेजगुणी.
(३७) ते थकी पेला देवलोकना पुरुषाः (देवता) संखेजगुणा.
(३८) ते थकी पेला देवलोकनी स्त्री (देवी) संखेजगुणी.
(३९) ते थकी भवनपती पुरुषाः (देवता) असंखेजगुणा.
(४०) ते थकी भवनपतीनी स्त्री (देवी) असंखेजगुणी.
(४१) ते थकी पेली नरकना नपुंसक (नेरिया) असंखेजगुणा.
(४२) ते थकी खेचर पुरुषाः असंखेजगुणा.
(४३) ते थकी खेचरणी स्त्रिया संखेजगुणी.

(४४) ते थकी स्थलचर पुरुषाः संखेजगुणा.
(४५) ते थकी स्थल चरणी स्त्रिया संखेजगुणी.
(४६) ते थकी जलचर पुरुषाः संखेजगुणाः
(४७) ते थकी जलचरणी स्त्रिया संखेजगुणी.
(४८) ते थकी वाणव्यंतर पुरुषाः (देवता) संखेजगुणा.
(४९) ते थकी वाणव्यंतरनी स्त्रिया (देवी) संखेजगुणा.
(५०) ते थकी ज्योतिषी पुरुषाः (देवता) संखेजगुणा.
(५१) ते थकी ज्योतिषीनी स्त्रिया (देवी) संखेजगुणी.
(५२) ते थकी खेचर नपुंसक असंखेजगुणा.
(५३) ते थकी स्थलचरना नपुंसक विसेसाहिया.
(५४) ते थकी जलचर नपुंसक विसेसाहिया.
(५५) ते थकी चौरिंद्री नपुंसक विसेसाहिया.
(५६) ते थकी तेरिंद्री नपुंसक विसेसाहिया.
(५७) ते थकी बेरिंद्री नपुंसक विसेसाहिया.
(५८) ते थकी तेउकाय नपुंसक असंखेजगुणा.
(५९) ते थकी पृथिवीकाय नपुंसक विसेसाहिया.
(६०) ते थकी अपकाय नपुंसक विसेसाहिया.
(६१) ते थकी वाउकाय नपुंसक विसेसाहिया.
(६२) ते थकी वनस्पतीकाय नपुंसक अनंतगुणा.

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे द्विषष्टि संज्ञाऽल्प बहुत्वाऽख्यं षोडश प्रकरणम् ॥





॥ प्रकरण सतरवा दिसाणुवाई. ॥



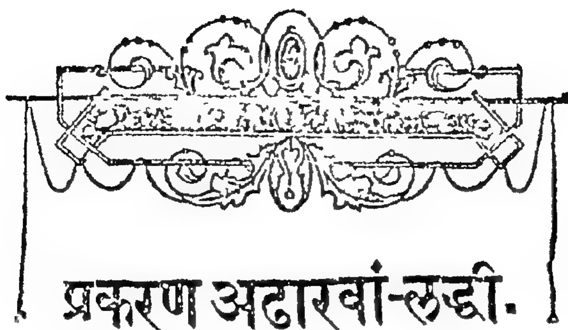
समुचै जीव (१) पाणी (२) वनस्पती (३) वेइंद्री (४) तेइंद्री (५) चोइंद्री (६) तिर्यंच पंचेंद्री (७) ए ७ बोल सर्वथी थोडा थोडा कठीने छे महाराज ॥ हे गोतम! पश्चिम कानीं ॥ क्यों महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम कानी बारे हजार जोजनरो गोतम दीपो ॥ पृथ्वीकायनो पड्यो छे ॥ तिहां पाणी थोडो तिहां नीलण फूलण थोडी तिहां बेइंद्रियादिक जीव थोडा ते भणी सर्व जीव थोडा ॥ १ ॥ ते थकी पूर्व दिसे विसेसाहिया ॥ क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व दिसे गोतम दीपो नथी ॥ २ ॥ ते थकी दक्षिण दिसै विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! चंद्रमा सूर्यका दीपा नथी ॥ ३॥ ते थकी उत्तर दिस संख्यातगुणा क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! असंख्यातमे दीपमे संख्याता कोडान कोड योजनरो मान सरोवर भर्‍यो छे ॥ जठै पाणी घणो। जठै नीलण फूलण घणी, जठै बेइंद्रियादिक जीव घणा ॥ ते भणी सर्व जीव घणा ॥ ४ ॥ पृथिवीकायना जीव सर्वथी थोडा कठीने महाराज ॥ हे गोतम ! दक्षिण दिसे क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! (४) क्रोड ने (६६) लाख भवणपत्याना भवण छे ॥ तिहां पोलाड घणो तिणसूं पृथिवीकाय थोडी ॥१॥ ते थकी उत्तर दिसे विशेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! (२) क्रोड नें (६६) लाख भवणपत्याना भवण छे ॥ तिहां पोलाड थोडी तिणसुं पृथिवीकाय

थोडी ॥ २ ॥ ते थकी पूर्व दिशे विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! भवनपत्यांना भवन नथी ॥ अने चंद्रमा सूर्यना दीपा पृथिवी कायना छे ॥ ३ ॥ ते थकी पिश्चम दिसे विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम दिसे धारै हजार योजनगो गोतम द्विपो पृथिवी कायनो इधको पड्यो छे ॥ ते माटे पृथिवीकाय घणी छे ॥ ४ ॥ तेउकाय (१) मनुष (२) सिद्ध भगवान् ए (३) सर्वथी थोडा कठीणे महाराज ॥ हे गोतम ! उत्तर दक्षिण कानो क्यूं महाराज ॥ हे गोतम! पांच भर्त पांच ईरवर्तना क्षेत्रानां तिहां मनुष्य थोडा तिहां अग्निना जीव थोडा तिहां सिद्ध भगवान् पिण थोडा सीजे ॥ १ ॥ २ ॥ ते थकी पूर्व दिशे संख्यातगुणा ॥ क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! पांच महाविदेह क्षेत्र मोटा जठै मनुष घणा जठै अग्निना जीव घणा जठै सिद्ध भगवान् पिण घणा सिजे ॥ ३ ॥ ते थकी पश्चिम दिसे विसेसाहिया ॥ क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम महाविदेहनी विजय हजार योजननी ऊंडी छे तिहां मनुष्य घणा तिहां अग्निना जीव घणा तिहां सिद्ध भगवान पिण घणा सीजे ॥ ४ ॥ वाउकायने वाणव्यंतर सर्वथी थोडा कठीनें महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व दिसे क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! भूमि कठिण छे ॥ १ ॥ ते थकी पश्चिम दिसे विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! हजार योजननी वीजय ऊंडी छे तिहां पोलाडमें वाउकाय घणी नें वाणव्यंतर घणा ॥ २ ॥ ते थकी उत्तर दिसे विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ उत्तर दिसे (३) क्रोड ने (६६) लाख भवणपत्यांना भवण छे तिहां पोलाडमें वाउकाय घणी नें भवणपत्याना भवण उपरे वाणव्यंतरना नगर घणा ॥ ३ ॥ ते थकी दक्षिण दिसे विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! तिहां (४) क्रोड (६) लाख भवणपत्याना भवण छे तिहां पोलाडमें वाउकाय घणी भवणपत्यांना भवण ऊपरे वाणव्यंतरना नगर घणा ते माटे ॥ ४ ॥

समुचै सातूं नारकी सर्वथी थोडो कठीने छे महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व १ पश्चिम २ उत्तर ३ ए तीन दिसें क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! तिहां पुष्पविकर्ण नरकावासा थोडा छे अनें तें नरकावासा संख्याता जोजनना छै ते माटे थोडी छे ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ते थकी दक्षिण दिसे असंख्यातगुणा क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! पुष्पावेकरणी नरकावासा असंख्याता योजनना मोटा छे ॥ तथा कृष्णपक्षी मिथ्या दृष्टि हिंस्यायें धर्म परुपनें दक्षिणकानी नारकीमें घणा उपजे ॥ ४ ॥ सातमी नारकीना नेरिया सर्वसूं थोडा ३ दिसना ॥ ते थकी दक्षिण दिसना असंख्यास गुणा ॥ ४ ॥ सातमी नारकीना दक्षिण दिसना नेरिया थकी छट्ठी नारकीना तीन दिसना असंख्यात गुणा ३ ते थकी दक्षिण दिसना असंख्यात गुणा ॥ ४ ॥ छट्ठी नारकीना दक्षिण दिसना नेरिया थकी पांचमी नारकीना तीन दिसना असंख्यात गुणा ॥ ते थकी दक्षिण दिसना असंख्यात गुणा ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीना दक्षिण दिस थकी चोथीना ३ दिसना असंख्यात गुणा ते थकी दक्षिण दिसना असंख्यात गुणा इम जावत् पहिली तांइ जाणवा अथवा कहणा ॥ ४ ॥ भवणपती देवता सर्वथी थोडा कठीने छे महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व (१) पश्चिम (२) कानी क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! भवणपत्याना भवण नथी ॥ १ ॥ २ ॥ ते थकी उत्तर दिसै असंख्यात गुणा क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! (३) क्रोड [६६] लाख भवणपत्याना भवण छै ते माटे ॥ ३ ॥ ते थकी दक्षिण दिसै विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! [४] क्रोड नें [६] लाख भवणपत्याना भवण छे तिहां आपणा स्थानकें घणा रहे छे ॥ ४ ॥ ज्योतिषी देवता सर्वथी थोडा कठीनें छे महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व [१] पश्चिम [२] कानी क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! चंद्रमा सूर्यना दीपा छे नें राजधानी नथी तिहां थोडा रहै ॥ २ ॥ ते थकी दक्षिण दिसे विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! चंद्रमा सूर्यना दीपा

नथी नें राजधानी छे ॥ तिहां ज्योतिषी देवता घणा रहे छे ॥ तथा कृष्णपक्षी मिथ्यादृष्टी अग्यान कष्ट करनें उपजे ॥ ३ ॥ ते थकी उत्तर दिसे विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! असंख्याता दीपमें संख्याता कोडान कोड योजननो मानसरोवर भर्यो छे ॥ जठै ज्योतिषी देवता नांनाविक क्रीडा करणने आवै ॥ तिहांना मच्छ, कच्छ, ज्योतिषी देवताना विमान देखीने जाती स्मरण उपजे ॥ श्रावकना व्रत पालै क्रिया कर नियाणो करनें ज्योतिषीमें घणा उपजे ॥ ४ ॥ पहला देवलोकसूं ४ देवलोक ताई सर्वथी थोडा कठीने छे महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व (१) पश्चिम (२) कानी क्यू महाराज॥ हे गोतम! आवलिकावंध अल्प छे. ते माटे ॥ २ ॥ ते थकी उत्तर दिसे असंख्यातगुणा क्यूं महाराज ॥ हे गोतम! तिहां पुष्पाविकीर्णी विमाण असंख्याता योजनना मोटा छे ते माटे ॥ ३ ॥ ते थकी दक्षिण दिसे विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! कृष्णपक्षी मिथ्यादृष्टी अग्यान कष्ट क्रिया करनें दक्षिण दिसे घणा उपजे ॥ ४ ॥ पांचमी देवलोकथी लगायने ८ मा देवलोक ताईना देवता सर्वथी थोडा कठीनें छे महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व (१) पश्चिम (२) उत्तर (३) कानी क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! आवलिकावंध विमाण छोटा जिके घणाने पुष्पावे करणी विमाण मोटा जिके थोडा ते माटे॥१॥२॥३॥ ते थकी दक्षिण दिसे असंख्यातगुणा क्यूं महाराज॥ हे गोतम ! पुष्पविकीर्णी विमाण असंख्याता योजनना मोटा छे जिणमें शुक्लपक्षी समदृष्टि तिर्यंच श्रावक क्रिया करनें घणा उपजे ॥ ४ ॥ नवमा देवलोकथी पांच अणुत्तर विमानना देवता ४ दिसै सरीखा जाणवा. एक: सन्नी मनुष्यहीज उपजे ते माटे ॥ ४ ॥ सिद्ध भगवंत सर्वसूं थोडा कठीने महाराज ॥ हे गोतम ! उत्तर दक्षिण कानी २।१ ते थकी पूर्व दिसे विसेसाहिया (३) ते थकी पिछम दिसें विसेसाहिया ॥ ४ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे दिग्विस्ताराऽख्यं सप्तदश प्रकरणम्. ॥



प्रकरण अठारवां-लद्धी.

गाथा ॥ जीव (१) गई (२) इंदीय (३) काएं (४) सुहुम (५) पज्जत (६) भवत्थेय (७) भवसिद्धिया (८) सन्नी (९) लद्धी (१०) उपयोग (११) योगेय (१२) लेशा (१३) कषाय (१४) वेदेय (१५) आहारे (१६) णाणगोयरे (१७) काल (१८) अंतर (१९) अप्पा बहू (२०) पज्जवाचेवदाराई (२१) ॥ १ ॥

हिवे जीवद्वार कहे छे ॥ समुच्चय जीवमे ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ पहली नर्क भवणपती वाणव्यंतर देव एहमे ३ ग्यानकी नेमा, ३ अग्यानकी भजना ॥ शेष ६ नर्क ज्योतिषी विमाणीक देव एहमे ३ ग्यानकी नेमा, ३ अग्यालकी नेमा ॥ पांच थावरमे ग्यान नथी ॥ २ ॥ अग्यानकी नेमा ॥ तीन विकलेंद्रीमे २ ग्यानकी नेमा ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ तिर्यंचपंचेंद्रीमे ३ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ मनुष्यमे ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ सिद्ध भगवानमे केवल ग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति जीवद्वार ॥ १ ॥

हिवे (गई) गतद्वार कहे छे ॥ गति याने वाटे वहतो जीव

जाणवो ॥ नर्क गतीयामे देवगतीयामे ३ ग्यानकी नेमा ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ तिर्यच गतीयामे २ ग्यान २ अग्यानकी नेमा ॥ मनुष्य गतीयामे ३ ग्यानकी भजना ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ सिद्धगतीयामे केवलग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति गतद्वार ॥ २ ॥

हिवे इंदीयद्वार कहे छे ॥ सइंदिया पंचेंदियामे ४ ग्यानकी भजना॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ एकेंद्रियामे ग्यान नथी ॥ अग्यानकी नेमा ॥ बेयेंदिया तेयेंदिया चोयेंदियामें २ ग्यानकी नेमा ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ अणेंदियामे केवलज्ञाननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति इंदीयद्वार ॥ ३ ॥

हिवे कायद्वार कहे छे ॥ सकाइयामें तस काइयामें ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ पृथिवी अप तेउ वाउ वनसपतीमें ग्यान नथी ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ अकाइयामे केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति कायद्वार ॥ ४ ॥

हिवे सूक्ष्मद्वार कहे छे ॥ सुक्ष्ममे ग्यान नथी ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ वादरमें ५ ग्यानकी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ नो सुक्ष्म नो वादरमें केवलज्ञाननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति सूक्ष्मद्वार ॥ ५ ॥

हिवे मजाप्तद्वार कहे छे ॥ समुचै मजाप्तामे ५ ग्यानकी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ समुच्चय अमजाप्तामें ३ ग्यान ३ अग्यानकी

भजना ॥ पहली नर्क भवणपती वाणव्यंतर एहना अप्रजाप्तामे ३ ग्यानकी नेमा ३ अग्यानकी भजना ॥ सातमी नर्कनो अप्रजाप्तो वर्जी शेष नारकी ज्योतिपी विमाणीक एहना प्रजाप्ता अने अप्रजाप्ता ने पहली नर्क भवणपती वाणव्यंतर एहना प्रजाप्त॥ य सर्वमें ३ ग्यान ३ अग्यानकी नेमा ॥ सातमी नर्कना अप्रजाप्तामें ग्यान नथी ॥ ३ अग्यानकी नेमा ॥ पांच अणुत्तर विमानना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ए १० में ३ ग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी । पांच थावरना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता तीन विकलेंद्रीना प्रजाप्ता असन्नी तिर्यंच पंचेद्रीना प्रजाप्ता असन्नी मनुष्य एहमे ग्यान नथी २ अग्यानकी नेमा ॥ तीन विकलेंद्रीना अप्रजाप्ता असन्नी तिर्यंच पंचेद्रीना अप्रजाप्ता सन्नी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ए ५ बोलमे २ ग्यान २ अग्यानकी नेमा ॥ सन्नी तिर्यंचना अप्रजाप्तामें ३ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ सन्नी मनुष्यना अप्रजाप्तामें ३ ग्यानकी भजना ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ सन्नी मनुष्यमां प्रजाप्तामे ५ ग्यानकी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ नो अप्रजाप्ता नो प्रजाप्तामें केवलग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति प्रजाप्तद्वार ॥ ६ ॥

हिवे भवत्थद्वार कहे छे ॥ नर्क भवथा देव भवथामें ३ ग्यानकी नेमा ३ अग्याननी भजना ॥ तिर्यंच भवथामें ३ ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ मनुष्य भवथामें ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ अभवथामें केवल ग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ ७ ॥

॥ इति भवत्थद्वार ॥ ७ ॥

हिवे भवसियाद्वार कहे छे ॥ भवसिद्धियामें ५ ग्यानकी ३ अग्याननी भजना ॥ अभव सिद्धियामें ग्यान नथी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ नो भव नो अभव सिद्धियामें २ ग्याननी नेमा ॥ अग्यान नथी॥

॥ इति भवसियाद्वार ॥ ८ ॥

हिवे सन्नीद्वार कहे छे ॥ सन्नीमें ४ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानमी भजना ॥ असन्नीमें २ ग्यान २ अग्याननी नेमा ॥ नो सन्नी नो असन्नीमें २ ग्याननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति सन्नीद्वार ॥ ९ ॥

हिवे लद्धीद्वार कहे छे ॥ कही विहाणं भंते लद्धी पनता गोयमा दश विहालद्धी पनता ॥ तंजहा ग्यान लद्धी (१) दर्शन लद्धी (२) चारित्र लद्धी (३) चरिता चरित लद्धी (४) दाण लद्धी (५) लाभ लद्धी (६) भोग लद्धी (७) उपभोग लद्धी (८) वीर्य लद्धी (९) इंद्री लद्धी (१०) भावार्थः समुच्चे ग्यान लद्धियामें ५ ग्यानकी भजना अग्यान नथी ॥ तस अलद्धीयामे ग्यान नथी ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ मतिग्यान श्रुतग्याननां लद्धीयामे ४ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें [अथे गइया केवलग्यानी अथे गइया] ३ अग्याननी भजना ॥ अवधग्याननां लद्धियामें ४ ग्याननी भजना अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें अवधग्यान वर्जीनें ४ ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ मनपर्यवग्याननां लद्धियामें ४ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें मनपर्यव वर्जीने ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ केवलग्याननां लद्धियामें केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें केवल वर्जित ४ चार ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ समुच्चय अनाण लद्धियामें अने मति अनाण श्रुत अनाण लद्धियामें ज्ञान नथी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ तस अलद्धियामें ५ ग्यानकी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ विभंग नाणना लद्धियामें ग्यान नथी ॥ ३ अग्यानकी नेमा ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्यानकी भजना ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥

॥ इति ज्ञान लद्धीना २० बोल ॥

हिवे दर्शणलद्धी कहे छे ॥ दर्शण लद्धीना ८ बोल ॥ समुच्चय दरसण लद्धियामे ५ ग्यान ३ अग्यानकी भजना तस अलद्धिया जीवा नथी ॥ सम्यक् दरसण लद्धियामे ५ ग्यांनकी भजना ॥ अग्यान नथी तस अलद्धियामें ग्यान नथी ३ अग्याननी भजना ॥ मिथ्या दरसण लद्धियामें ग्यान नथी ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥ समामिथ्या दरसण लद्धियामे ग्यान नथी ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामें ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥

॥ इति दर्शण लद्धियाना ८ बोल ॥

समुच्चय चरित लद्धीयामें ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें मनपर्यवग्यान वर्जी ४ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ (१) सामाइक छेदोपस्थापनीक (२) परिहार विसुधी (३) सूक्ष्म संपाय चारित्र (४) ना लद्धियामें ४ ग्याननी भजना ॥अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥ जथाक्षायक चारित्रना लद्धियामें ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ चरिता चरित लद्धियामें ३ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी तस अलद्धियामें ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ दाण लद्धी लाभ लद्धी भोग लद्धी उपभोग लद्धी वीर्य लद्धी ग्यांनालध्धियामें ५ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलध्धियामें केवलग्याननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ बाल वीर्य लध्धियामें ३ ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलध्धियामें ५ ज्ञाननी भजना ॥ अज्ञान नथी ॥ बाल पिंडत वीर्य लध्धियामें ३ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलध्धियामें ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥

पिंडत विर्य लद्धियामें ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें मनपर्यवग्यान वर्जि ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ समुच्चै इंद्री लद्धियामें ४ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामें केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ श्रुतेंद्री चक्षुरिंद्री घ्राणेंद्रीना लद्धियामें ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामे अथे गइया केवलग्यानी अथे गइया ॥ २ अग्याननी नेमा ॥ फरसेंद्रिया लद्धियामें ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ तस-अलद्धियामे केवलग्याननी नेमा अग्यान नथी ॥ लद्धीना ७० बोल जांणवा ॥

॥ इति लद्धीद्वार ॥ १० ॥

हिवे उपयोगद्वार कहे छे ॥ साकारवउत्तामे ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ मतिग्यान श्रुतग्यान अवधग्यान मनपर्यवग्यान साकार वउतामे ४ ग्याननी भजना अग्यान नथी ॥ केवलग्यान साकारवउतामे केवलनी नेमा अग्यान नथी अणाकारवउतामे ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना चक्षु दरसण अणाकारवउतामे अचक्षु दर्शण अणाकारवउत्तामे ४ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना अवधि दर्शण अणाकारवउत्तामे ४ ग्याननी भजना ३ अग्याननी नेमा॥ केवल दर्शण अणाकारवउतामे केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति उपयोगद्वार ॥ ११ ॥

हिवे योगद्वार कहे छे ॥ सजोगी मनजोगी वचनजोगी काय जोगीमें ५ ग्याननी भजना ३॥ अग्याननी भजना अजोगीमें केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी॥

॥ इति योगद्वार ॥ १२ ॥

हिवे लेशाद्वार कहे छे ॥ सलेशीमें शुक्ल लेशीमे ५ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ कृष्ण नील कापोत तेजूं पद्म लेशीमें ४ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ अलेशीमें केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति लेशाद्वार ॥ १३ ॥

हिवे कषायद्वार कहे छे ॥ सकषाइमे क्रोध मान माया लोभ॥ कषाइयामें ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ अकषाइमे ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति कषायद्वार ॥ १४ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ सवेदीमे स्त्रीवेदीमे पुरुषवेदीमें नपुंसक वेदीमें ४ ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ अवेदीमे ५ ग्याननी भजना॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति वेदद्वार ॥ १५ ॥

हिवे आहारीकद्वार कहे छे ॥ आहारीकमे ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना अणाहारीकमे मनपर्यवग्यान वर्जीनें ४ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥

॥ इति आहारीकद्वार ॥ १६ ॥

हिवे नाणगोचरद्वार अन्य जगेथी जाणवो ॥ १७ ॥ हिवे काल-द्वार कहे छे ॥ समुचै सनाणीना २ भेद साइए अपज्जवसीय (१) साइए सपज्जवसीए (२) साइए अपज्जवसीएनी थिति नथी ॥ साइए सपज्जवसीएनी थिति जघन्य तो अंतरमुहुर्तनी ॥ उत्कृष्टी ६६ सागर

जाझेरी ॥ मतिग्यानी श्रुतग्यानीनी जघन्य अंतरमुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागरनी॥ अवधिग्यानीनी जघन्य एक समानी उत्कृष्टी ६६ सागरनी॥ मनपर्यवनी जघन्य एक समांनी उत्कृष्टी देश उणा क्रोड पूर्वनी ॥ केवलग्यानीनी थिति नथी ॥ समुच्चय अनाणी मति अनाणी श्रुत अनाणीना ३ भेद ॥ अणाइए अपजवसीए (१) अणाइ सपजवसीए (२) साइए सपज्जवसीए ॥ ए ३ नी थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टी अनंतो काल देश उणा अर्द्धपुद्गल परावरतननी विभंग अनाणीनी जघन्य अंतमुहूर्तनी उत्कृष्टी ३३ सागर देश उणा क्रोड पूर्वाधिक ॥

॥ इति कालद्वार ॥ १८ ॥

हिवे अंतद्वार कहे छे ॥ सनाणीना २ भेद ॥ साइए अपज्ज वसीएनो आंतरो नथी ॥ साइए सपज्जवसीएको आंतरो जघन्य अंतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो अनंतो काल जाव देश० ॥ मतग्यानी श्रुत ग्यानी अवध मनपर्यव नाणीनो आंतरो जघन्य अंतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो अनंतो काल देश० ॥ केवलज्ञाननो आंतरो नथी ॥ समुचे अनाणी मत श्रुत अनाणीना ३ भेद ॥ साइए सपज्जवसीएनो आंतरो जघन्य अंतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो ६६ सागर जाझेरो ॥ विभंग नाणनो आंतरो जघन्य अंतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो अनंतो काल [जाव वन-स्सइ कालो]

॥ इति अंतद्वार ॥ १९ ॥

सर्वसूं थोडा मनपर्जवनाणी(१)अवधिनाणीअसंख्यातगुणा(२)मत-नाणीश्रुत नाणी विसेसाइया माहोमाही तुला (३) केवलनाणी अनंत-गुणा (४) सनाणी विसेसाहिया (५) ॥ सर्वसूं थोडा विभंग नाणी (१) मत श्रुत अनाणी तुला अनंत (२) भेली अल्पावहुत्व ॥ सर्वसूं

थोडा मनपर्जवनाणी (१) अवधि असंख्यातगुणा (२) मति श्रुती नाणी तुला विसेसाहिया (४) विभंग अनाणी असंख्यातगुणा (५) केवल नाणी अनंतगुणा (६) सनाणी विसेसाहिया (७) मत श्रुत अज्ञानी तुला अनंतगुणा (९)

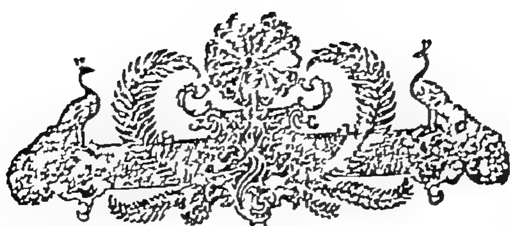
॥ इति अल्पाबहुत्वद्वार ॥ २० ॥

सर्वथी थोडा मनपर्यव ग्यानरा पज्जवा (१) अवधि ग्यानरा पज्जवा अनंतगुणा (२) श्रुत ग्यानरापजव अनंतगुणा (३) मतग्या-नरा पज्जवा अनंतगुणा (४) केवलग्यानरा पज्जवा अनंतगुणा [५] सर्वथी थोडा विभंग अनाणना पजवा (१) श्रुत अनाणना पजवा अनंतगुणा [२] मतग्यानरा पजवा अनंतगुणा [३] भेली अल्पाबहु-त्वं ॥ सर्वथी थोडा मनपर्यव पजवा [१] विभंगना पजवा अनंत-गुणा [२] अवधि० पजवा अनंतगुणा [३] श्रोत्र अग्यान पजवा अनंतगुणा [४] श्रुत नाण० पजवा विसेसाहिया [५] मत अनाण पजवा अनंतगुणा (६) मति नाण० पजवा विसेसाहिया (७) केवल नाण० पजवा अनंत [८]

॥ इति पज्जवद्वार ॥ २१ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे 'लब्धी' आख्यं अष्टादश प्रकरणम् ॥





प्रकरण एकोणीसवां—कायस्थित.

॥ गाथा ॥

जीव (१) गई (२) इंदीय (३) काय (४) जोए (५) वेय (६) कषाय [७] लेस्या (८) समत्त (९) णाण (१०) दंसणे (११) संजय [१२] उपयोग [१३] आहारे (१४) भासक (१५) परत्त (१६) पञ्चत्ते (१७) सुहुम (१८) सन्नी (१९) भवत्थ (२०) चरमेय (२१) ए ए संतुपयाणं कायठिए होइनायव्वा ॥ १ ॥ भावार्थः जीवनो जीवपणे रहतो सदा काल शाश्वतो रहै जीव धुव्वे (१) नित्ते [२] सासए (३) अक्षय (४) अवय (५) अवठिए [६] जीवनो तीन कालमै कदेई अजीव हुवै नही ॥ जिणनें जीव कहिये ॥

॥ इति जीवद्वार ॥ १ ॥

हिवे गतद्वार कहे छे ॥ नारकी देवतानी कायस्थित जघन्य १० हजार वर्षनी उत्कृष्टी ३३ सागरनी॥ देवीनी ज० १० हजार वर्षनी उत्कृ० ५५ पल्यनी ॥ तिर्यंचनी ज० अंतर्मुहूर्तनी उ० अनंतो काल अनंती अपसरपणी अनंती उत्सर्पणी ॥ अ० कालो अ० खेतो ॥ "क्षेत्र थकी आवलिया ए असंखेजे भागे" आवलिकाके असंख्या-

तमे भाग जितरा समा होय तितरा पुद्गल प्रावर्तन कालतक जीव तिर्यंचमें रुलै ॥ तिर्यंचणी १ मनुष्य २ मनुष्यणी ए ३ नी का० ज० अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३ पल्य पृथक् क्रोड पूर्व अधिक ॥ सिद्धसाइय अपजवसीए नर्क तिर्यंच तिर्यंचणी मनुष्य मनुष्यणी देवता देवी ए ७ बोल अप्रजाप्तकी का० ज० उ० अंतर्मुहूर्तनी ॥ नारकी देवता प्रजाप्तनी का० जघन्य १० हजार वरसनी अंतर्मुहूर्तनी ऊणी ॥ उ० ३३ सागर अंतर्मुहूर्त ऊणी ॥ देवी प्रजाप्तनी का० जघन्य १० हजार वरसनी अंतर्मुहूर्त ऊणी ॥ उत्कृष्ट ५५ पल्य अंतर्मुहूर्त ऊणी ॥ तिर्यंच तिर्यंचणी मनुष्य मनुष्यणी ए ४ प्रजाप्तानी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी ॥ उत्कृष्टी ३ पल्य अंतर्मुहूर्त ऊणी ॥

॥ इति गतिद्वार ॥ २ ॥

हिवे इंद्रिद्वार कहे छे ॥ सेइंदियाना दोय भेद ॥ अणाइए अपज्जवसीए अभव्य (१) अणाइए सपज्जवसीए ॥ ते भव्य [२] एकेंद्रीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतोकाल जाव असंखेजा पुग्गल परियट्टा ॥ बेयेंद्री तेरींद्री चोरेंद्रीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता कालनी ॥ पंचेंद्रीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी १ हजार सागर पल्यके असंख्यातमे भाग अधिक ॥ अणेंदिया साइए अपज्जसीए सइंदिया इकेंद्रिया बेरिंद्रिया तेरिंद्रिया चोरेंद्रिया पचेंद्रिया ए ७ बोल अप्रजाप्तानी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ सइंदिया प्रजाप्तनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी एकेंद्री प्रजाप्तनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता हजार वरसनी ॥ बेरिंद्रीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता वरसांनी ॥ तेरिंद्रिनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता वरसानी ॥ रायंद्रीयानी ॥ चौरेंद्रीयानी का०

जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता मासनी ॥ पंचेंद्रीयानी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागरपूरी ॥

॥ इति इंद्रीद्वार ॥ ३ ॥

हिवे कायद्वार कहे छे ॥ सकाइयाना २ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) पृथिवी अप तेउ वायु ए ४ नी का० जघन्य अंतरमुहूर्तनी ॥ उत्कृष्टी असंख्यातो काल असंख्याती अपसरपणी जाव असंख्यात लोका ॥ वनस्पतीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल जाव असंखेजा पुग्गल परियट्टा ॥ तसकायनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी दोय हजार सागर संख्याता वरसाधिक ॥ अकाइया साइए अपज्जवसीए ते सिद्ध ॥ सकाइया पृथिवीकाइया अप तेउ वाउ वनस्पती त्रसकाइया ए ७ अप्रजाप्तानी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी सकाइया तसकाइया प्रजाप्तानी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी । उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी ॥ पृथिवीकाइया अपकाइया वाउकाइया वनस्पतीकाइया प्रजाप्तानी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता हजार वर्षनी ॥ तेउ प्रजाप्तानी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता रायेंदीयानी ॥ हिवे ७ बोल सूक्ष्मना कहछे ॥ समुचै सुक्ष्म सूक्ष्म पृथिवीकाय सूक्ष्म अपकाय सूक्ष्म तेऊ काय सूक्ष्म वाउकाय सूक्ष्म वनस्पतीकाय सूक्ष्म निगोद ए ७ नी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यातो काल असंख्याती अपसरप्णी असंख्याती उतसरपणी असंख्यात कालो असंख्यात क्षेत्रो असंख्यात लोगा ॥ ए ७ अप्रजाप्ता प्रजाप्तानी का० जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनी ॥ हिवे ९ बोल बादरनां ॥ समुचैबादर (१) बादर पृथिवीकाय (२) बादर अपकाय (३) बादर तेऊकाय (४) बादर वाउकाय (५) बादर वनस्पतीकाय (६)

प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पती (७) बादर त्रस (८) बादर निगोद (९) जिणमें समुचे बादर बादर वनस्पती ए २ नी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यातो काल असंख्याती अपसरपणी असंख्याती उत्सरपणी असंख्यात कालो असंख्यात क्षेत्तो ॥ क्षेत्रकी थकी आंगुलीया ए असंखेजइ भागे ॥ आंगुलकाके असंख्यातमें भाग जितरा आंका प्रदेश होय तितरा कालचक्र जीव २ बोलमें रुलै ॥ बादर पृथिवीकाय बादरअपकाय बादरतेउकाय बादर वाउकाय प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतीकाय बादर निगोद ए ६ नी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ७० कोडा कोड सागरनी ॥ बादर त्रसनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृ० दोय हजार सागर संख्याता वरसाधिक ए नव बोल अप्रजाप्तानी का० ज० उ० अंतर्मुहूर्तनी समचै बादर बादर त्रस काय प्रजाप्ता जघन्य का० अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक सो सागर जाझेरी ॥ बादर पृथिवीकाय बादर अपकाय बादर वायुकाय बादर वनस्पतीकाय प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पती एहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता हजार वरसनी ॥ बादर तेउनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता रायेंदीयानी ॥ बादर निगोदनी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ समुचै निगोदनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल अनंती अवसरपणी अनंती उत्सरपणी अनंतो काल अनंतो खेतो जाव अढाई पुग्गल प्रावर्तन ॥

॥ इति कायाद्वार ॥ ४ ॥

हिवे योगद्वार कहे छे ॥ सजोगीना २ भेद ॥ अणाइए अपज्जवसीए ॥ अणाइए सपज्जवसीए ॥ मनजोगी वचननी का० जघन्य १ समानी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ कायजोगीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी

उत्कृष्टी अनंतो काल ॥ जाववणसइ कालो ॥ अजोगी साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति जोगद्वार ॥ ५ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ सवेदीना ३ भेद ॥ अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) ए ३नी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतोकाल जाव देश उणा अर्ध पुद्गल पावर्तन ॥ स्त्री वेदनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टा स्त्री वेदना ५ भेद पहला भेदनी का० उत्कृष्टी ११० पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥ दूजा भेदनी का० उ० १०० पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक॥ तीजा भेदनी का० उ० १८ पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥ चोथा भेदनी का० उ० १४ पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥ पांचमा भेदनी का० उ० ९ पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥ पुरुष वेदनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी ॥ नपुंसक वेदनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अनंतो काल जाव वणसइ कालो ॥ अवेदीना २ भेद साइए अपज्जवसीए ॥ साइए सपज्जवसीए॥ तेनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति वेदद्वार ॥ ६ ॥

हिवे कषायद्वार कहे छे ॥ सकषाईना ३ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) तेहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंता कालनी जाव देश उणा अर्द्ध पुद्गल पावर्तन ॥ क्रोध कषाइ या मान कषाईया माया कषाईयानी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ लोभ कषाइयानी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी अकषाइयाना २ भेद साइए

अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) तेहनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति कपायद्वार ॥ ७ ॥

हिवे लेशाद्वार कहे छे ॥ सलेशीना २ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) कृष्णलेशी शुक्ललेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३३ सागर अंतर्मुहूर्त अधिक ॥ नील लेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी १० सागर पल्यने असंख्यातमे भाग अधिक ॥ कापोत लेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३ सागर पल्यके असंख्यातमे भाग ॥ तेजु लेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी २ सागर पल्यने असंख्यातमे भाग ॥ पद्म लेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी १० सागर अंतर्मुहूर्त अधिक ॥ अलेशी साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति लेशाद्वार ॥ ८ ॥

हिवे सम्यक्तद्वार कहे छे ॥ समदृष्टीना २ भेद साइए अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) तेहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी साश्वादान समकितनी जघन्य का० १ समयनी उत्कृष्टी ६ आवलिकानी ॥ उपसम समकितनी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ वेदक समकितनी का० जघन्य उत्कृष्ट १ समयनी ॥ क्षयोपशम समकितनी का० जघन्य अंतर्मूहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी ॥ क्षायक सम्यक्त साइए अपज्जवसीए ॥ मिथ्यादृष्टिना ३ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाईए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) एहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल जाव देशोणा अर्ध पुद्गल भावर्तन ॥ मिश्रदृष्टीनी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति सम्यक्तद्वार ॥ ९ ॥

हिवे ज्ञानद्वार कहे छे ॥ सनाणीना २ भेद साइए अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) एहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी ॥ मति श्रुति नाणीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी॥ मन नाणी पर्यवनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी देशोणा कोड पूर्वनी ॥ केवलग्याननी का० साइए अपज्जवसीए । मति श्रुत अनाणीना ३ भेद अणाइए अपज्जवसीए(१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) एहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो कालनी जाव देशोणा अर्द्धपुद्गल प्रावर्तन ॥ विभंग अनाणीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३३ सागर देशोणा कोड पूर्व अधिक ॥

॥ इति ज्ञानद्वार ॥ १० ॥

हिवे दर्शणद्वार कहे छे ॥ चक्षु दर्शननी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी हजार सागर जाझेरी अचक्षु दर्शणना २ भेद अणाइ अपज्जवसीए [१] अणाइए सपज्जवसीए (२) अवधि दर्शननी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी १३२ सागर जाझेरी ॥ केवल दर्शणनी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति दर्शणद्वार ॥ ११ ॥

हिवे संजतीद्वार कहे छे ॥ समुचै संजती सामाइक चारित्र छेदोपस्थापनीक चारित्र जथाक्षायक चारित्र ए ४ नी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी देशोणा क्रोड पूर्वनी परिहार विशुध्ध,चारित्रनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी २९ वर्ष उंण क्रोड पूर्वनी ॥ सूक्ष्म संपायचारित्रनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी

संजता संजतीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी देसोणा कोड पूर्वनी असंजतीना ३ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) एहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल जाव देशोणा अर्ध पुद्गल पावर्तन॥नो संजती नो असंजती नो संजता संजतीनी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति संयतिद्वार ॥ १२ ॥

हिवे उपयोगद्वार कहे छे ॥ साकार वउत्ता अणाकार वउत्तानी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति उपयोगद्वार ॥ १३ ॥

हिवे आहारिकद्वार कहे छे ॥ आहारीकना २ भेद छद्मस्थ आहारीक केवल आहारीक छद्मस्थ आहारिकनी का० जघन्य १ खोडागभव २ समय उणी उत्कृष्टी असंख्यातो काल असंख्याती अपसरपणी " जाव आंगुलीयाए असंखेजइ भागे " आंगुलके असंख्यातमे भाग जितरा आकाश प्रदेश होय तितरा काल चक्र जीव छद्मस्थ आहारीक रहै ॥ केवल आहारिकनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी देशोणा कोड पूर्वनी ॥ अणाहारीकना २ भेद छद्म अणारीक (१) केवल अणारीक (२) छद्मस्थ अणारीकनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी २ समयनी केवल अणारीकना २ भेद सिद्ध अणाहारीक (१) संसारी केवली अणाहारीक (२) सिद्ध केवली अणारीकनी का० साइए अपज्जवसीए॥ संसारी केवली अणाहारीकना २ भेद सजोगी केवली अणारीक (१) अजोगी केवली अणारीक (२) सजोगी केवली अणारिकनी का० जघन्य उत्कृष्टी ३ समयनी अजोगी केवली अणारिकनी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति आहारीकद्वार ॥ १४ ॥

हिवे भासकद्वार कहे छे ॥ भासकनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ अभासकना २ भेद साइए अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) एहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल "जाव वणसइ कालो" ॥

॥ इति भासकद्वार ॥ १५ ॥

हिवे परतद्वार कहे छे ॥ परतना २ भेद संसार परत (१) काय परत (२) संसार परतनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल. "जाव देशोणा अर्द्धपुद्गल प्रावर्त्तन काय परतनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यातो काल "जाव पुढवी कालो" अपरतना २ भेद संसार अपरत (१) काय अपरत (२) संसार अपरतना २ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) काय अपरतनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल " जाव वणसइ कालो " नो परत्त नो अपरत्तनी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति परतद्वार ॥ १६ ॥

हिवे प्रजाप्तद्वार कहे छे ॥ प्रजाप्तनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी ॥ अप्रजाप्तनी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ नो अप्रजाप्तानो प्रजाप्तानी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति प्रजाप्तद्वार ॥ १७ ॥

हिवे सूक्ष्मद्वार कहे छे ॥ सूक्ष्मनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यातो काल " जाव असंख्यात लोगा " बादरनी का०

जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यानो काल "जाव आंगुलियाए असंखेजइ भागे" नो सूक्ष्म नो वादरनी का० साइए अपज्जवसीए॥

॥ इति सूक्ष्मद्वार ॥ १८ ॥

हिवे सन्नीद्वार कहे छे ॥ सन्नीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी॥ असन्नीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल "जाव देशो वनसइ कालो" नो सन्नी नो असन्नी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति सन्नीद्वार ॥ १९ ॥

हिवे भवद्वार कहे छे ॥ भवते अणाइए सपज्जवसीए (१) अभव अणाइए अपज्जवसीए (२) नो भव नो अभव साइए अपज्जवसीए ॥

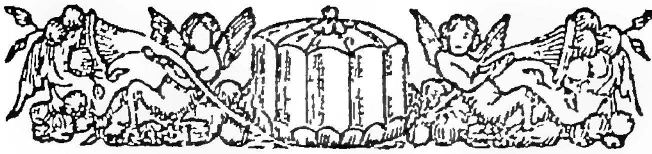
॥ इति भवद्वार ॥ २० ॥

हिवे चर्मद्वार कहे छे ॥ चर्मते अणाइए अपज्जवसीए ॥ अचर्मना २ भेद ॥ अणाइए अपज्जवसीए ते अभव्य ॥ साइए अपज्जवसीए ते सिद्ध भगवान ॥

॥ इति चर्मद्वार ॥ २१ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे काय स्थित्याख्यं एकोनत्रिंशति प्रकरणम् ॥





प्रकरण वीसवा-गतागत.

		आगति-ते-आविवौ		गतीते जायवौ तेहना बोल.	
१	प्रथम नारकीनी	२५	कर्म भूमि १५ पर्याप्ता पांच सन्नीऽसन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता १०	४०	१५ कर्म भूमिना मनुष्य अने ५ सन्नी तिर्यंच ए २० ना पर्याप्ता अपर्याप्ता
२	दूजी नारकीनी	२०	पूर्वत् ५ असन्नी टल्या	४०	१५ कर्मभूमिना अपर्याप्तापर्याप्ता अने सन्नी तिर्यंचना पर्याप्ता ने अपर्याप्ता पूर्व ४०
३	तीजी नारकीनी	१९	पूर्व २० कह्या जिणमेसू एक भुजपर टल्यो	४०	४० पूर्ववत्
४	चोथी नारकीनी	१९	पूर्व १९ कह्या जिणमेसू खेचर १ टल्यो	४०	४० पूर्ववत्
५	पांचमी नारकीनी	१७	पूर्व १८ कह्या जिणमेसू एक स्थलचर टल्यो	४०	४० पूर्ववत्

	आगत.			गत.	
६	छट्ठी नारकीनी	१६	पूर्वे १७ कह्या जिगमेसु उरपर टल्यो	४०	४० पूर्ववत्
७	सातमी नारकीनी	१६	इहां स्त्री टली	१०	५ सज्ञी तिर्यंचका अपर्याप्ता एवं १०
८	१० भवनपती १५ पर्माधामी १६ व्यंतर १० तिर्यग् जभकानी.	१११	१०१ गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता अने ५ सञ्ञी ५ असञ्ञी तिर्यंचना पर्याप्ता एवं १११	४६	१५ कर्म भूमिना मनुष्य ५ सञ्ञी तिर्यंच ए २० अनें पृथ्वी १ अप २ वन ३ ए २३ ना पर्याप्ता अपर्याप्ता एवं ४६
९	१० ज्योतिषीनी	५०	१५ कर्मभूमी ३० अकर्म० ५सञ्ञी एना पर्याप्ता	४६	४६ पूर्ववत्
१०	प्रथम देवलोकनी	५०	१० पूर्ववत्	४६	४६ पूर्ववत्

	आगत.			गत.	
११	दूजा देवलोकने	४०	१५ कर्मभूमी ५ सन्नी ति० ५ देव कु० ५ उत्त० ५ हर.वास० ५ र-म्यग्न० ए सर्व प०	४६	४६ पूर्ववत्
१२	त्रीजा देवलोकथि लेई ८ मा लगेनी	२०	१५ कर्म भूमीना ५ सन्नी तिर्यंचका प्रजाप्ता	४०	१५ कर्मभूमी ५ सन्नी तिर्यंच ए २० का अप्रजाप्ता प्रजाप्ता एवं ४०
१३	नोग्रीवेकथी लई पांच अणुत्तर वि-मान लगेनी	१५	१५ कर्मभूमीना प्रर्याप्ता	३०	१५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता एवं ३०
१४	पृथ्वी अप वन-स्पती ए ३ नी	२४३	१०१ मनुष्य अ-संख्यानी० १५ कर्मभूमीना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ४८ तिर्यंच ६४ देव	१७१	६४ देवता वरजीनें
१५	तेऊ (१) वाऊनी (२)	१७९	लड पूर्ववत्	४८	तिर्यंच सर्व.
१६	३ विकलेंद्रियनी	१७९	लड पूर्ववत्	१७९	लड पूर्ववत्

आगत. गत.

१७	सन्नी तिर्यंचनी	२६७	१७९ की लड. ८१ देवता ८ मा देवलोक लगे. ७ नारकी	५२७	८ मा देवलोक सूं ऊपरला देवता वर्जी.
१८	असन्नि तिर्यंचनी	१७९	लड०	३९५	१७९की लड. ५१ देवता ५६ अंतर्द्वीपाः प्रथम नर्क एवं ३९५
	सन्नी तिर्यंचनी	२६७	८१ जातना देवता १७९ नी लड ओर सात नारकीना प्रजाप्ता	५२७	ते ५६३ माहियी नवमा देवलोकसे लेकर सवार्थसिद्ध १८ ना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता ए ३६ वज्याशेष५२७रह्या
१९	सन्नी मनुष्यनी	२७६	१७१ की लड. तेउ-वाउना वर्जी ९९ देवता ६ नारकीना प्रजाप्ता	५६३	जीवना सर्व भेद
२०	असन्नी मनुष्यनी	१७१	१७९ लडमांहिथी तेउ वाउ ना ८ भेद टालीनें ॥	१७९	१३१ मनुष्यना अने ४८ भेद तिर्यंचना एवं १७९
२१	देवकुरु उत्तर कुरुनी	२०	१५ कर्मभूमी ५ सन्नी तिर्यंच एवं २०	१२८	प्रथम ६४ जातका देवलोक अप्रजाप्ता प्रजाप्ता एवं १२८

		आगत.		गत.	
२२	हरीवास २४ रम्यकवासनी	२०	पूर्ववत्	१२६	दूजा देवलोक तांई ६३ जातना देवताना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता एवं १२६
२३	हेमवय-ऐरणवयनी	२०	पूर्ववत्	१२४	भवनपतीसे लेकर पहिला देवलोक तांई ६२ जातका देवताना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता० एवं १२४
२४	५६ अंतर्द्वीपानी	२५	१५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ५ सन्नी ५ असन्नी तिर्यंच एवं २५	१०२	१० भुवनपती १६ व्राणव्यंतर १५ परमाधामी १० तिर्यंचका एना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता एव १०२
२५	तीर्थंकरनी	३८	१२ देवलोक ९ लोकांतीक ९ नवग्रीवेक ३ नारकीएना प्रजाप्ता एवं ३८	मोक्ष	मोक्षनी
२६	चक्रवर्तीनी	८२	८१ जातका देवता १ नारकी एना प्रजाप्ता एवं ८२	१४	सात नारकीना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता एवं १४
२७	वासुदेवनी	३२	१२ देवलोक ९ नवग्रीवेक ९ लोकांतिक २ नारकी एवं ३२	१४	पूर्ववत्

			आगत.	गत.	
२८	बलदेधकी	८३	३ क्लिविशी १५ परमाधामी वरजीन शेख देवता और २ नारकी एवं ८३	७० तथा मोक्ष	१२ देवलोक ९ नवग्रीवेक ९ लोकांतिक ५ अणुत्तर विमान एहना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता.
२९	केवलीनी	१०८	८१ जातका देवता १५ कर्मभूमी ५ सन्नी तिर्यंचका प्रजाप्ता पृथ्वि-पाणी-वनस्पती ४ नारकी एवं १०८	०	सिद्धगति
३०	साधुजीनो	२७५	मनुष्यवत् ५ नारकी-लगे	७०	बलदेववत्
३१	श्रावकनी	२७६	मनुष्यवत् ६ नारकी-लगे.	४२	१२ देवलोक ९ लोकांतिक एना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता एवं ४२
३२	समदृष्टीनी	३६३	९९ जातका देवताका प्रजाप्ता ८६ युगुलिया. सात नारकी अप्रयाप्ता-तेउ वाउना ८ टळ्या एवं ५६३ मेसूं	२२२	८१ देवता १५ कर्मभूमी ५ सन्नीतिर्यंच ६ नारकी. ए १०७ प्रजाप्ता-अप्रजाप्ता. (२१४) ३ विकलेंद्री ५ असन्नी तिर्यंच
३३	मिश्रदृष्टीनी	३६३	पूर्ववत्	०	गती नथी.

		आगत.		गत.	
३४	मिथ्यादृष्टिनो	३७१	९९ जातका देवता ८६ युगुलिया ७ नारकी प्रजाप्ता १७१ कि लड	५६३	५ अणुत्तरविमानवर्जी
३५	स्त्री वेदनी	३७१	पूर्ववत्	५६१	सातमी नारकीवर्जी
३६	पुरुष वेदनी	३७१	पूर्ववत्	५६३	सर्व
३७	नपुंसक वेदनी	२८५	पूर्व ३७१ कह्या जिगमेसू ८६ युगुलिया टलया	५६३	सर्व
३८	सिद्ध भगवान्नी	१५	१५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता	०	०

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे गतागत्याऽख्यं विंशति तम प्रकरणम्. ॥





प्रकरण एकवीसवां–संजया.



॥ गाथा ॥

पण्णवण (१) वेय (२) रागे (३) कप्प (४) चरित्त (५) पडिसेवणा (६) नाणे (७) तित्ये (८) लिंग (९) सरीरे (१०) खित्ते (११) काले (१२) गई (१३) संजम [१४] निकासे (१५) ॥ १ ॥ जोगु (१६) वओगे (१७) कसाए (१८) लेस्या (१९) परिणाम (२०) बंध (२१) वेदेय (२२) ॥ कम्मोदी रण (२३) उवसं ॥ पंजहण (२४) सन्नाय (२५) आहारे (२६) ॥ २ ॥ भव (२७) आगरिसे (२८) कालं [२९] तरेय [३०] ॥ समुग्घाय (३१) खेत्त (३२) फुसणाय (३३) ॥ भावे (३४) परिमाणेय (३५) खलु ॥ अप्पा बहुयसंजयाणं (३६) ॥ ३ ॥

हिवे प्रथम पन्नवणद्वार कहे छे ॥ पन्नयण कहतां परूप्या संजयाना भेद ॥ सामाइक चारित्र (१) छेदोपस्थापनीय चारित्र (२) परिहार विशुधि चारित्र [३] सूक्ष्म संपराय चारित्र (४) जथाखायिक चारित्र (५) हिवे उत्तरभेद कहे छे. सामाइक चारित्रना (२) भेद । इत्तरीएय (१) आवकहिएय (२) इत्तरियते थोडा कालनो ॥ प्रथम चरम तीर्थंकरने वारै होय । ते किम सामाइक छेदीने छेदोपस्थापनीय हुवै ॥ सातमे दिने तथा चौथे मासे तथा छट्ठे मासे ते भणी (१) आवते जाव जीव लगै रहे ते मध्य २२ तीर्थंकरांनै वारै । तथा महा-

विदेहका साधुओंके होय ॥ ते किम वडी दिक्ष्या नहि देवै ॥ ते भणी (२) ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय चारित्रना (२) भेद । साइयारे (१) निरइयारे (२) साइयारे तो अतिचार लागा देवै (१) निरइयारे ते। अतिचार लागा विनां देवै । ते किम छोटी दिक्षा थकी वडी दिक्षा छेवै तथा पार्श्वनाथजीना साधु महावीरजीका सासणमें आवै जद छेदोपस्थापनीय लेवै ते भणी (२) ॥ २ ॥ परिहार विसुधि चारित्रना (२) भेद । निविसमाणे (१) निविठकाइय (२) निविसमाणे तो परिहार विसुधी तप करे ॥ ते किम नव (९) साधु गच्छ वारै नीकलीनै तप करवा मांडयो. १८ मासकौ प्रमाण वांध्यो जिणमें प्रथम छ मासमें चार साधु तप करे, चार साधु वैयावृत्य करै गुरु व्याख्यान करे ॥ वीजा छ मासमे वैयावृत्यका करणेवाला तप करे तपका करणेवाला वैयावच्च करे ॥ त्रीजा छ मासमें गुरु तप करे शेष ८ जणा वैयावृत्य करै ॥ अव तपनो प्रमाण कहे छेः–प्रथम छ मासमें सीत कालमें तो चोथ भक्त करे उष्णकालमे छठं भक्त करै वर्षाकालमें अष्टं भक्त करे वीजा छ मासमें तीनूंही ऋतुमें एकेक उपवास बधावें ॥ २ । ३ । ४ । त्रीजा छ माससे पुनः तीनूंही रितुमें पुनः एकेकोपवास बधावे । ३ । ४ । ५ । अर नवेंही साधु सदाही आंविल करे इम अठरा मासतांई तप करै जिणनै निविसमाणे कहिये (१) निविठमाणे ते परिहार तप करी निवर्ते जिस्को कहिये (२) ॥ ३ ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्रना (२) भेद ॥ संक्लेसमाणेय (१) विसुधमाणे (२) संक्लेसमाणे ते उपशम श्रेणीथी पडतां १० मे गुणठाणें आवै जद होवे (१) विसुधिमाणे से दोनूंही श्रेणी चढतां थकां आवे (२) ॥४॥ जथाख्यायिक .चारित्रना [२] भेद। छद्मस्थ [१] केवली (२) छद्मस्थ ते ११ में । १२ में गुणठाणे होवे [१] केवली ते । १३ में । १४ मे गुणठाणें होवै (२) ॥ ५ ॥

॥ इति प्रथमद्वार ॥ १ ॥

हिवै वेदद्वार कहे छे ॥ प्रथम २ संजया सवेदीभी होय ॥ तथा अवेदीभी होय ॥ सवेदी होय तौ। तीनूंहिं वेद होय । अनें अवेदी होय से उपशमवेदी तथा क्षीणवेदी होय ॥ परिहार विसुधि सवेदीहीज होवै ॥ पुरुषवेदी तथा पुरुष नपुंसकवेदी होय । पिण स्त्री वेदीं नही होय । अनें अवेदी पिण न होय ॥ सूक्ष्म संपराय अने जथाखायिक । सवेदी नही होय । अवेदीहीज होय तथा उपशम वेदी तथा क्षीण वेदी होय ॥ ५ ॥

॥ इति वेदद्वार ॥ २ ॥

हिवे रागद्वार कहे छे ॥ प्रथम चार संजया तौ सरागी होय ॥ जथाखायक चारित्र उपशम रागी होय ॥ तथा क्षीण रागी होय ॥

॥ इति रागद्वार ॥ ३ ॥

हिवे कल्पद्वार कहे छे ॥ सामाइक सूक्ष्म संपराय जथाखायक। ए ३ थित कल्पी होय॥ अंथित कल्पी पिण होय। छेदोपस्थापनी। परिहार विशुद्धी । ए २ थित कल्पी तो होय । पिण अथित कल्पी न होय ॥

हिवे थित कल्पी अथित कल्पी नो अर्थ कहे छे ॥

थित कल्पी तो दस बोल पाले ॥ ते प्रथम चरम तीर्थंकरनै वारै होय ॥ अने अथित कल्पी ते ४ बोल तो निश्चयही पाले । अनै छै बोलकी भजना। पाले तथा न पाले ॥ ते दस बोलना नाम कहे छे॥ सेज्यातर पिंड (१) महाव्रत ४ (२) पुरुष ज्येष्ठ ते साध्वी साधुनें वंदना करे (३) कीर्ति कर्म ते लघु साधु वडा साधुनें वंदना करे ॥ ४ ॥ ए चार तो अथित कल्प कहीजे । अचेल ते वस्त्रनो प्रमाण करे ॥ वर्ण थकी अने मोल थकी ॥ ५ ॥ उदेसिक ते कोई साधुने

काजै आहारादिक निपजायैा ते आहारादिक ओर साधु ल्यावे ॥६॥ पडिक्कमणा कल्प ते सांज प्रभातनै पडिक्कमणै करे ॥ ७ ॥ राज्य-पिंड ॥ ८ ॥ मास कल्प ॥ ९ ॥ पजुसणा कल्प । १० । ए १० जाणवा ॥ हिवे कल्प (३) आश्री कह छे ॥ सामायिक तो जिण कल्पी होय ॥ थिवर कल्पी होय ॥ कल्पातीत होय (१) छेदोपस्था-पनीय ॥ परिहार विशुद्धि ॥ ए २ कल्पातीत न होय शेष दोय कल्प होय । सूक्ष्म संपराय जथाक्षायक । ए २ कल्पातीतहीज होय ॥ शेष २ न होय ॥ ५ ॥

॥ इति कल्पद्वार ॥ ४ ॥

हिवे चारित्रद्वार कहे छे ॥ सामाइक छेदोपस्थापनीकमांही नि-यंठा पावे ४ पुलाक (१) बुकस (२) पडिसेवणा (३) कषाय कु-सील (४) परिहार विशुधिमे सुक्ष्म संपरायमे नियंठो पावे १ कषाय कुसील ॥ जथाक्षायकमें नियठा पावे २ नियंठो (१)

॥ इति चारित्रद्वार ॥ ५ ॥

स्नातक (२) हिवे पडिसेवणाद्वार कहे छे ॥ प्रथम २ संजया। पडि सेवी अपडि सेवी दोनूंही होवे । पडि सेवी होवे तो मूल गुण उत्तर गुण दोन्यांको होवै । मूल गुण पडि सेवी तो पांच महाव्रतामे दोष लगावे । उत्तर गुण पडिसेवी ते । दस पच्चखाणमै दोप लगावे [अनागयं (१) अइकंतं (२) कोटि सहियं (३) निपढीयं (४) सागारं (५) अणागारं (६) परिमाण कडं [७] निविसेसं (८) संकियं (९) अद्धा (१०) यां मे दोष लगावे शेष ३ संजया अपडिसेवी होय ॥ ६ ॥ ईति ॥

हिवे ७ मैानाणद्वार कहे छे । प्रथम ४ संजयांमे तो ॥ ग्यान २

तथा ३ तथा ४ होवै । दोइ होवै तो । मति श्रुति ॥ तीन होवै तो । मती श्रुति अवधि ॥ तथा मति श्रुति मनपर्यव ॥ जथाक्षायकमे । ग्यान २ तथा ३ तथा ४ तथा १ पिण होय ॥ १ ॥ १ होय तो केवल होय ॥ ५ ॥ हिवे । सामाइक (१) छेदोपस्थापनीय (२) सूक्ष्म संपराय (३) ए ३ संजया भणे तो जघन्य ८ प्रवचन माता तक भणे । उत्कृष्टो १४ पूर्व भणे । परिहार विशुद्धि । जघन्य ८ पूर्व अने नवमा पूर्वनी त्रीजी आचार वत्थु लगे भणे ॥ उत्कृष्टो १० ऊणा पूर्व भणे ॥ जथाक्षायक जघन्य ८ प्रवचन माता तक भणे । उत्कृष्टी १४ पूर्व तथा सूत्रथी व्यतिरिक्त भणै (५) ॥ ७ ॥ ईति

हिवे ८ मो तीर्थद्वार कहे छे ॥ सामायिक (१) सूक्ष्म संपराय (२) जथाक्षायक(३)॥ए ३ संजया । तीर्थेवि तथा आतीर्थेवि होय ॥ तीर्थे कहिजे ४ तीर्थ प्रवर्तमान विषै होवै । अतीर्थे कहिजे ४ तीर्थ विना होय ॥ ते छद्मस्थ तीर्थंकर होय । तथा प्रत्येक बुद्धी होय ॥ छेदोपस्थापनीय। परिहार विशुद्धी । ए २ संजया । तीर्थ होवे । पिण अतीर्थ न होय ॥ ८ ॥ ईति

हिवै ९ मो लिंगद्वार कह छे ॥ लिंगका २ भेद । द्रव्य लिंग तो साधुनो भेष ॥ भावलिंग ते साधुना परिणाम ॥ परिहार विसुधी टाली शेष ४ संजया । द्रव्ये तीनूं लिंगी होवे । सलिंगी [१] अन्य लिंगी (२) गृहलिंगी (३) ॥ भाव आश्री नियमा सलिंगी होय । परिहार विसुधी द्रव्ये अनै भावे सलिंगी होवे। शेष २ नथी ॥९॥ ईति॥

हिवे १० मो शरीरद्वार कहे छे ॥ सामायिक छेदोपस्थापनीय ए २ मे सरीर ५ पांवे ॥ शेष ३ मे सरीर ३ पावे। उदारिक (१) तेजस (२) कार्मण [३] ॥ १० ॥ ईति ॥

हिवे ११ मो क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ पांचुही संजया १५ कर्म भू-

मिने विषे होय अकर्मभूमिने विषे न होय ॥ विशेषः–छेदोपस्थापनीय (१) परिहार विशुद्धि ए २ संजया महाविदेह क्षेत्रमे न होय अनें १० क्षेत्रोंमे होवे साहारण आश्री ४ संजया अढाईद्वीपमें सघलो होवे परिहार विशुद्धिको साहारण नथी ॥ ११ ॥ इति ॥

हिवे १२ मो कालद्वार कहछे । अवसर्पणी काल आश्री सामायिक (१) छेदोपस्थापनीय (२) ए २ संजया । जन्म आश्री प्रवर्तन आश्रि तीजे चौथे पांचमे आरै होय । परिहार विशुद्धी (१) सूक्ष्म संपराय (२) जथाक्षायक (३) ए ३ संजया जन्म आश्री ३–४ आरै होय ॥ अने प्रवर्तन आश्री । ३ । ४ । ५ । मै आरै होय । हिवे उत्सर्पणी काल आश्री कहे छे पांचूही संजया। जन्म आश्री । २ । ३ । ४ । आरै होय अनै प्रवर्तन आश्री ३ । ४ । आरै होय ॥ हिवे चार पलि भाग आश्री कहछे॥ सामायिक [१] सुक्ष्म संपराय (२) जथा .क्षायक ए ३ संजया चोथो पलि भाग महाविदेहमे होवै। तीन पलि भागमे न होय॥ अने छेदोपस्थापनीय (१) परिहार विशुद्धि (२) ए दोनूं चारूही पली भागये नथी ॥ हिवे साहारण आश्री कहे छे सामायिक (१) सूक्ष्म संपराय (२) जथाक्षायक (३) ए ३ संजयोता वारे आरामे अने चार पलिभागमै सघलेही होवे ॥ छेदोपस्थाप्नी पांच आरामे होय ।३।४।५ ए तीन अपसर्पणीका ॥ ३ ।४ । ए दोई उत्सर्पणीका । एवं (५) परिहार विशुद्धिको साहारण नथी ॥ १२ ॥

॥ ईति ॥

हिवै १३ मौ गतिद्वार कहे छे ॥ सामायिक (१) छेदोपस्थापनीय (२) ए २ संजया जघन्य तो प्रथम देवलोक ऊपजे उत्कृष्टा सर्वार्थ सिद्ध विमाणतांई ऊपजे ॥ आउखो ॥ जघन्य दोइ पल्योपमको उत्कृष्टो ३३ सागरोपमको । पदवी पावे ५ इंद्रकी (१) सामानिककी

(२) त्रायत्रिंशककी (३) लोकपालकी (४) अहमिंद्रकी (५) परिहार विसुधी जघन्य प्रथम स्वर्गे ॥ उत्कृष्टो। आठमे स्वर्गे ऊपजे ॥ आउखो जघन्य दो पल्योपमको। उत्कृष्टो। १८ सागरको ॥ पदवी पावै ४ पूर्व ५ कही जिणमेसु अहमिंद्रकी टली ॥ सूक्ष्म संपराय (१) जथाक्षायक (२) ए २ संजया जघन्य उत्कृष्टी पांच अणुत्तर विमाणमे हिज उपजे ॥ आउखौ अजघन्य अने उत्कृष्टो ३३ सागरकोहीज पावै ॥ पदवी १ पावै अहमिंद्रकी ॥५॥ ए पांचूही आराधक आश्री जांणवा। विराधक होय तो भवण पत्यादिकमै उपजै ॥ १३ ॥॥ ईति॥

हिवे १४ मो संजमद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ संजयांका। संजमका स्थानक असंख्याता छे। जथाक्षायकको संजमको स्थानक एक छे ॥ हिवे अल्पाबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा जथाक्षायकको स्थानक ॥ १ ॥ तेथी सूक्ष्म संपरायका स्थानक असंख्यातगुणा ॥२॥ परिहार विशुद्धिका स्थानक असंख्यातगुणा ॥ ३ ॥ तेथी। सामाइक छेदोपस्थापनीकका स्थानक मांहोमांही ॥ तुल्ला असंख्यात गुणा ॥ ५ ॥ १४ ॥ ईति. ॥

हिवे १५ मो निकासद्वार कहे छे ॥ प्रथम तो षट्गुणी हांणि वृधिका नाम कहे छे ॥ अनंत भागहीन (१) असंख्यात भागहीन (२) संख्यात भागहीन (३) संख्यात गुणहीन (४) असंख्यात गुणहीन [५] अनंत गुणहीन (६) एही नाम वृधिका जांणवा। सामायिक (१) छेदोपस्थापनीक (२) परिहार विशुद्धि (३) यां तीनां थकी छट्ठाण वडीया ॥ सूक्ष्म संपराय जथाख्यायक थकी अनंत गुणहीन (१) एवं छेदोपस्थापनी ॥ प्रथम तीनां थकी छट्ठाण वडिया ॥ चरम २

थकी अनंत गुणहीन (२) एवं परिहार विशुद्धी ॥ प्रथम तीनां थकी छट्ठाण वडिया ॥ शेष २ थकी अनंत गुणहीन [३] सूक्ष्म संपरायी। प्रथम तीन संजया थकी अनंतगुण अधिक ॥ आपणा स्थान थकी। अनंत गुणहीन होय ॥ अनंतगुण अधिक होय ॥ तुल्ला पिण होय ॥ जथाक्षायक थकी अनंत गुणहीन होय (४) जथाक्षायकी। प्रथम चार संजया थकी अनंतगुण अधिक होय ॥ आपसमे तुल्ला होय (५) हिवे चारित्रना पज्जवांकी अलपाबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा॥ सामाइक १ छेदोपस्थापनीय चारित्रना जघन्य पज्जवा॥ तेथी परिहार विशुद्धी जघन्य चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेथी सामाइक।छेदो पस्थापनीक उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेथी सूक्ष्म संप-राय जघन्य चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेथी सूक्ष्म संपरायना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेथी जथाक्षायक अजघन्य अनुत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा (६) ॥ १५ ॥ ॥ ईति ॥

हिवै सोलमो जोगद्वार कहे छे ॥ पांचूंही संजयामें जोग पावै ३ मन वचन काया जोग । जथाक्षायक अजोगी पिण होवै॥१६ ॥ईति॥

हिवे १७ मो उपयोगद्वार कहे छे ॥ चार संजया तो दोई उप-योगी होई ॥ साकार वउत्ता अनें अनाकार वउत्ता ॥ सूक्ष्म संपरायी सागार वउत्ता होय । अनाकारोपयोग न होय ॥ १७ ॥ ॥ ईति ॥

हिवे १८ मो कषायद्वार कहे छे ॥ सामायिक (१) छेदोपस्थाप-नीक (२) ए २ संजयामै। सजलकी ४ कषाय होय । तथा ३ होय। क्रोध टल्यो ॥ तथा २ होय ॥ क्रोध मांन टल्यो ॥ तथा १ होय लोभ ॥ परिहार विसुधीये ४ कषाय होय॥ सूक्ष्म सपरायीमै १ लोभ होय ॥ जथाक्षायकमें अकषाईहिज होय अथवा ॥ उपसम कषाई तथा क्षीण कषाई होय ॥ १८ ॥ ईति ॥

हिवे १९ मो लेश्याद्वार कहे छे ॥ प्रथम २ संजयामे ६ लेश्या पावे ॥ परिहार विशुद्धीमे ३ लेश्या उपरली पावे ॥ सूक्ष्म संपरायमै तथा जथाक्षायकमे लेश्या १ शुक्ल पावै ॥ जथाक्षायक अलेशी पिण होय ॥ १९ ॥ ईति ॥

हिवे २० मो परिणामद्वार कहे छे । प्रथम ३ संजयामे परिणाम ३ पावे । हायमान (१) वर्द्धमान (२) अवठिया (३) ज्यांमे हायमान वर्द्धमानकी थिती जघन्य १ समयनी । उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी ॥ अवठियाकी जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी ७ समयनी सूक्ष्म संपरायमे परिणाम दोय पावे ॥ अवठिया नथी । दोय परिणामकी थिति । जघन्य १ समयनी ॥ उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी ॥ जथाक्षायकमै परिणाम २ पावे ॥ हायमान नथी ॥ वर्धमानकी थिति ॥ जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतकी ॥ अवठियाकी जघन्य १ समयनी । उत्कृष्टी देस उणा पूर्व कोडकी ॥ २० ॥ ईति ॥

हिवे २१ मो बंधद्वार कहे छे । प्रथम ३ संजया ८ कर्म तथा ७ कर्म बांधे ॥ आउखो वर्जीने ॥ सूक्ष्म संपरायी ६ कर्म बांधे आउखो मोहनी वर्जीनें । जथाक्षायकी १ वेदनी कर्म बांधे ते सातारूप ॥ तथा अवंधक पिण होवे ॥ २१ ॥ ईति ॥

हिवे २२ मो वेदद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ संजया आठूंही कर्म वेदै जथाक्षायकी मोहनी वर्जी ७ कर्म वेदै ॥ तथा ४ अघातिया कर्म वेदै ॥ आउखो (१) वेदनी (२) नांम (३) गोत्र (४) ॥२२॥ ॥ ईति ॥

हिवे २३ मो उदीरणाद्वार कहे छे ॥ प्रथम ३ संजया ८ तथा ७ (आउखो वर्जीने) तथा ६ कर्म उदीरै (आउखो वेदनी वर्जीने)

सूक्ष्म संपरायी है तथा ५ उदीरै (छै ते आऊ वेदनी टालीने) पांच ते आउ वेदनी मोहनी टालीनें) जथाक्षायकी ५ तथा २ उदीरै । (पांच ते आउखो वेदनी मोहनी टालीने) (दोइ ते नाम गोत्र) तथा नही उदीरे ॥ २३ ॥ इति ॥

हिवे २४ मो उवसंपज्जहणद्वार कहे छे ॥ सामाइक चारित्र छांडीनें ४ ठिकाणां जावै ॥ छेदोपस्थापनीकमे (१) सूक्ष्म संपरायमे (२) असंजयमे (३) संजमा संजमीमे (४) ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनी चारित्र छांडीनें ५ ठिकाणां जाय ॥ सामाइकमे [१] परिहार विसुद्धिमे (२) सूक्ष्म संपरायमे (३) असंजममे (४) संजमा संजममे (५) ॥ २ ॥ परिहार विसुधि चारित्र छांडीनें दोई ठिकाणे जाय ॥ छेदोपस्थापनीकमै (१) असंजममे (२) सूक्ष्म संपराय ॥ ३ ॥ चारित्र छांडीनें चार ठिकाणां जाय ॥ सामाइकमे [१] ॥ छेदोपस्थापनीकमे [२] जथाक्षायकमे (३) असंजममे (४) ॥ ४ ॥ जथाक्षायक चारित्र छांडीने दोई ठिकाणें जाय ॥ सूक्ष्म संपरायीमै [१] असंजममे (२) ॥ ५ ॥ २४ ॥ ईति ॥

हिवे २५ मो संज्ञाद्वार कहे छे ॥ प्रथम तीन संजया तो सन्ना वउत्तावीहोवै नो सन्ना वउत्तावी होय ॥ शेष २ संजया नो सन्ना वउत्ताहिज होवे ॥ २५ ॥ ईति ॥

हिवे २६ मो आहारद्वार कहे छे । पांचूही संजया आहारीक होय । जथाक्षायक अणाहारिक पिण होय ॥ २६ ॥ ईति ॥

हिवे २७ मो भवद्वार कहे छे ॥ सामाइक छेदोपस्थापनीक ॥ ए २ संजया जघन्य १ भव करे । उत्कृष्टा ८ भव करे । शेष ३ संजया ॥ जघन्य १ भव करे । उत्कृष्टा ३ भव करे ॥ २७ ॥ ईति ॥

हिवे २८ मो आगरिसेद्वार कहे छे ॥ सामाइक चारित्र एक भवआश्री। जघन्य १ वार आवै ॥ उत्कृष्टौ पृथक् सय [९००] वार आवै ॥ घणा भव आश्री ॥ जघन्य २ वार आवै ॥ उत्कृष्टौ पृथक् हजार वार आवै ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीक चारित्र। एक भव आश्री। जघन्य १ वार आवै ॥ उत्कृष्टो १२० वार आवे। घणा भव आश्री॥ जघन्य २ वार आवैं ॥ उत्कृष्टो ९६० वार आवै ॥ २ ॥ परिहार विशुद्धी चारित्र एक भव आश्री जघन्य १ वार आवे। उत्कृष्टो ३ वार आवे। घणा भव आश्री। जघन्य २ वार आवै। उत्कृष्टो ७ वार आवै ॥ ३ ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्र। एक भव आश्री। जघन्य १ वार। उत्कृष्टो ४ वार आवै। घणा भव आश्री। जघन्य २ वार। उत्कृष्टो ९ वार आवै ॥ ४ ॥ जथाख्यात चारित्र एक भव आश्री। जघन्य १ वार। उत्कृष्टो २ वार आवै। घणा भव आश्री। जघन्य २ वार। उत्कृष्टो ५ वार आवै॥५॥२८॥ ईति ॥

हिवे २९ मो कालद्वार कहे छे ॥ सामाइक चारित्र जथाक्षायक चारित्रनी थिती। एक जीव आश्री तो। जघन्य १ समयनी। उत्कृष्टी देस उणी पूर्व कोडनी॥ अनै घणा जीवां आश्री सदाही पावे॥ छेदोपस्थापनीक चारित्रनी स्थिती। एक जीव आश्री जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी देस उणा पूर्व क्रोडनी ॥ घणा जीवां आश्री। जघन्य अढाईसे बरसकी उत्कृष्टी ५० लाख कोड सागरनी ॥ परिहार विसुद्धी चारित्रकी स्थिती। एक जीव आश्री जघन्य १ समयनी। उत्कृष्टी २९ वरस उंणी पूर्व कोडकी। घणां जीवां आश्री। जघन्य १४२ बरसकी उत्कृष्टी ५८ वरस उणी दोय पूर्व कोडकी ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्रकी थिति एक जीव आश्री तथा वणा जीवां आश्री। जघन्य १ समयनी॥ उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी ॥ २९ ॥ ईति ॥

हिवे ३० मो अंतरद्वार कहे छे। पांचूहीं संजमीको आंतरो एक

जीव आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्तको । उत्कृष्टो देस उणी अर्द्ध पुद्गलको ॥ हिवे घणां जीवां आश्री आंतरो कहे छे । सामाइक चारित्र जथाक्षायक चारित्रनो आंतरो नथी । छेदोपस्थापनीक चा० नो । जघन्य ६३ हजार वर्षनो ॥ उत्कृष्टो १८ कोडाकोडी सागरनो । परिहार विसुधी चा० को । जघन्य ८४ हजार वर्षनो ॥ उत्कृष्टो १८ कोडाकोडि सागरनौ । सूक्ष्म संपराय चा० नो । जघन्य १ समयनो । उत्कृष्टो ६ मासको ॥ ३० ॥ ईति ॥

हिवे ३१ मो समुदघातद्वार कहे छे । सामाइक चा० । छेदोपस्थापनीक चा० मे समुदूघात ६ पावे ॥ केवल समुदूघात टली ॥ परिहार विसुद्धि चा० में ३ पावे॥ वेदना (१) कसाय (२) मारणांतिक (३) ॥ सूक्ष्म संपराय चा० मै समुदूघात नथी॥ जथाक्षायक चा० में १ पावै केवल समुदूघात ॥ ३१ ॥ ईति ॥

हिवे ३२ मो क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ संजयातो लोकनै असंख्यातमे भाग होवे ॥ जथाक्षायक चा० लोकनें १ असंख्यातमें ॥ भागे होय तथा घणा असंख्यातमै भागे होय ॥ तथा सर्व लोक व्यापी होय समुदघात आश्री ॥ ३२ ॥ईति ॥

हिवे ३३ मो फर्शणाद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ संजया लोकनो १ असंख्यातमो भाग फर्शे । जथाक्षायक चारित्री १ असंख्यातमो भाग फर्शे ॥ तथा घणा असंख्यातमै भाग फर्शे । तथा सर्व लोक फर्शे ॥ ३३ ॥ ईति ॥

हिवे ३४ मो भावद्वार कहे छे॥ प्रथम ४ संजयातो क्षयोपशम भावे होय । जथाक्षायकी दोय भावे होय ॥ उपशम भावे तथा क्षायक भावे ॥ ३४ ॥ ईति ॥

हिवे ३५ मो परिमाणद्वार कहे छे ॥ सामाइक संजमी वर्तमान पडिवज्या आश्री तो भजना पावै ॥ तथा न पावे ॥ जे पावै तो जघन्य १ । २ । ३ । होवें उत्कृष्टा पृथक् हजार होवे॥ पूर्व पडिवज्या

हिवे २८ मो आगरिसेद्वार कहे छे ॥ सामाइक चारित्र एक भवआश्री। जघन्य १ वार आवै ॥ उत्कृष्टो पृथक् सय [९००] वार आवै ॥ घणा भव आश्री ॥ जघन्य २ वार आवै ॥ उत्कृष्टो पृथक् हजार वार आवै ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीक चारित्र। एक भव आश्री। जघन्य १ वार आवै ॥ उत्कृष्टो १२० वार आवै। घणा भव आश्री॥ जघन्य २ वार आवै ॥ उत्कृष्टो ९६० वार आवै ॥ २ ॥ परिहार विशुद्धी चारित्र एक भव आश्री जघन्य १ वार आवे। उत्कृष्टो ३ वार आवे। घणा भव आश्री। जघन्य २ वार आवै। उत्कृष्टो ७ वार आवै ॥ ३ ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्र। एक भव आश्री। जघन्य १ वार। उत्कृष्टो ४ वार आवै। घणा भव आश्री। जघन्य २ वार। उत्कृष्टो ९ वार आवे ॥ ४ ॥ जथाख्यात चारित्र एक भव आश्री। जघन्य १ वार। उत्कृष्टो २ वार आवै। घणा भव आश्री। जघन्य २ वार। उत्कृष्टो ५ वार आवै॥५॥२८॥ ईति ॥

हिवें २९ मो कालद्वार कहे छे ॥ सामाइक चारित्र जथाक्षायक चारित्रनी थिती। एक जीव आश्री तो। जघन्य १ समयनी। उत्कृष्टी देस उणी पूर्व कोडनी॥ अनै घणा जीवां आश्री सदाही पावे॥ छेदोपस्थापनीक चारित्रनी स्थिती। एक जीव आश्री जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी देस उणा पूर्व क्रोडनी ॥ घणा जीवां आश्री। जघन्य अढाईसे वरसकी उत्कृष्टी ५० लाख कोड सागरनी ॥ परिहार विसुद्धी चारित्रकी स्थिती। एक जीव आश्री जघन्य १ समयनी। उत्कृष्टी २९ वरस उंणी पूर्व कोडकी। घणां जीवां आश्री। जघन्य १४२ वरसकी उत्कृष्टी ५८ वरस उणी दोय पूर्व कोडकी ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्रकी थिति एक जीव आश्री तथा घणा जीवां आश्री। जघन्य १ समयनी॥ उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी ॥ २९ ॥ ईति ॥

हिवे ३० मो अंतरद्वार कहे छे। पांचूहीं संजमीको आंतरो एक

जीव आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्तको । उत्कृष्टो देस उणी अर्द्ध पुद्गलको ॥ हिवे घणां जीवां आश्री आंतरो कहे छे । सामाइक चारित्र जथाक्षायक चारित्रनो आंतरो नथी । छेदोपस्थापनीक चा० नो । जघन्य ६३ हजार वर्षनो ॥ उत्कृष्टो १८ कोडाकोडी सागरनो । परिहार विसुधी चा० को । जघन्य ८४ हजार वर्षनौ ॥ उत्कृष्टो १८ कोडाकोडि सागरनौ । सूक्ष्म संपराय चा० नो । जघन्य १ समयनो । उत्कृष्टो ६ मासको ॥ ३० ॥ ईति ॥

हिवे ३१ मो समुदघातद्वार कहे छे । सामाइक चा० । छेदोपस्थापनीक चा० मे समुद्घात ६ पावे ॥ केवल समुद्घात टली ॥ परिहार विसुद्धि चा० में ३ पावे॥ वेदना (१) कसाय (२) मारणांतिक (३) ॥ सूक्ष्म संपराय चा० मै समुद्घात नथी॥ जथाक्षायक चा० में १ पावै केवल समुद्घात ॥ ३१ ॥ ईति ॥

हिवे ३२ मो क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ संजयातौ लोकनै असंख्यातमे भाग होवे ॥ जथाक्षायक चा० लोकनें १ असंख्यातमें॥ भागे होय तथा घणा असंख्यातमै भागे होय ॥ तथा सर्व लोक व्यापी होय समुदघात आश्री ॥ ३२ ॥ईति ॥

हिवे ३३ मो फर्शणाद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ संजया लोकनो १ असंख्यातमो भाग फर्शे । जथाक्षायक चारित्री १ असंख्यातमो भाग फर्शे ॥ तथा घणा असंख्यातमै भाग फर्शे । तथा सर्व लोक फर्शे ॥ ३३ ॥ ईति ॥

हिवे ३४ मो भावद्वार कहे छे॥ प्रथम ४ संजयातो क्षयोपशम भावे होय । जथाक्षायकी दोय भावे होय ॥ उपशम भावे तथा क्षायक भावे ॥ ३४ ॥ ईति ॥

हिवे ३५ मो परिमाणद्वार कहे छे ॥ सामाइक संजमी वर्तमान पडिवज्या आश्री तो भजना पावै ॥ तथा न पावे ॥ जे पावै तो जघन्य १ । २ । ३ । होवें उत्कृष्टा पृथक् हजार होवे ॥ पूर्व पडिवज्या

आश्री नियमा ॥ पृथक् हजार कोड होवे ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीक संजयी वर्तमान पडिवज्या आश्री तो भजना । पावे वा न पावै ॥ जे पावै तो जघन्य १ । २ । ३ । होवै ॥ उत्कृष्टा पृथक् सय होवे॥ पूर्व पडिवज्या आश्री भजना पावे वा न पावे । जे पावै तो जघन्य उत्कृष्ट पृथक् सयकोडी होवे ॥ २ ॥ परिहार विशुद्धी संजमी । वर्तमान पडिवजया आश्री तो भजना । पावे वा न पावे । जे पावे तो जघन्य १ । २ । ३ होवे । उत्कृष्टा पृथक् सय होवै ॥ पूर्व पडिवज्या आश्री भजना ॥ जे पावे तो जघन्य १ । २ । ३ होवे । उत्कृष्टा पृथक् हजार होवे ॥ ३ ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्री जथाक्षायक । चा० वर्तमान पडिवज्या आश्री भजना जे होवे तो जघन्य १ । २ । ३ होवे ॥ उत्कृष्टी १६२ होवें। ज्यामे ५४ तो उपशम श्रेणिका धणी होय ॥ १०८ क्षपक श्रेणिका होय ॥ अने पूर्व पडिवज्या आश्री सूक्ष्म संपरायीकी भजना पावै वा न पावै जे पावे तो जघन्य १—२—३ होवें ॥ उत्कृष्टा पृथक् सय होवे ॥ ४ ॥ जथाक्षायकी पूर्व पडिवज्या आश्री नियमा पृथक् कोडी होवै ॥ ५ ॥ ३५ ॥ ईति ॥

हिवे ३६ मो अलपबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्रका धणी ॥ १ ॥ तेह थकी परिहार विशुद्धी संजमी संखेज गुणा ॥ २ ॥ तेह थकी जथाक्षायक संजमी संखेज गुणा ॥ ३ ॥ तेह थकी छेदोपस्थापनीक संजमी संखेजगुणा ॥ ४ ॥ तेह थकी सामाइक संजमी संखेजगुणा* ॥ ५ ॥ ३६ ॥ ईति ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे संजयाऽख्यं एकविंशतितम प्रकरणम् ॥

---

* सामायिक चारित्र (१) छेदोपस्थापनीय चारित्र (२) परिहार विशुद्धि चारित्र (३) सूक्ष्म सपराय चारित्र (४) जथाक्षायक चारित्र (५) यह पांचोंमे सामायिक (१) और जथाक्षायक (२) ए दोय चारित्र सास्वता छे, बाकीके ३ चारित्र असाश्वता छे.



प्रकरण बावीसवा-नियंठा.

॥ गाथा ॥



पन्नवणा (१) वेय (२) रागे (३) कप्प (४) चरित्त [५] पडिसेवणा (६) नाणे [७] तित्थेय (८) लिंगे [९] सरीरे (१०) खेत्त [११] काले (१२) गइ (१३) संजम (१४) निकासे [१५] ॥ १ ॥ जोगु (१६) उपयोग (१७) कसाय (१८) लेशा (१९) परिणाम (२०) बंध (२१) वेदेय (२२) कम्मोदीरणा [२३] उवसंपजहणा (२४) सन्नाय (२५) आहारे (२६) ॥ २ ॥ भव (२७) आगरिसे [२८] कालं (२९) अंतरेय (३०) समुग्घाय (३१) खेत्त (३२) फुसणाय (३३) भावेय (३४) परिमाणे (३५) खलु ॥अया,वहुत्त नियंठाणं (३६) ॥ ३ ॥

हिवे पन्नवणाद्वार कहे छे ॥ पुलाक (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) कषायकुशील (४) नियंठो [५] सनातक (६)

हिवे पुलाकना पांच भेद ॥ नाणं पुलाय (१) दरसण पुलाय

(२) चरित पुलाय (३) लिंग पुलाय (४) आहासुहमं पुलाय (५) हिवे बुकसना पांच भेद ॥ आभोग बुकस [१] अणाभोग बुकस (२) संवड बुकस [३] असंवड बुकस [४] आहासुहमं बुकस (५) कुसीलका दोय भेद ॥ पडिसेवणा कुसील (१) कषाय कुसील (२) पडिसेवणा कुसीलका पांच भेद ॥ नाण पडिसेवणा कुसील (१) दरसण पडिसेवणा कुसील (२) चरितपडी० (३) लिंगपडि० (४) आहासुहमं पडिसेवणा कुसील (५) कषाय कुसीलका पांच भेद । नाण कषाय कुसील (१) दरसण कषायकुसील (२) चरित कषाय कु० (३) लिंग कषाय कु० (४) आहासुहमं कषाय कुसील (५) ॥ नियंठाना पांच भेद ॥ पढम समय नियंठो (१) अपढिम समय नियंठो (२) चरम समय नियंठो (३) अचरम समय नियंठो (४) आहासुहमं नियंठो (५) सनातकना पांच भेद ॥ अछवी (१) असबले [२] अकमंसे (३) संसुद्दे नाण दर्शण धरे अरहाजीण केवली (४) अपडिसावी (५) इति ॥ १ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ पुलाग सवेदी होय । पुरुष वेदी होय (१) पुरुष नपुंसक वेदी होय (२) स्त्रीवेदी नही होय ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुशील (२) मांही। वेद तीन पावे । स्त्री वेद ॥ पुरुष वेद होय २ ॥ कृत नपुंसक वेद होय [३] कषाय कुशील सवेदी होय । अवेदी होय । सवेदी होय तो तीनुंही वेद होय । अवेदी होय तो उवसमवेदी होय तथा क्षीणवेदी होय ॥ नियंठा अवेदी होय । उपसम वेदी होय । तथा क्षीणवेदी होय ॥ सनातक अवेदी होय तथा क्षीण वेदी होय ॥ इति ॥ २ ॥

हिवे राग कहे छे चार नियंठा सरागी होय ॥ पुलाक (१) [बु]कस (२) पडिसेवणा कुशील (३) कषाय कुसील (४) ए ४

सरागी ॥ नियंठो उवसम तथा वीतरागी होय । तथा क्षीण वीतरागी होय । सन्नातक क्षीण वीतरागी होय ॥ इति ॥ ३ ॥

हिवे कल्प कहे छै ॥ छे नियंठा-ठि-(स्थीति) कल्पी होय । अठि (अस्थीति) कल्पी होय ॥(स्थिति) टि-कल्पी तो पहिला तीर्थंकर अने चोविसमां तीर्थंकरने वारे होय ॥ ठि-कल्पी दस बोल पालै । अचेल (१) उदेसिक (२) सेज्यातरपिंड (३) राजपिंड [४] किर्तीकर्म [५] पुरुष ज्येष्ठ (६) महाव्रत (७) पजुसणा कल्प [८] मासकल्प [९] पडकमणा कल्प (१०)॥ अठि कल्पी चार बोल तो पालै । सेज्यातर पिंड [१] किर्तीकर्म (२) पुरुष ज्येष्ट (३) महाव्रत (४) ए चार बोल ॥ छै बोलकी भजना पाले या नहि पाले । हिवे पुलाग थिवर कल्पी होय ॥ बुकस अने पडिसेवणा कुसिल जिन कल्पी होय थिवर कल्पीय पिण कल्पातीत नहि होय ॥ कषाय कुसील जिण कल्पी होय थिवर कल्पी होय ॥ कल्पातीत होय ॥ नियंठो अने सनातक कल्पातीत होय ॥ इति ॥ ४ ॥

हिवे चारित्रद्वार कहे छै॥ चारित्र पांच । सामायिक चारित्र (१) छेदोपस्थापनीक चारित्र [२] परिहार विशुद्धी चारित्र [३] सुक्ष्म संपराय चारित्र ॥ ४ ॥ जथाक्षायक चारित्र (५) पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ये तिनुंमांही चारित्र पावे दोय सामाइक (१) छेदोपस्थापनी (२) कषाय कुसीलमांही । चारित्र पावे चार सामायक (१) छेदोपस्थापनी (२) परिहार विशुद्धी (३) सुक्ष्म संपराय (४) हिवे नियठा तथा सन्नातकमे जथाक्षायक चारित्र पावे॥ ॥ इति ॥ ५ ॥

हिवे पडिसेवणा द्वार कहे छै ॥ पुलाग मूल गुण पडि सेवि

होय ॥ उत्तर गुण पडि सेवी होय ॥ मूल गुण तो । पांच महाव्रत्तमे दोष लगावे ॥ उत्तर गुण दस विध पच्खाणमे दोष लगावे ॥ बुकस मूल गुण पडिसेवी होय । उत्तर गुण पडिसेवी होय । पडिसेवणा कुसील पुलागनी परै जाणवो ॥ कषाय कुसील (१) नियंठो (२) सनातक (३) ए तीनु अपडिसेवी होय ॥ इति ॥ ६ ॥

हिवे नाणद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ये तीनुमाहै ग्यान दोय होय तथा तीन होय । दोय होय तो मति (१) श्रुत (२) तीन होय तो । मति (१) श्रुति (२) अवधि [३] तथा । मति १ श्रुति २ मनपर्यव (३) चार होय तो ॥ मति (१) श्रुति (२) अवधि (३) मनपर्यव [४] इमहिज कषाय कुसील तथा । नियंठो जाणवो ॥ सनातकमाहिं । एक केवलज्ञान जाणवो । हिवे भणे तो । पुलाग । जघन्य आठ पूर्व नवमा पूर्वनी तिजी आचार वत्थु ॥ लगे उत्कृष्टो नव पुर्व पुरा भणे ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) ए दोय ॥ जघन्य आठ पर वचन माता लगे । उत्कृष्टो भणे तो दस पूर्व ॥ कषाय कुसील (१) नियंठो [२] ए दोनू । जघन्य भणै तो आठ प्रवचन माता । उत्कृष्टो चवदे पुर्व भणे । सनातक श्रुतथी अधिक छे सर्वज्ञ छे ॥ इति ॥ ७ ॥

हिवे तिर्थद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ए तीन तो तिर्थमें होय ॥ साधु–साध्वी श्रावक–श्राविकामांहि । कषाय कुशील [१] नियंठो (२) सनातक (३) ए तीन तीर्थमांही होय । अतिर्थमांहि होय । तिरथमै होय तो । साधू–साध्वी श्रावक श्राविकामांही होय अतिर्थमांही होय तो स्वयं बुद्धी होय प्रत्येक बुद्धि होय तथा छद्मस्थ तीर्थंकर होय ॥ इति ॥ ८ ॥

हिवे लिंगद्वार कहे छे ॥ वहु नियठा । द्रव्ये तो । सालिंगी होय ।

अन्यलिंगी होय । गृहलिंगी होय । भावै नियमासे स्वलिंगी होय ॥ इति ॥ ९ ॥

हिवे शरीरद्वार कहे छे ॥ शरीर पांच ॥ उदारिक (१) वैक्रेय [२] आहारिक (३) तेजस (४) कारमण [५] ॥ हिवे पुलाग (१) नियंठो (२) सनातक (३) ए तीनमांहे शरीर पावे ३ उदारिक (१) तैजस (२) कारमय (३) बुकस (४) पडिसेवणा कुसील (५) मे शरीर तीन तथा चार पावे तीन पावै तो । उदारिक (१) तेजस (२) कारमण [३] अने चार पावे तो । उदारिक वैक्रे तेजस कार्मण ॥ ४ ॥ हिवे कषाय कुसीलमे शरीर । तीन तथा । चार तथा । पांच पावे । तीन पावे तो । उदारिक (१) तेजस (२) कार्मण (३) चार पावे तो उदारिक (१) वैक्रेय (२) तेजस (३) कारमण (४) पांच पावे तो । उदारिक (१) वैक्रेय (२) आहारीक (३) तेजस (४) कारमग (५) ईति ॥ १० ॥

हिवे क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ बहु नियंठा जन्म आश्री । प्रवरतण आश्री । पनरे कर्म भूमीमाहि होय । साहारण आश्री । पुलाग वरजीनें । पांच नियंठा अनेरा क्षेत्रमेंभी होय ॥ इति ॥ ११ ॥

हिवे कालद्वार कहे छे ॥ दस कोडा कोडी सागरनो अवसरप्पणी काल । दस कोडा कोडी सागरनो उत्सरपणी काल । नो सर्प्पणीनो उत्सरपर्णी कालना चार पली भाग ॥ हिवे अवसरपणी काल आश्री । पुलाग जन्म आश्री । तीजे चोथे आरे होय ॥ परवरतण आश्री । ३ । ४ । ५ । आरै होय ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) कषाय कुसील (३) ए तीन नियंठा अपसर्पणी काल आश्री । जन्म आश्री।३।४।५। आरे होय॥ प्रवरतण आश्री।३।४।५।आरे होय॥ सहारण आश्री ६ आरै माहें होय । पुलागने साहारण नथी नियंठो

(१) सनातक (२) अपसरपणी जन्म आश्री । ३ । ४ । आरे होय ॥ परवरतण आश्री । ३ । ४ । ५ । आरे होय ॥ साहारण आश्री । ६ । आरे होय उत्सर्पणी काल आश्री ॥ पुलाग जन्म प्रवरतन आश्री । २ । ३ । ४ । साहारण नथी । नियंठो सनातक । पुलाग नी परै ॥ पण साहारण आश्री ६ आरामाहै होय ॥ उत्सर्पणी काल आश्री बुकस (१) पडिसेवणा कुसील [२] कषाय कुसील (३) ए तीन नियंठा । जन्म आश्री । २ । ३ । ४ । आरे ओरप्रवरतन आश्री । ३ । ४ । आरे होय ॥ साहारण आश्री ६ आरामाहै होय ॥ नी सरप्पणी नो उत्सरप्पणी कालना चार पली भाग ॥ पहिलो सुषम सुषम पलि भाग ॥ पांच देवकुरु । पांच उत्तरकुरुमें होय । पहिला आरा सरीखो जाणवो । १ । दूजो सुषम पलि भाग । दूजा आरा सरीखो पांच हरिवास । पांच रमगवासमें होय ॥ तीजो सुषम दुषम पलि भाग ॥ तीजा आरा सरीखो । पांच हेमवय पांच इरणवैमे होय । चोथो सुषम दुषम पलिभाग ॥ चोथा आरा सरीखो॥ पांच महाविदेहमें होय ॥ बहु नियंठा । जन्म प्रवर्तन आश्री । चोथा पलि भागमें होय । पांच महाविदेह क्षेत्रमाहै होया साहारण आश्री पुलाग वर्जी । अने (दुसरा) काल माहै होय ॥ इति ॥ १२ ॥

हिवे गतिद्वार कहे छे ॥ पुलाग जघन्य जाय तो पहिले देवलोक पृथक् पलके आउखे उत्कृष्टो जाय तो आठमे देवलोक १८ सागरने आउखे जाय ॥ आराधक आश्री जाणवो ॥ हिवे विराधक आश्री चार जातना ॥ देवतामाहे जाय ॥ बुकस (१) अने पडिसेवणा कुसील (२) जघन्य जाय तो । पहिले देवलोक पृथक् पलके आउखै । उत्कृष्टो १२ देवलोक जाय २२ सागरने आउखे ॥ यह आराधक आश्री जाणवो ॥ हिवे विराधक आश्री चार जातना देवतामाहे जाय ॥ कषाय कुसील आराधक आश्री जघन्य पहले देवलोक जाय।

उत्कृष्टो जाय तो पांच अणुत्तर विमाण ३३ सागरने आउखे जाय। विराधक आश्री ४ जातना मांहे जाय॥ नियंठो आराधक आश्री जघन्य उत्कृष्टो पांच अणुत्तर विमाणमे जाय। विराधक आश्री ४ जातनां देवता माहे जाय॥ सन्नातक मोक्ष जाय। हिवैं पदवी पावे पांच॥ इंद्रनी (१) सामानिकनी (२) तावतसनी (३) लोगपालनी (४) अहमिंद्रनी (५) पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ए तीन नियठा पदवी चार पावे। इंद्रनी (१) सामानिकनी (२) तावतसनी (३) लोगपालनी (४) ये चार पदवीमाहीलि एकेक पदवी पावे॥ कषाय कुसील। पांच पदवी मांहीली एक पदवी पावे। नियठो (१) अहमिंद्रकी पदवी पावे। ए पांच पदवी आराधक आश्री जाणवी। विराध अनेरी (दूशरी) गतमे जाय॥ सन्नातक मोक्ष जाय॥ इति॥ १३॥

हिवे संजम स्थानद्वार कहे छै॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील [३] कषायकुसील (४) ए चार नियंठाना संजमका स्थानक असंख्याता असंख्याता॥ नियठो तथा सन्नातकना संजमना स्थानक एक एक॥ सर्वसूं थोडा। नियठं (निर्ग्रंथ) सन्नातकना (संजमना) थानक॥ तेह थकी पुलागना थानक असंख्यातगुणा॥ तेह थकी बुकसना थानक असंख्यातगुणा॥ तेहथी पडिसेवणा कुसीलका थानक असंख्यातगुणा॥ तेहथी कषाय कुसीलका थानक असंख्यातगुणा॥ इति॥ १४॥

हिवे निकासद्वार कहे छे। छे नियंठाना चारित्रना पज्जवा अनंता अनंता॥ सीयहीणे, सीयतुले, सीयमभीय, जे हीण तो। अनंत भाग हिणेवा। असंखेज भाग हिणेवा। संखेज भाग हीणेवा संखेज गुणहीणेवा। असंखेज गुणहिणेवा। अनंत गुणहिणेवा। जेमभीये तो। अनंत भाग

मभियवा। असंखेज भाग मभियवा। संखेज भाग मभियवा। संखेज गुण मभियवा। असंखेज गुण मभियवा। अनंतगुण मभियवा। पुलाग पुलागथी छठाण वडिया। बुकसथी अनंतगुणहिण। पडिसेवणा कुसीलथी अनंतगुणहिण। कषाय कुसीलथी छठाण वडिया। नियटा सन्नातकसूं अनंतगुणहीण ॥ हिवै बुकस पुलागथीं अनंतगुण अधिक ॥ पोतारा थानकसूं छठाण वडिया। पडिसेवणा कुसीलथी छठाण वडिया ॥ कषाय कुसीलथी छठाण वडिया ॥ नियठा संन्नातकसूं अनंत गुणहीण। पडिसेवणा कुसील पुलागथी अनंत गुण अधिक ॥ बुकसथी छठाण वडिया पोतारा थानकसूं छठाण वडिया। कषाय कुसीलथी छठाण वडिया। नियठा सन्नातकथी अनंतगुणहीण ॥ हिवे कषायकुसील पुलागथी छठाण वडिया। बुकसथी छठाण वडिया पडिसेवणा कुसीलथी छठाण वडिया ॥ पोतारा थानकसूं छठाण वडिया। नियठा सन्नातकथी। अनंतगुणहिंण ॥ हिवे नियंठो पाछला चार नियंठाथी। अनंतगुण अधिक। पोतारा थानकथी तूला। हिवे सन्ना- तकथी तुल्ला। हिवे सनातक चार नियंठाथी अनंतगुण अधिक। निग्रंथथी तूला। पोतारा थानकथी तूला। हिवे पुलागना अने कषाय कुसीलना। जघन्य तो माहोमाही तुल्य सर्वथी थोडा। चारित्रना पजवा। तेहथी पुलागना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेह थकी बुकस अने पडिसेवणा कुसीलना ॥ जघन्य। उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा ॥ अनंतगुणा तेहथकी बुकसना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा तेहथकी पडिसेवणा कुसीलना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेहथकी कषाय कुसीलना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेहथकी नियंठा। अने सन्नातक दोनाका माहोमाही तुल्ला जघन्य उत्कृष्टा चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ इति ॥ १९ ॥

हिवे जोगद्वार कहे छे। पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा

कुसील (३) कषाय कुसील (४) नियंठो (५) ए पांच नियंठा तो सजोगी होय ॥ अजोगी नथी॥ सन्नातक सजोगी होय अजोगी होय॥ सजोगी होय तो १३ गुणठाणे अजोगी होय तो १४ गुणठाणे। अजोगी होय ॥ इति ॥ १६ ॥

हिवे उपयोगद्वार कहे छे ॥ छै नियंठा साकारवउता होय ॥ अणाकारवउता होय। साकारवउता ज्ञानको उपयोग॥ अणाकार वउता दरसणको उपयोग ॥ इति ॥१७ ॥

हिवे कषायद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ये तीन नियंठामाही। कषाय एक संजलनी चोकडी होय ॥ हिवै कषाय कुसील। माहे संजलनो क्रोध (१) मांन (२) माया (३) लोभ (४) ये चार पावे तथा तीन तथा दोय तथा एक पावै। चार पावै ते। संजलकी चोकडी पावे। तीन पावे तो संजलको मान (१) माया (२) लोभ (३) दोय पावे तो माया (१) लोभ (२)। एक पावे तो संजलको लोभ पावै। नियंठोअकषाई होय। उवसंत कषाई होय ॥ तथा क्षीण कषाई होय॥ सन्नातक अकषाइ होय ॥ पण क्षीण कषाइ होय ॥ इति ॥ १८ ॥

हिवे लेश्याद्वार कहे छे। पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ये तीना माहै लेश्या। तीन पावे। तेजू (१) पदम (२) सुक्ल (३) हिवे कषाय कुसीलमांही लेश्या ६ छैही लेश्याना भाव लावे ॥ नियठांमे १ सुक्ल लेश्या पावै ॥ सन्नातक संलेसी होय ॥ अलेसी होय ॥ सलेशी होय तो परम शुक्ल लेश्या होय। अलेशी होय तो १४ मे गुणठाणे अलेसी होय ॥ इति ॥ १९ ॥

हिवे परिणामद्वार कहे छे ॥ परिणाम ३ हायमान (१) वृध मान

(२) उवठिया (३) ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) कषाय कुसील (४) ए चारा माहे तीन परिणाम लाभे हायमान (१) वृधमान (२) उवठिया (३) हायमान (१) वृधमाननी थिति जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ उवठियानी थिती जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी सात समयनी ॥ हिवे नियठामाहे परिणाम दोय लाभे । वृधमान (१) उवठिया (२) वृधमानकी थिती जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी ॥ उवठियानी थिती जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी हिवै सन्नातक माहे परिमाण दोय लाभै ॥ वृधमान (१) उवठिया (२) वृधमानकी थिति । जघन्य उत्कृष्टी । अंतर्मुहूरतनी उवठिया थिति । जघन्य अंतर्मुहूरतनी । उत्कृष्टी देस उणी पूर्व कोडनी ॥ इति ॥ २० ॥

हिवे बंधद्वार कहे छे ॥ पुलाग । आउखो कर्म वरजीनै सात कर्म बांधे ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) सात कर्म बांधे तथा आठ कर्म बांधै ॥ ७ बांधे तो ॥ आउखो वरजीने बांधै ॥ कषाय कुसील ६ बांधे तथा ७ बांधे तथा ८ बांधे ॥ छे बांधे तो । मोहनी । आउखो वरजीने ॥ ७ बांधे तो आउखो वरजीनें ॥ ८ बांधे तो पुरा बांधै ॥ नियंठो एक सातावेदनी बांधे ॥ सन्नातक बांधै तो एक सातावेदनी बांधे । तथा अबंध ॥ इति ॥ २१ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) कषाय कुसील (४) ए चार तो ८ कर्मवेदे ॥ नियंठो मोहनी वरजी ७ कर्म वेदै ॥ सन्नातक वेदनी (१) आउखो (२) नाम (३) गोत्र (४) ए चार अघातिया कर्म वेदै ॥ इति ॥ २२ ॥

हिवे उदीरणाद्वार कहे छे ॥ पुलाग ६ कर्म उदीरै । आउखो (१) वेदनी (२) वर्जीनें ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) छे

उदीरे तथा ७ उदीरे ॥ आठ उदीरे ॥ ६ उदीरै तो आउखो वेदनी-वरजीने ॥ ७ उदीरे तो आउखो वरजीने ॥ ८ उदीरे तो पुरा उदीरे। कषाय कुसील । ५ उदीरे तथा ६ उदीरे तथा सात (७) उदीरे। तथा ८ उदीरे ॥ हिवे ५ उदीरे तो वेदनी (१) मोहनी (२) आउखो (३) वरजीनें ॥ ६ उदीरे तो वेदनी (१) आउखो (२) वरजी ॥ ७ उदीरे तो आउखो वरजीने ॥ ८ उदीरे तो पुरा उदीरे ॥ नियंठो २ उदीरै । तथा ५ उदीरै । २ उदीरै तो नाम (१) गोत्र (२) ॥ पांच उदीरै तो वेदनी (१) मोहनी (२) आउखो (३) ए तीन कर्म वरजीनें ॥ सन्नातक उदीरे तो २ उदीरे। नामा (१) गोत्र (२) तथा नथी उदीरे ॥ इति ॥ २३ ॥

हिवे उवसंपजहणाद्वार कहे छे ॥ पुलाग । पुलागपणो छांडीनें। २ ठिकाणें जाय कषाय कुसीलमै आवै १। असंमजपडवजे २ ॥ बुकस बुकसपणो छांडीनें चार ठिकाणे जाय ॥ पडिसेवणा कुसील माहे जाय (१) कषाय कुसीलमांहे जाय (२) असंजम पडवजे (३) संजमा संजम पडवजे (४) ॥ पडिसेवणा कुसील पडिसेवणा कुसील-पणो छांडीनें । चार ठिकाणे जाय। बुकसमे आवै (१) कषाय कुसीलमे जाय (२) असंजम पडवजे (३) संजमा संजम पडवजे (४) ॥ हिवे कषायकुसील । कषाय कुसीलपणो छांडीनें ६ ठिकाणें जाय ॥ पुलागमे आवे (१) वुकसमे आवे (२) पडिसेवणा कुसीलमे आवे (३) नियठामें जाय (४) असंजम पडवजे (५) सजमासंजम पडवजे (६) हिवे नियंठो नियठापणो छांडीनै ३ तीन ठिकाणै जाय कषायकसीलमे आवै (१) सन्नातकमे जाय (२) असंजमपडवजे (३) ॥ सन्नातक सन्नातकपणो छांडीने मोक्ष जाय ॥ इति ॥ २४॥

हिवे संज्ञाद्वार कहे छे॥ पुलाग (१) नियंठो २ सन्नातक ३ ए

तीन नो सवउता होय ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) कषाय कुसील (३) ए तीन सन्नावउता होय ॥ नो सन्नावउता होय ॥ ॥ इति ॥ २५ ॥

हिवे आहारद्वार कहे छे ॥ प्रथम ५ नियंटा तो आहारीक होय ॥ सन्नातक आहारीक होय । अणारीक होय ॥ इति ॥ २६ ॥

हिवे भवद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) अनें नियंठो । (२) जघन्य एक भव करे । उत्कृष्टा ३ भव करै । बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) कषाय कुसील (३) ए तीनुं जघन्य १ भव करै उत्कृष्टा ८ भव करै । सन्नातक उंणहीज भव मोक्ष जाय ॥ इति ॥ २७ ॥

हिवे आगरिसे [आकर्ष] द्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) एक भव आश्री । जघन्य १ वार आवै ॥ उत्कृष्टो ३ वार आवै ॥ पुलाग घणा भव आश्री । जघन्य २ वार आवै । उत्कृष्टा ७ वार आवै ॥ बुकस एक भव आश्री पडिसेवणा कुसील एक भव आश्री। जघन्य १ वार आवै । उत्कृष्टो प्रथक् सोवार आवे ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) घणा भव आश्री । जघन्य २ वार आवै । उत्कृष्टो प्रत्येक हजारवार आवै ॥ कषाय कुसील १ भव आश्री जघन्य १ वार आवे उत्कृष्टो प्रथक् सो वार आवै ॥ कषाय कुसील घणा भव आश्री जघन्य २ वार आवै । उत्कृष्टो प्रथक् हजारवार आवै । हिवे नियंठो एक भव आश्री । जघन्य १ वार आवै। उत्कृष्टो २ वार आवै ॥ घणा भव आश्री । जघन्य २ वार आवै ॥ उत्कृष्टो ५ वार आवै ॥ सन्नातक एकवारही आवै ॥ इति ॥ २८ ॥

हिवे कालद्वार कहे छे॥ पुलाग (१) जिव आश्री थिति । जघन्य उत्कृष्टी । अंतर्मुहूरतनी ॥ घणा जीव आश्री । जघन्य १ समयनी

उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी हिवे बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) कषाय कुसील (३) ये तिनोंकी थिति जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी देस उणी पूर्व कोडनी ॥ ए तीनूं घणा जीव आश्री सदाकाल ॥ हिवे नियंठाकी थिति । एक जीव आश्री तथा घणा जीव आश्री । जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी । सन्नातकनी थिती एक जीव आश्री । जघन्य अंतर्मुहूरतनी । उत्कृष्टी देस ऊंणी पूर्व कोडनी ॥ घणा जीव आश्री सदाकालनी ॥ इति ॥ २९ ॥

हिवे अंतरद्वार कहे छे ॥ एक जीव आश्री । पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) कषाय कुसील (४) ये चारोंको अंतरो जघन्य । अंतर्मुहूरतनो उत्कृष्टो । अनंतो कालनो अनंती सरप्पणी । अनंती उत्सरप्पणी काल लगे । हिवे क्षेत्रथी ॥ आंतरो देस ऊंणो अर्द्ध पुद्गल प० ॥ हिवे नियंठानो । एक जीव आश्री आंतरो पडे तो । जघन्य अंतर्मुहूरतनो उत्कृष्टो । अनंतो काल लगे ॥ “ अनंती सरप्पणी । उत्सरप्पणी । कालनो आंतरो काल थकी पडे ”॥अने क्षेत्र थकी देसऊंणो अर्द्ध पुदूगल प०। हिवे सन्नातकनो एक जीव आश्री । आंतरो नथी । हिवे घणा जीव आश्री ॥ पुलागनो जघन्य। एक समयनो उत्कृष्टो संख्याता वरसनो आंतरो पडे॥ हिवे बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) कपाय कुसील (३) ये तीनोंको घणा जीव । आश्री आंतरो नथी ॥ सदाकाल होय ॥ हिवे नियंठानो । घणा जीव आश्री आंतरो जघन्य १ समयनो ॥ उत्कृष्टो ६ मासनो। हिवे सन्नातकनो घणा जीव आश्री आंतरो नथी सदाकाल पावे ॥ इति ॥ ३० ॥

हिवे समुद्घातद्वार कहे छे ॥ पुलागमांहे समुद्घात तीन पावे ॥ वेदना (१) कषाय (२) मारणांतिक (३) हिवे बुकस (१) अने

पडिसेवणा कुसील (२) ये दोनोंमांही समुद्घात ५ पावै ॥ वेदना (१) कषाय (२) मारणांतिक (३) वैक्रेय (४) तेजस (५) हिवे कषाय कुसीलमांहैं । ६ समुद्घात पावै । वेदना (१) कषाय (२) मारणांतिक (३) वैक्रेय (४) तेजस [५] आहारीक (६) केवल समुद्घात टली ॥ नियंठामाहे समुद्घात नथी ॥ सन्नातकमे एक केवल समुद्घात पावे ॥ ईति ॥ ३१ ॥

हिवे क्षेत्रद्वार कहे छे । छ नियंठा-तो-लोकने संख्यातमे भाग होय । असंख्यातमे भाग होय ॥ घणे असंख्यातमें भागे होय । तथा सर्व लोकमे होय ॥ इति ॥ ३२ ॥

हिवे फरसणाद्वार कहे छे ॥ ५ नियंठा-तो-लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे ॥ सनात्तक । लोकनो । असंख्यातमे भाग फरसे । घणो असंख्यातमो भाग फरसे । तथा सर्व लोक फरसे ॥इति॥३३॥

हिवे भावद्वार कहे छे ॥ प्रथम चार नियंठा-तो-खयोपसमभावे होय ॥ नियंठो उवशम भावे होय ॥ तथा क्षायक भावे होय । सन्नातक क्षायक भावे होय ॥ इति ॥ ३४ ॥

हिवे परिमाणद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ए तीन वर्तमान पडवज्या आश्री ॥ सीय अत्थी सीय नत्थी होवइ न होवइ ॥ होय तो जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा प्रत्येक सो होय ॥ हिवे नियंठो । वरतमान पडवज्या आश्री ॥ सीय अत्थी सीय नत्थी होवइ न होवइ । जे होय तो १ । २ । ३ । उत्कृष्टा (१६२) एकसो बासठ होय तेमा ५४ उवसम श्रेणीका धणी । (१०८) एकसो आठ क्षपक श्रेणीका धणी होय ॥ हिवे सनातक सीय अत्थी । सीय नत्थी । होवई न होवई जे होय तो । जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा १०८ एकसो आठ क्षपक श्रेणीका धणी होय ॥ हिवै पूर्वे

पडवज्या आश्री कहे छे ॥ हिवे पुलाग पूर्वे पडवज्या आश्री । सीय अत्थि सीय नत्थी । होवइ न होवई । जे होय तो जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा प्रत्येक हजार होय ॥ वुकस अने पडिसेवणा कुसील । जघन्य उत्कृष्टो । प्रत्येक सो कोडी होय ॥ हिवे कषाय कुसील। पूर्वे पडवज्या आश्री । जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक हजार कोडि होय ॥ हिवे नियंठो पुर्वै पडवज्या आश्री जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा प्रत्येक सो पावै ॥ हिवे सन्नातक पुर्वै पडवज्या आश्री । जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक कोडि होय ॥ इति ॥ ३५ ॥

हिवे अल्पावहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा । नियंठाना धणी तेह थकी पुलागना धणी संख्यात गुणा ॥ तेह थकी सन्नातकना धणी संख्यातगुणा ॥ ते थकी वुकसना धणी । संख्यात गुणा ॥ ते थकी पडिसेवणा कुसीलका धणी संख्यात गुणा ते थकी कषाय कुसीलका धणी संख्यात गुणा** ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे नियंठाऽख्यं द्वाविंशति प्रकरणम् ॥



* ए पाचों नियंठामे पुलाग (१) ओर निग्रंथ (२) ए दोय असाश्वता छे अने शेष च्यार (४) साश्वता छे

* ए छै नियठानो विस्तार भगवति शतक २५ मे उद्देशे ६ छठे छे.



प्रकरण तेवीसवा-पंच सुमति तीन गुप्तीनो स्वरूप.



हिवे पंच सुमतीना नाम कहे छे। इरियासुमति (१) भाषा सुमति (२) एषणा सुमति (३) आयाण भंड मत्त निखेवणा सुमति (४) उच्चारपासवण जळ खेल परिठावणया सुमति [५].

हिवे इरियासुमतीका च्यार भेदः-द्रव्य थकी देख कर चाले (१) क्षेत्र थकी झूंसरा (साडे तीन हाथ) प्रमाण (२) काल थकी दिनका देख कर चाले रातका पूंजकर चाले. [३] भाव थकी उपयोग सहित " वायणा (१) पूच्छणा [२) पर्यट्टणा (३) अणुप्पेहा (४) धम्मकहा (५) शब्द [६] रूप (७) रस (८) गंध (९) स्पर्श [१०] ए दस बोल वर्जीने " बोले. ॥ (४) ॥

हिवे भाषा सुमतिना चार भेदः-द्रव्य थकी आठ बोल वर्जीने बोले. (ते कहे छे.) "अलिय वचन कहतां किसकूंभी आल (कलंक) देवे नहीं (१) हेलिय वचन कहतां किसीकी निंदा करे नहीं (२) खिसीय वचन कहतां किसीके ऊपर क्रोध करे नहीं (३) फरूस वचन कहतां कठोर भाषा बोले नहीं (४) गारथीयं कहतां गृहस्थकी

परेभापा बोले नही (५) कलहकारी भापा बोले नहीं ॥ (६) मर्मकारी भापा बोले नही (७) छेदकारी भापा बोले नही (८)" ए ८ आठ बोल. ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी मार्ग चालता बोले नही ॥ २ ॥ काल थकी पेहेर रात गया पछे उतावळो बोले नही. ॥ ३ ॥ भाव थकी उपयोग सहित अल्प वचन बोले. मिष्ट वचन बोले. चतुराइसे बोले. काम पडे तब बोले. निरवद्य वचन बोले. (४)

हिवे एपणा सुमतीना चार भेदः–द्रव्य थकी ४२ दोपटाल आहार वस्त्र पात्र स्थानक लेवे. [१] क्षेत्र थकी दोयकोश उपरांत आहार पाणी लेजावे नही. (२) काल थकी पेहला पेहरको चौथा पेहरमे भोगवे नही. (३) भाव थकी ५ पांच मांडलियाका दोप रहित भोगवे. (४)

हिवे आयाण भंड मत्त निखेवणा सुमतिका चार भेदः–द्रव्य थको चार उपगर्ण राखे पडिहार ॥ पीढ (१) फलग (२) सेज्या (३) संथारो (४) ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी जठे धरे तहां पूंज कर धरे. [२] काल थकी दोनो वख्त पडिलेहणा करे [३] भाव थकी उपयोग सहित २५ प्रकारकी पडिलेहणा करे [४]

हिवे उच्चारपासवण जळ खेल परिठावणया सुमतीका चार भेदः–द्रव्य थकी वडी नीती लघु नीति जयणासूं परठे (१) क्षेत्र थकी कोई गृहस्थ आवे नही (१) देखे नहि जेठे परठे (२) संजमकी आत्माकी घात नही हुवे जठे परठे [३] ऊंची नीची धरती (जमीन) नही हुवे जहां परठे (४) पोली भूमी नही हुवे जहां परठे (५) थोडे कालसूं भूमी अचित हुई होय जहां नही परठे (६) जघन्य एक हाथ छे आंगुळ लंबी चौडी होय चार अंगुल तक नीचे अचित होय जहां परठे (७) तृणादिकना ढिगला नही होय जहां परठे. (८) संमूर्छिम

जीव रहित होय जहां परठे (९) बिल रहित धरती होय जहां परठे (१०) ॥ २ ॥ काल थकी परठे जहां लगे (३) भाव थकी उपयोग सहित (४) ॥ इति ॥

हिवे ३ गुप्तीना नांम कहे छे । मनगुप्ती (१) वचनगुप्ती (२) कायगुप्ती (३)

मनगुप्तीका ३ भेद सारंभ (१) समारंभ (२) आरंभ (३) सारंभ ते मन करी किसीका मरणादि चिंतवे नही ॥ चिंतवे जिणनें सारंभ कहिये (१) समारंभ ते मन करी पीडा (वेदना) उपजावे नही ॥ उपजावे जिणनें समारंभ कहीये (२) आरंभ ते मन करी मंत्रादिक गुणी किसी जीवने हणे नही ॥ हणे जिणनें आरंभ कहिये.(३)

हिवे वचनगुप्तीके ३ भेदः–सारंभ (१) समारंभ (२) आरंभ [३] पूर्ववत् यहां. बचन थकी कहना.

हिवे कायगुप्तीका ३ भेदः–बैठतें, ऊठतें, हलतें, चलतें सारंभ [१] समारंभ (२) आरंभ [३] होय, इन ३ तीनोमें काया प्रवर्तावे नही. (३)

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे पंच सुमति त्रिगुप्ती स्वरूपाऽख्यं त्रयोविंशति प्रकरणम् ॥

प्रकरण चौवीसवा–दस श्रावक यंत्र.

		१	२	३	४
१	श्रावक नाम	आणद	कामदेव	चुल्लगी पीया	सुरादेव
२	नगर नाम	वाणिया	चंपा	वणारसी	वणारसी
३	राजा नाम	जितशत्रु	जितशत्रु	जितशत्रु	जितशत्रु
४	गुरू नाम	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी
५	जात नाम	गाथापति	गाथापति	गाथापति	गाथापति
६	स्त्री नाम	शिवनंदा	भद्रा	शामा	धन्ना
७	वणिज धन प्रमाण	४०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००
८	दटयो धन प्रमाण	४०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००
९	घर विखेरो	४०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००

१०	गाय संख्या	४००००	६००००	६००००	६००००
११	श्रावकपणो	२० वर्ष	२० वर्ष	२० वर्ष	२० वर्ष
१२	उपसर्ग	०	गजनो	मातामारणनो	१६ सोला रोगनों
१३	संथारो	एक मास	एक मास	एक मास	एक मास
१४	देवलोक	पहेलो	पहेलो	पहेलो	पहेलो.
१५	विमाण नाम	अरुणाभ	अरुणाभ	अरुण प्रभ	अरुणका
१६	स्थिति प्रमाण	चार पल्य.	चार पल्य	चार पल्य	चार पल्य.
१७	भव प्रमाण	१	१	१	१
१८	मोक्षक्षेत्र.	मोक्षमहाविदेहजासें	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह
१९	सूत्र	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा.
२०	अध्ययन.	१	२	३	४

		५	६	७	८	९	१०
१	श्रावक नाम	चुलणीशतक	कुण्डकोलियो	शद्दालपुत्र	महाशतक	नदणीपिया	तेतली प्रिया
२	नगर नाम.	आलविया	कम्पिलपूर	पोलाशपूर	राजगृही	सावथ्थी	सावथ्थी.
३	राजा नाम	जितशत्रु	जितशत्रु	जितशत्रु	श्रेणिक	जितशत्रु	जितशत्रु
४	गुरूनाम	महावीरजी	महावीरजी	महावीरजी	महावीरजी	महावीरजी	महावीरजी
५	जात नाम	गाथापति	गाथापति	गाथापति	गाथापति	गाथापति	गाथापति.
६	स्त्री नाम	वहुला	पद्मा	अग्निमित्ता	रेवती	अस्सणीया	फल्गुनी
७	वणिज धन	६०००००००	६०००००००	१०००००००	८०००००००	४०००००००	४०००००००
८	दट्यो धन	६०००००००	६०००००००	१०००००००	८०००००००	४०००००००	१०००००००
९	घर विखेरो	६०००००००	६०००००००	१०००००००	८०००००००	१०००००००	४०००००००
१०	गाय सख्या	६००००	६००००	१००००	८००००	१००००	४००००
११	श्रावकपणो	२० वरस	२० वरस	२० वरस	२० वरस	२० वरस	२० वरस

१२	उपसर्ग नाम	धन काढवानो	०	अग्नि मित्रानो	०	०	०
१३	संथारो	१ मास	१ मास	१ मास	१ मास	१ मास	१ मास.
१४	देवलोक	पेहेलो	पेहेलो	पेहेलो	पेहेलो	पेहेलो	पेहेलो
१५	विमान नाम	अरुणशेवी	अरुणध्वज	अरुगव	अरुगवडिंक्षग	अरुणग	अरुगकिल
१६	स्थिति प्रमाण	४ पल्य	४ पल्य	४ पल्य	४ पल्य	४ पल्य	४ पल्य.
१७	भव प्रमाण	१	१	१	१	१	१
१८	मोक्ष क्षेत्र	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह
१९	सूत्र	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा.
२०	अध्ययन	५	६	७	८	९	१०

॥इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीयखण्डे दश श्रावक यंत्राडख्यं चतुर्विंशति प्रकरणम्॥

प्रकरण पंचीसमा-ईंद्रियद्वार.

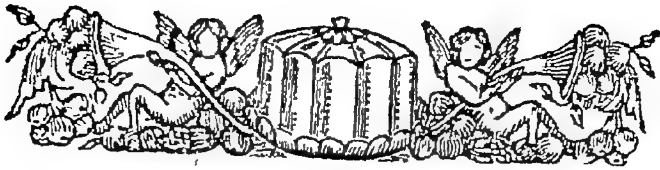
		१	२	३	४	५
१	नाम	श्रोनेंद्रिय	चक्षुरिंद्रिय	घ्राणेंद्रिय	रसेंद्रिय	स्पर्शेंद्रिय
२	संठाण	कदंब वृक्षने फूलने आकार	चंद्रमसूरने आकार	धमणनो आकार	खुरपानो आकार	नानाप्रकारनो आकार
३	लांबपणो जाडपणो	अंगुलके असंख्यातमे भाग	अंगुलके अस०	अंगुलके अस०	जघन्य अंगु० अस० उत्कृ० नव अं०	जघन्य आं के असंख्यात मे भाग उत्कृ दो हजार योजन
४	इंद्रियना प्रदेश	अनंतप्रदेशी	अनंतप्रदेशी	अनंतप्रदेशी	अनंतप्रदेशी	अनंतप्रदेशी.
५	इंद्रि प्रदेश केतला अवगाहे	असंख्यात प्रदेश अवगाहे	असंख्यात प्र अव.	असंख्यात प्र० अव.	असंख्यात प्र० अव०	असंख्यात प्रदेश अवगाहे
६	प्रदेशानी अल्पाबहुत	संखेज गुणा. २	सर्वसूथोडा १	संखेज गुणा ३	असंख्यात गुणा ४	संख्यात गुणा. ५

७	इंद्रि. अवगहणानो अल्पा बहुत.	संख्यात गुणा २	सर्वसूंथोडा १	संख्यात गुणा ३	असंख्यातगुणा.४	संख्यातगुणा. ५
८	अवगहणा अने प्रदेशानी भली अल्पा बहुत	संख्यात गुणा २ अव. प्र.	सर्वसूं थोडा १ अव प्र.	अवप्र. संख्यातगुणा ३	अव. प्र. असख्यात गणा. ४	अवगहणा प्रदेश संख्यात गुणा. ५
९	कर्कश गुरूनागुग केतला	अनंतगुणा	अनंतगुणा	अनंत गुणा	अनंतगु०	अनंतगुणा.
१०	मृदु लघुना गुण केतला.	अनंतगुणा	अनंत गु०	अनंतगु०	अनंतगु०	अनंतगुणा
११	कर्कश गुरूनो अल्पाबहुत	अनंतगुणा. २	सर्वसूं थोडा १	अनंतगुणा ३	अनंतगुणा ४	अनंतगुणा. ५.
१२	मृदु लघुनो अल्पाबहुत.	अनंतगुणा. ४	अनंत गु० ५	अनंतगु० ३	अनंतगु० २	सर्वसूं थोडा १.
१३	कर्कश मृदु अने गुरु लघुनो अल्पा०	कर्क० मृ० कर्क० गु० २ अनंतगुणा	क गु० सर्वसूं थोडा १	अनंतगुणा ३	अनंस गु० ४	अनंतगुणा. ५. मृदु. अ०
१४	समुचय इंद्रीनो विषय.	१२ योजन	१ लक्ष योज.	९ योजन.	९ योजन	९ योजन.

१५	जघन्य उपयोगनो काल.	विसेसाहिया २	सर्वथी थोडा १	विसेसाहिया ३	विसेसाहि० ४	विसेसाहिया ५
१६	उत्कृष्ट उपयोगनो काल	विसेसा० २	सर्वथी थो० १	विसेसा० ३	विसेसाहि० ४	विसेसाहिया ५
१७	जघन्य उत्कृष्ट उपयोगना कालनी अल्पा	ज० उ० विसेसाहि० २	सर्व० ज उ. विसेसाहि० १	ज उ विसे-सा० ४	ज० उ० विसे-सा० ४	जघन्य-उत्कृष्ट-विसेसाहिया ५
१८	फरशा अणफरशानो प्रमाण	ज० अंगु० असं० उत्कृष्ट १२ योजन	ज० अंगु० असं० उत्कृष्ट लाख योजन	ज अंगु० असं० उत्कृ० ९ योजन	ज अंगु० असं० उत्कृ० ९ योजन	जघन्य अंगुलनो असंख्यातमे भाग. उत्कृष्ट ९ योजन

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे इंद्रियद्वाराऽख्यं पंचविंशति प्रकरणम्. ॥





प्रकरण छव्वीसवा सम्यक्त्व स्वरूप.



हिवे सम्यक्त्वना पांच भेदः—साश्वादान सम्यक्त्व (१) उपशम सम्यक्त्व (२) वेदक सम्यक्त्व [३] क्षयोपशम सम्यक्त्व (४) क्षायक सम्यक्त्व (५)

हिवे पांच सम्यक्त्वनी स्थिती कहे छे। साश्वादान सम्यक्त्वनी स्थिति जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी ६ छे आविलकानी ॥ १ ॥ उपशम सम्यक्त्वनी स्थिती जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनी ॥ २ ॥ वेदक सम्यक्त्वनी स्थिती जघन्य उत्कृष्ट एक समयनी ॥ ३ ॥ क्षयोपशम सम्यक्त्वनी स्थिति जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी ॥ ४ ॥ क्षायक सम्यक्त्वनी स्थिती नथी ॥ ६ ॥

हिवे साश्वादान सम्यक्त्व अने उपशम सम्यक्त्व एक भवाश्री जघन्य एकवार आवे उत्कृष्टी ५ वार आवे॥ वेदक सम्यक्त्व जघन्य उत्कृष्ट एक वार आवे ॥ क्षयोपशम सम्यक्त्व जघन्य एक वार उत्कृष्टी असंख्यातीवार आवे ॥ क्षायक सम्यक्त्व आया पीछे जाय नही. ॥

हिवे उपशम सम्यक्त्वना सात भेदः—अणंतानुबंधी क्रोध (१) मान (२) माया (३) लोभ (४) मिथ्यात्व मोहनी [५] मिश्रमोहनी

(६) सम्यक्त्व मोहनी (७) ए सातूं प्रकृति उपशमावे जिणनें उपशम सम्यक्त्व कहिये ॥ तथा ए सातूं प्रकृति माहिली कोई क्षय करे, कोइ उपसमावे जिणनें क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिये ॥

हिवे क्षयोपशम सम्यक्त्वना चार भेदः–चार प्रकृती क्षय करे तेनें उपशमावे जिणनें क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिये ॥ १ ॥ तथा ५ प्रकृति क्षय करे दोय प्रकृती उपशमावें जिणनें क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिये ॥ २ ॥ तथा ६ प्रकृती क्षय करे एक उपशमावे जिणनें क्षयो-पशम स० क० ॥ ३ ॥ तथा ४ प्रकृती क्षय करे २ उपशमावे एक वेदे जिणनें क्षयोपशम वेदक सम्यक्त्व कहिये ॥ ४ ॥

हिवे क्षयवेदकना ३ भेदः–चार प्रकृति क्षय करे अने ३ वेदे तेने क्षयवेदक सम्यक्त्व कहिये ॥ ५ ॥ तथा ५ प्रकृती क्षय करे दोय वेदे तेने क्षयवेदक स० क० ॥ ६ ॥ तथा ६ प्रकृती क्षय करे एक वेदे तेने क्षय वेदक स० क० ॥ ७ ॥ तथा ७ सातूही प्रकृती क्षय करे तेने क्षायक स० क० ॥ ८ ॥ ए नव भेद जाणवा. ॥

हिवे नव प्रकारनी सम्यक्त्व कहे छे । द्रव्य सम्यक्त्व [१] भाव सम्यक्त्व (२) निश्चय सम्यक्त्व (३) व्यवहार सम्यक्त्व (४) निसर्ग सम्यक्त्व (५) उपशम सम्यक्त्व (६) कारक सम्यक्त्व (७) रुचक सम्यक्त्व [८] दीपक सम्यक्त्व (९).

हिवे द्रव्य सम्यक्त्व किणनें कहिये । श्री तीर्थंकर जिन वचन सत्य सरदे पिण परमार्थ नहि जाणे भेदानु भेद नहि जाणे गुरूनो दियो सम्यक्त्व गृह्यो इण ऊपर भेडनो दृष्टांत ॥ १ ॥

हिवे भाव सम्यक्त्व किणनें कहिये । भाव सम्यक्त्वनो धणी परमार्थ जाणे भेदानुभेद जाणे तिण ऊपर आरिशाको (काच)

दृष्टान्त जिम आरसामांही जेसो स्वरूप देखे तैसो दीसे. तेने भाव सम्यक्त्व कहिये ॥ २ ॥

हिवे निश्चय सम्यक्त्व किणनें कहिये. ज्ञान दर्शन चारित्रनें विसे शुभ भाव प्रवर्ते तेने निश्चय सम्यक्त्व कहिये. ॥ ३ ॥

हिवे व्यवहार सम्यक्त्व किणनें कहिये ॥ लक्षण करि जाणे साधूनी समाचारीमे प्रवर्ते तथा श्रावक व्रत पाले सामाइक पोषध प्रतिक्रमण करे त्याग पच्चखाण लेवे जिणनें व्यवहार सम्यक्त्व कहिये. (४)

हिवे निसर्ग सम्यक्त्व किणनें कहिये ॥ ते गुरूना उपदेश विना जिन धर्म सत्य सरदे, जातिस्मरण ज्ञान करी जाणे मृगापुत्रनी परे ॥ जिणनें निसर्ग सम्यक्त्व क० ॥ ५ ॥

हिवे उपदेश सम्यक्त्व किणनें कहिथे । गुरूना उपदेशथी देव-गुरु धर्म ए ३ तत्व सत्य सरदे तेनें उपदेश सम्यक्त्व कहिये ॥६॥

हिवे कारक सम्यक्त्व किणनें कहिये । ते शुद्ध क्रिया पाले शुद्ध आचार पाले जिम सिद्धान्तमांही कह्यो तिम प्रवर्ते तेनें कारक सम्यक्त्व कहिये ॥ ७ ॥

हिवे रुचक सम्यक्त्व किणनें कहिये । गुरुना वचन ऊपरे रुची राखे क्रिया करणकी रुची राखे पिण करी सके नहीं जिणनें रुचक सम्यक्त्व कहिये ॥ ८ ॥

हिवे दीपक सम्यक्त्व किणनें कहिये ॥ दीपकनी परे जिम दीपक अन्य जगे चांदणो करे पिण आपणे नीचे अंधारो रहे तिम अन्य

लोगोंको प्रतिबोधे पिण पोते सम्यक्त्व पावे नहीं जिणनें दीपक सम्यक्त्व कहीये ॥ ९ ॥

हिवे विस्तारथी व्यवहार सम्यक्त्वना ६७ भेद कहे छे॥ सम्यक्त्वनी चार ४ सरदणा ॥ जीवादिक ९ पदार्थनी ओलखण (पहछान) करे ॥ १ ॥ तत्वना जाण आचार्य बहु श्रुतीनी सेवा करे० ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो परिचय टाले ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म पर प्रेम न राखे ॥ ४ ॥

हिवे ३ लिंगः— स्त्री लिंग पुरुपलिंग नपुंसकलिंग* एवं ॥ ७॥

हिवे दस प्रकारनो विनय कहे छे । अरिहंतणो विनय करे (१) सिद्धनो विनय (गुणग्राम) करे० (२) ज्ञानी पुरुपनो विनय करे (३) सूत्र सिद्धान्तनो विनय करे (४) धर्मी पुरुपनो विनय करे (५) साधुजीनो विनय करे (६) धर्माचार्यनो विनय करे (७) उपाध्यायजिनो विनय करे (८) प्रवचननो विनय करे (९) सम्यक्‌दृष्टीनो विनय करे(१०) एवं ॥ १७ ॥

हिवे सम्यक्त्वनी ३ शुद्धता ॥ मनशुद्धता (१) वचन शुद्धता (२) कायशुद्धता (३) एवं ॥ २० ॥

हिवे सम्यक्त्वना ५ लक्षण-सम (१) संवेग [२] निरवेग (३) अणुकंपा (४) आसता । [५] एवं २५

---

* पुरुपलिंग ते जिम तरुण पुरुष रंग राग उपर राचे तिम श्री वीतरागनी वाणी उपर राचे (१) स्त्री लिंग ते जिम २-३ दिननो भूखो पुरुप क्षीर सक्करना भोजनने आदर देवे तिम श्री वीतरागनी वाणीने आदर देवे (२) नपुंसकलिंग ते वित रागनी वाणी सुणी हर्षवंतहुवे (३)

हिवे सम्यक्त्वनी आठ भावना–सूत्र सिद्धान्तनो जाण होय तो जिण मार्ग दीपावे (१) धर्म कथानो कहनहार (वक्ता) होय तो जिण मार्ग दीपावे [२] न्यायनो जाणकार होय तो जिणमार्ग दीपावे (३) अवसरनो जाण होय तो जिण मार्ग दीपावे (४) तपस्वी होय तो जिन मार्ग दीपावे (५) विद्वान् होय तो जिणमार्ग दीपावे (६) मिष्ट वचनी होय तो जिन मार्ग दीपावे (७) कवी होय तो जिन मार्ग दीपावे (८) एवं ॥ ३३ ॥

सम्यक्त्वना ५ आभरण-धर्मने विषे चतुर होय (१) चतुर्विध संघनी सेवा करे (२) गुणवंतनी भक्ति करे (३) धर्मने विषे स्थिर चित्त राखे [४] अन्यमतीने हेतू दृष्टांत करी समजावा समर्थ होय (५) एवं ॥ ३८ ॥

हिवे सम्यक्त्वना ५ लक्षण–सुख दुःख आया धीरता (धैर्य) राखे । १ । वैराग्यवंत होय । २ । दिनदिन प्रत्यय आरंभसूं निवर्ते । ३ । अनुकम्पावंत होय । ४ । जिन धर्म ऊपरे विश्वासवन्त होय ॥ ५ ॥ एवं ॥ ४३ ॥

हिवे सम्यक्त्वना छे दोष टाळे ॥ पर पाखंडीनें वंदना नही करे (१) पर पाखंडीसूं वारंवार बोले नहीं (२) पर पाखंडीको घणो परिचय करे नही (३) पाखंडीनें मोक्षनो कारण जाण दान देवे नहीं (४) पाखंडीसूं घणो वाद करे नही (५) पाखंडीसे विना वोलाया वोले नहीं (६) एवं ४९ ॥

हिवे सम्यक्त्वीने छे प्रकारनो आगार ॥ राजा मिथ्यात्वी कोई कार्य करावे तो आगार (१) न्यातनो आगार (२) जोरावरनो आगार (३) देवतानो आगार (४) माता पिताको आगार ॥ (५) कारणसूं अन्यमतीने दान देणाको आगार (६) एवं ५५ ॥

हिवे सम्यक्त्वनी छे भावना ॥ हे जीव सम्यक्त्व सदा निर्मल छे। तें रागद्वेष करी मलीन करी छे तांहारो निजगुण निर्मलही राखवो ॥ ए पहिली भावना ॥ १ ॥

हिवे दुजी भावना–जिम नगरनें कोट दरवाजा करीने दोपद चोपद सर्व जीवने आधारभूत छे। जिम सम्यक्त्व रूपया नगरने विषे ज्ञानदर्शन चारित्र, संयम व्रत पचखाण विनय व्यावच सम्यक्त्व रूप राजानें आधारभूत छे ॥ २ ॥ हिवे तीजी भावना ॥ सर्व धर्मनो उपाय सम्यक्त्व छे ॥ ३ ॥ हिवे चोथी भावना जिम सर्व जीवनें पृथ्वी आधारभूत छे तिम जीव धर्मने विषै सम्यक्त्व आधारभूत छे ॥ ४ ॥

हिवे पांचमी भावना जिम दूधनो भाजन शंख–शंख माही दूध विणसे नही खाटो थाय नही तिम सर्व ज्ञान धर्मरूप दूधनो भाजन सम्यक्त्व छे ॥ ५ ॥

हिवे छट्ठी भावना जिम चक्रवर्तिने रत्ननो भाजन निधान छे तिम सर्वव्रत्ती. देशव्रत्ती रत्ननो. भाजन सम्यक्त्व छे ॥ ६ ॥ ॥ एवं ६१ ॥

हिवे सम्यक्त्वना छे स्थानक ॥ जीवादिक हेय–गेय–उपादेयनो स्वरूप चिंतवे (१) जीवसदा शाश्वतो छे (२) शुभ अशुभनो कर्ता जीव छे (३) कीधा कर्मनो भोगवणहार जीव छे (४) किणही ऊपर रागद्वेष करे नहीं (५) जीवने मोहनी आदि अष्ट कर्म क्षयकर्यां थके मोक्ष छे (६) एवं ६७ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे सम्यक्त्व स्वरूपाऽख्यं षड्विंशति प्रकरणम् ॥ २६ ॥



प्रकरण सत्तावीसवा–प्रमाणबोध ॥



हिवे भव्य जीवना सुख बोधने अर्थे ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना पल्योपमनु मांन सूत्र अनुयोग द्वारथी कहे छे ॥ तेमां प्रथम ३ प्रकारना अंगुलना नाम ॥ आत्मा अंगुल ॥ १ ॥ उत्सेधांगुल ॥ २ ॥ प्रमाणांगुल ॥ ३ ॥

हिवे आत्म अंगुलनुं मान कहे छे ॥ भरतादि १५ क्षेत्र छे ॥ तिहां जे काले जे आरे जे मनुष्य होय ॥ ते मनुष्यनुं ते काले ते आराने विषे पोतापोतानें १२ अंगुले १ मुख थाय ॥ अने ९ मुखे एक पुरुषनुं ऊंचपणानुं मांन थाय ॥ एटले १२ नवा अठोत्तरसो १०८ आत्म अंगुलनो पुरुष उंचो होय ॥ ते पुरुषने प्रमाणोपेत कहिये ॥ १ ॥

हिवे मान युक्त पुरुष ते केहने कहिये ॥ पुरुष प्रमाणे उंडि जलनि कुंडी होय ॥ तेने जले करि परिपूर्ण भरिये ॥ ते मांही पुरुष वेशे ॥ तिवारे एक द्रोण प्रमाणे जलकुंडि माहीथी वाहिर निकले ॥ तथा एक द्रोण प्रमाणे जले करि कुंडि उंणी होय ते कुंडी मांहि ते पुरुष वेशे तिवारे परिपूर्ण जले भराय ॥ तिवारे ते मानो

पेत पुरुष कहिये ॥ हिवे द्रोण ते केवडो होय ते कहे छे ॥ बे असलीये १ पसली थाय ॥ बे पसलीये १ सइ थाय ॥ चार सइये १ कुडव थाय । चार कुडवे १ पाथो थाय ॥ चार पाथे १ आढो थाय॥ चार आढे एक द्रोण थाय ॥ ए द्रोणनूं मान कह्यूं॥ ए रीते मानो पेत पुरुप कहिये ॥ २ ॥ हिवे उन्मान युक्त पुरुष केहने कहिये ॥ जे पुरुप तोल्यो थको अर्द्ध भार थाय तेने उन्मान युक्त पुरुप कहिये ॥ अर्द्धभारनूं मांन कहे छे ॥ एक हजारने पंचाश पले अर्द्ध भार थाय ॥ ए अर्द्ध भारनूं मान कह्यूं ॥ ३ ॥ हिवे ए ३ ॥ प्रमाण मान उन्मान युक्त लक्षण साथियादिक ॥ व्यंजन मस तिलादिक ॥ गुण ते क्षमा दानादिक सहित जे पुरुष होय ते उत्तम पुरुष जाणवो ॥ हिवे उत्तम पुरुप १०८ आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥ १ ॥ मध्यम पुरुप १०४ आत्म अंगुलनो ऊंचो होय ॥ २ ॥ अधम पुरुष ९६ आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥ ३ ॥ हिवे जे पुरुप १०८ आत्म अंगुलथि न्युनाधिक होय ॥ स्वर आदेय वचन ॥ १ ॥ सत्व धीर्य ॥ २ ॥ सारतेरूपादि ॥ ए ३ गुणे वर्जित होय ते परनो दास किंकर थाय ॥ एहवा ६ आत्म अंगुले १ पगना मध्य भागनुं पहोलपणुं थाय ॥ बे पगे १ विहथि वेंत थाय । बे विहथि वेंते ए १ हाथ थाय ॥ बे हाथे एक कुक्षि थाय । बे कुक्षिये अथवा ४ हाथे १ धनुप थाय॥ बे हजार धनुषे १ गाउ थाय। चार गाउए १ जोजन थाय॥ जे काले जे आरे जे मनुष्यनुं आत्म अंगुल होय ते आत्म अंगुले ते ते वखतना ॥ नगर ॥ गाम ॥ वन ॥ कुवा ॥ तलाव ॥ वावडी ॥ गढ ॥ पोल॥ कोठा ॥ यान ॥ ॥ रथ ॥ गाडादिक ७३ बोलना मान मळता छे ॥१॥ हिवे उत्सेधांगुलनुं मान कहे छे ॥ अनंता सूक्ष्म परमाणु आ भेला करिये ॥ तिवारे १ व्यवहारि परमाणु थाय ॥ तथा जालीने विषे रह्या सूर्यना किरण तेमां रहिजे रज उडती देखाय छे ॥ ते रजनो

अनंतमो भाग तेने व्यवहारि परमाणुं कहिये ॥ अन्यमति रजना ते त्रिशमा भागने परमाणुं कहे छे ॥ ते व्यवहारि परमाणुं ॥ शस्त्रे करि तरवारनी तथा छर पलानि धाराये करि पण छेदाय भेदाय नही ॥ अग्निमांही सोंसरो निकली जाय पण बळे नही ॥ दाजे नही ॥ तथा पुष्कर संवर्त महां मेहमाहीं चाल्यो जाय पण पलळे भिंजाय नही ॥ तथा गंगा महा नदीनो प्रवाह ऊंचो चुल हिमवंत पर्वतथी पडे छे ते प्रवाह साहमो चाल्यो जाय पण खलाय नही ॥ घात पामे नही ॥ तथा पाणिना आवर्तन तथा बिंदु वा मांही रहे पण तिहां सडीगलीने पाणि न थइ-जाय ॥ ते अति तिखे शस्त्रे करिने देवतानी शक्तिये छेदता भेदता एक खण्डनो बिजो खंड न थाय ॥ तेने तत्वज्ञाता परमाणु कहे छे ॥ एहवा अनंता व्यवहारि परमाणु एकठा मिळे तिवारे १ उष्ण सन्नियो थाय ॥ आठ उष्ण सन्नियें १ सण सन्नियो थाय ॥ आठ सणसन्नियें १ उर्द्धरेणु थाय ॥ आठ उर्द्धरेणुये १ त्रश रेणु ते बेंद्रीयादिक त्रश जीवने चालता रज उडे ते थाय ॥ आठ त्रशरेणुये १ रथरेणु ते रथा-दिक हिंडता रज उडे ते थाय ॥ आठ रथरेणुए १ देवकुरु उत्तर कुरूना जुगलिया मनुष्यना वालाग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ आठ देवकुरु उत्तरकुरुना बालाग्रे १ हरिवास रमकवास क्षेत्रना जुगलियाना बाला-ग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ आठ हरिवास रमकवासना बालाग्रे १ हेमवय एरणवय क्षेत्रना जुगलियाना बालाग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ आठ हेमवय एरणवयना बालाग्रे १ पूर्व पश्चिम महाविदेहना मनुष्यना बालाग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ आठ पूर्व पश्चिम महाविदेहना बालाग्रे १ भरत इरवतना मनुष्यना बालाग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ एहवा ८ बालाग्रे १ लिख थाय ॥ आठ लिखे १ जु थाय ॥ आठ जुये १ जवमध्य थाय ॥ आठ जव मध्ये १ अंगुल थाय ॥ छ अंगुल १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेंत थाय ॥ २४ अंगुले १ हाथ थाय । ४८ अंगुले १ कुक्षि थाय ॥ ९६ अंगुले १ धनुष थाय ॥ २ हजार धनुषे १ गाउ

थाय ॥ चार गाउए १ योजन थाय ॥ ए उत्सेधांगुले २४ दंडकनी अवघेणामवी छे ॥

हिवे प्रमाणांगुलनुं मान कहे छे भरतादिक चक्रवर्तीनुं कांगणि रत्न होय ॥ ते ८ सोनइया भारने तोले छे ॥ सोनइयानुं तोल कहे छे ॥ ४ मधुर त्रिफले ॥ १ श्वेत सरसव थाय ॥ १६ सरसवे १ अडद थाय ॥ २ अडदे १ गुंजा थाय ॥ ५ गुंजाये १ मासो थाय॥ १६ मासे १ सोनइयो थाय ॥ एहवा ८ सोनइया भारनुं कांगणि रत्न होय ॥ तेने छे तला ॥ ८ खुणा ॥ १२ हांश छे ॥ सोनीनी अहिरणनें संठाणे छे ॥ ते कांगणि रत्ननी एकेकी हांश उत्सेधांगुलनि पहोलि छे ॥ अने जे उत्सेधांगुल ते समण भगवंत महावीरनूं अर्द्ध अंगुल थाय॥ तेने हजारगुणुं करिये ॥ तिवारे १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एटले महावीर स्वामीना पांचसे आतम अंगुले १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एहवा ६ प्रमाणांगुले १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेंत थाय ॥ २४ अंगुले १ हाथ थाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षि थाय ॥ ९६ अंगुले एक धनुष थाय ॥ २ हजार धनुषे १ गाउ थाय ॥ ४ गाउये एक योजन थाय ॥ ए प्रमाणांगुले ॥ पृथ्वी पर्वत विमान नरकवासा द्वीप समुद्र नरक देवलोक लोक अलोक शाश्वती जमीन रत्न प्रभादिक २८ बोलनुं तथा द्वीप समुद्रादि २८ बोलनुं ॥ लांबपणु ॥ पहोलपणुं ॥ उंचपणुं उंडपणुं ॥ परिधि प्रमुखना मान मळ्या छे ॥ ३ ॥ ए ३ प्रकारना अंगुल कह्या ते प्रत्येक २ ना त्रण भेद ॥ श्रेणि अंगुल ॥ १ ॥ प्रतरांगुल ॥ २ ॥ धनांगुल ॥ ३ ॥ तीहां असत्कल्पनयि श्रेणि ते असंख्यातां जोजन कोडाकोडि प्रमाणे लांबी ॥ अने एक आकाश प्रदेशनी पहोली ॥ जाडपणे लोकांत सुधि तेने श्रेणि कहिये ॥ १ ॥ ते श्रेणिनें श्रेणि गुणो करिये तेने प्रतर कहिये ॥ २ ॥ ते प्रतरने श्रेणि गुणो करिये तेने घन कहिये ॥ ३ ॥ ते घनकृत लोकने सं-

ख्यातगुणो करिये ॥ तिवारे संख्याता लोक अलोकमां थाय ॥ ते संख्याता लोकने असंख्यात गुणा करिये त्यारे असंख्याता लोक अलोकमां थाय ॥ ते असंख्याता लोकने अनंतगुणा करिये ॥ तिवारे अनंता लोक अलोकमां थाय ॥ अने ते अनंता लोकना जेटला आकाश प्रदेश छे ॥ तेटला निगोदना एक शरीरमांही निगोदिया जीव छे ॥ असंख्याता सूक्ष्म निगोदे १ बादर निगोद थाय ॥ एक निगोदमां अनंता जीव जांणवा । धन्य तीर्थंकर देवनुं ज्ञान ॥ ए ३ प्रकारना अंगुल कह्या ॥

हिवे ३ प्रकारना पल्योपमनुं मान कहे छे ॥ तेमां पल्योपमना ३ भेद ॥ उद्धार पल्योपम ॥ १ ॥ अद्धा पल्योपम ॥ २ ॥ क्षेत्रपल्योपम ॥ ३ ॥ एक एकना बेवे भेद ॥ सुक्ष्म ॥ १ ॥ वादर ॥ २ ॥

हिवे प्रथम बादर उद्धार पल्योपमनुं स्वरूप कहे छे ॥ एक योजननो उत्सेधांगुले लांबो पहोलो ने उंडो एहवो १ पालो कलपिये॥ तेनि त्रिगुणी जाझेरी परिधि होय ॥ ते पालो देव कुरु उत्तरकुरुना जुगलीयाना मस्तकना केश ते एक दिनथि मांडिने ७ दिनना उग्या वालाग्रे करि भरिये ॥ ते एहवो ठांसि भरिये के ॥ अग्निमांहि बले नहि ॥ वायरे करी तेमांथि १ रज उडे नहि ॥ सडे नहि पोलारना अभावथि ॥ विध्वंशे नहि ॥ दुर्गंध थाय नहि ॥ चक्रवर्तीनुं सैन्य उपर चाले तो पण नमे डोले नहि ॥ गंगा नदीनो प्रवाह उपर चाले तो पण पाणिमांहि भेदाय नहि ॥ एहवो ठांसीनें पालो भरिये ॥ पछि ते पालामांथि समये समये एक एक वालाग्र काढियेे॥ इम काढता जेटले काले पालो ठालो थाय ॥ वाकी एक रज रहे नही ॥ तेटला कालने वादर उद्धार पल्योपम कहिये ते पल्योपम संख्याता समयनो जाणवो ॥ एहवा दश कोडा कोडी पल्योपमे १

वादर उद्धार सागरोपम थाय ॥ ए सागरोपमनुं कांइ प्रयोजन नथि॥ केवल प्ररुपणा मात्र छे ॥ ए वादर उद्धार पल्योपम ॥ १ ॥ हवे सूक्ष्म उद्धार पल्योपमनुं मांन कहे छे ॥ जिम एक योजननो पालो कल्पिये ते पूर्ववत् ॥ ते पालामांही देवकुरु उत्तरकुरुना जुगलियाना माथाना केश ते एक दीनना जाव सात दीनना उग्या वालाग्र लेइये ते एकेका वालाग्रना असंख्याता खंड करिये॥ ते खंड केवडा-नाहना थाय ॥ चक्षु इंद्रियनि अववेणाथि असंख्यातमे भागे अने नाहना सूक्ष्म वनस्पतीना जीवना शरीरनी अववेणाथी असंख्यातगुणा महोटा ॥ अने जेवडुं एक वादर पृथ्वीकायना जीवनुं शरीर तेवडा ते वालाग्रना खंड नाहना थाय ॥ ते वालाग्रना खंड अग्निये वले नहि ॥ वायरे उडे नहि पूर्ववत् ॥ पछि ते वालाग्रने खंडे करिने ते पालो ठांसी भरिये पूर्ववत् ॥ पछी ते पाला माहिथी ॥ समये समये एकेको वालाग्रनो खंड काढिये ॥ इम काढता जेटले काले ते पालो खाली थाय ॥ तेटला कालने सुक्ष्म उद्धार पल्योपम कहिये ॥ ए पल्योपम असंख्याता समयनो थाय एहवा दश कोडा कोडि पल्यो-पमे १ सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय ॥ ए सागरोपमे द्विप समुद्रनूं मान मळ्युं छे ॥ अढि उद्धार सागरोपमना जेटला समय थाय तेटला द्विप समुद्र त्रिछालोकमां छे ॥ जंबुद्वीप १ एक लाख योजननो लांवो नें पहोलो ॥ इम ठाम वमणो लवण समुद्र वे लाख योजननो ॥ धातकि खंड ४ लाख योजननो ॥ इम-ठाम वमणा असंख्याता द्विप समुद्र जांणवा ॥ ए सुक्ष्म उद्धार पल्यो-पम ॥ २ ॥ १ ॥

हिवे अद्धा पल्योपमनुं स्वरुप कहे छे तेना २ भेद ॥ वादर ॥ १ ॥ सूक्ष्म ॥ २ ॥ तेमा वादर अद्धा पल्योपम केहने कहिये ॥ एक योजननो लांवो पहोलो ने उंडो चारे हांसे सरिखो पूर्ववत् पालो

कलपीये पछी पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरुना जुगलिया मनुष्यना वालाग्रे करी पालो ठांसी भरिये ॥ पछी सो सो वर्षे एकेको वालाग्र काढिये ॥ इम काढता जेटले कालो ते पालो ठालो थाय ॥ तेटला कालने वादर अद्धा पल्योपम कहिये ॥ ए पल्य संख्याता कोडि वर्षे थाय ॥ एहवा दश कोडाकोडी वादर अद्धा पल्योपमे १ वादर अद्धा सागरोपम थाय ॥ ए सागरोपमनुं कांइ प्रयोजन नथी ॥ केवल प्ररुपणा मात्र छे ॥ २ ॥ १ ॥

हिवे सुक्ष्म अद्धा पल्योपमनुं स्वरुप कहे छे ॥ एक योजननो लांबो पहोलो ने उंडो पालो पूर्ववत् कलपिये ॥ तेहमां पूर्ववत् देव कुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलियाना बालाग्रना असंख्याता खंड करि भरिये ॥ पछी ते पालामांथि सोसो वर्षे एकेकि रज काढिये ॥ जेटले काले ते पालो खालि थाय ॥ तेटला कालने सूक्ष्म अद्धा पल्योपम कहिये ॥ एहवा दश कोडाकोडी पल्योपमे १ सूक्ष्म अद्धा सागरोपम थाय ए सागरोपमे ॥ नारकी ॥ तिर्यंच ॥ मनुष्य ॥ देवता ॥ ए ४ गतिना आयुष मव्या छे ॥ २ ॥ २ ॥

हिवे क्षेत्रपल्योपम कहे छे ॥ क्षेत्र पल्योपमना २ भेद ॥ बादर ॥ १ ॥ सूक्ष्म ॥ २ ॥ तेमां बादर क्षेत्रपल्योपम केहने कहिये ॥ एक योजननो लांबो पहोलो नें उंडो पूर्ववत् पालो कलपिये ॥ तेमां पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलियाना माथाना वालाग्रे भरिये ॥ पछी ते पाला मांहिला बालाग्रनें फरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अपहरता जेटले काले ते पालो खालि थाय ॥ तेटला कालने बादर क्षेत्रपल्योपम कहिये ॥ ए पालो खालि थाता असंख्याति अवसर्पिणी उत्सर्पिणी वहि जाय ॥ एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ वादर क्षेत्र सागरोपम थाय ॥ ए सागरोपमनो कांइ प्रयोजन नथी ॥ केवल

प्ररूपणा मात्र छे ॥ तथा मतांतरे जीव द्रव्यना परिणाम मव्या छे ॥ ३ ॥१॥

हिवे सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमनुं स्वरूप कहे छे॥ एक योजननो लांबो पहोलो ने उंडो पूर्ववत् पालो कलपिये ॥ ते मांही पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलियाना वालाग्रना असंख्याता खंड करि भरिये ॥ पछि ते पाला मांहिला बालाग्रने फरस्या आकाश प्रदेश तथा अणफरस्या आकाश प्रदेश छे ते फरस्या ॥ अणफरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अपहरिये ॥ जेटले काले पालो खालि थाय ॥ तेटला कालने १ सूक्ष्म क्षेत्रपल्योपम कहिये ॥ एहवा दश कोडाकोडि सुक्ष्म क्षेत्रपल्योपमे १ सुक्ष्मक्षेत्र सागरोपम थाय ॥ ए सागरोपमे द्रष्टिवाद सूत्रना भाव मव्या छे ॥ ३ ॥ २ ॥

ए ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना पल्योपमनुं मान कह्युं ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे प्रमाण बोधाऽख्यं सप्तविंशति प्रकरणम्. ॥



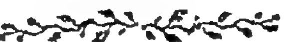
प्रकरण अट्ठावीसवा—चौदा बोलनी लड.

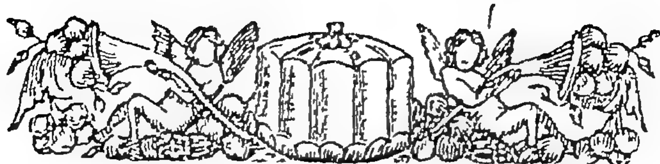
										१								२						३				४					
संख्या	चौदे बोलनी लड	जीवका भेद		गुण ठाणा		जोग		उप-योग		लेशा		दंडक		उदय-भाव		उपशम भा०		क्षायक भा०		क्षयोप-शमभा		परिणा-मिया भा०		चार गत		छकाय		आत्मा ८	
		ज.	उ	ज	उ.	ज.	उ.	ज	उ	ज.	उ	ज	उ	ज.	उ.	ज	उ	ज.	उ.	ज	उ.	ज.	उ.	ज.	उ.	ज.	उ.	ज.	उ.
१	चौदा भेदोका जीव चौदेलिया	१४	१४	१	४	२	१५	४	१०	३	६	५	११	२१	३२	१	८	१	९	१७	२६	८	१०	१	४	२	५	४	८
२	१४ गुणठाणाका जीव १४ लिया.	१	४	१४	१४	९	१५	८	१२	६	६	१	६	२२	२९	८	८	९	९	२६	३२	१०	१०	१	४	१	२	८	८
३	१५ योगका जीव १५ लिया.	१	७	२	१२	१५	१५	४	१२	६	६	१	१४	२०	३२	१	८	१	९	१९	३२	१०	१०	१	४	१	२	०	८
४	१२ उपयोगका जीव १२ लिया.	१	८	३	११	६	१५	१२	१२	१	६	१	१०	१७	३१	१	८	७	१३	२४	३२	१०	१०	१	४	१	४	८	८

५	६ लेश्याका जीव ६ लिया	१	६	१	६	१	१५	३	१२	६	६	१	६	२०	३२	१	८	१	९	१६	३२	८	१०	१	४	१	५	६	८
६	२४ दंडकका २४ जीव लिया.	५	११	१	६	१	१५	५	११	४	६	२४	२४	२९	३३	१	८	१	९	२८	२९	८	१०	४	४	६	६	६	८
७	उदैभावका ३३ बोलका ३३ जीव लिया	२	१४	१	१४	२	१५	३	१२	६	६	८	२४	३३	३३	१	८	१	९	२६	३२	८	१०	४	४	६	६	६	८
८	उपशम भावका ८ बोलका ८ जीव लिया	१	२	१	३	५	१४	४	७	१	६	१	२	१०	२२	८	८	१	१	१६	२२	८	१०	१	२	१	१	७	८
९	क्षायक भावका १३ बोलका १३ जीव लिया	१	२	१	४	१	१५	२	९	१	६	१	२	४	२२	४	७	१३	१३	१६	२१	५	१०	१	२	१	१	६	८
१०	क्षयोपशम भावका ३२ बोलका ३२ जीव लिया	१	१४	५	१२	९	१५	१०	१०	६	६	१	२४	२२	३३	५	८	१	२	३२	३२	१०	१०	१	४	१	६	८	८
११	परिणामिक भावका १० बोलका १० जीव लिया	१	१०	१	१०	१	१५	३	१२	१	६	१	१०	१५	३३	१	८	१	३	१७	३२	१०	१०	१	४	१	६	८	८

१२	चारगत ४ जीव लिया.	१	४	१	४	१	१५	३	११	२	६	४	४	२१	२९	१	८	१	९	१६	२९	८	१०	४	४	१	२	६	८
१३	छेकायका छे जीव लिया.	२	५	१	२	१	१५	३	९	३	६	६	६	२४	३०	१	८	१	९	१३	२५	८	१०	१	२	६	६	६	८
१४	८ आत्माका ८ जीव लिया.	१	८	१	८	१	१५	३	१२	१	६	१	८	११	३३	१	८	१	३	१५	३२	९	१०	१	४	१	६	८	८

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे चतुर्दश संज्ञाऽख्यं अष्टाविंशति प्रकरणम् ॥.





प्रकरण २१ वा १२ चक्रवर्ति यंत्र.

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१	१२ चक्रवर्ती के नाम	भरत	सागर	मघव	सनतकुमार	शांतिनाथ	कुंथुनाथ	अरिनाथ	सभूम	महापद्म	हरिसेन	जयनाम	ब्रह्मदत्त
२	पिता नाम	ऋषभ	सुमति	विजय	समुद्रविजय	विश्वसेन	शूरसेन	सुदर्शन	पद्मोत्तर	कनवीर्य	महाहरिविजय	पद्मराजा	ब्रह्मराजा
३	माता नाम	सुमंगला	यशोवती	भद्रा	सहदेवी	अचला	श्री	देवी	ज्वाला	ता ।	मेराणी	वपराणी	चुल्लणी
४	स्त्री नाम	सुभद्रा	भद्रा	सुनन्दा	जया	विजया	कन्यश्री	सूरश्री	पद्मश्री	वसुंधरा	देवी	लक्ष्मीवती	कुरुमती
५	आयुष प्रमाण	८४ लाख वर्ष	७२ लाख व०	५ लाख व०	३ लाख व०	१ लाख व०	९५ हजार व०	८४ हजार व०	६० हजार व०	३० हजार व०	१० हजार व०	३०० वर्ष	७०० वर्ष
६	देह प्रमाण	५०० धनुष	४५० धनु	४२ धनु	४१ धनु	४० धनु	३५ धनु	३० धनु	२८ धनु	२० धनु	१५ धनु	१२ धनु	७ धनु
७	नगरी नाम	वनिता	अयोध्या	सावत्थी	हतनागपुर	हतनागपुर	हतनागपुर	हतनागपुर	वणारसी	वणारसी	कंपिलपुर	राजगृही	कंपिलपुर

८	गती नाम	मोक्ष गती	मोक्ष गती	मोक्ष गती	मोक्ष गती	मोक्ष गती	मोक्ष गती	मोक्ष गती	नरक गती	मोक्ष गती	मोक्ष गती	मोक्ष गती	नरक गती
९	खंड साध्या	६	६	६	६	३	६	[illegible]	६	६	६	६	६
१०	निधान	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
११	रत्न	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
१२	सेवक देवता	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
१३	रत्नका आगर	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००
१४	मुकुटबंध राजा	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
१५	सामान्य राजा	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
१६	अंतेवर (राणी) प्रमाण	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००

१७	सर्व कुलांगना	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
१८	वारांगना	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००
१९	ग्राम प्रमाण	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड
२०	नगर प्रमाण	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००
२१	खेडा प्रमाण	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
२२	कवड मान	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००
२३	पाटण प्रमाण	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००
२४	मंडप प्रमाण	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
२५	द्रोणमुख प्रमाण	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००

२६	वारांगना	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४
२७	देश प्रमाण	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
२८	महानगर संख्या	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
२९	सामान्य नगर	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००
३०	नवाकटक पड़ाव	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
३१	राजधानी संख्या	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
३२	वेलावल	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००
३३	द्वीपनी संख्या	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
३४	जळ पंथनगर मान	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००

३५	सन्नीवेशमान	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००
३६	संवाहन मान	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००
३७	म्लेंछना सामानिक देश	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००
३८	उद्यान वन खंड	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार
३९	जातिवंत तुरंग	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख
४०	हस्ती	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख
४१	संग्रामीक रथ	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख
४२	सामान्य सर्व तुरंग	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड
४३	सइ दाना	८४ ला०	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला.	८४ ला	८४ ला	८४ ला.	८४ ला.	८४ ला.	८४ ला.	८४ ला

४४	पायक	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड
४५	तलारणनी संख्या	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख
४६	सूत्रधरनीसंख्या	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख
४७	रसोईदारनी स	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०
४८	रसोई दरोगा	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०
४९	आयुध शाला	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख
५०	सेनापतीनी संख्या	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००
५१	कटकना ईस-राजपालकनी सं	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००
५२	सामानिक अ-योध्या पडावा-ना नगरनी सं.	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००

५३	सामान्य उद्यानवनकी सख्या.	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००
५४	पुरनी सख्या	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००
५५	मत्रीनी सख्या	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००
५६	पंडितनी सख्या	२३ लाख	२३ लाख	२३ लाख	२३ लाख	२३ लाख	२३ लाख	२३ लाख	२३ लाख	२३ लाख	२३ लाख	२३ लाख	२३ लाख
५७	कु राजमान	२४	२४	२४	२४	२०	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४
५८	म्लेछ राजमान	१० लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख
५९	सर्व कल्याणका	३४ लाख	३४ लाख	३४ लाख	३४ लाख	३४ लाख	३४ लाख	३४ लाख	३४ लाख	३४ लाख	३४ लाख	३४ लाख	३४ लाख
६०	अगर सोना रूपाना	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००
६१	अतर्द्वीपा	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६

६२	अंगमर्दन करने वाला	३६ क्रोड	३६ क्रोड	३६ क्रोड	३६ क्रोड	३६ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड
६३	आभरण वाला	३६ क्रोड	३६ क्रोड	३६ क्रोड	३८ क्रोड	३६ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३८ क्रोड	३५ क्रोड
६४	कुल मान.	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड
६५	स्वयंस कुटुंब	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड
६६	पुत्रमान	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड
६७	भोजन स्थानक	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख
६८	गोकुल संख्या	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड
६९	हल संख्या	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड
७०	दिवटीया	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख

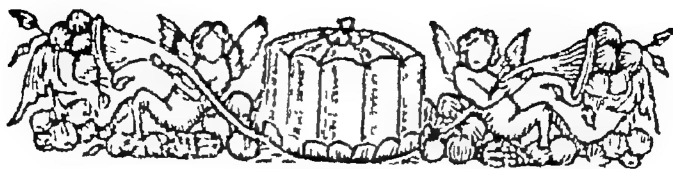
७१	कोडी ध्वज व्यवहारिया	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड
७२	खोजा पुरुषनी संख्या	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००
७३	ध्वजापताका घंटानी संख्या	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो.
७४	३२ विधनाटकनी संख्या	३२ क्रोड	३२ क्रोड.	३२ क्रोड	३२ क्रोड.	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड.	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड.	३२ क्रोड
७५	देवतानी संख्या	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००
७६	श्रेणीनी संख्या	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
७७	प्रश्रेणीनी संख्या	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
७८	वेदनी संख्या	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००
७९	संग्रामिक निशाण सं०	८४ ला०	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला.	८४ ला	८४ ला

८०	सामान्य विभाग	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड
८१	६४ लडामणि-का हार	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी
८२	सोनानाहार	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी
८३	रत्नाकाहार	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी	३४ लडी
८४	पट्टग सहितनी सं	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००
८५	उत्कृष्टोबाणजाय.	१२ योजन	१२ योज	१२ योज.	१२ योज	१२ योज.	१२ योज	१२ योज	१२ योज	१२ योज	१२ योज	१२ योज	१२ योज.
८६	तेलानी संख्या	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
८७	प्रसादनेहेलनी सं०	३४ खंड	३४ खं	३४ खं	३४ खं	३४ खं	३४ खं	३४ खं	३४ खं	३४ खं	३४ खं.	३४ खं	३४ खं.
८८	प्रसाद मेहेलनी सं.	३३ भूमी.	३३ भू.	३३ भू.	३३ भू.	३३ भू.	३३ भू.	३३ भू.	३३ भू.	३३ भू.	३३ भू.	३३ भू.	३३ भू.

८९	कुमरपण	७० लाख पूर्व	५०००० पूर्व	२५००० वर्ष	५००० व	२५००० व	२३७५० व.	२१००० व	५००० व	५००० व	३२५ व	३०० व	५६ व
९०	मांडलिकपण	१००० वर्ष	५००० पूर्व	२५००० वर्ष	५०००० व	२५००० व	२३७५० व	२१००० व	५००० व	५०० व	३२५ व	३०० व	५६ व
९१	खंड साध्या	६०००० वर्षे	३०००० व	२८०० व	१००० व	८०० व	६०० व	५०० व	४०० व.	३०० व	१५० व	१०० व	१६ व
९२	राजपदवी भोगवी	६ लाख पूर्व उणा १ लाख	७० लाख पूर्व	३९०००० वरस	९०००० व	२४००० व	२३७५० व	२०६०० व	४९५०० व	१८७०० व	१८७० व	१९०० व	६०० व
९३	दीक्षा पाळी.	१००००० पूर्व	१००००० पू	५०००० पू व	१००००० व	२५००० व	२३७५० व	२१००० व	०	१००० व	७३३० व.	४० व	०

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे द्वादश चक्रवर्ति यंत्राख्यं एकोनत्रिंश प्रकरणम् ॥





प्रकरण तीसवा—बद्धे लगा मुक्के लगाना बोल.



॥ श्री अनुयोगद्वार सूत्रथी कहे छे ॥ वर्तमान काले जीवे जे शरीर बांध्या छे ते बद्धे लगा ॥ १ ॥ पूर्वे जे शरीर बांध्या हता ते मुक्या, दूजामा भल्या नथी छूटा रह्या छे, तेनो एक पण अंश शेष रह्यो छे—ते मुक्के लगा ॥ २ ॥

हिवे पेहलो समुच्चयनो दंडक कहे छे ॥ उदारिक शरीरना दोय भेद ॥ बद्धे लगा (१) अने मुक्के लगा (२) बद्ध उदारिक असंख्याता छे ॥ ते कालथी असंख्याती उत्सर्पणी अवसर्पणीना समय जेटला ॥ क्षेत्रथी असंख्यात लोकाकाशना प्रदेश जेटला (१) मुक्त उदारिक ते अनंता ॥ ते कालथी अनंत उत्सर्पणी अवसर्पणीना समय जेटला ॥ क्षेत्रथी अनंता लोकाकाशना प्रदेश जेटला ॥ द्रव्य प्रमाणे अभव्यथी अनंतगुणा अधिक ॥ अने सिद्धनें अनंतमे भागे (१)

हिवे वैक्रेयना दोय भेद ॥ बद्धे लगा (१) मुक्के लगा (२) ॥ बद्ध वैक्रेय असंख्याता छे ॥ ते कालथी असंख्याती उत्सर्पणी अवसर्पणीना समय जेटला ॥ क्षेत्रथी प्रतरनें असंख्यातमें भागे जेटली श्रेणीयो तेना आकाश प्रदेश जेटला ॥ १ ॥ मुक्त वैक्रेय मुक्त उदारिकनी पेठे जाणवा ॥ २ ॥ आहारिक शरीरना दोय भेद ॥

बद्धे लगा (१) मुक्के लगा (२) ॥ बद्ध आहारिक होय तो जघन्य ॥ १ । २ । ३ । उत्कृष्ट पृथक् हजार ॥ २ ॥ मुक्तयौदारिकवत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मण प्रत्येकना २ भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तैजस कार्मण अनंत छे ॥ कालथि अनंति उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला ॥ क्षेत्रथि अनंता लोकाकाशना प्रदेश जेटला ॥ द्रव्य प्रमाणे सिद्धथी अनंत गुण अधिक अने सर्व जीवने अनंतमे भागे उणा सिद्ध वर्ज्या माटे ॥ १ ॥ मुक्त तैजस कार्मण अनंता कालथी अनंत उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना शमय जेटला क्षेत्रथी अनंता लोकाकाशना प्रदेश जेटला ॥ द्रव्य प्रमाणे सर्व जीवथी अनंत गुण अधिक ॥ सर्व जीवोनो वर्ग करिये ॥ तेना अनंता भाग माहिला एक भाग जेटला ॥ २ । ४ । ५ ॥

॥ इति प्रथम समुचयनो दंडक समाप्त ॥

हिवे दूजो नारकीनो दंडक कहे छे ॥ उदारिकना २ भेद ॥ बद्धेलगा (१) मुक्केलगा (२) तेमां बद्ध नथी [१] मुक्त अनंता छे ॥ पूर्वे मुकेला शरीरनी अपेक्षाये ॥ २ ॥ १ ॥ वैक्रियना होय भेद ॥ तेमां बद्ध असंख्याता ॥ ते कालथि असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला ॥ क्षेत्रथी प्रतरने असंख्यातमे भागे जेटली श्रेणियो तेना आकाश प्रदेश जेटला ॥ प्रतरनो असंख्यातमो भाग केटलो तेनु पहोलपणुं कहे छे ॥ अंगुल प्रमाणे ॥ आकाश प्रदेशनी राशीनो वर्ग मूलक वेविली तेनो वर्ग मूल कवेॱ। प्रथम वर्गमूल । बिजावर्ग मूल ॥ साथे गुणता जे राशी थाय तेटला प्रदेश प्रमाणे पहोलपणु जाणवुं ॥ अथवा दुजा वर्गमूलनो घन करतां ॥ जे आवे तेटला प्रदेश प्रमाणे पहोलपणुं जाणवुं । जिम असत्कल्पनाये २५६ नो प्रथम वर्ग मूल, १६ दुजोवर्ग मूल ॥ ४ ॥ शोलने चारे गुणता ॥ ६४ ॥

थाय ने ४ नो घन पण ६४ थाय॥ १ ॥मुक्त वैक्रेय अनंता उधिक-वत् ॥ २ ॥ २ ॥ तैजस कार्मणना बे भेद ॥ बद्ध १ मुक्त २ से वैक्रेयवत् ४ ॥ ५ ॥ इति ॥

हिवे दश भवनपतीना दश दंडक कहे छे॥ उदारिकना दो भेद॥ तेमा बद्ध नथि ॥ १ ॥ मुक्त अनंता पूर्ववत् ॥ २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना बे भेद बद्ध (१) मुक्त (२) तेमा बद्ध असंख्याता ते कालथि असंख्याती उत्सर्पिणी॥ अवसर्पिणीना समय जेटला॥ क्षेत्रथि प्रतरने असंख्यातमे भागे जेटली श्रेणियो ॥ तेना आकाश प्रदेश जेटला ॥ श्रेणियोनि विष्कंभ शुचि कहे छे। अंगुल प्रमाणे आकाश प्रदेशरासीनो जे प्रथम वर्ग मुल ॥ तेने असंख्यातमे भागे॥ जे राशी थाय तेटली श्रेणियो जांणवी १॥ मुक्के लगउधिकवत् २ ॥ २॥ आहारिक नारकिवत् २॥३॥ तैजस कार्मणना बद्ध मुक्त वैक्रेयवत् ॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥ इति ॥

हिवे पांच थावरना पांच दंडक कहे छे॥ उदारिकना दोय भेद॥ ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) उधिक उदारिकवत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना दो भेद ॥ बद्ध [१] मुक्त (२) तेमां पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पती ए ४ मां बद्ध नथी ॥ वायुकायना बद्ध असंख्याता छे॥ कालथि क्षेत्र पल्योपमने असंख्यातमे भागे जेटलो समय राशी तेटला ॥ १ ॥ पांचे थावरना मुक्त अनंता पूर्ववत् ॥ २ ॥ २ ॥ आहारिकना २ भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तेमां बद्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त पूर्ववत् २॥ ३॥ तैजस कार्मणना दोय भेद बद्ध (१) मुक्त (२) उधिकवत्॥ २ ॥ ४॥ ॥५ ॥ एवं १६ दंडक ॥ इति ॥

हिवे त्रण विगलेंद्रियना त्रण दंडक कहे छे ॥ उदारिकना दोय भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) बद्ध असंख्याता कालथी असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला ॥ क्षेत्रथी प्रतरनें असंख्यातमे

भागे । जेटलि श्रेणियो तेना प्रदेश जेटला ॥ प्रतरनो असंख्यातमो भाग ॥ ते असंख्यात योजननी क्रोडा क्रोडी प्रमाणे जाणवो ॥ विशेषे करि विष्कंभ शुचि कहे छे ॥ एक श्रेणीनां आकाश प्रदेशनी राशीना वर्गमुल करिए ॥ ते असख्याता वर्गमुल थाय ॥ ते सर्व वर्गमुलनो सर्वो लोकरताजे आवे ॥ तेटली श्रेणिओनि विष्कंभ शुची जाणवी ॥ १ ॥ अथवा प्रकारान्तरे ॥ कालथी ॥ क्षेत्रथी । बद्ध उदारिकनुं मान कहे छे ॥ अंगुलना असंख्यात भाग क्षेत्र प्रमाणें बेइंद्रीयादिकनुं एकेक शरीर मुकता ॥ आखो प्रतर भराय ॥ तेटला क्षेत्रथी बद्ध उदारिक छे ॥ कालथि आवलिकाना असख्यातमें २ भागे ॥ एकोको बेइंद्रियादिकनुं उदारीक शरीर अपहरिये तो असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना प्रतर खालीथाय ॥ एटले असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आवलिकाना असंख्यात भाग प्रमाणे ॥ जेटला कटका थाय तेटला बद्ध उदारिक छे ॥ १ ॥ मुक्त अनंता पूर्ववत् ॥ २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना बद्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनंता पूर्ववत् ॥ २ ॥ २ ॥ आहारिकना बद्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनंतापूर्ववत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना बद्ध मुक्त उदारिकवत् ॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥ एवं १९ दंडक ॥ इति ॥

हिवे वीसमो तिर्यंच पंचेद्रीनो दंडक कहे छे ॥ उदारिकना बद्ध (१) मुक्त (२) त्रण विगलेंद्रियवत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना २ भेद तेमां बद्ध ॥ असख्याता ते कालथी असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रथी प्रतरनें असंख्यातमें भागें ॥ जेटली श्रेणियो तेना आकाश प्रदेश जेटला तेनु विशेषमान कहे छे ॥ अंगुल प्रमाणे ॥ आकाश प्रदेश राशिनो जे प्रथम वर्गमूल तेने असंख्यातमे भागे जे राशी आवे । तेटली श्रेणियोनी विष्कंभ शुचि जाणवि ॥ १ ॥ मुक्त अनंता छे ॥ २ ॥ २ ॥ आहारिकना २ भेद ॥ तेमां बद्ध नथी ॥ मुक्त अनंता छे २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना बद्ध मुक्त उदारिकवत् । २ । ४ । ५ ॥ एवं २० दंडक ॥ इति ॥

हिवे एकवीसमो मनुष्यनो दंडक कहे छे ॥ उदारिकना दोय भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तेमां बद्ध ते ॥ कदाचित् मनुष्य संख्याता होय ॥ समुर्छिमनो विरह पडे छे तेथि कदाचित् असंख्याता होय । जघन्य पदे ॥ त्रीणजमलपद (२४) निउपरने (५) जमलपद (३२) निहेठे ॥ अर्थात् २९ आंकनी संख्या प्रमाणें ॥ अथवा पांचमो वर्ग । छट्ठा वर्ग साथे । गुणता जे राशी थाय ॥ अथवा ९६ वार यथोत्तर बमणा करिये ॥ अथवा ९६ वार अर्द्धा अर्द्धा करता शेप एक रहे ॥ एटला अंक प्रमाणे मनुष्य जाणवा ॥ तेनो आंक आ प्रमाणे ॥ ७९ । २२ । ८१ । ६२ । ५१ । ४२ । ६४ । ३३ । ७५ । ९३ । ५४ । ३९ । ५० । ३३६ ॥ १ ॥ उत्कृष्ट पदे असंख्याता होय ॥ समुर्छिम गर्भज मेलता कालथी असंख्यात उत्सर्पणी अवसर्पणीना समय जेटला क्षेत्रथी अंगुल प्रमाणे आकाश प्रदेशनो प्रथम वर्गमूल त्रीजा वर्गमूल साथे गुणता जे राशी थाय तेटला भागमां मनुष्यनु एकेक शरीर मुकता ॥ एक श्रेणी खाली थाय उत्कृष्ट शरीरमां एकेक शरिर वद्धारे नाखिये तो ॥ १ ॥ मुक्त अनंता ते पूर्ववत् ॥ २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना दोय भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तेमां बद्ध संख्याता कालथि संख्याता कालना समय जेटला १ मुक्त अनंता उधिकवत् ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ आहारिकना दोय भेद उधिकवत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना दोय भेद उदारिकवत् २ । ४ । ५ ॥ ए एकविश दंडक ॥इति॥

हिवे बावीसमो वाणव्यंतरनो दंडक कहे छे ॥ उदारिकना दोय भेद ॥ बद्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनंता ते पूर्ववत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना २ भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तेमां बद्धते असंख्याता कालथी असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रथी प्रतरने असंख्यातमे भागे जेटली श्रेणियो तेना प्रदेश जेटला अथवा संख्यात

योजन शतना वर्ग कर्ता जे आवे । तेटला २ भागमां ॥ वाणव्यतरनु शरीर मुकता प्रतर भराय तेटला बद्ध वैक्रेय छे ॥ १ ॥ मुक्त उधीकवत् ॥ २ ॥ २ ॥ आहारिकना बध्ध नथी १ मुक्त पूर्ववत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना बध्ध मुक्त वैक्रेयवत् ॥ ॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ इति बाविसमो दंडक ॥

हिवे तेवीशमो ज्योतिषीनो दंडक कहे छे ॥ आहारिकना २ भेद ॥ बध्ध नथी (१) मुक्त अनंता पूर्ववत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना बे भेद ॥ बध्ध [१] मुक्त [२] ॥ तेमां बध्ध असंख्याता कालथि असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रथी प्रतरने असंख्यातमे भागे । जेटली श्रेणियो तेनां आकाश प्रदेश जेटला ॥ अथवा २५६ अंगुलनो जे वर्ग तेटला प्रदेश प्रमाणे ॥ एक खंड उपरे ॥ एकेकुं ज्योतिषीनुं शरीर मुक्त प्रतर भराय ॥ १ ॥ मुक्त अनंता पूर्ववत् २ ॥ २ ॥ आहारिकना बध्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनंता ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना बध्ध मुक्त वैक्रेयवत् ॥ इति ॥ २३ मो दंडक ॥

हिवे २४ मो वैमानिकनो दंडक कहे छे ॥ उदारिकना बध्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनंता ॥ २ । १ । वैक्रेयना दोय भेद ॥ बध्ध ॥ १ ॥ मुक्त ॥ २ ॥ तेमां बध्ध असंख्याता छे ते कालथी असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला । क्षेत्रथी प्रतरने असंख्यातमे भागे जेटली श्रेणियो तेना आकाश प्रदेश जेटला ॥ तेनी विष्कंभ शुची अंगुल प्रमाणे आकाश प्रदेशनी राशीनो बीजो वर्गमूल ॥ त्रीजा वर्गमूल साथे गुणता जे आवे तेटली श्रेणियो जाणवी ॥ अथवा अंगुल आकाश प्रदेश राशीनो । त्रीजो वर्गमूल तेनो घन क-

रिये ॥ तेटली श्रेणियो जाणवि ॥ १ ॥ मुक्त पूर्ववत् ॥ २ ॥ २ ॥ आहारिकना वध्ध नथि ॥ १ ॥ मुक्त अनंता पूर्ववत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना बद्ध (१) मुक्त (२) वैक्रेयवत् २ । ४ । ५ ॥

॥ इति २४ मो विमानिकनो दंडक ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे बद्ध मुक्त संज्ञाऽख्यं त्रिंशत्प्रकरणं ॥





प्रकरण एकतीसवा–५६३ जीवके भेदनी चर्चा ॥

हिवे जीवना ५६३ भेद ते मांही १४ भेद नारकीना ४८ भेद तिर्यंचना ३०३ भेद मनुष्यना १९८ भेद देवताना ॥ ए सर्व मलीनें पांचसे त्रेसट भेद थाए ॥ ते माहिला:—

(१) स्त्री वेदमे जीवका भेद ३४० पावे ते ५ सन्नी तिर्यंचना अपजाप्ता ने पजाप्ता एवं दस १० ॥ अने १०१ गर्भज मनुष्यना अपजाप्ता ने पजाप्ता एवं २१२ ॥ अने ६४ जातका देवताना (दूजा देवलोक तक) अपजाप्ता ने पजाप्ता एवं सर्व मिली ३४० ॥

(२) पुरुष वेदमे जीवका भेद ४१०॥५ सन्नी तिर्यंचना पजाप्ता अपजाप्ता एवं १० ॥ अने २०२ गर्भज मनुष्यना १९८ देवताना एवं सर्व ४१० ॥

(३) नपुंसक वेदमे जीवका भेद १९३ ॥ १४ नारकीना ४८ जातना तिर्यंचना १३१ मनुष्यना युगुलिया वर्जीने एवं सर्व १९३॥

(४) समुचय ३ भेदमां जीवका ४० भेद लाभे ॥ ते दस सन्नी तिर्यंचना अने १५ कर्मभूमीना अप्रजाप्ता नें प्रजाप्ता एवं सर्व ४० भेद माही ३ वेद लाभे ॥

(५) केवल समकितिमे जीवका भेद दस १० ॥ ५ अणुत्तर विमानका अप्रजाप्ता नें प्रजाप्ता एवं १० ॥

(६) समुचय समकितमाही जीवका भेद २३३ नारकीना १३ भेद सातवी नारकीनो अप्रजाप्तो वर्जी तिर्यंच सन्नीना १० ॥ अने असन्नीना ५ अप्रजाप्ता ॥ विगलेंद्रीना ३ अप्रजाप्ता ॥ एवं १८ तिर्यंचना ॥ मनुष्य कर्मभूमीना ३० नें पांच देवकुरु पांच उतर कुरूना प्रजाप्ता एवं ४० ॥ मनुष्यना अने देवतामांही परमाधामीनें त्रीण किलमिषी ए अठरा जातीना देवता वर्जीनें ॥ एक्यासी जातीना देवताका अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १६२ भेद एवं सर्व २३३॥

(७) मिथ्यादृष्टीमे जीवका ३३० भेद ॥ ते १ सातमी नारकीनो अप्रजाप्तो ने प्रजाप्तो ने तिर्यंचना ३० । ते एकेंद्रीना २२ असन्नी पंचेंद्री ५ ना प्रजाप्ता ३ विगलेंद्रीना प्रजाप्ता एवं ३० ॥ अने मनुष्यना २६३ ते १०१ संमुर्छिम मनुष्यने अने ५६ अंतर्द्वीपाना अप्रजाप्ता अने प्रजाप्ता अकर्मभूमीना ३० अप्रजाप्ता नें देवकुरु । उत्तर कुरूना वर्जीने २० । ना प्रजाप्ता ए २६३ अने देवताना ३६ ते १८ । अप्रजाप्ता नें प्रजाप्ता । एवं सर्व मिली ३३० ॥

(८) समा मिथ्यादृष्टीमें ९४ भेद ॥ नारकीना ७ । सन्नी तिर्यंचना ५ मनुष्य १५ । कर्मभूमीना सन्नीना ॥ देवतामांही परमाधामी किलमिषी नवग्रीवेयक अणुत्तर विमानना ए ३२ । वरजीनें बाकी ६७ जातिना देवता एवं सर्व मिली ९४ ॥

(९) २ दृष्टी ते समदृष्टी (१) अने मिथ्यात्वदृष्टी (२) ए दोयमे जीवका भेद १२९ ॥ पहिली ६ नरकना अप्रजाप्ता, ५ सन्नी, ५ असंन्नी ३ विगलेंद्री, ए १३ ना अप्रजाप्ता ॥ मनुष्यमां १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ॥ देवकुरु उत्तरकुरुना (१०) प्रजाप्ता एवं २५ -यना ॥ देवतामां भवनपती। १० वाणव्यंतर १६ जंभडा १०, ज्योतिषी १०, देवलोक १२, लोकांतिक ९, एवं ६७ ना अप्रजाप्ता। अने ९ ग्रीवेयकना प्रजाप्ता ने अप्रजाप्ता एवं ८५ देवताना सर्व मिली १२९ ॥

(१०) ३ दृष्टीमे जीवका भेद ९४ ॥ ते समा मिथ्यातदृष्टीनी परे जाणवुं ॥

(११) प्रजाप्तामे जीवका भेद २३१ ॥ ७ नारकीना २४ तिर्यंचना १०१ सन्नी मनुष्यना ९९ देवताना एवं २३१ ॥

(१२) अप्रजाप्तामे ३३२ जीवके भेद ते २३१ तो पूर्ववत् अने १०१ समुर्छिम मनुष्य अप्रजाप्ता छे ॥ एवं सर्व ३३२ ॥

(१३) सास्वता २५० जीवके भेद ॥ ७ नारकीना प्रजाप्ता तिर्यंचमा ५ संनीना अप्रजाप्ता वर्जीने ॥ ४३ भेद मनुष्यना १०१ सन्नीना ॥ प्रजाप्ता ९९ जातीना देवता प्रजाप्ता एवं सर्व मिली २५० ॥

(१४) अशाश्वतामां ३१३ जीवका भेद ॥ ७ नरकना अप्रजाप्ता ५ सन्नी तिर्यंचना अप्रजाप्ता १०१ समुर्छिम मनुष्यना १०१ सन्नी मनुष्यना अप्रजाप्ता एवं २०२ मनुष्यना, ९९ जातिना देवताना अप्रजाप्ता एवं सर्व मिली ३१३ ॥

(१५) संनीमांही जीवका भेद ४२४ ॥ ते १४ नारकीना ५

संनी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १०, सन्नी मनुष्यना १०१ अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एवं २०२ भेद, ९९ जातीना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता। ए। १९८, एवं सर्वमिली ४२४ भेद जाणवा॥

(१६) असन्नीमे जीवके भेद १३९॥ ते १०१ समुर्छिम मनुष्य ३८ भेद तिर्यंचना सन्नीना १० वर्जीनें। एवं १३९ भेद, असन्नीमे लाभें॥

(१७) ५६३ जीवके भेदमांही ३७१ भेद मरे, ते ७ नारकीना प्रजाप्ता ९९ जातना देवताना प्रजाप्ता ४८ तिर्यंचना ८६ जातना युगलियाना प्रजाप्ता। १३१ मनुष्यना एवं सर्व ३७१ भेद॥

(१८) ५६३ जीवका भेदमांही १९२ भेद अमर॥ ७ नारकीना अप्रजाप्ता। ९९ जातका देवताना अप्रजाप्ता॥ एवं १०६ अने ८६ जातना युगुलियाना अप्रजाप्ता एवं १९२॥

(१९) कृष्णलेशी नील लेशी कपोत लेशी ए ३ में जीवका भेद ४५९। ते ६ नारकीना ४८ तिर्यंचना एवं ५४, अने ३०३ मनुष्यना, ५१ जातना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एवं सर्व मिली ४५९॥

(२०) तेजूलेशामांही जीवका भेद ३४३॥ ते बादर पृथिवी बादर पाणी बादर वणसइ ए ३ ना अप्रजाप्ता, सन्नी तिर्यंचना १०, सन्नी मनुष्यना २०२, ६४जातिना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता। १२८। एवं सर्व मिली ३४३।

(२१) पद्मलेशामां ६६ जीवका भेद॥ ते पांच सन्नी तिर्यंचना अप्रजाप्ता नें प्रजाप्ता ए १०, अने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ए ३०॥ देवतामे दूजो किलमिषी १ त्रीजो २ चोथो ३

पांचमो देवलोक ए ४, नें नव लोकांतिक ए १३ ना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता मिली २६, ए सर्व ६६ ॥

(२२) शुक्ल लेशामांही ८४ जीवका भेद ॥ ते सन्नी तिर्यंचना १०, सन्नी मनुष्यना ३०, ते कर्मभूमीना, देवतामांही एक त्रीजो किलमिषी १ छठेथी बारमा देवलोक सुधी ७ देवलोक ९ ग्रीवेयक, ५ अणुत्तर विमान, एवं २२ ना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ ए ४४ ए सर्व मिली ८४ ॥

(२३) छै लेशांमाहि ४० जीवका भेद ॥ ते १० सन्नी तिर्यचना, अने ३० संनी मनुष्यना कर्मभूमीना, एवं सर्व मिली ४० ॥

(२४) आगली ४ लेशामांही २७७ जीवका भेद ॥ प्रथम ५१ जातिना देवताना अप्रजाप्ता नें प्रजाप्ता एवं १०२, जुगलिया ८६ जातिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १७२, अनें बादर पृथिवी १ बादर वाणी २ वणसई ३ ए ३ ना अप्रजाप्ता एवं सर्व मिली २७७॥

(२५) उदारिक कायजोगमां ३५१ जीवका भेद॥ ३०३ मनुष्यना, ४८ तिर्यचना, एवं ३५१ ॥

(२६) उदारिकना मिश्रमां २४७ जीवका भेद ॥ १०१ समुर्छिम मनुष्य, १०१ सन्नीना अप्रजाप्ता, अने १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, तिर्यचना २४ अप्रजाप्ता १ बादर वायुकायनो प्रजाप्तो, ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता ॥ एवं सर्व मिली २४७ ॥

(२७) वैक्रेय काययोगमां २३३ जीवका भेद ॥ १०८ देवताना, १४ नारकीना, ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता, बादर वायुकायनो प्रजाप्तो, १५ कर्मभूमीना सन्नी मनुष्यना प्रजाप्ता । एवं सर्व मिली २३३ ॥

(२८) वैक्रेय मिश्रमां २१९ जीवके भेद ॥ ते ९ ग्रीवेक, ५ अणुत्तर विमान, एवं १४ ॥ प्रजाप्ता वर्जीने शेष २१९ भेद ॥

(२९) आहारिक मिश्रमां जीवका भेद १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

(३०) कार्मण काययोगमाही ३४७ जीवका भेद ॥ ते ३३२ अप्रजाप्ताना भेद पूर्वे कह्या ते अने १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता एवं सर्व. ३४७ ॥

(३१) सत्यमनादिक ४ ने सत्यवचनादिक ३, ए ७ जोगमे जीवका भेद २१३ ॥ ते ९९ जातीना देवता अने ७ नारकी अने १०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच एवं सर्व मिली २१२ ना प्रजाप्ता ॥

(३२) व्यवहार वचनमाही २२० जीवका भेद २१२ तो सत्यमनादि ७ जोगमां कह्या तेहीज अने ५ असन्नी तिर्यंचना ॥ अने त्रिण विगलेंद्री ए ८ ना प्रजाप्ता एवं सर्व २२० ॥

(३३) आहारक शरीरमां १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

(३४) तेजस कार्मण शरीरमांही ५६३ भेद ॥

(३५) अणाहारिकमे ३४७ जीवके भेद । ते कार्मण जोगनी परे जाणवा ॥

(३६) आहारकमें ५६३ जीवके भेद ॥

(३७) मन सहितमे २१२ जीवके भेद । ते सत्य मन योगनी परे जाणवा ॥

(३८) मन रहितमे ३५१ जीवके भेद ॥ ते ७ नरकना अ-प्रजाप्ता ॥ ४३ तिर्यचना ते ५ सन्नीना प्रजाप्ता वर्जीने शेष ४३ भेद अने १०१ सम्मुर्छिम मनुष्य, ने १०१ सन्नी मनुष्यना अप्रजाप्ता । ए २०१, अने ९९ जातीना देवताना अप्रजाप्ता एवं सर्व ३५१ भेद ॥

(३९) नजरे आवे ते २२५ जीवके भेद ॥ ते ७ नारकी ९९ जातीना देवता १०१ गर्भज मनुष्य । ५ सन्नी तिर्यच, ५ अ-सन्नी तिर्यच, ३ विगलेंद्री । ५ एकेंद्री बादर, ए सर्वेना प्रजाप्ता एवं २२५ भेद ॥

(४०) नजरे न आवे ते ३३८ जीवके भेद ॥ ३३२ भेद तो अप्रजाप्ताना अने ५ सुक्ष्म एकेंद्री अने १ साधारण ए ६ ना प्रजाप्ता एवं सर्व मिली ३३८ भेद ॥

(४१) गर्भजमां । २१२ जीवका भेद ॥ २०२ सन्नी मनु-ष्यना, १० संनी तिर्यचना ए २१२ ॥

(४२) विना गर्भजमांही ३५१ जीवके भेद ते १४ नारकीना १९८ देवताना ३८ सम्मुर्छिम तिर्यचना १०१ सम्मुर्छिम मनुष्यना एवं सर्व ३५१ ॥

(४३) त्रस नाडीमांही ५६३ जीवका भेद ॥

(४४) थावर नाडीमांही १५० जीवके भेद ॥ ते १०१ सम्मुर्छिम मनुष्य १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता एवं ११६ अने ३४ तिर्य-चना ते २२ एकेंद्रीमांहीथी एक बादर तेउनो प्रजाप्तो वरजीनें २१ एकेंद्रीना, ३ विगलेंद्रीना अप्रजाप्ता, । ५ । सन्नी तिर्यचना अप्रजाप्ता, ५ असन्नी तिर्यचना अप्रजाप्ता ॥ एवं १५० ॥

(४५) नाण आत्मामां २३३ जीवके भेद ॥ सातमी नरकनो अप्रजाप्तो वरजी १३ नारकीना, ५ सन्नी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १०, अने ५ असन्नी तिर्यंचना अप्रजाप्ता, अने ३ विगलेंद्रीना अप्रजाप्ता ए १८ तिर्यंचना, अने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३०, अने ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु ए १० ना प्रजाप्ता एवं ४० मनुष्यना अने १५ परमाधामी ३ किलमिषी, ए १८ ना प्रजाप्ता ने अप्रजाप्ता ए ३६ भेद वरजीनें शेष १६२ भेद देवताना एवं सर्व थईने २३३ भेद ॥

(४६) चारित्र आत्मामांही जीवके भेद १५, कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

(४७) शेष ६ आत्मामांही ५६३ जीवका भेद ॥

(४८) अप्रजाप्तो मरीने १७९ भेदमे जाय ॥ ते १०१ समुछिंम मनुष्य, ४८ तिर्यंच, १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, अप्रजाप्ता ३०, एवं १७९ ॥

(४९) स्त्री मरीने ५६१ भेदमां जाए ॥ सातमी नारकीका २ भेद वरजीने शेष ५६१ मां जाए ॥

(५०) पुरुष मरीने ५६३ मांही जाए छे ॥

(५१) नपुंसक मरीनें ५६३ जीवके भेदमांही जाए ॥

(५२) वेदनी समुद्घातमे ५६३ जीवके भेद ॥

(५३) कषाय समुद्घातमें ५६३ जीवके भेद ॥

(५४) मारणांतिक समुद्घातमे ३७१ जीवके भेद ॥

(५५) वैक्रेय समुद्घातमें ११९ जीवके भेद ॥ ते पूर्वे वैक्रेय मिश्र जोगमांही कह्या छे ते जाणवां ॥

(५६) तेजस समुद्घातमांही १०५ जीवके भेद ॥ ते ८५ देवताना प्रजाप्ता ने १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ५ सन्नीना प्रजाप्ता एवं सर्व १०५ ॥

(५७) आहारीक समुद्घातमांही १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता लाभे ॥

(५८) केवल समुद्घातमांही १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता लाभे ॥

(५९) (६०) (६१) आगली ३ पर्यामांही ५६३ जीवके भेद ॥

(६२) श्वासोश्वास पर्यामांही ५५२ जीवके भेद ॥ एकेंद्रीना ११ अप्रजाप्ता वर्ज्या ॥

(६३) भाषापर्यामांही ३२६ जीवके भेद ॥ ते ७ नारकीना, अनें सन्नी तिर्यंचना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता १०, असन्नी तिर्यंचना ५, अनें ३ विगलेंद्रीना, एवं ८ ना प्रजाप्ता, अने सन्नी मनुष्यना २०२, अने ९९ जातिना देवता प्रजाप्ता एवं ३२६ ॥

(६४) मनपर्यामांही २१२ जीवके भेद ॥ ७ नारकी ५ सन्नी तिर्यंच, १०१ सन्नी मनुष्य, ९९ जातीना देवता, ए सर्वना प्रजाप्ता एवं २१२ भेद ॥

(६५) अजीवना ५६० भेद ॥ तेमांहीथी लोकमां ५५७ भेद ते धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ ए २ देश आकाशास्ति कायनो स्कंध ए ३ वरजी शेष ५५७ लाभे ॥

(६६) अलोकमांहे अजीवना भेद ६ लाभे ॥ ते आकाशास्तिकायनो देश १ प्रदेश २ आकाशास्तिकायना द्रव्यादिक ४ बोल, एवं ६ लाभे ॥

(६७) विभंग अज्ञानमांही २२२ जीवना भेद ॥ ५ अणुत्तर विमानना प्रजाप्ता ने अप्रजाप्ता ए १०, वर्ज्या, बाकी १८८ देवताना

अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, अने १४ नारकी ने १५ कर्मभूमि मनुष्य प्रजाप्ता नें ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाप्ता एवं सर्व २२२ ॥

(६८) अवधिज्ञानमें २१० भेद ॥ ते १५ परमाधामी, ३ किलमिषी ए १८ वर्जीनें, १६२ जातीनां देवता अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, ने १३ नारकीना सातमी नरकनो १ अप्रजाप्तो वर्ज्यो, १५ कर्म भूमीना मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ताना ३०, ने ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाप्ता । एवं सर्व २१० ॥

(६९) अवधि दर्शणमांहीं २४७ जीवका भेद ॥ १९ देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, १४ नारकीना अप्रजाप्ता नें प्रजाप्ता, नें १५ कर्मभूमी मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, ने ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाप्ता ॥ ए २४७ ॥

(७०) परत्तमांहि जीवना भेद ५६३ लाभे ॥

(७१) अपरत्तमांही जीवना भेद ॥ ५५३ लाभे ॥ ५ अणुत्तर विमानना १० भेद वर्जिने शेष ५५३ लाभे ॥

(७२) संजतीमांही जीवका भेद १५, कर्मभूमीना गर्भेज प्रजाप्ता लाभे ॥

(७३) संजता संजतीमांही जीवका २० भेद ॥ १५ कर्म भूमीना मनुष्य गर्भेज प्रजाप्ता अनें ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाप्ता । एवं २० ॥

(७४) असंजतिमांही ५५३ जीवना भेद ॥

(७५) पहिला गुणठाणामांही ५५३ भेद ॥ ते अणुत्तर विमानना १०१ वर्जीनें ॥

(७६) सास्वादान गुणठाणामांही २१३ जीवना भेद ॥ ते १३ नारकीनां १८ तिर्यंचना । कर्मभूमी मनुष्यना ३०, देवतामांही १५

परमाधामी ३ किलमिषना ५ अणुत्तर विमानना ए २३ जातिना वरजीनें बाकी ॥ १५२ देवताना । एवं सर्व मिली ॥ २१३ भेद ॥

(७७) मिश्र गुणठाणांमांही ९४ भेद ॥ ७ नारकी प्रजाप्ता, ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाप्ता ॥ १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता एवं २७, १५ परमाधामी, ३ किलविषी, ९ नवग्रीवेक, । ५ अणुत्तर विमान, । एवं ३२ वर्जीनें ६७ देवताना प्रजाप्ता एवं ९४ ॥

(७८) चोथा गुणठाणांमांही जीवका भेद २२५ । पूर्वे सम्यक्त्वमांही २३३ भेद कह्या छे ते माहीथी ५ असन्नी तिर्यंच नें ३ विकलेंद्री ए ८ टळया ॥ शेष २२५ ॥

(७९) पांचमा गुणठाणांमांही जीवके भेद २० ॥ १५ कर्मभूमी ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाप्ता ॥ एवं २० ॥

(८०) छठ्ठा गुणठाणासूं लेने १४ मां गुणठाणा तांही जीवका भेद १५ ॥ ते कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

(८१) धर्मास्तिकायना खंदमांही अजीवना भेद ११ ॥ धर्मास्तिकायनो खंद प्रदेश २ अधर्मास्तिकायनो खंद ३ प्रदेश ४ आकाशस्तिकायनो देश ५ प्रदेश ६ काल ७ पुद्गलास्तिकायना ४ भेद । एवं सर्व ११ ॥

(८२) अढाईद्वीप बारे अजीवना भेद १० ॥ पूर्वे कह्या ते माहीथी एक काल टळयो ॥

(८३) धर्मास्तिकायना देशमे अजीवका भेद ११ ॥ धर्मास्तिकायनो देश १ प्रदेश २ आकास्तिकायनो प्रदेश ३ प्रदेश ४ अधर्मास्तिकायनो देश ५ प्रदेश ६ काल ७ अने पुद्गलास्तिकायना ४ भेद ए ११ ॥

(८४) धर्मास्तिकायना प्रदेशमे अजीवका भेद ८ ॥ ते धर्मा-

स्तिकायनो प्रदेश १ अधर्मास्तिकायनो प्रदेश २ आकास्तिकायनो प्रदेश ३ काल ४ पुद्गलास्तिकायना ४ भेद ॥ एवं ८ ॥

(८५) अधर्मास्तिकायना खंदमे अजीवके भेद ११ ॥ धर्मास्तिकायनी परे जाणवा ॥

(८६) आकास्तिकायना खंदमां अजीवका भेद ११ ॥ अजीवना १४ भेदमांहीथी धर्मास्तिकायनो देश १ अधर्मास्तिकायनो देश २ आकास्तिकायनो देश ३ । ए ३ टळया ॥ शेष ११ ॥

(८७) आकास्तिकायना देशना दोय २ भेद लोकाकाश (१) अलोकाकाश (२) ते लोकाकाशना २ भेद । संपूर्ण (१) ने अधूरो (२) संपूर्णमां अजीवका इग्यारा ११ भेद लाभे ॥ पूर्ववत् ॥

(८८) अधूरामां अजीवका ११ भेद ॥ धर्मास्तिकायनो स्कंद अधर्मास्तिकायनो स्कंद आकास्तिकायनो स्कंध ए ३ भेद टळया शेष ११ ॥

(८९) अलोकाकाश देशमां अजीवका भेद २ ॥ आकास्तिकायनो देश १ ने प्रदेश २ ॥

(९०) आकास्तिकायना प्रदेशमां अजीवका भेद ८ । पूर्ववत् ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे ५६३ जीव भेद चर्चाऽख्यं एकत्रिंशत्प्रकरणम् ॥ ३१ ॥



श्रीमद्वृद्धार्ये: मुना मृत्सकल गुण गणो देव वीरो वरेशः ।
तत्पादाम्बूद्भवस्य प्रचुर मधु रसं लेढु कार्येप्वलीषु ॥
पूज्यश्री स्वामि दासः प्रवरपद धरः तस्य शिष्या प्रशिष्यात्
पारंपर्येण भूतो भरत भुवि वृहत्कीर्तिमा न्नेखराजः ॥ १ ॥

येनेयं वसुधा सुधांशुशुभया कीर्त्या कृताऽलंकृता ।
भूपाला मणि मस्तका अपि कृताः पादागता वंदितुं ॥
तस्मान्छ्री नथमल्ल आदर धरः श्रीकुंद नाख्यो मुनिः ।
जातोऽस्यां भुवि धर्मपालन परस्तस्माद्गुरुर्ज्ञानधीः ॥ २ ॥

तत्पादाब्ज पराग सेवन परोऽहं रामचंद्रो मुनिः
तस्यैव कृपया कृतिं च रचयां चक्रे भवान्मोचने
सच्छिष्यो मुनि हर्षचंद्र इतिमां कर्तुं मुहुः प्रार्थयत्
तस्य प्रार्थनयाऽनया जन शिवे ग्रंथः क्षमोनिर्मितः ॥ ३ ॥

कृतोऽयं रामचंद्रेण जिनवीर प्रसादतः
पाठक श्रावकानांचे विदधातु सुमहलं ॥ ४ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ धर्म ग्रंथे मुनि राम-
चंद्र कृतौ द्वितीय खण्डः समाप्तिमगमत् ॥
॥ शुभं सर्वं ॥




॥ मुनिवरेष्वभ्यर्थना ॥



भो पूज्य पद मुनिवराः । ग्रन्थान्ते भवतः प्रसादार्थे अभ्यर्थितु मिच्छामि । मया पूज्य श्री रेखराजते वासि परंपरानुगत गुरुवर्य श्री कुन्दनमल्लाख्यस्यपद्धाब्जषट्पदेन रामचंद्रेणायं सिद्धान्त शिरोमणिः इत्यभिधानको ग्रंथो विनिर्मितः । सच मद्गुरु जन हस्त लिखित पुस्तकेषु यथा व लिखितं अनुसृत्याऽष्ट त्रिंशत्प्रकरणात्मकः कृतः स्यात् । कार्यकारणार्थ मनेक ग्रंथावलोकनमपि विधाय क्रमेण शोभनानि प्रकरणानि न्यस्तानि । तस्मिंश्च द्वितीये खण्डे केषुचित् प्रकरणेषु अदभ्र प्रमादा दृश्यन्ते । ते तु भाषा संबंधिनः केचिद्रचना संबंधिनश्च । निरसनं तेषां क्षमं परं तेषु प्रकरणेषु भेदाभेद विधाय तान्दूरी कर्तुं नाहं प्रभुरत्यल्पावकाशत्वात् ।

तन्मन्ये समर्था व्याख्यातारः पाठकाश्च विवेकेन आत्म समाधानं समन्ततो विविच्य विधाय श्रावक समुदाये व्याख्या पयिष्यन्ति। मय्यनुग्रहेण ग्रंथवर्ति सम दोषान्विहाय गुणानुरक्त तया क्षममेव गृण्हंति इति बलवती आशा मम मनसि वर्तते । इति कर्तुं व्यवसितानां किलाहं बहूपकृति भाग्वानितिशं सर्वम्.

ग्रंथ प्रणेता,

मुनि रामचंद्र.

हिंगणघाट.



(अथ शुद्धि पत्रम्)

सामायिक प्रतिक्रमणादि नित्य स्मरणम्.



पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२	७	(व)	(६)
२	८	ठाणाउ	ठाणाओ
,,	,,	जीवियाउ	जीवियाओ
३	५	मभिणं	मभिणंदणं
७	११	सुण	सुय
९	१	अतिच्चार	अतिचार
,,	३	फल संदेह	फल प्रते संदह
,,	५	लागो	लागी
१०	९	विरमणा	विरमण
,,	१२	भेल समेल	भेल सभेल कीधी होय.
११	२	विखराको	विखेराको
,,	७	विखराको	विखेराको
१२	८	औषधि	औषधिनो
,,	११	दग्गिदावणया	दवग्गिदावणया
१३	१४	चारयी	चारथी
,,	१८	वग	चन्नग
१४	६	परठी होय	परठियो होय
,,	१७	निमंत्रणा	आमंत्रणा
१५	२०	चारे	चारुं

१६	६	संसप्पउगे	संसप्पओगे
”	”	”	”
१७	४	लोगुत्तमो	लोगुत्तमा
१८	४	मे,	मे,
”	९	खामि	खामेमि
१९	७	दोषा	दोष
”	१५	संस्कारेमि	सकारेमि
२४	४	जूणः	योनि
”	१७	साढा	साढ
३१	४	छाप्पाणे	छप्पाणे
३२	१३	वियासणं	वियासणं पच्चखामि
”	१९	ठाणेणं	ठाणेणं
३३	२०	पारिठाविया	पारिट्ठावणिया
”	१४	”	”
३४	९	सूरे	०
”	११	पारिठाविया	पारिट्ठावणिया
३५	१३	होवेगो !	होवेगा !
३६	१	दश यति धर्म	दशविध यति धर्म
३७	६	चौषठ	चौसठ
”	१३	होणा !	होज्यो !
३८	५	”	”
”	१०	”	”
३९	११	वथ	वत्थ
४०	५	खेशर	केशर
”	७	मीरजादा	मरयादा

६१	४	धारवा	धारणा
६३	२२	जार	जुवार
,,	,,	घउं	गउं
६४	१	खोडण	खोदन
,,	७	वींछी	विछु
,,	६	मुल	मूलमें
६७	१६	पहिछांण	पहिचांन
६९	२	संश	संशय
श्लोकमें		रामचद्राधि	रामचंद्राधि



सिद्धांत शिरोमणि प्रथम खंड.

प्रकरण १ ला–स्तोत्र.

१	५	सार्दूल	शार्दूल
,,	९	शर्वेशं	सर्वेशं
,,	१०	सीतलं	शीतलं
२	१	सिंघं	संघं
,,	,,	साक्षादरंवैष्णदं	साक्षाद्धरिं वैष्णवं
,,	२	मेतत्संगत	एतत्संगत
,,	,,	एव	मेव
,,	३	पार्श्वः	पार्श्वैः
,,	,,	शुभेः	शुभैः
,,	४	मदो	मदोः
,,	,,	नरस्तदतरे	नरस्तदितरे

,,	५	मार्ग्रे	मार्गे
,,	६	वश्यार्थे	वश्यार्थे
,,	१२	र्नालंघत्पटलंघनाय	र्नालंघत्पटलंघनाय
,,	१५	त्कृत्वा	कृत्वा
,,	१६	ध्यत्नाधेन	यत्नौधेन
३	९	स्तृप्तति	स्तृप्यति
,,	१२	दृष्ट्वा	दृश्वा
,,	१३	द्वस्त	ध्वस्त
५	१	नंत्वा	नंत्या
६	२	स्पूर्जित	स्फूर्जित
,,	१३	पुत्रस्या त्रुलवल	पुत्रस्यातुवल
,,	१५	विक रोपि	विकारोपि
७	१	विधेयै	विधेयैः
,,	४	वर	स्वर
,,	१५	मुद्गा	मुग्धा
,,	२१	त्रिदश	त्रिदश
,,	२२	श्राता	भ्राता
८	५	प्रसम	प्रशम
,,	८	नम	नमो नमः
,,	,,	नमः	नमो नमः
,,	१७	द्वय	वि
९	६	भृत्वा	भृत्या
,,	१५	किमिते	किमिति
११	८	रत्युम	रत्युग्र
,,	३	जन्मातरूरथ	जन्मातररथ

०	०	अनुप्टुभ्	अनुप्टुप्
११	१६	वहत्यद्वामुक्ते	वहत्यद्धामुक्ते
१२	९	स्पृशाति	स्पृशति
,,	१०	जगत्साक्षि	जगत्साक्षी
,,	,,	भानुखियो	भानुरिवयो
,,	२१	श्च	स्त्र
१४	१	शीता	सिता
,,	७	जिनाग्रमः	जिनाग्रिमः
,,	१२	निःश्वेदो	निःस्वेदो
१५	७	चित्यात्मा	श्चित्यात्मा
,,	६	विश्वस्टड्	विश्वस्टड्ढ
,,	८	महालासो	महोल्लासो
,,	१४	स्याद्गलगर्भेः	स्याद्गलगर्भः
,,	२१	शूची	सूची
,,	२२	क्षुद्ध	क्षुब्ध
१६	२१	दिग्मार्ग	दिङ्मार्ग
२३	७	चतुर्व्वेप	चतुर्ष्वेषु
,,	११	भेदेपि	भेदोपि
२४	१९	जिनायैच	परेशाय
२५	१६	यमकै	यमकैः
,,	,,	सुपरिः	सुपदैः
२६	१	ग्रहि	गृहे
,,	६	भवते	भवती
,,	७	सेवकः	सेवके
,,	१५	शायिनी	शायिनः

,,	,,	आयुग्रं	आयुधं
,,	१६	सुभे	शुभे
२७	२	महोदेवं	महादेवं
,,	४	कंदर्प्पं	कंदर्प्पं
,,	३	अरनाथं	अर्हनाथं
,,	११	मेनं	मेतत्
२८	३	जश्श पभावेणस्येया	जस्स पभावेणसया
,,	२	विनाशं	विणासं
,,	५	दुस्कं	दुक्खं
,,	६	नयिध्थ	नत्थित्थ
,,	८	तश्श	तस्स
,,	१०	पाश	पास
,,	११	ह्मी	०
,,	१२	मूल्ल	मूल
२९	१५	शीर्घ्रां	शीघ्रं
३०	९	समशरण	समवशरण
,,	२३	व्याधिः	व्याधीः
३१	१२	मिंधि २	भिंधि २
,,	१९	एहि २	०
,,	,,	ग्रहण	प्रहाण
,,	१८	पूरमध्य	पूरीमध्ये
,,	१७	दोषाय	दोषा
,,	१६	कुरू २	कुरु २
३४	४	मणुत्रो	मणुओ
,,	१२	हय	इह

३५	१३	हियेण	हियएण
३५	२	जिना दिश जाता	जिना देश जाता
,,	३	शंकराणी	शंकराणि
,,	१७	वागेश्वरि	वागीश्वरि
३६	११	सचेतन	सचेतः



प्रकरण २ रा–छन्द.



३७	३	बाणि	बांण
,,	१०	करुणासिंधु	करुणा २ सिंधु
,,	१३	अवै	अछे
,,	१४	धुर	धुर
,,	१५	मन्मय	मन्मथ
,,	१६	नवनिधि तुज नांमे	नवनिधि सिद्धी तुज नांमे
३८	१	बकुला	बहुका
,,	,,	बकुल	बहुल
,,	,,	विषहारी	बिवहारी
,,	१७	यंखी	पंखी
३९	२	अहियाइं	अहियावे
,,	३	घोटिक	घोटिक
,,	,,	छेटे	छूटे
,,	४	इस	इण
,,	८	नदुकए	नडुक्कए
,,	१७	सूरिज	सूरज

४०	९	मतपेए	मतापए
,,	२१	खसरवाण	खसरवांण
४१	८	पुजे	पुज्या
,,	,,	रिंझया	रिंझ्या
४२	९	उष्टतें	ओष्टतें
,,	१८	दर्शण	दर्श
४३	९	शुणयो	शुण्यो
४४	४	कूंक्षे ते	कूक्षे
,,	९	पंचागन	पंचाग्नि
,,	१३	अगल	आगल
४५	१	सुणही	सुणहो
४६	४	छमछरी	छमछर
,,	८	वादल	वावल
४७	१६	इसठो	इसडो
,,	१७	इसठो	इसडो
४८	२१	अरूए	वरूए
५०	१४	नित्यसु	नित तसु
,,	१५	कणी	फणी
५१	८	अज्यानें	अजानें
,,	११	अंब	बंबुल
,,	१८	भाख्या	भाखे
,,	२१	नव रेणु	भव रेणु
५३	८	देवा	देवं
५४	५	आनिंदहिकंदनि	आनंदहिकंदन
,,	२०	प्रभु गुण सागर पार न	प्रभु गुण पारन सा

		वारितिर	चारी तोर
५५	३	सुवंगं	सुचंगं
,,	१९	कोऊ	कोढ
५८	७	मूर्त्ति	स्फूर्त्ति
,,	१९	गुडो	गोडो
५९	१५	देना	देवा
६०	७	चक्र	चक्र
६१	६	भंडे	मंडे
,,	१२	मयंग	मंगल
,,	१६	सभय	समय
६२	८	विनाय	छिनाय
,,	१९	नामा	वामा
६४	७	ठांण	थांन

प्रकरण ३ रा–पद.

६७	२	भागतही	भागतहे
६८	४	वुले	खुले
,,	१२	उस सिखे ठण	उस सिरवे ठण
,,	१५	होयगारिं	होय गया
६९	७	ग्वधांत	ग्वधांत
,,	१८	हटे न किनसूं नहि तृसना मूररटे निरंजन.	हटे न किनसूं रटे निरंजन नही तृष्णा मूर.
,,	१९	रह	रहे

६९	,,	कसूर	करूर
,,	२०	मोर	मोह
,,	२२	कंवन	कंचन
७०	७	मिलहे	मिले
७१	७	पठि	पढि
,,	२०	उटाय	ओटाय
,,	२१	पिपे	पिये
७२	३	पुरखा	पुरुषा
,,	७	सब्दा	शब्दा
७३	९	नाथ तेरी	नाथ जगमें
,,	,,	बुलाया	भुलाया
७५	४	जांन	जांनत
,,	५	भूली	भूमि
७७	४	ढढंग	ढंग
७८	२	मानते मेरा	मांनछे मेरा
७९	,,	रूपहे	कूपहे
८०	९	पकर लोक	फकर लोक
,,	११	जाने न	जाने जो
८१	८	दिय	दिव्य
८१	१३	इस्त नमे	इस तनमें
८२	१६	देह वाई	देह पाई
,,	१७	विरुया	विरथा
८४	१९	खाज रही	वाज रही
८५	९	दिलमोंद समाई	दिलमे समाई
८६	१	लेव	जब

८९	१८	व्रम	व्रह्म
९०	१४	जाइ	जाय
,,	१८	चंदा विन सूरज निश-दिन	विन चंदा विन सूर-ज निशदिन
९३	४	सुर वसे	सुखसे
,,	१२	लेजावे	लेजासी
,,	,,	चलेरारे	चलेलारे
९४	४	रे चेतन पोते तूं परना	रे चेतन पोते तूं पापी परना
,,	७	क्यूं छूटे	किम छूटे

प्रकरण चोथा--स्तवन.

९६	६	देव	देह
,,	१०	पांपां	पाया
,,	१८	नेसीसर	नेमि सर
९७	३	विण	पिण
,,	५	राषी	राखी
,,	१०	दुषणी	दुःखणी
,,	,,	चीव पड्यो	जीव पड्यो
,,	१६	सुषे	सुखे
९८	१	षारो	खारो
,,	३	रंग	संग
,,	१६	मारच्छारे	मार पछारे

९८	१८	तपोघ्नी	तपोधनी
९९	२	अंघरारे	अंधरारे
१००	२	घेलाई	छेलाई
,,	३	मुंह नाई	मुंह मांई
,,	५	ऊटकके	झटकके
,,	१४	करन	देखन
,,	१८	दयो	दियो
,,	२१	जोसरोरे,	जोम्नरोरे,
१०१	८	थारे	थांने
१०२	१३	सुंवाता	सुंहाता
,,	२३	मकर	मकरजो
१०५	१०	हूदय चरक	हृदय चरव
,,	११	कै	कहे
१०६	१	जूल	झूले
,,	८	॥ श० ॥ १ ॥	॥ स० ॥ १ ॥
,,	९	भूल मती	झूल मती
१०७	१	जिस	जिम
,,	११	हरु कर्मी	हलु कर्मी
,,	१७	लिख्योसु	लिख्यो सो
१०८	३४	मरे	ठरे
,,	१६	इसमो	इसडो
,,	२२	दिजीयो	दिजो
१०९	१	थांरो	यांरो
,,	,,	माणो	आंणो
,,	२	मितरा	नितरा

१०९	१४	एक	एह
,,	१९	फल	०
११०	४	सिरघणी	शिर धणी
,,	१३	श्रीफलवद्धी	श्री जगपति
,,	१७	वात	रात
१११	२	मानी	मांनो
,,	१४	काड	पाड
,,	१७	छेल	ठेल
,,	२०	फलक	पलक
११२	४	अव	०
,,	१५	किन	किम
,,	१९	कै	कहे
११३	४	डुलसी	हुलसी
,,	६	कहोम	क दौड
,,	१५	पांणी	आंणी
,,	२५	भेल	भिन्न
११५	१	वलिघन	वलिधन
,,	५	द्वार जरे देत	द्वार जरे न देत
,,	१५	मोचे	मोवे
,,	१६	वल	विन
११६	११	जस वांण	जसमांन
,,	१४	पुन्हा	पुनः
,,	१६	जीशे	जीरो
,,	१९	उपजे	उपज्यो
,,	२२	विगज	विगय

११७	१२	मोंडे	मांडे
११८	१	जान	जात
,,	३	डर	डरके
,,	४	फिर	०
११९	४	बेठा	बेठा
,,	६	वेष	वैद्य
,,	,,	,,	,,
१२०	७	बहु	बहु
१२२	१०	भानु	भानू
११४	६	निंदा कर पराई.	निंदा म कर पराई.

प्रकरण ५ वां-लावणी.

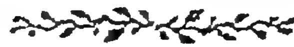
१२४	११	कच्चा	वच्चा
,,	१५	शरने	रसीये.
१२५	५	भव विकार	सब विकार
१२६	१२	परया	पऱ्या
१३०	१०	भरण	मरण
,,	२१	व्याक्स्यानो	व्याख्यानो
१३१	८	रूपमयावे	ओपम पावे
१३३	६	हे	यह
१३४	३	भिलाना	मिलाना
,,	१६	दोष	दो
१३५	१	विधामाना	विधाना
,,	८	पर पर पद	पर पद

१३६	१	मायाके	मायामे
१३९	१७	गोघ	गोद
,,	१९	विचू	विछु
१४१	१०	टूटी	टूटी
१४२	१४	फुरमाते	कहते
१४३	८	जग	जव

प्रकरण छठा–होरी.

१४६	१५	कुटिल	कुटिरका
१४७	११	भक्षीया	भखीया
१४८	२	वीतरागवा	वीतरागका
,,	२०	अव निंदारी एह जगतमे	कर निंदा एह जगतमे
१४९	१५	नांई	दाई
१५०	१२	क्रिम तमो	०
१५१	१	सयलेशी	अलेशी
,,	,,	परव	परव
,,	८	राग	वैराग
,,	१९	हरव	हर्ख.
१५२	१२	कुवला	कुब्जा
,,	१५	रंसगभर	रंगभर
१५३	१९	मकर	कर
,,	,,	जुगति	जुगतिसे
१५४	३	मारग चूक गयोरी २	यह दो वार छपा है परंतु एक वार होना !

प्रकरण ७ वां--व्याख्यांन.



१५६	६	धूज	ध्वजा
,,	९	रत्नी	रत्ननी
१५८	५	त्यूं	ज्यूं
१६२	१०	भले	भेले
,,	१४	नूकाजी	बूकाजी
१६४	७	हजारद्दि	हजारहि
१६५	२	छोर द्यो	छोड द्यो
१६६	१	घर २	धर २
,,	१०	मुज	तुज
,,	१९	गुछराती	गुजराती
१७०	९	सुनादो	सुनावो
१७१	१७	कुम २	कुमर
,,	१९	जजे अति जणकार	झझे अति झणकार
१७४	८	पडि बंधोधर पास	इन्द्र आई पास
,,	९	संच	तांम
१७५	७	पांति	पंक्ति
,,	१६	पूजे	पूगे
,,	१७	पूजे	पूरो
१७८	६	ताढा हिमवंत पाणी	ठंडा हेमवंत सरिखा पांणी
,,	७	काढा	काठा

१७८	२४	वस	वस्त्र
१८०	५	ग्यांत	वन
,,	८	शक्रेंद्रजे	शक्रेंद्रनें
,,	१०	साव	पाप
१८१	४	पारव	पाख
,,	६	गाताथापनि	गाथापति
,,	८	कैलामें	कैलाशमे
,,	१३	घर	घर
१८२	१६	उशध्येन	उत्तराध्येन
१८३	९	लही केवल निज रूप रतन निज	लह्यो केवल गौतम ततक्षिणही.
१८४	११	सारवी	साखी
,,	१९	भांयोए	भांयोए
१८६	१५	भोया	भोपा
,,	१६	साहे	साह्य
१९०	६	धवराई	घवराई
,,	१७	भेली	लीजे
१९३	१३	काय	काप
१९४	२०	यतः	०
१९७	२३	गीरवाना	गरवाना
१९८	७	लाहा	लावा
२०२	१७	सिघश्री	सिघश्री
२०३	१०	वल	वदल
,,	११	वहु चमू	सब सैन्य
२०५	१	भवियण	०
,,	७	सही	गही

२०५	१२	शीय	सीय
२०६	९	क्रिधूं धरी है	मानूषरिहे
,,	१५	भ्यासो	ल्यासो
,,	२१	विलसूंजी	विलससूंजी
२०८	९	मुत्रागल	मुआगल
,,	१०	दाजे	वाजे
२१०	९	करीजेजी	करीजे राज
२११	४	आनेकू	आनेको
,,	८	नये	नवें
,,	१	शृंगारकी	शृंगार करां
२१२	१	जलिके	अलिके
२१४	०	चारू चारू	चारु चारु

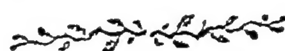
अथ द्वितीय खंड:

२१९	नारकी यंत्रमे ६. ९९९९५		एक लाख (१०००००)
२२२	१३	तुत्तर	उत्तर
,,	१५	त्तुत्तर	उत्तर
२२५	१६	रिठा	अरिठा
,,	२०	,,	अच्युत देवलोक(१२)
२२७	५	अगंबे	अगंधे
२३०	१६	निद्दूा	निद्रा
,,	,,	निद्दूा निद्दूा	निद्रा निद्रा

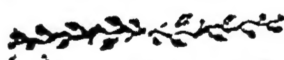
२३०	१७	निङ्रा	निद्रा
२३१	४	क्रोघ	क्रोध
२३३	१७	इर्पा	इर्षा
२३४	२३	ऊज	ऊजलो
,,	५	जाचवा	जाचना
२३७	१	अरस	सरस
२३९	९	गुणग्रांन	गुणग्रांम
,,	१७	(अर्थः)	०
२४०	८	सधरमी	स्वधरमी
२४२	२१	सभाव	स्वभाव
२४३	१०	खडा	खड्ग
२४८	११	नै	नय
२४९	२	सिद्धां श्री	सिद्धांआश्री
,,	७	कहवेछे	कहेछे
२५०	१४	संसे	संशय
२५५	२२	भाषादिकके	भाषादिक
२५६	२०	ढिई	ठिई
२५८	१६	पठीमे	छठ्ठीमे
२५९	१०	५-६-	६
,,	८	पहली	पहली ॥ ९ ॥
२६०	८	स्थितीनें	स्थिती
२६१	१३	नही	वर्जी
२६२	२३	तेउ	तेउनी
२६३	११	सुक्षा	सुक्ष्म

२६४	५	तेउनीर्तनी	तेउनी
२६५	३	वेरिंद्वी	वेरिंद्री
,,	१३	तेइंद्रिने	तेइंद्रिमें
२७०	४	पांच मानिदेह	पांच महाविदेह
२७१	११	,,	,,
२७४	२१	सुमति	सुमति
३४७	८	पावो	पावे
,,	१०	बंध्र	बंध
३५४	९	कसन्नी	असन्नी
३५५	२	पदणे	पदनें
,,	४	मनुष्यनी	मनुष्यणी
,,	५	अयाप्ता	अपर्याप्ता
,,	१२	समूर्च्छम्	समूर्छिम्
३६२	३	सच	सत्य
,,	१०	विहार	व्यवहार
३६३	१२	वीरी	वीर्य
३६४	४	अजोग	शुभ योग
३७७	५	नानादिक	स्नानादिक
,,	१४	पांचमी	पांचमे
३८०	२२	भवसिया	भवसिद्धिया
३८५	२२	अनंत	अनंतगुणा
३८६	१	अवधि	अवधि नांणी
,,	१२	श्रोत्र	श्रुत
३८७	६	पजत्ते	पज्जत्ते

३९८	२	९ सन्नी तिर्यंचका अपर्याप्ता	५ सन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता अपर्याप्ता
,,	३	वन	वनस्पती
,,	९	१०	०
३९९	४	१०१ मनुष्य असंख्यानी०	१०१ समुर्छिम मनुष्य
३९९	,,	१७१	१७९
४००	९	देवलोक	देवताना
४०४	३	तित्ये	तित्ये
४१८	२३	राग	राग द्वार
४१९	३	कल्प	कल्प द्वार



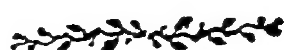
अन्तिम पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
०	१	श्रीमद्बुद	श्रीमद्
	१	शिष्या	शिष्य
,,	४	सुमहलं	सुमंगलं
मुनिवरेष्वभ्यर्चना	४	पद्वाब्ज	पदाब्ज



(१) "सिद्धांत शिरोमणि" की अन्त 'णि' ह्रस्व रहना चाहीये.

(२) जहां 'प्रकरण पहिला अकलंक स्तोत्र' हे, वहां "प्रकरण पहिला स्तोत्र" एसा होना.

(३) जहां 'प्रकरण द्वितीय छन्द.' हे, वहां 'प्रकरण दूसरा छन्द' यह होना.



(जाहिर खबर.)

वाचक वर्ग !

इसके शिवाय औरभी कही जगह बहुत अशुद्धियें (ह्रस्व दीर्घ प्लुत स्वल्पविराम अर्द्धविरांम पूर्णविराम पदच्छेद इत्यादि) रहगई हें. जिसको सर्व स्वधरमी बंधु सुधारके पढेंगे एसी आशा हे.

(नोट) इसमे ग्रंथ कर्त्ताका ओर प्रेस मालिकका कोई दोष नही हे.

आपका हितैषी.

मगनमल गणेशमल कासवा.

मु० हिंगणघाट.

जि० वर्धा (सी. पी.)

